

आचार्य श्रीमत्प्रद्युम्नसूरि विरचितं
मूलशुद्धिप्रकरणम्
(प्रथमो भागः)

सम्पादक
आचार्य धर्मधुरंधरसूरिजी
पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजक

प्रकाशक
श्रुतनिधि
शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर
अहमदाबाद-३८०००४

आचार्यश्रीमत्प्रद्युम्नसूरिविरचितं

मूलशुद्धिप्रकरणम्

[प्रथमो भागः]

श्रुतनिधि-ग्रन्थांक : १

प्रधान सम्पादक

जितेन्द्र बी. शाह

श्रीमद् देवचन्द्रसूरिसन्ध्यावृत्तिसहितं
आचार्यश्रीमत्प्रद्युम्नसूरिविरचितं 'स्थानकानि' इत्यपरनामकं

मूलशुद्धिप्रकरणम्

[प्रथमो भागः]

सम्पादक
आचार्य धर्मधुरंधरसूरिजी
पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजक

प्रकाशक
श्रुतनिधि
शारदाबहेन चीमनभाई ऐज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर,
अहमदाबाद-३८० ००४.

वीरसंवत् २५२८

विक्रमसंवत् २०५८

ईस्वीसन् २००२

मूलशुद्धिप्रकरणम्
आचार्य धर्मधुरंधरसूरिजी
पं. अमृतलाल मोहनलाल भोजक

•
प्रकाशक

श्रुतनिधि

शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर
'दर्शन', शाहीबाग, अहमदाबाद-३८० ००४
PHONE : 079-2868739. FAX : 079-2862026
e-mail : sambodhiad1@Sancharnet.in
Website : www.scerc.org

•
© श्रुतनिधि

•
द्वितीय आवृत्ति, सन् २००२

•
मूल्य : रुपये २२५/-

•
प्रति : ५००

•
मुद्रक :

नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस
नोवेल्टी सिनेमा के समीप,
घी-काँटा मार्ग, अहमदाबाद-३८० ००१.
फोन : ५५०८६३१, ५५०९०८३

गंथसमप्पणं

पुण्णा जोगा मण-वयण-काइया जाण संतयं सेया ।
अणवरयसत्थसंसोहणे रया जे य अपमत्ता ॥१॥

संसोहण-संपायणविसए जा मम गई हवइ किंचि ।
सा जप्पसायलेसप्पभावओ चेव संपत्ता ॥२॥

पुण्णपहीणं पण्णाणपवित्ताणं च पुज्जपायाणं ।
आगमपहायराणं ताणं सिरिपुण्णविजयाणं ॥३॥

निग्गंथाणं करकमलकोसमज्झम्मि एस गंथवरो ।
अप्पिज्जइ अमएणं सीसेणं बालएणं च ॥४॥



ग्रन्थसमर्पण

[प्रथम आवृत्ति : प्रथम भाग]

जिनके मन-वचन-काय के पवित्र व्यापार सतत श्रेयस्कर हैं, जो अप्रमत्त होकर सदैव शास्त्रसंशोधन में रत हैं, जिनके प्रसादांश के प्रभाव से मेरे में संशोधन-संपादन की गति है, ऐसे पुण्यमार्ग के पथिक, प्रज्ञान से पवित्र, पूज्यपाद आगमप्रभाकर श्री पुण्यविजयजी निर्ग्रन्थ के करकमल में यह ग्रन्थवर उनके शिष्य बालक अमृत के द्वारा समर्पित है ।

श्रुतनिधि के सहयोगी

प. पू. युवाचार्य श्री रत्नाकरसूरिजी म. सा. की प्रेरणा से

१. श्री पंच महाजन समस्त संघ : रानीवाडा खुर्द (राजस्थान)

२. श्री झवेरी पार्क जैन संघ, अहमदाबाद

की ओर से

प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन में हार्दिक आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है ।

संस्था उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है ।

पुस्तक प्राप्तिस्थान

अहमदाबाद :

श्री पारसगंगा ज्ञानमंदिर

बी-१०४, केदार टावर

राजस्थान हॉस्पिटल के सामने,

शाहीबाग, अहमदाबाद-३८० ००४.

दूरभाष : C/o. ०७९-२८६०२४७ (राजेन्द्रभाई)

मुंबई :

मणिलाल यु. शाह

D-1-२०३, स्टार गेलेक्सी

एल. टी. रोड, बोरीवली (वेस्ट)

मुंबई-४०००९२

दूरभाष : (R) ८०११४६९ (O) ८९३१०११

प्रकाशकीय

‘मूलशुद्धि प्रकरणम्’ ग्रंथ का प्रकाशन करते हुए हम अत्यन्त हर्षान्वित हैं। प्रस्तुत ग्रंथ का प्रथम भाग कुछ समय पहले प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी के द्वारा प्रकाशित हुआ था किन्तु उसका दूसरा भाग छप नहीं पाया था। हालाँकि दूसरे भाग का संपादन कार्य ही शेष था और इस कार्य के लिए पं. श्री दलसुखभाई मालवणियाजी एवं आचार्य प्रद्युम्नसूरिजी अत्यन्त चिंतित भी थे पर संजोग ही कुछ ऐसे बनते चले की कार्य खटाई में पड़ गया पर आखिरकर पंडित श्री अमृतभाई भोजक एवं आचार्यश्रीधर्मधुरंधरसूरिजी ने गंभीरतापूर्वक इस कार्य को हाथ में लिया और संपन्न किया। आज यह ग्रंथ दो भाग में प्रकाशित हो रहा है। यह ग्रंथ जैन सिद्धान्त के परिचय के लिए काफी महत्त्वपूर्ण है। इस के प्रकाशन के लिए प्रज्ञाशील आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी म. की सतत प्रेरणा एवं अनुरोध रहे हैं और आचार्य श्री रत्नाकरसूरिजी म. के उपदेश से ग्रंथ प्रकाशन के लिए सुंदर आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है, हम दोनों आचार्य भगवंतों के प्रति कृतज्ञताभाव व्यक्त करते हैं। रंज इस बात का है कि इस ग्रंथ के एक संपादक श्री अमृतभाई भोजक आज हमारे बीच नहीं हैं। यदि वे जीवित होते तो इस ग्रंथ के प्रकाशन से अवश्य संतुष्ट होते। पू. विद्वान् आचार्य श्री धर्मधुरंधरसूरिजी म. ने भी बड़ी मेहनत व लगन के साथ संपादनकार्य संपन्न किया है। वे हम उनके भी ऋणी हैं।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले श्री झवेरी पार्क जैन संघ, अहमदाबाद का हम आभार व्यक्त करते हैं।

हमें आशा एवं विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रंथ जिसकी संरचना ग्यारहवीं शताब्दी के समर्थ जैनाचार्य आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी ने की है, जिज्ञासुजनों के लिए अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होगा।

अहमदाबाद

जितेन्द्र बी. शाह

फरवरी - २००२.

**प्रस्तुत प्रत में पादटीप में जो स्थाननिर्देश किये गये हैं,
उनकी संज्ञागत सूची इस प्रकार है ।**

सं. यह प्रति श्री हेमचन्दाचार्य जैन ज्ञानमंदिर पाटन में स्थित श्री संघ जैन ज्ञानभंडार की है ।

वा. यह प्रति उपर्युक्त ज्ञानमंदिर में स्थित श्री वाडीपार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार की है ।

ला. यह प्रति श्री कच्छी दशा ओसवाल जैन महाजन के हस्तक अनंतनाथजी महाराज के मन्दिर (मुंबई)
में रखे हुए ज्ञानभंडार की है एवं सेठ श्री डोसाभाई अभेचन्द जैन संघ (भावनगर) के भंडार की है ।

General Editor's Preface (First Edition)

The *Mūlaśūddhi*, also called *Sthānaka*, that is being published here for the first time is a Jain religious text in Prakrit, written in the eleventh century by Pradyumna Sūri of the Pūrṇatalla Gaccha. A Sanskrit commentary on this work with illustrative stories in Prakrit (except one which is in Apabhraṃśa) was written in 1089-1090 A. D. by Devacandra Sūri. He was a disciple of Guṇasena Sūri, who himself was a disciple of Pradyumna Sūri. The Devacandra Sūri is the same as the Guru of the famous polymath Hemacandrācārya. The present volume contains the first part of the text of the *Mūlaśūddhi* (based on six manuscripts) and the commentary (based on five Mss.) The rest of the original and the commentary will form the second volume.

The *Mūlaśūddhi*, itself is in the long tradition of Jain religious and didactic tracts. It prescribes the duties of a Jain believer with regard to sacred images, temples and texts and to the fourfold Saṃgha. As such it has little claim to a wider interest or importance. But it is quite different with Devacandra Sūri's commentary (henceforth referred to as MC.) It contains numerous religious tales and narratives (*Ākhyānakas*, *Kathānakas* and *Udāharaṇas*) and in this respect it is in no way different from a Kathākośa type of tale-collection. Further it forms a link in the long series of similar commentaries or religious-didactic works that contain sizeable collections of illustrative stories. The portion of the commentary covered by the present volume contains thirtyfour (or if we count the two subtales, thirtysix) tales. Apart from their general relevance for the study of tale-motifs and tale-types, Indian and non-Indian, they are quite valuable for investigation the sources and parallels for several widely current and interesting Jain narratives. Here we find, for example, the stories of Mūladeva, King Samprati (along with that of Candragupta and Cāṇakya), Kālakācārya, Khaputācārya, Candanā, Ādrakumāra, Rauhiṇeya, Kṛtapuṇya and Ārāmaśobhā among others. There are numerous earlier and later recasts, parallels, versions and adaptations of many of these stories in Jain works written in Sanskrit, Prakrit, Old Gujarati and other old languages. All these require to be studied comparatively so that we can trace their evolution in correlation to changing cultural conditions prevalent at different periods. We have already some noteworthy efforts of varying scope in this direction, e. g. the studies pertaining to the stories of Aḡaḡadatta¹ (L. Alsdorf), Maṇipati² (R. Williams), Jambūsvāmin³⁻⁴ (A. Shah, V.P. Jain), Sāmba-Pradyumna⁵ (M. Shah), Candana-Malayāgri⁶ (R. Jani), Sadaya-

1. A New Version of the Aḡaḡadatta story, New Indian Antiquary. Vol. 1, p. 281-299.

2. R. Williams, Two Prakrit Versions of the Maṇipaticarita, 1959.

3. R. C. Shah, Yośovijayjī krut Jambūsvāmī-Rās, 1961.

4. V. P. Jain, Vir-kavi-viracit Jambūsvāmicariu, 1968.

5. M. B. Shah, The Pradyumna Tale in Medieval Gujarati Literature (Unpublished doctoral dissertation, University of Bombay, 1967).

6. R. N. Jani, The Jaina and Non-Jaina Versions of the Popular Tale of Candana-Malayāgiri from Prakrit and other Early Literary Sources', Mahāvīr Jain Vidyālaya Golden Jubilee Vol. Part 1, 1968, p. 225-232.

vatsa-Sāvaliṃgā⁷ (A. Nahta, M. Majmudar), Kāṣṭhaśreṣṭhin⁸ (H. Bhayani) etc. These studies have different orientations, some concentrating on the literary-historical aspect and others on the folk-tale aspect. Of the stories mentioned above those of Mūladeva, Kālaka and Ārāmaśobhā have been so far fortunate in receiving scholarly attention. Bloomfield's pioneering effort⁹ to study the Mūladeva cycle now requires to be supplemented by a comparative-historical treatment of all the available materials. Brown's study of the Kālaka legend¹⁰ stands in need of some revision in the light of additional materials¹¹ made available by A. Shah. It should be noted in passing that among the thirtysix different texts collected by Shah there also figures the Kālaka story from Devacandra's *Mūlaśūddhi* commentary. Of course Shah edited it¹² independently of the present endeavour. As to the story of Ārāmaśobhā, now that we know it from the MC., H. Jain's view¹³ on the influence of the Sugandhadaśamī story on it is to be revised. The MC. version of the Ārāmaśobhā is prior to the earliest known version of the Sugandhadaśamī. One further consequence of this is that the question of the immediate Indian original of the Cinderella too shall have to be reconsidered.

Anothe aspect of the importance of the MC. is brought out by the fact that several Jain authors have drawn upon or borrowed liberally from its stories. We shall casually mention here only two such instances. In his commentary on Haribhadra's *Samyaktvasaptati*¹⁴ Saṃghatilaka Sūri has reproduced almost verbatim the Kālaka story from the MC. The slight changes he has made here and there mostly consist of substituting synonyms and changing constructions. Similarly on the strength of significant verbal resemblance it seems probable that the Mūladeva story in MC. served as a source for the version found in the *Kumārapālpratibodha*.

In this connection, we should also mention a few stories of this collection that clearly preserve the stamp of a folk-tale. The side story about the origin of Gajāgrapada, the name of a mountain, occurring in the Ārya-Mahāgiri story belongs to the cycle of the stories of cuckoldry such as we find in popular collections like the *Śukasaptati*. The story of Bhīma and Mahābhīma presents a version of a widely current tale illustrating the principle 'You reap what you sow.'

7. A. Nahta, 'Sadayavatsa Sāvaliṃgā Ki prem-kathā, Rājasthān-Bhāratī, Vol. 3, 1, pp. 49 f; M. Majmudar, Sadayavatsa Vira Prabandha, 1961.

8. H. C. Bhayani, 'The Magic Bird-Heart', Bharatiya Vidya, 23, 1-4, 1963, 99-114; Śodh ane Svādhyāy, 1965, p. 43. 74; 'Kāṣṭha-śeṭh-nī Damtakathā Lokagurjarī, 5, 1968, 1-2.

9. The Character and Adventures of Mūladeva. Proceedings of the American Philosophical Society, 52, 616-650. See also Bloomfield's Foreword to Tawney-Penzer. The Ocean of Story, Vol. 7, p. XII; A. N. Upadhye, 'The Dhūrtākhyāna a Critical Study' in Haribhadra's Dhūrtākhyāna, ed. by Jinavijaya Muni, 1944, p. 23.

10. N. Brown, The Story of Kālaka, 1933.

11. A. P. Shah, Srī-Kālākācārya-Kathā - Saṃgrah, 1949.

12. See pp. 6-22 of the work.

13. H. Jain, Sugandhadaśamī Kathā, 1966, Introduction, pp. 16-18.

14. Samyaktvasaptati, with Saṃghatilaka's Commentary, ed. by Lalitvijay Muni, 1916.

The story of Dhanyā occurring also in the *Kumārapālpratibodha*, has the same motif as a Gujarati folk tale, *ghaṅkā ane ghaṅkī nī vārtā* 'The tale of the male and female wood-worm.' A third version of the same motif is found in the story of the monkey couple transformed into human beings that we come across in some of the tale-groups connected with the life-story of Jambūsvāmin (see, e.g. pp. 99-100 in Guṇapāla's *Jambūcariya*. It also occurs in Jambū's biography given in Hemacandra's *Sthavirāvalī*).

Linguistically too the MC. has its several points of interest. Firstly, it has one whole story, viz., *Sulasakkhānu*, in Apabhraṁśa. It is called Ākhyāna as well as Saṁdhi, and its structure conforms with that of other known poems of the Sandhi-type in Late Apabhraṁśa. As has been stated by the editor (p. 43, footnote), this *Sulasāsaṁdhi* is found also as a self-contained work preserved separately from the MC. Besides this, MC. has numerous short passages in Apabhraṁśa. Their value as specimens of the Apabhraṁśa of Hemacandra's times is quite obvious.

Secondly, the Prakrit of the MC. has numerous words, constructions and idioms which are significant for the study of Apabhraṁśa and early Gujarati. The following few words and forms, picked up in a casual reading of the first thirty-five pages only, would suffice to illustrate the point (Abbreviations : DN. = Deśināmamālā of Hemacandra. SH. = Siddhahema of Hemacandra.)

छिछइया (3, 56) पुंश्ली (cf. DN. 3, 36; SH. 8, 2, 174; PC. 5, 13, 9 etc.)

डिडिय (3, 65) 'a wayward rascal' (cf. the Dīṁdins of Lāṭa described in the *Pādatāḍitaka Bhāṇa*.)

इंदोयग (20, 3) इन्द्रगोपक (cf. इंदोअ at *Samdeśarāsaka*, 143).

झाड (5, 11, 6, 7.) 'tree'. (cf. झाड 'thicker' DN. 3, 57; Guj. tree.)

खोला or कोला (fem) (5, 15; 17) 'front portion of the upper garment covering the lap.' (cf. खोलो (masc). 'ibid'. DN. 2, 80; Guj. खोळे 'ibid', 'lap'.)

बोहारण (5, 7) 'act of sweeping'. (cf. बहुकर 'sweeper', बहुकरी 'broom', *Abhidhānacintāmaṇi*, 363, 1016; बउहारी, बोहारी 'broom' DN. 6m 97; Hindi बुहारना, बुहारी.)

भतुल्लग (5, 11, 5, 6, 25) 'some sweetmeat etc. sent as present to ones kin living afar, (from Pk. भत्त, Sk. भक्त and the diminutive suffix-उल्लग) cf. Guj. भातलूँ home-made lunch taken outside.'

वलच्छी (?) (5, 19). The verse line in which this word occurs is as follows :

बज्झंति तरुवरेसुं चंचलतुरयाण वरवलच्छीओ ।

The corresponding passage in the Ārāṇasobhā in the *Samyaktvasaptati* commentary of Saṁghatīlaka, written in 1365 A. D., reads

तरलतरंगवलच्छ वज्झंति समंतआ तरमूले ।

(Here तरंग is an obvious mistake for तुरंग). The word is the same as चलत्थ (v. 1. वलच्छ) which occurs at *Samdeśarāsaka*, 169 (in the compound form तुरंगचलत्थिहि), and which the Sanskrit commentary renders as तुरङ्गमशाला. The word also occurs in the form of चलत्था (compounded as

अश्वचलस्था) in the Jain Sanskrit of Pūrṇabhadra's *Pañcākhyaṅkar*¹⁵ (composed in 1199). See the glossary in the Harvard Oriental Series edition (No. 11). For the present, the period of currency of the word can be fixed as from 11th to 14 century.

We may also note here a few interesting forms and constructions from the MC.

The possessive suffix -च्चय-¹⁶ is found in the form अण्णच्चयाणं (*Mūlasuddhi*, Gāthā 26) and तुब्भच्चएहि (3, 41).

धिसि धिसि (3, 120) deriving from धिगसि धिगसि and meaning धिग् धिग् occurs several times in Haribhadra's Apabhraṁśa epic *Nemināhacariya* composed in 1160 A. D. It occurs in other Prakrit works also composed in or about the twelfth century.

The possessive suffix -इत्त- (SH. 8, 2, 159; Pischel's Comparative Grammar of Prakrit Languages § 600) is found in मज्जयत्ता (v. 1. मज्जइत्ता) (20, 18) 'those having wine' and मंसइत्ता (20, 19) those having meat. Its connotation here is nearer to Hindi 'vālā', Gujarati vālā.'

लुयाओ वायति (6, 13) 'the hot summer gusts blow.' cf. Guj. लू वाय ठे in the same sense.

These instances can be easily multiplied. The index of select words proposed to be given at the end of the second volume will seek to cover data of special lexical importance.

These few remarks may suffice to point out the value of MC. Such a precious work of Prakrit narrative literature cannot but attract the attention of a connoisseur like Muni Jinavijayaji. Shri A. M. Bhojak, who has scholarly editions of several important Prakrit works to his credit, is to be congratulated for preparing the present critical edition of the text at Muniji's instance.¹⁷ But as pointed out by Shri Bhojak in his editorial forward, though the work was ready for the press several years back various circumstances delayed its completion and publication all these years. Now the Prakrit Text Society is glad to publish it. The Society also hopes to bring out the remaining portion of the text at an early date.

March 1, 1971

H. C. Bhayani

Ahmedabad

15. This has been already noted by me on p. 104. of my introduction to the *Sarideśarāsaka*.

16. See H. C. Bhayani, 'Three Old Marathi Suffixes', *Vidyā*, 12, 2, 1969, 4-10. To the forms with the possessive -च्च- collected there from Early Prakrit Literature, परबलिच्चो belonging to the hostile forces occurring in the *Niśītha Cūrṇi* of Jinadāśa is to be added.

17. Here it may be pointed out that in the introduction to Śīlāṅka's *Caupannamahāpurisacariya* (p. 47) Shri Bhojak has drawn our attention to Devacandra Sūri's indebtedness to Śīlāṅka regarding the story of Candanā and Brahmadatta. It is to be hoped that he will also deal with this aspect of the subject in his introduction to the second volume of the *Mūlasuddhi*.

संपादकीय

[प्रथम आवृत्ति : प्रथम भाग]

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन-संशोधन में टीका की चार प्रतियों का सम्पूर्ण उपयोग किया गया है। इन चार प्रतियों की संज्ञा A. B. C. और D दी गई है। इसके अतिरिक्त एक टीका की प्रति का भी उपयोग कहीं कहीं किया गया है। टीका की इस पाँचवीं प्रति की संज्ञा E दी गई है। टीका की इन पाँच प्रतियों के सिवाय 'मूलशुद्धिप्रकरण' मूल की एक प्रति का भी यहाँ सम्पूर्ण उपयोग किया गया है। यह प्रति पाटण के भण्डार की प्रकीर्णक संग्रह की ताडपत्रीय प्रति है। उसमें अनेक प्रकरणों के साथ मूलशुद्धिप्रकरण भी दिया गया है। मूल की इस प्रति की संज्ञा भी E ही दी गई है। अतः जहाँ मूल गाथा के पाठभेद में जहाँ E संज्ञा हो वहाँ उस पाठभेद को मूल की ताडपत्रीय प्रति का समझना चाहिए। तथा टीका के पाठभेद में जहाँ E संज्ञा हो वहाँ उस पाठभेद को टीका की E प्रति का पाठभेद समझा जाय। उक्त प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

A संज्ञक प्रति—

यह प्रति श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर (पाटण) में स्थित श्री संघ जैन ज्ञानभण्डार की है और यह कागद पर लिखी हुई है। सूची में इसका क्रमांक १४१५ है। २६४ पत्रात्मक इस प्रति की लम्बाई चौड़ाई १०।५४॥ इंच प्रमाण है। प्रथम पत्र की पहली और अन्तिम पत्रकी दूसरी पृष्ठ कोरी है। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ हैं। और प्रत्येक पंक्ति में ६० अक्षर हैं, प्रत्येक पृष्ठ के मध्य में कोरा भाग रखकर शोभन बनाया गया है। इसकी स्थिति मध्यम और लिपि सुन्दर है। इस प्रति के अन्त में लेखक की प्रशस्ति-पुष्पिका नहीं है। अनुमानतः इस प्रति का लेखनसमय विक्रमीय १७ वीं सदी का होना चाहिए।

B संज्ञक प्रति—

यह प्रति भी उपर्युक्त ज्ञानमन्दिर में स्थित श्री वाडीपार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार की है और यह कागद पर लिखी हुई है। सूचि में इसका क्रमांक ७०७३ है। २७५ पत्रात्मक इस प्रति की लम्बाई चौड़ाई १०।५४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ हैं। और प्रत्येक पंक्ति में ५६ अक्षर हैं। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ के मध्य में कोरा भाग रखकर उसके मध्य में लालरंग का गोलाकार शोभन बनाया है। उसी तरह पत्र की दूसरी पृष्ठ के दोनों तरफ मार्जिन के मध्यभाग में लालरंग का गोलाकार शोभन किया हुआ है। इसकी लिपि सुन्दर और स्थिति मध्यम है। अन्त में लेखक की प्रशस्ति-पुष्पिका नहीं है। अनुमानतः इसका लेखनसमय विक्रम का १५वाँ शतक होना चाहिए।

C संज्ञक प्रति—

यह प्रति श्री कच्छी दशा ओसवाल जैन महाजन हस्तक के अनन्तनाथजी महाराज के मन्दिर (मुंबई) में रहे हुए ज्ञान भण्डार की है। भण्डार की सूचि में इसका नम्बर १४२८ है। पुरातत्त्वाचार्य मुनिजी श्री जिनविजयजी ने वि० सं० २००१ की साल में यह प्रति उपयोग करने के लिए मुझे दी

थी। इसके कुल पत्र ३८४ हैं। ३८३ वें पत्र की दूसरी पृष्ठ की पाँचवीं पंक्ति में मूलशुद्धिप्रकरणटीका की समाप्ति के बाद समस्त ग्रन्थगत कथाओं की सूचि दी है। वह ३८४ वें पत्र की दूसरी पृष्ठ में पूर्ण होती है। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में कम से कम ३८ और अधिक से अधिक ४८ अक्षर हैं। स्थिति अच्छी है और लिपि सुवाच्य है। इसकी लम्बाई चौड़ाई १०॥१.१×५ इंच प्रमाण है। अन्त में लेखक ने मात्र लेखनस्थल और लेखनसमय ही दिया है। वह इस प्रकार है— “अहम्मदावादनगरे सं० १९४८ भादवा शुदि ११॥” ।

D संज्ञक प्रति—

सेठ श्री डोसाभाई अभेचन्द जैनसंघ (भावनगर) के भण्डार की यह प्रति भी पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी ने मुझे ‘C’ संज्ञक प्रति के ही साथ उपयोग करने के लिए दी है। इसके पत्र २५९ है। २५८ वें पत्र में मूलशुद्धिप्रकरणटीका पूर्ण होती है। २५९वें पत्र में समग्रग्रन्थगत कथाओं की सूची दी है। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ हैं। कम से कम ४० और अधिक से अधिक ७० अक्षरों वाली एक पंक्ति है। स्थिति अच्छी और लिपि सुवाच्य है। इसकी लम्बाई चौड़ाई १०×४॥ इंच है। अन्त में लेखक की पुष्पिका आदि कुछ भी नहीं है। अनुमानतः इसका लेखनसमय वि० २० वाँ शतक कहा जा सकता है।

E संज्ञक प्रति (मूलशुद्धिटीका)

श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदाबाद) में स्थित अनेक हस्तलिखित ग्रन्थसंग्रहों में से पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी महाराज के विशाल ग्रन्थसंग्रह की यह प्रति है। और यह कागज पर लिखी हुई है। यह प्रति आज से २० वर्ष पहले पू० पा० मु० श्री पुण्यविजयजी महाराज को मिली थी। उस समय प्रस्तुत ग्रन्थ का संशोधन-कार्य पूरा हो गया था फिर भी उसी समय ही इस प्रति को उनके पास से लेकर पाठभेदादि के अनेक स्थानों को मिलाते समय निश्चित किया कि यह प्रति तो अशुद्ध है ही फिर भी यह ‘C’ और ‘D’ संज्ञक प्रति के प्राचीन कुल की है। इस वजह से इस प्रतिका सम्पूर्ण उपयोग नहीं किया। मूलशुद्धिटीकाकार आ० श्री देवचन्द्रसूरिजी की प्रशस्ति में किसी किसी स्थान पर ‘C’ और ‘D’ संज्ञक प्रति में अक्षरों के स्थान खाली रखे हुए हैं, वे सब स्थान इस प्रति में सम्पूर्ण हैं। इस दृष्टि से यह प्रति उपयोगी हो गई है। A और B संज्ञक प्रति में तो प्रशस्ति अपूर्ण ही मिलती है। इस प्रति में टीकाकार की प्रशस्ति को किसी विद्वान् ने संशोधित की है। यहाँ प्रशस्ति के सातवें पद्य में (‘C’ और ‘D’ प्रति में) कतिपय खाली रखे हुए अक्षरों के स्थान में “गुणसेमसूरिः” लिखा हुआ था। उसको सुधारकर किसीने ‘गुणसोमसूरिः’ किया है। जबकि वस्तुतः वहाँ ‘गुणसेनसूरिः’ होना चाहिए, कारण कि आ० श्री देवचन्द्रसूरिरचित प्राकृतभाषानिबद्ध ‘संतिनाहचरियं’ शान्तिनाथचरितम् (अप्रकाशित) की ग्रन्थकारकृत प्रशस्ति में ‘गुणसेनसूरि’ नाम मिलता है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि इस प्रशस्ति के संशोधक ने गहरी चिकित्सा नहीं की है, ऐसा कह सकते हैं। प्रस्तुत प्रशस्ति के पाठ के अतिरिक्त समग्र ग्रन्थ में किसी ने कुछ भी संशोधन नहीं किया है। इस प्रति के लेखक ने जिस प्रति पर से नकल की

है उस प्रति में, इस प्रति के बारह पत्र जितने पाटवाले पत्रों के बदले आ० श्री शीलांकसूरिचित आचारांगसूत्रटीका की प्रति के पत्रोंने स्थान पा लिया होगा, इससे इस प्रति के ४६ वें पत्र की दूसरी पृष्ठ की ११ वीं पंक्ति के अन्तिम दो अक्षरों से ५८ वें पत्र की दूसरी पृष्ठ की आठवीं पंक्ति (अंत्य पाँच अक्षर के अतिरिक्त) तक का ग्रन्थसंदर्भ आचारांगसूत्र के दूसरे अध्ययन के प्रथम उद्देश की टीका का है। अर्थात् प्रस्तुत मुद्रित ग्रन्थ के ७३ वें पृष्ठ की १६ वीं पंक्ति में आये हुए 'छलिओ' शब्द के 'छ' के बाद से ९६ वें पृष्ठ की १६ वीं पंक्ति में आये हुए 'पडिलाहिया' शब्द में आये हुए 'ला' तक का मूलशुद्धिटीका का ग्रन्थसंदर्भ प्रस्तुत 'E' प्रति में नहीं है किन्तु उसके बदले आचारांगसूत्रटीका का सूचित पाठ है। इस प्रति की पत्रसंख्या २५२ है। प्रथम पत्र की प्रथम और अन्तिम पत्र की दूसरी पृष्ठ कोरी है। २५२ वें पत्र की प्रथम पृष्ठ की चौथी पंक्ति में समग्र ग्रन्थ पूर्ण होता है। प्रत्येक पत्र की प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में कम से कम ५२ और अधिक से अधिक ५८ अक्षर हैं। किसी-किसी में ४९ अक्षर भी मिलते हैं। प्रत्येक पृष्ठ के मध्य में अलिखित कोरा भाग रखकर सुन्दर शोभन बनाया हुआ है। इसकी लिपि सुन्दरतर है और स्थिति भी अच्छी है। इसकी लम्बाई चौड़ाई १०।।.२×४। इंच प्रमाण है। प्रति के लेखक की पुष्पिका नहीं है। अनुमानतः इसका लेखनसमय विक्रम की १७ वीं सदी का पूर्वार्ध होना चाहिए। इस प्रति को लिखाने के कितनेक समय के बाद लालशाही से लिखी हुई एक छोटी सी पुष्पिका भी इसमें है और वह इस प्रकार है —“साह श्री वच्छसुत साह सहस्रकिरणेन पुस्तकमिदं गृहीतं सुतवर्धमान[-]शांतिदासपरिपालनार्थं” । इस पुष्पिका पर से यह मालूम होता है कि सहस्रकिरण नामके श्रेष्ठी ने अपने ग्रन्थभण्डार के लिए यह प्रति(?)मूल्य से खरीदी होगी। इस श्रेष्ठी ने स्वयं ग्रन्थ लिखाकर और दूसरी जगह से ग्रन्थ प्राप्त कर एक ग्रन्थसंग्रह किया होगा क्योंकि इस श्रेष्ठी द्वारा लिखाई हुई और प्राप्त कि हुई प्रतियों के अन्त में लिखाई हुई ऐसी छोटी २ पुष्पिका वाली अनेक पोथियाँ मेरे देखने में आई हैं। इस श्रेष्ठी द्वारा लिखाये हुए नन्दीसूत्र का तो हमने उपयोग भी किया है, देखिये श्री महावीर जैन विद्यालय संचालित आगम प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'नंदिसुत्तं अणुओगद्दाराइं च' ग्रन्थ का सम्पादकीय का पृ० २।

‘E’ संज्ञक प्रति (मूलशुद्धिप्रकरण-मूल) —

जैसा कि प्रारंभ में बताया है, यह छोटी छोटी रचना के संग्रह वाली ताडपत्रीय प्रति पाटन के किस ज्ञानभण्डार की थी यह अब मेरे स्मरण में नहीं है। इस प्रति का उपयोग आज से २४ वर्ष पूर्व किया था।

उपरोक्त प्रतियों में से C और D संज्ञक प्रति अति अशुद्ध है। फिर भी सम्पादन कार्य में जिन जिन स्थानों में A और B संज्ञक प्रतियों के पाठ शंकित थे वहाँ इन दो प्रतियों का उपयोग हुआ है। और जहाँ जहाँ A. B संज्ञक प्रतियों के पाठ नष्ट हो गये हैं वहाँ वहाँ इन दो प्रतियों ने उसे पूरा करने में सहयोग दिया है, (देखो चतुर्थ पृष्ठ की ११ वीं और ३२ वें पृष्ठ की आठवीं टिप्पणी)। यद्यपि ये दो प्रतियाँ (C. D) अर्वाचीन और अशुद्धतर हैं फिर भी सम्पादनकार्य में महत्त्व की सिद्ध हुई है। ये दो प्रतियाँ (C. D) विक्रम की २० वीं सदी में लिखाई हुई होने पर भी इसमें कतिपय स्थानों में 'थथथथ' और 'छछछछ' जैसे अर्थशून्य अक्षरों का निष्कारण लेखन हुआ है। इससे यह निश्चित कहा जा सकता है कि यह प्रति ताडपत्रीय परम्परा की है।

ताडपत्रीय प्रतियों के पत्र में जहाँ जहाँ दूरे पड़ी हो, अथवा लिखते समय अक्षरों के बिगड़ने की जहाँ २ संभावना हो वहाँ मुख्यतः प्रतिलिपिकार को पाठपतन का भ्रम न हो उसके लिए उतने स्थान को रिक्त न रखकर 'थथथथथ' अथवा 'छछछछछ' ऐसे फल्यु अक्षरों से भर दिया जाता था। प्रस्तुत ग्रन्थ के मेर का संशोधन होने के बाद ही मूलशुद्धिप्रकरणटीका की जो 'E' संज्ञक प्रति मिली है वह C और D प्रति के कुल की प्राचीन प्रति है।

७७ वें पृष्ठ में आई हुई मूल की १९ वीं गाथा के अन्त में आया हुआ 'वराओ' शब्द के स्थान में टीका में 'पराओ' शब्द प्रतीक के रूप में दिया है। उससे उपयुक्त प्रतियों में टीकाकारसम्मत मूलपाठ क्वचित् नहीं भी मिला ऐसा कह सकते हैं।

टीकाकार ने मूल की सम्पूर्ण गाथाओं को उद्धृतकर के टीका की रचना की है। अतः टीका की प्रतियों के मूलपाठ सम्पूर्ण है ऐसा समझना चाहिए।

संशोधन—

यहाँ उपर बताई गई प्रतियों में से जिस प्रति का पाठ सुसंगत लगा है उस को मूल में स्वीकृत करके शेष प्रतियों के पाठ टिप्पण में दिये गये हैं।

जहाँ मूलगाथा के शब्द को टीका में प्रतीक रूप से लेकर उसका संस्कृत में अर्थ किया गया है वहाँ मूलगाथा के उन शब्दों को " " ऐसे अवतरण-चिह्न के मध्य में रख दिये हैं। जहाँ मूलगाथा के विभक्त्यन्त प्राकृत शब्द के संस्कृत पर्याय लिखकर उन संस्कृत पर्यायों का अर्थान्तरटीका में बताया गया है वहाँ मूल के उस प्राकृत शब्द के संस्कृत पर्याय को ' ' ऐसे अवतरणचिह्न के मध्य में रख दिए हैं। जहाँ मूल के सामासिक वाक्य में आए हुए प्राकृत शब्द के संस्कृत पर्याय लिखकर उसका अर्थान्तरटीका में बताया है वहाँ मूल के समासगत उन प्राकृत शब्द के संस्कृत पर्याय और उनके अर्थान्तर के बीच में = ऐसा चिह्न दिया गया है। वाचकों की अनुकूलता के लिए ग्रन्थगत कथाओं में उन कथाओं के पात्रों के वक्तव्य को ' ' ऐसे और आवश्यक हो वहाँ " " ऐसे अवतरण चिह्नों के मध्यमें रख दिये हैं। शेष चिह्नों के सम्बन्ध में प्राकृतग्रन्थ परिषद् के तीसरे ग्रन्थाङ्क रूप से प्रसिद्ध "चउप्पन्नमहापुरिसचरियं" ग्रन्थ की प्रस्तावना का पृ. ३७ को देखनेका सूचन करता हूँ।

उपर बताये गये चिह्नों की एवं प्रतियों की संज्ञा तथा ग्रन्थान्तर के पाठ की गाथाओं के अलग टाइप रखने आदि की पसन्दगी आज से २५ वर्ष पहले भारतीय विद्याभवन मुंबई के सम्मान्य नियामक एवं श्री सिंधी जैन ग्रन्थमाला के प्रधान सम्पादक और संचालक पुरातत्त्वाचार्य मुनिजी श्री जिनविजयजी ने निर्णीत कर दी थी। प्रस्तुत विशाल ग्रन्थ में आये हुए ग्रन्थान्तर के अवतरणों का सम्पूर्ण पृथक्करण करना मेरे लिये मुश्किल था फिर भी आज से २५ वर्ष पूर्व के मेरे तथाप्रकार के अतिस्वल्प अभ्यास के अनुसार उन अवतरणों को अलग टाइप में देने का प्रयत्न किया है जो अपर्याप्त है। यहाँ ग्रन्थान्तर की अनेक सुभाषित गाथाओं का तो पृथक्करण करना अशक्य ही है।

ग्रन्थ और ग्रन्थकार आदि के विषय में विशेष जानकारी दूसरे भाग की प्रस्तावना में देना मैंने उचित माना है।

वृत्ति, व्याख्या आदि शब्दों को उन उन ग्रन्थों की टीका के रूप में पहचानना यह एक प्रवाह है। इससे वर्षों पहले के मेरे इस प्रकार के प्रवाह के संस्कार से प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'मूलशुद्धिप्रकरणटीका' दिया है। किन्तु ग्रन्थकार ने प्रस्तुत टीका को व्याख्या (पृ० १, पं० ८), विवरण (प्रत्येक स्थानक के अन्त की पुष्पिकामें) और वृत्ति (टीकाकार की प्रशस्ति का १०वाँ और १५ वाँ पद्य) के नाम से कहा है।

प्रस्तुत प्रथम भाग में रही हुई अशुद्धियों का शुद्धिपत्रक दिया गया है। उसके अनुसार सुधारकर पढ़ने का मेरा सूचन है।

पूज्यपाद पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी (मुनिजी) ने २५ वर्ष पहले मेरी योग्यता का विचार करके श्री सिंघी जैनग्रन्थमाला में यह ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिए मुझे सम्पादन के लिए दिया था इसके लिये मैं उनका, अनेक उपकारों के स्मरणपूर्वक विनीत भाव से आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रेस आदि की अव्यवस्था और पूज्य मुनिजी राजस्थान सरकार द्वारा प्रस्थापित राजस्थान प्राच्य-विद्याप्रतिष्ठान के सम्मान्य नियामक के स्थान पर होने के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ के मुद्रण में सुदीर्घ समय बीत गया, मैं भी पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी विद्वद्भयमुनि श्री पुण्यविजयजी महाराज के आदेश से प्राकृत ग्रन्थ परिषद् (PRAKṚTA TEXT SOCIETY) में और उसके बाद श्री महावीर जैन विद्यालय संचालित 'आगम प्रकाशनविभाग' में नियुक्त हुआ। ऐसै समय प्राकृत ग्रन्थ परिषद् के सम्मान्य मंत्री एवं श्री लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर के मुख्य नियामक, भारतीय दर्शनों के गम्भीर अभ्यासी श्री दलसुखभाई मालवणियाजी ने पूज्य मुनिजी से परामर्श करके इस रुके हुए प्रकाशन की उपयोगिता जानकर इसे प्राकृत ग्रन्थ परिषद् से प्रकाशित करने का निर्णय लेकर मेरे कार्य में जो प्रोत्साहन दिया उसके लिए मैं श्री मालवणियाजी के प्रति ऋणभाव व्यक्त करता हूँ।

मैं जो कुछ भी यत् किंचित् संशोधनकार्य करता हूँ उस में जहाँ कहीं भी शंकित स्थान आते हैं उनका समाधान प्राप्त करने के लिए पूज्यपाद आगमप्रभाकरजी मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी महाराज का अमूल्य समय ३५ वर्ष से लेता आ रहा हूँ। इन उपकारी पुरुष की ऋणवृद्धि भी मुझे सविशेष धन्यता का अनुभव करा रही है।

इस ग्रन्थ का संस्कृत में लिखा हुआ विषयानुक्रम देखकर योग्य सूचन करने के लिए पं० श्री हरिशंकरभाई अंबाराम पंड्या का मैं आभारी हूँ।

२४ से २८ फार्म और सम्पादकीय आदि के मुद्रण में श्रीरामानन्द प्रिन्टिंग प्रेस के मुख्य संचालक स्वामी श्रीत्रिभुवनदासजी शास्त्रीजी ने जो सहकार दिया है उसके लिए उनके प्रति कृतज्ञभाव प्रकट करता हूँ।

श्री महावीर जैन विद्यालय संचालित

आगम प्रकाशन विभाग

लुणसावाडा-मोटी पोळ जैन उपाश्रय

अहमदाबाद-१

विद्वज्जनविनेय

अमृतलाल मोहनलाल भोजक

विषयानुक्रमः

विषयः

पृष्ठङ्कः

मङ्गलम्	१-४
सम्यग्दर्शनप्राप्त्युपायाः, सम्यक्त्वप्रतिपत्तिक्रमः, प्रतिपन्नसम्यक्त्वस्याकल्प्याचारनिरूपणं च	४-७
सम्यक्त्वस्य भूषण-दूषण-लिङ्ग-श्रद्धान-च्छिण्डिका-स्थानकाख्यं द्वारषट्कम्	७-८
सम्यक्त्वस्य प्रथमं भूषणद्वारम्	८-७५
जिनशासननिपुणता-प्रभावना-तीर्थसेवा-भक्ति-स्थिरत्वाख्यानि पञ्च सम्यक्त्वभूषणानि	८
जिनशासननिपुणताख्ये प्रथमे सम्यक्त्वभूषणे आर्द्रकुमारकथानकम्	८-१६
प्रभावनाख्ये द्वितीये सम्यक्त्वभूषणे आर्यखपुटाचार्यकथानकम्	१७-१८
तीर्थसेवाख्ये तृतीये सम्यक्त्वभूषणे द्रव्यतीर्थसेवाविषयकं अन्तर्गत 'एलकाक्ष- कथानक-गजाग्रपदपर्वतनामोत्पत्तिकथा'समेतं आर्यमहागिरिकथानकम्	२१-२६
तीर्थसेवाख्ये तृतीये सम्यक्त्वभूषणे भावतीर्थसेवाविषयकं भीम-महाभीमकथानकम्	२७-३०
भक्त्याख्ये चतुर्थे सम्यक्त्वभूषणे जिनभक्तिविषयकं आरामशोभाकथानकम्	३०-४६
भक्त्याख्ये चतुर्थे सम्यक्त्वभूषणे साधुभक्तिविषयकं शिखरसेनकथानकम्	४७-५९
स्थिरत्वाख्ये पञ्चमे सम्यक्त्वभूषणेऽपभ्रंशभाषानिबद्धं सुलसाख्यानकम्	५९-७५
सम्यक्त्वस्य द्वितीयं दूषणद्वारम्	७५-९०
शङ्का-काङ्क्षा-विचिकित्सा-कुतीर्थिकप्रशंसा-कुतीर्थिकाभीक्षणसंस्तवनाख्यानि पञ्च सम्यक्त्वदूषणानि	७६
शङ्काख्ये प्रथमे सम्यक्त्वदूषणे श्रीधरकथानकम्	७६-७७
काङ्क्षाख्ये द्वितीये सम्यक्त्वदूषणे इन्द्रदत्तकथानकम्	७८-७९
विचिकित्साख्ये तृतीये सम्यक्त्वदूषणे पृथ्वीसार-कीर्तिदेवकथानकम्	८०-८६
कुतीर्थिकप्रशंसाख्यं चतुर्थं सम्यक्त्वदूषणम्	८७
कुतीर्थिकाभीक्षणसंस्तवनाख्ये पञ्चमे सम्यक्त्वदूषणे जिनदासकथानकम्	८७-९०
सम्यक्त्वस्य तृतीयं लिङ्गद्वारम्	९०-९१
क्षान्ति-संवेग-निर्वेद-अनुकम्पा-अस्तित्वभावाख्यानि पञ्च सम्यक्त्वलिङ्गानि	९०-९१
सम्यक्त्वस्य चतुर्थं श्रद्धानद्वारम्	९१-९२
जीवादिवस्तुपरमार्थसंस्तव-सुदृष्टभावयतिसेवना-व्यापन्नदृष्टिर्वर्जन-कुदृष्टिर्वर्जना- ख्यानि चत्वारि सम्यक्त्वस्य श्रद्धानानि	९२-९३
सम्यक्त्वस्य पञ्चमं छिण्डिकाद्वारम्	९३-९९
राजाभियोग-गणाभियोग-बलाभियोग-सुराभियोग-कान्तावृत्ति-गुरुनिग्रहाख्याः सम्यक्त्वस्य षट् छिण्डिकाः	९३
प्रथमायां राजाभिग्रहच्छिण्डिकायां कार्तिकश्रेष्ठिकथानकम्	९३-९४

द्वितीयायां गणाभियोगच्छिण्डिकायां रङ्गायणमल्लकथानकम्	९६
तृतीयायां बलाभियोगच्छिण्डिकायां जिनदेवकथानकम्	९७
चतुर्थ्यां सुराभियोगच्छिण्डिकायां कुलपुत्रकथानकम्	९८
पञ्चम्यां कान्तारवृत्तिच्छिण्डिकायां सुराष्ट्राश्रावककथानकनिर्देशः	९९
षष्ठ्यां गुरुनिग्रहच्छिण्डिकायां देवानन्दकथानकम्	९९-१००
सम्यक्त्वस्य षष्ठं स्थानकद्वारम्	१००-१०१
जीवास्तित्व-जीवनित्यत्व-जीवकर्तृत्व-जीववेदकत्व-निर्वाणास्तित्व-	
निर्वाणोपायाख्यानि षट् सम्यक्त्वस्थानानि	१००-१०१
सम्यक्त्वमाहात्म्यम्	१०१-१०३
अवाप्तसम्यक्त्वविधेयस्य वक्तव्ये सप्तस्थानकप्रवृत्तिनिरूपणम्	१०३-१०५
जिनबिम्ब-जिनभवन-जिनागम-साधुकृत्य-साध्वीकृत्य-श्रावककृत्य-	
श्राविकाकृत्याख्य सप्तस्थानकनामनिरूपणम्	१०४
जिनबिम्बाख्यं प्रथमं स्थानकम्	१०५-१२०
जिनप्रतिमानिर्माण-तदष्टप्रकारपूजोपदेशः	१०५-१०७
अष्टप्रकारपूजाप्ररूपणम्	१०७-११५
पुष्प-गन्धपूजास्वरूपनिरूपणम्	१०७
पुष्पपूजायां धन्याकथानकम्	१०८-११२
धूप-दीप-अक्षत-फल-घृत-जलपूजास्वरूपनिरूपणम्	११२-११३
जिनपूजायाः सर्वदुःखविमोचकत्वम्	११३-११५
जिनपूजाया विशिष्टसुखदायकत्वम्	११६-११७
प्रथमस्थानकोपसंहारः	११७-१२०
[जिनप्रतिमानिर्माण-तत्पूजा-यात्राद्युपदेशः (पृ० ११७-११९), नूतन-	
जिनबिम्बकरणात् सीदत्परकृतजिनबिम्बपूजनस्य बहुगुणत्वम् (पृ० ११९),	
जिनबिम्ब-चैत्यद्रव्ययोः रक्षण-वर्द्धनविषयकः कर्तव्योपदेशश्च (पृ० ११९-१२०)]	
जिनभवनाख्यं द्वितीयं स्थानकम्	१२१-१५१
जिनमन्दिरनिर्माणोपदेशः	१२१-१२६
[जिनमन्दिरवर्णनम्, 'कानि जिनायतनानि निदर्शनीकृत्य केषु स्थानेषु जिन-	
मन्दिराणि विधापयेत् ?' एतन्निरूपणं च]	
जन्मान्तरोपात्तपुण्यसम्प्राप्तसम्पदा शुभाशयेन परमादरेण च जिनमन्दिरनिर्माणोपदेशः	१२६
चैत्यद्रव्यरक्षाविषये संकासश्रावकजीवकथानकम्	१२७-१२९
जिनभवननिर्माणविषये सम्प्रतिनृपकथानकम्	१३०-१५१
द्वितीयस्थानकोपसंहारः	१५१
[जिनमन्दिरार्थं द्रव्य-भूमि-गोकुलदानोपदेशः, जीर्णशीर्णजिनालयोद्धारोपदेशश्च]	

जिनागमाख्यं तृतीयं स्थानकम्

१५२-१९३

जिनवचन(जिनागम)माहात्म्यम्

१५२-१५६

लौकिकधर्मविषये ग्रामधर्मनिरूपकं नागदत्तकौटुम्बिककथानकम्

१५४-१५५

नाथ-बन्धु-चक्षुः-जननी-जनक-सार्थवाह-हस्तालम्बकपुरुष-भाण्डागार-

चिन्तामण्युप-माभिर्जिनागमस्वरूपप्ररूपणम्

१५७-१६०

जिनागमादर-बहुमानमाहात्म्यं जिनागमप्रामाण्यप्ररूपणं च

१६०-१६१

जिनागमश्रवणानादरे मन्दरपुण्यतायाः कथनम्, एतद्विषये वसुदत्तकथानकं च

१६२-१६४

जिनागमापमान-जिनाज्ञाव्यतिक्रमदोषनिरूपणम्

१६४

जिनागममाहात्म्यप्ररूपणम्

१६५-१६६

त्राण-महानायक-स्वजन-जननी-जनक-मित्र-सुगति-मति-द्वीपत्वेन जिनागमस्य निर्देशः १६६

जिनागमस्य खण्डितत्वे कालदोषप्रभावकथनम्, एतद्विषये कालकाचार्यकथानकं च १६७-१८२

विद्यमानजिनागममहिमा, एतद्विषये रौहिण्यकथानकं च

१८३-१८९

जिनागमपठनानुष्ठानप्ररूपणम्

१८९-१९०

गुरुणां पुस्तकानां च जिनागमसाधनरूपत्वेन निरूपणम्

१९०-१९१

जिनागमलेखन-पूजा-दान-श्रवण-वाचन-स्वाध्यायाद्युपदेशः, तृतीयस्थानकोपसंहारश्च १९१-१९३

साधुकृत्याख्यं चतुर्थं स्थानकम्

१९४-३०२

साधुपर्युपास्तिनिरूपणम्, साधुमाहात्म्यं च

१९४-१९६

साधुषु काय-वाङ्-मनोविनयकर्तव्यस्य निरूपणम्

१९६-१९८

साधुवर्णवादप्ररूपणम्

१९८

साधुभ्योऽशनादि-पीठ-फलकादि-धर्मोपकरणानां दानस्योपदेशः

१९८-२०१

साधुभ्योऽशनादीनां दानस्य माहात्म्यकथने दृष्टान्ताः

२०१

अशनादिदानविषये इहलोकफलसंसूचकं मूलदेवकथानकम्

२०१-२१७

अशनादिदानविषये इहलोकफलसंसूचकं देवधरकथानकम्

२१७-२३०

अशनादिदानविषये इहलोकफलसंसूचकं देवदिन्नकथानकम्

२३०-२४४

अशनादिदानविषये इहलोकफलसंसूचकं अभिनवश्रेष्ठिकथानकम्

२४४-२४५

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं धनसार्थवाहकथानकम्

२४५-२४८

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं ग्रामचिन्तकोदाहरणम्

२४८-२५१

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं श्रेयांसकथानकम्

२५१-२६६

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं चन्दनार्याकथानकम्

२६६-२७३

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं द्रोणकाख्यानकम्

२७३-२८२

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं सङ्गमकाख्यानकम्

२८२-२८९

अशनादिदानविषये परलोकफलसंसूचकं कृतपुण्यकाख्यानकम्

२८९-२९६

साधुशय्यादानोपदेशः, साधुमाहात्म्यम्, शय्यादानमाहात्म्यम्,

साधुप्रतिपत्त्युपदेशः, चतुर्थस्थानकोपसंहारश्च

२९६-३०२

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइमहावीरवद्धमाणं सामिस्स ॥

॥ णमो त्थु णं अणुओगधराणं थेरभदंताणं ॥

श्रीमद्देवचन्द्रसूरिसन्दृब्धविवरणोपेतं

आचार्यश्रीप्रद्युम्नसूरिविरचितं 'स्थानकानि' इत्यपरनामकं

मूलशुद्धिप्रकरणम् ।

ॐ नमः सर्वज्ञाय ।

बालत्वे शैलराजं चलदखिलधरामण्डलं कम्पयित्वा,

शुद्धं सम्यक्त्वरत्नं सुरविसरपतेर्मानसे यश्चकार ।

तं नत्वा वर्द्धमानं चरमजिनपतिं मूलशुद्धेः स्वशक्त्या,

स्पष्टां व्याख्यां विधास्ये निजगुरुचरणद्वन्द्वसद्भक्तियोगात् ॥

तत्र सुगृहीतनामधेयो भगवान् श्रीमत्प्रद्युम्नसूरिः श्रमणोपासकप्रतिमासङ्क्षिप्तस्वरूपावबोध-
बुद्धि(द्धि)श्रावकप्रार्थनातः सङ्क्षेपत एव तत्स्वरूपमभिधातुकामो मिथ्यात्वान्धकारबहुलपट-
लान्तरितदर्शनान् भूरिभव्यजीवानपि भगवत्सर्ववेदिप्रभुप्रणीतप्रवरप्रवचनप्रतिपादितप्रकारेणोपलभ्य
तदवबोधकं दिनकर इव भास्वरकरनिकरमादित एव दर्शनप्रतिमायाः किञ्चिद्विशेषस्वभावाविर्भावकं
मूलशुद्ध्यभिधानं स्थानकानीत्यपरनामकं प्रकरणमारब्धवान् । अस्य च सम्यक्त्व-
शुद्ध्यादिप्रतिपादनतः स्वर्गापवर्गसंसर्गहेतुभूतत्वेन श्रेयोभूतत्वाद् विघ्नाः सम्भवन्ति । यत उक्तम्—

श्रेयांसि बहुविघ्नानि भवन्ति महतामपि ।

अश्रेयसि प्रवृत्तानां क्वापि यान्ति विनायकाः ॥१॥

इत्यतो विघ्नविनायकोपशान्तये । तथा प्रयोजनादिरहितेऽपि शास्त्रे धीधना न प्रवर्तन्ते, उक्तं च—

सर्वस्यैव हि शास्त्रस्य कर्मणो वाऽपि कस्यचित् ।

यावत् प्रयोजनं नोक्तं तावत् तत् केन गृह्यताम् ? ॥२॥ तथा—

१. सं० वा० सु० 'धशुद्धि' ॥ २. ला० 'बहुल' ॥ ३. सं० वा० 'लभ्य त' । सु० 'लभत' ॥ ४.
सं० वा० सु० 'मायां' ॥

सिद्धार्थं सिद्धसम्बन्धं श्रोतुं श्रोता प्रवर्तते ।

शास्त्रादौ तेन वक्तव्यः सम्बन्धः सप्रयोजनः ॥३॥

अतः प्रयोजनादिप्रतिपादनार्थम् । अन्यच्च शिष्टाः कचिदिष्टे वस्तुनि प्रवर्तमानाः सन्तोऽभीष्ट-
देवतानमस्कृतिकरणपूर्वकमेव प्रवर्तन्ते, अतः शिष्टसमयानुपालनमपि न्यायोपपन्नम् । यत उच्यते—

शिष्टसमयानुपालनविकलं सच्छास्त्रकरणमपि नैव ।

विद्वज्जनप्रशस्यं भवति यतोऽसौ समनुपाल्यः ॥४॥ इति

तत्प्रतिपालनाय चाऽऽदावेव नमस्कारमाह—

वंदामि सव्वज्जिणिंदवाणी पसन्नगंभीरपसत्थसत्था ।

जुत्तीजुया जं अभिनंदयंता नंदंति सत्ता तह तं कुणंता ॥१॥

व्याख्या—सा च संहितादिक्रमेण भवति । यत उक्तम्—

समुदितपदामादौ विद्वान् पदेष्विह संहितां,

तदनु च पदं तस्यैवार्थं वदेदथ विग्रहम् ।

निपुणभणितं तस्याऽऽक्षेपं तथाऽस्य च निर्णयं,

बुधजनमता सूत्रव्याख्या भवेदिति षड्विधा ॥५॥

तत्राऽस्खलितपदोच्चारणमेव संहिता । वन्दे सर्वज्ञं जिनं इन्द्रं वाणीमित्यादीनि तु पदानि ।
पदार्थः पुनः ‘वन्दे’ स्तुवे । कम् ? ‘सर्वज्ञजिनेन्द्रवाणीं’ सर्वं=समस्तं स्व-परपर्यायभेदभिन्नं पदार्थसार्थं
जानाति=बुध्यत इति सर्वज्ञः=निखिलवेदी, रागादिशत्रुजेतृत्वाद् जिनाः=सामान्यकेवलिनः, तेषाम्
इन्दनाद् अष्टमहाप्रातिहार्याद्यैश्वर्ययुक्तत्वाद् इन्द्रः=नायको जिनेन्द्रः=तीर्थकृत, सर्वज्ञश्चाऽसौ जिनेन्द्रश्च
सर्वज्ञजिनेन्द्रः, तस्य वाणी=वाक्, अङ्गा-ऽनङ्गादिभेदभिन्ना, ताम् । कथम्भूताम् ? ‘प्रसन्नगम्भीर-
प्रशस्तशास्त्रां’ प्रसन्नानि=प्रत्यायकानि सुखावबोधनीत्यर्थः, गम्भीराणि=दृष्टजीवाऽजीवादिगम्भीर-
पदार्थत्वात् परैरलब्धमध्यानि, प्रशस्तानि=मङ्गल्यानि हिंसादिनिवारकत्वात्, शास्त्राणि=ग्रन्था यस्याः
सा तथा ताम् । यद्वा प्रसन्नः=जितक्रोधादित्वेनोत्तमोपशमरसवान्, गम्भीरः=श्रुतकेवलित्वात्
परैरलब्धमध्यः, प्रशस्तः=निःशेषमङ्गलालयत्वात्, शास्ता=प्ररूपकः सूत्ररूपतया गणधरो यस्याः सा
प्रसन्नगम्भीरप्रशस्तशास्त्रिका, ताम् । पुनरपि कथम्भूताम् ? ‘युक्तियुतां’ युक्त्या=उपपत्त्या युता=समेता
युक्तियुता, न तु पुराणादिवदाज्ञासिद्धैव । उक्तं च तद्वेदिभिः—

१. सं० वा० सु० ज्ञायोप ॥ २. ला० ‘वाणीं’ ॥ ३. ला० ‘णीमित्या’ ॥ ४. सं० वा० सु० मङ्गल्यानि
॥ ५. सं० वा० सु० यस्यां ॥ ६. सं० वा० सु० प्रसन्ना ॥ ७. सं० वा० सु० ‘रसा वाग्, गम्भी’ ॥

पुराणं मानवो धर्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सितम् ।

आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि युक्तिभिः ॥६॥

एतच्च प्रतिपादयद्भिस्तैस्तेषां युक्तिपरीक्षणाक्षमत्वमावेदितं भवति । उक्तं च—

अस्ति वक्तव्यता काचित् तेनेदं न विचार्यते ।

निर्दोषं काञ्चनं चेत् स्यात् परीक्षाया बिभेति किम् ? ॥७॥

अतस्ताम् । 'नीयां लोवमभूया य आणिये'त्यादिप्राकृतलक्षणादिह पूर्वत्र चानुस्वारलोपो द्रष्टव्यः । तथा यां 'अभिनन्दयन्तः' स्तुवन्तः । तथा तथाशब्दस्य समुच्चयार्थत्वात्, तां कुर्वन्तश्च । तदुक्तानुष्ठानकरणात् किम् ? 'नन्दन्ति' नराऽमराऽपवर्गसुखसमृद्धिप्राप्त्या समृद्धा भवन्ति । 'सत्त्वाः' प्राणिन इति । उक्तः पदार्थः । पदविग्रहोऽपि पदार्थेनैव सहोक्त इति न पृथगुच्यते ।

अधुना चालना-प्रत्यवस्थाने सममेवोच्येते । ननु किमर्थं सर्वज्ञजिनेन्द्र इति पदत्रयोपादानम् ? सर्वज्ञ इत्युक्ते जिन इति लभ्यत एव । सर्वज्ञस्य हि निःशेषान्तरशत्रुविजयेनैव सर्वज्ञत्वोपपत्तेः । नैवम्, हरि-हर-हिरण्य गर्भादीनामपि परैः सर्वज्ञत्वेनाभ्युपगतत्वाद् मा भूत् तद्वाण्यामपि सम्प्रत्यय इति तन्निषेधार्थं जिनपदग्रहणम् । तर्हि सर्वज्ञजिन इत्येतदस्तु । इन्द्र इत्येतदतिरिच्यते, सर्वज्ञजिनानां शेषदेवापेक्षयेन्द्रत्वात् । सत्यम्, सामान्यकेवलिनामपि सर्वज्ञजिनत्वेनाव्यभिचारादिति तीर्थकरप्रति-पत्त्यर्थमिन्द्रपदोपादानम् । यद्येवं सर्वज्ञेन्द्र इत्येतदस्तु, जिनेत्येतन्निरर्थकम्, सर्वज्ञेन्द्रस्यान्तररिपुविजयेन जिनत्वाद् । अस्त्येवम्, किन्तु शिव-केशव-सुरज्येष्ठानामपि तत्पाक्षिकैरेवमङ्गीकृतत्वात् तन्निषेधार्थं जिनपदकरणम् । एवं तर्हि सर्वज्ञ इति पदमपार्थकं जिनेन्द्रस्य सर्वज्ञत्वेनाव्यतिरेकात् । सत्यम्, किन्तु श्रुत-सामान्यावधि-ऋजुमतिमनःपर्यायज्ञानिजिनापेक्षया परमावधिविपुलमतिमनःपर्यायज्ञानि-जिनानामिन्द्रत्वाद् मा भूत् तेष्वपि सम्प्रत्यय इति सर्वज्ञपदोपादानमिति स्थितम् । एवमन्यत्रापि चालना-प्रत्यवस्थाने अभ्यूहो ।

अत्र च वन्दामीत्यादिनमस्कारकरणस्य पापपङ्कप्रक्षालकत्वेन मङ्गलत्वाद्, मङ्गलस्य च विघ्नविनाशकत्वाद् विघ्नापोहमाह । प्रयोजनं चैहिकमामुष्मिकं च । तदपि श्रोतुः कर्तुश्च । तत्रैहिकं श्रोतुः शास्त्रावगमः, कर्तुश्च सत्त्वानुग्रहः, पारत्रिकमुभयोरपि स्वर्गा-ऽपवर्गप्राप्तिः, तदत्र नन्दन्तीत्यनेन प्रतिपादितं द्रष्टव्यम् । अभिधेयं पुनरस्य प्रकरणस्य सम्यक्त्वशुद्ध्यादि, तच्चाभिनन्दयन्त इति, अनेनाऽऽगमस्य च विघ्नविनायकत्वाद् विघ्नाश्रद्धानविषयताम्, कुर्वन्तश्चानेन तदुक्तानुष्ठानकरणं च दर्शयतोक्तं भवति । सम्बन्धश्चास्य शास्त्रस्य वचनरूपापन्नस्योपायत्वाद् दर्शनशुद्ध्यादेशोपेयत्वादित्युपायोपेयलक्षणः,

१. बृहत्कल्प सूत्र चूर्ण्यादिप्राचीनग्रन्थेष्वियं गाथेदृश्युपलभ्यते 'नीया लोवमभूया, य आणिया दीह-बिन्दुदुग्धावा । अत्थं गर्मेति तं चिय, जोतेसिं पुव्वमेवाऽऽसी' ॥ २. ला० स्थाने उच्येते ॥ ३. सं० वा० सु० 'मपि स' ॥ ४. वा० 'ज्ञान' ॥ ५. सं० वा० सु० 'पर्यायि' ॥ ६. सं० वा० सु० 'स्य श्रद्धानविष' ॥

सामर्थ्यादिवोक्तो दृश्य इति प्रथमवृत्तार्थः ॥१॥

यामभिनन्दयन्त इत्यनेन सम्यक्त्वशुद्ध्यादि भणिष्यामीति सूचितम्, तच्च सम्यक्त्वं निसर्गादधिगमाच्च भवति । तत्र निसर्गलाभो बहलमिथ्यात्वमूलपटलान्तरितत्वाद् दुःषमालोकानां दुर्लभः, गुरुपदेशाच्च साम्प्रतं प्राय उपलभ्यत इति गुरुपदेशमेव तावदावेवाऽऽह—

जिणाण धम्मं मणसा मुणेत्ता, सो चेव वायाएँ पभासियव्वो ।

काएण सो चेव य फासियव्वो, एसोवएसो पयडो गुरूणं ॥२॥

जिनाः=रागाद्यरातिजयवन्तः, तेषां सम्बन्धिनं 'धर्म' श्रुत-चारित्राख्यम् । तत्र दुर्गति-प्रपतदाङ्गिणधरणात् सुगतौ च धारणाद् धर्मः । उक्तं च—

दुर्गतिप्रसृतान् जन्तून् यस्माद्धारयते ततः ।

धत्ते चैतान् शुभे स्थाने तस्माद्धर्म इति स्मृतः ॥८॥

अतस्तं 'मनसा' अन्तःकरणेन 'मत्वा' ज्ञात्वा स चैव 'वाचा' वचनेन 'प्रभाषितव्यः' अत्यर्थं भणनीयोऽन्येषां पुरत इति शेषः । तच्छब्दः पूर्वप्रक्रान्तधर्मवाची । एवशब्दोऽवधारणे, स चैवमवधारयति—जिनधर्म एव भणनीयः, न शाक्यादिसम्बन्धी । यत उक्तं परमगुरुभिः श्रावकवर्णके—

एस णं देवाणुप्पिया ! निगंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे । इति

अनेन च श्रुतधर्ममाह, तस्य वागोचरत्वात् । 'काएण शरीरेण स चैव च 'स्पर्शनीयः' अनुचरणीयः । अत्रापि तच्छब्दः पूर्ववत् । 'चः' समुच्चये, स च भिन्नक्रमे स्पर्ष्टव्यश्चेत्यत्र द्रष्टव्यः । 'एव' अवधारणे, अनेन तु चारित्रधर्ममाह, तस्य हि क्रियारूपत्वात् । द्वितीयश्चकारश्चानुक्तसमुच्चये । स चैतत् समुच्चिनोति आदावागमश्रवणम्, श्रवणानन्तरं च मननम्, तदनन्तरं च शेषाणीति । 'एषः' अनन्तरोक्तः 'उपदेशः' अनुशासनं 'प्रकटः' प्रसिद्धो 'गुरूणां' यथावस्थितशास्त्रार्थप्ररूपकाणां सम्बन्धीति वृत्तार्थः ॥२॥

आदावागमश्रवणं विधेयमित्युक्तं तस्य च महाकल्याणकारकत्वमाह—

सिद्धंतसारार्हं निसामयंता, सम्मं उस्सासे मुणिपुंगवाणं ।

पावेंति कल्लाणपरंपराओ, गुणंधरा हुंति वयंति सिद्धिं ॥३॥

सिद्धान्तः= सर्वविद्वचनम्, तस्य सारान्=सूक्ष्मपदार्थरूपान् 'निशमयन्तः' शृण्वन्तः 'सम्यग्'

१. ला० दादावाह ॥ २. ला० कायेन ॥ ३. सं० वा० सु० स एव ॥ ४. सं० वा० सु० द्रष्टव्यश्चे ॥

५. ला० चैवं समु ॥ ६. ला० सयासे ॥

अवैपरीत्येन विनयादिक्रमरूपेण । यतो विनयवत एव यथावस्थितार्थश्रुतलाभो भवति, न दुर्विनीतस्य । उक्तं च—

विणय^१णिण्यस्स मुणिणो दिंति सुयं सूरिणो किमच्छेरं ? ।

को वा ण देइ भिक्खं अहवा सोवणिणए थाले ? ॥१॥

सेहम्मि दुव्विणीए विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे ।

न वि दिज्जइ आभरणं पलियत्तियकण्ण-हत्थस्स ॥१०॥

‘सकाशे’ पार्श्वे । ‘मुनिपुङ्गवानां’ प्रवचनधरसूरीणाम्, ‘प्राप्नुवन्ति’ लभन्ते, कल्याणं=शुभं तस्य परम्पराः=उत्तरोत्तरशुभसन्ततिरूपाः । उक्तं च—

मोहं धियो हरति कापथमुच्छिनत्ति, संवेगमुन्नमयति प्रशमं तनोति ।

सूतेऽनुरागमतुलं मुदमादधाति, जैनं वचः श्रवणतः किमु यन्न दत्ते ॥११॥

ततश्च गुणान्=ज्ञानादिकान् क्षान्त्यादिकांश्च धारयन्ति=बिभ्रति गुणधरा भवन्ति=जायन्ते । अनुस्वारः पूर्ववत् । गुणधराश्च भूत्वा ‘व्रजन्ति’ गच्छन्ति सिद्धिं मुक्तिमिति वृत्तार्थः ॥३॥

सम्यग्दर्शनलाभस्योपायमभिधायाधुना तत्प्रतिपत्तिक्रमं श्लोकेनाऽऽह—

समणोवासगो तत्थ, मिच्छत्ताओ पडिक्कमे ।

दव्वओ भावओ पुव्विं, सम्मत्तं पडिवज्जइ ॥१४॥

श्राम्यन्तीति श्रमणाः=साधवस्तेषामुपासकः=सेवकः श्रमणोपासकः । तथा च—

भत्तिभरनिब्भरंगो सुयधम्मत्थी तिकालमणुदियहं ।

जो पज्जुवासइ जई तं समणोवासगं बेति ॥१२॥

तत्रशब्द उत्क्षेपार्थः । मिथ्यात्वम्=अदेवादिषु देवत्वादिप्रतिपत्तिरूपम् । तथा च—

अदेवासाध्वतत्त्वेषु यद्देवत्वादिरोचनम् ।

विपरीतमतित्वेन तन्मिथ्यात्वं निगद्यते ॥१३॥

[?तस्मात्] ‘प्रतिक्रामति’ प्रतीपं गच्छति। ‘द्रव्यतः’ बाह्यवृत्त्या तत्कृत्यपरित्यागेन।

१. सं० वा० सु० ‘र्थस्वरूपलाभो ॥ २. सं० वा० सु० ‘यण्णुयस्स ॥ ३. ‘परिकर्तितकर्णहस्तस्य’ इत्यर्थः ॥ ४. सं० वा० सु० ‘नवरसू’ ॥ ५. सं० वा० सु० धत्ते ॥ ६. “नीया लोव” इत्यादिना प्रथमगाथाटीकायां निदर्शितेन प्रमाणेन ‘गुणधरा’ इत्येतत् सिद्धं ज्ञेयम् ॥ ७. ला० ‘वासओ ॥ ८. ला० पुव्वं ॥ ९. सं० वा० सु० याति ॥

‘भावतः’ अन्तःकरणवृत्त्या तत्प्रतिपत्तिपरिहारेण । ‘पूर्व’ प्रथमं सम्यक्त्वं— [त, ततश्च सम्यक्त्वं मिथ्या- त्वविपरीतं ‘प्रतिपद्यते’ अङ्गीकरोति । यद्वा काकाक्षिगोलकन्यायेन द्रव्यतो भावतः । पूर्वमित्युभयत्र सम्बध्यते । तेन द्रव्यतश्चैत्यवन्दना १] दिकृत्यकरणतः, भावतोऽनन्यचेतोवृत्त्या पूर्वमणुव्रतप्रतिपत्तेः सम्यक्त्वं प्रतिपद्यत इति श्लोकार्थः ॥४॥

प्रतिपन्नसम्यक्त्वस्य च यद् यद् न कल्पते तत् तद् वृत्तद्वयेनाऽऽह—

न कप्पए से परतित्थियाणं, तहेव तेसिं चिय देवयाणं ।

परिग्गहे ताण य चेइयाणं, पभावणा-वंदण-पूयणाइं ॥५॥

लोणाण तित्थेसु सिणाण दाणं, पिंडप्पयाणं हुणणं तवं च ।

संकंति-सोमग्गहणाइएसुं, पभूयलोणाण पवाहकिच्चं ॥६॥

परतीर्थिकानां वन्दनादि न कल्पत इति सम्बन्धः । ‘न कल्पते’ न युज्यते, ‘से’ तस्य प्रतिपन्नदर्शनस्य, परे=आत्मव्यतिरिक्तास्तीर्थिकाः=दर्शनिनः, परे च ते तीर्थिकाश्च परतीर्थिकास्तेषाम् । ‘तथैवभ’ तेनैव प्रकारेण, तेषां परतीर्थिकानाम्, ‘चिय’ ति अवधारणार्थस्तेन तेषामेव परतीर्थिकानां या देवताः=शास्तरूपाता(स्ता)सां ‘परिग्रहे’ स्वीकारे । ‘तेषां च’ तेषामेव चैत्यानां जिनबिम्बानां तत्परिगृहीतजिनायतनानामित्यर्थः । प्रभावना=प्रशंसादिभिः, वन्दनं=प्रणामादिभिः, पूजनं=पुष्पादिभिः, आदिशब्दाद् विनय-वैयावृत्य-स्नात्रयात्रादिकमपि गृह्यते । उक्तं च-

नो से कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा, अन्नतित्थियदेवयाणि वा, अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि चेइयाणि वा, वंदित्तए वा नमंसेत्तए वा, पुब्बिं अणालत्तएणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पयाउं वा, तेसिं गंधमल्लाइं पेसिउं वा ।

इति (आवश्यकसूत्रप्रत्याख्यानाध्ययने, पत्र ८११ तमम्) ॥५॥

तथैतदपि न कल्पत इति योगः । ‘लोकानां’ मिथ्यादृष्टिजनानां ‘तीर्थेषु’ वाराणसी-गयाप्रभृतिषु गत्वेति शेषः । ‘स्नानम्’ अङ्गप्रक्षालनम्, ‘दानं’ वितरणम्, ‘पिण्डप्रदानं’ पितृनिमित्तकल्पितौदनपिण्डस्य नीरादिप्रक्षेपणम्, ‘हवनम्’ अग्रावाहुतिक्षेपरूपम्, ‘तपः’ तीर्थोपवासादिकम्, ‘चः’ समुच्चये । स्नानादीनि तु डमरूकमध्यग्रन्थिन्यायाद् उभयत्र सम्बध्यन्ते । अतः

१. सं० वा० सु० तत्प्रवृत्तिपरिहा ॥ २. [] एतच्चिह्नान्तर्वर्ती पाठः की-ला० प्रत्योरेवेति विज्ञेयम् ॥ ३. ला० णाई ॥ ४. ला० लोयाण । ५. तां सु य ण्हाण दाणं । ६. ला० कादीनां । ७. सं० वा० सु० नादि कल्पत । ८. सं० वा० सु० देवता । ९. सं० वा० सु० बिम्बा तत्प । १०. ला० अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नतित्थियपरिग्गहियाणि वा अरिहंतचेयाणि वंदि ।

सङ्क्रान्ति-सोमग्रहणादिष्वप्यायोज्यन्ते । सङ्क्रान्तौ=रवे राश्यन्तरसङ्क्रमणे, सोमग्रहणे=चन्द्रविमानस्य राहुविमानान्तरणे, आदिशब्दात् सूर्यग्रहणाऽमावास्या-व्यतीपातादयोऽवबोद्धव्याः । किमित्यदो न कल्पते ? यतः 'प्रभूतलोकानां' बहुजनानां प्रवाहकृत्यं गङ्गिकाप्रवाहवद् अज्ञानविजृम्भितमेतदिति शेषः ।

जहा कोइ बंभणो पौक्खरं गओ । सो य तिपुक्खरे न्हाणत्थं ओयरिउकामो हत्थडियंतंभायणं एगत्थ ठवित्ता साहिण्णाणनिमित्तं उवरि वालुगाए उक्कुरुडं काउं पुक्खरे पइट्ठो । इओ य जत्तागयाणेगलोगेहिं चिंतियं 'जहेस लंबचोडबंभणो विउसो वेयवी बहुजाणगो एवं करेइ तहा नज्जइ एवं कज्जमाणं महाफलं होइ ।' तओ सयललोगो वालुयाए उक्कुरुडं काउं न्हाणत्थं ओयरइ । सो य बंभणो न्हाउत्तिण्णो जाव तं तंभायणोक्कुरुडं पलोएइ ताव कयाणि कज्जमाण्णाणि य अणेगाणि उक्कुरुडाणि पिच्छइ । तओ तं निउक्कुरुडमजाणमाणो विमणदुम्मणो जाओ । ताहे मित्तेण भणिओ 'मित्त ! तुमं गिहाओ धम्मत्थी आगओ इह तित्थे न्हाउत्तिण्णो सहसा किं संपइ दुम्मणो जाओ ? ।' तओ तेण भणियं—

गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।

पश्य लोकस्य मूर्खत्वं हारितं ताम्रभाजनम् ॥१४॥

ईदृशो लोकस्य प्रवाह इति वृत्तद्वयार्थः ॥५-६॥

साम्प्रतं सम्यग्दर्शनस्यैव भूषणादीन्यभिधातुकाम उत्क्षेपं वृत्तेनोक्तवान्—

पंचेव सम्पत्तविभूषणाइं, हवंति पंचेव य दूसणाइं ।

लिंगाई पंच च(च्च)उ सदहाण, छच्छिंडिया छच्च हवंति ठाणा ॥७॥

'पञ्च' इति सङ्ख्या, 'एव' अवधारणे, सम्यक्त्वस्य=सम्यग्दर्शनस्य, विभूषणानि=आभरणकल्पानि सम्यक्त्वविभूषणानि, 'भवन्ति' जायन्ते । तथा 'पञ्चैव' पञ्चसङ्ख्यान्येव, 'चः' समुच्चये, 'दूषणानि', विकृतिजनकानि, सम्यक्त्वस्यैव इति सर्वत्र योजनीयम् । 'लिङ्गानि' चिह्नानि । 'पञ्च' इति तथैव । 'चउ'ति चत्वारि 'श्रद्धानानि' यैर्विद्यमानं सम्यक्त्वं श्रद्धीयते । प्राकृतत्वाद् एकवचननिर्देशः । 'षड्' इति संख्या, 'चः' समुच्चये, 'छिण्डिकाः' अपवादाः । षट् च भवन्ति 'स्थानकानि' सम्यक्त्वावस्थानानि । पुंलिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वादेव । द्वितीयक्रियोपादानं त्वाद्यन्तग्रहणे मध्यग्रहणमिति न्यायप्रदर्शनार्थमिति वृत्तार्थः ॥७॥

साम्प्रतं 'यथोद्देशं तथा निर्देशः' इति न्यायमाश्रित्य भूषणानि वृत्तेनाऽऽह—

१. ला० चान्द्र । २. ला० पौक्करं । ३. ला० 'फलं भवइ । ४. सं० वा० सु० 'णि अणेगाणि य उक्कु' । ५. ला० निजुक्कुरु' । ६. ला० लोकप्रवाह । ७. ला० भवंति ॥ ८. ला० एवः ॥

कोसल्लया मो जिणसासणम्मि, पभावणा तित्थनिसेवणा य ।

भत्ती थिरत्तं च गुणा पसत्था, सम्मत्तमेए हु विभूसयंति ॥८॥

‘कोसल्लया’ कुशलता=निपुणत्वम् । [मो इति पादपूर्णे ।] ‘जिनशासने’ अर्हद्दर्शने, या सा प्रथमं सम्यक्त्वभूषणमिति । इयं च कुशलता यथाऽभयकुमारेणाऽऽर्द्रककुमारप्रतिबोधनं प्रति कृता तथा विधेया, सम्यक्त्वभूषणाय च भवति । कथानकं च सूत्रानुपात्तमपि मुग्धजनोपकारार्थं कथ्यते—

(१. आर्द्रककुमारकथानकम्)

अत्थि इह जंबुदीवे भारहखेतस्स मज्झखंडम्मि । अच्छेरयसयकलिओ पमुइयजणसंकुलो रम्मो ॥१॥
दुद्धरधम्मधुरंधरजिण-गणहरचरणफरिसणपवित्तो । धणियं धण-धन्नसमिद्धिबंधुरो जणवओ मगहा ॥२॥
नगरगुणाण निवा विउलाविलयाया तिलयसंकासं । दससु दिसासु पगासं नगरं तत्थत्थि रायगिहं ॥३॥

जं च नंदणवणं व महासालालंकिं, विजयदारं व, फलिहाणुगं, मेरुसरीं व कल्लाण्डाणं, केलाससिहरं व ईसरनिवासं, सुरालयभूयलं व देवकुलालंकिं, गणं च चित्तोवसोहियं, महाकुलं व बहुसयणसमणियं । किं बहुणा ?

वररायमण-चच्चर-संघाडय-तिय-चउक्कसुविभत्तं ।

हट्ट-पवा-सह-उववण-सर-वावी-कूवरमणिज्जं ॥४॥

तं अमराउरिसरिसं वरनगरं दरियरायकरिसीहो । उवसंतडिंबडमरं परिवालइ सेणिओ राया ॥५॥

जो य महाविदेहं व वरविजयकलिओ, माणसं व सया रायहंससेविओ, विण्हु व्व सुदरिसणधरो, उदयमित्तो व्व अणुरत्तमंडलो, पयावइ व्व कमलालओ, चंदो व्व सयललोगलोयणाणंदणो ति ।

तस्स दुवे भज्जाओ पियंवयाओ सुरूवकलियाओ । विण्णाण-विणय-सम्मत्त-सत्त-चारित्तजुत्ताओ ॥६॥
सोहणगव्विरीओ पंचाणुव्वय-गुणव्वयधरीओ । णामेण सुणंदा-चेल्लणाओ रायस्स इड्डाओ ॥७॥

तत्थ सुनंदाए नियबुद्धिमाहप्पपरितुलियबहस्सई पंचसयमंतिप्पहाणो सयलमहारज्जभरोव्व-हणधवलो अभयकुमारो णाम उत्तो । ताणं च पंचप्पयारमणिंदियविसयसुहमणुहवंताणं धम्मत्थोवज्जणं कुणंताणं सिरिसमणसंघपूयपरायणाणं सिरिवीरजिणमाराहयंताणं वच्चए कालो ।

इओ य जलहिमज्झड्डिओ अत्थि अद्दयदेसो नाम देसो । तत्थ अद्दयउरं नाम महानगरं । तहिं

१. ला० विना जिणसासणे ॥ २. ला० सं० धरणीविलयाए तिल ॥ ३. सं० वा० सु० पलिहा० ॥
४. ला० भूतलं ॥ ५. ला० गयणं ॥ ६. ला० ‘सिंघाड’ ॥ ७. ला० ‘कूय’ ॥ ८. ला० पुत्तो ॥ ९. ला० ‘पराणं’ ॥ १०. ला० अद्दयपुरं ॥

च पणमंतमहंताणेयसामंतमउलिमउडमणिमसिणियकमवीढो अद्दयराओ नाम राया । तस्स य रूवाइगुणगणोहामियतियससुंदरी अद्दया णाम देवी । तीसे य पहाणहारो व्व गुणगणावासो जंतुसंतावणासो सच्छयाणिवासो सुवित्तआसओ बहुनरणारीहिययसमासासओ अइसुद्धत्तणाओ अविज्जमाणदोसओ अद्दयकुमारो णाम पुत्तो । सो य जम्मंतरोवज्जियविसिद्धविसयसुहमणुहवंतो चिट्ठइ ।

इओ य सेणियराय-अद्दयराईणं पुव्वपुरिसपरंपरागयपीईपरिपालणत्थं पइदिणं परोप्परपहाण-कोसल्लियपेसणेण कालो परिगलइ । अन्नया य समागओ सेणियरायपेसिओ महंतओ । सो य पडिहारेण पवेसिऊण निवेइओ 'देव ! सेणियमहंतओ दुवारे चिट्ठइ ।' तओ सिणेहरसनिब्भर-समुब्भिज्जमाणरोमंचकंचुगेण भणिओ राइणा 'लहुं पवेसेह' ति वयणाणंतरमेव पविट्ठो । पणामं काऊण निविट्ठो दिन्नासणे । सम्माणिओ य जहोचियतंबोलाइपडिवत्तीए । भणियं च 'अइ ! कुसलं सपरियणस्स महारायसेणियस्स ?' तेण भणियं 'देव ! कुसलं' ति । तओ समप्पियाणि महंतएण वरवत्थ-कंबल-निंबपत्त-सोवंचलाइयाणि कोसल्लियाणि । ताणि य दट्ठूण भणियं राइणा 'सेणियरायं मोत्तूण को अम्हणं अण्णो परमबंधवो ?' ति । तओ नियुपिउणो अच्चंतसिणेहसंभमसाराइं वयणाइं सोऊण भणियमद्दयकुमारेण 'ताय ! को एस सेणियमहारायराओ ?' तओ रत्ता जंपियं 'पुत्त ! मगहाजणवयवई महासासणो नरवई । तेण य समाणं अम्ह कुलक्कमागयां गरुयपीई । तस्संतिओ य समागओ एस उवायणाणि गहेऊण महंतओ' । तओ महंतयं उद्दिसिय पुच्छियमद्दयकुमारेण 'भो किमत्थि कोइ तुम्ह सामिणो जोगउत्तो ? एयमायन्निऊण सहरिसं जंपियं महंतएण-

'उप्पत्तियाइचउविहबुद्धिजुओ मंतिपंचसयसामी । सूरुो सरलो सुहगो पियंवओ पढमआभासी ॥८

दंक्खो कयण्णुओ णेयसत्थपारंगओ कलाकुसलो ।

विन्नाण-विणय-लज्जा-दाण-दया-सीलपरिकलिओ ॥९॥

दढसोहिओ सुरूवो पयाणुसारी सलक्खणो धीरो । अविचलसम्मत्तधरो सावगधम्मम्मि उज्जुत्तो ॥१०॥

सिरिवीरजिणेसरचरणकमलभसलो सुसाहुजणभत्तो ।

उचियकरणोज्जयमई साहम्मिय-पयइ-पणईणं ॥११॥

किं बहुणा तियसेहि वि माणिज्जइ जो गुणि ति कलिऊण ।

सेणियरायंगरुहो सो अभओ नाम वरकुमारो ॥१२॥

भुंजइ सययमचिंतो जस्स पंभावेण सेणिओ भोए ।

तेलोक्कपायडजसो सो कुमर ! तए कह न नाओ ?' ॥१३॥

१. सं० वा० सु० तीसे पहा' ॥ २. सं० वा० सु० 'या सम' ॥ ३. सं० वा० सु० 'णं परम' ॥ ४. ला० सेणियराओ ॥ ५. ला० 'यसामी' ॥ ६. सं० वा० सु० तेण समा' ॥ ७. सं० वा० सु० 'या पीई' ॥ ८. ला० जोगपुत्तो । ९. सं० सु० पयईणं ॥ १०. सं० वा० सु० पसाएण ॥

इमं च सोऊण हरिसभरनिब्भरगेणं जंपियं कुमारेण 'ताय ! जहा तुम्हाणं पीई तहा अम्हे वि काउं इच्छामो ।' राइणा भणियं 'पुत्त ! जुत्तमेयं जं कुलक्कमागया पीई पालिज्जई । भणियं च—

उट्ठइ सणियं सणियं वंसे संचरइ गाढमणुलगो ।

थेरो व्व सुयणणेहो न वि थक्कइ बिउणओ होइ ॥१५॥

ते धन्ना सप्पुरिसा जाण सिणेहो अभिन्नमुहरागो ।

अणुदियहवट्ठमाणो रिणं व पुत्तेसु संकमइ ॥१६॥

तओ कुमारेण भणिओ महंतओ 'जया ताओ विसज्जेइ तया तुमं मम मिलेज्जासु ।' तेण भणियं 'मेवं' ति । तओ रायपुरिसदंसिए पासाए समावासिओ । राइणा वि पउणीकयाणि रयण-मुत्ताहल-विट्ठुमाइयाणि पहाणकोसल्लियाणि । तओ अन्नम्मि दिणे वत्था-ऽऽभरणाइएहिं सम्माणेऊण उवायणसमे-यनियपहाणपुरिससहायजुत्तो विसज्जिओ समाणो गओ कुमारसमीवं । कहिओ विसज्जणवुत्तंतो । कुमारेण वि अइथूलमुत्ताहल-सुतेयमहारयणाइयाणि अक्कंगाणि समप्पिऊण जंपियं जहा 'मह वयणेण भणिज्जासु अभयकुमारं जहा-तए सह अद्वयकुमारो पीई काउं इच्छइ' ति भणेऊण विसज्जिओ । अणवरयसुहपयाणेहि य पत्तो रायगिहं । पडिहारनिवेइओ य पविट्ठो, पणामपुव्वयं च उवविट्ठो । समप्पियाणि य अद्वयरायपहाणपुरिसेहिं उवायणाणि, अभयस्स वि समप्पियाणि कुमारपेसियाणि अक्कंगाणि । पिच्छिऊण त ताणि 'अहो सुंदराणि' ति भणंता परं विम्हयं उवगया सेणियादओ । कहिओ अद्वयकुमारसंदेसगो । जिणवयणकोसल्लयाऽवदायबुद्धिणा य चिंतियमभएण 'नूणं एस को वि ईसिविराहियसामण्णो अणारियदेसे समुप्पन्नो, किंतु पच्चासन्नसिद्धिगामी, तओ मए सह पीई काउं इच्छइ । न य अभव्व-दूरभव्व-गुरुक्कम्माणं मए सह मेत्तीमणोरहो वि संभवइ । जओ भणियं—

पाएण होइ पीई जीवाणं तुल्लपुण्ण-पावाणं ।

एगसहावत्तणओ तहेव फलहेउओ चेव ॥१७॥

ता केणइ उवाएण जिणधम्मे पडिबोहिऊण परमबंधुत्तणं पगासेमि । जओ—

भवगिहमज्झम्मि पमायजलणजलियम्मि मोहनिदाए ।

उट्ठवइ जो सुयंतं सो तस्स जणो परमबंधू ॥१८॥

ता कयाइ जिणपडिमादंसणेण जाईसरणं उप्पज्जइ, ता पेसेमि उवायणच्छलेण भगवओ बिंबं' ति चिंतिऊण पउणीकया सव्वरयणमई पसंतकंतरूवा भगवओ जुगाइदेवस्स पडिमा, संगोविया य

१. ला० मिलेज्जसु ॥ २. ला० कुमारेण ॥ ३. सं० वा० सु० णि सक्कंगाणि सम ॥ ४. ला० भणिज्जसु ॥ ५. सं० वा० सु० 'सुव्वया' ॥ ६. सं० वा० सु० ण ताणि ॥ ७. सं० वा० सु० मी मए ॥ ८. सं० वा० सु० समं (मं) ॥ ९. सं० वा० सु० 'हेउगो ॥ १०. ला० जाइस्सरणमुप्प' ॥

मंजूसामज्झमि समुणए, तप्पुरओ य धूयकडच्छुयघंडियाइपूओवगरणाणि, पुणो य तालयाणि दाऊण
निययमुदाए मुहिया । जया य सेणिएण आभरणाइ बहुदव्वं कोसल्लियाणि य दाऊण विसज्जिया
अहयरायपुरिसा तया समप्पिया ताण मंजूसा । भणिया य ते 'मह वयणेण भणेज्जह अहयकुमारं
जहेमं ममोवायणं एणागिणा एणंते सयमेव उम्मुद्धिऊणोग्घाडेत्ता निरुवियव्वं, न य अन्नस्स कस्सइ
दंसणीयं' । 'एवं होउ' ति भणिऊण निगया पुरिसा । अणवरयपयाणेहि य पत्ता नियनगरं ।
पुव्वकमेण सव्वं जहोचियं काऊण गया कुमारभवणं । साहियं सव्वं पि जहासंदिट्ठं । ताहे पविट्ठो
कुमारो कोट्टयब्भंतरे, उग्घाडिया य मंजूसा जाव नियपहाजालेण उज्जोययंती दस वि दिसाओ दिट्ठा
पडिमा-अहो अच्छरियं ! किं पि अम्हेहिं अदिट्ठपुव्वं एयं ।

तो किं सीसे कन्ने कंठे अहवा वि बाहुजुगलमि । परिहेमि हत्थ पाए किंचि सरूवं ण याणेमि । १४।

किंच एयं किंपि कहिंचि दिट्ठपुव्वमिव पडिहासइ, ता कहिं दिट्ठपुव्वं ?' इइ चिंतयंतो
ईहापोहमगणगवेसणं कुंणमाणो मुच्छाए निवडिओ धरणिवट्ठे । सयमेव समाससिऊणोड्डिओ कुमारो ।
खणंतरेणं समुप्पन्नजाईसरणो य चिंतितुमाढत्तो जहा 'अहं' इओ तइयजम्मे मगहाजणवए वसंतपुरे
गामे सामाइओ नाम कुंडुंबी अहेसि । बंधुमई मे भारिया । अन्नया सुट्टियायरियसमीवे धम्मं
सोऊण संसारभउव्विगो सभारिओ पव्वइओ । गहियदुविहसिक्खो य संविग्गसाहूहिं समं विहरंतो
समागओ एणं नगरं । सा वि साहुणीहिं समं विहरमाणा समागया तम्मि चेव नगरे । दड्ढूण
पुव्वरयसरणाओ तं पइ जाओ मे रागाणुबंधो । साहिओ यं बिइयसाहुस्स । तेण वि निवेइओ
पवत्तिणीए । तीए वि बंधुमईए । तओ भणियं बंधुमईए 'अहो विचित्ता कम्मपरिणई, जओ एस
गीयत्थो वि एवमज्झवसइ । तो भगवइ ! न मम अन्नत्थ गदाए वि अणुबंधं मुयही, ता संपयं
अणसणं चेव जुत्तं । यतः—

वरं प्रवेष्टुं ज्वलितं हुताशनं न चाऽपि भग्नं चिरसञ्चितं व्रतम् ।

वरं हि मृत्युः सुविशुद्धकर्मणो न चापि शीलस्खलितस्य जीवितम् ॥१९॥

इयं सामत्थिय, भतं पच्चक्खिय उब्बंधिऊण मया । तं च सव्वं सोऊण परमसंवेगावन्नेण
मए, चिंतियं जहा- 'तीए महाणुभावाए वयभंगभयाओ एवमणुट्टियं, मम उण वयं भगमेव, ता अहं

१. ला० निअमुदाए ॥ २. सं० वा० सु० जया इ ॥ ३. सं० वा० सु० जहेयं ॥ ४. ला० न अन्न ॥ ५.
ला० अहो अच्छब्भुयं अहो अच्छब्भुयं किंपि एयं अदिट्ठपुव्वमम्हेहिं, ता किं सी ॥ ६. ला० किंपि ॥ ७. ला०
जाणामि ॥ ८. ला० ईहावूहम ॥ ९. ला० करेमाणो ॥ १०. सं० वा० सु० समासासि ॥ ११. ला० ऊण उड्डिओ
खणंत ॥ १२. सं० वा० सु० इओ य त ॥ १३. सं० वा० सु० वसंतपुरए ॥ १४. सं० वा० सु० सुव्वयायरि ॥
१५. ला० गहियसिक्खो ॥ १६.-१७. ला० सह ॥ १८. सं० वा० सु० 'ओ बिइ' ॥ १९. ला० अचिंता ॥ २०.
ला० गयाए चित्रणुबंधं मुइही ॥ २१. ला० इइ ॥ २२. ला० समत्थिय ॥ २३. ला० एयमणुट्टियं मम पुण ॥

पि भत्तं पच्चक्खामि' ति चिंतिऊण गुरूणं च अणाचक्खिय भत्तं पच्चक्खायं । मरिऊण गओ देवलोगं । तओ चइऊण इहं समुप्पन्नो । ता सुगुरुसामग्निं सव्वविरइं च लद्धूण कहं माणसियरागाणुबंधकरणाओ अणारिओ जाओ म्हि ? अणारियत्तणे वि जेणाहं पडिबोहिओ सो चेव मज्झ सव्वगोरवट्ठाणेषु वट्ठइ ।। तथा य—

सो च्विय अभयकुमारो मज्झ गुरू बंधवो सुही जणओ । जेण पडंतो नरगे उद्धरिओ निययबुद्धीए ।।१५।।

जइ तेण समं मेत्ती महाणुभावेण मज्झ न हु हुंता । ता धम्मकलावियलो भमडंतो नूण संसारे ।।१६।।

ता किं इयाणि बहुणा संतप्पिण्ण ? । तत्थेवाऽऽरियदेसे गंतूण सव्वदुक्खविमोक्खणक्खमं पवज्जामि पव्वज्जं' ति चिंतिऊण उट्ठिओ । मग्गिया य पुरिसा पुप्फाइ पूओवयारं । पूइऊण य पडिमं गओ रायसमीवं । भणिओ य राया 'ताय ! संजाया ताव मह अभयकुमारेण सह पीई । ता जइ तायस्स पडिहाइ तो गंतूण तत्थ परोप्परदंसणेण परमपीईं काऊणाऽऽगच्छामि ।' रत्ता भणियं 'पुत्त ! एवं चेव अम्हाण पीई । ता सव्वहा न गंतव्वं तुमए ।' तओ अविसज्जणाओ जहोचियमुवभोगाइयमकुणंतं दट्ठूण 'अवस्समकहिऊण गमिस्सइ' ति कलिऊण दिण्णाणि पंचसयाणि सामंताणमंगरक्खगाणि राइणा । भणिया य ते एगंते 'जइ कुमारो गच्छइ ता तुम्होवरिं ।' 'आदेसो' ति भणिऊण लगा कुमारपुट्ठीए । कुमारेण वि 'वंचित्ता एए गच्छामि' ति चिंतिऊण एगम्मि दिवसे भणिया जहा 'भो आसवाहणियाए गच्छामो ।' तेहिं वि 'जं कुमारो आइसइ' ति भणंतेहिं कट्ठिया जच्चतुरंगमा वंदुराओ । गया वाहियालिं । वाहिया तुरंगमा । गओ कुमारो थेवं भूमिभागं । एवं दिणे दिणे अहियाहियं गच्छंतो जाइ जाव अदंसणं, तओ थेववेलेनं गमेऊण नियत्तइ । एवं जाव मज्झणहे आगच्छइ । ते वि छायाए ठिया निरिक्खंता अच्छंति । एवं वीसासित्ता समुद्धतीरे पच्चइयपुरिसेहिं पहाणजाणवत्तं रयणाणं भरावेऊण, पडिमं संकामिऊण य, तत्थाऽऽरुहिऊण समागओ आरियदेसं । पडिममभयस्स पेसिऊण, जिणाययणेषु महिमं कराविय, पच्चइयपुरिसदीणाणाहाईणं रयणाणि दाऊण, पडिगहाइयं गहेऊण, लोयं काऊण जाव सव्वविरइसामाइयं उच्चावेइ ताव जंपियं आगासट्ठियदेवयाए 'भो महासत्तय ! मा सव्वविरइं पडिवज्जसु । अज्ज वि तुहऽत्थि भोगहलियं कम्मं । तं भुंजिऊण पव्वयसु ।' तओ वीरसप्पहाणयाए 'किं मज्झ कम्मं काहिइ ?' ति गहेऊण सव्वविरइं विहरिउमाढतो । कमेण पत्तो वसंतुरं नाम नगरं । तत्थ बाहिरदेवउले ठिओ काउस्सगेण ।

१. ला० मे ।। २. ला० पूयोव ।। ३. ला० पडिहासइ ।। ४. ला० तो ।। ५. ला० 'रक्खाणि ।। ६. ला० 'रेणावि ।। ७. सं० वा० गच्छंते ।। ८. ला० थोववेलेनं ।। ९. ला० निरिक्खंता ।। १०. सं० वा० सु० काराविया ।। ११. ला० दीणाईण य रय' ।। १२. ला० गिण्हिऊण ।। १३. ला० महासत्त ! ।। १४. सं० वा० सु० ति, अज्ज ।। १५. ला० गिण्हिऊण ।। १६. ला० 'तपुरं ।। १७. मुप्र० 'देवले ।।

इओ यं सा पुव्वभवभारिया बंधुमई देवलोगाओ चइऊण तत्थेव नगरे इब्भकुले पहाणसेट्टिस्स देवदत्तस्स धणवईए भारियाए सिरिमई नाम दारिगा जाया । सा य नयरबालियाहिं सह तहिं चेव देवउले पइरामणेण रमइ । भणियं च ताहिं ‘हला ! वरे वरेह ।’ तओ अन्नाहिं अन्ने कुमारया वरिया । सिरिमईए भणियं ‘मए एस भट्टारगो वरिओ ।’ तव्वयणाणंतं च देवयाए ‘अहो सुवरियं अहो सुवरियं इमाए बालियाए’ ति भणंतीए गज्जियरवेणं रयणवुट्ठी मुक्का । तओ सा गज्जियरवोत्तत्था तस्स पाएसु विलग्गा । तओ ‘अणुकूलोवसग्गो’ ति कलिऊण गओ तुरिय-तुरियं साहू अन्नत्थ । रयणवुट्ठिं निवडियं सोऊण समागओ सपउरो राया । तओ राया तं रयणवुट्ठिं गेण्हिउमाढतो । देवयाए फुरंतफडाडोयभीसणसप्पाइउट्ठाणेण वारिओ । भणियं च ‘मए एयाए दारियाए वरणए एयं दंतं ।’ तओ संगोवियं तीए जणएणं । पविट्ठा य नयरं । समागच्छंति य तीसे वरया । भणियं च तीए ‘ताय ! किमेए समागच्छंति ? ।’ सेट्ठिणा भणियं ‘पुत्ति ! तुज्झ वरया ।’ तीए समुल्लवियं ‘ताय ! नीइसत्थे वि विरुद्धं कन्नगाणं बिइयं दाणं । यतः—

सकृज्जल्पन्ति राजानः सकृज्जल्पन्ति साधवः ।

सकृत् कन्याः प्रदीयन्ते त्रीण्येतानि सकृत् सकृत् ॥२०॥

दिन्ना य अहं तुब्भेहिं जस्स संतियं धणं पडिच्छियं । किं च देवयाए वि अणुमन्नियं । ता कहमन्नं वरेमि ?, सो चेव मे पई ।’ सेट्ठिणा भणियं ‘पुत्ति ! सो कहं णज्जिही ? ।’ तीए भणियं ‘तया मए गज्जियरवोत्तट्ठाए पाएसु विलग्गाए तस्स दाहिणपाए एयारिसं लंछणं दिट्ठमासि; तेण णज्जिही ।’ तओ सेट्ठिणा समाणत्ता ‘जइ एवं ता पुत्ति ! सव्वभिक्षयरूणं तुमं भिक्षवं देहि, मा कयाइ सो समागच्छइ ! ।’ इओ य भवियव्वयानिओगेण मूढदिसाभागोसो समागओ बारसमे संवच्छरे । पच्चभिन्नाओ य तीए । भणिउं चाढत्ता । अवि य—

“हा नाह ! हा गुणायर ! मह हिययाणंद ! इत्तियं कालं । कत्थ ठिओ मं दीणं दुहियमणाहं पमुत्तूणं ? ॥१७॥ जप्पभिइं सामि ! तुमं तइया वरिओ मए सइच्छाए । तप्पभिइं मह हियए अन्नस्स य नत्थि अवगासो ॥१८॥ संपइ मह पुण्णाइं बलियाइं जमिह आगओ तं सि । ता कुणंसुदयं पिययम ! पाणिग्गहणेण मह इण्हिं ॥१९॥

इमं च सोऊण समागओ सेट्ठी । हक्कारिओ राया । तेहिं वि भणिओ ‘महाभाग ! भणिया वि अणेगसो न एसा तुमं वज्जिय अन्नं मणेणावि वंछइ । भणइ य—

१. ला० अ ॥ २. ला० सु० पइरावणे ॥ ३. सं० वा० सु० ‘यं इमाए ॥ ४. ला० बालाए ॥ ५. ला० ‘ट्ठिं च निव’ ॥ ६. ला० ‘ए य फुरं’ ॥ ७. ला० वरणे ॥ ८. सं० वा० सु. ‘ण य । पविट्ठा नयरं ॥ ९. सं० वा० सु. ‘यं तीए ॥ १०. ला० ताइ ॥ ११. ला० जस्संतियं ॥ १२. ला० ‘गो समागओ सो बा’ ॥ १३. ला० ‘स्स न अत्थि ॥ १४. सं० वा० सु० ‘सु सयं ॥ १५. ला० वि य णेगसो ॥

सो वा महाणुभावो मह देहं छिवइ कोमलकरेहिं । अहवा जलंतजालो जलणो एयं वयं मज्झ ॥२०॥

ता पडिवज्जसु एयाए पाणिग्गहणं' ति । तओ अवस्सवेइयव्वकम्मोदयाओ, देवयावयणसुमरणाओ, तेसिं च निब्बंधाओ, परिणीया । भोगे य भुजंतस्स समुप्पन्नो पुत्तो । जाव सो किंचि वत्तो जाओ ताव मोक्कलाविया जहा 'पव्वयामि, संपयं एस ते दुइओ' ति । तओ सा पुत्तवुप्पायणाणिमित्तं पूणियं चत्तं च गहाय कत्तिउमाढत्ता । तओ सुएण भणिया 'किमंब ! इयरजणपाउणं कम्मं काउमाढत्ता?' । तीए भणियं 'पइरहियाण नारीणं एयं चेव विभूसणं ।' तेण संलत्तं 'हा किमंब ! तायम्मि विज्जमाणे एवं वाहरसि ?' तीए भणियं 'गंतुकामो दीसए तें जणगो ।' तेण वि 'कहिं गच्छइ ?, बंधित्ता धरेमि' ति मम्मणुल्लाविरेण तीए हत्थाओ चत्तं गहाय पाएसु सुत्ततंतूहिं वेढित्ता भणियं 'अम्मो ! वीसत्था चिट्ठाहि, एस ताओ मए बद्धो न कहिंचि गमिस्सइ ।' तओ तेण चिंतियं 'अहो ! बालयस्स ममोवरि सिणेहासंघओ; ता जत्तिया णेण वेढया दिन्ना तत्तियवरिसाणि चिट्ठिस्सामि' ति, जाव गणेइ ताव दुवालस । ठिओ दुवालस वासाणि । तदंते य रयणीए चरमजामम्मि पडिबुद्धो सुमरिऊण पुव्ववुत्तंतं विलविउमाढत्तो । तहा य-

धी धी अहं अणज्जो घेतुं जो सव्वविरइसामइयं । एवं पमायवसगो विसयामिसकदमे खुत्तो ॥२१॥
वारिंतीए वि य देवयाइ चडिउं पइन्नगिरिसिहरे । हा हा कह ल्हसिऊणं पडिओ संसारकूवम्मि ॥२२॥
पुव्वभवे मणसा वि य भग्गम्मि वए अणारिओ जाओ । अहह न जाणे संपइ कीए य गईइ गंतव्वं ? ॥२३॥
धिसि धिसि अलर्जिरेणं जाणंतेणावि जं मए एयं । ववहरियं तं मन्ने भमियव्वं नूण संसारे ॥२४॥

जओ भणियं-

सोच्चा ते जियलोए जिणवयणं जे नरा न याणंति ।

सोच्चाण वि ते सोच्चा जे जाऊणं न वि करन्ति ॥२१॥

अहवा किमिणा संतप्पिण बहुएणइयविसयम्मि ? इण्हिं पि भावसारं करेमि तवसंजमोज्जोयं ॥२५॥

भणियं च—

पच्छा वि ते पयाया खिप्पं गच्छंति अमरभुवणाइं ।

जेसिं पिओ तवो संजमो य खंती य बंभचेरं च ॥२२॥

तओ पभाए संभासित्ता पिययमं, पडिवज्जिऊण समणलिंगं, सीहो व्व गिरिकंदराओ निग्गओ गेहाओ, चलिओ य रायगिहं पइ । तदंतराले य जाणि तस्स रक्खणत्थं पंचसयाणि सामंताण

१. ला० 'माढत्तं' ॥ २. ला० 'पइविरहि' ॥ ३. ला० 'किमम्बे !' ॥ ४. ला० 'गच्छइ' ॥ ५. ला० 'तत्तियाणि वरि' ॥ ६. ला० 'मि, जाव' ॥ ७. ला० 'ठिओ य दु' ॥ ८. सं० वा० सु० 'जिएणं' ॥ ९. सं० वा० सु० 'णईइवि' ॥

जणगेण णिरूवियाणि ताणि य अंतराले अडवीए चोरियाए वित्तिं कप्पेमाणाणि दिट्ठाणि, पच्चभिन्नायाणि य । ताणि वि तं ओलक्खिऊण निवडियाणि तस्स चरणेसु । पुच्छियाणि य साहुणा 'भो किमेसा निंदणिज्जजीविया तुब्भेहिं समाढत्ता ?' तेहिं भणियं 'सामि ! जया तुम्हे वंचिऊण पलाया तया अम्हे तुम्ह गवेसणं कुणमाणा समागया ईत्तियं भूमिभागं । न य कत्थ वि तुम्ह पउत्ती वि उवलद्धा । तओ कहमकयकज्जा रायस्स मुहं दंसेस्सामो ? ति लज्जाए भएण य ण गया रायसमीवं । अनिव्वहंता य एयाए जीवियाए जीवामो ।' तओ भगवया भणियं 'भो भद्राः । धम्म एव यत्तो विधेयः । यतः—

सम्प्राप्य मानुषत्वं संसाराम्भोधिमध्यमग्नेन ।

सकलसमीहितकरणे धर्मविधौ भवति यतितव्यम् ॥२३॥

न च प्रमादपरैर्भाव्यम् । उक्तं च—

यत् सम्पत्त्या न युक्ता जगति तनुभृतो यच्च नापद्विमुक्ता,

यन्नाऽऽधि-व्याधिहीनाः सकलगुणगणालङ्कृताङ्गाश्च यत्रो ।

यत्र स्वर्गं लभन्ते गतनिखिलभयं यच्च नो मोक्षसौख्यं,

दुष्टः कल्याणमालादलनपदुरयं तत्र हेतुः प्रमादः ॥२४॥

तस्मादेनं परित्यज्य धर्मोद्यमं कुरुत ।' तओ तेहिं बद्धकरयलंजलीहिं विन्नत्तं 'भगवं ! जइ जोग्गा ता देहि अम्ह पव्वज्जं ।' साहुणा य वुत्तं 'पव्वयह ।' ते वि 'तह' ति भणेऊण पयट्ठा तेण सह । भगवं पि अद्दयरिसी जाव रायगिहस्साऽसण्णीहूओ ताव गोसालगो अद्दयरिसिं पत्तेयबुद्धं भगवतो वंदणत्थमागच्छंतं सोऊण वाएणुवड्डिओ । सो य अद्दगेणोत्तर-पडुत्तरेहिं पराजिओ । तव्वायवत्तव्वया य सूयगडंगाओ विण्णेया । इह उणं गंथवित्थरभयाओ नो लिहिया । तओ जाव अग्गओ गच्छइ तओ रायगिहस्स पच्चासण्णतरे हत्थितावसाणमासमपयं । ते य एणं महप्पमाणं हत्थिं मारेत्ता तेणाऽऽहारेणं बहूणि दिवसाणि गमंति । भणंति य 'किमेएहिं बहुएहिं बीयाइजीवेहिं विणासिएहिं ?, वरं एणो चेव हत्थी मारिओ ।' तत्थ निययासमे तेहिं वणंताओ एणो महागयवरो बंधित्ता आणिओ । सो य दढभारसंकलानिबद्धो महंतलोहगलाहि य अग्गलिओ चिट्ठइ । जाव य तत्थ ट्ठाणे महारिसी समागओ ताव सो हत्थी समुप्पन्नविसिट्ठिविवेयत्तणओ भगवंतं पंचसयरायउत्तपरिवारियं बहुजणवंदिज्जमाणं दट्ठूण 'अहं पि वंदामि' ति जाव मणे संपहारेइ ताव

१. ला० चलणेसु ॥ २. ला० तुब्भे ॥ ३. ला० करेमाणा ॥ ४. ला० एत्तियं भूभागं ॥ ५. सं० वा० सु० भव्वा ॥ ६. ला० भयवओ दंसणत्थमा ॥ ७. ला० पुण ॥ ८. ला० न ॥ ९. सं० वा० सु० पच्चासण्णंतरे ॥ १०. ला० ण पभूयदिव ॥ ११. ला० 'सो दढ ॥ १२. सं० वा० सु० महेसी ॥ १३. ला० ताव य सो ॥

भगवओ पहावेण तस्स हत्थिस्स संकलगलाओ सयखंडीभूयाओ । निरगल्लो य पयट्ठो भगवओ वंदणत्थं । तओ लोगो 'हा हओ एस महारिसी एणं' ति भणमाणो पणट्ठो । सो वि करी अवणामियकुंभत्थलफरिसियसाहुपयपंकओ साहुमणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणो वणं पविट्ठो । ते य तावसा तं साहुस्साइसयमसहमाणा अमरिसवसेण विप्पडिवत्तीए उवट्ठिया । ते वि भयवया सियवायावदायबुद्धिणा णिरुत्तरा कया, धम्मदेसणाए पडिबोहिया, पेसिया य भगवओ तित्थयरस्स समोसरणे । ते वि तत्थ गंतूण पव्वइया ।

इओ य सेणिओ राया लोगपरंपराओ हत्थिमोयणाइअच्छेरयभूयं साहुप्पभावं सोऊणं विम्हयउप्फुल्लोयणो अभयकुमाराइपरियणसमेओ तुरियं तत्थाऽऽगओ । दिट्ठो य साहू । भत्तिभरनिभरगेण य तिपयाहिणापुव्वयं वंदिओ । तथा हि—

परिचत्तगिहावासय ! आवासय ! सयलसंजमगुणाणं ।
गुणगव्वियपरितित्थियगइंदवणसिंह ! तुज्झ नमो ॥२६॥

दिन्नो साहुणा धम्मलाभो, तथा हि—

कल्लाणपद्धइकरो दुरियहरो पावपंकसलिलोहो । तुह होउ धम्मलाभो नरिंद ! सिवसोक्खसंजणगो ॥२७॥

पुच्छित्ता य अणाबाहं निसन्नो सुद्धभूमीए । भणियं च राइणा 'भगवं ! महच्छरियमेयं जं निययप्पहावेण दढबंधणेहिंतो मोइओ हत्थी ।' तओ भणियं भगवया—

न दुक्करं बंधणपासमोयणं गयस्स मत्तस्स वणम्मि रायं ! ।
जहा उ चत्तावलिएण तंतुणा सुदुक्करं मे पडिहाइ मोयणं ॥२८॥

राइणा विन्नत्तं 'भगवं ! कहमेयं ? ।' तओ साहियंपुव्ववुत्तं नियचरियं । 'ता भो महाराय ! जे ते मह बालगेण चत्तावलियतंतुबंधा दिण्णा ते सिणेहतंतवो मए वि दुक्खेण तोडिय ति काऊण गयबंधणमोयणाओ वि दुम्मोयापडिहासंति । अओ मए एवं पढियं ।' एयं च णिसामिऊण पडिबुद्धा बहवे पाणिणो । सेणिय-अभयकुमारा वि परं परिओसमागया वंदित्ता य गया सट्ठाणेसु । महारिसी वि भगवंतं महावीरं वंदित्ता उग्विहारेणं विहरित्ता केवलवरणाणं उप्पाडेत्ता पत्तो परमसोक्खं मोक्खं ति ।

१. सं० वा० सु० ०लो पयट्ठो ॥ २. 'स्याद्वादावदातबुद्धिना' इत्यर्थः ॥ ३. सं० वा० सु० 'णापडि' ॥ ४. सं० वा० सु० पुव्ववुत्तनि ॥ ५. ला० दुक्खं तो ॥ ६. सं० वा० सु० 'मोयणओ ॥ ७. सं० वा० सु० पडिहायंति ॥ ८. सं० वा० सु० एवं च ॥ ९. सं० वा० सु० 'त्ता गया ॥

गतमार्द्रककथानकम् (१)

अत्र चाभयकुमारेणाऽऽर्द्रकप्रतिबोधनं प्रति या कुशलता कृता तथा प्रयोजनमित्येव । 'कोसल्लया मो जिण सासणम्मि' इत्यनेन प्रथमं सम्यक्त्वभूषणमभिहितम् । द्वितीयमाह 'पभावण' ति प्रभावना=तीर्थस्योन्नतिकरणम् । सा चाष्टभिः प्रकारैर्भवति । यत उक्तम्-

पावयणी धम्मकही वाई नेमितिओ तव्वस्सी य ।

विज्जासिद्धो य कई अट्टेव पभावगा भणिया ॥२५॥

तत्रोल्लेखमात्रदर्शनार्थं शेषनिर्दनान्यनादृत्य विद्यासिद्धाऽऽर्यखपुटाचार्यकथानकमाख्यायते-

(२. आर्यखपुटाचार्यकथानकम्)

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे नम्मयाए महाणईए तीरट्टियं भरुयच्छं नाम महाणगरं । तत्थ य विहरंता समागया अज्जखवडा णामायरिया । ते य बहुसिस्सपरिवारा सिद्धाणेगविज्जा विज्जाचकवट्टिणो । ताण य एगो चेल्लओ भाइणेज्जो आयरियाणं वंदण-णमंसण-सुस्सूसणापरायणो । तेणाऽऽयरियाणं गुणंताणं विज्जाओ कण्णाहाडियाओ । विज्जासिद्धस्स य णमोकारेणावि विज्जाओ सिज्झंति ति काउं सिद्धाओ । इओ य गुडसत्थाओ नगराओ समागओ एगो साहुसंघाडगो । आयरिए वंदित्ता विन्नवेइ 'भगवं तत्थ नगरे एगो परिव्वायणो अकिरियावाई आगओ अहेसि । सो य-

नत्थित्थ कोइ देवो न य धम्मो नेय पुन्न-पावाइं । न य परलोगाईया न य अत्ता भूयवइरित्तो ॥१॥
एमाइ बहुपगारं पलवंतो आगमोववत्तीहिं । साहूहिं जिओ संतो अवमाणेणं गओ निहणं ॥२॥
नामेण वडुकरओ तत्थेव पुरम्मि वंतरो जाओ । कूरो अइप्पयंडो जाणित्ता पुव्ववुत्तंतं ॥३॥
विगरालस्वधारी आगासत्थो तओ इमं भणइ । 'रेरे पावा ! पासंडियाहमा ! लज्जपरिहीणा ! ॥४॥
तइया वायम्मि ममं जिणमाणा णो वियाणहा तुब्भे । मारेमि आरडंते संपइ विविहाहिं पीडाहिं ॥५॥
जइ पविसह पायाले आगासे वा वि जाह जइ जह वि । तो वि न छुट्टह तुब्भे 'दुक्कयकम्मेहिं नियएहिं' ॥६॥
इय जंपंतो तो सो विविहुवसणेहिं समणसंघायं । उवसणिउं पवत्तो इहिं तुब्भे पमाणं ति ॥७॥

तव्वयणसवणाणंतरमेव सूरिणो सबालवुड्डं गच्छं तं च भूइणेज्जं तत्थेव मोत्तूण विज्जाबलेणं झड ति गुडसत्थे गया । तस्स वंतरस्स कन्नेसु उवाहणाओ विलाइत्ता पावरणेणऽप्पाणं पावरित्ता तप्पुरओ चेव सुत्ता । देवकुलिओ य खणंतरेणाऽऽगओ । सो य पडिमाकण्णेसु उवाहणाओ

१. सं० वा० सु० 'खपटा' ॥ २. ला० 'खडडा' ॥ ३. ला० सुस्सूसापरा ॥ ४. ला० स्वधारी ॥

५. ला० दुक्कइक ॥ ६. ला० विलयित्ता ॥

विलइयाओ, भगवंतं च सुहपसुत्तं पासेत्ता आसुरुत्तो 'अहो ! को एस अणज्जो ? जो देवस्सेवं करेइ ! ता निवेएमि एयं सपउरस्स राइणो जेण स एव निग्गहं करेइ' ति चिंतिऊण निवेइयं सपउरस्स राइणो । समागओ य तुरियतुरियं सपउरो राया । भणियं च तेण 'रेउट्टवेह ताव एयं ।' सो य सहेहिं महंतेहिं वि न उट्टेइ । उग्घाडिओ य एगो पएसो जाव अहोभागं पेच्छंति । एवं जत्थ जत्थ उग्घाडंति तत्थ तत्थऽहोभागमेव पेच्छंति । तओ राइणा जंपियं 'अरे ! बिभीसियापायं किंपि एयं ति, ता आहणह कस-लउड-पत्थरप्पहारेहिं ।' तओ जावाऽऽहणंति, ताव ते सव्वे प्हारा राउले अंतेउरियाणं संकामेइ । ताओ य पीडेज्जंतीओ विरसमारसंति । विन्नत्तं च आगंतूण महल्लगेण 'देव !

कीय वि कसप्पहारो उवलपहारो पुणो य अन्नाए । कीय वि लउडपहारो लगइ अदिट्ठओ चेव ॥८॥

सा का वि णत्थि देवी जीसे अंगम्मि लगइ न घाओ । अच्छंति रडंतीओ संपइ देवो पमाणं ति ॥९॥

रत्ता वि 'विज्जासिद्धो को वेस महप्पा जो एवमंतेउरे पउरे घाए संकामेइ । ता जाव सव्वे वि खयं न नेइ ताव पसाएमो' [? ति चिंतिऊण तप्पसायणत्थमाणत्ता सव्वे जणा रायसहिया] खामेति य जहा—

'खमसु महायस ! इण्हिं जं अवरद्धं अयाणमाणेहिं । पणिवइयवच्छल च्विय भवंति तुम्हारिसा जेण ॥१०॥

इमं च सोऊणोड्डिओ भगवं । लगो य पिट्ठओ वड्डुकरओ, पड्डियाणि य तप्पिड्डओ अन्नाणि वि उप्पिडंताणि देवरूवाणि । तस्स य देवउलस्स दुवारे अणंगणरसहस्ससंचालणेज्जाओ महइमहालियाओ दोन्नि पहाण दोणीओ चिट्ठंति । ताओ वि हकारियाओ चलियाओ तप्पिड्डओ । ताणि य देवरूवाणि ताओ खडहडावेति जाव समागओ णगरमज्झभागे । तओ लोणेण पाएसु पडिऊण विण्णत्तो 'भगवं ! मुंच देवरूवाणि ।' ताहे मुक्काणि । ताओ वि दोणीओ तत्थेव धरियाओ 'जो मए समाणो सो ठाणे पराणेउ' ति । अज्ज वि तहेव चिट्ठंति । वड्डुकरओ वि उवसंतो पवयणस्स महामहिमं करेइ । लोओ वि पभूओ पडिबुद्धो पसंसेइ 'अहो ! जिणसासणस्स माहप्पं जत्थेरिसा अइसया दीसंति । सव्वहा जयइ जिणसासणं' ति ।

इओ य भरुयच्छे सो भाइणेज्जचेल्लओ आहारगेद्धीए भिक्खडो जाओ । तस्स विज्जापभावेण पत्ताणि आगासेणं उवासगाणं घरेसु जंति, भरियाणि आगच्छंति । तमइसयं दट्ठं पभूयलोगो तम्मुहो जाओ । भणइ य 'बुद्धसासणं मोत्तुं कत्थ अन्नत्थ एरिसो अइसयो?' ति । ओहामिज्जइ संघो । तओ

१. ला० सो चेव ॥ २. सं० वा० सु० य तुरियं सव्व ॥ ३. ला० अरे ॥ ४. सं० वा० सु० 'हिं न उ' ॥ ५. सं० वा० सु० 'ति तओ ताव ॥ ६. ला० प्हारे ॥ ७. ला० लउलप' ॥ ८. सं० वा० सु० रत्ता विज्जा ॥ ९. सं० वा० सु० जो राउले अंतेउरे ॥ १०. ला० रे घाए ॥ ११. सं० वा सु० संकामेइ ॥ १२. ला० सुणिऊण उट्ठि ॥ १३. ला० ंगपुरिससयसंचालणिज्जाओ ॥ १४. सं० वा० सु० महयमहा ॥ १५. ला० तुल्लो ॥ १६. ला० भिक्खडाओ ॥ १७. सं० वा० सु० भणइ बु० ॥

संघेण सूरीण जाणावियं जहा 'इत्थ एरिसा ओहावणा हँवइ ।' तओ समागया सूरीणो । कहिओ सँव्वो वि वुत्तंतो । तेसिं च पत्तयाणं पुरओ सेयवत्थपच्चुत्थओ पडिग्गहगो वच्चइ गच्छइ य । टोप्परिया सव्वपवरे आसणे कया चेड्डइ । अन्नत्थ कया एइ । ताणि य पत्ताणि उवासगेहिं पूरिऊण भरियाणि जावाऽऽगासेणोप्पयंति ताव सूरीहिं अंतराले सिला विउव्विया । तत्थ य पडित्ता सव्वाणि भग्गाणि । चेल्लओ वि एयमायन्निऊण 'नूणं मम गुरू समागओ' ति भयेण णट्ठो । सिरिअज्जखउडसूरीणो वि गया बुद्धविहारे । तओ भणिया भिक्खूहिं 'एह, वंदह ।' आयरिएहिं भणियं 'एहि पुत्त ! बुद्धा ! सुद्धोयणसुया ! ममं वंदाहि ।' तओ निग्गया बुद्धपडिमा निवडिया सूरीण पायपंकए । तस्स य विहारस्स दुवारे थूमो चिट्ठइ, सो वि भणिओ 'तुमं पि ममं वंदाहि ।' सो वि तहेव पाएसु निवडिओ । पुणो वि भणिओ 'अद्धोणओ चिट्ठाहि ।' तहेव ठिओ नियंठोणामियणामो ति पसिद्धिं गओ । लोगो य विम्हयउप्फुल्लोयणो जिणसासणाणुरत्तो जंपिउमाढत्तो—

'पिच्छह भो अच्छरियं अइसयरूवं जिणिंदधम्मस्स । जं सूरीणं पाए वंदंति अजंगमा देवा ॥११॥
सो जयउ जिणो सिरिवद्धमाणसामी उसासणं जस्स । वंदिज्जइ तियसेहिं वि भत्तिभरोणमियसीसेहिं ॥१२॥
किं बहुणा भणिणं ? जइइच्छह सयलसोक्खसंपत्तिं । तो जिणवरिंद भणिएकुणह सया आयरंधम्मे ॥१३॥

[आर्यखपुटाचार्यकथानकं समाप्तम् । २.]

ता एवं सासणं जो पभावेइ तस्स सम्मत्तं भूसिज्जइ । एवमन्येऽपि दृष्टान्ता अभ्यूह्या इति ।

द्वितीयं भूषणमभिहितम् । सम्प्रति तृतीयमभिधीयते । 'तित्थनिसेवणा य' ति । तरन्ति संसारसागरमनेन प्राणिन इति तीर्थम्, द्रव्य-भावभेदाद् द्विधा । तत्र द्रव्यात् सकाशात् संसारनीराकरस्तीर्यत इति कृत्वा द्रव्यतीर्थं तीर्थकृतां जन्मभूम्यादिलक्षणम् । तन्निषेवा सम्यक्त्वभूषणम्, यतस्तया सम्यक्त्वं शुध्यति । उक्तं च—

जम्मं णाणं दिक्खा तित्थयराणं महानुभावाणं ।

जत्थ य किर निव्वाणं आगाढं दंसणं होइ ॥२६॥

जन्मभूम्यादिषु गतानां दर्शनमागाढं शुद्धं भवति । तथा भावनामाश्रित्याऽऽचाराङ्गनिर्युक्तावप्युक्तम्—

जम्माभिसेय-निक्खमण-चवण-णाणुप्पया य णिव्वाणे ।

दियलोगभवण-मंदर-नंदीसर-भोमनगरेसु ॥२७॥

१. ला० वट्टइ ॥ २. सं० वा० सु० सव्वो वु० ॥ ३. ला० एय(यं) बुद्धं वंदह ॥ ४. ला० 'हिं वि जंपियं एहि ॥ ५. ला० 'चरण ॥

अट्टावय उज्जिते गयगपयए य धम्मचक्रे य ।

पास रहावत्तनं चमरोप्पायं च वंदामि ॥२८॥ (गा. ३३१-३३२)

अनयोर्व्याख्या तदुक्तैव लिख्यते—

तीर्थकृतां जन्मभूमिषु, तथा निष्क्रमण-च्यवन-ज्ञानोत्पत्तिभूमिषु, तथा निर्वाणभूमिषु, तथा देवलोकभवनेषु, मन्दरेषु, तथा नन्दीश्वरद्वीपादौ, भौम्येषु च=पातालभुवनेषु च यानि शाश्वतचैत्यानि तानि, वन्देऽहम्' इति द्वितीयगाथान्ते क्रियेति । एवमष्टापदे, तथा श्रीमदुज्जयन्तगिरौ, गजाग्रपदे=दशार्णकूटवर्तिनि, तक्षशिलायां धर्मचक्रम् (चक्रे), तथाऽहिच्छत्रायां पार्श्वनाथस्य धरणेन्द्रमहिमास्थाने, एवं रथावर्ते पर्वते वैरस्वामिना यत्र पादपोषगमनं कृतम्, यत्र श्रीवर्धमानमाश्रित्य चमरेन्द्रेणोत्पतनं कृतम्, एतेषु च स्थानेषु यथासम्भवमभिगमन-वन्दन-पूजनोत्कीर्तन-निषेवणादिकाः क्रियाः कुर्वतो दर्शनशुद्धिर्भवतीति ॥” (पृष्ठः २७९)

भावतीर्थं तु ज्ञानादिगुणयुक्ताः साधवः, तत्पर्युपासनाऽपि सम्यक्त्वं भूषयति, तदुपदेशश्रवणादिना भण्यते च—

नाणाङ्गुणसमग्रे जो णिच्चं पज्जुवासए साहू ।

सम्मतभूसणाई तस्स गुणा होंति णेगविहा ॥२९

तथाऽऽचारनिर्युक्तावप्युक्तम्—

तिथ्यराण भगवओ पवयण-पावयणि-अइसइहीणं ।

अभिगमण णमणं दंसण कित्तण संपूर्यणं थुणणा ॥३०॥ (गा. ३३३)

अस्या अपि तदक्षरैर्व्याख्या

तीर्थकृतां भगवताम्, प्रवचनस्य=द्वादशाङ्गस्य गणिपिटकस्य, तथा प्राक्कनिकानाम्=आचार्यादीनां युगप्रधानानाम्, तथाऽतिशयिनामृद्धिमतां=केवल-मनःपर्यायावधिमच्चतुर्दश-पूर्वविदाम्, तथा आमौषध्यादिप्राप्तद्धीनाम्, यदभिगमनम्, यच्च नमनम्, गत्वा च दर्शनम्, तथा गुणोत्कीर्तनम्, सम्पूजनं गन्धादिना, स्तोत्रैः स्तवनम्, तदपि सम्यग्भावनाहेतुरिति । (पत्र ३८५ तमे)

१. ला० 'ण-चरणज्ञा ॥ २. ला० शाश्वतानि चै' ॥ ३. ला० 'चक्रम् अहिच्छत्रा ॥ ४. ला० श्रीमद्वर्ध' ॥ ५. ला० 'वासई' ॥ ६. सं० वा० सु० 'णाइ' ॥ ७. ला० 'ण दरिस्सण ॥ ८. सं० वा० सु० 'यणा ॥ ९. ला० 'वैव व्याख्या ॥ १०. ला० 'चनिनाम् ॥

अत्र च द्रव्यतीर्थनिषेवायामार्यमहागिरय उदाहरणम् । तथा च-

[३. आर्यमहागिरिकथानकम्]

सिरिथूलभद्रसामिस्स दोण्णि सीसा महायसा जाया । दसपुव्वधरा धीरा गुणगणकलिया जुगपहाणा । १।
 पढमो अज्जमहागिरिसूरी सम्मत्त-णाण-चरणद्धो । बीओ अज्जसुहत्थी तत्तुल्लगुणो तदणुसेवी । २।
 वोच्छिन्ने जिणकप्पे पडिकम्मं तस्स महगिरी कुणइ । अज्जसुहत्थिस्स गणं दाऊणं गच्छपडिबद्धो । ३।
 अह अन्नया कयाई अज्जसुहत्थी गओ विहरमाणो । पाडलिउत्तम्मि पुरे ठिओ य पवरम्मि उज्जाणे । ४।
 वसुभूइसेट्ठिपमुहो विणिग्गओ तस्स वंदणमित्तं । पुरलोगो वंदित्ता उवविट्ठो सुद्धभूमीए । ५।
 तीसे परिसाएँ तओ पारद्धा सयलदुक्खनिदलणी । सद्धम्मकहा संवेगरंगसंसग्गसंजणणी । ६।
 “भो भो भव्वा ! संपाविऊण अइदुल्लहं मणुयजम्मं । सिरिसव्वन्नुपणीए कुणह सया आयरं धम्मे ॥ ७॥
 पडिवज्जह अट्टारसदोसेहिँ विवज्जियं जिणं देवं । वरसाहुणो य गुरुणो, जीवाइपयत्थसदहणं ॥ ८॥
 परिहरह मोहजालं, राग-दोसारिणो णिसुंभेह । चयह कसाए, इंदियतुरंगमे दमह दुदंते ॥ ९॥
 चइऊण घरावासं असेसगुरुदुक्खसंतइ निवासं । पंचमहव्वयजुत्तं विवज्जियं राइभत्तेण ॥ १०॥
 तहिँ गुत्तीहिँ सुगुत्तं पंचहिँ समिईहिँ संवुडमुयारं । खंताइदसपगारं पडिवज्जह साहुवरधम्मं ॥ ११॥
 जइणविसक्कह एयं काउं तो पंचणुव्वयसमेयं । तिगुणव्वय-चउसिक्खाकलियं पालेह गिहिधम्मं ॥ १२॥
 रिद्धीओँ जोव्वणं जीवियं च खणभंगुराणि णाऊण । जेणोज्झिय संसारं संसारं जाह सिद्धिउरं ॥ १३॥
 इय सोऊणं सव्वा परिसा संवेगमागया धणियं । तो वसुभूई जंपइ पणमित्ता सूरिपयकमलं ॥ १४॥
 ‘भगवं ! जं तुब्भेहिँ आइट्ठं तत्थ नत्थि सदेहो । किंतु जईणं धम्मं ण समत्थो दुक्करं काउं ॥ १५॥
 ता पसिऊणं देज्जउ गिहत्थधम्मो इमो महं नाह ! । ’ एवं’ ति होउ गुरुणा भणिए, घेतूण गिहिधम्मं ॥ १६॥
 नियगेहे गंतूणं तं धम्मं कहइ सयणवग्गस्स । सो जाव ण पडिवज्जइ ता गंतुं गुरुसमीवम्मि ॥ १७॥
 पभणइ कयंजलिउडो ‘जिणधम्मो एसमे समक्खाओ । सयणाण किंतु तेसिं मम वयणेणं ण परिणमइ ॥ १८॥
 ता तेणुवरोहेणं गंतूणं तत्थ पहु ! समुद्धरह । भवजलहिम्मि पडंते नियदेसणजाणवत्तेणं’ ॥ १९॥
 अज्जसुहत्थी वि तओ पडिवज्जिय तम्मिहम्मि गंतूण । अक्खिविय देसणाए जा देइ अणुव्वए ताव ॥ २०॥
 अज्जमहागिरि भगवं जिणकप्पविहाणओ विहरमाणो । संपत्तो दट्ठुं ता सहसा अब्भुट्ठिओ सूरी ॥ २१॥
 तं दट्ठूणं सेट्ठी पभणइ ‘तुब्भं पि किं गुरू अन्नो ? ।’ सूरी वि आह ‘आमं, एसो भगवं गुरू अम्म ॥ २२॥
 दुक्करकिरियानिरओ करेइ अइदुक्करं तवच्चरणं । पेयवणाइसु पडिमं ठाइ सरीरम्मि निरवेक्खो ॥ २३॥

१. सं० वा० सु० ‘णत्थो ॥ २. ला० ‘लिपुत्तम्मि ॥ ३. सं० वा० सु० साहु जिणधम्म ॥ ४. सं० वा० सु० काउं पंचेवणुव्व ॥ ५. शोभनः सारः यस्मिन् तत् संसारं सिद्धिपुरम् ॥ ६. सं० वा० सु० देसिं ॥ ७. सं० वा० सु० ‘णवइ ॥ ८. ला० ‘त्तो ता दट्ठुं ॥

बहुविहउवसगसहो बावीसपरीसहे पराजिणइ । दसपुव्वमहासुर्यनीरनाहपारं परं पत्तो ॥२४॥
 उज्झियहम्मं गेणहइ भत्तं पाणं च जं न कायाई । वंछंति दूरदेसट्टिया वि धीसंजुओ धीरो ॥२५॥
 एवं तग्गुणनिगरं वण्णेत्ताऽणुव्वयाई तेसिं च । दाऊण गओ सूरी, सेट्ठी वि य भणइ नियवगं ॥२६॥
 'जइया एसो भगवं भिक्खट्ठा एइ तइय भत्ताइं । छट्ठेज्जहं जइ कह वि हु लेइ तओ होइ बहु पुण्णं ॥२७॥
 तत्तो य बीयदिवसे तमउव्वं पेच्छिऊण भगवं पि । उवओगपुव्वय जाणिऊण तत्तो च्चिय णियत्तो ॥२८॥

आवस्सयावसाणे जाव सुहत्थी वि वंदए गुरुणो ।

ता भणिओ 'किं अज्जो ! अणेसणा अज्ज मह विहिया? ॥२९॥

सो आह 'कहं?' भगवं पि भणइ 'अब्भुट्ठिओ जओ कल्लं ।' णाऊण इमं तत्तो खामइ परमेण विणएणं ॥३०॥
 तत्तो णिगंतूणं उज्जेणिं पुरवरिं गया तत्थ । जीवंतसामिपडिमं भत्तिभरणिभरा णमिउं ॥३१॥
 तत्तो गयग्गपयनगवरस्स नमणत्थमेलगच्छम्मि । संपत्ता, तं च पुरं कह जायं एलगच्छं ? ति ॥३२॥

[४. एलकाक्षकथानकम्]

तं आसि दसण्णपुरं तत्थाऽऽसी साविगा गुणसमिद्धा । धणसत्थवाहधूया रूववई धणसिरी णाम ॥३३॥
 उत्तमसम्मत्तधरी अणुवयसिक्खावएहिं परिकलिया । मिच्छादिट्ठिगिहम्मी परिणीया देव्वजोएण ॥३४॥
 चियवंदणं विहेउं वियालवेलाएँ पइदिणं सा उ । गेणहइ पच्चक्खाणं हसइ तओ तीए भत्तारो ॥३५॥

'पच्चक्खामि अहं पि य' अन्नम्मि दिणम्मि तेण सा भणिया ।

'भंजिहिसि तुमं' तीए भणियो पडिभणइ सो एवं ॥३६॥

न हु कोइ वि रयणीए उट्ठिता भुंजई अओ देहि । पच्चक्खाणं मज्झं, दिन्नं तीए तओ पच्छा ॥३७॥
 एत्तो य तीए गुणगणआवज्जियदेवया विचिंतेइ । 'कह वेलवेइ सट्ठिं मूढो ? ता अज्ज सासेमि' ॥३८॥
 गेण्हितु वरपहेणगल्लेण भोज्जं समागया सा उ । तप्पुरवत्थव्वाए भणिणीए तस्स रूवेण ॥३९॥
 पभणइ य 'उट्ठ भाउय ! तुज्झ कए भोयणं मए सुरसं । आणीयं उवभुंजसु' सो वियतं भोतुमाढत्तो ॥४०॥

भणिओ य सावियाए 'पच्चक्खिय भुंजसे किमेयं ?' ति ।

'तुब्भच्चएहि अम्मं किमालवालेहि' सो भणइ ॥४१॥

देवी वि तओ रुसिउं तलप्पहारेण दो वि अच्छीणि । भूमीए पाडेत्ता, खिंसिय निययं गया ठाणं ॥४२॥
 सट्ठी वि 'मज्झ अयसो एसो' त्ति मणम्मि देवयं काउं । काउस्सग्गम्मि ठिया, समागया देवया पुण वि ॥४३॥

जंपइ य 'जेण कज्जेण सुमरिया साविगे ! तयं भणसु ।'

१. सं० वा० सु० ०यहसना० ॥ २. ला० थिइसंजुओ ॥ ३. ला० 'नियरं' ॥ ४. सं० वा० सु० जह
 ॥ ५. ला० उ ॥ ६. सं० वा० सु० 'गपओगे जा' ॥ ७. ला० वंदई ॥ ८. सं० वा० सु० 'लमच्छिम्मि' ॥
 ९. सं० वा० सु० 'दिट्ठीगेहे' ॥ १०. सं० वा० सु० देवीए तओ ॥

सा भणइ 'अप्पविहियं अयसं अवणेहि मह एयं' ॥४४॥

ततो य निप्पएसाणि ताणि नाऊण तस्स अच्छीणि । केण वि तक्खणमारियएलयसपएस अच्छीणि ॥४५॥
आणेऊणं देवी संजोइत्ता गया नियं ठाणं । इयरो वि य पच्चूसे पुच्छिज्जइ नगरलोगेहिं ॥४६॥
'किं तुज्झ एलगस्स व अच्छीओ भद्द ! अज्ज दीसंति?' । तेण वि तेसिं सव्वं कहियं रयणीएँ जं वित्तं ॥४७॥
सो वि य तप्पभिईए जाओ सुस्सावगो गुणसमिद्धो । एसो वि य वुत्तंतो पयडो सव्वत्थ संजाओ ॥४८॥
कोऊहलेण य जणा अन्नतो इंति पिच्छगा तस्स । 'कत्थ गमिस्सह?' पुट्ठा, वयंति ते एलगच्छउरं ॥४९॥
एसा णामोप्पत्ती वियाहिया एलगच्छणगरस्स । तत्थ य गयगपयगो अत्थि नगो जिणघराइन्नो ॥५०॥

[गजाग्रपदपर्वतनामोत्पत्तिकथा]

पुव्विं दसन्नकूडो णामं तस्साऽऽसि संपयं एयं । जह संजायं णामं तह भणंतं निसामेह ॥५१॥
तत्थाऽऽसि पुरे राया सूरौ वीरो पियंवओ सरलो । नीसेसकलाकुसलो सावगधम्ममि उज्जुत्तो ॥५२॥
पणमंतभूरिसामंतमउलिमणिमसिणिऊरुपयवीढो । निदलियदरियसत्तू णामेण दसण्णभद्दो ति ॥५३॥
उवसंतडिंबडमरं सो पालइ कुलकमागयं रज्जं । उव्वहइ य अच्चंतं गव्वं णियरिद्धिवित्थारे ॥५४॥
इत्तो य भरहवासे वराडविसयम्मि धण-जणसमिद्धो । णामेण धण्णपूरयगामो गुणसंजुओ अत्थि ॥५५॥
तत्थ य मयहरउत्तो निवसइ एगो समुज्जयसहावो । तब्भज्जा छिंछइया डिंडियसइवेण सह वसइ ॥५६॥
अह अन्नया य जायं रम्मं णडपेक्खणं तहिं गामे । दिट्ठो य छिंछईए कयचलणयपरिहणो णट्ठो ॥५७॥
तं 'पुरिसं' ति मुणेउं संजाओ तीइ तम्मि अणुराओ । तो भणिओ अणुणट्ठो 'जइ एस मए समं रमइ ॥५८॥
एणं चिय वेसेण देमि दम्मट्टसयमणूणं तै' । सो वि तयं पडिवज्जिय भणइ 'तुहं पिट्ठओ चेव ॥५९॥
आगच्छइ एस, परं साहसु अम्हाण अप्पणो गेहं' । सा वि सचिंधं कहिउं गुंतुं गेहम्मि रंधेइ ॥६०॥
जोगं इमस्स खीरिं, पत्तो णट्ठो वि, चलणसोयम्मि । विहियम्मि य उवविट्ठो, परिविट्ठा तीएँ तो खीरी ॥६१॥
घयगुलपुण्णं थालं दिन्नं जा नेय भुंजए ताव । संपत्तो सो सइवो, वुत्तो णट्ठो तओ तीए ॥६२॥

'एत्थ तिलोयरगम्मी पविससु जा पट्टवेमि एयं' ति ।

तत्थ पविट्ठो णट्ठो, इयसे वि य भणइ 'किमियं?' ति ॥६३॥

सा जंपइ 'भुंजामि' पडिभणियं तेण 'चिट्ठताव तुमं । भुंजामि अहं' 'अच्चंतभुक्खियाहं' इमा भणइ ॥६४॥
उवविट्ठो सो वि बला, जावऽज्ज वि णेय भुंजए ताव । संपत्तो से भत्ता, तीएँ तओ जंपिओ सइवो ॥६५॥
पविससु इत्थोवरए गंतव्वं णेय दूरभूमीए । जम्हा सप्पो चिट्ठइ परओ अइकसिणतणुधारी ॥६६॥

१. ला० 'स्सइ' ॥ २. ला० धीरो ॥ ३. ला० 'त्रु, दसण्णभद्दो ति नामेण' ॥ ४. ला० विराडविसयम्मि जण-धणस्स' ॥ ५. ला० तीएँ तम्मि अहिलासो ॥ ६. ला० मे ॥ ७. सं० वा० सु० खीरं ॥ ८. ला० उ ॥ ९. ला० 'तिलोवर' ॥

सो वि पविट्ठो तत्तो, पइणा वि हु पुच्छिया इमा 'किमियं ?' । तीए वि य संलत्तं 'जेमेमि छुहाइयाणाह !' ॥६७॥

सो भणइ 'चिट्ठसु तुमं ताव अहं चेव किंचि भुंजामि' ।

सा वि तओ पडिजंपइ 'कह अन्हाओपं भुंजिहिसि ?' ॥६८॥

जम्हा उ अट्ठमिदिणं अज्ज तओ ण्हाइऊण भुंजाहि' ।

सो भणइ 'अहं भुंजामि ताव ण्हाएज्जसु तुमं' ति ॥६९॥

इय जंपिऊण भुत्तो, एत्तो य णडेण तेण छुहिएणं । घेतूण फूमिय तिला, तं सोऊणं तओ सइवो ॥७०॥

'सप्पं' ति मण्णमाणो पलाइ तत्तो दुयं विणिगांतुं । नट्ठो वि तयणुमगेण निग्गओ अवसरं मुणित्तं ॥७१॥

मयहरउत्तो उ तओ तं दट्ठं पुच्छए तयं महिला (लं) 'किमियं पिये ! पसाहसु' सविसाया सा वि जंपेइ ॥७२॥

'हाऽणज्ज ! तुमं पुवं पि वारिओ न य करेसि मह वयणं । एयं उमा-महेसरजुगलं तुह गेहगब्भत्थं ॥७३॥

निवसंतं [तं] अज्जट्ठमीएँ जं खंडिओ तए धम्मो । तेण वि णिगांतूणं न नज्जए कत्थ वि पलाणं' ॥७४॥

तंसोऊणं विमणो महिलं पडिभणइ 'कोपुण उवाओ ? । जेणाऽऽगच्छेज्ज पुणो एयं महगेहमज्झमि' ॥७५॥

सा जंपइ 'बहुदव्वं विढवेत्ता ताण कुणसु महपूयं । जेण पुणो तुह उवारिं परितुट्ठं होइउं एइ' ॥७६॥

तं सोऊणं एसो चलिओ दव्वस्स विढवणनिमित्तं । 'किर एयाणं पूयं काहामि' मणे विचिंतंतो ॥७७॥

णिगांतुं गेहाओ पत्तो अन्नत्थ दूरदेसमि । काऊण तत्थ कम्मं सुवण्णयं विढवए एसो ॥७८॥

दसगहियाणगा ऊ माणेणं थोवयं ति न हु तुट्ठो । तह वि हु नियघरहुत्तं संचलिओ जाइ मग्गमि ॥७९॥

एगत्थ तरुतल्लमि य उवविट्ठो जाव चिट्ठए ताव । राया दसण्णभट्ठो समागओ तुरयअवहरिओ ॥८०॥

थक्को तत्थ तरुतले तुरंगमो जाव मग्गपरिसंतो । तावुत्तिन्नो राया, दंसइ एसो वि से नीरं ॥८१॥

तुरयाओ पल्लाणं अवणिय विस्सामए तओ रायं । पुट्ठो य नरवरेणं नियवुत्तंतं कहइ सव्वं ॥८२॥

चिंतइ तओ नरिंदो "मुट्ठो एसो पवंचिओ तीए । किंतुच्छाहो गरुओ 'अविज्जमाणं पि विढवेत्ता ॥८३॥

किर पूयं काहामि,' ता किं एयस्स कम्मपुरिसस्स । अहियं करेमि, अहवा नेमि इमं तत्थ नियनयो ॥८४॥

जेणुवगारी एसो" इय जा चित्तेइ ताऽणुमगेण । पत्तं णिवस्स सेण्णं, तेण समं जाइ तं घेतुं ॥८५॥

नियनयरमि नरिंदो अत्थाणत्थो य भणइ तं 'भट्ठ ! ।

भण किं दिज्जउ तुज्झं ?' सो वि हु पडिभणइ 'मह देव ॥८६॥

दिज्जउ पूयाहेउं किंचि वि' पडिवजियं तयं राया । कोऊहलेण चिट्ठइ विविहालावेहि तेण समं ॥८७॥

इत्तो य देवमहिओ तेलोक्कदिवायरो जिणो वीरो । विहरंतो संपत्तो वियालवेलाएँ तम्मि पुरे ॥८८॥

देवेहिं समोसरणे रइयमि, तओ निउत्तपुरिसेहिं । गंतूणं विन्नतो दसन्नभट्ठो महाराया ! ॥८९॥

१. सं० वा० सु० वभुंजि ॥ २. ला० वि ॥ ३. ला० गेहमज्झत्थं ॥ ४. ला० 'णो एसो प' ॥ ५. ला० 'लम्मिं, उव० ॥ ६. प्रतिपद्य ॥

‘वद्धाविज्जसि नरवइ ! नरिंद-देविंदवंदपरियरिओ । समणगणसंपरिवुडो अइसयचउतीससंजुत्तो ॥९०॥
 उप्पन्नदिव्वनाणो अट्टमहापाडिहेरपरियरिओ । इह चेव समोसरिओ दसण्णकूडे जिणो वीरो’ ॥९१॥
 तं सोऊणं सहसा राया रोमंचपुलइयसरीरो । अब्भुट्टिऊण तुरियं तत्थ ठिओ वंदई सिरसा ॥९२॥
 वद्धावयपुरिसाणिं दाऊणं रूपमइयदम्माणं । अद्धतेरसलक्खा अंगविलगं च आभरणं ॥९३॥
 चिंतइ य तहा ‘कल्लं वंदामि जिणं जहा ण केणावि । वंदियपुव्वो भयवं सव्वाए नियसमिद्धीए’ ॥९४॥
 एवं च चिंतिऊणं तं रयणिं हरिसनिब्भरो गमइ । तित्थयर-चक्कि-बल-केसि-साहु-सप्पुरिसचरिएहिं ॥९५॥
 देइ तओ आएसं पहायसमयम्मि मंतिवगस्स । जह-सव्वा सामग्गी करेह पउणा विसेसेणं ॥९६॥
 जामि जिणवंदणत्थं जेणाहं तह य पडहयरवेण । घोसाविज्जउ नयरे जह ‘राया सव्वविभवेणं ॥९७॥
 जाइ जिणवंदणत्थं तम्हा सव्वे वि सव्वरिद्धीए । आगच्छंतु सयासं अकालहीणं नरिंदस्स’ ॥९८॥
 तव्वयणं आणाए सव्वं संपाडियं अमच्चेहिं । सव्विद्धीए लोगं आगच्छंतं निवो दड्डुं ॥९९॥
 ण्हाओ कयबलिकम्मो सव्वालंकारभूसियसरीरो । सेयदुगुल्लो कयसियविलेवणो सेयकुसुमधरो ॥१००॥
 सेयगइंदारूढो सियछत्तो सेयचामरुक्खेवो । सव्वोरोहसमग्गो लीलाएँ गओ समोसरणे ॥१०१॥
 उत्तरिय गयवराओ, काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो । अभिवंदिऊण य जिणं, उवविट्ठो निययठाणम्मि १०२
 ताव य भगवं धम्मं जोयणनीहारिणीएँ वाणीए । नियनियभासापरिणामिणीएँ कहिउं समाढत्तो ॥१०३॥
 इत्थंतरंमि सक्को ‘धीधी कह अलियगव्वमुव्वहइ । एस निरिंदो एवं ?, ता संबोहेमि’ चिंतेउं ॥१०४॥
 उत्तुंगधवलदेहं मणिकंचरणयणभूसियसरीरं । एरावणं विलणो, विहेइ तस्सट्ठ उ मुहाइं ॥१०५॥
 एक्केक्कयम्मि वयणे अट्ठट्ठ करेइ दंतमुसलाइं । एक्केक्कयम्मि दंते अट्ठट्ठ ठवेइ वावीओ ॥१०६॥
 वावीए वावीए विउव्वए अट्ठ अट्ठ पउमाइं । इक्केक्कयम्मि पउमे अट्ठट्ठदले पक्कप्पेइ ॥१०७॥
 इक्केक्कयम्मि य दले बत्तीसइपत्तविहियनट्ठाइं । अट्ठट्ठ सुरम्माइं विउव्वए नाडयवराइं ॥१०८॥
 सामाणिय-दोगुंदुग-पारिसय-सुनद्धअंगरक्खेहिं । लोयप्पाला-ऽणीयाहिवेहि सत्तहिय अणिएहिं ॥१०९॥
 नीसेस पइन्नय-आभिओग-किब्बिसिय-अच्छरणेहिं । परिवारिओ समंता सुरिंदरिद्धीइ दिप्पंतो ॥११०॥
 एवं आगंतूणं पयाहिणं तव्विलगओ चेव । दाऊणं अवणामइ अगणए तस्स हत्थिस्स ॥१११॥

ताणि य सिलायत्तम्मी सक्कपभावेण तत्थ खुत्ताणि ।

अज्ज वि दीसंति, अओ गयग्गपयगो गिरी जाओ ॥११२॥

भत्तिभरनिब्भरंगो सक्को नमिउं जिणस्स पयकमलं । सब्भूयगुणनिबद्धं एयं शुइमंगलं पढइ ॥११३॥

भवनीरायरनिवडंतजंतुसंताणतारणतरंड ! । तियसिंदवंद-असुरिंदवंदपरिवंदिय ! मुणिंद ! ॥११४॥

जियदुज्जयमयरद्धयसुहड ! महामोहमल्लहरण ! ।

करकलियविमलमुत्ताहलं व परिकलियतेलोक्क ॥११५॥

दुड्डकम्मतरुकढिणगंठिनिड्डवणनिड्डुकुठार ! ।

तियलोयतिलय ! नमिमो जिणिंद ! पयपंकयं तुम्ह ॥११६॥

माणस-सारीरियदुहसहस्ससंपीडियाण सयकालं ।

कुणसु पसायं सामिय ! सिवसुहसंपायणेणऽम्ह ॥११७॥

एवं थोऊण जिणं, भत्तिभरनिभरो तओ सक्को । नियठाणे उवविट्ठो, धम्मं सोउं समाढत्तो ॥११८॥

तं पेच्छिऊण राया चिंतइ संवेगमागओ धणियं । 'सुट्ठु अणेणं धम्मो कओ जओ एरिस विभूई ॥११९॥

धिसि धिसि अलज्जिरेणं अलियं गव्वं समुव्वहंतेण ।

तिण-तूलसयासाओ वि धणियं लहुईकओ अप्पा ॥१२०॥

एयस्स य रिद्धीए महरिद्धीए य अंतरं गरुयं । ता कह अयाणुएणं अहियं आयासिओ अप्पा? ॥१२१॥

एवंविहाणि अवमाणणाणि दीसंति जत्थ संसारे । ता पज्जत्तं तेणं, करेमि तवसंजमोज्जोयं' ॥१२२॥

एयं विचिंतितुणं, वंदित्ता जिणवरस्स पयकमलं ।

पभणइ 'जइ हं जोगो ता देज्जउ मज्झ मुणिदिक्खा' ॥१२३॥

संवेगरंगमउलं जाणिता तस्स तक्खणं चेव । भगवं पि देइ दिक्खं मुणिगणसंसेवियमुयारं ॥१२४॥

दड्डूण गहियदिक्खं इंदो भत्तीइ वंदिउं भणइ । 'नत्थि मह एस सत्ती, विजिओ हं संपयं तुमए' ॥१२५॥

पन्नासरहसहस्सा सत्त य पमयासयाइं चइऊण । काऊण तवं घोरं दसण्णभद्दो गओ मुक्खं ॥१२६॥

सो वि हु मेहरपुत्तो दड्डुं नरनाहसंतियं चरियं । संवेगभावियप्पा पव्वइओ जिणसगासम्मि ॥१२७॥

तत्थ य गयगपयनगो सिरिअज्जमहागिरीहिं सूरिहिं । तित्थे परमपवित्ते णिसग्गसुभभावसंजणणे ॥१२८॥

वंदेत्तु चेइयाइं वित्थिन्नसिलायले सुरमणीए । उत्तमसत्ताऽऽइण्णं पायवगमणं कयं तेहिं ॥१२९॥

पत्ता य देवलोगं, एवं किल दव्वतित्थसंसेवा । दंसणसुद्धिनिमित्तं सूरिहिं महागिरीहिं कया ॥१३०॥

[आर्यमहागिरिकथानकं समाप्तम् । ३.]

भावतीर्थनिषेवायां भीम-महाभीमावुदाहरणम् । तत्र च सम्प्रदायः—

१. ला० 'ल्लनिद्लण ! ॥ २. ला० तइलो' ॥ ३. ला० एवं ॥ ४. ला० 'संजणणे ॥ ५. ला० 'यां तु भी' ॥ ६. ला० तत्र सम्प्र' ॥

(४. भीम-महाभीमयोः कथानकम्)

अत्थि गयणतलविलगदुगसिहरसयसंकुलो नाणादुमसंडमंडियनियंबुदेसो संचरंत-
भीसणसावयकुलमेहलातडविभागो बहुगुहानिवसंतसबरसंधाओ परिपेरंतभमंतवणहत्थिजूहो
महानइनम्मयापवाहुप्पत्तिभूमी निज्झरणझरंतझंकारबहिरियदिसावलयो वन्नरबुक्कारपउरो
सिहिगणकेकारव-कोइलाकुलकोलाहलमुहलो विंज्झो नाम पव्वओ । तस्स य विसमाहोभागनिविद्धा
अत्थि वंसकलंकी नाम चोरपल्ली । तीए य समत्थचोराहिवा भीम-महाभीमाहिहाणा दुवे भायरो
परिवसंति । ते य सम्मदिट्ठिणो वि अविरया पाणिवहाइपसत्ता पायं चोरियाए चेव वित्तिं कप्पेमाणा
विहरंति । अन्नया य सत्थेणं सह अणिययविहारेणं विहरमाणो चंदो व्व सोमयाए, सूरु व्व
तवतेयदितीए, धरणीतलं व खंतीए, जलहि व्व गंभीरयाए, सुरसेलो व्व थिरयाए, गयणतलं व
निरालंबयाए, मेहो व्व दुहसंतावतवियभव्वसत्तसंतावावहारयाए, सुरगुरु व्व बुद्धीए
तक्कालवट्टमाणसुयसागरपारगामी परोवगारकरणेक्कतल्लिच्छचित्तो, किं बहुणा ? जिणधम्मो व्व
मुत्तिमंतो सुसाहुजणपरिवुडो समागओ तं पल्लिप्पएसं धम्मघोसो नाम सूरी । एत्थंतरस्मि य-

आवरियं गयणयलं तमालदलसामलेहिं जलएहिं । अइगज्जियसदेणं फुट्टइ व नहंगणं सहसा ॥१॥
विज्जू यं चमकंती, पीवरधाराहि निवडए सलिलं । पूरागया नईओ, चिक्खल्लचिलिच्चिला मग्गा ॥२॥
जलपुन्ना संगहा, भमंति इंदोयगाइबहुजीवा । किं बहुणा ? संजाया उब्भिन्ननवंकुरा धरणी ॥३॥

तं च तारिसं पाउससिरिमवलोइऊण भणिया गुरुणा साहुणो जहा 'संपयं गच्छंताणमसंजमो,
ता गवेसह इत्थेव पल्लीए पाउसकरणनिमित्तं वसहिं' । तओ 'इच्छं'ति भणिऊण पविट्ठा तत्थ
पल्लीए । पुच्छिओ मज्झत्थवओ कोइ जहा 'अत्थि इत्थ कोइ जो अम्हाण उवस्सयं देइ ?' तेण
भणियं 'वच्चह इत्थ गेहे पल्लीवईण समीवं, ते तुम्ह भत्ता' । तओ पविट्ठा तत्थ गेहे साहुणो । दिट्ठा
य तेहिं । तओ 'अहो ! असंकप्पिओ गेहंगणे कप्पदुमुग्गमो, अचिंतिओ चिंतामणिसंगमो,
अकामियं कामधेणुसमागमणं, अप्पत्थिया कामघडसंपत्ति' ति चित्तेता हरिसुप्फुल्लोयणापडिया
पाएसु । भणियं च 'आइसह जमम्हेहिं कायव्वं ?' । साहूहिं भणियं जहा 'पेसिया अम्हे गुरुणा
चाउम्मसिकरणजोगोवस्सयगवेसणनिमित्तं, ता किमत्थि कोइ उवस्सओ ?' । तओ 'अणुगहो' ति
भणमाणेहिं दंसिओ जइजणस्स पाउगो उवस्सओ । समागया य सूरिणो । संभासिऊण सेज्जायरे
ठिआ तत्थ नियधम्मजोगपरायणा । ते य पल्लिनाहा तब्भत्तिसंजुत्ता गमिति कालं । अवि य—

१. ला० 'रझरं' ॥ २. ला० पाणव' ॥ ३. सं० वा० सु० 'वद्धमा' ॥ ४. ला० उ ॥ ५. ला० 'ओ य म' ॥
६. ला० 'णमुव' ॥ ७. भत्तो उपासकावित्थर्यः ॥ ८. सं० वा० सु० 'प्पियो ॥ ९. ला० 'म्मासक' ॥ १०. ला०
'णपाओगो ॥ ११. सं० वा० सु० ते पल्लि' ॥

कइया वि हु सज्झायं मुणिवरवयणाओं निगयं महुरं । संवेगभावियमणा सुणंति अमयं व घोट्टिन्ता ॥४॥
 कइया वि धम्मज्ञाणं श्रियायमाणे मुणीसरे मुइया । तम्मुहनिहित्तनयणा खणमेकं पज्जुवासेन्ति ॥५॥
 कइया वि हु पडिलेहण-पमज्जणाईसु उज्जए साहू । अवलोइऊण हरिसं वच्चंति गुणाणुरागेण ॥६॥
 कइया वि हु वक्खाणं सुणंति गुरुमुहविणिग्गयं तुड्डा । दुत्तरभवनीरायरतारणवरजाणवत्तं व ॥७॥
 एवं च भत्तिभरणिभरण जइपज्जुवासणपराणं । संवेगभावियाणं वोलीणो पाउसो ताणं ॥८॥
 अह अन्नया कयाई पढंति गुरुणो मुणी समुद्दिसिउं । एयं गाहाजुयलं ताण सुणंताण दोणं पि ॥९॥

उच्छू वोलिंति वई तुंबीओ जायपुत्तभंडाओ ।

वसहा जायत्थामा गामा पव्वायचिक्खल्ला ॥३१॥

अप्पोदगा य मग्गा वसुहा वि य पक्कमट्टिया जाया ।

अन्नोक्कंता पंथा साहूणं विहरियं कालो ॥३२॥

तओ इमं विहारकमसूयणं सुणिऊण उव्वाहुलयभरभरेज्जमाणमाणसेहिं वंदिऊण भणियं तेहिं
 ‘जहा भयवं ! महारंभाइपसत्ताण तुम्ह पायसुस्सूसणापयपवाहपक्खालेज्जमाणपावपंकाणं अम्हाणं
 अणुग्गहड्डाए किं ण इत्थ चेव चिट्ठेस्सह, जेण एवं भणह ?’ । गुरुहिं भणियं ‘सावया ! न एस
 कप्पो साहूणं । जओ भणियमागमे-

समणाणं सउणाणं भमरकुलाणं च गोउलाणं च ।

अणियाओ वसहीओ सारइयाणं च मेहाणं ॥३३॥

ता महाणुभावा ! न इत्थइत्थे आगहो कायव्वो, वट्टमाणजोगेण य चाउम्माससमत्तीए
 विहरिस्सामो’ । अन्नम्मि य दिणै संवहंतेसु साहूसु आमंतिऊण ते भणियं(या) गुरुहिं जहा ‘पभाए
 अम्हाणं अणुकूलं पत्थाणदिणं ता भो भद्दा ! परिभाविऊण संसारासारत्तणं, चवलत्तणमिंदियाणं,
 खणरमणीयत्तणं विसयाणं, निच्चपरिसडणसीलत्तणमाउयदलाणं, दुग्गइनगरगमणपगुणमगत्तणं च
 पावायरणाणं, गेण्हह सव्वविरइपमुहं किंचि विरइड्डाणं’ । तओ ‘कहिं मरुत्थलीए कप्पपायवो ?,
 कहिं मायंगगेहे एरावणो हत्थी ? कहिं दालिदियगेहे रयणवुड्डी ?, कहिं अम्हारिसा पाणिणो ?,
 कहिं एवंविहा सामग्गि ?’ ति संपहारिऊण भणियं तेहिं ‘भयवं ! जमम्हाण मुचियं तं सयमेव
 संपहारिऊण उवइसह । तओ गुरुहिं ‘एयस्सेव उचियं’ति चित्तिऊण दिन्नं ताण रायभोयणवयं ।
 कहिया य तद्दोसा जहा—

१. मुनीन् ॥ २. इमे ३१-३२ अङ्कयुक्ते द्वे गाथे ओघनिर्युक्ते: १७०-१७१ अङ्कतमे स्तः, बृहत्कल्पभाष्ये
 १५३९-४० अङ्कवत्यौ च द्वितीयगाथाचतुर्थचरणपाठान्तरसमेते लभ्येते, तद्यथा-विहरणकालो सुविहियाणं ॥ ३.
 प्रम्लानकर्मदा: ॥ ४. विहर्तुम् ॥ ५. गाथेयं ओघनिर्युक्तौ १७२तमी समुपलभ्यते ॥ ६. सं० वा० सु० ‘णे सुसंव’ ॥
 ७. सं० वा० सु० ‘णसमग्ग’ ॥ ८. ला० ‘व परिभाविऊण ॥ ९. ला० राईभो० ॥

मालिंति महियलं जामिणीसु रयणीयरा समंतेणं । ते विट्ठालिंति फुडं रयणीए भुंजमाणा उ ॥१०॥
मेहं पिपीलियाओ हणंति, वमणं च मच्छिया कुणइ । जूया जलोयरत्तं, कोलियओ कुट्टरोगं च ॥११॥
वाल्लो सरस्स भंगं, कंटो लग्गइ गलम्मि दारुं च । तालुम्मि विंधइ अली वंजणमज्झम्मि भुंजंतो ॥१२॥
जीवाण कुंथुमाईण घाईणं भाणधोयणाईसु । एमाइ रयणिभोयणदोसे को साहिउं तरइ ? । ॥१३॥

तथा निशीथभाष्येऽप्युक्तम्-

जइ वि हु फासुयदव्वं कुंथू-पणगाइ तह वि दुप्पस्सा ।
पच्चक्खणाणिणो वि हु राईभत्तं परिहरंति ॥३४॥

जइ वि हु पिवीलिगाई दीसंति पईवमाइउज्जोए ।
तह वि खलु अणाइन्नं मूलवयविराहणा जेणं ॥३५॥

(निशीथभाष्यगा० ३३९९-३४००)

एवं च दाऊण तेसिमणुसट्ठिं राईभोयणवयं च पभायसमये पट्टिया सूरिणो । ते य दो वि करकलियकरालकरवाला पट्टिया गुरूण पुरओ, जाव पत्ता गुरूणो सीमंतं । तओ नियत्तिउकामेहिं वंदिया तेहिं गुरूणो । भणियं च गुरूहिं जहा-

‘वयंभगे गुरुदोसो थेवस्स वि पालणा गुणकरी उ ।’ तम्हा दढव्वएहिं होयव्वं एत्थ वत्थुम्मि ॥१४॥
एवं(व) भणिऊण गुरूणो अन्नं देसंतरं गया, ते वि । ‘इच्छं’ति भाणिऊणं संपत्ता निययगेहम्मि ॥१५॥
अह अन्नया कयाई चोरसमेएहिं अण्णविसयम्मि । गंतुं अइप्पभूयं आणीयं गोहणं तेहिं ॥१६॥
तं गहिऊणं पत्ता पच्चासन्नम्मि निययपल्लीए । गामम्मि, तस्स बहिया चोरा महिसं विणासंति ॥१७॥
तं अद्धया पयंती, मज्झा अद्धया गया गामे । मन्तंति मज्जयत्ता गोहणलोभेण चलियमणा ॥१८॥
घाएमु मंसइत्ते जेणऽम्हाणं इमं हवइ सव्वं । इय मंतिऊण खेत्तं अद्धयमज्जे विसं तेहिं ॥१९॥
इयरेहिं वि तग्घायणविसयं चिंतितु अद्धए मंसे । जाव विसं पक्खेत्तं ताव य अत्थं गओ सूरु ॥२०॥
‘रयणी जाय’ ति दढव्वएहिं सेणाहिवेहिं नो भुत्तं । अण्णोण्णदिण्णविसभोयणेण इयरे मया सव्वे ॥२१॥
दट्ठूण वइससं तं धणियं संवेगमागया दो वि । ते भीम-महाभीमा जंपंति परोप्परं एवं ॥२२॥
अहह ! कह अविरईए दारुणया जं इमे मया सव्वे । अम्हं पुण एगस्स वि वयस्स एयं फलं जायं ॥२३॥
जं न मया तह रिद्धी इह लोए चेव एरिसा पत्ता । परलोए पुण मोक्खो होही कमसो न संदेहो ॥२४॥

१. ला० ०ओ कोट्टरोगं ॥ २. ला० घायणं भाणधोईणा ॥ ३. एकादशमोदेशके ॥ ४. पञ्चाशके पञ्चमपञ्चाशकस्य द्वादशमीगाथायाः पूर्वार्धमिदम् ॥ ५. ला० मज्जइत्ता ॥ ६. सं० वा० सु० मज्झे ॥

एवं च जंपिऊणं तं सव्वं गोहणं गहिऊण गया नियगेहं । काऊण य चोरपरियणस्स जहोचियं कायव्वं, संजायपच्चएहिं य जहासत्तीए गहियाओ अन्नाओ वि निवित्तीओ । एवं च विसुद्धसम्मत्तसंजुयाणं पडिवण्णणिवित्तिपरिवालणुज्जयाण सुसाहुजणपज्जुवासणागुणाणु-
रंजियमाणसाणं दीणा-ऽणाहाइदाणपरायणाणं पसत्थभावणाभावियाणं जिणिंदवंदण-पूयणाइपसत्ताणं
नियदुच्चरियनिंदणं कुणंताणं समागओ अहाउयकालो । तओ पंचनमोकारपरा मरिऊणं उप्पन्ना
देवलोगे देवत्ताए । तओ चुया सुमाणुसत्त-सुदेवत्ताइकमेण सिद्ध ति ।

[भीम-महाभीमयोः कथानकं समाप्तम् । ४.]

एवं भावतीर्थसेवा सम्यक्त्वं भूषयतीति । व्याख्यातं तृतीयभूषणम् । सम्प्रति चतुर्थम् ।
तत्र 'भक्ति' ति सूत्रावयवः, 'भक्तिः' विनयवैयावृत्त्यरूपा बाह्या प्रतिपत्तिः सा च सम्यक्त्वं
भूषयति, उक्तं च—

तित्थयराणं वरमुणिगणाण संघस्स पवरभत्तीए ।
सम्मत्तं भूसिज्जइ अणवरयविहिज्जमाणीए ॥३६॥
तम्हा अणवरयं चिय भत्ती एएसु होइ कायव्वा ।
सम्मत्तभूसणत्थं भवभयभीएहिं भव्वेहिं ॥३७॥

तत्र तावत् तीर्थकरभक्तावुदाहरणं प्रतिपाद्यते—

[५. आरामशोभाकथानकम्]

इह चेव जंबुदीवे दीवे दीवोयहीण मज्झत्थे । भरहं ति नामखेत्तं छक्खंडं अत्थि सुपसिद्धं ॥१॥
तत्थ य मज्झिमखंडे गोमहिससमाउलो महारम्मो । देसाण गुणनिहाणं अत्थि कुसट्ट ति वरदेसो ॥२॥

तत्थ य परिस्समकिलंतनर-नारीहियं व बहुसासं, महामुणि व्व सुसंवरं, कामिणीयणसीसं
व ससीमंतयं अत्थि थलासयं नाम महागामं ।

पमुइयजणसयरम्मं अविगम्मं दुट्ठ-राय-चोराणं । दाण-दया-दमनिलयं तं गामं सयलगुणकलियं ॥३॥

तं च गामं सरूवेणेव ज्झाडवज्जियं, अवि य—

चाउदिसिं पि गामस्स तस्स मोत्तुं तिणाणि णो अन्नं । उट्ठेइ किं पि झाडं जोयणमित्ताएँ भूमीए ॥४॥

इओ य अत्थि तत्थ गामे रिउवेयाइपाढगो अगिसम्मो नाम बैभणो । तस्स जलणसिहा

१. ला० गिण्हिऊण ॥ २. सं० वा० सु० 'त्ताए क' ॥ ३. ला० कुसट्ट ति ॥ ४. ला० विप्पो ।
चंडरुहा नाम से भारिया । ताणं ॥

नाम बंभणी । ताणं च विसयसुहमणुहवंताणं जाया एगा दारिया । कयं च से नामं विज्जुप्पह ति ।
सा य अईवरूवाइगुणगणोवेया, अवि य—

रूवोहामिय जीएँ, सुरंगण, गइ-वयणेहि य वरहंसगण ।

चंदलेह सोमत्तणि नज्जइ, गोरि नाइ सोहणिं छज्जइ ॥५॥

दक्ख विणीय गुरूयणभत्ती, इत्थिपसत्थकलागमजुत्ती ।

सच्चसोयसीलेहिँ अलंकिय, सरलसहाव कया वि अवंकिय ॥६॥

तीसे य जाव अइकंताणि अट्ट वरिसाणि ताव य रोग-जराकिलेसदाढाकरालं पविट्ठा
मच्चुवयणं से जणणी । तओ सा चेव सव्वं गिहवावारं काउमाढता, अवि य—

उट्ठितु पभायम्मिं करेइ गोदोहणं तओ पच्छा । छाणुवलेवण-बोहारणाइ सव्वं विहेऊण ॥७॥

जाइ गोरक्खणत्थं, पुणो वि मज्झण्हकालसमयम्मि । आणेउं गावीओ करेइ गोदोहणं पुण वि ॥८॥

जणयस्स भोयणविहिं काऊण सयं पि भुंजिउं बाला । गावीण रक्खणत्थं जाइ पुणो एइ सायम्मि ॥९॥

सव्वं पओसकिच्चं काऊणं निदमोक्खणं कुणइ । एवं घरकम्मेणं णिच्चं उब्भज्जए बाला ॥१०॥

तओ अन्नम्मि दियहे अच्चंतपराभग्गाए लज्जं मोत्तूण भणिओ जणओ 'ताय ! तहा करेसु
जहा मह माया भवइ, जओ हं गिहकम्मं करंती पराभग्गामि' । तओ जणएण 'सोहणं भणइ' ति
मण्णमाणेण संगहिया का वि । सा वि तीसे चेव भारं निक्खिविऊण ण्हाण-विलेवण-विभूसाइवाव
चेट्ठइ । तओ विज्जुप्पभाए चिंतियं जहा 'सुहनिमित्तं मए एयं कारियं जाव दुगुणयरो मह संतावो
जाओ' । तओ जा पभाए निगच्छइ सा अइकंते भोयणसमये समागच्छइ, तत्थ य जं किंचि
उव्वरियगाइ भोत्तूण जा जाइ सा पुणो रयणीए समागच्छइ । एवं च महया किलेसेणं अइकंताणि
दुवालसवरिसाणि । अन्नदियहम्मि य गावीसु चरंतीसु चेव छायाअभावाओ पसुत्ता सा खडमज्जे ।
इत्थंतरम्मि य समागओ तमुदेसं एगो विसहरो, अवि य—

अइकसिणमहाकाओ रत्तच्छो चवलजमलजीहालो ।

विहियफडो तुरियगई भयभीओ तीएँ पासम्मि ॥११॥

सो नागकुमारसुराहिडियदेहतणेण जंपेइ । माणुसभासाएँ तओ कोमलवयणेहिँ उट्ठवइ ॥१२॥

तो उट्ठियं तयं जाणिऊण अह भणइ विसहरो एवं । 'वच्छे ! भयभीओ हं समागओ तुज्झ पासम्मि ॥१३॥

एए मह पुट्ठीए जम्हा धावंति दुट्ठगारुडिया । मा एयाण करंडयपिण्डियदेहो दुही होवं ॥१४॥

ता बाले ! नियंखोलाइ ढक्किउं उवरिमेण वत्थेण । रक्खेहि ममं भीयं मा पुत्ति ! बहं विमालेहि ॥१५॥

१. सं० वा० सु० गुणोवेया ॥ २. ला० कुणंता भज्जामि ॥ ३. ला० 'डा । तओ ॥ ४. सं० वा०
सु० 'म्मि गावी ॥ ५. सं० वा० सु० तओ उट्ठि' ॥ ६. ला० होहं ॥ ७. ला० नियकोलाएँ ॥

अहयं नागकुमाराहिडियदेहो न चेव एसिं । मंतस्स देवयाए सक्केमिह लंघिउं आणं ॥१६॥
ता मा बीहेहि तुमं मह वयणं कुणसु निव्वियप्पेणं' । इय भणियाए तीए छूढो कोलाएँ सो नागो ॥१७॥

इत्थंतरम्मि य ओसहिवलयगहियकरयला समागया ते गारुडिया । पुच्छिया य तेहिं सा 'किं वच्चे ! दिट्ठो को वि तए एण मग्गेण वच्चंतो महानागो ?' । तीए भणियं 'अहमुवरिल्लछइयवयणा इह सुत्ता ठिया, ता किं ममं पुच्छह ?' । तओ तेहिं भणियं 'अरे बाला खु एसा, महानागं दड्डूण कूवंती पणट्ठा हुंता, जइ एईए दिट्ठो हुंतो, ता निच्छयं न एयाए दिट्ठो अग्गओ पलोएह' । ते वि अग्गओ पिट्ठओ य पलोइऊण कत्थ वि तमपिच्छेता 'अहो कहां पेच्छंताणं चेव पणट्ठो सो ?' विम्हउप्फुल्ललोयणा जहागयं पडिगया ते गारुडिया । तओ भणिओ तीए सो सप्पो जहा 'निग्गच्छाहि संपयं जओ गया ते नरिंदा' । नीसरिओ य एसो । तओ तेण तयऽहिट्ठायगनागकुमारदेवेण पच्चक्खीहोऊण आवरिऊण य तं नागरूवं पयडिऊण सुररूवं भणिया एसा 'वच्चे ? तुड्डो हं तुज्झ एणं अणणसरिसेणं परोवयारकरणरसिएणं धीरत्तणचेट्ठिएणं, ता वरेहि वरं जेण तं पयच्छामि' । तओ चलमाणकुंडलाहरणं तियसमवल्लोइऊण भणियमेईए 'ताय ! जइ एवं ता करेहि महच्छायं जेण सुहेण चेव गावीओ चारेमि, अन्नहा बाढं घम्मेण बाहेज्जामि' । देवेण चिंतियं 'अहो ! मुद्धा वराइणी जा मह तौसे वि एवं पभणइ, ता करेमि अहं पि एईए उवयारं'ति चिंतिऊण कओ तीए उवारी महारामो । अवि य—

नाणाजाइपहाणरूक्खनिलओ सव्वोउदिन्नफलो, निच्चं फुल्लपरागवासियदिसो मत्तालिसदाउलो ।

सव्वतो रविपायरुद्धपसरो चित्ताणुकूलो दढं, आरामो वरवण्ण-गंधकलिओ देवेण सै निम्मिओ ॥१८॥

भणिया य 'वच्चे ! महप्पभावेण एसो जत्थ जत्थ तुमं वच्चिहिसि तत्थ तत्थ तुज्झोवरिं ठिओ गच्छिस्सइ, गेहाइगयाए तुह इच्छाए सम्माइऊण तदुवरिं चिट्ठिस्सइ, आवइकाले पओयणे य मं सुमरिज्जसु'ति भणिऊण गओ य सुरो । सा वि अमयफलासायणविगयतण्हा-छुहा तत्थेव ठिया जाव संजाया रयणी । तओ गावीओ घेतूण गया गेहं । आरामो वि ठिओ घोवरिं । 'भुंजसु'ति जणणीए भणियाए 'नत्थि छुह' ति उत्तरं दाऊण ठिया । रयणीपच्छिमजामे य गावीओ घेतूण गया अरण्णं । एवं दिणे दिणे कुणंतीए गयाणि कंयवि वासराणि ।

अन्नया य अडविट्ठियाए आरामतलसुहपसुत्ताए समागओ तेणंतेणं विजयजत्तापडिनियत्तो पाडलिपुत्तपुराहिवो जियसत्तू णाम राया । दिट्ठो य तेण सो आरामो । भणिओ य मंती 'देसु एत्थेव रम्मरामे आवासं' । तओ मंतिणा वि 'आएसो'ति भणिय पहाणसहयारपायवतले दिन्नं

१. ला० मह भणियं ॥ २. सं० वा० सु० 'या गारु' ॥ ३. सं० वा० सु० तोसेण एवं ॥ ४. ला० 'मि एवं पि । वा० 'मि एईए ॥ ५. तस्याः ॥ ६. ला० गओ असुरो ॥ ७. ला० 'णीभणि' ॥ ८. सं० वा० सु० छुहा' उत' ॥ ९. सं० वा० सु० 'मे गावी' ॥ १०. ला० कइवयवास' ॥

राइणो सीहासणं । निविट्ठो तत्थ राया । तओ य—

बज्झंति तरुवरेसुं चंचलतुरयाण वरवलच्छीओ । पल्लाण-कवियमाईणि ओलइज्जंति साहासु ॥१९॥

महखंधदुमेसु तथा गाढं बज्झंति मत्तकरिनाहा । करभाइवाहणाणि य जहारुहं संठविज्जंति ॥२०॥

ईओ य खंधावाररवायणणेण उट्टिया सा बाला । दिट्ठाओ य तीए करिवराइभउत्तट्ठाओ दूरं गयाओ गावीओ । तओ पेच्छंतस्सेव मंतिणो पहाइया सा ताण वालणत्थं । तओ गओ सव्वो वि आरामो तुरंगमाईए घेत्तूण तीए समं । ‘किं किमेयं ?’ ति संभमुब्भंतलोयणो उट्टिओ नरनाहाइलोओ । तओ किमेयमिंदयालं पिव दीसइ ?’ ति पुच्छिओ मंती राइणा । मंतिणा भणियं ‘देव ! अहमेवं वियक्केमि जहा—इमाओ पएसाओ निदाखयविबुद्धा उट्टिऊण नियकरयलेहिं चमढंती दो वि अच्छीणि उत्तट्ठलोयणा पहाइया एसा बालिया, एईए समं एसो वि पयट्ठो आरामो, ता एईए पभावो को वि लक्खिज्जइ, न य एसा देवया अच्छिचमढणाओ संभाविज्जइ, ता सच्चवेमि एयं’ ति भणमाणेण पहाविऊण कओ तीए सदो । ‘किं भणह?’ ति भणमाणी ठिया सा तत्थ सहारामेण । ‘इओ एहि’ ति सद्विया णेण । तीए भणियं ‘मम गावीओ दूरं वट्ठंति ।’ मंतिणा वि ‘अम्हे आणेमो’ ति भणिऊण पेसिया आसवारा । आणियाओ गावीओ । सा वि समागया रायसमीवं । ठिओ तह च्विय आरामो । तओ रण्णा तीए तमइसयं दट्ठूण पलोइया सव्वंगं, लक्खिऊण य कुमारिं संजायाणुराएण पलोइयं मंतिवयणं । मंतिणा वि लक्खिऊण राइणो भावं भणिया विज्जुप्पहा, अवि य—

सयलपुहईइ नाहं पभूयसामंतपणयपयकमलं । भदे ! नरिंदनाहं पडिवज्जसु पवरभत्तारं ॥२१॥

तओ तीए भणियं ‘नाऽहं अप्पवसा’ । मंतिणा भणियं ‘कस्स पुण तुमं वसा ?’ । तीए भणियं ‘जणणिजणयाणं । मंतिणा भणियं ‘को तुज्झ जणओ ? कत्थ वा वसइ ? किं वा से नामं ?’ । तीए जंपियं ‘इत्थेव गामे अग्निसम्मो नाम माहणो परिवसइ । तओ राइणा भणिओ महंतओ जहा ‘गच्छ तुमं तत्थ एयं वरिऊण आगच्छ’ । तओ गओ मंती गामं । पविट्ठो य तस्स मंदिरे । दिट्ठो य तेण समागच्छंतो मंती । अब्भुट्ठिऊण य दिन्नमासणं, भणियं च ‘आइसह जं मए करणेज्जं’ । तेण भणियं ‘भद् ! किमत्थिंतुज्झ का वि दुहिया ?’ । तेण भणियमामं । मंतिणा भणियं ‘जइ एवं तो दिज्जउ सा देवस्स’ । तेण भणियं ‘दिन्ना चेव, जओ अम्ह पाणा वि देवसंतिया किं पुण कन्न ?’ ति । मंतिणा भणियं ‘तो आगच्छ देवस्स समीवं’ । तओ गओ रायसमीवं अग्निसम्मो । आसीवायपुरस्सरं निसन्नो रायसमीवे । कहिओ य वुत्तंतो मंतिणा । तओ रत्ता कालविलंबभयेण गंधव्वविवाहेण

१. ला० तओ ॥ २. ला० तुरगाईए ॥ ३. सं० वा० सु० किमेवमिं ॥ ४. सं० वा० सु० णा उ भणि ॥ ५. ला० तत्थेव स ॥ ६. ला० वच्चेति ॥ ७. सं० वा० सु० ण कुमा ॥ ८. ला० अत्थेव ॥ ९. ला० त्थि कावि तुज्झ ॥

परिणीया सा । पुव्वनामं परावत्तिऊण कयं अन्ननामं, अवि य—

जम्हा इमीएँ उवरिं रेहइ बहुतरुवरेहिँ रमणिज्जो । आरामो तेण इमा नामेणाऽऽरामसोह ति ॥२२॥

तओ राया 'संपयं एस मे ससुरओ भणिऊण नज्जिहि' ति लज्जमाणो दाऊण दुवालस वरगामाणि पयड्डो अगगओहुत्तं । निवेसिया करिवरस्सुवरिं आरामसोहा । ठिओ य तदुवरिं चेव समाइऊण आरामो । एवं च परिहिट्टुड्डो वच्चए राया । अवि य-

तीए लंभेण णिवो सकयत्थं जीवियं ति मन्नेइ । अहवा को वररयणं लद्धुं न य तोसमुव्वहइ ? ॥२३॥
तीएँ वयणावलोयणवावडचित्तो पहम्मि सो जाई । अहवा सुंदरगम्मी खुप्पइ दिट्ठी किमच्छेरं ? ॥२४॥
इक्कं रूवाइजुया, बीयं पुण देवयापरिगहिया । मोहेइ जं नरिदं किमित्थ अच्छेरयं भणह ? ॥२५॥

तओ जाव पत्ताणि कमेण पाडलिपुत्तं ताव समाइड्डं राइणा, अवि य-

कारेह हट्टसोहं, उच्छल्लह गुड्डियाउ सव्वत्थ । मंचाइमंचकलियं सव्वं वि य पुरवरं कुणह ॥२६॥
किं बहुणा ? सविसेसं अज्जं सव्वं पि कुणह सामग्गिं । जेण पविसामि नयरे देवीएँ समं विभूईए ॥२७॥
संपाडियम्मि सव्वम्मि सासणे राइणो पुरजणेण । पविसइ ठाणे ठाणे कयकोउयमंगलो राया ॥२८॥
पविसंतम्मि नरिदे कोरुहलपूरिओ जणो सव्वो । एइ निव-देविदंसणसमूसुओ नियगिहेहिंतो ॥२९॥
पुरिसा वण्णंति निवं, देविं पुण वण्णयंति इत्थीओ । तत्थ भणइ कोइ जुवा 'कयपुण्णो एस नरनाहो ॥३०॥
जेणेयं थीरयणं निजियतियलोजुवइल्लइण्णं । पत्तं महप्पहावं खाणी संसारसुक्खाणं' ॥३१॥
वुड्डो को वि पयंपइ 'पुव्वजियधम्मपरिणई एसा । ता तं चेव करेमो जेणऽन्नभवम्मि इय होमो' ॥३२॥
बालो वि जंपइ इमं दड्डूण फलाई करिवरस्सुवरिं । 'अहह अहो विविहफला अम्हे कह पाविमोँ एए?' ॥३३॥
जंपइ कावि हुनारी 'हला! हला! पेच्छ अइसओईए' । बीयाए सा भणिया 'देवपभावो इमो सव्वो' । ॥३४॥
अण्णाएँ पुणो भणियं 'पेच्छसु एयाएँ रूवसंपत्ती' । बीयाएँ समुल्लवियं 'वत्थाभरणेहिँ नणु रूवं' ॥३५॥
अण्णाइ पुणो भणियं 'एस च्चिय जयउ जीवलोगम्मि । जा नरवइणा सद्धिं एक्कासणसंठिया जाइ' ॥३६॥
इयरीएँ समुल्लवियं 'कह एयं वण्णसे तुमं सुयणु ! । अजा लोयाण समक्खं निवसहिआ लज्जए नेय ?' ॥३७॥
अन्ना का वि पयंपइ 'पेच्छ हले ! कोउयं अइमहंतं । जं करिवरस्स उवरिं आरामो सुट्टु रमणिज्जो' ॥३८॥
बीया पयंपइ तओ 'न एयमम्हाण कोउगं किं पि । जं देवयाणुभावेण होइ एयारिसं सव्वं' ॥३९॥

इय विविहजंपिरस्स उ जणस्स मज्जेण सो निवो पत्तो ।

नियभुवणम्मि विसाले उत्तरइ गयाओँ तीइ समं ॥४०॥

१. सं० वा० सु० 'ओ तदु ॥ २. ला० 'व कमेण पत्राणि पाड' ॥ ३. ला० 'लावणं' ॥ ४. ला० करिनाहस्सुवरिं ॥ ५. ला० 'यभवण ॥

अब्भितरं पविट्ठाण ताण सो मंदिरस्स उवरिम्मि । आरामो ठाइ लहुं दिव्वो देवाणुभावेणं ॥४१॥
इय एवं तौइ समं भुंजंतो विसयसोक्खमणवरयं । दोगुंदुगु व्व देवो गयं पि कालं न याणेइ ॥४२॥

इओ य तीसे सवक्किजणणीए समुप्पन्ना धूया । जाया य जोव्वणत्था । तओ चिंतियं तीए
‘जइ कहिंचि सा आरामसोभा न भवइ तओ तीए गुणाणुरत्तो मम धूयं पि परिण्णेइ राया, ता केणइ
पओगेण तहा करेमि जहा सा न भवइ’ । एवं चिंतिऊण भणिओ तीए भट्टो जहा ‘किं न
आरामसोभाए जोगं किंपि भत्तुल्लागईयं पेसेसि? । तेण भणियं ‘पिए ! किमम्ह भत्तुल्लेण ? तीसे
किं पि ऊणं ?’ । तीए भणियं ‘सच्चं, न किंचि ऊणं परं अम्हाण चित्तनिव्वुई न भवइ’ । तओ तीसे
आगहं नाऊण भणिया ‘जइ एवं ता करेहि किं पि’ । तीए वि हरिसुप्फुल्ललोयणाए कया सीहकेसरया
मोयगा, संजोइया पभूयसंभारणदव्वेहिं, भाविया महुरेणं । पक्खित्ता अव्वंगकुड्ढे भणिओ य तीए
भत्ता जहा ‘नेहि सयं चेव एए मोयगे, मा अवंतराले अण्णो को वि पच्चवाओ भविस्सइ’ । तओ
सो माहणो सरलसहावो तीए दुट्ठभावमलक्खंतो सयं चेव एगागी लंछियं मुद्दियं काऊण तं घडयं सिरे
समारोविऊण जाव पयट्टो ताव भणिओ तीए जहा ‘एयं मम भत्तुल्लं आरामसोहाए चेव समप्पियव्वं
भणियव्वा य वच्छा जहा—एयं तए सयं चेव भुत्तव्वं, न अन्नस्स कस्सइ दाइव्वं, मा हं एयस्स
विरूवत्तेण रायकुले हसणिज्जा भविस्सामि’ । ‘एवं होउ’ ति भणिऊण पयट्टो एसो । तिसंजं च
पडियग्गमाणो, मुद्दं च संवायंतो, सुयणकाले य उस्सीसगमूले ठवयंतो, कमेण पत्तो पाडलिऊत्तस्स
नयरस्स बाहिं । तत्थ य उव्वाउ ति पसुत्तो एगस्स वडरुक्खस्स महयमहालयस्स हेट्ठओ ।
कम्मधम्मसंजोगेण य तत्थ वडरुक्खकयकीलानिवासेण चिंतियं तेण तीए परिचियनागकुमारदेवेण
‘हंत ! को वि एस पहिओ दीहरऽद्धाणलंघणपरिस्सम-निस्सहंगो सुवइ ता को पुण एसो ?’ ति
चिंतंतेण पसारियं नाणं, तेण य जाणिओ जहा—एसो सो आरामसोहाजणओ ति । ता पुण किं
कारणं एसो इत्थ पट्टेण पविसिउकामो ?, किं वा एयस्स संबले चिट्ठइ ? एवं च जाव णिरूवइ
ताव पेच्छइ ते विसमोयगे । दट्ठूण य चिंतियमणेण जहा ‘अहो से जणणीए दुट्ठया !, ता किं मए
विज्जमाणम्मि चेव एसा विवज्जिस्सइ ?’ ति परिभाविंतेण अवहडा ते विसमोयगा, पक्खित्ता अन्ने
तत्थ अमयमोयगा । खणंतरेण य विबुज्झिऊण सो पविट्टो नयरमज्जे । पत्तो रायभवणदुवारं । तओ
पडिहारमुद्दिसिऊण भणियमणेण ‘भद्द ! निवेएहि राइणो जहा—आरामसोहाजणओ दुवारदेसे
देवदंसणमणुकंखइ’ । पडिहारेण वि निवेइयं रण्णो । राइणा भणियं ‘लहुं पविसेहि’ । तव्वयणाणंतं
च पवेसिओ पडिहारेण । तेण वि उवसप्पिऊण ‘भूभूर्भुवः स्वस्ति स्वाहा वषड् इन्द्राय’

१. ला० ‘इ पेसे ॥ २. सं० वा० सु० संपयं ॥ ३. सं० वा० सु० ‘रे काऊण जाव ॥ ४. सं० वा०
सु० ‘य भुत्त’ ॥ ५. सं० वा० सु० रायस्स कुले ॥ ६. ला० ‘त्तनयरस्स ॥ ७. ला० महईम’ ॥ ८. ला० ता
किं पुण कार’ ॥ ९. ला० ‘हारं समुद्दि’ ॥

इत्यादिमन्त्रपठनपूर्वकं समप्पियमुवायणं नरवइपच्चासन्नोवविट्ठाए आरामसोहाए । भणियं च जहा 'देव ! विन्नत्तं वच्छाजणणीए जहा—एयं भत्तुल्लगं मए जं वा तं वा मायाहियएण पेसियं, अओ वच्छाए चेव समप्पणीयं, किं बहुणा ? जहा हं रायकुले हसणेज्जा ण भवामि तथा कायव्वं' । तओ राइणा निरुवियं वयणं देवीए, तीए वि नियदासचेडीए हत्थे दाऊण नीयं सगेहे । आभरण-वत्था-उलंकारा-इदाणेण कओ उवयारो माहणस्स । देवी वि सगिहं गया । उट्टिए य अत्थाणे गओ राया देविमंदिरं । सुहासणोवविट्ठो य विण्णत्तो तीए, अवि य—

‘देव ! मह कुण पसायं, नियदिट्ठिं देह, जेण सो कुडओ । उग्घाडिज्जइ संपइ’ इय सोउं जंपए राया ॥४३॥

‘देवि ! कुण मा वियप्पं, इमं पि अण्णं पि जं तए विहियं । तं अम्हाण पमाणं, उग्घाडहि तो तयं झत्ति’ ॥४४॥

तो एसा तं कुडयं उग्घाडइ जाव ताव सहस ति । निद्धाइ तओ गंधो जो दुलहो मच्चलोगम्मि ॥४५॥

गंधेण तेण राया अक्खित्तो जाव ता पलोएइ । अमयप्फलसारिच्छे सुपमाणे मोयगे दिव्वे ॥४६॥

अइकोउगेण राया दंसेऊणं चओरजीवस्स । भुंजेइ मोयगे जा अच्चत्थं विम्हिओ ताहे ॥४७॥

तओ भणियं राइणा जहा “देवि ! ‘अपुव्वरस’त्ति काऊण पेसेहि एगेगं मोयगं नियभगिणीणं” । तीए वि तह चेव कयं । तओ उच्छलिओ साहुवाओ जणणीए जहा ‘न अण्णस्स एवंविहं विण्णाणं’ ति । ततो य विसज्जाविया अग्निसम्मणेण जहा ‘देव ! विसज्जेह कं पि कालं वच्छं, पुणो वि आणेज्जह’ । रण्णा भणियं ‘भट्ट ! असूर्यम्पश्या राजदाराः’ । तओ निच्छयं नाऊण गओ भट्टो नियट्ठाणं । कहिओ सव्वो वि वुत्तंतो तीए । तओ चिंतियमणाए ‘हंत ! किहमेयं निप्फलं जायं ?, नूणं सुंदरं भविस्सइ महुरयं ता अन्नं सुंदरतरं बीयवाराए करिस्सामि तहेव । केहिंचि दिणेहिं वियक्कंतेहिं फीणियाकरंडयं घेत्तूण पेसिओ भट्टो । तेणेव कमेण पत्तो तं वडपायवं । दिट्ठो देवेण । अवहरियं विसं । तहेव जाया सलाहा । पुणो तइयवाराए आवन्नसत्तं सोऊण सुपरिक्खियतालपुडसं-जोइयमंडियाकरंडयं समप्पिऊण भणिओ ‘इण्हिं तथा कायव्वं जहा इत्थागंतूण वच्छा पसवइ, जइ कहंचि राया न पडिवज्जइ तो बंभणसरूवं दंसणीयं’ । ‘एवं’ति पडिवज्जिऊण गओ एसो । तहेव वडरूक्खं पत्तस्स अवहरियं गरलं देवेण । तेणेव कमविभागेण विण्णत्तो राया जहा ‘देव ! इण्हिं विसज्जेह एयं, जेण तत्थ गंतूण पसवइ’ । राइणा भणियं ‘ण एयं कयाइ संभवइ’ । तओ भट्टेण निवेसिऊण उयरे छुरियं भणियं ‘जइ न विसज्जेह तओ अहं तुम्हाणमुवरि बंभणो होमि’ । तओ से निच्छयं नाऊण मंतिणा सह सामत्थिऊण विसज्जिया महासामग्गीए । तओ तमागच्छंतं नाऊण खणाविओ नियगेहपिड्डओ महंतो से मायाए कूवो । ठाविया य पच्छन्ना भूमिघरयम्मि नियधूया । पत्ता

१. सं० वा० सु० ‘ए निय’ ॥ २. ला० ‘डीहत्थे’ ॥ ३. सं० वा० सु० ‘पि एव(वं) पि जं’ ॥ ४. ला० ‘णं न सुंद’ ॥ ५. ला० विइक्कं ॥ ६. सं० वा० सु० ‘व वणे कमे’ ॥ ७. ला० ‘णो तओ’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘या पच्छन्ना’ ॥

य तत्थ महाभडचडगरेणं आरामसोहा । कयं सव्वं पि करणिज्जं । पत्तेय पसूइसमये पसूया देवकुमारसरिसं दारयं । तओ अन्नया कयाइ दूरत्थाणं अंगपडियारियाणं दिव्वजोएण आसन्नाए मायाए उट्टिया एसा सरीरचिंताए नीया पच्छिमदुवारेणं । दडूण य कूवयं भणियमिमीए ‘अम्मो ! कया एस कूवओ निप्पन्नो ?’ । तीए भणियं ‘पुत्त ! तुज्झागमणं णारुण विससंचरणाइभएण गिहे चेव एस मए खणाविओ’ । तओ सा जाव कोउगेण कूवतलं निरूवइ ताव निदयं नोल्लिया जणणीए निवडिया अहोमुहा । निवडंतीए य सुमरिऊण सुरसंकेयं भणियमणाए ‘ताय ! संपयं तुह पाया सरणं’ ति । तओ झत्ति तेण नागकुमारदेवेण पडिच्छिया करयलसंपुडेण, कूवयंतराले य काऊण पायालभवणं ठविया सा तत्थ चिड्डइ सुहेण । आरामो वि पविट्ठो कूवयम्मि । तियसो वि कुविओ तज्जणणीए । ‘जणणि’त्ति काऊण उवसामिओ अणाए । तीए वि णिवेसिया कयसूइयावेसा तत्थ पल्लंके नियधूया । खणंतरेण य समागयाओ परिचारियाओ । दिट्ठा य सा ताहिं, अवि य—

ईसीसिफरलदिट्ठी थोवयलावण्णरूवतणुतेया । किंचि सरिच्छावयवा दिट्ठा सा ताहिं सयणगया ॥४८॥

भणिया ‘सामिणि ! किं ते देहं अण्णारिसं पलोएमो ?’ ।

सा भणइ ‘न जाणामिं, किंतु न सच्छं मह सरीरं’ ॥४९॥

तो ताहिं भीयाहिं पुट्ठा जणणी ‘किमेरिसं एयं ?’ । सा वि तओ माइल्ला ताडंती हियव(य) यं भणइ ॥५०॥

‘हा ! हा ! हया हयासा वच्छे ! हं मंदभाइणी नूणं । जेण तुह रूवसोहा अन्न च्विय दीसए देहे ॥५१॥

किं हुज्ज दिट्ठिदोसो ? किं वा वायस्स विलसियं एयं ? । किं वा पसूइरोगो संजाओ तुज्झ देहम्मि ? ॥५२॥

इय विलवंती तो सा भणिया पडिचारियाहिं ‘मारुयसु । जंइत्थं करणेज्जं किं पितयं कुणसु सिग्घयरं’ ॥५३॥

इय भणियाए तीए नाणाविहकोउगाइं विहियाइं । तह वि न कोइ विसेसो संजाओ तीए देहम्मि ॥५४॥

तओ रायभएणं विसन्नाओ पडिचारियाओ । इत्थंतरम्मि य समागओ रायपेसियमहंतओ । भणियं च तेण ‘देवो आणवेइ देविं कुमारं च घेतूण सिग्घमागच्छह’ । तओ कयासव्वसामणी । पत्थाणसमए य भणिया देवी परियणेणं ‘कत्थ आरामो ? किं वा अज्ज वि न पयट्ठइ ?’ । तीए भणियं ‘घरकूवे जलपाणत्थं मुक्को पच्छा आगमिस्सइ पयट्ठह तुब्भे’ । पयट्ठो सव्वो वि परिवारो । कमेण य पत्ताइं पाडलिपुत्तं । वद्धाविओ नरवई । तओ हरिसभरनिब्भरेणं काराविया हट्ठसोहा । आइडं वद्धावणयं । पयट्ठो सयं अम्मोगइयाए जाव दिट्ठा देवी कुमारो य । तओ देविरूवं निएऊण पुच्छियं राइणा जहा ‘देवि ! किमन्नारिसं तुह सरीरं पेच्छामो ?’ । तओ पडिचारियाहिं भणियं ‘देव ! पसूयाए एयाए दिट्ठिदोसेण वा वातदोसेण वा पसूइरोगेण वा कहिं(हं) चि एवंविहं सरीरं जायं, न सम्मं वियाणामो’ । तओ नरवइणा पुत्तजम्मब्भुदयहरिसिएणावि अंधारियं वयणं

१. सं० वा० सु० ‘त्ते पसू’ ॥ २. ला० झडत्ति ॥ ३. सं० वा० सु० ‘मो पविट्ठो ॥ ४. ला० सव्वा साम’ ॥ ५. ला० पाटलिपुत्तं ॥ ६. ला० ‘ओ अइरहसभर’ ॥

देविवइयरसवणाओ, तहा वि धीरयं काऊण पविट्ठो नयरं । भणिया य सा 'किमारामो न दीसेइ ?' । तीए भणियं 'पिट्ठओ मुक्को पाणियं पियंतो चिट्ठइ, सुमरियमित्तो समागमिस्सइ' । तओ राया जया जया तीए सरीरं सव्वंगं पेच्छइ तथा तथा संदेहावन्नो भवइ, 'किमेसा सा अन्ना व ?' ति । अन्नया य भणिया राइणा जहा 'आणेहि आरामं' । 'पत्थावेणं आणेस्सामि' ति भणंतीए सुन्नयं उट्ठुप्पाडं दट्ठूण जाया महल्लयरी आसंका 'मन्ने न चेव एसा सा, अण्णा काइ' ति वियकंतो अच्छइ ।

इओ य तीए आरामसोहाए भणिओ सो देवो जहा 'कुमारविरहो मह अच्चंतं बाहइ, ता तहा करेहि जहा कुमारं पेच्छामि' । तओ भणियं नागकुमारदेवेण 'वच्छे ! जइ एवं गच्छ मम सत्तीए, परं दट्ठूण नियसुयं सिग्घमेवाऽऽगंतव्वं' । तीए भणियं 'एवं होउ' । देवेण भणियं 'जाई ! तुमं तत्थेव सूरोगमं जाव चिट्ठिहिसि, तओ परं नत्थि मए सह तुह दंसणं, पच्चओ य जया हं पुणो नाऽऽगमिस्सामितया हं मयगनागरूवं तुहकेसपासाओ निवडंतं दंसिस्सामि' । तीए भणियं 'एवं होउ, तहा वि पेच्छामि नियतणयं' । तओ विसज्जिया तियसेण । तप्पहावेण य खणमित्तेण चेव पत्ता पाडलिपुत्तं । विहाडेऊण य वासभवणं पविट्ठा अब्भंतरे । जं च केरिसं ?, अवि य—

पज्जलियरयणदीवं मणिमोत्तियरयणजणियओऊलं । पुप्फोवयारकलियं, मघमहियसुधूववल्लिल्लं ॥५५॥

वरककोलय-एला-लवंग-कप्पूरकलियपडलमि । ठवियवरनागवल्लीदलबीडय-पूगसंघायं ॥५६॥

बहुखज्ज-पेज्जकलियं संजोइयजंतसउणआइण्णं । पासुत्तराय-नियभणिणिजुत्तपल्लंकपरिकलियं ॥५७॥

तं च दट्ठूण किंचि पुव्वरयसुमरणुप्पन्नमयणवससंजायसिंजाररसनिभरं, किंचि नियदइ-यालिंणपसुत्तभणिणीदंसणवसुप्पन्नईसारसं, किंचि जणणीकूवयपक्खेवसुमरणुब्भवकोवरसपसरं, किंचि सुयसुमरणुप्पणसिणे हरसगन्धिभणं, किंचि समत्तनिययपरियणावलोयणसंजायं हरिसप्रगरिसनिवडंतआणंदविंदुसंदोहं, खणमेक्कमच्छिऊण गया जम्मि पएसे पच्चासन्नपसुत्तधाइमाइपरियणो रयणजडियकणयमयपालणयारूढो कुमारो चिट्ठइ । तओ तं कुमारं घेतूण कोमलकरेहिं रमाविऊण खणंतरं, पक्खिविऊण चाउदिसिं कुमारस्स निययारामफलफुल्लनियरं गया सट्ठाणमेसा । तओ पभाए विन्नत्तो णरणाहो कुमारधावीए जहा 'देव ! अज्ज सविसेसं केणावि कयफल-फुल्लच्चणो कुमारो दीसइ' । तं च सोऊण गओ राया तम्मि ठाणे । दिट्ठो य सो फलफुल्लनियरो । तं च दट्ठूण पुच्छिया सा जहा 'किमेयं ?' ति । तीए भणियं 'एयाणि आरामाओ अज्ज मए सुंमरिऊण आणियाणि' । राइणा भणियं 'संपयं किं न आणेसि?' । तीए भणियं 'न दिवसओ आणिउं तीरति' । तं च तीए सुन्नयं उट्ठुप्पाडं विहाणवयणकमलं च दट्ठूणं चितियं राइणा

१. ला० मं ॥ २. ला० 'यं सुसिग्घ' ॥ ३. सं० वा० सु० जया (जाय !) ॥ ४. ला० पुणो वि ना ॥ ५. ला० तथा मयग ॥ ६. ला० निवडंतयं ॥ ७. सं० वा० सु० 'बीडं पूग' ॥ ८. ला० 'णसमुप्पन्न' ॥ ९. ला० 'नियपरि' ॥ १०. ला० 'यपरिसनिवडं' ॥ ११. सं० वा० 'कडय' ॥ १२. ला० वट्ठइ ॥

‘नूणं वइससं किं पि ‘संभाविज्जइ’ । तओ बीयदिणे वि तह च्वेव दइण, तइयरयणीए तीए पसुत्ताए राया गहियकरालकरवालो ठिओ संकोइयंगो दीवयच्छायाहेइओ । खणंतरेण य आगया आरामसोहा । तं च दइणं नरवइणा चित्तियं ‘एसा सा मह प्पियपणइणी, इमा का वि अण्णा, ता न याणामि किमेत्थ परमत्थं’ ति चिंतयंतस्स सव्वं पुव्वविहियविहिं काऊण गया एसा । राया वि अणेगवियप्पाउलमाणसो पसुत्तो । पभाए अ भणिया सा जहा ‘अज्ज तए निच्छएण आरामो आणियव्वो’ ति । तं च सोऊण अच्चंतं विदाणा एसा । चउत्थराईए वि जाव सव्वं काऊण नियत्तइ ताव गहिया करयले नरनाहेणेसा, भणिया य ‘आ पिये ! किमेवं सव्वभावसिणेहरसनिब्भरं भं विप्पयारेसि’ । तीए भणियं ‘नाह ! न विप्पयारेमि किंतु किंचि कारणमत्थि’ । राइणा भणियं ‘किं कारणं तं ?’ । तीए जंपियं ‘कल्लं कहेहामि, संपयं पुण विसज्जेहि’ । राइणा भणियं ‘किं को वि बालो वि अमयं हत्थगयं विमुंचइ ?’ । तीए भणियं ‘नाह ! एवं कज्जमाणे तुज्झमवि महंतो पच्छायावो भविस्सइ’ । रण्णा लवियं ‘जइ एवं ता कहेहि ताव कारणं’ । सा वि जाव मूलाओ आरब्भ जणणीदुव्विलसियं कहेइ, ताव संजाओ अरुणुगमो । एत्थंतरम्मि य जाव ल्हसियकेसकलावबंधणत्थं समारेइ ताव तड ति निवडिओ केसकलावाओ मयगविसहरो । तं च दइण ‘हा ताय’ ति सखेयं भणमाणी मुच्छाए निवडिया धरणिवड्डे । तओ रण्णा वाउदाणाइणा समासासिऊण भणिया एसा ‘पिए ! किं कारणं एवमच्चंतमप्पाणयं खेयसि?’ । तीए भणियं ‘नाह ! जो सो नागकुमारो देवो मह सन्निज्झं कुणंतो तेणाहमेवं भणिया आसि ‘मे जइ अणगुण्णाया अरुणुगमं जाव अन्नत्थ चिडिहिसि तओ मए सह एत्तियं च्वेव ते दंसणं, मयगनियरूवदंसणं च एत्थ पच्चओ’ तमेयं तुब्भेहिं अविस्सज्जियाए संजायं’ ति । तओ ठिआ तत्थेव सा । पभाए य रण्णा कोवमुवगएण बंधाविया इयरी, कसं च घेतूण जाव ताडेइ ताव चलणेसु निवडिऊण विण्णविओ आरामसोहाए, अवि य—

देव ! जइ मज्झउवरिंसपसाओ तामुयाहि मे भणिणिं । पुव्वं वपेच्छसु तहा मह उवरिं करिय कारुणं । ५८॥

भणइ निवो ‘देवि ! इमं न हु जुत्तं एरिसं कुणंतीए । एयाए पावाए, तह वि न लंघेमि तुह वयणं’ । ५९॥

छोडेत्तु सा वि धरिया नियपासे च्वेव भणिणिबुद्धीए । अह सुयण-दुज्जणाणं विसेसमिव दंसयंतीए । ६०॥

तओ सदाविऊण नियपुरिस्स आइड्ढा राइणा ‘अरे फेडेत्ता दुवालस वि गामाणि लहुं करेह

-
१. सं० वा० सु० ‘करयलकरवालो ॥ २. ला० अच्चत्थं ॥ ३. ला० ‘ए य जाव ॥ ४. ला० रण्णा जंपियं ‘किं कोइ बालो ॥ ५. ला० जंपियं ॥ ६. ला० तुज्झ वि मज्झ वि महंतो ॥ ७. ला० भणियं ॥ ८. ला० केसपासाओ ॥ ९. सं० वा० सु० तं दइण ॥ १०. ला० आसि ‘जइ मए अण’ ॥ ११. ला० तो ॥ १२. ला० तमेवं तुम्हेहिं ॥ १३. ला० अय(व) रा ॥ १४. ला० विण्णत्तमाराम’ ॥ वा० विण्णविओ(य) माराम’ ॥ १५. ला० छोडे(ड्डे)त्तु ॥

तं बंभणं निव्विसयं, तं पि से भारियं लुयकन्नोड्ढनासियं काऊण नीसारेह मम देसाओ' । एयं च समायणिऊण चलणेसु निवडिऊण पुणो वि विण्णत्तो राया, अवि य—

जइ खाइ कहवि सुणहो ता किं सो चेव खज्जइ पुणो वि ? । इय नाऊणं एए देव ! विसज्जेह मम जणए ॥६१॥
जेण कएणं महई पीडा चित्तस्स देव ! अम्हाण । हवइ तयं परिवज्जह जणयाणं दंडकरणं ति ॥६२॥
एवं भणिओ राया भणइ 'पिए ! जेण तुज्झ मणपीडा । होइ तयं गरुयं पि हु कज्जं अम्हेहिं परिचत्तं ॥६३॥

एवं च ताण पंचप्पयारमणिंदियविसयसुहमणुहवंताणं वच्चए कालो । अन्नया य राय-देवीणं एगओवविट्ठाणं किंचि धम्मवियारं कुणमाणणं जाओ संलावो, अवि य—

जंपइ देवी एवं 'आईए नाह ! दुक्खिया अहयं । होऊणं पुण पच्छा समत्थसुहभायणं जाया ॥६४॥
ता केणं कम्मेणं एयं ? पुच्छामि एइ जइ को वि । इहइं दिव्वन्नाणी अम्हाणं पुण्णजोएणं' ॥६५॥
भणइ निवो 'जइ एवं समत्थउज्जाणपालए देवि ! नज्जेमि अहं जेणं कहंति मह आगयं नाणि' ॥६६॥
इय जा निव-देवीणं खणमेत्तं वट्टए समुल्लावो । उज्जाणपालओ ता पप्फुल्लमुहो समायाओ ॥६७॥
भूलुलियसीसकमलो पणमित्ता विण्णवेइ 'देव ! जहा । चंदणवणउज्जाणे समोसढो दिव्वनाणधरो ॥६८॥
करकलियविमलमुत्ताहलं व जो मुणइ सयलतेलोक्कं । तीआ-ऽणागय-परिवट्टमाणभावेहिं अणवरयं ॥६९॥
नामेण वीरचंदो साहूण सएहिं पंचहिं समगो । नर-विज्जाहर-सुरपहुवंदियचलणो वरमुणिंदो ॥७०॥
तं सोऊणं राया भत्तिवसोल्लसियबहलरोमंचो । भणइ 'पिए ! संपण्णा अज्जेव मणोरहा तुज्झ ॥७१॥
तो उट्टेहि लहुं चिय पिए ! पगुणा होसु जेण वच्चामो । सूरिस्स वंदणत्थं, पुच्छामो संसयं तह य' ॥७२॥
इय भणिया सा देवी संवूढा झत्ति, तो निवो तीए । समयं चिय संपत्तो उज्जाणं तंखणणेव ॥७३॥
दिट्ठो य तत्थ सूरि बहुविहपरिसाएँ मज्झयारम्मि । देसंतो जिणधम्मं समत्थजीवाण सुहजणयं ॥७४॥
तो सूरिपायपंकयपणामपुव्वं समम्मि भूमितले । उवविट्ठाइं दोणि वि नऽच्चासन्नम्मि सूरिस्स ॥७५॥
भयवं पि विसेसेणं पत्थावइ धम्मदेसणं तत्तो । जह-इत्थं संसारे अणोरपारम्मि भममाणा ॥७६॥
कह कहवि माणुसत्तं जीवा पावंति कम्मविवरेण । तत्थ वि विविहं सोक्खं जायइ सुकएण धम्मेण ॥७७॥
जाई कुलमारोगं रिद्धी सोहग्गमोत्तमा भोगा । रूवं बलं जसो वि य भवंति सुकएण धम्मेण ॥७८॥
इट्ठजणसंपओगो आणाकारी य परियणो सव्वो । अन्नं पि सुहं सव्वं जायइ सुकएण धम्मेण ॥७९॥
सगंगणासणाहो पहाणभोगोवसाहणे(गो) सगो । नीसेसकेसमुक्को मोक्खो वि य होइ धम्मेणं ॥८०॥

१. ला० होइ ॥ २. सं० वा० सु० पडिव ॥ ३. ला० तु ॥ ४. ला० एगट्ठाणोववि ॥ ५. सं० वा० सु० तो ॥ ६. ज्ञापयामि ॥ ७. सं० वा० सु० 'सुरवहु' ॥ ८. ला० तं खणणेव ॥ ९. इत आरभ्य गाथात्रिकं ला० प्रतौ नोपलभ्यते ॥

एत्थंतरम्मि य भालवट्टमिलंतकरकमलमउलयाए विण्णत्तमारामसोहाए ‘भयवं ! जइ सव्वमेयं धम्मफलं ता किं पुण मए पुव्वजम्मे कयं जस्सेरिसो विवागो ?’ ति । तओ सजलनवजलहरो-
रालगंभीरधीरसारेणं सरेणं भयवं कहिउमाढत्तो, अवि य—

इह चेव जंबुदीवे भरहे वासम्मि चंपनयरीए । अत्थि पसत्थो सेट्ठी कुलंधरो धणयसमविहवो । ८१।
तस्सऽत्थि कुलाणंदा भज्जा नामेण रूवगुणकलिया । तीसे य भोगलच्छिं तेण समं भुंजमाणीए । ८२।
जायाओ धूयाओ रूयाइगुणेहिं संपउत्ताओ । सत्त अणन्नसमाओ, ताणं तु इमाइ नामाइं । ८३।

कमलसिरी कमलवई, कमला लच्छी सिरी जसोएवी ।

पियकारिणी उ, ताओ सव्वाओं वि उत्तमकुलेसु । ८४ ।

परिणीयाओ विहिणा, भुंजंति अणोवमे विसयसोक्खे ।

अह कमसो अन्ना वि य संजाया अट्टमा कण्णा । ८५ ।

तीएँ जम्मम्मि जणओ जणणी वि य दुक्खियाइं जायाइं । निव्वेन्नयाइं नामं पि नेय कुव्वंति से कहवि । ८६।
तो सा अणायरेणं वट्ठंती तह वि जोव्वणं पत्ता । पिय-माइदुक्खजणणी विसिद्धरूयायिजुत्ता वि । ८७।
निब्भगिय ति नामेण सव्वलोएण सा य वुच्चंती । जणणि-जणयाण दुक्खं दीसंति देइ अणवरयं । ८८।
अन्नदियहम्मि सेट्ठी भणिओ लोएहिं ‘किं न नियकन्नं । परिणावसि ? जेणं इमं वट्ठइ तुह जंपणं गरुयं’ । ८९।
एवं जणेण वुत्तो सेट्ठी चित्तम्मि सुट्ठु निव्विन्नो । अणभिप्पेअत्तणओ अच्छइ चिंतावरो धणियं । ९० ।
अह अन्नम्मि दिणम्मी चिंतावण्णस्स तस्स सेट्ठिस्स । वीहीएँ निविट्ठस्स उ एक्को पहिओ समायाओ । ९१ ।
मलमइलचेलदेहो दीहरपहलंघणाओं परिसंतो । वीसमणत्थं एसो उवविट्ठो सेट्ठिहट्ठम्मि । ९२ ।
पुच्छइ सेट्ठी वि तयं ‘भद ! तुमं आगओ कुओ इत्थं ?’ । भणइ इमो ‘नीरायरपाराओ चोडविसयाओ । ९३
‘कोसितुमं ? काजाई ? किं नामो ? किंच आगओ इहइं ?’ । सोभणइ ‘कोसलाए वत्थव्वगनंदइ भस्सा ९४
सोमाइ भारियाए पुत्तो हं नंदणो ति नामेणं । खीणे विहवम्मि गओ अत्थत्थी चोडविसयम्मि । ९५।
तत्थ वि दारिद्वहओ अभिमाणेणं गओ न नियनयरं । परवुत्तयकरणेणं वसामि तत्थेव कयवित्ती । ९६ ।
एत्तो गएण वणिणा वसंतदेवेण किंचि नियकज्जं । आसज्ज पेसिओ हं लेहं दाऊण इहइं तु । ९७ ।
सिरिदत्तसेट्ठिपासे ता दावह तग्गिहं, अहं जेण । गच्छामि तस्स पासं एयं लेहं समप्पेमि’ । ९८ ।
चिंतइ कुलंधरो ता ‘मह धूयाए इमो वरो पवरो । जेणं सामन्नसुओ अत्थविहूणो विदेसत्थो । ९९ ।
घेतूण इमं एसो वच्चेही तत्थ, न य पुणो एही । अत्थाभावाओं गिहं माणधणो दीसए जेण’ । १०० ।
इय चिंतित्तरुण जंपइ ‘पुत्त ! तुमं एहि मज्झगेहम्मि । तुज्झ पिया जेण महं आसि अणन्नस्समो मित्तो’ । १०१ ।

सो भणइ 'जेण कज्जेण आगओ तं निवेइउं पच्छा । आगच्छिस्सामि तओ तुह पासे ताय ! अविगप्पं' ॥१०२॥
 पेसेइ नियं पुरिसं सेट्ठी सिक्खाविउं जहा 'भद ! लेहम्मि अप्पियम्मी धेत्तूणेयं इहं एज्ज' ॥१०३॥
 तं धेतुं सो पुरिसो वच्चइ सिरिदत्तसेट्ठिगेहम्मि । लेहम्मि अप्पियम्मी कहियाइ समत्थवत्ताए ॥१०४॥
 तो पुण वि णंदणेणं सिरिदत्तो जंपिओ इमं वयणं । जह 'मह पिउणो मित्तं कुलंधरो इत्थ जो सेट्ठी १०५
 मं दड्डुं पड्डविओ आहवणत्थं इमो निओ पुरिसो । ता वच्चा मि तहिं ता, पुणो वि इह आगमिस्सामि' ॥१०६॥
 तो सो सेट्ठिगिहम्मिं समं गओ तेण चैव पुरिसेणं । सेट्ठी वि ण्हाविऊणं णियंसए वत्थजुगलं से ॥१०७॥
 भुंजाविऊण ततो पभणइ 'परिणेहि मह सुयं वच्छ !' । सो भणइ 'मए अज्ज वि गंतव्वं चोडविसयम्मि १०८
 जंपइ कुलंधरो वि हु 'धेत्तूण इमं पि तत्थ वच्चाहि । पेसेस्सामि तहिं चिय तुह जोगं णीविगाईयं' ॥१०९॥
 पडिवन्नम्मि इमेणं, परिणावइ कन्नयं तओ सेट्ठी । वत्ते वीवाहदिणे, सिरिदत्तो णंदणं भणइ ॥११०॥
 'जइ तुममित्थेव थिरो तो अन्नं पड्डवेमि तत्थाहं । जेण महंतं कज्जं अम्हाणं वट्टए तत्थ' ॥१११॥
 जंपेइ णंदणो तो 'अवस्स गंतव्वयं मए तत्थ । मोयावित्ता सेट्ठिं तुह वत्तमहं कहिस्सामि' ॥११२॥

अण्णम्मि दिणे सेट्ठी विण्णत्तो तेण 'ताय ! गच्छामि ।

जेणऽत्थि तत्थ कज्जं मह गरुयं चउडविसयम्मि' ॥११३॥

सेट्ठी वि चिंतियत्थस्स साहगं तेण मंतियं सोउं । भणइ 'जइ णिच्छओ ते तो पुत्त ! करेह एवं ति ॥११४॥
 किंतु इमं णियभज्जं धेत्तूणं जाह चोडविसयम्मि । जेण तहिं चेवाहं तुह भंडं पड्डवेस्सामि' ॥११५॥

कहिया य तेण वत्ता सिरिदत्तस्स उ जहा 'अहं पउणो ।

गमणत्थं तुब्भे वि य जं भणियव्वं तयं भणह' ॥११६॥

तेण वि समप्पिओ से णियलेहो अक्खिया य संदेसा । एवं पंगुणम्मि कए चलिओ धेत्तूण तं भज्जं ॥११७॥
 एगागी चैवेसो संबलमेत्तं पंगेण्हिउं किंचि । अणवरयपयाणेहिं पत्तो उज्जेणिणयरीए ॥११८॥

तो चिंतियं च णेणं 'लहुप्पयाणेहिं इत्थ विसयम्मि । खीणं बहु संबलयं, पंथाओ तह य भग्गो हं ॥११९॥
 तो पासुत्तं एयं मोत्तुं गच्छामि इच्छियं देसं' । इय चिंतिऊण वुत्ता 'पिए ! तुट्टं संबलं पायं ॥१२०॥

ता किं करेमि संपइ ? होही भमियव्वया जओ भिक्खा ।

ता भमिहिसि किं भिक्खं ?' सा जंपइ 'णाह ! णिसुणेहि ॥१२१॥

तुह पिड्डिविलगाए भिक्खा वि हु णाह मज्झ रमणीया' । एवं जंपेऊणं रयणीए दो वि सुत्ताइ ॥१२२॥
 णगरीए बाहिरम्मिं एगाए अणाहपहियसालाए । रयणीए उट्ठिओ सो धेतुं संबलयपोट्टलियं ॥१२३॥

१. सं० वा० सु० 'मि तुह च्चिय ॥ २. ला० चोडवि' ॥ ३. ला० जाहि ॥ ४. सं० वा० सु० पंगुणं
 पि क' ॥ ५. ला० चैव इमो, सं' ॥ ६. ला० पि गिण्हिउं ॥ ७. ला० तेणं ॥ ८. ला० सा विरि(कि)
 करेसु(मु) संपइ ॥

सणियं सणियं ओसक्किऊण अन्नेण चेव मग्गेणं । भिक्खाए लज्जंतो तं मोत्तुं झत्ति वोलीणो ॥१२४॥
अह उगयम्मि सूरे उट्ठइ एसा अपेच्छिउं कंतं । जाणइ मुक्का अहयं संबलयमपेच्छमाणीए ॥१२५॥
चिंतइ हियएण तओ 'ण सुट्ठ मह सामिएण परिविहियं । एगाणिणी जमेत्थं मुक्का गेहाओं णीणेउं ॥१२६॥

हा ! हा ! अलज्ज ! णिक्किव ! एवं णवजोव्वणम्मि वट्ठंति ।
मं मोत्तुं णियवयणं अणज्ज ! भण कस्स दाविहिसि ? ॥१२७॥
नवजुव्वणम्मि वालय ! जइ हं अन्नेण कहवि धिप्पानि ।
ता तुज्झ कुले निदय ! होही वइणिज्जयं एयं ॥१२८॥
अहवा किमिणा परितप्पिएण ? रक्खेमि ताव नियसीलं ।
किंचि समासइऊणं वाणियगं जणयसामणं ॥१२९॥

पिउगेहे वि गयाए मज्झ अउन्नाइ आयरो णत्थि । ता इत्थेव ठिया हं कम्माईयं करेस्सामि' ॥१३०॥
इय चिंतिऊण तो सा हियए धीरत्तणं विहेऊणं । पविसइ णगरीमज्झे आलोयंती दस दिसाओ ॥१३१॥
तो एगत्थ गिहम्मिं भद्दागारं नियेइ सा पुरिसं । पाएसु निवडिऊणं विण्णवइ मणोहरसरेणं ॥१३२॥
'ताय ! मह होहि सरणं एत्थ अणाहाइ दीणविमणाए । जेणमणाहा णारी पावइ वइणेज्जयं णियमा ॥१३३॥
(ग्रन्थाग्रम् १०००)

चंपापुरीएँ अहयं धूया उ कुलंधरस्स सेट्टिस्स । सत्थाओ परिभट्टा वच्चंती चोडविसँस्सु ॥१३४॥
सह भत्तुणा णिएणं एत्थियभूमिं कमेण संपत्ता । इण्हिं तु तुमं जणगो होहि महं दुक्खतवियाए' ॥१३५॥
तो तीएँ वयणविणयाइएण परिरंजिओ इमं भणइ । सो माणिभद्वसेट्टी 'वच्छे ! तं मज्झ धूय त्ति ॥१३६॥
अच्छसु जह नियपिउणो गेहे तह इत्थ मज्झ गेहम्मि । सत्थगवेसणमाई सव्वं पि अहं करेस्सामि' ॥१३७॥

इय भणिय निययपुरिस पट्टविया तेण माणिभदेण ।

न य उवलद्धा कत्थ वि इमेहिं सत्थस्स वत्ता वि १३८

तेहिं कहियम्मि, सेट्टी चिंतइ हियएण सुट्ठ संसइओ । 'किं एयाए वयणं सच्चमसच्चं ? परिक्खेमि' ॥१३९॥
इय चिंतिऊण तेणं चंपाए पुरवरीएँ णियपुरिस्सो । सेट्टिकुलंधर पासे पट्टविओ जाणणाहेउं ॥१४०॥

तेण वि गंतूण तहिं पुट्ठो सो 'अत्थि तुज्झ कइ धूया ? ।

परिणाविया उ कत्थ व ? कहसु जओ माणिभदेण ॥१४१॥

पट्टविओ हं तुमए सह संबंधं विहेउकामेण' । सो भणइ 'मज्झ धूयाओं अट्ठ, इह चेव णगरीए ॥१४२॥

१. ला० वयणि' ॥ २. ला० अवलोयंती ॥ ३. ला० निएवि ॥ ४. ला० 'सयम्मि ॥ ५. ला० 'एहिं परि० ॥
६. सं० वा० सु० इमो ॥ ७. ला० भणिउं नियपु० ॥ ८. एतच्चिह्नान्तर्वर्ती पाठः सं० वा० सु० प्रतिषु नास्ति ॥

परिणीयाओ सत्त उ, परिणीया संपयं पुणो भद् ! ।
अट्टमिया सा वि गया पइणा सह चउडविसयम्मिं ॥१४३॥

अन्ना उ नत्थि कन्ना, कह संबंधं विहेमि सह तेण ? । इय सव्वं गंतूणं कहियव्वं माणिभद्दस्स' ॥१४४॥
तेण वि आगंतूणं सव्वं सेट्ठिस्स अक्खियं सो वि । जाणित्ता पस्मत्थं विहेइ अहिगोरवं तीए ॥१४५॥
सा तस्स गिहे बाला अच्छइ धूय व्व सुट्ठु परितुट्ठा । विणयौईहिं य तीय वि तं गेहं रंजियं सव्वं ॥१४६॥
अह सो वि माणिभद्दो पालइ जिणदेसियं वरं धम्मं । कारावियं च तेणं उत्तुंगं जिणवराययणं ॥१४७॥
तो तम्मि जिणहरम्मिं उवलेवण-मंडणाइवावारं । सा कुणइ भत्तिजुत्ता पइदियहं धम्मसद्धाए ॥१४८॥
साहूण साहुणीण य संसग्गीएय साविया जाया । सुलसव्व अणणसमा, किं बहुणा इत्थ भणिणं? ॥१४९॥
जं जं वियरइ सेट्ठी दव्वं भत्तुल्लागाइकज्जेण । तं तं रक्खेवि इमा कुणइ जिणिंदालए रच्छं ॥१५०॥
सेट्ठी वि दुगुण-तिगुणं जा निच्चं तीए रंजिओ देइ । ता छत्तत्तरयणं कारवियं तीइ अइरम्मं ॥१५१॥

अवि य—

कणगविणिम्मियमालोवमालियं विविहरयणचिंचइयं । वरमुत्ताहलझुल्लंतविविहपालंबकयसोहं ॥१५२॥
भुयइंदमुक्कनिम्मोयसरिसपट्टंसुगेहिं उत्थइयं । विविहमणिरयणचित्तियचामीयरघडियवरदंडं ॥१५३॥
एवंविहं विहेउं विविहभूईए जिणहरे देइ । अन्नं पि कुणइ सव्वं तव-दाणाई जहाजोगं ॥१५४॥

पूएइ साहु-साहुणि-साहम्मियवग्गमेव अणवरयं ।

सज्झाय-ऽज्झयणाइसु अहिगं अब्भुज्जमं कुणइ ॥१५५॥

अह अन्नया कयाई चिन्ताभरसागरम्मि निब्बुड्डं । पेच्छित्तु तयं सेट्ठिं पुच्छइ परमेण विणएणं ॥१५६॥

‘किं ताय ! अज्ज दीसह अहियं चिन्तापिसायपरिहत्था ?’ ।

सो भणइ ‘पुत्ति ! णिसुणसु चिन्ताए कारणं मज्झ ॥१५७॥

जिणमंदिरआरामो फल-फुल्लसमाउलो परमरम्मो ।

अणिमित्तेणं सुक्को, ण य होइ पुणणवो कहवि ॥१५८॥

एएण कारणेणं अहिगं चिन्ताउरो अहं जाओ’ । ‘मा कुणसु ताय ! खेयं एत्थत्थे’ जपंए बाला ॥१५९॥

‘जइ ण पुणणवमेयं कोरमि णियसीलसाहसवसेण । तो ण वि पारेमि अहं आहारं चउपयारं पि’ ॥१६०॥

१. ला० अट्टमिया सं० ॥ २. ला० परिणीया सा वि गया सह पइणा चोडवि ॥ ३. ला० कहेहि तं मा ॥ ४. सं० वा० सु० अह गो ॥ ५. ला० ‘याइएहिं ती’ ॥ ६. सं० वा० सु० साहू-साहुणीण य ॥ ७. सं० वा० सु० वि ॥ ८. सं० वा० सु० रत्थं ॥ ९. ला० ‘रिघत्था ॥ १०. ला० जंपई ॥ ११. ला० ‘संबलेण ॥

इय निच्छयं विहेउं वारितस्सावि तस्स सेट्टिस्स । उवविट्ठा जिणभुवणे सासणदेविं मणे काउं ॥१६१॥
 तो तइयम्मि दिणम्मी रयणीए इत्ति होइ पच्चक्खा । सासणदेवी तीए, जंपइ 'मा कुणसु तं खेयं ॥१६२॥
 अज्जं पभायकाले पुणणवो होहिई इमो मलओ । पडणीयवंतरोवदवाउ तुह सत्तिओ मुक्को ॥१६३॥
 इय भणिऊणं देवी सट्ठाणं इत्ति उवगया जाव । ताव विहाया रयणी, तिमिररिऊ उगओ सहसा ॥१६४॥
 कहिया इ रयणिवत्ता सव्वा सेट्टिस्स ताव एसो वि । हरिसुप्फुल्लियणयणो गओ तयं जिणहरारामं ॥१६५॥
 अप्पुव्वपत्त-फल-फुल्लेहिं सजलमेहसमवणं । तं दट्ठूणं तुरियं समागओ तीए पासम्मि ॥१६६॥
 पभणइ य पुत्ति ! पुत्ता मणोरहा मज्झ तुह पभावेणं । ता उट्ठ वच्च गेहं पारणयं कुण गुणविसाले ! ॥१६७॥
 इय भणिऊणं सेट्ठी समत्थसिरिसमणसंघसंजुत्तो । तूरणिणाएण तयं णेइ गिहं लोगपच्चक्खं ॥१६८॥
 जंपइ य तओ लोगो 'पेच्छह एयाएँ सीलमाहपं । तह सुक्को वि खणेणं आरामो कह पुणणविओ ! ॥१६९॥
 ता एसा कयउत्ता धन्ना सहलं च जीवियमिमीए । सन्निज्झं तियसा वि हु जीए एवं पकुव्वंति ॥१७०॥
 अहवा इमो वि धण्णो सेट्ठी णामेण माणिभद्दो ति । चिंतामणिव्व एसा जस्स घरे णिवसए सययं' ॥१७१॥
 एवं सयलजणेणं वणिज्जंती गिहम्मि संपत्ता । पडिलाहिउं चउव्विहसंघं तो कुणइ पारणयं ॥१७२॥
 अह अन्नया कयाई रयणीए पच्छिमम्मि जामम्मि । सुत्तविउद्धा चिंतइ सरिऊणं पुव्ववुत्तं ॥१७३॥
 ते धन्ना इत्थ जए जे सव्वं पयहिऊण विसयसुहं । पव्वइउं निस्संगा करेंति तवसंजमोज्जोयं ॥१७४॥
 'अहयं तु पुण अधन्ना लुद्धा जा इत्थ विसयसोक्खम्मि । न य पावाएँ तयं पि हु पत्थंतीए वि संपडइ ॥१७५॥
 इत्तियमित्तेण पुणो धन्ना जं पावियं जिणिंदाणं । धम्मं अणणसरिसं भवन्नवुत्तारणतरंडं ॥१७६॥
 ता एयं लद्धूणं जुत्तं मह सव्वविरइसामणं । घेतुं जे, किंतु अहं असमत्था तव्विहाणम्मि ॥१७७॥
 ता उगं तवचरणं करेमि निर्यगेहसंठिया अहयं' । इय चिंतिउं पहाए, आढवइ तमेव काउं जे ॥१७८॥
 जाव तवसुसियदेहा जाया ता कुणइ अणसणं विहिणा । कालं काऊण तओ सोहम्मे सुरवरो जाया ॥१७९॥
 चइऊण तओ एसा बंभणदुहिया तुमं समुप्पन्ना । विज्जुप्पह ति णामं जाया दुहभायाणं किंचि ॥१८०॥
 सेट्ठी वि माणिभद्दो देवो होउं तओ चुओ पढमं । पुणरवि मणुओ होउं णागकुमारो इमो जाओ ॥१८१॥
 मिच्छत्तमोहियाए पिउगेहठियाएँ किंचि जं विहियं । पावं तस्स विवागो जाओ दुहकारणं पढमं ॥१८२॥
 जं माणिभद्दोहट्टियाएँ विहियं तए सुकयकम्मं । तस्स पभावैणेमं अणणसरिसं सुहं पत्तं ॥१८३॥
 जं तइया जिणमंदिरमलओ तुमए पुणणवो विहिओ । तं एस देवदिण्णो तए समं भमइ आरामो ॥१८४॥

१. ला० 'भवणे ॥ २. ला० 'रिवू ॥ ३. ला० य ॥ ४. ला० दट्ठूण तुरियतुरियं ॥ ५. ला० पुत्त ॥ ६.
 'जे' पादपूरणे ॥ ७. ला० न समत्था ॥ ८. ला० गिहियम्मसंठिया ॥ ९. सं० वा० सु० जाओ ॥ १०. ला०
 'वेण इमं ॥

जं तइया जिणभत्ती तुमए विहिया अणणसारिच्छा । तं पत्तं रज्जमिणं समत्थसंसारसुहजणं ॥१८५॥
 जं छत्तत्तयमउलं दिण्णं तुमए जिणिंदनाहस्स । तं छत्तच्छायाए भदे ! परिभमसि निच्चं पि ॥१८६॥
 जं तइया रच्छाइं पूयंगाइं बहुप्पगाराइं । दिन्नाइं तं तुज्झं जायाइं भोगअंगाइं ॥१८७॥
 इय जिणभत्तीए फलं जायं, देवत्तणम्मि वरसोक्खं । इहयं तु रज्जसोक्खं, कमसो सिद्धिं पि पाविहसि ॥१८८॥
 इय सुणिउं सा सहसा मुच्छावसणट्ठगरुयचेयण्णा । पडिया धसत्ति धरणीयलम्मि सव्वाण पच्चक्खं ॥१८९॥
 पवणाइदाणेणं खणेण आसासिया परियणेणं । पणमेत्तु सूरिचलणे विन्नवइ परेण विणएणं ॥१९०॥
 'जं एयं तुभेहिं कहियं णाऊण दिव्वणाणेण । तं संपइ पच्चक्खं संजायं जाइसरणाओ ॥१९१॥
 तं तुम्हाणं वयणं सोउं देहं च णिययचरियं च । इण्हिं भववासाओ सामि ! विरत्तं महं चेत्तं ॥१९२॥
 ता जाव मुयावेमिं णरणाहं ताव तुम्ह पयमूले । भवसयदुहनिदल्लणं पव्वज्जमहं गहिस्सामि' ॥१९३॥
 इय वयणं देवीए सोऊणं भणइ णरवरिंदो वि । 'एवंविहं पि णाउं भगवं ! को रमइ संसारे ? ॥१९४॥
 जा अहिसिंचामि अहं देविसुयं मलयसुंदरं रज्जे । ता तुम्हाण समीवे अहं पि घेच्छामि पव्वज्जं' ॥१९५॥

भगवं पि भणइ 'भो ! भो ! मा पडिबंधं करेस्सह खणं पि ।

दब्भगलगाजलबिंदुचंचले जीवलोगम्मि' ॥ १९६ ॥

एवं ति भाणिऊणं राया देवी इ दो वि गंतूणं । निययगिहे रज्जम्मी अहिसिंचंती तयं कुमरं ॥१९७॥
 अहिसिंचिऊण कुमरं रज्जे, तत्तो महाविभूर्इए । दोहि वि गहिया दिक्खा बहुपरिवारेहिं गुरुमूले ॥१९८॥
 गिण्हितु दुविहसेक्खं गीयत्थाइं कमेण जायाइं । नियपयपवत्तिणित्ते ठवियाइं दो वि ते गुरुणा ॥१९९॥
 संबोहिऊण भविए, पज्जंते अणसणं विहेऊण । दो वि गयाइं सगं, तत्तो वि कमेण चविऊण ॥२००॥
 मणुयत्त-सुरत्ताइं कमेण सिवसंपयं लहिस्संति । एयं जिणभत्तीए अणणसरिसं फलं होइ ॥२०१॥

^{११}[आरामसोहाकहाणगं सम्मत्तं । ५.]

साहूण वि भत्तीए कल्लाणपरंपरं लहइ जीवो ।

^{१२}तह सम्मत्तं सुद्धं जायइ णत्थित्थ संदेहो ॥३८॥

१. सं० वा० सु० 'भमिसि' ॥ २. सं० वा० सु० 'इं अंगभोगाइं' ॥ ३. ला० इहइं ॥ ४. ला० 'क्खं जायं महजाइस' ॥ ५. ला० दद्वण नियय' ॥ ६. ला० 'लणिं' ॥ ७. ला० इय देवीए वयणं ॥ ८. ला० 'मि लहुं दे' ॥ ९. ला० य ॥ १०. सं० वा० सु० देइ ॥ ११. ला० आरामशोभाकथानकं समाप्तम् ॥ १२. ला० तह सुद्धं सम्मत्तं।

तत्राऽप्याख्यानकमाख्यायते—

[६. शिखरसेनकथानकम्]

अत्थि इहेव गिरिवरो जंबूद्वीवम्भि भारहे वासे । विंझो त्ति सिहरसंचयपज्जलियमहोसहिसणाहो । १।
 दरियगयदलियपरिणय^१हरिचंदणसुरहिपसरियामोओ । फल^२फुल्लतरुवरडियविहंगगणगरुयसद्दालो । २।
 निज्झरझरंतझंकारसद्दपडिउन्नदसदिसिर्विभागो । णाणाविहसावयसयभमंततलमेहलाभोगो ॥ ३ ॥
 तत्थऽत्थि सबरणाहो विक्खाओ सिहरसेणनामो त्ति । बहुसत्तहणणनिरओ^३धणियं विसएसु आसत्तो ॥ ४ ॥
 देवी वि तस्स सिरिमइणामा णवजो^४व्वणुद्धुरा अत्थि । वकलदुगुल्लवसणा गुंजाहलमाइआहरणा ॥ ५ ॥
 तीएँ समं विसयसुहं सो भुंजइ गिरिनिउंजदेसेसु । विच्छोअइ बहुगाइं सारंगाईण जुगलाइं ॥ ६ ॥
 सिरिमइदेवी वि तओ दट्ठं विच्छोइयाइं जुगलाइं । हरिसभरनिब्भरंगी कंपंतपओहरा हसइ ॥ ७ ॥
 अह अन्नया कयाई संतावियधरणिमंडलो गिम्हो । कुनरिंदो इव पत्तो पीडंतो सयलसत्तोहं ॥ ८ ॥
 जयकोट्टयमज्झत्थो अयगोलय इव पयंडपवणेण । जत्थ धमिज्जइ सूरु नीसेसजणाण दाहकरो ॥ ९ ॥
 परिसडइ पत्तनियरो कलिकालम्भि व जयम्भि रुक्खाणं । उत्तुणयइत्थिया इव वियसइ अहमल्लिया नवरं
 दरआयंबिरसुमणसभिउडियणयणाओं पाडलाओ वि । जायाओ रोसेण व निएवि जयतावणं गिम्हां ॥ ११ ॥
 कुसुमसमिद्धिविहीणे दट्ठूण व बहुतरु सिरिसा वि । निययपसूणसिरीए हिरिएँ सुंयणोव्व सामलिया ॥ १२ ॥
 जयसंतावकरीओं लुंयाओ वायंति अग्गिजाल व्व । दज्झइ णीसेसजणो खरतरविकिरणणियरेण ॥ १३ ॥
 दट्ठं जयसंतावं खलु व्व तोसेण वड्ढिया दिवसा । झिज्जंति जामिणीओ सुयण व्व परावयं दट्ठं ॥ १४ ॥
 पिज्जंति पाणियाइं पुणो पुणो सुसियकंठउट्टेहिं । सेयजलाविलगत्ता खेज्जंति णिरंतरं सत्ता ॥ १५ ॥
 पाऊण पवासु पयं घम्मत्ता जत्थ पहियसंघाया । छायासु वीसमंता हा हा हा ह ! त्ति जंपंति ॥ १६ ॥

हरिणंक-हार-हम्मयल-वियण-किसलय-जलद्वजलनिलया ।

चंदणविलेवणाईणि जत्थ जायंति अमयं व ॥ १७ ॥

एवंविहे णिदाहे सिरिमइदेवीएँ संजुओ राया । निज्झरण-वणगुहासुं वियरइ सच्छंदलीलाए ॥ १८ ॥
 एत्थंतरम्मि एगो गच्छो साहूण पहपरिब्भट्ठो । परिखीणो हिंडंतो समागओ तत्थ देसम्मि ॥ १९ ॥
 दट्ठूण तयं राया अणुकंपाए मणम्मि चित्तेइ । ‘हा ! किं भमंति एए अइविसमे विंज्झकंतारे ?’ ॥ २० ॥
 गंतूण तओ पुट्ठा रणा ‘किं भमह इत्थ रत्तम्मि ?’ । साहूहिं तओ भणियं ‘सावग ! पंथाओ पब्भट्ठा’ ॥ २१ ॥

१. ला० ‘रियंदण’ ॥ २. ला० फलपुप्फतरु ॥ ३. ला० ‘विहाओ’ ॥ ४. ला० ‘त्तघायणरओ’ ॥

५. सं० वा० सु० जोव्वणोव्वरा ॥ ६. ला० दाहयरो ॥ ७. ला० सुयण व्व ॥ ८. सं० वा० सु० लूया वायंति ॥

९. ला० जलं ॥

तो भणइ **सिहरसेणो** 'देवि ! कहं पेच्छ गुणणिही एए । देव्ववसेणं पत्ता अइविसमदसंतरं अज्ज' ॥२२॥
 पभणइ य तओ देवी तं 'सामि ! महातवस्सिणो एए । उत्तारेहि सउत्ते भीमाओ विंझरणाओ ॥२३॥
 पीणेहि य फल-मूलाइएहिं अइविसमतवपरिक्खीणे । नूणं णिहाणलंभो एस तुह पणामिओ विहिणा' ॥२४॥
 इय भणिएण ससंभमहरिसवसपयट्ठपयडपुलगेण । उवणीयाइँ सविणयं पेसलफल-मूल-कंदाइं ॥२५॥
 साहूहिं तओ भणियं 'सावग ! नेयाणि कप्पणिज्जाणि । अम्हाण जिणवरेहिं जम्हा समए निसिद्धाइं' ॥२६॥
 भणइ तओ सबरवई 'तह वि हु अम्हाणऽणुगहं कुणह । अन्नहकएण गाढं उव्वेगो होइ अम्हाणं' ॥२७॥
 णाऊण परमसद्धालुयत्तणं बहुगुणाण संजणयं । तेसिं अणुगहत्थं गुणंतरं ठावियं हियए ॥२८॥
 साहूहिं तओ भणियं 'जइ एवं विगयवण्ण-गंधाइं । दिज्जंतु अम्ह णवरं फलाइँ चिरकालगहियाइं' ॥२९॥
 इय भणिएणं तेणं सिग्घं गिरिकंदराओं घेतूणं । पडिलाहिया तवस्सी परिणयफल-मूल-कंदेहिं ॥३०॥
 ओयारिया य मगे जायासहिएण सुद्धभावेण । मन्नंतेण कयत्थं अप्पाणं जीवलोगमि ॥३१॥
 तेहिं च ताण धम्मो कहिओ जिणदेसिओ सुसाहूहिं । पडिवन्नो य सहरिसं कम्मोवसमेण सो सम्मं ॥३२॥
 दिन्नो य णमोक्कारो सासयसिवसोक्खकारणभूओ । बहुमाणभत्तिभरनिब्भरेहिं गहिओ य सो तेहिं ॥३३॥
 नाऊण तह य तेसिं जम्मं कम्माणुभावचरियं च । साहूहिं समाइडं 'कायव्वमिणं तु तुब्भेहिं' ॥३४॥
 पक्खस्सेगदिणम्मी आरंभं वज्जिऊण सावज्जं । एगंतसंठिएहिं अणुसरियव्वो णमोक्कारो ॥३५॥

तम्मि य दिणम्मि तुब्भं जइ वि सरीरस्स घायणं को वि ।

चिंतेज्ज करेज्जा वा तहा वि तुब्भेहिं खमियव्वं ॥३६॥

एवं सेवंताणं तुब्भं जिणभासियं इमं धम्मं । होही अचिरेण धुवं मणहरसुरसोक्खसंपत्ती' ॥३७॥
 हरिसापूरियहियएहिं तेहिं सोऊण तं मुणीवयणं । 'एवं' ति अब्भुवगयं, गएहिं साहूहिं चिन्नं च ॥३८॥
 तह चेव कंचिकालं अईवपरिवट्ठमाणभावेहिं । अह अन्नया य ताणं पोसहपडिमं पवन्नाणं ॥३९॥
 तुंगम्मि विंझसिहरे करिकुं भत्थलवियारणेक्करसो । धुयपिंकेसरसट्ठो दरियमयंदो समल्लीणो ॥४०॥
 तस्स भयभीयहिययं दइयं दडूण **सिहरसेणेण** । वामकरगोयरत्थं गहियं कोदंडमुद्दामं ॥४१॥
 भणियं च 'भीरु ! मा भायसु ति एयस्स मं समल्लीणा । एसो य पसवराया ममेगसरघायसज्झो' ति ॥४२॥
 तो **सिरिमईए** भणियं 'एवमिणं नत्थि इत्थं संदेहो । किंतु सुगुरूण वयणं एवकए होइ पम्मुकं ॥४३॥
 जम्हा गुरुआएसो सरीरविणिवायणं पि जइ कोइ । तुम्हाण तम्मि दिवसे करेज्ज तो तस्स खमियव्वं ॥४४॥
 ता कह गुरूण वयणं पिययम ! गुणभूसियं सरंतेहिं । परलोगबंधुभूयं कीरइ विवरीयमम्हेहिं ?' ॥४५॥

१. ला० ठाविडं ॥ २. ला० ति ॥ ३. ला० हु ॥ ४. ला० पि तुम्हाणं । जइ कोइ तम्मि ॥ ५. ला० 'णं सुमरंतेहिं गुणभूसियं नाह ! । पर' ।

अह मोत्तूण धणुवरं तेण तओ सिरिमई इमं भणिया । 'सच्चं, गुरु आपसो कह कीरइ अन्नहा सुयणु ! ॥४६
किंतु तुहमोहमोहियहियण मए इमं कयं आसि । ता अलमेण पिए ! गुरुवयणे आयरं कुणसु' ॥४७ ॥
इत्थंतरम्मि रुंजियसदेण णहंगणं भरंतो सो । महिदिन्नतलपहारं उवट्ठिओ केसरी ताणं ॥४८ ॥
परिचिंतियं च तेहिं 'गुरुवएसपरिपालणाणिहसो । उवयारि च्चिय एसो अम्हाणं पसवगणराया' ॥४९ ॥
इय चिंतंताणि तओ णहोहिं वियारियाणि तिक्खेहिं । कुविण अकुवियाइं सुहभावाइं मइंदेण ॥५० ॥
अहियासिओ य तेहिं दोहिं वि अइदारुणो हु उवसगो । जो चिंतिओ वि जणयइ उक्कंपं कायरनराणं ॥५१ ॥
चइऊण तओ देहं विसुद्धचित्ताइं दो वि समकाले । सोहम्मे उववन्नाइं इड्ढिमंताइं सयराहं ॥५२ ॥
पलिओवमाउयाइं, तत्थ य भोगे जहिच्छिए भोत्तुं । आउक्खएण ततो चइऊण इहेव दीवम्मि ॥५३ ॥
अवरविदेहे खेत्ते चक्कउरं नाम पुरवरं आसि । उत्तुंगसाल-धवलहरसोहियं तियसणगरं व ॥५४ ॥
तं परिपालइ राया हरि व्व वरपुरिसलोयणसहस्सो । सइवड्ढियविसयसुहो णामेणं कुरुमयंको ति ॥५५ ॥
तस्सऽत्थि अगमहिंसी देवी णामेण बालचंद ति । तीए उये चविउं उप्पन्नो सिहरसेणो सो ॥५६ ॥
चइऊण सिरिमई वि य रण्णो सालयसुभूसणणिवस्स । देवीएँ कुरुवईए उववन्ना कुच्छिमज्झम्मि ॥५७ ॥
ताण बहुएहिं दोण्ह वि मणोरहसएहिं सुप्पसत्थदिणे । जायाइं तया ताइं रूवाइगुणेहिं कलियाइं ॥५८ ॥
समरमियंको णामं रण्णो विहियं गुरुहिं समयम्मि । देवीए वि य णामं असोगदेवि ति संगीयं ॥५९ ॥
कालेण तओ दोण्णि वि सयलकलागहणदुव्वियद्धाइं । कुसुमाउहवरभवणं जोव्वणमह तत्थ पत्ताइं ॥६० ॥
दिन्ना सुभूसणेणं समरमियंकस्स सा तओ कन्ना । णामेणऽसोगदेवी परिणीया सुहमुहुत्तेण ॥६१ ॥
भुंजंताण जहेच्छं विसयसुहं ताण वच्चए कालो । हरिसभरनिब्भराणं अण्णोण्णं बद्धरागाणं ॥६२ ॥
अह अन्नया णरिंदो वायायणसंठिओ कुरुमयंको । चिट्ठइ देवीय समं विविहविलासेहिं विलसंतो ॥६३ ॥
चिहुरे समारयंती रयणीयरकरसरिच्छयं रुइरं । दट्ठूण सिरे पलियं पभणइ 'सुण देव ! विन्नत्तिं ॥६४ ॥
पलियच्छलेण दूओ कण्णासण्णम्मि संठिओ भणइ । आगच्छइ एस जरा जं कायव्वं तयं कुणह' ॥६५ ॥
तं सोऊणं राया समरमियंकस्स रज्जनिकखेवं । काऊणं पव्वइओ देवीएँ समं गुरुसमीवे ॥६६ ॥
समरमियंको वि तओ राया जाओ विणिणयपयावो । चिट्ठइ देवीएँ समं भुंजंतो मणहरे भोगे ॥६७ ॥
इत्थंतरम्मि तं णिरक्खाहबहुजीवघायणनिबद्धं । कम्मं पुव्वभवगयं उइयं अइविरसपरिणामं ॥६८ ॥

अत्थि तहिं चिय विसए बंभाणगरम्मि सिरिबलो राया ।

तेण सह तस्स जाओ अणिमित्तो विण्हो कहवि ॥६९ ॥

१. सं० वा० सु० गुंजिय ॥ २. ला० 'णो उवस्सगो ॥ ३. ला० 'कालं ॥ ४. ला० अत्थि ॥ ५. ला० तीएँ गब्भम्मि चविउं ॥ ६. ला० सिरियं ॥ ७. ला० 'समीवं ॥

जे जे पहाणजोहा ते सव्वे सिरिबलं समल्लीणा । अब्भुवगओ तथा वि हु समरमियंकेण संगामो ॥७०॥
 संजाए संगामे महाविमद्देण सिरिबलेण तओ । निहओ समरमियंको विणिहयनियसेणसेसेण ॥७१॥
 रुद्धज्झाणेण तओ मरिऊणं भीसणम्मि नरगम्मि । सत्तरससागराऊ उववण्णो णारगत्तेण ॥७२॥
 सोऊण कंतमरणं असोगदेवी वि विरहसोगत्ता । मुच्छावसेण धणियं धसं त्ति धरणीयले पडिया ॥७३॥
 आसासिया समाणी रुद्धज्झाणेण घोरपावकरं । महमोहमोहियमणा णियाणमेवंविहं कुणइ ॥७४॥
 ‘राया समरमियंको उप्पन्नो णवर जत्थ ठाणम्मि । तत्थेव मंदभग्गा अहं पि जाइज्ज नियमेण’ ॥७५॥
 तो जलणे णियदेहं किलिड्ढचित्ता दहेवि मरिऊण । जत्थेव णिवो णरगो इमा वि तत्थेव उववण्णा ॥७६॥
 सत्तरससागराई निच्चुव्विणेहि परमदुहिहिं । कारुणजंपिरेहिं भीएहिं कहव गमियाइं ॥७७॥
 उव्वट्टेऊण णिवो णरगाओ पुक्खरद्धभरहम्मि । जाओ गहवइपुत्तो वेण्णाएँ दरिद्दगेहम्मि ॥७८॥
 अह सा वि तस्स जाया तत्थेव य भारहम्मि वासम्मि । जाया दरिद्धूया तस्सेव समाणजाईए ॥७९॥
 कालेण तओ दोन्नि वि उद्दामं जोव्वणं उवगयाइं । जाओ अ ताण तत्थ वि वीवाहो विहिणि ओगेणा ॥८०॥
 पुव्वभवब्भासेणं धणियं अण्णोण्णबद्धरागाइं । दारिद्धदुक्खविमुहाइं ताइं चिडंति सुक्खेणं ॥८१॥
 अह अन्नया कयाई ताणं गेहंगणम्मि पत्ताओ । समणीओ गुणजुयाओ भिक्खट्ठा हिंडमाणीओ ॥८२॥
 दडूण तओ तेहिं फासुय-एसणियभत्त-पाणेहिं । पडिलाहियाओ विहिणा हरिसवसुब्भिन्नपुलएहिं ॥८३॥
 ‘कत्थ डियाओ तुब्भे ?’ एवं पुट्ठाहि ताहिं पडिभणियं । वसुसिद्धिघरसमीवे उवस्सए तस्स पडिबद्धे
 तो मज्झणहे ताइं गयाइं परिवज्जमाणसद्धाइं । दिट्ठा य तत्थ गणिणी सुपसन्ना सुव्वया णाम ॥८५॥

पुरओ संठियपोत्थयनिविट्ठदिट्ठी णमंततणुणाला ।

लौयणभमरभरोणयसुवयणकमला कमलिणि व्व ॥८६॥

वित्थिण्णमहत्थाइं ठियाइं एगारसं पि अंगाइं । कमलदलकोमलम्मि वि जीसे जीहाइ अगम्मि ॥८७॥
 सा वंदिया य तेहिं विम्हयउप्फुल्ललोयणजुगेहिं । भक्तिभरणिब्भरेहिं रोमंचुच्चइयगत्तेहिं ॥८८॥
 तीइ वि धवलपडंतरविणिगउत्ताणिणकरकमलं । अद्धुण्णामियवयणाएँ भाणियं धम्मलाहो त्ति ॥८९॥
 वंदेतु सेसियाओ वि साहुणीओ पुणो वि गणिणीए । वंदेतु पायकमलं नच्चासण्णे णिविट्ठाइं ॥९०॥

गणिणीएँ तओ भणियं निम्मलपरिणित्तदसणकिरणाए ।

‘परिवसह कत्थ तुब्भे ?’ ‘इहेव’ अह जंपियं तेहिं ॥९१॥

गोयरगयाइ जीए दिट्ठाइं साहुणीएँ तो ताए । भणियं ‘अज्जेवड्ढे वसहिं पुट्ठाओँ एएहिं ॥९२॥

१. ला० उव्वट्टेऊण य निवो ॥ २. ला० सुपसन्ता ॥ ३. सं० वा० सु० लोयणकमलभरो ॥ ४. सं० वा० सु० रोमंचच्च ॥

गोयरगयाओं धणियं सद्धावंताइ तह य एयाइ । तुम्हाण वंदणत्थं भत्तीएँ इहाऽऽगयाइं' ति ॥९३॥
 गणिणीएँ तओ भणियं 'साहु कयं धम्मनिहियचित्ताइं । जं इत्थ आगयाइं किच्चमिणं भव्वपाणीणं ॥९४॥
 जम्हा जयम्मि सरणं धम्मं मोत्तूण णत्थि जीवाणं । सारीर-माणसेहि य दुक्खेहि अभिदुयाण फुडं ॥९५॥
 ण य सो तीरइ काउं जहड्डिओ वज्जिऊण मणुयत्तं । तं पुण चलं असारं सुमिणय-मायंदजालसमं ॥९६॥
 मणुयत्तं लद्धूण वि धम्मं न करंति जे विसयलुद्धा । दहिऊण चंदणं ते करंति इंगालवाणिज्जं ॥९७॥
 धम्मेण सव्वभावा सुहावहा हुंति जीवलोगम्मि । धम्मेण सासयसुहं लब्भइ अचिरेण सिद्धिपयं' ॥९८॥
 इय सोऊणं तेहिं पडिवन्नो सुद्धभावजुत्तेहिं । धम्मो जिणपन्नत्तो कया इ जहसत्तिओ विरई ॥९९॥
 गमिऊण कंचिवेलं गणिणिं तह साहुणीओं णमिऊण । गेहम्मि पत्थियाइं, णवरं गणिणीएँ भणियाइं । १००
 'एज्जह इह पइदिवसं, एवं चिय तह सुणिज्जह य धम्मं । दुक्खविरेयणभूयं पन्नत्तं वीयरगेहिं' ॥१०१॥
 पडिवज्जिऊण य तओ गणिणीवयणं गयाणि णियगेहं । हिड्डहिययाणि धणियं धम्मम्मि कयाणुरागाइं १०२
 कयवयदिवसेसु तहा जायाइं तिक्खभत्तिजुत्ताइं । उक्किट्ठसावगाइं विसयसुहणियत्तचित्ताइं ॥१०३॥
 अणुपालिऊण पवरं सावगधम्मं अहाऽऽउयं जाव । मरिऊण बंभलोगे दुण्णि वि जायाइं वरदेवा ॥१०४॥
 भोत्तूण तत्थ सोक्खं पवरं सत्ताहियाइं अयराइं । तत्तो य सबरजीवो चइउं इह जंबुदीवम्मि ॥१०५॥
 भरहम्मि समुप्पन्नो मिहिलाणगरीएँ कित्तिवम्मस्स । रत्तो सिरिकंताए देवीए कुच्छिमज्झम्मि । १०६
 दिट्ठो य तीएँ सुमिणे सीहकिसोरो मुहेण उयरम्मि । पविसंतो लीलाए ससज्झसा उड्डिया तत्तो ॥१०७॥
 गंतूण णिवसमीवे कयंजली साहए तयं सुमिणं । सोऊण तयं राया कयंबकुसुमं व कंटइओ ॥१०८॥

परिभावियसुमिणत्थो पभणइ अह नरवरो तइ देविं ।

हरिसखलियक्खराए कोइलअइकोमलगिराए ॥१०९॥

'देवि ! तुह दरियनरवरकरिकरडवियारणेगखरणहरो । पुहवीएँ एगवीरो होही णरकेसरी पुत्तो' ॥११०॥
 तं णरवइणो वयणं तहेव बहुमन्निऊण सा देवी । परिवहइ तयं गब्भं पूरियसुपसत्थडोहलया ॥१११॥
 अह अन्नया कयाइं कमेण पत्ते पसूइसमयम्मि । देवकुमारसरिच्छं पसवइ वरदारणं देवी ॥११२॥
 वद्धाविओ य राया पियंगुलइयाइं दासचेडीए । तीए य पीइदाणं दाउ निवो धोवए सीसं ॥११३॥
 तयणंतरं रण्णो आऐसेणं समत्थरज्जम्मि । जायं वद्धावणयं उब्भियजुय-मुसल-धय-चक्कं ॥११४॥

अवि य—

१. ला० 'माणसेहिं दु' ॥ २. ला० न इमो ती' ॥ ३. ला० 'माइंद' ॥ ४. ला० य ॥ ५. ला० दियहं ॥ ६. ला० 'याइं' ॥ ७. ला० कंइवयदिणेसु ताइं जाया० ॥ ८. ला० वरतियसा ॥ ९. ला० दिट्ठो तीए सु० ॥ १०. ला० उड्डिउं तत्तो ॥ ११. ला० तयं ॥ १२. ला० कलकोइलकोमलगिराए ॥

मुच्चंतसव्वबंदयं, वज्जंत तूरुंदयं । णच्चंतणारिसत्थयं, हीरंतसीसवत्थयं ॥११५॥
 गिज्जंतमंगलोहयं, किज्जंतहट्टसोहयं । घोलंतकंचुईयणं, लोट्टंतखुज्जवामणं ॥११६॥
 वण्णेतभट्ट-बंदिणं, दिज्जंतहत्थिसंदणं । तुट्टंततारहारयं सामंततोसकारयं ॥११७॥
 दिज्जंतभूरिदाणयं, पिज्जंतचारुपाणयं । भुज्जंतचित्तभोज्जयं, दीसंतणेगच्चोज्जयं ॥११८॥
 आवेंतअक्खवत्तयं, पूएज्जमाणपत्तयं । उब्भेज्जमाणछत्तयं, माणेज्जमाणखत्तियं ॥११९॥
 खिप्पंतसीसअक्खयं, कीरंतबालरक्खयं । उप्पन्नसत्तुदुक्खयं संजायमित्तसोक्खयं ॥१२०॥
 वद्धावणगमहूसवमणुहवमाणस्स राइणो एवं । संपुत्तो अह मासो कमसो य मणोरहसएहिं ॥१२१॥
 काऊणं उवयारं रण्णा सुहि-सयण-बंधुवग्गस्स । सोहणदिणम्मि णामं तस्स कयं विजयवम्मो ति ॥१२२॥
 पंचहिं धावीहिं तओ लालिज्जंतो कमेण संजाओ । किंचूणअट्टवरिसो, कलाओ अह गाहिओ तत्तो ॥१२३॥
 सव्वकलासंपण्णं मयरद्धयरायरायभवणम्मि । वट्टंत अहिणवजोव्वणम्मि णाऊण राएणं ॥१२४॥
 उत्तमकुलुब्भवाणं उब्भडलावण्णवण्णजुत्ताणं । णवजोव्वणोद्धुराणं रइरसजलभरियंसरसीणं ॥१२५॥
 सव्वकलाकुसलाणं सिंगारागार-चारुवेसाणं । बत्तीसणं वरकन्नगाण गिण्हाविओ पाणिं ॥१२६॥
 एतो य एत्थ भरहे धरणीविलयाएँ तिलयसंकासं । अत्थि पुरं सुपयासं सुहवासं णाम बहुसासं ॥१२७॥

तत्थ निहयारिपक्खो अणहक्खो बहुजणाण कयरक्खो ।

सव्वकलागमदक्खो अत्थि णिवो णाम विमलक्खो ॥१२८॥

तस्स गुणाणं णिलया विलयालीलाएँ तुलियतेलुक्का । कमलदलदीहणयणा देवी कमलावई णाम ॥१२९॥
 तीसे गब्भम्मि तओ देवो चइऊण बंभलोगाओ । सो सिरिमईएँ जीवो धूयत्ताए समुप्पत्तो ॥१३०॥
 पेच्छइ य चंदलेहं देवी णियअंकसंठियं सुविणे । साहइ पइस्स, तेण वि धूयाजम्मो समाइट्टो ॥१३१॥
 संपूरियदोहलया कमसो पत्ते पसूइसमयम्मि । सोहणदिणम्मि देवी पसवइ वरबालियं हिट्ठा ॥१३२॥
 वत्ते बारसमदिणे सम्माणेत्ता णियल्लए णामं । सुमिणाणुसारउ च्चिय कुणइ णिवो चंदवम्म ति ॥१३३॥
 पंचहिं धावीहिं तओ लालेज्जंती कमेण संजाया । किंचूणअट्टवरिसा, कलाओ गिण्हाविया तत्तो ॥१३४॥
 अह अन्नया कयाई सव्वालंकारभूसिया बाला । पिउणो उच्छंगगया चिट्ठइ णाणाविणोएहिं ॥१३५॥
 निव्वण्णिऊण तीए रूवं राया विसज्जिउं कन्नं । चिंताउरो पयंपइ मइसागरमंतिमुद्दिसिउं ॥१३६॥
 'को वण्णिउं समत्थो ? मंति ! इमं कन्नं जओ एसा । विंझाडइव्व सुगया, बंभणजीहव्व सत्थिरया ॥१३७॥

१. ला० तप्पिज्जमा ॥ २. ला० °खत्तयं ॥ ३. ला० °यरायसोक्खयं ॥ ति ॥ ४. ला० °लापत्तइ मय ॥ ५. ला० °ण्णपुण्णाणं ॥ ६. सं० वा० सु० °यरासीणं ॥ ७. सं० वा० सु० °साणं ॥ ८. ला० सुमिणे ॥ ९. सं० वा० सु० धूयाएसो ॥ १०. सं० वा० सु० °यदेहलया ॥

वेयवइ व्व सुचरणा, विणयसुजाया य गरुडमुत्ति व्व । हरिबुंदि व्व ससच्चा, सनाणया टंकसाल व्व । १३८।
गिरिराइव्व सुसरला, जिणिंदवाणि व्व कोमलालावा । वासरिउ व्व समेहा, अकलंका चंदलेह व्व । १३९।

मन्ने जियाओं सोहग-रूव-लावण्ण-कंति-दितीहिं ।

हर-मार-विण्हु-ससि-वासवाण-घरिणीओं एयाए । १४० ।।

उत्तुंगपीणथणवट्टलट्टया पिहुनियंबबिंबयडा । सयलविलासणिहाणा वट्टइ वरजोव्वणे एसा । १४१ ।।
ता को इमीएँ भत्ता अणुरूवो हुज्ज इत्थ भवणम्मि ? । एएण कारणेणं धणियं चिंताउरो अहयं' । १४२ ।।
सोऊण वयणमेयं, जंपइ मइसागरो तओ मंती । 'मादेव ! कुणसु चित्तं, इत्थ विही अवहिओ चेव' । १४३ ।।
इत्थंतरम्मि सहसा संजाओ कलयलो अइमहंतो । नगरस्सेगदिसाए 'हण हण' संसद्दगद्दभो । १४४ ।।
अंधारियं च तत्तो तमालदलसामलं दिसावलयं । चंचलतुरगखुरक्खयधूलीनिवहेण बहलेण । १४५ ।।
'किं एयं ? सवियक्को राया जावाणवेइ पडिहारं । तज्जाणणाणिमित्तं ताव तलारो तहिं पत्तो । १४६ ।।
सन्नद्धबद्धकवओ दढविरिओ णाम तुरियपयखेवो । धूलिरयधूसरंगो सिरम्मि आबद्धकरकमलो । १४७ ।।
'विजयउ देवो' एवं भणमाणो विण्णवेइ "देव ! जहा । मणपवणवेगतुरगारूढो अहयं सपरिवारो । १४८ ।।
नगरस्स दाहिणदिसासंठियरणम्मि दुट्टपुरिसाण । अज्ज गवेसणहेउं जाव गओ ताव णिसुणेमि । १४९ ।।
अइतुमुलं सम्मदं, गओ य वेगेण तत्थ पिच्छामि । एरावणे व धवले चउदसणे मत्तकरिणाहे । १५० ।।
आरूढं वरकुमरं चउदिसिं वेढियं बहुभडेहिं । धणियं पहरंतेहिं इंदं पिव असुरणिवहेहिं । १५१ ।।
ताव बहुपहरपहओ सो रुद्धो गयवरो गुलुगुलंतो । चुन्नेइ तं भडोहं कुमरेणऽप्फालिओ संतो । १५२ ।।
तस्स भएणं सव्वे ओसरिया जाव दूरदूरेणं । ता सो विहणिय सुहडे हत्थी वि इहागओ देव ! । १५३ ।।
पहरकरालियदेहो सायरआवत्तणामयसरम्मि । पविसइ जलपाणत्थं कुमरो वि य कुणइ जलकीडं । १५४ ।।
अम्हे वि तयणुमगेण आगया जाव तं पलोएमो । तावुत्तरिउं कुमरो वीसमइ तरुस्स छायाए । १५५ ।।
इत्थंतम्मि पत्तो बहुतूरणिणायभरियणहविवरो । चउरंगबलसमेओ सूररहो णाम णरणाहो । १५६ ।।
पभणइ रेरे पाविट्ट ! दुट्ट ! निल्लज्ज ! अज्ज वि इहेव । हणिऊणं मह सुहडे वीसत्थो चिट्ठसि तहेव । १५७ ।।

अज्ज वि पुव्विल्लं चिय वीसरइ ण मज्झ तुज्झ पिइवेरं ।

संपइ पुण्णवमिणं पाव ! तए अज्ज परिविहियं । १५८ ।।

ता ठाहि सवडहुत्तो, सरणं वा विससु कस्सई धिड्ड ! ।

जइ पविससि पायालं तह वि य न हु छुट्टेस अज्ज' । १५९ ।।

१. ला० °राय व्व ॥ २. ला० भुवणम्मि ॥ ३. ला० °वयणं ॥ ४. सं० वा० सु० °द्धपवरो ॥ ५. ला० विजओ ॥ ६. ला० भणिऊणं विं ॥ ७. सं० वा० सु० °वणो व्व धं ॥ ८. ला० °करिवाहे ॥ ९. ला० ०णं अम्हे ओ० ॥ १०. ला० वि हणिय सुहडे हत्थी इह आगओ ॥ ११. ला० चुक्से ।

तं सोऊणं कुमरो वीररसोऽभिज्जमाणपुलओहो । भणइ 'किमुत्तमपुरिसा अप्पपसंसं निव ! कुणंति ?' ॥१६०॥
 पुव्वपुरिसज्जियजसो अज्ज तए णासिओ नरवरिंद ! । जं पुरिसयारवियलं विहलं चिय जंपसे एवं' ॥१६१॥
 तो रुसिओ सूररहो अप्फालइ जाव पवरगंडीवं । ताव कुमारो तुरियं आरुहइ तमेव गयणाहं ॥१६२॥
 चोइज्जंतो वि करी ण मुयइ जा सीयलं जलं कहवि । मच्छुव्वत्तं करणं दाऊणं जाइ अन्नगयं ॥१६३॥
 हणिउं तस्सारोहं, सज्जीवं कुणइ सो वि वरचावं । ता अहयं संजाओ तलवग्गे तस्स कुमरस्स ॥१६४॥
 तलवग्गठियं नाउं मं दूयं पट्टवेइ सूररहो । 'मा मह वइरियकज्जे जमगेहं वच्च' सो भणइ ॥१६५॥
 'मा नाससु पहुपीइं, ण चेव सरणागओ इमो तुमहं' । तं सोउं, पयरक्खं णियपरिवारं तहिं काउं ॥१६६॥
 इत्थागओ तुरंगो निवेयणत्थं तु देवपायाणं । एगागी चेवाहं, संपइ देवो पमाणं' ति ॥१६७॥
 दट्ठुभिउडिभासुरवयणो तो जंपए णरवरिंदो । 'दे देह समरभेरिं सन्नज्झह तुरियतुरियतरं ॥१६८॥
 अब्भागयस्स मज्झं अच्चब्भुयविरियसत्तिजुत्तस्स । अच्चाहियं भविस्सइ मा तस्स महाणुभावस्स' ॥१६९॥
 इय भणिउं विमलक्खो राया आरुहइ रहवरं जइणं । चउरंगबलसमेओ खणेण पत्तो समरधरणिं ॥१७०॥
 एत्थंतरम्मि जे ते दढविरियनिरुविया कुमारस्स । तलवग्गपवरसुहडा भग्गा परसेण्णपहरहया ॥१७१॥
 ते दट्ठूणं भग्गे विमलक्खणरिंदसंतियं सेण्णं । हक्कंतं वग्गंतं अब्भिट्ठं इयरसेण्णम्मि ॥१७२॥
 दप्पुद्धुराण ताणं दोणह वि सेण्णाण विजयलुद्धाणं । सामिकज्जोज्जयाणं संजाओ घोरसंगामो ॥१७३॥

अवि य—

पडहिं खुरप्पछिन्न धयचिंधयं, नच्चहिं वग्गिरिविविहकबंधयं ।
 रडहिं गइंद भिन्नकुंभत्थल, निवडहिं छिन्नकरग्गह हत्थल ॥१७४॥
 अच्चिउ सिरकमलिहिं धरणीयलु, रुहिरपवाहहि हूएक्कजलु ।
 निहयारोह तुरंगम हिंसहिं, कायर भयउक्कपिर णासहि ॥१७५॥
 वायसगिद्धिहिं अंबरु छाइउ, पेच्छसुरहं चमक्कउ लाइउ ।
 आमिसलुद्धसिवहु फिक्कारहिं, चुण्णिज्जइ रह मुग्गरघायहिं ॥१७६॥
 सत्थखणक्खणरविण सुरंगण, अवसंडहिं नियपइ भीयम्मण ।
 तो विमलक्खह सेन्निण भग्गउ, इयरसेण्णु णासेवइ लग्गउ ॥१७७॥

भज्जंतं दट्ठूणं णियसेण्णं तक्खणेण अह राया । सूररहो मेहो इव वरिसइ सरनियरधारहिं ॥१७८॥

१. ला० ररहियं विहं ॥ २. ला० रुसियं ॥ ३. ला० कुमरो वि तुरियं ॥ ४. दूतः ॥ ५. ला० 'सत्तजु'
 ॥ ६. ला० 'वगियवर' ॥ ७. ला० चिंधइं ॥ ८. ला० बंधइं ॥ ९. ला० 'च्छयसुर' १०. ला० 'ज्जहिं रह' ॥
 ११. सं० वा० सट्ठखणं ॥ १२. ला० इयर सें ॥

तं दडूणं कुमरो सीहकिसोरो व्व तस्स आवडिओ । ताणं च तओ जुद्धं संजायं देवभयजणं ॥१७९॥
 बहुविहकरणेहिं तओ नियसिक्खं दाविऊण कुमरेणं । लहुहत्थयाएँ बद्धो वसीकओ सूररहराया ॥१८०॥
 मुत्तूण कुसुमवरिसं कुमरोवरि तो भणेत्तु जयसदं । पेक्खयदेवा पत्ता विम्हइया णिययठाणेसु ॥१८१॥
 इत्थंतरम्मि परियाणिऊण कुमरं पयंपई बंदी । रोमंचंचियदेहो कलकोइलकोमलगिराहिं ॥१८२॥

‘जयउ कुमारो णिज्जियपडिवक्खो रूवतुलियरइणाहो ।

सिरिकित्तिवम्मउत्तो णामेणं विजयवम्मो त्ति ॥१८३॥

को वण्णिउं समत्थो गुणणियरं तुज्झ कुमर ! गुणणिलय ! ।

जो ण वि सहस्सजीहो असंखवासाउओ गेय’ ॥१८४॥

सोऊणेयं राया हरिसेण ण माइ णिययदेहम्मि । किल मह मित्तस्स सुओ एसो सो विजयवम्मो त्ति ॥१८५॥
 रहसेणाऽऽलिंगेउं आइसिय पडिड्डपुरिसवणकम्मं । छोडियसूररहेणं कुमरेण य सह उरं पत्तो ॥१८६॥
 वद्धावणगमहूसवमाइसइ णिवो समत्थणयरम्मि । कुमरसमागमतुड्डो आणंदजलाविलऽच्छिजुगो ॥१८७॥
 पत्थावेण य पुड्डो सूररहो ‘किमिह तुज्झ कुमरेणं । सह संजायं वेरं ?’ सो भणइ ‘णरीसर ! सुणेहि ॥१८८॥
 जो एसो चउदसणो वरपीलू चंदसेहरो णाम । सो गुरुसमरं काउं अम्ह हढो कित्तिवम्मो ॥१८९॥
 तं वेरं सरिऊणं बलदरिसणणिग्गएण दडूण । एगाणिं कुंभिजुयं कुमरं तो एयमायरियं’ ॥१९०॥

पुड्डो तओ कुमारो ‘एगागी वच्छ ! कह तुमं जाओ’ ।

सो भणइ ‘ताय ! निसुणसु मम वयणं अवहिओ होउं ॥१९१॥

नियगेहे अच्छंतो अहयं कीलामि विविहकीलाहिं । हय-रह-करिमाई वि य वाहेमि निरंतरं मुइओ ॥१९२॥
 अन्नदिणे आरूढो कलावमापूरिऊण इत्थ गए । वुड्डोदगगंधेण य अवसीभूओ इमो झत्ति ॥१९३॥
 हत्थिरयणं ति काउं करुणाए गेय घाइओ एसो । एयस्स य लोभेणं करणं दाऊण उत्तिण्णो ॥१९४॥
 मणपवणजइणवेगो पत्तो य इमो कमेण आवेतो । नयरबहिसंठियस्स उ दिट्ठिपहं सूररहरण्णो ॥१९५॥
 एत्तो परं तु विइयं तुम्हाणं’ जाव जंपई एवं । तावाणुमंगलणो पत्तो सिरिकित्तिवम्मणिवो ॥१९६॥
 तं णाऊणं सव्वे अम्मोगइयाएँ निग्गया झत्ति । महया विच्छड्डेणं पविसेइ णिवो तहिं नगरे ॥१९७॥
 आणंदमुव्वहंतो जा चिड्डइ तत्थ कइवइदिणाणि । ता पत्थावं णाउं विमलक्खेण इमो भणिओ १९८
 ‘अब्भागयस्स तुज्झं कुमरकएणं मए इमा दिण्णा । धूया गुणसंपन्ना णामेणं चंदवम्म’ त्ति ॥१९९॥
 तेण वि पडिच्छिया सा, तत्तो सोहणदिणे विभूईए । वत्तं पाणिग्गहणं कन्नाए सह कुमारस्स ॥२००॥

१. सं० वा० सु० कलकोमलकोइलगिराए ॥ २. ला० मह ॥ ३. सं० वा० सु० व ॥ ४. ला० पविसरइ निवो
 ॥ ५. ला० ‘इवयदि’ ॥ ६. ला० इमं ॥

उचिओवगारउव्वं विसज्जिया तेण दो वि रायाणो । णियणगरेसुं पत्ता भुंजंति जहिच्छिए भोए ॥२०१॥
 अह अन्नया कयाई मुणिवइदेविंदपायमूलम्मि । निक्खमइ कित्तिवम्मोरज्जं दाऊण कुमरस्स ॥२०२॥
 चरिऊण तवमुयारं, अट्ठ विकम्माणि निदलेऊण । संपत्तविमलणाणो पत्तो सो सासयं ठाणं ॥२०३॥
 इयरो वि विजयवम्मो साहेत्ता मंडलंतरे बहुए । अणुहवइ भोगलच्छिं तीए सह चंदवम्माए ॥२०४॥
 जम्मंतरनिव्वत्तियसिणेहसंबंधबद्धरागाए । तीएँ समं अच्छंतो गयं पि कालं ण याणेइ ॥२०५॥
 अह अन्नया कयाई अत्थाणे संठियस्स णरवइणो । सा चंदवम्मदेवी इत्थीरयणं ति काऊण ॥२०६॥
 मंतविहाणणिमित्तं हरिया केणावि मंतसिद्धेण । अंतेउरमज्झगया णिवचित्तमयाणमाणेण ॥२०७॥
 कहिओ य तस्स एसो वुत्तंतो कह वि विजयदेवीए । सोऊण य मोहाओ गओ य राया महामोहं ॥२०८॥
 परिवीजिऊण तत्तो चंदणससित्ततालियंटेहिं । पडिबोहिओ य दुक्खं स चिरेणं वारविलयाहिं ॥२०९॥
 गहिओ य महादुक्खेण सो जहा तीरण कहिउं पि । तह दुक्खत्तस्स य से वोलीणा तिन्नऽहोरत्ता ॥२१०॥
 नवरं चउत्थदियहे समागओ तिक्कतवपरिक्खीणो । भूइपसाहियगतो जडाधरो मंतसिद्धो ति ॥२११॥

भणियं च तेण 'णरवइ ! कज्जेण विणाऽऽउलो तुमं कीस ? ।

मंतविहाणणिमित्तं णणु जाया तुह मए णीया ॥२१२॥

कप्पो य तत्थ एसो जेण तुमं जाइओ ण तं पढमं । न य तीएँ सीलभेओ जायइ, देहस्स पीडा वा ॥२१३॥
 तामा संतप्प दढं छम्मासा आरओ तुमं तीए । जुज्झिहिसि णियमओ च्चिय' भणिऊणादंसणो जाओ ॥२१४॥

राया वि गओ मोहं, तहेव आसासिओ परियणेणं ।

हा ! देवि ! दीहविरहे ! कत्थ तुमं ? देहि पडिवयणं ॥२१५॥

मोहवसगाण जे जे आलावा होंति तम्मि कालम्मि । परिचत्तरज्जकज्जो चिट्ठइ सो तेहिं विलवंतो ॥२१६॥
 दट्ठूण भवणवावीरयाइँ विलसंतहंसमिहुणाइँ । परियणपीडाजणगं बहुसो मोहावयइ मोहं ॥२१७॥

किं बहुणा ? णरयसमं तस्स तया दुक्खमणुहवंतस्स ।

वोलीणा पलिओवमतुलिया मासा कह वि पंच ॥२१८॥

कइवयदिणेहिं मुक्को नवरं अणिमित्तमेव दुक्खेण । परियणजणियाणंदो जाओ य महापमोओ से ॥२१९॥

जाया य तस्स चिंता 'अण्णो च्चिय णूणमंतरप्पा मे ।

जाओ पसन्नचित्तो तापुण किं कारणं एत्थ ?' ॥२२०॥

इत्थंतरम्मि सहसा सिट्ठं वियसंतलोयणजुणेणं । वद्धावएण तस्स उ 'समागओ देव ! तित्थयरो' ॥२२१॥

१. ला० १रे संवत्ता ॥ २. ला० रज्जं कुमरस्स दाऊण ॥ ३. ला० कम्माइँ ॥ ४. सं० वा० सु० संपण्णवि' ॥
 ५. ला० सवेविरं वार' ॥ ६. ला० 'हिं नवरं मुक्को अणि' ॥ ७. ला० तो किं पुण का' ॥ ८. ला० उ जहाऽऽगओ ॥

सोऊण इमं वयणं, हरिसवसपयट्टबहलपुलगेणं । वद्धावयस्स रहसा दाऊण जहोचियं दाणं ॥२२२॥
 गंतूण भूमिभागं थेवं पुरओ जिणस्स काऊण । तत्थेव नमोक्कारं, परियरिओ रायविदेहिं ॥२२३॥
 दाऊण य आणत्तिं 'करेह करि-तुरग-जुग-जाणाइं । सयराहं सज्जाइं वच्चामो जिणवरं नमिउं ॥२२४॥
 भूसेह य अप्पाणं वत्था-ऽऽभरणेहिं परमरम्मेहिं' । सयमवि य जिणसगासं संजाओ अह गमणसज्जो ॥२२५॥
 भुवणगुरुणो य ताव य निम्मवियं तियसनाहभणिएहिं । देवेहि समोसरणं तिहुयणलच्छीइ गेहं व ॥२२६॥
 अइअच्चब्भुयभूयं तिलोगनाहत्तसूयं तुंगं । जिणपुत्तुक्कुरुडं पिव पुरीएँ पुव्वुत्तरदिसाए ॥२२७॥
 तं तस्स समोसरणं सिद्धं ततो समागएणेव । कल्लाणएण अवरं देवी तत्थेव दिट्ठ ति ॥२२८॥
 ततो य संपयट्टो जिणवंदणवत्तियाए सयराहं । सिंगारियमुत्तुंगं, धवलगइंदं समारूढो ॥२२९॥
 तूरवोप्फुत्तदिसं तुड्डो नगरीएँ निग्गओ राया । जंपाणजुगगरहवरगएहिं तुरगेहि परिगरिओ ॥२३०॥
 थेवमि(?म)ह भूमिभागं तुरियं गंतूण गयवराओ तओ । ओइण्णो तियसकयं दट्ठूण महासमोसरणं ॥२३१॥
 हरिसवसपुलइयंगो तत्थ पविट्टो य परियणसमेओ । दारेण उत्तरेणं दिट्टो य जिणो जयक्खाओ ॥२३२॥
 दट्ठूण जयपईवं जिणं तओ हरिसपुलगियसरीरो । भूलुलियभालकरकमलसंपुडो थुणियुमाढत्तो ॥२३३॥

अवि य—

मयणसरपसरवारण ! वारणगइगमण ! मुणियतियलोय ।
 लोयगपयपसाहय ! हयमय ! मयसरण ! रणरहिय ! ॥२३४॥
 हियनीसेसोवद्द ! दववज्जिय ! जियकसाय ! अयपवर ! ।
 वरकर ! करणणिवारय ! रयमलजल ! जलण ! दुहतरुणो ॥२३५॥
 तरुणरविप्पह ! पहयंतरारिभडविसर ! सरण ! पणयारण ।
 पणयाण देसय ! सया नमो नमो तुज्झ जिणइंद ! ॥२३६॥

इंदनमंसिय ! सियवायपयडपयडियपयत्थसब्भाव ! । भावनयस्स महामह ! मह सुक्खं सासयं देसु ॥२३७॥
 एवं थोऊण जिणं, गणहरमाई वि साहुणो णमिउं । इंदाइणो य कमसो, उव्विड्डो निययठाणम्मि ॥२३८॥
 एत्थंतरम्मि भगवं जोयणणीहारिमहरसदेणं । संसारजलहिपोयं इय धम्मं कहिउमाढत्तो ॥२३९॥

अवि य—

दुहंता इंदिया पंच संसाराय सरीरिणं । ते चेवँ दमिया सम्मं निव्वाणाय भवन्ति हि ॥२४०॥

१. ला० °ट्टपयडपु ॥ २. ला० परिगहिओ ॥ ३. सं० वा० सु० °गयंदं ॥ ४. जगत्ख्यातो 'जय' इत्याख्यो वा ॥ ५. ला० °यतइलो ॥ ६. मृतशरण ! ॥ ७. सं० वा० सु० अइण ॥ ८. प्रणतानाम् ॥ ९. प्रणयानाम् प्रकृष्टनयानाम् ॥ १०. ला० उव्विड्डा ॥ ११. ला० °व नियमिया ॥

दुदंतेहिंदिएहऽप्पा उप्पहं हीरए बला । दुदंतेहिं तुरंगेहिं सारही वा महाहवे ॥२४१॥
 इंदिएहिं सुदंतेहिं न संसरइगोयरं । विधेएहिं तुरंगेहिं सारही वा वि संजुगे ॥२४२॥
 पुव्वं मणं जिणित्ता णं चरे विसयगोयरं । विवेगयमारूढो सूरु वा गहियाउहो ॥२४३॥
 जिन्ता मणं कसाए य जो सम्मं कुणई तवं । संदिप्पए स सुद्धप्पा अग्गी वा हविसा हुए ॥२४४॥
 सम्मत्तनिरयं वीरं दंतकोहं जियंदियं । देवा वि तं णमंसन्ति मोक्खे चेव परायणं ॥२४५॥
 आणं जिणिंदभणियं सव्वं सव्वण्णुगामिणीं । सम्मं जीवाभिणंदन्ता मुच्चंती सव्वबंधणा ॥२४६॥
 वीयमोहस्स दंतस्स धीमओ भासियं जए । जे जरा णाभिणंदंति ते धुवं दुक्खभाणिणो ॥२४७॥
 जेऽभिणंदंति भावेण जिणाणं तेसि सव्वहा । कल्लाणाइं सुहाइं च रिद्धीओ वि न दुल्लहा ॥२४८॥
 इय भणिऊणं जाए तुण्हिके तक्खणं जिणवरम्मि । परिसा कयंजलिउडा धणियं संवेगमावण्णा ॥२४९॥
 धरणिणमिउत्तमंगा 'इच्छामो सासणं' ति जंपंती । उन्नामियमुहकमला पुणो वि निययं गया ठाणं ॥२५०॥
 तत्थ य केइ पवण्णा सम्मत्तं, देसविरइवयमण्णे । अण्णे उ चत्तसंगा जाया समणा समियपावा ॥२५१॥
 इत्थंतरम्मि रण्णा दिट्ठा देवी तर्हिं समोसरणे । जाया य तस्स चिंता 'हंत ! कुओ इत्थ देवि ?' ति । २५२।
 सरियं च मंतसिद्धस्स तेण तं पुव्वमंतियं वयणं । परिचिंतियं च एयं पुच्छामि जिणं ति, किं बहुणा ? ॥२५३॥
 'किं उण मए कयं परभवम्मि जस्सेरिसो विवागो ? ति । भगवं ! देवीसंगमजणियं सुहमासिमहमउलं ॥२५४॥
 पुव्विं, पच्छा य तओ तीए विरहम्मि दारुणं दुक्खं । अणुभूयमणन्नसमं णारगदुक्खस्स सारिच्छं ?' ॥२५५॥
 इय पुच्छिओ जिणिंदो कहिऊणं पुव्ववण्णियं चरियं । पभणइ 'जं निव ! तइया सबरभवे वट्टमाणेण ॥२५६॥
 विच्छोइयाइं बहुसो रण्णे हरिणाइयाण जुगलाइं । देवीए वि य अणुमन्नियाइं तक्कम्मसेसमिणं ॥२५७॥
 बहु अणुहूयं णरगे, मणुस्सजम्मे वि खुद्दजाईए । संपइ खवियं कम्मं णरिंद ! तुह पुव्वभवजणियं ॥२५८॥
 जं पुण सुहं विसिद्धं सुसाहुभत्तीए तं फलमसेसं । जम्हा सुसाहुभत्ती करेइ नीसेसकल्लाणं ॥२५९॥
 सग्गाऽपवग्गसंगमसंसग्गपवत्तगा इमा चेव । न य अन्नं वरतरयं विज्जइ एईए जियलोए ॥२६०॥
 तम्हा जुज्जइ काउं तत्थेव य उज्जमो बुहजणाणं । ता कुण पयत्तमउलं सुसाहुभत्तीए णरणाह !' ॥२६१॥
 तं जिणवयणं सोउं, पुव्विल्लं सुमरिऊण तो जाइं । मुच्छाविरमे जंपइ 'एवमिणं णाह ! सव्वं ति ॥२६२॥
 निव्विण्णकामभोगो संपइ काऊण रज्जपरिसुत्थं । गहिऊण समणलिंगं तुह पासे पव्वइस्सामि' ॥२६३॥
 देवीपमुहजणेणं एवं चिय जंपियं तओ भगवं । जंपइ 'मा पडिबंधं कुणह अणिच्चम्मि संसारे' ॥२६४॥
 वंदितु जिणवरिंदं, गिहम्मि गंतूण जिट्ठउत्तस्स । रज्जाभिसेयमउलं करेइ जसवम्मणामस्स ॥२६५॥

सिबियारूढो य तओ देवीपमुहेहिँ परिवुडो सहसा । जिणपामूले गंतुं गिण्हइ मुणिसेवियं दिक्खं । २६६।
 सिक्खइ दुविहं सिक्खं, अंगाण दुवालसण्ह पज्जंते । जा पत्तो ता ठविओ सूरिपए जिणवरिदेण । २६७।
 अज्जा इ चंदवम्मा एगारसअंगधारिणी जाया । पत्ता पवत्तिणित्तं कुणइ तवं सुद्धपरिणामा । २६८।
 पडिबोहिऊण दुण्णि वि गामाइसु भवियकमलसंघायं । केवलमुप्पाडेउं, पत्ताइं सासयं ठाणं । २६९।

[शिखरसेनकथानकं समाप्तम् । ६]

एवं दर्शनभक्तिर्विधीयमाना सम्यक्त्वं भूषयतीति ।

गतं चतुर्थभूषणम् । सम्प्रति पञ्चमम् । तत्र च “स्थिरत्वं च” ति सूत्रावयवः । ‘स्थिरत्वं’ स्थैर्यं परतीर्थिकर्द्धि-दर्शनेऽप्यक्षोभ्यत्वं जिनशासन इति सम्बध्यते । अत्र चोपाख्यानकम्—

[७. सुलसाख्यानकम्]

(१)

अत्थि समत्थदीवमज्झड्डिउ, जंबुदीवु अणाइपइड्डिउ,
 तसु दाहिणभरहद्धि विसिड्डउं, मज्झिमखंडु जिणिंदु दिड्डउ,
 मगहाजणवउ तहिँ सुपसिद्धउ, बहुविहजण-धण-धन्नसमिद्धउ,
 गामा-ऽऽगर-गोउलेहिँ रवन्नउ, नाणाविहतरुवरसंछन्नउ,
 मढ-विहार-आरामेहिँ मंडिउ, परचक्कागमभएँण अखंडिउ,
 पमुइयजणकीलासयजुत्तउ, जिण-गणहरपयफंसपवित्तउ,
 किं बहुणा ? अच्चब्भुयसारइ, तहिँ जणवइगुणगणवित्थारइ,
 अत्थि नयरु रायगिहु पयासउं, रम्मत्तणि सुरपुरिसंकासउं,

१. ला० वि ॥ २. ला० ०ते । तच्च सम्यक्त्वं भूषयति अत्राख्यायानं ॥ ३. अस्याख्यानकस्यैका ताडपत्रीया प्रतिवैक्रमीये ११९१ वर्षे लिखिता अणहिल्लपत्तनस्थसंघवीपाटक-ज्ञानभाण्डागारेऽस्ति । अन्या अपि बह्वयः प्रतयो भवेयुरस्याः कथाया इति सम्भाव्यते । उपर्युक्तप्रतौ पद्यमिदमादावधिकं समुपलभ्यते—

पणमवि तित्थेसरु, वीरजिणेसरु भणमि सुलसा(स) सावि [य] चरिउ ।
 स (सं) मत्तसमन्नि उ, विबुहेहिँ वन्निउ, दंसण-नाणगुणावरीउ ॥”

अस्य कथानकस्य संस्कृत-प्राकृतानभिज्ञजनोपयोगप्राचुर्यं दृष्ट्वा ‘मङ्गलविकले पुस्तकलेखन-वाचने अमङ्गलाय’ इति मन्वानैः श्रीमद्देवचन्द्रसूरिपादैरन्येन वा विदुषा मङ्गलाभिधेयप्रख्यापकं पद्यमेतद् विरचय्यादावुपन्यस्तं प्रतिभाति । एवंविधमङ्गलादिनिदर्शकपद्यस्य मूलशुद्धिविवरणान्तर्गतान्यकथानकानामादावनुपलब्धेः ला० सं० वा० सु० पु० संज्ञासु पञ्च स्वप्यत्रोपयुक्तासु प्रतिष्वनुपलब्धत्वाच्च पद्यमिदं टिप्पणौ स्वीकृतम् ॥

कूव-तलाव-वावि-वणसोहिउ, कणयविणिम्मियसालयरोहिउ,
 हट्ट-पवा-सह-भुवणविराइउ, करभरदंडकुदंडाचाइउ,
 तं परिपालइ सेणियराऊ, जसु घरि समरि करड्डिउ चाऊ,
 कामिणिकडुयकडक्खियकाऊ, जासु न गंजिउ वरभडवाऊ,
 जो अरि करिकुंभत्थलसीहु, जो परपोरुसफूसियलीहु,
 जो खाइयसम्मत्तसमन्निउ, जो सुरनाहिं भत्तिय वन्निउ,
 जासु सुनंददेवि गुणवंती, अभयकुमारमाय सुपसंती,
 सीलालंकि य रायह वल्लह, जिणवरभत्त अउन्नह दुल्लह,
 सो तीएँ समन्निउ, विउसेँहि वन्निउ, रायलच्छि परिवालइ ।
 सिरिवीरजिणिंदह, पणयसुरिंदह, भत्तिय नियरउ खालइ ॥१॥

[२]

अन्नु वि नागरहिउ तर्हि निवसइ, दाणु दिंतु अत्थियणिह विहसइ,
 नाण-चरण-दंसणसंजुत्तउ, जिणमुणिपयकमलह जो भत्तउ,
 जो बंधवकुमुयाहँ मयंकू, लोह-माणवज्जियउ अवंकू,
 जो परनारिनियत्तियचित्तउ, जो कलिकालि केण नवि छित्तउ,
 जोव्वण-रूव-सलोणिमबंधुरु, रयणरासि अंतरइ जु सिंधुरु,
 अत्थि तासु गेहिणि गुणवंती, सुलसनामि सुकुलीण पसंती,

अवि य—

जा पवित्तेण सीलेण सुयलंकिया, जा य सम्मत्तरयणम्मि नवि संकिया,
 सोहए जीएँ गुणरयणवरकंठिया, मोक्खसोक्खम्मि निच्चं पि उक्कंठिया,
 जा न केणावि धम्माउ चालिज्जए, जा कला-गुणेंहिं निच्चं पि मालिज्जए,
 जा य सिरिवीरपयपंकयाऽऽसत्तिया, साहुणी-साहुवग्गम्मि निरु भत्तिया,
 जा य साहम्मिपडिवत्तिपरिहत्थिया, जा य नियपरियणे सव्वया सत्थिया,
 जा य विन्नायजीवाइसुपयत्थिया, जा य नियरूव-लावन्नसुपसत्थिया,

१. ला० 'भ्रवण' ॥ २. सं० वा० सु० 'दंडावाइउ' ॥ ३. सं० वा० सु० 'थाणि जु विह' ॥ ४. ला०
 ससंकू ॥ ५. ला० 'कालि कलिलि नवि' ॥ ६. सं० वा० सु० 'रूवसुलोणि' । पु० 'रूवसलूणि' ॥ ७. सं०
 वा० सु० 'मयंधरु पु० मंधुरु' । ८. ला० सुलसु नाम सुकु' । ९. ला० इ ॥

किंचि—

जीएँ सोहंति कुम्मुन्नया चलणया, नं महीवीढसंचारिमा नलिणया,
 जीएँ जंघाजुयं रेहए सोहणं, नं रईनाहभवणम्मि वरतोरणं,
 जीएँ गंगानईपुलिणसुपसत्थयं, सोणिबिंबं सुवित्थिन्नमच्चत्थयं,
 जीएँ नीराऽऽकरावत्तसंकासयं, नाभियामंडलं मयणआवासयं,
 तियसनाहाऽऽउहस्सेव अइखामयं, जीएँ मज्झं रईसोक्खआरामयं,
 जीएँ पीणुन्नया वट्ट सुपओहरा, कामकरिकुंभसारिच्छ सुमणोहरा,
 जीएँ बाहाओं सरलाओं सुकुमालया, कामतावाऽवहारम्मि नं सालया,
 जीएँ सुपसत्थरेहाऽरुणा हत्थया, रत्तकंकेल्लि नं पल्लवा सत्थया,
 कंबुसारिच्छ दीसंति कयसोहया, जीएँ गीवाएँ रेहाओं नरमोहया,
 जीएँ नीसेसलोयाण कयविब्भमं, आणणं फुल्लसयवत्तसिरिविब्भमं,
 जीएँ आकुंचिया सिहिण मिउ केसया, गवल-अलिवलय-सिहिगलयसंकासया,
 किं व अहवा वि सुलसाएँ वन्निज्जए, जा जिणेणावि सम्मत्ति उवमिज्जए,
 तसु जिण-मुणिभत्तहि, नियपइजुत्तहि, विसयसोक्खु माणंतियहिं ।
 जाइ कालु निरवच्चहि, गयदोगच्चहि, निरु सोहगसमन्नियहिं ॥२॥

(३)

अह सो नागरहिउ सुयकारणि, चिंतावनु वुत्तु सहचारिणि,
 'नाह ! काई दीसहि चिंतावर, वारिबंधि नं बद्धउ गयवर,
 रायउत्तु नं रज्जह टालिउ, नं ओहुल्लमलउ नवमालिउ,
 लीहाछोहिउ नं जूयारिउ, नं कावुरिसु वेरिपरिवारिउ,
 नं खीणाऽऽहु सुहडु रणंगणि, भट्टविज्जु नं खयरु नहंगणि,
 नं निज्जामउ नट्टदिसावहु, नं परिखीणआउ तियसप्पहु,
 नं भंडवइ फुडन्तइ पवहणि, नं नट्टप्पहु पहिउ महावणि,
 नं कामाउरु विमुहिं वेसाजणि, नं भट्टव्वउ भावियवरमुणि,
 किं राइं अवमाणिउ किंचि वि ?, किं मुट्टउ केणावि पवंचिवि ?,
 किं व महायणु तुज्झ विलोट्टउं ?, किं निहाणु अंगारविसट्टउं ?,

किं व बालकवि हियइ खुडुक्कइ ?, किं व मरणु आसन्नं दुक्कइ ?,
 जइ अइरहसु नाह ! नवि किज्जइ, तो ँउ कज्जु मज्जु साहिज्जइ',
 तं निसुणेप्पिणु, ईसि हसेप्पिणु, नागरहिउ पडिभणइ तउ ।
 'तं कज्जु न किं पि वि, अइरहसं पि वि, जं न कहिज्जइ कंति ! तउ ॥३॥

(४)

पर किंतु न नंदणु अत्थि तुज्जु, ँउ हियइ खुडुक्कइ मज्जु गुज्जु',
 पडिभणइ वयणु तो सुलस एउ, 'जिणवयणवियङ्कु वि काई खेउ ?
 किर करहि नाह ! नवि सुएँण कोइ, रक्खिज्जइ नरइ पडंतु जोइ,
 नवि रक्खइ वाहिवियारु इंतु, सुउ सामि ! गुणङ्कु वि रूववंतु,
 किं तणउ देइ सग्गा-उपवग्गु ?, पर होइ नाह ! संसारमग्गु',
 'जाणामि सयलु' तो पिउ भणेइ, 'पर लच्छि अपुत्तह राउ लेइ,
 परिवारु सयलु पिऐ ! दिसि घडेइ, नियबंधु वि अन्नह संघडेइ'
 तं सुणवि पयंपइ 'मइविसाल !, मुहुं अन्न का वि परिणेहि बाल,'
 सो भणइ 'विढप्पइ जइ वि रज्जु, महु अन्न भज्ज किंचि वि न कज्जु,
 जइ होइ पुत्तु कह कह वि तुज्जु, तो चित्तु सयन्नं होइ मज्जु',
 जाणेवि विनिच्छउ पियह भज्ज, हुय तियसाऽऽराहणि झत्ति सज्ज,
 सुविसुद्धबंभ भूमिहिं सुवेइ, जिणपडिमह पूयहु कारवेइ,
 पडिलाहइ भत्तिऐं समणसंघु, आयंबिलाइतउ तवइ सिग्घु,
 हरिणेगमेसि सुरु मणि धरेइ, नियमट्टिय अन्न वि बहु करेइ,
 जा ठिय साऽणुट्टाणि महल्लइ, ता हरिणाऽऽणणआसणु हल्लइ,
 तं पेक्खेविणु चित्ति चमक्किउ, अवहि पउंजइ चवणाऽऽसंकिउ,
 तो परियाणिवि सुलसहि चेड्डिउ, सुरसेणावइ झत्ति समुट्टिउ,
 उत्तरवेउव्विउ सविसेसिं, विउरुव्ववि संचल्लिउ रहसिं,

अवि य—

फुरंतमउडभूसणो, रणंतकिंकिणीसणो, चलंतचारुकुंडलो, निबद्धतेयमंडलो,
 ललन्ततारहारओ, लुलंतवत्थधारओ, सुरम्मतालमालओ, विसट्टुमंडमालओ,

खट्वसुत्तसारओ, पैरिद्धिवारवारओ, सुगंधफुल्लसेहरो, सुरिंदसिन्नमेहरो,
 कुरंगतुल्ललोयणो, संपुन्नरूवजोव्वणो, समुद्धोसनिस्सणो, विपक्खपक्खभीसणो,
 सुवेयगइपयारओ, नमन्तकज्जकारओ, महंतभत्तिचोइओ, समागओ सुरो इओ, ति
 अह तियसु निरंगणु, पयडियपंगणु, ठियउ झत्ति सुलसहि पुरउ ।
 सा नियवि ससंभम, तं गयविब्भम, देइ वरासणु नट्टरउ ॥४॥

(५)

उवविसवि तेत्थु तो भणइ देवु, 'किं साविँ ! हउं पइसरिउ एउ,
 भण किं पि ज किज्जइ कज्जु तुज्जु, तेलोक्के वि जं किर सज्जु मज्जु',
 तो भणइ सुलस 'गुरुसत्तिजुत्त !, सुरसेणनाह ! वरणाणवंत !,
 विन्नायसमत्थपयत्थसत्थु, किं न मुणहि मह मणरुइउ अत्थु ?',
 तं सुणवि समप्पिय तीय तेण, बत्तीस गुलिय विहसंतएण,
 'खाएज्जसु एक्केकिय कमेण, तो होसहिं तुहु सुय विणु चिरेण,
 बत्तीस गुणङ्ग पुणो ममं ति, सुमरेज्ज पओयणि कुंददंति !',
 इय एरिस वयणु पयंपिऊण, सुर हुयउ अदंसण तक्खणेण,
 पुणु सुलस करेप्पिणु तासु पूय, वरभोगपरायण पुण वि हूय,
 रिउसमइ समागइ तीँ चिंत, उप्पन्नी एरिस अइमहंत,
 'इट्ठाहं वि को किर एत्तियाहं, मल-मुत्त मलेसइ नंदणाहं,
 ता एक्कु कालु भक्खेमि ताओ, गुलियउ जा देविं दिन्नियाओ,
 बत्तीससुलक्खणु जेण पुत्तु, महु एक्कु होइ वरसत्तिजुत्तु,'
 इय चिंतवि गुलियउ तीँ ताओ, बत्तीस वि समयं भक्खियाओ,
 तो ताहं पभाविण तीँ जाय, बत्तीस गब्भ सुविभत्तकाय,
 समगं चिय ते वड्ढंति जाव, हुय वेयण दुद्धर उयरि ताव,
 जा संकइ वेयण नवि सहेवि, ठिय काउसणि सुरु मणि धरेवि,
 सुरु पुण वि समागउ भणइ 'कज्जु, किं साविँ ! पुणरवि हुयउं अज्जु,
 तो सुलस कहइ तं सव्वु तासु, नियबुद्धिँ जं किउ अप्पयासु,
 'हा हा अकज्जु तइं कियउं मुद्धि !', सुरु भणइ 'सुनिम्मलकुलविसुद्धि !,

१. ला० परिद्धिचार ॥ २. ला० करेविणु ॥ ३. सं० वा० सु० गुलियाओ जा देविं ॥ ४. ला० वरसत्तजुत्तु
 ॥ ५. ला० सुविबद्ध ॥

होहिंति तुज्झ बत्तीस पुत्त, पर किंतु समाऽऽउय संपउत्त,
जइ भिन्न भिन्न भक्खेंत ताउ, तो हुत नियाऽऽउय तुह सुया उ',
सा भणइ 'जीवि जं बद्धु जेंव, तं कम्म तियस ! परिणमइ तेंव,
कयकम्मह नवि संसारि को वि, पडिमल्लु होइ सुवियक्खणो वि,
तो हरहि पीड महु तणुतवंत, जइ सज्झ तुज्झ सुर ! धम्मवंत !,'
सारंगवयणु तो तीएँ अंगि, गउ पीड हरेविणु सग्गि वेगि,
सुलस वि गयवेयण, धम्मपरायण, सुहिण गब्भु परिवहइ थिर ।
अहवा सुरमहियहि, परियणसहियहि, काइँ खूणु तहिं होइ किर ? ॥५॥

(६)

नवमासेँ हि अह पडिपुन्नएहिं, अद्धट्टमदिवससमन्निएहिं,
सा पसवइ सुहनक्खत्तलग्गि, आसन्नइ पडिचारियहँ वग्गि,
समगं चिय वर बत्तीस पुत्त, नीसेससुलक्खणसंपउत्त,
नियकंतिपयासियगब्भगेह, नं मिलिय पओयणि तियसनाह,
नागु वि वद्धाविउ चेडियाए, रहसेण पियंकरिनामियाए,
तोसेण दिनु तो तीएँ दाणु, आइसइ महूसवु अप्पमाणु,

अवि य-

घुम्मंतरुंदमदलो, नच्चंतनारिगुंदलो, कीरंतजक्खकदमो, दीसन्तवेसविब्भमो,
वज्जंततूरसदओ, सुव्वंतगेयसदओ, धावन्तदासि-दासओ, धिप्पंतसीसवासओ,
दिज्जं तणेयदाणओ, पूइज्जमाणजाणओ, उब्भिज्जमाणजूयओ, पढंतभट्ट-सूयओ,
गिज्जंतसव्वमंगलो, आवितंबंधुमंडलो, रोलंतसूयमाइओ, माणिज्जमाणदाइओ,
कीरन्तदेवपूयणो, मुच्चंतगुत्तिबंधणो, पूइज्जमाणसंघओ, दिज्जंतखंडसहघओ,
तुप्पंतसाहुपत्तओ, भुज्जंतचारुभत्तओ, आवितंतअक्खवत्तओ, दिज्जंतपूयपत्तओ, ति

इय विहवविमद्दिं, जणसम्मद्दिं, वद्धावणउं करेवि ऐहु ।

देवय पूएविणु, गुरुहु नमेविणु, नामुच्चारणु कुणइ लहु ॥६॥

१. ला० होंत ॥ २. ला० मह ॥ ३. ला० ण देवि सो तीएँ ॥ ४. सं० वा० सु० 'तूरकंदओ ॥
५. ला० पु० 'सत्थमं' ॥ ६. ला० 'खंडसंघओ ॥

(७)

जिणभद्द-वीरभद्दाइयाइं, नामाईं कुमारहँ ठावियाइं,
 तो पंचधाइपरिपालिया उ, हुय अट्टवरिस सुहलालिया उ,
 संवद्धमाण कमसो कुमार, संजाय कलागमपार सार,
 बत्तीस वि धम्मकलावियइठ संपुन्नसुजोव्वण-गुणगणइ,
 बत्तीस वि दारियवईरिवार, सोहण्णोहामियसुरकुमार,
 बत्तीस वि जिणमुणिविहियपूय, निरूवविणिज्जियमयणरूव(य),
 बत्तीस वि समवय सेणियस्स, उस्सप्पिणिभाविजिणेसरस्स,
 बत्तीस वि अइपिय नरवरस्स, दरियारिकरिंदमयाहिवस्स,
 बत्तीस वि माणुम्माणजुत्त, वरलक्खणवंजणसंपउत्त,
 बत्तीस वि बंधवकुमुयचंद, आणंदियकामिणिलोयवंद,
 बत्तीस वि सरलसहावसत्थ, जीवाइवियाणियनवपयत्थ,
 बत्तीस वि ते कुलबालियाओ, परिणाविय गुणगणमालियाओ,
 अह ताहँ ललंतहँ, सुहु माणंतहँ, जाइ कालु निरूवद्वहं ।
 नियगेहिँ वसंतहँ, निरु निच्चंतहँ, जह व सग्गि दोगुंदुयहं ॥७॥

(८)

एत्तो य अत्थि नयरी विसाल, वेसाली नाम सुसालसाल
 तं पालइ चेडउ नरवरिंदु, निक्कंदुक्कंदियवैरिविंदु,
 तसु अत्थि दोन्नि वर नंदणाओ, अभिहाणेंण जेट्ठा-चेल्लणाओ,
 उत्तुंगपीणसुपओहराओ, निरूवोहामियअच्छराओ,
 जीवाइपयत्थवियक्खणाओ, जिणसासणरत्त सुदंसणाओ,
 पंडित्तगव्वभरउद्धुराओ, सिंगारफारतणुबंधुराओ,
 अह अन्नदियहि सुपसंतियाहं, अंतेउरमज्झि रमतियाहं,
 कुंडिय-तिडंड-भिसियाविहत्थ, नियसासणनायसमत्थसत्थ,
 पव्वाई एक्क सुजिन्नकाय, तहिँ कन्नंतेउरि संपयाय,
 सा कहइ ताहँ नियसोयधम्म, जो बालह जो भावइ सुद्धु रम्म,

१. ला० ०वैरि० ॥ २. सं० वा० सु० 'यविंद' ॥ ३. ला० सुह ॥ ४. ला० 'हं गलइ का' ॥ ५. सं० वा० सु० 'तणुगव्वियाओ' ॥ ६. सं० वा० सु० 'हत्थु, नियसासणवाय' ॥ ७. सं० वा० सु० सांपराय ॥

तं सुणवि जिणागमभाविआए, सा वुत्त जेडवरसाविआए,
 'जह वत्थु किं पि रुहिरेण लिचु, हलें ! रुहिरेणेव य धोवियंतु,
 नवि सुज्झइ तह तुह धम्मि मुद्धि !, पावेण विणिम्मिउ अइअसुद्धिं,
 तं कम्म विमुज्झइ पावि केव, सोयाइविणिम्मविण्ण चेव ?',
 एमाइवयणबहुवित्थरेण, सा विहिय निरुत्तर तक्खणेण,
 तो कयमुहबहुवग्घाडियाहिं, पहसन्तिहिं जेडह चेडियाहिं,
 कंठम्मि धित्तु रायंगणाओ, सा धाडिय वलिय वरंगणाओ,
 पव्वाइय बहुविहकूडवंत, तो चिंतइ कोविं धगधगेंत,
 'पंडित्तणगव्विय एह पाव, ससवक्कइ पाडमि दुड्ढभाव,'
 तो जेडरूवु फलहइ लिहेवि, गय सेणियरायह पासि लेवि,
 दक्खालइ कयउचिओवयार, तं रायह नियकज्जम्मि सार,
 निव्वन्निवि तं अणुरायजुत्तु, पव्वाइं भणइ वियारपत्तु,
 'किं अत्थि विविहरयणायरम्मि, एयारिसु रूवु रसायलम्मि?',
 सा भणइ 'न सक्कइ कु वि लिहेवि, तहिं रूवहु ए(?प)हु ! आयरसु को वि (?),
 ऐह चेडयरायह कन्नधूय, मइ अक्खिय निव ! तुज्झाणुरूव',
 इय जंपवि हरिसभरंतगत, पव्वाइं नियठाणम्मि पत्त,
 राउ वि तसु रूविं, सल्लसरूविं, मुच्छिउ निच्चलु हुयउ किह ।
 निप्फंदसलोयणु, निच्चलचेयणु, परमज्झाणि वरजोइ जिह ॥८॥

(९)

एत्थंतरि अभयकुमारु पत्तु, निय जणयहं जो निच्चं पि भत्तु,
 पणमेवि अजाणिउ जं निविट्ठु, ता जाणिउ जणयह चित्तु नट्ठु,
 पय सीसि विघट्टिवि मइविसालु, तो पुच्छइ जाणियदेसकालु,
 'चिंतावरु दीसह काइं अज्जु ?, साहेह जेण साहेमि कज्जु',
 पच्चागयचेयणु तो नरेसु, अभयह तं साहइ निरवसेसु,
 अभण्ण वुत्तु मा करहि खेउ, पेसिज्जउ दूउ अकालखेउ,

१. सं० वा० सु० वुत्ति ॥ २. ला० पाविनेव ॥ ३. कृतमुखबहुहास्यालापाभिः ॥ ४. ला० चलिखरं ॥
 ५. ला० पव्वाइं ब ॥ ६. ला० आरिसुकोवि ॥ ७. श्रेष्ठयोगी ॥ ८. सं० वा० सु० दीसहु ॥ ९. ला० अज्ज ॥
 १०. ला० कज्ज ॥ ११. सं० वा० सु० मं ॥

वरणत्थु तीएँ वरकन्नयाए, चेडयसमीवि सामन्नयाए',
तो पेसिउ दूउ नरेसरेण, संपत्तु तेत्थु सो चडयरेण,
पडिहारनिवेइउ संपविट्ठु, अत्थाणि नमेविणु पुणु बइट्ठु,
विहिओवयारु निवचेडण, विन्नवइ दूउ कमवाडण,
'जा देव ! तुम्ह कऽवि अत्थि बाल, नीसेसकलागमगुणविसाल,
वरणत्थ तीएँ निवसेणिण, हउं पेसिउ वरभडसेणिण',
तं निसुणवि कौवफुरंतकाउ, पडिभणइ वयणु सो मणुयराउ,
'रे हेहयकुलसंभूय धूय, वाहियकुलम्पि नवि देमि दूय !',
तं सव्वु दूउ निवसेणियस्स, आवेवि कहइ अभयऽन्नियस्स,
तं निसुणवि सामलवयणु जाउ, निवु राहुगहिउ नं रिक्खराउ,
तो भणइ अभउ मंती 'ये(म) सोउ, चित्तम्पि करह साहेमि एउ',
तं सुणवि पहिट्ठउ पुण वि जाउ, सेणिउ रोमंचियसव्वकाउ,
अभओ वि विणिगउ, गेहि समागउ, लिहइ रूवु सेणियनिवह ।
फलहइ सुविभत्तउं, अइसयपत्तउं, वाहियकुलवंसुब्भवह ॥९॥

(१०)

गुलियाएँ करवि सर-वन्नभेउ, साभाविउ छायावि रूवु तेउ,
फलहयसमगु वाणियगवेसि, गउ चेडउ राणउ जेत्थु देसि,
पविसरवि नयरि वेसालियाए, वीहीय निविट्ठु महालियाए,
रायउलदुवाराऽऽसन्नियाए, बहुगंधदव्वपडिपुन्नियाए,
तो जेट्ठकुमारिहि दासि तेत्थु, आविंति सुगंधह गिण्हणत्थु,
तो अभउ विसेसिं देइ ताहं, पूएइ फलहु पेच्छंतियाहं,
कोड्डेण निएविणु पुरिसरूवु, पुच्छंति ताउ तो तस्सरूवु,
जह 'सेट्ठि ! काई पूएहि एउ ?,' सो पभणइ 'सेणियराउ देउ,
महु एहु मयच्छि ! हु सामिसालु, भत्तिएँ आराहमि तं तिकालु',
तो ताउ पुरउ कन्नहँ कहिंति, जह 'चोज्जु दिट्ठु किर नत्थि भंति,

१. ला० 'णत्थु ॥ २. ला० हुं ॥ ३. ला० वरभडभोइण ॥ ४. ला० कोवि फु' ॥ ५. पु० य (प)
मोउ ॥ ६. ला० जत्थ ॥ ७. ला० 'गंध-वत्थपडि' ॥ ८. ला० ता ॥

अम्हेहि अज्ज वाणियगपासि' 'किं तं ?' पडिपुच्छइ जेड्ढ दासि,
 अक्खंति तीएँ नीसेसु ताउ, आणवइ सा वि नियचेडियाउ,
 'उप्पन्नु कोड्ड हलि ! महु महंतु, तो आणहु कहवि तयं तुरंतु',
 सामिणिकएण मगंतिआहं, अभओ वि न अप्पइ चेडियाहं,
 जंपइ 'अवन्न मह सामियस्स, किर तुम्हिं करेसह तहिं गयस्स,'
 तो ताहिं सवह बहुविह करेवि, पँच्चाइउ अप्पइ संवरेवि,
 दक्खिंति ताओं नियसामिणीए, वररायहंसगयगामिणीए,
 अवलोयइ रूवु कुमारि जाम्ब, किय झत्ति परव्वस मयणि ताम्ब,
 बोल्लइ 'हल्ल ! पभणह सेट्ठि एउ, जइ होइ कंतु महु तुज्झ देउ,
 तो जीविउ अत्थि न एत्थु भंति, फुट्टेइ हियउं अन्नह तड त्ति,'
 तं अभयह अक्खिउ ताहिं, सव्वु, अभएण वि पभणित करवि गव्वु,
 'जइ निच्छउ एहु कुमारियाए, तो करमि कज्जु अविचारियाए,
 पर किंतु सुरंगमुहम्मि तीए, अमुगत्थ अमुगपुत्तिमतिहीए,
 ठाएवउं जेण नरिंदु तेत्थु, हउं आणिसु गुणवियसव्वसत्थु,'
 संकेउ करेविणु, मणि विहसेविणु, जाणाविउं तं सेणिघहु ।
 सिरिअभयकुमारिं, मंतिहिं सारिं, आवेहु सुरंगहिं सिग्घु पहु ! ॥१०॥

(११)

तो आगउ सेणित पुहइराउ, सविसेसाहरियसमत्थकाउ,
 आरुहिय पहाणमहारहम्मि, सज्जीकयबहुविविहाऽऽउहम्मि,
 बत्तीसहिं सुलसहिं नंदणेहिं, संजुतु जुत्तवरसंदणेहिं,
 नियमित्तकज्ज निरु वच्छलेहिं, अवमन्नियअवहारच्छलेहिं,
 तेत्तीसहिं रहिंहिं सुरंगदारि, पविसरवि पत्त जहिं ठिय कुमारि,
 संकेयठाणि तो नरवरेण, संभासिय वरहंसस्सरेण,
 'हउं तुज्झ कज्जि आइउ मयच्छि !, जइ इच्छहि तो रहि चडहि दच्छि !,'
 एत्तो य तीएँ निवन्दणाए, आपुच्छिय चेल्लण गममणाए,
 तो चेल्लण भणइ 'अहं पि भगिणि !, आवेसु तए सह हंसगमणि !',

१. ला० पच्छाइउ ॥ २. ला० जाव ॥ ३. ला० ताव ॥ ४. ला० मह ॥ ५. ला० 'पुण्णत्तिहीए ॥
 ६. ला० आवेह ॥ ७. सं० वा० सु० संजुत्तजुत्तवर' ॥ ८. सं० वा० सु० 'अवराहच्छलेहिं ॥

तो तीऐं जुत्त रोमंचियंग, आरुहइ जांम्व रहि रूवचंग,
ता भणइ जेठ 'मह रयणपुत्र, वीसरिय करंडी बहुसुवन्न,
आणेमि जाव सा पहु ! महऽत्थ, खणु एक विमालह ताव एत्थ',
गय जाव जेठ इत्तिउ भणेवि, ता वुत्तु नराहिवु कम नमेवि,
सुलसासुएहिं 'अरिगेहि देव !, चिरु कालु विलंबु न जुत्तु एव,'
तं निसुणवि सेणित वलिउ झत्ति, चेळ्ळण गिण्हेविणु रूववंति,
अह जेठ पत्त एत्थंतरम्मि, दुयवियड सुरंगहि वरमुहम्मि,
तं सुत्तु निएविणु विणु विमद्दि, धाहाविउ तीऐं महंतसद्दि,
'हा मुट्ट मुट्ट दे धाह धाह, मह भगिणि हरिज्जइ ऐह अणाह',
तं निसुणवि कोवफुरंतउट्टु, करघायवियारियभूमिवट्टु,
सन्नद्धउ चेडयराउ जाव वीरंगउ भडु विन्नवइ ताव,
'पहु ! खेउ करहिं किं एत्थ कज्जि ?, आएसु देहि लहु मई विसज्जि',
वीसज्जिउ तो निवचेडण, सो दिन्ननिययकरबीडण,
लहु मज्झि सुरंगहि जाम्व जाइ, ता पेच्छइ रह ते रविहि नाइ,
कमसंठिय नागह पुत्त तेसु, असुर व्व नियच्छइ नं सुरेसु,
अह एक्कु बाणु मेलेवि तेण, ते मारिय भड वीरंगण,
संकिन्नसुरंगमुहम्मि जाव, बत्तीस वि रह अवणेइ ताव,
गउ सेणित लंघवि दूरदेसु, इयरो वि वलिवि गउ जहिं नरेसु,
साहेइ असेस वि तस्स वत्त, पणमंतसीसु जा जेंव वित्त,
धूयावहारिं दूमिउ नरेसु, सेणियभडमारणि हू सतोसु,
जेठ वि मणि चिंतइ तं सुणेवि, निव्विन्नकाम भवगुण मुणेवि,
'धिसि धिसि धिरत्थु भोगाहं जेत्थु, वंचइ नियभगिणि वि इय निरत्थु,
धिसि धिसि मल्लमुत्तसमुब्भवाहं, कामाहं विहियबहुपरिभवाहं,
धिसि धिसि खणमेत्तसुहावहाहं, कामाहं नरयपुरसुप्पहाहं,
धिसि धिसि पज्जंतदुहाऽऽकराहं, कामाहं अथक्कविणस्सराहं,
धिसि धिसि गुणसालमहानलाहं, कामाहं विणासियतणुबलाहं,
एयाण उवरि जो रइ करेइ, सो दुक्खहं अप्पउं धुरि धरेइ,

१. ला० जाव ॥ २. ला० वुत्त नराहिव ॥ ३. ला० चिरका ॥ ४. ला० धाहाविउ ॥ ५. ला० एत्थु ॥ ६. ला० मय ॥ ७. सं० वा० सु० 'करपीड' ॥ पु० 'करवाड' ॥ ८. ह्रस्वतोषः, भूतः स तोषो वा ।

तो परिहरामि' चिंतेवि एउ, गय जणयह पासि करेवि वेउ,
 अक्खइ नीसेसु वि तासु कज्जु, मइं ताय ! विसज्जि झडत्ति अज्जु,
 तो तेण विसज्जिय, हुय सा अज्जिय, बंभचेर-तव-नियमधर ।
 गुणरयणिहि मंडिय, आगमि चड्डिय, चंदणञ्जपासम्मि वर ॥११॥

(१२)

एतो य मग्गि सेणिउ तुरंतु, वच्चइ जेट्ठ ति समुल्लवंतु,
 सा पभणइ 'न वि हउं जेट्ठ सामि !, तहु भगिणि लहुय चेल्लण भवामि !,'
 तो जंपइ सेणिउ 'सव्वजेट्ठ, तुहु पिययम ! महु गुणगणवरिड्ड !',
 तो चेल्लणलाहिं हि हिड्डचित्तु, वरमित्तविणासिं सोयतत्तु,
 चेल्लण वि भगिणिवंचणविसन्न, सेणियवरलाहिं अइपसन्न,
 संपत्तु नरिंदु कमेण गेहिं, तहिं चेल्लण मेल्लवि वडभडेहिं,
 परिवारिउ नागह गेहि पत्तु, सुयमरणु कहइ अंसुय मुयंतु,
 तं सुणवि नागु सहं परियणेण, अक्कंदइ दुक्खिउ इय मणेण,
 'हा पुत्त ! पुत्त ! कहिं तुम्हि पत्त, जमगेहि अयंडे वि जीय चत्त,
 हा दारुणदुक्खमहन्नवम्मि, हउं काइं खित्तु विहि ! दुत्तरम्मि,
 हा हा निरु निग्घिण ! अइअणज्ज !, एउ काइं विहिउ पइं विहि ! अलज्ज !,
 जं एक्कु कालु मह नंदणाहं, हिउ जीविउ अरिबलमद्दणाहं,
 मइं जाणिउ किर विद्धत्तणम्मि, पालेसहिं सुय हरिसिउ मणम्मि,
 तं सव्वु निरत्थउं मज्झ जाउ', इय विलवइ सो भूलुलियकाउ,
 निवडिय सुलसा वि य धरणिवट्ठि, गयबंधण जह किर इंदलट्ठि,
 आसासिय परियणि रुयइ दीणु, 'सइं कियउं एउ मइं मइविहीणु,
 जइ भग्ग ! अलक्खण हउं अपुन्न, समयं गुलियाउ न खंतऽवुण्ण,
 तो मज्झ एउ नवि दुक्खु हुंतु, समगं सुयमरणसमुब्भवंतु,
 हा पुत्त ! पुत्त ! कसु निययवयणु, तुम्हाहं मरणि दंसेमु दीणु,
 हा एक्कु कालु हउं किय अणाह, कसु पुरउ पुत्त ! मेल्लेमि धाह ?',
 इय ताहं रुअंतहं, दुहसंतत्तहं भणइ अभउ एरिसु वयणु ।

१. ला० ता ॥ २. ला० कज्ज ॥ ३. ला० अज्ज ॥ ४. ला० भवर ॥ ५. ला० तहि ॥ ६. ला०
 'लाभिं हि ॥ ७. ला० बहुभडेहिं ॥ ८. ला० तुम्हाहिं ॥

‘जाणिय संसारहँ, अइसुवियारहँ, नवि जुज्जइ सोगह करणु ॥१२॥

(१३)

जेण भो एस संसारवित्थारओ, सक्ककोदंडविज्जुच्छडासारओ,
संज्झमेहावलीरायरेहासमो, मत्तमायंगकन्नंतलीलोवमो,
उन्हकालम्मि मायण्हियासच्छहो, वायवेउद्धयाऽऽलोलतूलप्पहो,
सायरुद्धंतकल्लोलमालाचलो, कामिणीलोयणक्खेववच्चंचलो,
एरिसे एत्थ अच्चंतनीसारए, केम्ब तुम्हाण सोगो मणं दारए ?,
जेण तुम्हेहिं सव्वन्नुणो भासियं, जाणिऊणं सरीरेण संफासियं,
किंच मच्चू न देवेहिं रक्खिज्जए, पोरुसेणं बलेणं न पेलेज्जए,
मंत-तंतोसहेहिं न वारिज्जए, भूरिदव्वव्वएणं न धारिज्जए,
तो वियाणित्तुं संसाररूवं इमं, सोयमुज्जेत्तु कुव्वेह धम्मज्जमं,
जेण नो अन्न जम्मे वि एयारिसं, होइ तुम्हाण दुक्खं महाक्कसं',
इय अभयह जंपिउ, सुणवि बुहप्पिउ, किंचिसोयपरिवज्जियइं ।
कयलोइयकिच्चइं, विहियजिणऽच्चइं, जायइ धम्मसमुज्जयइं ॥१३॥

(१४)

सेणिय-अभया वि य सह नरेहि, उड्डित्तु पत्त नियनियघरेहिं,
नियधम्मकम्मपरिसंपउत्त, कालेण जाय गयसोगगत्त,
अह एत्तो चंपापुरवरीए, तियसिंदनयरिगुणगणधरीए,
गामा-ऽऽगर-नगरेहिं विहरमाणु, असुरिंदसुरिंदिहि विहियमाणु,
मारारिवीरनिदलियमाणु, उप्पाडियकेवलदिव्वनाणु,
मिच्छत्ततिमिरहरणेक्कभाणु, संपत्तु जिणेसरु वद्धमाणु,
तियसा-ऽसुरकयओसरणि धम्मु, परिसाएँ मज्झि सो कहइ रम्मु
जह भवसमुद्धि किर मणुयजम्मु, कह कहवि हु लब्भइ खवियकम्मु,
तत्थ वि य जिणिंदह तणउ धम्मु, केँ वि लहइ सउन्नउ परमरम्मु,
ता धम्मकम्मि उज्जमु करेह, अइदरियपमायरिवू दलेह,

पंचविहमहव्वयभरु धरेह, अइदुक्करु बहुविहु तँउ करेह,
 जिं पावह गयदुहु मोक्खमग्गु, अहवा वि सुरंगणरम्मु सग्गु,
 एत्थंतरि भिसिय-तिदंडहत्थु, छत्त(?त्र)यच्छन्नालयजुत्तसत्थु,
 अम्मडु नामेण गुणोहजुत्तु, परिवायगु साक्खधम्मवंतु,
 संपत्तु जिणिंदह वंदणत्थु, काऊण पयाहिण गुणमहत्थु,
 सक्कत्थउ भणवि पणामचंगु, संशुणइ एम्ब रोमंचियंगु,
 जय अमरनयचरण ! मयधरणकरचरण !, गयमरण ! गयकलह ! हयमयणगयकलह !,
 जय कम्मरयसमण !, कयअणहगणसमण !, जय भव्वजणसरण ! तव-चरणधरसरण,
 जय नट्टकलकलय ! भवत्तजणमलय !, जग?(य) भवणबलहरण ! परसमयबलहरण !,
 जय डमररयजलय ! नरभमरवरजलय !, घणरसयदलनयण !, अपवग्गगमनयण !,
 जय सयलजगपणय ! दयपरमवरपणय !, समकट्ट-धणरयण ! वरसवण-कररयण !,
 जय सजलघणपसर ! खयकवडभडपसर !, वयभरयमहधवल ! जसपसरभरधवल !,
 जय करणहयदमण ! मयमत्तगयगमण !, छलसप्पकप्परण !, भवरयणवयतरण !,
 इय अखलियसासण !, भवभयनासण !, वीरनाह ! पहु ! विगयमल !
 दीणहँ दय किज्जउ, मह सिवु दिज्जउ, देवचंदनयपयकमल ! ॥१४॥ ॥ एकस्वरस्तुतिः।

[१५]

इय शुणवि निसन्नउ जिणहँ पासि, आयन्नइ धम्मु गुणोहरासि,
 पत्थाविण चल्लिउ जिणु नमेवि, रायगिहगमणि जा मणु धरेवि,
 ता पभणिउ सो वि जगीसरेण, महुमासमत्तकोइलसरेण,
 'पुच्छेज्ज पउत्ति सुकोवियाए, महु वयणिण सुलसासावियाए',
 'इच्छ'ति भणेवि नहंगणेण, रायगिहि पत्तु सो तक्खणेण,
 चित्तेइ 'पेच्छ कह वीयराउ, सुर-नरमज्झम्मि वि पक्खवाउ,
 सुलसाएँ करइ केण वि गुणेण ?, तं सव्वु परिकखमि' इय मणेण,
 गउ तीएँ गेहि रूवंतरेण, परिमग्गइ भोयणु आयरेण,
 धम्मत्थु न सा जा कह वि देइ, ता पुरह वारि सो नीसरेइ,
 अह पुव्वपओलिदुवारदेसि, विउरुव्ववि सो ठिउ बंभवेसि,

चउराणणु पउमासणि निविट्ठु, धयरट्ठगमणु चउबाहलट्ठु,
 बंभक्खसुत्त-जड-मउडजुत्तु, सावित्तिपत्तिपरिसंपउत्तु,
 जा कहइ धम्मु ता पुरजणोहु, आवज्जिउ किर बंभाणु एहु,
 सुलस वि हक्कारिय सहियणेण, डंभो त्ति न गय निच्चलमणेण,
 तो बीयदिवसि दाहिणदिसाए, गरुडासणु सहूँ लच्छीवराए,
 गय-संख-चक्क-सारंगपाणि, लच्छीहरु हूवहु कवडखाणि,
 तेणावि न रंजिअ सुलस जाम्ब, हू तइयदिवसि पच्छिमहि ताम्ब,
 ससिसेहरु भूइविभूसियंगु, वसहासणु गोरिकयद्धसंगु,
 डमरुय-खट्ठंग-तिसूलहत्थु, गणपरिवुडु अक्खइ धम्मसत्थु,
 जा तेत्थु वि नागय गुणविसाल, ता उत्तरदिसिहिँ कोइ साल,
 रयणाइविनिम्मिय तिन्नि सार, कविसीसय-तोरण-वार फार,
 मज्झमि ताण सीहासणम्मि, कंकेल्लितलम्मि समुज्जलम्मि,
 तहिँ उवरि निविट्ठु चउसरीरु, जिणु कम्मसत्तुनिट्ठवणवीरु,
 परिनिम्मियअट्ठसुपाडिहेरु, दंसियउवसन्ततिरिक्खवेरु,
 जा अक्खइ धम्मु चउप्पयारु, जइ-सावयभेइं अइसुतारु,
 तं सुणवि विणिगउ पुरह लोउ, रोमंचिउ भणिँ ण्हाउ धोउ,
 सुलसा वि भणाविय अम्मडेण, 'निदलहि पाउ जिणवंदणेण,'
 तो सुलस वुत्तु 'न वि ऐहु जिणिंदु, सिरिवीरु पणयतियसिंद-विंदु,
 चउवीसमु जो तित्थंकराहं, कम्मट्ठसत्तुबलखयकराहं',
 तो पभणिय तेण 'अईवमुद्धि !, पणुवीसमु जिण ऐहु होइ सुद्धि !',
 सा भणइ 'न होइ कया वि एउ, पणुवीसमु जं किर होइ देउ,
 कावडिउ को वि जणवंचणत्थु, इय अक्खइ जिणवरधम्मसत्थु',
 तिं पभणिय 'मं करि एत्थु भेउ, सासणह पहावण एहु होउ',
 सा भणइ 'पभावण न वि य एह, अलिणोहावण इह अच्छेह',
 इय जाम्ब न सक्किय, चालिवि सत्तिय, सुलस अमडु चित्तेइ तउ ।
 सिरिजिणमुणिभत्तहिँ, दढसम्मत्तहिँ, जुत्तु पसंसणु जिणेंण कउ ॥१५॥

१. सं० वा० सु० सुत्त-चउमुहेंहि जुत्तु ॥ २. सं० वा० सु० हक्कारिउ ॥ ३. ला० जाव ॥ ४. ला० ताव ॥ ५. ला० तावुत्तर ॥ ६. णधीरु ॥ ७. सं० वा० सु० पणवीसमु एहु साहावसुद्धि ॥ ८. सं० वा० सु० तं पणमिय ॥

(१६)

संवरवि असेसु वि सुलसगेहिं, गउ अम्मडु हरिसिउ निययदेहि,
 पविसरइ निसीहिय जा करेवि, ता सुलस समुट्टिय इय भणेवि,
 'अहु सागउ सागउ तुह गुणइ !, महधम्मबंधु ! जिणधम्मसइ !,
 पक्खालइ तो सा तस्स पाय, अइवच्छल जह किर निययमाय,
 दक्खालइ तो गिहचेइयाइं, वंदेइ सो वि विहिपुव्वयाइं,
 उवविसइ दिन्नपवरासणम्मि, अइहरसिं निब्भर नियमणम्मि,
 सो जंपइ 'साविँ ! चेइयाइं, वंदाविय सासय-ऽसासयाइं',
 तो लायवि सिरु कर भूमिवट्ठि, सा वंदइ मणि कयगरुयतुट्ठि,
 सो पुण वि पयंपइ विहसियंगु, जिणसासणि निच्चल अंतरंगु,
 'तुहुं धन्न सपुन्न कयत्थ एक, तुहु जम्मु सहलु तुह पणयसक्कं,
 जिं मणुय-तिरिक्ख-सुरा-ऽसुराण, मज्झट्ठिउ तेयसुभासुराण,
 तुह पुच्छइ वत्त जिणिंदु वीरु, मारारिवीरदलणेक्कवीर',
 तं सुणवि सुलस पुलइयसरीर, संथुणइ 'जिणेसरु जयहि वीर !,
 मिच्छतमेहनासणसमीर !, जय मोहमल्लबलमलणधीर !,
 जय पणयसुरा-ऽसुरइंद-चंद !, चलणंगुलिचालियगिरिवरिंद !,
 जय केवलकलियभवस्सरूव !, जय वीर ! तिलोयऽब्भहियरूव !',
 इय थुणवि सुलस भूलुलियसीस !, पुणु पुणु जिणु वंदइ गयकिलेस,
 तो पुण वि पयंपिय सुलस तेण, सविसेसपरिक्खवियक्खणेण,
 जह 'किर बंभाई पुरवरस्स, दारेसु धम्मु अक्खहि जणस्स,
 कोडेण वि सुंदरि ! ताण पासि, किं कारणु जं किर नवि गया सि ?',
 सा भणइ 'सुहय ! किर कांइ इम्ब, उल्लवहि अईवअयाणु जेम्ब ?,
 जिणु वीरू नमेविणु कह व तेसु, मणु मज्झु घुलइ अघडंतएसु,

जओ भणियं—

जो एरावयगंडयलालियमयरंदपरिमलघविओ । सो विहसियं पि न रमइ पिचुमंदं महुरजुवाणो ॥१॥
 भरुयच्छकच्छवच्छुच्छलंतमयरंदगुंडियंगस्स । भमरस्स करीरवणे मणयं पि मणं न वीसमइ ॥२॥

१. सं० वा० सु० अह ॥ २. सं० वा० सु० वंदेहि ॥ ३. ला० 'हरसिइं नि' ॥ ४. सं० वा० सु० कोडेण ॥

जो माणसम्मि वसिओ वियसियसयवत्तमासलाऽऽमोए । सो किं फुल्लपलासे सविलासं छप्पओ छिवइ । ३ ।
जो कयसीयलतीरे नीरे रेवाएँ मज्जइ जहिच्छं । सो किं इयरे वियरे गयराओ देइ दिट्ठिं पि ? ॥४॥
जो नासियधवगंगं(?) गंगं धवलुज्जलं जलं लिहइ । गयसोहं सो हंसो किं सेसनईपयं पियइ ? ॥५॥
जो पोढपुरंधिरए रओ पकामं पकामकामम्मि । सो किं मोहियमारो वारयकामे मणं कुणइ ? ॥६॥
जो गंतुज्जेन्तनए नए नओ होइ वसइ वरवच्छे । सो नीलगलो विगलो किं विगयतरुं मरुं सरइ ? ॥७॥
जो घणलयसामलए मलए मयरंदवासिए वसिओ । सारंगो सारंगो सो किं अवेरे धरे रमइ ? ॥८॥
इय वीर ! धीर ! माणहण ! तुज्ज पयपंकयं नयं जेण । सो हरि-हराण किं सुहसमूहमहणे कमे नमइ ? ॥९॥
इयजो जिणिंदनिरुपमवयणामयपाणपियणदुल्ललिओ । सो सेसकुनयमयकंजिएसु नयनेव्वुइं कुणइ । १० ।

इय वीरजिणेसर, दुहत्तमणेसर, जेहिँ पणउ पयकमलु तुह ।

ते हरि-हरमाइसु, कामिय-माइसु, सुवियक्खण ! पणमंतु कह ? ॥१६॥

(१७)

अह सुलस पसंसवि महरवाणि, आपुच्छवि अम्मइ गयउ ठाणि,
इय सुलस सुनिच्चल दंसणम्मि, कमसो य पत्त पच्छिमवयम्मि,
जाणेविणु पच्छिमसमउ झत्ति, संलेहण करइ अमोहसत्ति,
जिणु चित्ति धरन्ती वद्धमाणु, आखंडलमंडलविहियमाणु,
पंचहँ परमेड्डिहिँ थुइ सरन्त, नीसेससत्तखामण करंत,
कयअणसण छड्डिवि पूइ देहु, हुअ तियसु सुरालइ सा अमोहु,
तत्तो चवित्तु आगामिणीए, तित्थयरु भविस्सुस्सप्पिणीए,
पनरसमउ नामिं निम्ममत्तु, अप्परिमियनाण-चरित्तसत्तु,
होयवि पाडिबोहियभव्वसत्थु, सिज्झिस्सइ तो जगमत्थयत्थु,
एह संधि पुरिसत्थपसत्थिय, देवचंदसूरीहिँ समत्थिय,
इय बहुगुणभूसिउ, जिणसुपसंसिउ सुलसचरिउ धम्मत्थियहं ।
निसुणंत-पढंतहं, भत्तिपसत्तहं, देउ मोक्खु मोक्खत्थियहं ॥१७॥

सुलसाऽऽख्यानकं समत्तं । ७.

‘गुणा पसत्थ’ ति गुणाः ‘प्रशस्ताः’ मङ्गलालयाः । ‘सम्मत्तं’ ति सम्यक्त्वं सम्यग्दर्शनम् ।
‘एए’ति एते पूर्वोक्ताः कुशलतादयः । ‘हुः’ एवकारार्थस्तेन चायमर्थः—एत एव सम्यक्त्वं भूषयन्ति

१. ला० सो किं मो हयमोरे खोरे कामे ॥ २. पु० ऽब्रुहं ॥

नान्ये, एतेषामेव सम्यक्त्वभूषणत्वेन प्रतिपादितत्वात् । 'विभूषयन्ति' ति विभूषयन्ति विशेषेण भूषयन्ति अलङ्कुर्वन्ति । भण्यते च—

सुर-णर-तिरिया जह भूसणेण रूवस्सिणो विरेहंति ।

तह सुंदरं पि दंसणमिमेहिं भूसेज्जइ गुणेहिं ॥३९॥

जह वा सालंकारं कव्वं विउसार(ण) मज्झयारम्मि ।

सोहइ सम्पत्तं पि हु तहऽलंकारेहिं एएहिं ॥४०॥

इति वृत्तार्थः ॥८॥ उक्तानि भूषणानि । तद्व्याख्यानाच्च व्याख्यातं मूलद्वारवृत्ते भूषणद्वारम् । तदनन्तरं च द्वितीयं दूषणद्वारम् । तत्स्वरूपकथनाय च वृत्तमाह—

संका य कंखा य तहा विगिंछा, कुतित्थियाणं पयडा पसंसा ।

अभिक्खणं संथवणं च तेसिं, दूंसंति सम्पत्तमिमे हु दोसा ॥९॥

'संका य' ति शङ्का च, शङ्कनं=शङ्का 'किमेतदस्ति नाऽस्ति वा ?' इति सन्देहरूपा । चकारो देश-सर्व शङ्काभेदसूचकः । तत्र देशशङ्का 'किमासन् साधूनां ऋद्धयो न वा ?' इत्यादिस्वभावा । सर्वशङ्का तु 'किं सर्वमेवैतज्जिनदर्शनं सत्यमुत धूर्तरचनाकल्पितम् ?' इत्येवमादिलक्षणा । उभयस्वभावापीयं विधीयमाना सम्यक्त्वं दूषयतीति तद्दूषणं भण्यते । इयं चेहलोकविषयापि क्रियमाणा महतेऽनर्थाय जायत इति । अत्र कथानकमाख्यायते—

[८. श्रीधरकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे उत्तरावहे गिरिउरं नाम णगरं । तत्थ य महंतसामंतसामी अजियसेणो णाम राया । तस्स य रूविणी णाम देवी । इओ य अत्थि तत्थ सिरिधरो णाम खण्णवाइओ । सो लोगप्पवायाओ खणइ निहाणगाइं, न य सामग्गीविगलत्तणओ एणं पि संपावए । एवं च गच्छं कालो ।

अह अन्नया कयाई भमडंतो सिरिउरं गओ तित्थं । तत्थेगम्मि पएसे पेच्छइ वरपुत्थियारयणं ॥१॥

पडि-पट्टउलयवेढणयवेढियं पट्टसुत्तनिक्खिवणं । वरपंचवण्णपुप्फोवगारकयविविहअच्चणयं ॥२॥

कप्पूरा-ऽयरु-मयणाहिधूवगंधोद्धयाभिरामेल्लं । गोरोयण-रत्तंदण-कुंकुम-सिरिखंडकयपुंडं ॥३॥

१. ला० भूसणेहिं रूवस्सिणो विसोहंति ॥ २. सप्तमवृत्ते ॥ ३. ला० 'वृत्तेन भू०' । ४. ला० विगिंछा ॥ ५. ला० ता० दूंसंति ॥ ६. ला० 'दसंसूचकः' ॥ ७. ला० 'वे भार' । ८. ला० णाम महादेवी ॥ ९. ला० 'तणाओ' ॥ १०. ला० वच्चए ॥ ११. ला० 'पोत्थिया' ॥ १२. सं० वा० सु० पडि-वट्टोलय-वेढणयवे' ॥ १३. ला० 'अच्चणियं' ॥

सुसुगंधसालिअक्खयबलिकम्मं वासवासियं रम्मं । गहिऊण जाव पयडइ हरिसवसोल्लसियरोमंचो । ४।
ता पेच्छइ मणिचित्तियविहुमणिम्मवियपट्टयसणाहं । रयणमयपुप्फयंतं चामीयरदोरियानद्धं । ५। ।

तओ य 'अवस्सं एत्थ किंचि अच्चब्भुयभूयं भविस्सइ' ति चिंतंतो छोडिऊण वाइउं पयत्तो जाव अणेगसाइसयमंत-तंत-कुहेडग-कोउगाणं मज्झगयं पेच्छइ समंडलं सविहाणं समंतं सरक्खं खन्नवाइकप्पं । तं च दट्ठूण उल्लसिओ चित्तेण । 'अहो ! पत्तं जं मए पावियव्वं' ति चिंतिऊण तब्भणिओवाएण णिरूविउमाढत्तो । निरूवतेंणं परिभावियं एगत्थ ठाणे महाणिहाणं । तओ एगम्मि दिणे कयं तम्मि पएसे महाबलिविहाणं, वत्तियं मंडलं, ठविया चउदिसिं पि तमालदलसामलकरालकरवालवावडकरा दिसावालयपुरिसा, वावराविया य के वि खणिउं, सयं चाऽऽढत्तो मंतं जपिउं । जाव खणमिक्कं खणंति ताव चिंतिउमाढत्तो साहगो जहा 'कओ बलिविहाणाइसु महंतो अत्थव्वओ, न य अज्ज वि पयडीहोइ णिहाणं, ता न नज्जइ किमेत्थ किंचि भवेस्सइ किं वा न व ?' ति । तओ एवं सकाए चंचलचित्तं साहगं णाऊण णिहाणदेवयाए विउरुव्विया बिहीसिया-किलकिलाइउं पयत्ता वेयाला, फेक्कारंति डाइणीओ, रडंति सिवाओ, नच्चंति रक्खसा, निवडंति आगासाओ सिलासंघाय ति । तओ एवंविहं दट्ठूण नट्टा दिसारक्खगपुरिसा । तेसिं पिट्ठओ खणंतगपुरिसा वि । साहगो वि चलचित्तो मंतं जपेंतो अच्छइ । चलचित्तं च साहगं हुंकारेण धरणीयले पाडेऊण पूरिऊण खड्डुं गया देवया । एत्थंतरम्मि पहाया रयणी । आगओ य तत्थ अणेगसिद्धविज्जो सिवभूई नाम सिद्धो । दिट्ठा य तेण मंडलसामग्गी बहुपुरिसपयाणि य । तओ आसन्नीहोऊण जाव णिरूवेइ ताव दिट्ठो पासट्टियपोत्थियारयणो अक्खसुत्तवावडकरो थरथरेंतसव्वंगो उगिरंतफेणमुहो भूमीए लुढमाणो सिरिधरो । नायं च तेण जहा-एस कोइ विज्जासाहगो असिद्धविज्जो छड्डिओ विज्जाए । 'ता मा मरउ वराउ' ति चिंतिय अणुकंपाए बद्धा से सिहा, आलिहियमणेण मंडलं, बद्धाओ दिसाओ, आहओ सत्तहिं उदयच्छडाहिं । तओ उट्ठिओ सहसा । समासासिओ य सिवभूइणा, बद्धा वि य से पुणो बद्धा सिहा । पुच्छिओ य सो वुत्तंतं । कहिओ य तेणं सवित्थरो पुत्थियालाभप्पभिई । तओ णायं तेण सोहणे ठाणे लद्धा । जओ कयं तत्थ पाणोवक्कमणं सिवभूइणा । अणेगविण्णाणायसयसंपन्नो य सो आसि । ता तस्स संबंधिणं एयं पुत्थियारयणं । 'जं च किंचि एत्थ लिहियं तं सव्वमवितहं, ता जाएमि एयं' एवं चिंतिय भणिओ सो 'ता किं एयाए अणेगोवदवालायाए पुत्थियाए?, ण याणसे य तुमं एयाए परिवालणोवायं' । तेण भणियं 'जइ एवं ता गेणह तुमं एयं, जओ गुरू तुमं पाणप्पओ य, संपयं च जं तुमं आणवेसि तमहं करेमि' । सिवभूइणा

१. ला० 'ओ अव' ॥ २. सं० वा० सु० 'च्चब्भूयं' ॥ ३. ला० 'वायक' ॥ ४. ला० 'तेण य परि' ॥
५. सं० वा० सु० 'कार(ए)चलचित्तसा' ॥ ६. सं० वा० सु० विरूविया ॥ ७. ला० आगासतलाओ ॥ ८. ला० 'त्तो चेव मंतं' ॥ ९. ला० लढमाणो ॥ १०. सं० वा० सु० 'एमा' ॥ ११. सं० वा० सु० चिंतियं ॥ १२. सं० वा० सु० 'द्धा से पुणो सिहा' ॥ १३. ला० य वुत्तं ॥ १४. ला० 'णाइसय' ॥ १५. ला० 'एयं च चिं' ॥
१६. ला० एईए ॥ १७. ला० प्राणप्रदः प्राणार्पको वा ॥

वि 'एवं'ति भणिऊण गहिया पुत्थिया । दिट्ठो य तेण खण्णवायमंतो, साहणोवाओ य । सव्वं च विहिं संपाडेऊण 'णिस्संसयं एवमेयं' ति कलिय आढत्तो णिहाणगहणोवाओ । 'दढो' ति ण सक्किओ णिहाणदेवयाए खोभं काउं । जाव पयडीभूयं निहाणयं गहियं च । कया अतिहि-देवयाण पूया । विलसियं च जहेच्छाए । पत्तो परं पसिद्धिं ति ।

[श्रीधरकथानकं समाप्तम् । ८.]

तदेवं शङ्केहलोकविषयाप्यनर्थकारिणी, सम्यक्त्वविषया तूभयलोकयोरप्यनर्थहेतुरिति यत्नतः परिहर्तव्या ।

गतं शङ्काद्वारम् । साम्प्रतं काङ्क्षाद्वारम् । तत्र 'कंखा य' ति सूत्रावयवः । 'काङ्क्षा' आकाङ्क्षाऽन्यान्यदर्शनग्रहणरूपा, ज्ञानावरणादिकर्मोदयादनिश्चितचित्तस्यापरापरदर्शनोक्तानुष्ठानकरण-रूपेति भावः । चकारो देशसर्वकाङ्क्षाभेदसूचकः । तत्र देशकाङ्क्षा अन्यतरशाक्यादिदर्शनकाङ्क्षारूपा । सर्वकाङ्क्षा तु सर्वदर्शना-काङ्क्षणस्वभावेति भावः । तत्राप्यैहिकमेवोदाहरणम्—

[९. इन्द्रदत्तकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे बहुधण-जणसमिद्धं मालवनगरं नाम नगरं । तत्थ सयलपयापरिपालणपरो पयावऽक्कं तपरपक्खो पुहइपालो णाम राया । तस्स णियरूवोहामियमयणमहिला रइसुंदरी णाम अगमहिशी । इओ य तम्मि चेव नगरे बहुबुद्धिसंपन्नो दक्खिण्णमहोयही विणीओ य कयण्णुओ उत्तरपच्चुत्तरदाणणिउणो अत्थि इंददत्तो णाम कुलपुत्तगो । तस्स य अणुरत्ता भत्ता गुणवई णाम भारिया । तओ अन्नया कयाइ परियाणिआ तस्स य कुलपुत्तगस्स गुणे राइणा । पेसिओ य कस्सइ राइणो समीवे । समागओ य सविसेसं कज्जं साहिऊण । तओ 'साहु' ति करिय पेसेइ राया तं चेव सव्वेसु वि रायउलेसु । सो वि य रायाऽऽएसमवगणिउमचयन्तो काले अकाले वि वच्चइ । तओ अन्नया वरिसाकालसमये पेसिओ उज्जेणिं रायकज्जेणं । सा वि तस्स भारिया गेहेगदेसे देवालयं काऊण ठविऊण तत्थ जक्खपडिमं वंदणणहवण-बलिपूयाविहाणपुरस्सरं पइदिणमारहेऊण विण्णवेइ—

‘भयवं ! जक्ख ! महायस ! पंथे सेले णईएँ अडवीए । गाम-नगरा-ऽऽगराइसु रक्खेज्जसु मज्झ भत्तारं । १।

सव्वत्थ वि मह पइणो सन्निज्झं कुणसु जक्ख ! णिच्चं पि ।

पणिवइयवच्छल च्चिय हवंति तुम्हारिसा जेण' ॥२॥

१. ला० दढचित्तस्स य न सक्कि ॥ २. ला० खोभो ॥ ३. सं० वा० सु० निहाणा(णं) ॥ ४. ला० 'दसंसूचकः ॥ ५. ला० 'काङ्क्षणरूपा ॥ ६. ला० बहुजण-धणस' ॥ ७. ला० 'स्स य निअरू' ॥ ८. ला० 'ओ कय' ॥ ९. सं० वा० सु० य तस्साणुरत्ता ॥ १०. ला० 'स्स कुल' ॥ ११. ला० वि राया' ॥

जक्खो वि तीएँ बहुमाणभत्तिसारं सुणेत्तु विण्णत्तिं । धणियं परितुड्डमणो सण्णिहिओ चिट्ठए तस्स ॥३॥

सो वि उज्जेणीओ रज्जकज्जं काऊण जाव घरमागच्छइ तावंतरा गिरिणई । तीए य उत्तरणत्थं जाव ओइण्णो ताव उवरिवरिसियसमागयणईपूरेण वोढुमारद्धो । तओ चलंतमणिकुंडलेण दिप्पंतमउडमणिभासुरेण हारविरायंतवच्छत्थलाभोगेणं जक्खेणं करसंपुडे काऊण उत्तारिओ त्ति । उत्तारेऊण अदंसणीहूओ जक्खो । तं च सुविणयमिव मण्णमाणो गओ सणगरं । णिवेइयरायकज्जो य गओ सगेहं । कहियं च सव्वं सवित्थरं गुणवईए । तीए य जंपियं 'जक्खो सो, जओ हं तुज्झ गमणदिणाओ समारब्ध पइदिणं जक्खमाराहेमि' । तेण भणियं 'कत्थ सो जक्खो ?' । दंसिओ य तीए देवाले । तेण भणियं 'जइ एगस्स वि एत्तिओ पहावो ता सव्वदेवाणं पडिमाओ देवाले काऊण आरोहेहि' । तओ रुक्खाईणं हिट्ठाओ आणिऊण ठवियाओ देवाले सव्वदेवयाणं पडिमाओ । आराहिंत्ति य पइदिणं । अन्नया य समागओ पुणो वि पाउसो, अंधारियं गयणतलं तमालदलसामलेहिं जलदवलएहिं, कयंतजीह व्व चमक्कियाओ विज्जुलयाओ । एत्थंतरे पुणो वि पेरिओ सो रायकज्जेण । तओ दिट्ठभएणं भणिया भज्जा जहा 'सव्वदेवाणं विसेसेणं पूया-सक्काराइणा समाराहणं करेज्जसि' । एवं च अप्पाहिऊणं गओ । जाव समागच्छइ ताव तहेव समागओ णईपूरो । तेण य णीओ छज्जोयणमेत्तं भूमिं । तत्थ आउयसेसत्तणेण कहिंचि विलगो तीरे । समागओ य गेहं । भज्जाए उवरि कोवेणं धमधमंतो [? चिंतेइ] जहा 'ण कया होहिइ तीए पावाए देवयाणं पूया, जेण ण कयं केणावि मम सणाहत्तणं' । तओ भणिया सा तेण 'आ पावे ! देवयाणं पूयं ण करेसि ?' । तीए भणियं 'मा रूससु, जइ ण पत्तियसि ता णिरूवेहि गंतूणं सव्वे सविसेसं पूइए' । निरूवियं च जाव 'तहेव' त्ति ताहे कोवाभिभूओ कुहाडयं घेतूण 'सव्वे भंजेमि' त्ति परिणओ जाव घायं उप्पाडेइ ताव गहिओ पुव्वजक्खेण हत्थे, भणिओ य 'मा एवं करेहि, जया तुमं मं एणं पूयंतो तया हं निययाववायभीओ तुज्झ सया सन्निहिओ चेडंतो, सपयं पुण अम्हाणं जक्खोवेक्खा जाया' । तओ तेण तव्वयणपडिबोहिएण तमेणं वज्जिय सेसा सव्वे जहाऽऽणीयडाणेसु मुक्का ।

[इन्द्रदत्तकथानकं समाप्तम् । ९.]

यथा चैषानेकदेवाकाङ्क्षा तस्य दोषाय संवृत्ता, एवमियमपीति ।

गतमाकाङ्क्षाद्वारम् । साम्प्रतं विचिकित्साद्वारम् । तत्र 'विगिच्छ' त्ति सूत्रावयवः ।

१. ला० रायकज्जं ॥ २. ला० 'डभासु' ॥ ३. ला० 'ण उत्तारित्ता य अदंस' ॥ ४. सं० वा० सु० च सवित्थ' ॥ ५. ला० 'देवाणं' ॥ ६. सं० वा० सु० 'या समागओ पाउसो' ॥ ७. ला० '२ वि पुणो वि' ॥ ८. सं० वा० सु० वि भोणउ से पेसिओ राय' ॥ ९. ला० 'देवयाणं' ॥ १०. सं० वा० सु० एयं ॥ ११. ला० 'गयो' ॥ १२. ला० तत्थ यआ' ॥ १३. ला० कोहेण ॥ १४. ला० रूस, जइ ॥ १५. सं० वा० सु० सव्वं ॥ १६. सं० वा० सु० 'ण, भणि' ॥ १७. सं० वा० सु० करेह ॥ १८. ला० 'वेक्खी' ॥

‘विचिकित्सा’ आत्मानं प्रति फलाविश्वासरूपा चित्तविप्लुतिः ‘भवेयुर्ममानेनानुष्ठानेन स्वर्ग-मोक्षादयो न वा भवेयुः ?’ इति रूपा । विद्वज्जुगुप्सा वा विद्वांसः=मुनयस्तेषां जुगुप्सा=निन्देति । तत्रोभयस्वभावायामप्येकमेव कथानकमाख्यायते-

[१०. पृथ्वीसार-कीर्तिदेवयोः कथानकम्]

अत्थि इह जंबूद्वीवे महाविदेहम्भि सिरिउरं नाम नयरं, नयरगुणाणं णिवासठाणं व निरुवहयं । जं च जिणेंदवयणं व नेगम-संगह-ववहार-समद्वासियं पहाणायां च, गगणतलं व सूर-राय-मंगल-बुह-गुरु-कवि-हंस-सुयसमणियं चित्तोवसोहियं च, विण्हु व्व सुदरिसणाधारं लच्छीनिवासं च, गिरिवरो व्व वंससयसंजुयं सावयाउलं च, कोदंडं व सनिकेयणं सगुणं च । किं बहुणा ?

तं सुरनयरसमाणं पवरपुरं अरिकरिंदवणसीहो । भडचडगरपरिउत्तो पालइ सत्तुंजओ राया ॥१॥

जो य जणगो व्व पयापरिवालणोज्जओ, महाधणुधरो व्व सरलो, नवजोव्वणुद्धुरकामुउ व्व पियाभिलावी, तिकूडसेलो व्व निकलंको, महेसरो व्व सभूर्इ, सूरु व्व गोणायगो ति ।

किं बहुणा ? जो गुणगणणिप्फायणपच्चलो सुवित्तं व । तस्सत्थि पिया सोहणव्विया जयसिरी णाम

जा य हंसि व्व निम्मलोभयपक्खा, बाणगइ व्व उजुसहावा, सूरमुत्ति व्व सुवित्ता, सरयकालरयणि व्व सुनिम्मलणहा, कण्हगोणि व्व सुपया, वरसुत्तहारणिम्मियदेवकुलिय व्व सुजंघा, पव्वयमेहल व्व सुणियंबा, महाडइ व्व ससूयरा, तुंबवलि व्व सुनाहिया, पाउसलच्छि व्व सुपओहरा, कावोडि व्व सुवाहिया, पयापालणरवइभूइ व्व सुकरा, रामायणकह व्व ससुणीवा, जच्चसारिय व्व सुवयणा, महाधणसाहुवणियतणु व्व अहीणणासा, रविधय व्व सुनेत्ता, साविय व्व सुसवणा, आएज्जवयणगुरुमुत्ति व्व सुसीसा, बालिय व्व सुमुद्धय ति । ताणं च जम्मंतरो-वज्जियविसयसुहमणुहवंताणं वच्चए कालो ।

अन्नया य पसूया जयसिरी एगसमएण चैव पुत्तजुयलयं । समए य पइट्ठावियाइं ताण णामाइं पढमस्स पुहइसारो, बीयस्स कित्तिदेवो ति । सो य राया देवी य सावगाणि विसुद्धसम्मत्तसंजुत्ता-णुव्वय-धराणि । तओ ताणि ते पुत्ते पाडिंति जिणबिंव-गुरूणं पाएसु । ण य पडंति, बला पाडिज्जंता आरडंति । तओ पवड्डमाणा जाव जाया अट्टवारिसिया ताव सिक्खाविया बाहत्तरी कलाओ, ण य मणागं पि धम्मे पयट्ठंति । तओ चोइया जणएण जहा ‘करेह पुत्त ! तिकालं चेइयवंदणं, पज्जुवासेह साहुणो’ इच्चाइ । ण य किंचि पडिवज्जंति जाव जाया जोव्वणत्था । तओ अन्नया कयाइ कित्तिदेवस्स पुव्वकम्मदोसेणं जायं

१. वा० सु० च, जं च गगण, सं० प्रत्यादर्शो पाठोऽयं त्रुटितः ॥ २. वा० ‘यमंजुयं, सं० सु० प्रत्योः पाठत्रुटिः ॥ ३. ला० ‘रसरिच्छं ॥ ४. ला० ‘परिकिण्णो ॥ ५. ला० सुवन्नं ॥ ६. वा० सु० ‘यं । मयट्ठा’, सं० प्रतौ पाठभङ्गः ॥ ७. ला० ‘त्तरि ॥ ८. ला० नइ किंचि ॥ ९. ला० पुव्वकम्म ॥

अईवकिसं सरीरं सत्तिवियलं च जाव तिणं पि फुज्जीकाउं ण सक्केइ, गहिआं य महावेयणाए। समाणत्ता य रायणा वेज्जा जहा 'लहुं पउणीकरेह कुमारं' । समाढत्ता य विज्जेहिं किरिया । ण जाओ विसेसो । तओ पउत्ताणि मंत-तंत-जंताईणि, ऊसरवावियबीयं व ताणि वि जायाणि णिप्फलाणि । तओ भणिओ राइणा 'वच्छ ! विसमो ते वाहिवियारो, न गम्मो पुरिसयारस्स, ता करावेहि जिणाययणेसु महापूयाओ, पडिलाभेहि साहुणो, देहि दीणा-ऽणाहाईणं महादाणाइं, पडिवज्जसु सम्मत्तमूलाइं अणुव्वयाइं, करेहि जहासत्तीए तवं, भावेहि भावणाओ' । एवं भणिओ वि जाहे ण पडिवज्जइ ताहे चिंतिउं पयत्तो राया 'अहो ! गुरुकम्मयाए माहप्पं ! जेण आवइकाले वि चोइज्जंता वि एए न पयट्ठंति धम्मे ।

एत्थंतरम्मि समागंतूण विण्णत्तं कल्लाणदेवाहिहाणेण उज्जाणपालेण जहा 'देव ! वद्धाविज्जसि पीईए जओ समागओ इत्थ कुसुमाऽऽयरोज्जाणे करयलकलियकुवलयफलं व परिकलियसयलते लोक्कसमत्थपयत्थसत्थवित्थारपरमत्थवित्थारो अणे गसमणगणपरिवुडो देवदाणववंदिज्जमाणपयपंकओ संजमसिंहसूरी णाम केवली' । तव्वयणसवणाणंतरं च कयंबपुप्फं व संजायपयडपुलयकंटएण भणियं राइणा 'अरे ! लहुं पउणीकरेह सामग्गिं, जेण गच्छामो भगवओ वंदणत्थं' । संपाडिओ णरणाहाऽऽएसो महंतएहिं । गओ राया उज्जाणं । तिपयाहिणापुरस्सरं वंदिरुण उवविट्ठो सुद्धमहीवट्ठे । पत्थुयां य भगवया धम्मदेसणा । अवि य—

धम्मो सुहतरूमूलं धम्मो दुहसेलदलणदढकुलिसं । जहचिंतियऽत्थसंपाडणम्मि चिंतामणी धम्मो ॥३॥

सामीण परमसामी बंधूणं परमबंधवो धम्मो । मेत्ताण परममेत्तं संगामजयावहो धम्मो ॥४॥

तियसाहिवासगेहारोहणसोवाणपंतिया धम्मो । अपवग्गमग्गपट्टियजियाण वरसंदणो धम्मो ॥५॥

किं बहुणा ? पडिवज्जह धम्मं जिणइंददेसियमुयारं । भो भो ! जइ णिव्विण्णा भवभमणपरंपरदुहाओ । ६।

तओ कहंतरं णारुण पुच्छियं राइणा 'भगवं ! किं मम पुत्ता अणेगहा भण्णमाणा वि धम्मं ण पडिवज्जंति?, कित्तिदेवस्स य किं महंतो वाहिवियारो ? । भगवया भणियं 'अत्थि इत्थ कारणं, किंतु आणेह कुमारे मम सयासे, जेण साहेमि सव्वं सवित्थरं' । तओ बीयदिणे माया-पीईहिं उवरोहिरुण णीया ते गुरुसमीवं, निसण्णा य भयवओ पायमूले । तओ पुणो वि समाढत्तं भगवया धम्मकहा । अवि य—

इत्थं संसारकंतारे सरंताण सरीरिणं । सया वि सुलहं णेय सम्मत्तं सुहकारणं ॥७॥

१. वा० 'ओ महा' । सं० सु० प्रत्योः पाठभङ्गः ॥ २. ला० १ 'दाणं' ॥ ३. वा० सु० तओ । सं० प्रती पाठभ्रंशः ॥ ४. ला० पवत्तो ॥ ५. ला० 'म्मि य समा' ॥ ६. ला० 'पालएणं' ॥ ७. सं० वा० सु० 'मत्थो अणे' ॥ ८. ला० 'णपायपं' ॥ ९. ला० सूरिनामो ॥ १०. ला० मंतीहिं ॥ ११. ला० 'ओ य राया' ॥ १२. ला० 'या भग' ॥ १३. ला० जिणयंद ॥ १४. सं० वा० सु० 'त्ता धम्मकहा भगवया । अ' ॥

कयाइ कम्मविवरेण तं लद्धूण वि पाणिणो । अन्नाणमोहमूढप्पा विराहेति तयं पुणो ॥८॥
 विराहिण तेणेह संकाईएहिं जंतुणो । ण लहंति पुणो बोहिं दुहपव्वयदारणिं ॥९॥
 सारीर-माणसाइं च ते दुक्खाइं लहंति य । तिक्खाइं घोररूवाइं उवमा जाण ण विज्जई ॥१०॥
 सुणेह एत्थ अत्थम्मि कहेज्जंतं कहाणयं । मए, संजायए जेणं दढो तुम्हाण पच्चओ ॥११॥

तओ भणियं राइणा 'कहेह भयवं ! दत्तावहाणा अम्हे' । भयवया भणियं-

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे इहेव सलिलावईविजए तिलयउरं णाम णगरं । तत्थ य सूरप्पहो णाम राया । चंदसिरी से महादेवी । इओ य तम्मि णयरे अत्थि सयलनगरसेट्टिवरिड्डो णागसेट्टी । णागसिरी णाम से भारिया । ताण य सयलिंदियाणंदमणहरं पंचप्पयारं विसयसुहमणुहवंताणं वच्चए कालो । अन्नया य पहाणसुमिणसूइयं जायं णागसिरीए पुत्तजुयलं । वद्धाविओ य सेट्टी पियंकराहिहाणाए दासचेडीए । तीए पारिओसियं दाऊण कयं सेट्टिणा वद्धावणयं । णिवत्तियबारसाहे पइट्ठावियाइं पुत्ताण णामाइं वीरचंद सूरचंद ति । पंचधावीपरिणहिया य जाया अट्टवारिसिया । गाहियाओ कलाओ, जाव पत्ता णवजोव्वणं । परिणाविया य तयणुरूवाओ भारियाओ । ताहि य समं उदारभोगे भुंजमाणा चिड्ढंति ।

अन्नया कयाई जणयसमेया समारूढा पासायावलोयणे । जाव णगरसोहं णियच्छंति ताव ण्हायं सियनेवत्थनेवत्थियं सव्वालंकारभूसियं हत्थगयपुप्फाइपूओवयारं एगदिसिं निग्गच्छमाणं पेच्छंति पभूयजणसमुदायं । तं च दट्ठूण पुच्छियं तेहिं 'किमज्ज णयरे कोइ महूसवो जेणेस लोगो वच्चइ ?' । तओ विण्णायवुत्तंतेण कहियमेगेण पुरिसेण जहा 'ण इत्थ महूसवो किंतु अइसयणाणी को वि समागओ उज्जाणे, तस्स वंदणत्थमेस लोगो वच्चइ' । एयं सोऊण भणियं तेहिं 'जइ एवं तो पउणीकरेह रहवरे, जेण अम्हे वि गच्छामो' । वयणाणंतरमेव पउणीकयं सव्वं निउत्तपुरिसेहिं । तओ महाविभूर्इए गया उज्जाणं जाव दिट्ठो धम्मो व मुत्तिमंतो चउणाणाइसयसंपण्णो अणेयजण-पज्जुवासेज्जमाणचरणसरोरुहो विसुद्धधम्मं उवइसंतो भगवं मुणिचंदसूरी । वंदिओ भावसारं । णिसण्णा य जहोचिए पएसे । एत्थंतरम्मि य भणियं भगवया-

धम्म-ऽत्थ-काम-मोक्खा चत्तारि हवंति इत्थ पुरिसत्था ।

सव्वाण ताण पवरो मोक्खो चिय होइ णायव्वो ॥१२॥

तस्स णिमित्तं जत्तो कायव्वो तं, तहा मुणेयव्वं । सम्मत्त-णाण-चारित्तलक्खणं बुद्धिमंतंतेहिं ॥१३॥

१. ला० कहेहि ॥ २. ला० ०लनर-सेट्टिवरिड्डो वसिड्डो नाम सिट्ठी । नागसिरी ॥ ३. सं० वा० सु० 'णयसू' ॥ ४. सं० वा० सु० य तीए सेट्टी ॥ ५. सं० वा० सु० 'ए । पारि' ॥ ६. ला० 'वत्ते य' ॥ ७. ला० 'या य क' ॥ ८. ला० 'रवि भू' ॥ ९. ला० को वि ॥ १०. ला० गच्छइ ॥ ११. ला० विना 'मोक्खे' ॥ १२. ला० तिहा ॥

जिणभर्णियपयत्थाणं जं सदहणं तयं तु संमत्तं । णाणमवबोहरूवं, फरिसणरूवं तु चारित्तं ॥१४॥

उक्तं च-

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीव-षट्काय-लेश्याः,
पञ्चान्ये चास्तिकाया व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्रभेदाः ।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्विरीशैः,
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः ॥४१॥

ता तत्थ कुणह जत्तं जइ इच्छह मोक्खसोक्खसंपत्तिं ।

भो भव्वजणा ! सिग्घं किमेत्थ बहुणा पलत्तेणं ? ॥१५॥

इय गुरुवयणं सोउं जणयसमेया कुमारया दो वि । पडिवज्जिऊण सावगधम्मं निययं गया गेहं ॥१६॥

तओ सावयधम्मे महंतं पयत्तमुव्वहंताणं वच्चए कालो । अन्नया असुभकम्मोदयवसेणं वीरचंदस्स जाया वितिगिच्छा । चिंतियं च तेण जहा 'जिणवंदण-जइपज्जुवासण-सामाइयकरणाइकिरियाए करेमि सरीरपरिकिलेसं, तहा जिणपूयण-मुणिपडिलाहण-दीणाइदाणाईसु य विहेमि महंतमत्थव्वयं, अत्थि य निस्संदिद्धमेयं जमरिहंताणं भगवंताणं आणाए पयट्ठमाणं जायंति सण-मोक्खा, किंतु मम भविस्संति किं वा नो ? इति न याणीयइ' । विचिगिच्छंतो कालमइवाहेइ । सूरचंदस्स वि अन्नया कयाइ गेहंगणत्थस्स समागयं विविहतवसोसियसरीरत्तणओ किसं धम्मणीसन्निहं निम्मंससोणियं किडिकिडियाभूयं अट्ठिपंजरावसेसं साहुजुगलयं । तं च दट्ठण तस्स जाया विदुगुंछा, चितियं च णेण जहा 'परस्स पीडाण कायव्वा एवमप्पणो वि ण जुत्ता, संति य अण्णाणि वि सुहसेवणाणि दाण-दयाईणि मोक्खसाहणाणुट्ठाणाणि, ता तेहिं वि य मोक्खो भविस्सइ, दंसिओ य अन्नेहिं वि दरिसणेहिं सुकरेण चेवाणुट्ठाणेणं मोक्खो, ता भगवं पि तहा चेव जइ उवइसंतो ता किमेत्थासोहणं हुंतं ?' । एवं विइगिच्छं कुणंताणं समागओ अहाउयकालो । तओ वितिगिच्छादोसेण दूसेऊण सम्मत्तं णिबंधिऊणाऽबोहिलाभाइपुव्वयं कम्मं मरेऊण उप्पण्णा वंतरसुरेसु । सेट्ठी वि कालं काऊण गओ सोहम्मे ।

तत्तो य चविऊण उप्पण्णो सौहंजणीए णगरीए सिरिदेवस्स सिट्ठिणो जसोहराए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तताए । जाओ य कालक्कमेणं । कयं से णामं सीहो ति । कलाकलावाईहि य परं

१. ला० 'णिगाणऽत्थाणं' ॥ २. ला० 'या य अ' ॥ ३. ला० 'धमणिसंतयं नि' ॥ ४. सं० वा० सु० 'यं किडियाभू' ॥ ५. ला० 'जुअलं । तं' ॥ ६. सं० वा० सु० 'वितिगिच्छा' ॥ ७. ला० 'वणिज्जाणि' ॥ ८. ला० 'णाणि ट्ठाणाणि' ॥ ९. ला० 'तेहि चेव मो' ॥ १०. ला० 'वं च वि' ॥ ११. ला० 'विइगिच्छा' ॥ १२. सं० वा० सु० 'ऊणोप्पण्णो' ॥ १३. सं० वा० सु० 'सौहंजणीए' ॥

पगरिसं उव्वहंतो पत्तो जोव्वणं । परिणाविओ य समाणकुल-सील-रूव-जोव्वण-लावणसंपण्णं
रूविणीणाम कण्णयं । तीए य सह विसेसेण सयलिंदियाणंदमणहरं दोगुंदुगदेव व्व
विसयसुहमणुहवंतो गमेइ कालं । अन्नया य सो पाउससिरिसोहासमुदयावलोयणत्थं समारूढो
पासायसिहरं । सा वि य रूविणी तयणुमणेण चेव समारूहंती अंतराले चेव चड ति विज्जूए
णिवडिऊण पंचत्तं उवणीया । जाओ य हाहारवो । तओ सो सीहो तं तारिसं दड्ढूण
विलविउमाढत्तो । अवि य—

हा हा पिये ! सुरूवे ! मह हिययाणंददायगे ! सुहो ! ।

सारयपव्वणिससिसमवयणे ! कंदोद्वदलणयणे ! ॥१७॥

मिउ-सहिण-कसिण-कुंचिय-दीहर-सुसिणिद्धकुंतलकलावे ! ।

कत्थ गया मं मोत्तुं दुहियमणाहं गुणणिहाणे ! ॥१८॥

एत्थंतरम्मि णिव्वत्तियं सयणेहिं सयलं मयगकिच्चं । तयवसाणे य जाव सो सोगाइण्णो
चिड्डइ ताव ओयरिओ णहयलाओ एगो चारणरिसी । तं च दड्ढूण अब्भुड्ढिओ णेण । दिण्णमासणं ।
उवविड्डो य भगवं । पत्थुया धम्मदेसणाछलेण तस्साणुसट्ठी जहा-असारो एस संसारो जओ वियइ
सच्छंदप्पयारं इत्थ मच्चू । भणियं च—

हंदि ! जराधणुहत्थो वाहिसयविइण्णसायगो एइ ।

माणुसमिगजूहवहं विहाणवाहो करेमाणो ॥१९॥

ण गणेइ पच्चवायं ण य पडियारं चिराणुवत्तिं वा ।

सच्छंदं हणइ जिए मच्चू सीहो व्व हरिणउले ॥२०॥

बहुरोगफडाभासुरवसणविसाणुगयदीहदाढस्स ।

कत्थ गओ वा चुक्कइ कयंतकण्हाऽहिपोयस्स ? ॥२१॥

न वि जुद्धं न पलायं कयंतहत्थिम्मि अग्घइ भयं वा ।

ण य से दीसइ हत्थो गेण्हइ य घणं अमोक्खाए ॥२२॥

जह वा लुणाइ, सस्साइं कासगो परिणयाइं कालेण ।

इय भूयाइं कयंतो लुणाइ जायाइं जायाइं ॥२३॥

१. ला० 'णवण(ण)-संप' ॥ २. ला० 'देवो व' ॥ ३. सं० वा० सु० 'मुदाया' ॥ ४. सं० वा०
सु० 'णी चेव तयणुमणेण समा' ॥ ५. ला० 'रा चेव' ॥ ६. सं० वा० सु० 'तयाव' ॥ ७. ला० 'गाउण्णो' ॥
८. ला० 'व य ओ' ॥ ९. सं० वा० सु० 'दाणस्स' ॥ १०. ला० 'इ सासाइं कासवो' ॥

ता मा कुणसु विसायं सुंदर ! एसा अणिच्चया सरिसा । णं हु मच्चुदाढलीढं इंदो वि पहू णियत्तेउं । १९।

किंच-

संपत्थियाण परलोगमेगसत्थेण सत्थियाणं व । जइ णाम कोइ पुरओं वच्चइ तो किं थ सोएण ? ॥२०॥
कीरइ य णाम सोगो मओ य जइ तेण वल्लहो एइ । मरमाणो य धरिज्जइ, अह ण, तओ किं थ सोगेण ? ॥२१॥
इय उज्झिऊण सोगं सुंदर ! धम्ममि उज्जमं कुणसु । जेण इमं दुहपउरं लंघसि संसारकंतारं ॥२२॥
संपेसिओ य अहयं सुगहियणामेण धम्मघोसेण । तुह वयदाणमिच्चं केवलणाणेण णाऊणा ॥२३॥
तामा कुणसु विलंबं, गेणहसु मुणिसेवियं इमं दिक्खं । सयलदुहाचलचयचूरणम्मि बलसूयण इत्थं व ॥२४॥

इमं च सोऊण संजायचरणपरिणामेण मोयावेऊण जणणि-जणए गहिया तस्स अंतिए दिक्खा । गओ य तेण सह गुरुसमीवे । गहिया य तेण सिक्खा । जाओ य गीयत्थो । णिवेसिओ य गुरुणा णिययपए । सुक्कज्झाणाणलेण य डहेऊण घणघायकम्मधेण उप्पाडियं केवलणाणं । विहरंतो य पत्तो इत्थ सो यअहयं ति । ते य दो वि वीरचंद-सूरचंदा वंतरेहिंतो चइऊणोप्पण इत्थेव सिरिउरणये ।

जाव इत्तियं जंपइ भगवं ताव मुच्छावसेण दो वि कुमारया पडिया धरणिवट्टे । तओ सिता चंदणजलेण, वीड्या वत्थंचलाइणा, खणंतरेण य जाया सत्था । पुच्छिया य राइणा 'वच्छा ! किमेयं ?' ति । कुमारएहिं भणियं 'ताय ! अइदुरंतं महामोहविलसियं, जओ अम्हाण पडिबोहणत्थं अम्ह चेव संतियं भगवया इमं चरियमाइक्खियं, पच्चक्खीभूयं च सव्वमम्हाणं जाइस्सराणाओ ।

अहह परलोयचित्तियदुक्कडकम्मस्स इत्तिओ जाओ ।

विरसो अम्ह विवागो चित्तिज्जंतो वि दुव्विसहो ॥२५॥

अहवा अम्ह सरिच्छो पाविट्ठो एत्थ णत्थि को वि जिओ ।

सव्वण्णुणो वि वयणे जेहिं विगिच्छा कया एवं ॥२६॥

अह भणइ कित्तिदेवो 'महमोहविमोहिण ताय ! मए ।

विदुगुंछाए अप्पा कह खेतो दुक्खमज्झम्मि ? ॥२७॥

णिस्संग-णिम्ममाणं णिरहंकाराण गुणसमिद्धाणं । विदुगुंछाए अहवा कित्तियमैयं फलं ताय ! ? ॥२८॥

जम्हा विदुगुंछाए बहुविहदुक्खाणि घोररूवाणि । अणुहवमाणा जीवा भमंति संसारकंतारे ॥२९॥

१. ला० नहि ॥ २. ला० दहिऊण घणघाइकम्मिंथ ॥ ३. ला० अहं ति ॥ ४. ला० चविऊ ॥ ५. ला० वच्छ ! ॥ ६. ला० 'हूयं' ॥ ७. ला० परिचित्तियस्स वि, दुक्क ॥ ८. ला० 'टो नत्थि एत्थ ॥ ९. ला० दुहसमुहम्मि ॥ १०. सं० वा० सु० 'मेत्तं' ॥

ता संपाडेस्सामो संपयं भयवओ तुम्हाणं च जमभिमयं' ति । राइणा भणियं 'जाय ! धम्मपडिवत्तिकरणमेव अम्हाणमभिमयं' । तओ वंदिऊण भयवंतं विण्णत्तं तेहिं 'भगवं ! आइससु संपयं जमम्हेहिं कायव्वं' । भगवया वि तज्जोगयं णाऊण उवइट्ठो तेसिं सावगधम्मो । पडिवण्णो य तेहिं भावसारं । एत्थंतरम्मि य करकमलमउलं उत्तमंगे काऊण विण्णत्तं णरणाहेण 'भयवं ! जाव कुमारे रज्जे अहिसिंचामि ताव तुब्भं पायमूले सव्वसंगपरिच्चाएण सफलीकरेस्सामि करिक्कणसरिसं मणुयत्तणं' । भगवया भणियं 'देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेज्जासि' । तओ 'इच्छं' ति भणिऊण गओ णरवई णियोहे । आपुच्छेऊण मंति-सामंताइणो तयणुमएण य कओ पुहइसारस्स रज्जाभिसेओ, कित्तिदेवस्स य भगवओ पहावेण धम्मसामत्थेण य अवगयरोगस्स जुवरज्जाभिसेओ । अण्णं पि सव्वं रज्जसुत्थं काऊण महाविभूर्इए निक्खंतो राया । पालिऊण य अहाउयं जाव णिक्कलंकं सामण्णं अंतगडकेवली होऊण गओ सव्वदुक्खविमोक्खं मोक्खं ति ।

इयरे वि जाया पयंडसासणा महारायाणो । तओ तिवग्गसंपायणपराणं रज्जसुहमणुहवंताणं वच्चए कालो । अन्नया य राईए चरमजामेसु दक्खजागरियं जागरमाणाणं जाया चिंता जहा 'जम्मंतरकयविगिंछाकम्मविवागं दट्ठण वि हा ! कहमियाणिं अणेगावायकारए दुग्गइगमणपउणमगे आयास-किलेसावासे पमायपरममित्ते असुहज्जवसाणणिबन्धणे रज्जे गिद्धिं काऊण ठिया एत्तिंयं कालं ?, ता संपयं पि भयवओ पायमूले गहेऊण दिक्खं करेमो संजमाणुट्ठाणे उज्जमं' । एयावसरम्मि य ताण परिपागसमयं णाऊण समवसरिओ भगवं संजमसिं हसूरी । तप्पउत्तिवियाणयमुहाओ य णाऊण भगवओ समागमणं हरिसभरणिब्भरा गया भगवओ वंदणत्थं । वंदेऊण य भावसारं उवविट्ठा तदंतिए । निसुओ य धम्मो । तओ गुरुणो णिययाभिप्पायं णिवेइऊण पविट्ठा णगरे । ठाविऊण णियपुत्ते रज्जम्मि पहाणपरियणेणाणुगम्ममाणा पव्वइया गुरूसमीवं । संवेगाइसयाओ य काऊण तव-संजमाणुट्ठाणैसु, य उज्जमं, पालिऊण य अहाउयं जाव अक्खलियं सामण्णं, कालमासे कालं काऊण उववण्णा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे तेत्तीससागरोवमाऊ देवा । तओ चइऊण तम्मि चेव विजए रायपुरे णगरे रायपुत्ता होऊण सिद्ध ति ।

[पृथ्वीसार-कीर्तिदेवयोः कथानकं समाप्तम् । १०.]

एवं विकित्सा विद्वज्जुगुप्सा वा सम्यक्त्वं दूषयति, अनर्थनिबन्धना चासौ, अतः परिहार्येति ।

१. ला० 'यं जाव जाइ ! ध' ॥ २. ला० 'यं गइं नाऊण ॥ ३. ला० 'ण्णवंचलं माणुसत्तणं ॥ ४. ला० 'गेहं, आपुच्छिऊण य मंति' ॥ ५. ला० 'वि ॥ ६. ला० 'तो ॥ पालि' ॥ ७. सं० वा० सु० 'क्खं ति' ॥ ८. ला० 'परं र' ॥ ९. ला० अ ॥ १०. ला० 'मसूरी ॥ ११. ला० 'समीवे ॥ १२. ला० 'सु उज्ज' ॥ १३. ला० 'तत्तो चविऊ' ॥ १४. ला० 'न्धनं ॥

गतं तृतीयदूषणम् । साम्प्रतं चतुर्थम् । तत्र च 'कुतित्थियाणं पयडा पसंस' ति सूत्रावयवः । कुतीर्थिकाः=सौगतादयस्तेषाम् । 'प्रकटा' प्रकाशा प्रभूतजनप्रत्यक्षेति भावः । 'प्रशंसा' स्तुतिस्तदुणोत्कीर्तनरूपा । इयं तु प्रच्छन्नापि विधीयमानात्मनः सम्यक्त्वं दूषयति । बहुलोकसमक्षं तु क्रियमाणान्येषामपि मिथ्यात्वस्थिरीकरणेन महादोषकरीत्येतस्यार्थस्य ज्ञापनार्थं प्रकटविशेषणोपादानम् । यत उक्तं निशीथे—

इयरह वि ताव दिप्पइ मिच्छत्तं अप्पणो सहावेण ।

किं पुण जो उववूहइ साहू अजयाण मज्झम्मि ? ॥४७॥

अत्र च व्यत्ययेनोदाहरणं सुलसा । सुलसया यथा कुतीर्थिकानां प्रशंसा न कृता, एवमन्येनापि न कार्येति । कथानकं प्राग् भूषणद्वारे कथितमिति ।

उक्तं चतुर्थं दूषणम् । सम्प्रति पञ्चमम् । तत्र च 'अभिक्षणं संथवणं च तेसिं' ति सूत्रावयवः । 'अभीक्षणं' वारंवारम् । 'संस्तवनं' परिचयकरणम् । 'तेषां' कुतीर्थिकानाम् । कथञ्चिद्राजाभियोगादिना सकृत्तत्संस्तवकरणेऽपि न तस्य दूषणत्वमिति ज्ञापनार्थमभीक्षणग्रहणम् । परमिदमपि महतेऽनर्थायेति यत्नतो वर्ज्यम् । अत्र च कथानकम्—

[११. जिनदासकथानकम्]

अत्थित्थ जंबुदीवे भारह्वेत्तस्स मज्झखंडम्मि । सुणिविड्ढगामगोद्धो तडडिओ णीरणाहस्स ॥१॥

बहुदुद्धधट्टपरड्डरायनिन्नड्डकड्डभयहिड्डो । पत्तड्डविसिड्डजणो लड्डो रड्डाण सोरड्डो ॥२॥

तत्थ य महाणरिंदो व्व बहुसरणं, सूरपुरिससत्तुकुलं व बहुविहवं, चित्तयम्मं व बहुवण्णयं, दारिदुकुलं व बहुपयं, समुद्धो व बहुवाणियं, गंधव्वं व बहुसरं, कुणरिंदो व्व बहुभंडं, पलयकालसमओ व्व बहुसूरं, अत्थि उज्जिंतसेलतलवड्डठियं गिरिणयरं णाम णगरं । तहिं च,

विण्णायणवपयत्थो सुपत्त-दीणाइदाणवइयड्डत्थो । भावियभावणसत्थो सावयकिरीयाएँ सुपसत्थो ॥३॥

वज्जियकुस्सुइसत्थो अणुवय-सिक्खावयाइणियमत्थो । पालियसिड्डावत्थो जाणियसंसारभावत्थो ॥४॥

पडओ व्व गुणावासो, अदिण्णपमायसत्तुअवगासो ।

जिणआणाकयवासो परिहरियणियाणया-ऽऽसंसो ॥५॥

कयमिच्छत्तविणासो सिद्धंतस्सवणजणियउल्लासो ।

दुक्खियसत्ताऽऽसासो सुसावगो अत्थि जिणदासो ॥६॥

१. सं० वा० सु० 'णं सुलसया ॥ २. ला० 'सा, यथा सुलसया कुतीर्थिक प्रशंसा ॥ ३. सं० वा० सु० सकृत्सं' ॥ ४. ला० 'हवासस्स ॥ ५. ला० दरिह' ॥ ६. सं० वा० सु० बहुपाणियं ॥ ७. ला० 'इयत्थो ॥

सौ अन्नया कयाइ संजाए दुब्भिकखे अणिव्वहंतो सत्थेण सह पट्टिओ उज्जेणिं । अंतराले य कहींचि पमायजोगओ भोलिओ सत्थस्स । संबलयं पि सत्थेण चेव सह गयं । तओ अण्णं तहाविहं सत्थमलहंतो मिलिओ भिक्खुसत्थस्स । भणिओ य भिक्खूहिं 'जइ अम्हसंतियं संबलपोट्टलियं वहेसि तो ते भोयणं पयच्छामो' । तओ कंतारवित्तिछिंडियं चित्ते परिभाविऊण वहिउमाढतो । दिंति य ते सिणिद्धं मोयगाइभोयणं, जओ एवंविहं चेव ते भुंजंति । उक्तं च नास्तिकमतानुसारिभिः [ग्रन्थाग्रम् २०००]—

मृद्वी शय्या प्रातरुत्थाय पेया, भक्तं मध्ये पानकं चाऽपराह्णे ।

द्राक्षा खण्डं शर्करा चार्धरात्रे, मोक्षश्चान्ते शाक्यसिंहेन दृष्टः ॥४८॥

तहा—

मणुण्णं भोयणं भोच्चा मणुण्णं सयणासणं ।

मणुण्णंसि अगारंसि, मणुण्णं झायए मुणी ॥४९॥

अन्नया य तेण सिणिद्धभोयणेण तस्स अजीरमाणेण जाया विसूइया, पाउब्भूया महावेयणा । अडवीए य तहाविहपडियाराभावाओ अच्चंतं पीडेज्जमाणो 'आगाढं' ति परिकलिय इयपलियंकासणो भणिउमाढतो, अवि य—

सिरिअरहंताण णमो, सिद्धाण णमो, णमो गणहराणं । उवझायाणं च णमो, णमो सया सव्वसाहूणं ॥७॥

अरहंत-सिद्ध-साहू केवलिपरिभासिओ तहा धम्मो । एए हवंतु निययं चत्तारि वि मंगलं मज्झ ॥८॥

एए च्विय सव्वस्स वि भुवणस्स य उत्तमा अओ चेव । एएसिं चिय सरणं तिविहेण उवगओ इण्हिं ॥९॥

हिंसा-ऽलिय-चोरिका-मेहुण्ण-परिगहं तहा देहं । पच्चक्खामि य सव्वं तिविहेणाऽऽहारणामं च ॥१०॥

एवं च णमोक्कारं सुमरंतो अणसणं विहेऊण । चइऊण पूइदेहं सोहम्मे सुरवरो जाओ ॥११॥

अइभासुरे विमाणे अन्तमुहुत्तेण चारुरूवधरो । उट्टइ सयणेज्जाओ पुलइंतो दिव्वदेवेइं ॥१२॥

तो किंकरजयसदं सोऊणं चिंतिउं समाढतो । 'किं कयमण्णभवम्मी पत्ता जेणेरिसा रिद्धी ?' ॥१३॥

तओ ओहिणाणेण जाव गिरूवइ ताव पेच्छइ करुणापवण्णेहिं भिक्खूहिं नियायारं काऊण रत्तचीवरेहिं वेढिऊण एणंते परिठवियं णियस्सरीरं । तओ अहिणवुप्पणत्तणेण अव्वत्तत्तणओ ओहिनाणस्स चितिउमाढतो 'अहो ! अहं भिक्खू आसि, जओ दीसइ रत्तंवरवेढियं मम सरीरयं, ता

१. ला० सो य अ ॥ २. सं० वा० सु० च ॥ ३. ला० 'लयं (य) पोट्टलियं ॥ ४. ला० च तत्समयानुसारिभिः ॥ ५. ला० मध्ये भक्तं पा ॥ ६. सं० वा० सु० उवज्झया ॥ ७. ला० वि लोगस्स विउत्त ॥ ८. ला० 'सरीरयं ॥

महापभावं खु एयं बुद्धदरिसणं जप्पभावेण एरिसो जाओ म्हि, ता करेमि संपयं भिक्खूण भत्तिं' ति । संपहारिऊण समागओ उज्जेणिं । वंदिया भिक्खुणो । विहारमज्झट्टियाण य ललियसयलाभरणविभूसिएणं हत्थेण परिवेसइ देवणिम्मियं मणोहराहारं दिणे दिणे । जाओ बुद्धसासणस्स वण्णवाओ 'अहो ! जयउ बुद्धदरिसणं जस्सेरिसो पहावो' । धणियं मोहाविज्जंति सावया । इत्थंतरम्मि य अहाविहारेणं विहरमाणो समागओ धम्मघोसाहिहाणो सूरी । तव्वंदणणिमित्तं च गया सावगा । वंदिऊण य साहिओ सव्वो वुत्तंतो । विण्णत्तं च जहा-

तुब्भेहिं वि नाहेहिं जइ एवं पवयणं जिणिंदाण । ओहामिज्जइ धणियं, ता संपइ कस्स साहेमो ? ॥१४॥
तां तह करेहि भयवं ! जिणसासणउण्णइ जहा होइ । तुब्भे मुत्तूण जओ न एयकज्जकखमो अण्णो' ॥१५॥

तओ सूरीहिं सुओवओगपुव्वयं जाणेऊण तस्सरूवं पेसिओ एगो साहुसंघाडगो, भणिओ य जयाभिक्खुणो तुम्हं तेण हत्थेण भत्तं पयच्छावेंति तथा तुब्भे तं हत्थं हत्थेण गहिऊण नमोक्कारं पढित्ता एवं भणेज्जह 'बुज्झ गुज्झगा ! बुज्झ, मा मुज्झ' । 'इच्छं' ति भणिऊण साहुणो गया बुद्धविहारं । ते वि भिक्खुणो साहुणो इंते दडूण इड्ढीगारवेण सम्मुहं गंतूण भणंति 'एह एह जेण तुब्भं पि देवणिम्मियमाहारं पयच्छामो' । साहुणो वि गया जत्थ सो हत्थो परिवेसइ । भिक्खुवयणेण जाव साहूणं पि दाउमाढत्तो ताव साहूहिं णियहत्थेण गहेऊण नमोक्कारपढणपुव्वयं भणिओ 'बुज्झ गुज्झगा ! बुज्झ, मा मुज्झ' । तं च सोऊण जाव ओहिणाणेण सम्ममाभोगेइ ताव सम्मं वियाणिऊण णियसरूवं पडिबुद्धो, मिच्छादुक्कडं दाऊण णिययरूवेण साहुणो वंदेत्ता, 'इच्छामो अणुसट्ठिं' ति भणेत्ता, अट्ठहासं मोत्तूण, गओ गुरुसमीवं । तओ य—

मउडविराइयसीसो मणिकुंडलजुयलघट्टगंडयलो । हार-ऽद्धहार-तिसरय-पालंबोत्थइयवच्छयलो ॥१६॥

वरकडय-तुडियभूसियवेल्लहलोल्विल्लमाणभुयजुयलो ।

कणयमयमुदियप्पहपिंकीकयकोमलगुलिओ ॥१७॥

कलकणिरकिंकिणीजालकलियरयरहियदेवदूसधरो ।

भूलुलियमउलिमालो पणमेत्ता सूरिपयकमले ॥१८॥

करकमलमउलमउलं सिरम्मि रइऊण जंपई तो सो । 'सम्मं अणुणहीओ भगवं ! तुब्भेहिं अज्जाहं ॥१९॥

संसारपारवारे अणोरपारम्मि घोरदुहपउरे । मिच्छत्तमोहियमई निवडंतो अन्नहा णिययं' ॥२०॥

इय भणिय गओ जिणमंदिरेसु काऊण तत्थ महिमाओ । भत्तिभरणिभरंगो उव्वेल्लभुओ पणच्चेइ ॥२१॥

१. सं वा० सु० 'यं (भि) क्खुदरि' ॥ २. ला० व्वो वि वुत्तं ॥ ३. सं० वा० सु० प्रतिलेखकैरस्या गाथायाः पादत्रयं पूर्वस्मात् प्रत्यादर्शान्नोपलब्धम्, तत्प्रमाणा पङ्क्ति स्व-स्वपुस्तके रिक्ता मुक्ता ॥ ४. ला० तो ॥ ५. सं० वा० सु० एहि एहि ॥ ६. ला० 'ण य जाव ॥ ७. सं० वा० सु० 'णमाभो' ॥ ८. ला० नियरू ॥

जंपइ य लोयपुरओ 'एसो जिणइंददेसिओ धम्मो । संसारोत्तरणसहो अवंझबीयं सिवतरुस्स ॥२२॥
ता भो ! करेह जत्तं, इत्थेव य, किं व बहुपलत्तेण ?' । ततो बहुलोगेहिं पडिवण्णं जिणमयं तइया ॥ २३॥
एवं च वण्णवायं काऊणं सासणस्स सो तियसो । उप्पइय णहयलेणं पतो तियसालयं ज्ञत्ति ॥२४॥

तम्हा आईओ च्विय ण कायव्वो परपासंडसंथवो इति—

[जिनदासकथानकं समाप्तम् । ११]

गतं पञ्चमं दूषणम् । एतानि च दर्शनं दूषयन्ति । यत आह 'दूसंति सम्मत्तमिमे हु दोस' ति सूत्रा-
वयवः । 'दूषयन्ति' मलिनीकुर्वन्ति सम्यक्त्वम् । 'एते' पूर्वोक्ताः । 'हुः' पूरणे । 'दोषाः' दूषणानीति
वृत्तार्थः ॥१९॥

उक्तं मूलद्वारवृत्ते दूषणद्वारम् । सम्प्रति लिङ्गद्वारोपदर्शनार्थं वृत्तमाह—

सुहावहा कम्मखण्ण खंती, संवेग णिव्वेय तहाऽणुकंपा ।

अत्थित्तभावेण समं जिणिंदा, सम्मत्तलिंगाइमुदाहरंति ॥१०॥

'सुहावहा कम्मखण्ण खंती' ति 'सुखावहा' शर्मोत्पादिका, 'कर्मक्षयेण' तदावरणविनाशेन,
'क्षान्तिः' उपशमरूपा, सम्यक्त्वलिङ्गं भवति । उक्तं च—

पयईए णाऊणं कम्माणं वा विवागमसुहं ति ।

अवरद्धे वि ण कुप्पइ उवसमओ सव्वकालं पि ॥५०॥

'प्रकृत्या' सम्यक्त्वानुवेदकजीवस्वभावेन । 'कर्मणां' कषायनिबन्धनानाम् । अशुभविपाकं
यथा-कषायाविष्टोऽन्तर्मुहूर्तेन यत् कर्म बध्नाति तदनेकाभिः सागरोपमकोटीकोटीभिर्दुःखेन वेदयतीत्येवं
ज्ञात्वा । अत्र च सुखावहत्वविशेषणं क्षान्तेर्निःशेषगुणत्वाधारत्वोपलक्षणार्थमुक्तम् । उक्तं च—

क्षान्तिरेव महादानं क्षान्तिरेव महातपः । क्षान्तिरेव महाज्ञानं क्षान्तिरेव महादमः ॥५१॥

क्षान्तिरेव महाशीलं क्षान्तिरेव महाकुलम् । क्षान्तिरेव महावीर्यं क्षान्तिरेव पराक्रमः ॥५२॥

क्षान्तिरेव च सन्तोषः क्षान्तिरिन्द्रियनिग्रहः । क्षान्तिरेव महाशौचं क्षान्तिरेव महादया ॥५३॥

क्षान्तिरेव महारूपं क्षान्तिरेव महाबलम् । क्षान्तिरेव महैश्वर्यं धैर्यं क्षान्तिरुदाहता ॥५४॥

क्षान्तिरेव परं ब्रह्म सत्यं क्षान्तिः प्रकीर्तिता । क्षान्तिरेव परामुक्तिः क्षान्तिः सर्वार्थसाधिका ॥५५॥

क्षान्तिरेव जगद्वन्द्या क्षान्तिरेव जगद्धिता । क्षान्तिरेव जगज्ज्येष्ठा क्षान्तिः कल्याणदायिका ॥५६॥

१. ला० 'गेणं' ॥ २. मुपा० 'त्ति' ॥२४॥ ता केत्तिया एवंविहा सूरिणो भविस्संति जे एवं
पडिबोहिस्संति । तम्हा आईओ ॥ ३. सप्तमवृत्ते ॥ ४. ता० 'गाणि मुदा' ॥ ५. ला० 'गुणाधार' ॥

क्षान्तिरेव जगत्पूज्या क्षान्तिः परममङ्गलम् । क्षान्तिरेवौषधं चारु सर्वव्याधिनिबर्हणम् । ५७।
क्षान्तिरेवारिनिर्णाशं चतुरङ्गं महाबलम् । किं चात्र बहुनोक्तेन सर्वं क्षान्तौ प्रतिष्ठितम् । ५८।।

इति प्रथमं लिङ्गम् । 'संवेग'ति 'संवेगः' मोक्षाभिलाषः । उक्तं च—

णर-विबुहेसरसोक्खं दुक्खं विय भावओ उ मण्णंतो ।

संवेगओ ण मोक्खं मोत्तूणं किंचि पत्थेइ । ५९।। (धर्म० गा० ८०९)

इति द्वितीयं लिङ्गम् । 'निव्वेय' ति 'निर्वेदः' संसारोद्वेगः । उक्तं च—

णारय-तिरिय-णरा-ऽमरभवेसु णिव्वेयओ वसइ दुक्खं ।

अकयपरलोगमगो ममत्तविसवेगरहिओ वि । ६०।। (धर्म० गा० ८१०)

कथम्भूतः सन् दुःखं वसति ? 'अकृतपरलोकमार्गः' अनासेवितसदनुष्ठान इत्यर्थः ।
'ममत्वविषवेगरहितोऽपि' प्रकृत्या निर्ममत्व एव, विदिततत्त्वत्वाद् । इति तृतीयं लिङ्गम् ।
'अणुकंप'ति, 'अनुकम्पा' दुःखितप्राणिदया । उक्तं च—

ददूण पाणिणिवहं भीमे भवसागरम्मि दुक्खत्तं ।

अविसेसओऽणुकंपं दुहा वि सामत्थओ कुणइ । ६१।। (धर्म० गा० ८११)

'अविशेषतः' आत्मीयेतरविचाराभावेन । 'द्विधापि' द्रव्यतो भावतश्च, द्रव्यतः
प्राशुकपिण्डादिदानेन, भावतः सद्धर्मयोजनया । इति चतुर्थं लिङ्गम् ।

'अत्थितभावेण'ति, 'अस्तित्वभावेन' जीवादिपदार्थविद्यमानतापरिणामेन । उक्तं च—

मण्णइ तमेव सच्चं णिस्संकं जं जिणेहिं पण्णत्तं ।

मुहपरिणामो सव्वं कंखाइविसोत्तियारहिओ । ६२।। (धर्म० गा० ८१२)

'समं'ति सह । इति पञ्चमं लिङ्गम् । 'जिणिंद'ति, 'जिनेन्द्राः' तीर्थकृतः ।
'सम्मत्तलिङ्गाणि'ति, 'सम्यक्त्वलिङ्गानि' सम्यग्दर्शनचिह्नानि । 'उदाहरंति' ति, 'उदाहरन्ति'
कथयन्तीति वृत्तार्थः । ६३।।

उक्तं मूलद्वारवृत्ते लिङ्गद्वारम् । साम्प्रतं श्रद्धमद्वारप्रतिपादनाय वृत्तमाह—

जीवाइवत्थूपरमत्थसंथवो, सुदिट्ठभावाण जईण सेवणा ।

दूरेण वावण्ण-कुदिट्ठिवज्जणा, चउव्विहं सदहणं इमं भवे । ६४।।

१. सं० वा० सु० प्रथमलिं ॥ २. सं० वा० सु० द्वितीयलिं ॥ ३. सप्तमवृत्ते ॥ ४. ला० 'नप्रति' ॥

५. सं० वा० सु० सेवणं ॥

‘जीवाइवत्थूपरमत्थसंथवो’ति जीवनात् प्राणधारणाज्जीवाः पृथिव्यप्-तेजो-वायु-वनस्पति-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्चेन्द्रिया-ऽनिन्द्रियभेदाद् दशधा, ते आदिर्येषामजीव-पुण्य-पापा-ऽऽश्रव-संवर-निर्जरा-बन्ध-मोक्षाणां तानि जीवादीनि, तानि च तानि वस्तूनि=पदार्था जीवादिवस्तूनि । तेषां परमार्थेन=वस्तुवृत्त्या, संस्तवः=परिचयः, परमार्थसंस्तवः=तत्त्वपरिज्ञानम् । तेन च सम्यक्त्वं श्रद्धीयते । यतः—

परमत्थेणं जीवाइवत्थुतत्तत्थवित्थरविहन्नू ।

जो तम्मि सहहेज्जइ जीवो णियमेण सम्मत्तं ॥६३॥

अतस्तच्छ्रद्धानं भण्यते । अत्र च कौतुकादिना मिथ्यादृष्टयोऽपि जीवादिवस्तुपरिचयं कुर्वन्ति तन्निराकरणार्थं परमार्थविशेषणोपादानम् । इत्याद्यं श्रद्धानं ।

‘सुदिट्ठभावाण जईण सेव्वा’ति सुष्ठु=अतिशयेन यथावद्वृत्त्या, दृष्टाः=अवलोकिताः, भावाः=पदार्था यैस्ते, तथा यतयः=साधवः, तेषाम् । ‘सेवना’ पर्युपासना । सा श्रद्धानं भवति, यतस्तयापि सम्यक्त्वं श्रद्धीयत इति । अत्र च सम्यगविज्ञातपदार्थयतिनिषेधार्थं सुदृष्टभावविशेषणम्, यस्मादगीतार्थयतिपर्युपासनातो न केवलं सम्यग्दर्शनं न श्रद्धीयते किन्तु तद्देशनाश्रवणत उभयोरप्यनर्थः । यत उक्तम्—

किं एत्तो कट्ठयरं मूढो अणहिगयधम्मसब्भावो ।

अण्णं कुदेसणाए कट्ठतरागम्मि पाडेइ ॥६४॥ (पञ्चव० गा० १६०३)

तथा—

यद्धाषितं मुनीन्द्रैः पापं खलु देशनापरस्थाने ।

उन्मार्गनयनमेतद् भवगहने दारुणविपाकम् ॥६५॥

किञ्चाऽगीतार्थस्य देशनैव न युक्ता । उक्तं च—

सावज्ज-ऽणवज्जाणं वयणाणं जो ण यौणइ विसेसं ।

वोत्तुं पि तस्स ण खमं, किमंग उण देसणं काउं ? ॥६६॥

भवसयसहस्समहणो विबोहगो भवियपुंडरीयाणं ।

धम्मो जिणपण्णत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो ॥६७॥

इति द्वितीयं श्रद्धानम् ।

‘दूरेण’ति, ‘दूरेण’ अतिविप्रकृष्टतया । ‘वावण्ण-कुदिट्ठिर्वज्जण’ ति व्यापन्न-कुदृष्टिर्वर्जना । दृष्टिशब्दस्योभयत्र सम्बन्धाद् व्यापन्ना=विनष्टा दृष्टिः=दर्शनं येषां ते तथा, निह्वादादयः । कुत्सिता स्वच्छन्दानुरूपप्ररूपणया दृष्टिर्येषां ते तथा, यथाच्छन्दादयः । तयोर्वर्जना तद्वर्जना सम्यक्त्वश्रद्धानाय भवतीति तच्छ्रद्धानमुच्यते, यस्मात् तद्वर्जना यतीनामपि दूरादूरतरेणोक्ता किं पुनः श्रावकाणाम् ? इति । उक्तं च—

वावण्णदिट्ठीहिं ण चेव संगो, जुत्तो जओ तव्वयणाणि सोउं ।
जायंति तत्थेव दढाणुरागा, सीसा जहा णिण्हवगाइयाणं ॥६८॥

तथा—

इत्तो च्चिय तेसिमुवस्सयम्मि तुडिवसमुवागओ साहू ।
तेसिं धम्मकहाए कुणइ विघायं सइ बलम्मि ॥६९॥

इहरा ठवेइ कण्णे तस्सवणा मिच्छमेइ साहू वि ।
अबलो किं पुण सट्ठो धम्मा-ऽधम्माण अणभिण्णो ? ॥७०॥

इति तृतीय=चतुर्थश्रद्धाने । ‘चउव्विहं’ति, ‘चतुर्विधं’ चतुःप्रकारम् । ‘सद्वहणं’ति श्रद्धानम् । ‘इमं’ ति एतत् । ‘भवे’ति भवतीति वृत्तार्थः ॥११॥

व्याख्यातं मूलद्वारवृत्ते श्रद्धानद्वारम् । साम्प्रतं छिण्डिकाद्वारं व्याख्यानयन् वृत्तमाह—

रायाभियोगो य गणाभियोगो, बलाभियोगो य सुराभियोगो ।
कंतारवित्ती गुरुणिग्गहो य, छच्छिंडियाओ जिणसासणम्मि ॥१२॥

‘रायाभियोगो य’ ति राज्ञः=नृपतेरभियोगः=पारवश्यताऽऽज्ञेत्यभिप्रायः । तेन चाऽकल्प्यमपि समाचरन्नातिचरति सम्यग्दर्शनम्, तस्य छिण्डिकात्वेन मुत्कलत्वाद् । अत्र च कार्तिकश्रेष्ठ्युदाहरणम् । तत्सम्प्रदायश्चायम्—

१२. कार्तिकश्रेष्ठिकथानकम्

अत्थि इह जंबुदीवे भारहखेत्तस्स मज्झयारम्मि । कुरुजणवयम्मि रम्मं वरणयरं हत्थिणायपुरं ॥१॥
तत्थ य राया णिययप्पयावअकंतदरियणरणाहो । जियसत्तू णामेणं समत्थगुणरयणसरिणाहो ॥२॥
अण्णो वि सुप्पसिद्धो सेट्ठी णामेण कत्तिओ अत्थि । नेगमसहस्ससामी जीवा-ऽजीवाइतत्तविऊ ॥३॥

१. सं० वा० सु० ‘वज्जणं’ ति ॥ २. ला० जुत्तो, संगो ज ॥ ३. ला० ‘वजाइयाणं’ ॥ ४. सं० वा० सु० श्रद्धानम् ॥ ५. सप्तमवृत्ते ॥

चालेज्जइ तियसेहिं वि जो ण वि जिणसासणाओ थिरचित्तो ।

संवेगभावियप्पा, किं बहुणा ? अभयसारिच्छो ॥४॥

बीओ वि तत्थ सेट्ठी पुव्वोइयगुणजुओ महासत्तो । णामेण गंगदत्तो रिद्धीए धणयसारिच्छो ॥५॥
अह अन्नया कयाई वरकेवलणाणकिरणजालेण । उज्जोइयभुवणयत्तो मुणिसुव्वयसामितित्थयरो ॥६॥
गामा-ऽऽगर-णगराइसु विहरंतो समणसंघपरिकिण्णो । तियसिंदपणयचलणो संपत्तो हत्थिणायउरो ॥७॥
देवेहिं समोसरणे रइए उवविसइ जाव जिणइंदो । तियसा-ऽसुर-नर-तिरिएहिं पूरियं ता समोसरणं ॥८॥
भगवं पि तओ धम्मं कहेइ णवजलयसरिसणिग्घोसो । सोऊण तयं बहवे पडिबुद्धा पाणिणो भव्वा ॥९॥
इत्थंतरम्मि सो गंगदत्तसेट्ठी भवण्णवोव्विणो । वंदेतु जिणं विण्णवइ पयडरोमंचकंचुइणो ॥१०॥

‘भगवं ! जा पढमसुयं ठावेमि गिहम्मि ताव पव्वज्जं ।

णिण्णामि तुम्ह चलणाण अंतिए मोक्खसोक्खत्थी’ ॥११॥

‘मा काहिसि पडिबंधं’ भणियम्मि जिणेण, तो गिहे गंतुं । ठाविय सुयं कुडुंबे सिबियारूढो विभूईए ॥१२॥
गंतुं जिणपयमूले पव्वज्जं गेण्हिऊण णिरवेक्खो । णिययतणुम्मि महप्पा काऊणोगं तवच्चरणं ॥१३॥
णिद्वुद्धायकम्मो उप्पाडियविमलकेवलणाणो । मोत्तूण देहकवयं संपत्तो सासयं ठाणं ॥१४॥
एत्तो य तत्थ णयरे णाणाविहतवविसेसखवियंगो । परिवायगकिरियाए उज्जुतो सत्थणिम्माओ ॥१५॥
लोएण महिज्जंतो एगो परिवायगो समणुपत्तो । अइणव्वमुव्वहंतो मासंमासेण खवयंतो ॥१६॥
तं सव्वं पि यं णयरं जायं तब्भत्तयं, तओ तं तु । पुरमज्जेणं इन्तं पाएणऽब्भुट्टए लोओ ॥१७॥
णवरं कत्तियसेट्ठी णिम्मलसम्मत्तरयणसंजुत्तो । जिणसासणाणुरत्तो अब्भुट्टइ णेय तं एगो ॥१८॥
एवं च णिएऊणं ईसावसपवणदीविणं तु । कोवाणलेणसययं अच्चत्थं दज्झएँ एसो ॥१९॥
अह अन्नया णरेंदो तग्गुणगणरायरंजिओ अहियं । विण्णवइ पयपडिओ ‘भगवं ! पारेह मह गेहे’ ॥२०॥

पडिवज्जइ ण य एसो, राया वि य विण्णवेइ पुणरुत्तं ।

जाव तओ तेण णिवो भणिओ ईसावसगएणं ॥२१॥

‘जइ परिवेसइ कत्तियसेट्ठी पारेमि तो तुह गिहम्मि’ । भत्तिवसणिब्भरेणं पडिवण्णं तं णिवेणावि २२
तत्तो कत्तियगेहे राया सयमेव-जाइ सहस त्ति । सेट्ठी वि पहुंच दट्ठं अब्भुट्टाणाइपडिवत्तिं ॥२३॥
काउं जोडियहत्यो विण्णवई ‘सामि ! किंकरजणे वि । अइसंभमकरणमिणं किं कारणमाइसह तुरियं’ ॥२४॥

१. सं० वा० सु० भणिऊण जि ॥ २. ला० ‘घाइक’ ॥ ३. ला० वि ॥ ४. ला० त्तस त्त संजु ॥
५. सं० वा० सु० णिवेऊण ॥ ६. ला० ‘ण एसो अ’ ॥ ७. ला० ‘ए सययं’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘ओ सययं’
९. ला० ‘यवडि’ १०. सं० वा० सु० ईसाइवसगेण ॥ ११. ला० ‘सपरवसेणं’ ॥

राया वि करे घेतुं पभणइ 'मह संतियं इमं वयणं । कायव्वमेव एणं गेहम्मि समागयस्स तए ॥२५॥
 पारेंतस्स भगवओ भगवस्स उ मह गिहम्मि तुमए वि । नियहत्थेणं सुंदर ! परिवेसेयव्वमवियारं' ॥२६॥
 सेट्ठी वि आह 'एवं ण कप्पए मज्झ, किंतु तुह वासे । जेण वसेज्जइ कायव्वमेव एवं मए तेण' ॥२७॥
 परितुट्ठो णियगेहे गओ णिवो जाव पारणदिणम्मि । हक्कारिओ य सेट्ठी परिवेसइ चेत्तमड्डाए ॥२८॥
 परिवायगो वि सेट्ठी तज्जंतो अंगुलीए भुंजेइ । सेट्ठी वि तओ चिंतइ अच्चंतं दूमिओ चित्ते ॥२९॥
 'धण्णो कयउण्णो सो मुणिसुव्वयसामिणो समीवम्मि । तइय च्विय पव्वइओ जो सेट्ठी गंगदत्तो त्ति ॥३०॥
 जइ तइय च्विय अहयं पि पव्वयंतो जिणिंदपयमूले । परतित्थियपरिवेसणमाईयविडंबणं एयं ॥३१॥
 न लहंतो' इय चिंतापरस्स भोत्तूण सो णिवगिहाओ । नीसरइ हट्ठतुट्ठो परिवाओ विहियसम्माणो ॥३२॥
 सेट्ठी वि गिहे गंतुं जेड्डसुयं ठाविउं णियपयम्मि । पभणइ वणियसहस्सं जह 'अहयं पव्वइस्सामि ॥३३॥
 तुब्भे किं च करेस्सह ?' इय भणिया ते तओ पडिभणंति ।

'तुब्भे अणुपव्वामो किमण्णमालंबणं अम्हं ?' ॥३४॥

'जइ एवं णियऊते णिययकुडुंबेसु ठाविउं सिग्घं । पउणा होह य' इत्थंतरम्मि एणेण पुरिसेणं ॥३५॥

वद्धाविओ य सेट्ठी जह 'भगवं सुर-णरिंदणयचलणो ।

मुणिसुव्वओ जिणिंदो समोसढो इत्थ णयरम्मि' ॥३६॥

तो हरिसपुलइयंगो सेट्ठी तं भणइ नेगमसहस्सं । 'भो ! पुण्णपभावेणं अज्जइमह मणोरहा पुण्णा' ॥३७॥
 तो सयलं सामणिं काऊणं जिणवरिंदपासम्मि । नेगमसहस्ससहिओ पव्वइओ कत्तिओ सेट्ठी ॥३८॥
 काऊण तवमुयारं संपत्ते मरणदेसकालम्मि । अणुनविय जिणं अणसणविहिणा देहं चएऊण ॥३९॥
 पढमम्मि देवलोगे सोहम्मवडिंसए विमाणम्मि । बत्तीसविमाणाऽऽवासलक्खसामी समुप्पण्णो ॥४०॥
 एणऽवयारो सक्को, तत्तो चविऊण सिज्झिही इत्थ । परिवायगो वि मरिउं जाओ अइरावणो हत्थी ॥४१॥
 तस्सेव वाहणत्ताए अवहिणा तो इमं मुणेऊण । दो रूवाइं विउव्वइ इंदो वि करेइ दो रूवे ॥४२॥
 एवं दूमियचित्तो जत्तियरूवाणि सो विउव्वेइ । इंदा वि तत्तिया होंति, जाव एवं पि णवि ठाइ ॥४३॥
 ताव हरिणा वि वज्जेण ताडिओ सो तओ सभावत्थो । अभियोगियकम्मेणं सम्मं वहिउं समाढत्तो ॥४४॥

[कार्तिकश्रेष्ठिकथानकं समाप्तम् । १२]

साम्प्रतं द्वितीयछिण्डिका । तत्र च 'गणाभिओगो'ति सूत्रावयवः । गण=मल्लादीनां समुदाय-

१. सं० वा० सु० 'यम्मि त ॥ २. ला० 'स्स भए(य भ)गवस्स भगवओ मह ॥ ३. ला० किं ववसिस्सह ॥ ४. सं० वा० सु० तो ॥ ५. सं० वा० सु० अणुन्नवि य जिणं अण ॥ ६. ला० रूवाणि ॥

स्तस्याऽभियोगः=पारवश्यता । तेन कदाचित् किञ्चिदकल्प्यमपि कुर्वन् नातिचरति सम्यग्दर्शन-
मित्येवमग्रेतनपदेष्वपि व्याख्येयम् । तत्र च कथानकम्—

[१३. रंगायणमल्लकथानकम्]

अत्थि इह भरहवासे सविलासं नाम पुरवरं रम्मं । तं परिवालइ राया सुरिंददत्तो विगयसत्तू ॥१॥
तस्सऽत्थि महादेवी रूववई नाम दसदिसिपयासा । इत्तो यं तत्थ नगरे वसंति बहवे पवरमल्ला ॥२॥
विण्णाण-णाण-बल-दप्पगव्विया करणदच्छयाकलिया । जुद्ध-णिजुद्धपहाणा अणेगरज्जेसु लद्धजया ३
पुव्वोइयगुणजुत्तो ताण समत्थाण सेहरो अत्थि । तोसियबहुणरणाहो मल्लो रंगायणो नाम ॥४॥
अह अण्णया कयाई कमेण विहरंतया तहिं पत्ता । बहुसीसगणसमग्गा सूरी नामेण धम्मरहा ॥५॥
ताणं च वंदणत्थं विणिग्गया णरवरिंदमाईया । नीसेसपुरजणा, मयहरो य अह णिग्गओ तुरियं ॥६॥
उवइट्ठा सट्ठाणे सूरिं णमिऊण सुद्धभूमीए । सूरी वि कहइ ताणं जिणिंदपहुदेसियं धम्मं ॥७॥
'मिच्छत्तणीरपुरे कसायपायालकलसगंभीरे । कुग्गाहजलयरणे मोहावत्ते महाभीमे ॥८॥
बहुविहरोगतंरो आवयकल्लोलमालियाकलिए । मयणगिवाडविल्ले संसारमहासमुदम्मि ॥९॥
निवडंतयाण नित्थारणम्मि जाणं व एस जिणधम्मो । ता तत्थेव पयत्तं सिवसुहफलए सया कुणह' ॥१०॥
इय सूरिवयणमायणिऊण बुद्धा तहिं बहू सत्ता । पव्वज्जमब्भुवगया, अवरे सुस्सावगा जाया ॥११॥
रंगायणो वि घेत्तुं पंचाणुव्वयसमणियमुयारं । पवरोवासयधम्मं परिसाएँ समं गिहं पत्तो ॥१२॥
पुण्णम्मि मासकप्पे सूरी अण्णत्थ विहरिउं पत्तो । रण्णा चामुंडाए महई जत्ता समाढत्ता ॥१३॥
रण्णा तत्थाऽऽणत्ता ते मल्ला तेहिं सेहरो भणिओ । 'संवहसु लहुं जेणं वच्चाओ' तेण पडिभणियं ॥१४॥
'भोभो! वच्चह तुब्भे अहयं पुण अज्जणागमिस्सामि' । तब्भावं णाऊणं पडिभणिओ तेहिं तो एसो ॥१५॥

‘जइ णाऽऽगच्छह तुब्भे अम्हे वि हु णिच्छण णो जामो’ ।

णाउं गणाभिओगं इच्छावियलो वि सो चलिओ ॥१६॥

पत्तो तहिं, तओ णच्चिओ य, तुट्ठो य णरवई धणियं ।

पभणइ 'रे रंगायण ! मग्गसु जं तुज्झ पडिहाइ' ॥१७॥

तुट्ठेण तेण भणियं 'जइ एवं तो ण अण्णतित्थेसु । एवमहं जाजीवं पुहईसर ! आणवेयव्वो' ॥१८॥

'एवं' ति णिवेण तओ पडिवण्णे 'मह पसाय' ई वोत्तुं । पत्तो णियगे गेहे अकलंकं पालिउं धम्मं ॥१९॥

जीयंते संपत्ते अणसणविहिणा समाहिणा मरिउं । जाओ एगवारो पढमे कप्पे महातियसो ॥२०॥

[रंगायणमल्लकथानकं समाप्तम् । १३.]

१. सं० वा० सु० वि ॥ २. ला० रया ॥ ३. इति ॥ ४. सं० वा० सु० पालियं ॥ ५. ला० जाओ पढमे कप्पे, एगवारो महा ॥

सम्प्रति बलाभियोगछिण्डिका । तत्र च 'बलाभियोगो' ति सूत्रावयवः । 'बल'ति बलात्कारेण बलवता केनचित् किञ्चित् कार्यमाणोऽपि नातिचरति दर्शनम् । अत्र कथानकम्—

[१४. जिनदेवकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे संखवद्धणो णाम गामो । तत्थ य सावयकुलसमुब्भूओ जीवा-ऽजीवाइपयत्थवित्थरवियक्खणो सामाइयाइकिरियाणुट्ठाणणिरओ मेरु व्व णिच्चलसम्मत्तो जिणदेवो णाम सावगो, ण य कयाइ कस्स वि उवरोहेणावि धम्मविरुद्धमायरइ ।

सो य अन्नया कयाइ पट्ठिओ गामंतरं । अंतराले य मिलिओ महामिच्छद्दिट्ठिणो णियसालयस्स महेसरदत्तस्स । कया समालिङ्गणदाणाइया उचियपडिवत्ती । पुच्छिओ य तेण जिणदेवो 'भाउय ! कत्थ तुमं पत्थिओ ?' । तेण भणियं 'धूयाणयणत्थं वसंतपुरणं' । इयरेण जंपियं 'जइ एवं तो पयट्ठेसु, जओं अहं पि तत्थेव पओयणंतरेण गमेस्सामि' । तो पयट्ठा दोण्णि वि । गच्छंताणं कहिंचि जाओ धम्मवियारो । तओ जिणवयणपरिकम्मियमइणा णिरुत्तरीकओ अणेण महेसरदत्तो, पउट्ठो तस्सेसो । गच्छंतेहि य दिट्ठं महाणइतडडियं एणं लोइयं देवउलं । तं च दड्ढुणं जंपियं महेसरदत्तेण जहा 'एयं संयंभाययणं परमतित्थं, ता वंदामो एत्थ देवं, करेमो परमपवित्तमत्ताणयं' ति । जिणदेवेण भणियं 'अहं अच्चंतं परिस्संतो ता इत्थेव णंइतीरे वीसमेस्सामि' । तओ विण्णायतयभिप्पायनिच्छएणं महाबल-परक्कमेण भंजामि एयस्स मरुट्ठं इति बाहासु संगहेऊण णीओ तत्थ । धरिऊण य कियाडियाए देवस्स परतित्थियाणं च पाडिओ पाएसु । जिणदेवो वि 'धिरत्थु संसारवासस्स जत्थेरिसाओ विडंबणाओ पावेज्जंति, ता पडिणियत्तो णिणहेस्सामि पव्वज्जं' ति भावेमाणो वसंतपुराओ घेत्तूण णियदुहियं गओ णियगेहं । ठावेऊण जेडुपुत्तं कुडुंबे सुगुरुसमीवे पव्वइओ । पालिऊण य णिक्कलंकं सामण्णं मरिऊणोववण्णो सव्वड्डसिद्धे महाविमाणे । तओ चुओ खिइपइट्ठिए रायउत्तो होऊण सिज्झिस्सइ ति ।

[जिनदेवकथानकं समाप्तम् । १४.]

उपनयः सर्वत्र स्वबुद्ध्या वक्तव्यः । इदानीं देवाभिओगछिण्डिका । तत्र 'सुराभिओगे'ति सूत्रम् । सुरः=देवता तदभियोगाद् नातिचरति दर्शनम् । अत्र च कथानकम्—

१. ला० 'त्र बला' ॥ २. ला० कस्सइ ॥ ३. ला० 'यासमाणयणत्थं' ॥ ४. ला० 'नयरे' ॥ ५. ला० तो ॥ ६. ला० तओ पय' ॥ ७. ला० 'ताण य क' ॥ ८. सं० वा० सु० 'णपरिक' ॥ ९. ला० 'हाणइत' ॥ १०. ला० नईती' ॥ ११. ला० भंजेमि ॥ १२. ला० मरुट्ठं ति ॥ १३. ला० कियाणयाए ॥ १४. ला० 'ण निक्क' ॥

१५. कुलपुत्रकथानकम्

अत्थि एगत्थ गामे एगो कुलपुत्तगो । सो य अन्नयाकंयाई साहुसंसंगीए जाओ सावगो । तओ तेण पुव्वपरिचियदेवयाणं परिचत्तं पूयणाइयं, करेइ भत्तिं देव-गुरूणं । अपि य—

काऊण महापूयं वंदइ तिक्कालियं जिणवरिदे । ताण बलि-ण्हवण-जत्ता-महूसवे कुणइ अणुदियहं । १।

भत्तिभरणिब्भरोब्भिज्जमाणरोमंचकंचुयसणाहो । पप्फुल्लवयणकमलो आणंदपवाहपुत्तच्छो । २।

‘धन्नो कयउत्तो हं’ एवंविहभावणाएँ जिणमुणिणो । पइदियहं पडिलाभइ तह चेव य पज्जुवासेइ । ३।

एवंविहं च तं दइण एगा पुव्वपरिचियदेवया पओसमावण्णा मग्गइ पुणो पुव्वपवत्तं पूओवयारं । ण य सो तीए उत्तरं पि पइच्छइ । तओ तीए भणियं ‘जाणिहिसि जइ ण पडिवज्जिहिसि मम वयणं ?’ । तेण भणियं ‘कडपूयणे ! को तुज्झ बीहेइ ?’ । तओ तीए अहिययरपउट्टाए गावीहिं समं गओ समानो सगावीओ चेव अवहरिओ से पुत्तो । तेण वि सव्वायरेण गवेसिओ ण य दिट्ठो । तओ आउलीहूओ एसो । एत्थंतरम्मि य तीए देवयाए आवेसिया एगा वुड्डणारी, उव्वेल्लियमंगं, कंपाविया सिरोहरा, विहुणिया करयला, आहयं भूमिवट्ठं, पयत्ता जंपिउं—

‘एत्थिमित्तेणं चिय किं भद्द ! समाउलो तुमं जाओ ? ।

अण्णं पि पेच्छ जमहं करेमि तुह दारुणं दुक्खं ॥४॥

जेणऽट्ठदुहवसट्ठो जीवियववरोवणं अकालम्मि । पाविसि, इय णाऊणं मह पूयं कुणसु अवियप्पं’ । ५।

पभणइ तओ य सट्ठो ‘जं रोयइ तुज्झ किं पि अन्नं पि ।

तं कुणसु, तह वि अहयं ण तुज्झ पूयं करेस्सामि’ ॥६॥

णाऊण णिच्छयं सावगस्स जंपेइ देवया एवं । ‘तह वि हु पत्तियखंडं पि देसु मा कुणसु निब्बंधं’ ॥७॥

तो देवयाभियोगं कलिऊणं सावगो इमं भणइ । ‘जइ एवं तो जिणवरपडिमा हेट्ठम्मि ठायव्वं ॥८॥

जिणपूयणं कुणंतो तुह वि खिविस्सामि पत्तियाखंडं’ । तं पडिवज्जइ तो सा आणइ पुत्तं सगावीयं ॥९॥

एवं तु णिक्कलंकं सम्मत्तं पालिऊण एसो वि । जीयस्संते पत्ते संपत्तो देवलोगम्मि ॥१०॥

[कुलपुत्रकथानकं समाप्तम् । १५.]

अधुना पञ्चमछिण्डिका । तत्र ‘कंतरवित्ति’ ति सूत्रम् । कान्तारं=छिन्नापाताटवीप्रभृति, तत्र वृत्तिः=वर्तनं निर्वाहस्तयाप्यकल्प्यमपि समाचरन् नातिचरति सम्यक्त्वम् । अत्र च

१. ला० कयाइ ॥ २. ला० बीहइ ॥ ३. ला० ‘उं, अवि य-ए’ ॥ ४. ला० ‘यं परिविहेमि ॥ ५. सं० वा० सु० ‘म्मि कायव्वं ॥ ६. ला० ‘म्मि ॥ १०॥ ति । अधु’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘न्ना पर्वताट’ ॥

सुराष्ट्राश्रावककथानकम् । तच्च प्रादूषणद्वारे प्रतिपादितमिति ।

इदानीं षष्ठछिण्डिका । तत्र 'गुरुणिगहो य' ति सूत्रम् । गुरवः=मातृ-पितृप्रभृतयः । यत उक्तम्—

माता पिता कलाचार्य एतेषां ज्ञातयस्तथा ।

वृद्धा धर्मोपदेष्टारो गुरुवर्गः सतां मतः ॥७१॥

तेषां निग्रहः=निश्चयः 'एतदेवमेव कर्तव्यम्' इत्येवंरूपः, तेनाप्यकल्पनीयमपि कुर्वन् न विराधयति सम्यग्दर्शनम् ।

अत्र च कथानकम्—

[१६. देवानन्दकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे वच्छाजणवयालंकारभूया कोसंबी णाम णगरी । तत्थ य महाधणवई धणदत्तो णाम सेट्ठी । तस्स य रूवाइगुणगणालंकिया जीवा-
ऽजीवाइपयत्थवित्थरवियक्खणा जिणसाहुपयपंकयमहुयरी अत्थि देवई णाम कण्णगा । सा य घरोवरि कंडुगलीलाए ललमाणी दिट्ठा पाडलीउत्तपुरागयभिक्षुभत्तसिरिदत्तसेट्ठिसुएण देवाणंदेणं । तं च दट्ठूण विसमसंस्सरपसरनिवायविहुरिज्जमाणमाणसेणं चिंतियमणेणं 'अहो ! रूवाइसओ, अहो ! कलाकोसल्लपगरिसो, ता वरावेमि एयं' ति । पेसिया णियपहाणपुरिसा तीए वरणत्थं । 'अण्णधम्मिओ' ति काऊण ण दिण्णा पिउणा । तओ तीए लोभेण संजाओ कवड-सावगो । णिरंतरसिद्धंतायन्नणाईहि य परिणओ सम्मं धम्मो, जाओ मेरु व्व णिप्पकंपो । तं च तारिसं दट्ठूण दिण्णा पिउणा से कण्णगा । समुव्वूढा य महाविभवेणं । गओ तं घेत्तूण सणगरं । 'भिण्णधम्माणि मायापित्ताणि' ति कयं जुयहरयं । तओ य—

जिणपूयण-वंदण-णहवण-जत्त-बलिकरणमाइणिरयस्स ।

सज्झाय-ज्झाणपरायणस्स जइसेवणजुयस्स ॥१॥

पत्तम्मि विविहदाणं देंतस्स कुत्तित्थिए चयंतस्स । जा जाइ कोई कालो जणणी-जणगाइ ता तस्स ।२।

भणियाइं भिक्षुएहिं 'किं सो तुम्हाण सन्तिओ पुत्तो ।

अच्चंतं भत्तो वि हु णाऽऽगच्छइ अम्ह पासम्मि ?' ॥३॥

तो तेहिं कहिओ सव्वो सवित्थरो से वुत्तंतो ! भिक्षुएहिं भणियं 'जइ एवं ता आणेह

१. दृश्यतां ६४ तमे पत्रे जिनदासकथानकम् ॥ २. सं० वा० सु० 'रपसर' ॥ ३. ला० माया-वित्ताणि ॥ ४. ला० को वि ॥ ५. ला० तओ तेहिं ॥ ६. ला० तो कहिं (हं)चि आणेह एकवारं ॥

कहवि एगवारं, तओ पच्छा भलेस्सामि(मो) । जणणि-जणएहि य भणिओ जहा ‘अम्हऽवरोहेण वि अज्ज णिच्छएणं गंतव्वं’ । गुरुणिग्गहळिंडियं च चित्ते भाविऊण गओ सो । वंदिया भिक्खुणो विज्जाभिमतियं च दिण्णं से तेहिं फलं । पुव्वभासेण य भक्खियमणेण । परावत्तियभावो य समागओ गेहं । भणियाणि माणुसाणि जहा ‘लहुं मम गिहे भिक्खूण भोयणं सज्जेह’ । तओ हट्ठ-तुट्ठाणि ताणि तहा काउमाढत्ताणि । देवई य भत्तुणो चलचित्तत्तणमसद्दहंती गया गुरुसमीवे । कहिओ वुत्तंतो । तेहि वि समप्पिओ पडिजोगो । दिण्णो तीए तस्स । जाओ सहावत्थो । तओ पुच्छियं तेण ‘किमेयं ?’ ति । माणुसेहिं भणियं ‘तए भिक्खूण भोयणं सज्जावियं’ ति । तेण भणियं ‘णाहं जिणजइणो मोत्तूण अत्तेसिं धम्मट्ठा पयच्छामि’ । कहिओ य देवईए सव्वो वि परमत्थो । तओ ‘गुरुणिग्गहेण मणागं छलिओ मि’ ति-भणंतेण ‘फासुएसणिज्जं’ ति काऊण पडिलाहिया मुणिणो ।

[देवानन्दकथानकं समाप्तम् । १६.]

तदेवं गुरुनिग्रहेण किञ्चिदकल्प्यमपि कुर्वन् नातिचरति दर्शनम् । परं ‘कियन्त ईदृशा गुरवो भविष्यन्ति?’ इति मत्वाऽऽदित एव न विधेयम् । ‘छ छिं(च्छिं)डियाओ’ ति ‘षड्’ इति सङ्ख्या, ‘छिण्डिकाः’ अपवादाः ‘जिणसासणम्मि’ ति, ‘जिनशासने’ अर्हदर्शन इति वृत्तार्थः ॥१२॥

व्याख्यातं मूलद्वारवृत्ते छिण्डिकाद्वारम् । साम्प्रतं स्थानकद्वारं विवृण्वन् वृत्तमाह—

अत्थी य णिच्चो कुणई कयाइं, सयाइं वेइए सुहा-ऽसुहाइं ।

णिव्वाणमत्थी तह तस्सुवाओ, सम्मत्तठाणाणि जिणाहियाणि ॥१३॥

‘अत्थी य’ ति ‘अस्ति’ विद्यते, चकारस्यावधारणार्थत्वादस्त्येवेति, जीव इति गम्यते, तत्प्रतिपादकचिह्नैरिति । उक्तं च—

चित्तं चेयणसण्णा विण्णाणं धारणा य बुद्धी यं ।

ईहा मई वियक्का जीवस्स उ लक्खणा एए ॥७२॥ (दश० नि० गा० २२४)

जो चित्तेइ ‘सरीरे णत्थि अहं’ स इह होइ जीवो ति ।

ण हु जीवम्मि असंते संसयउप्पायगो अन्नो ॥७३॥ (दश० भा० गा० २३)

१. सं० वा० सु० ‘ट्ठाणि तहा ॥ २. ला० यं । तेण ॥ ३. पु० संज्ञकप्रतौ एतत् ‘छलिओ’ शब्दगत ‘लिओ’ इत्यत आरब्धस्य प्रस्तुतग्रन्थस्य ९६तमपृष्ठस्य त्रयोदशीपंक्तिगत ‘पडिलाहिया’ शब्दान्तर्गत ‘ला’ पर्यन्तस्य विस्तृतसन्दर्भस्य स्थाने, तथा ला० संज्ञकप्रतौ अत्र सूचित ‘लिओ’ इत्यत आरब्धस्य प्रस्तुतग्रन्थस्य ९९ तमपृष्ठस्य द्वितीयपंक्तिगत ‘पूरेमि’ इत्येतत्पर्यन्तस्य विस्तृतसन्दर्भस्य स्थाने शीलाङ्काचार्यकृताऽऽचाराङ्गसूत्रवृत्तेर्द्वितीयाध्ययन-प्रथमोद्देशकवृत्तिगतः सन्दर्भ उपलभ्यते ॥ ४. सं० वा० सु० सङ्ख्यापवादाङ्क (श्चि)ण्डिका ‘जिण’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘म्मि जिन’ ॥ ६. सप्तमवृत्ते ॥ ७. सं० वा० सु० वि ॥

इत्यादि जीवास्तित्वमननं प्रथमं सम्यक्त्वस्थानकम्, अवस्थानमिति भावः । अनेन नास्तिकमतनिषेधमाह । ‘णिच्चो’त्ति, ‘नित्यः’ अप्रच्युता-ऽनुत्पन्न-स्थिरैकत्वभावः पूर्वकृतस्मरणात् । अनेन च बौद्धमतनिरासाद् द्वितीयं सम्यक्त्वस्थानकमभिहितम् । ‘कुणइ’त्ति, ‘करोति’ विदधाति शुभा-ऽशुभानीति सम्बध्यते, एवमेव युक्तियुक्तत्वाद्, अन्यकर्तृकत्वे तु कृतनाशा-ऽकृताभ्यागमादिदोषप्रसङ्गाद् । अनेन तु कपिलमततिरस्करणात्, तृतीयं दर्शनस्थानकमुक्तम् । ‘कयाइं सयाइं वेणइ सुहा-ऽसुहाइं’त्ति ‘कृतानि’ निर्वर्तितानि । ‘स्वकानि’ आत्मीयानि । ‘वेदयति’ अनुभवति । जीव इति गम्यते । ‘शुभा-ऽशुभानि’ पुण्य-पापानि, ‘सुखा-ऽसुखानि’ वा पुण्य-पाप-फलजन्यशर्मा-शर्माणि । एतच्चाकर्ता जीव इति दुर्णयनिरासात् चतुर्थं सम्यक्त्वस्थानकम् । ‘निव्वाणमत्थि’ त्ति, ‘निर्वाणं’ मोक्षः सकलकर्मनिर्मुक्तजीवावस्थानमिति भावः । ‘अत्थि’ त्ति, ‘अस्ति’ विद्यते तत्प्रतिपादकागम प्रमाणसद्भावात् । अनेन च,

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो, नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम् ।

दिशं न काञ्चिद्विदिशं न काञ्चिदथ क्षयात् केवलमेति शान्तिम् ॥७४॥

जीवस्तथा निर्वृतिमभ्युपेतो, नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम् ।

दिशं न काञ्चिद्विदिशं न काञ्चित्, क्लेशक्षयात् केवलमेति शान्तिम् ॥७५॥

इति सर्वाभावप्रतिपादकमोक्षपरदुर्णयनिरासः कृतो भवतीति पञ्चमं दर्शनस्थानकम् । ‘तह तस्सुवाओ’त्ति तथा तस्योपायः, तस्य=मोक्षस्योपायः=तत्प्राप्तिलक्षणः सम्यग्दर्शनादिकः सन्मार्ग इति भावः, “सम्यग्दर्शनज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः (तत्त्वा० अ० १ सू० १)” इति वचनात् । अनेन च मोक्षोपायाभावप्रतिपादकदुर्णयनिरासः कृतो भव [? ती] ति षष्ठं सम्यक्त्वस्थानकम् । ‘सम्मत्तठाणाइं’त्ति सम्यक्त्वस्थानानि=दर्शनावस्थानानि, सम्यक्त्वमेतेषु सत्स्वेव भवतीति भावः । ‘जिणाहियाइं’त्ति जिनाहितानि=तीर्थकरप्रतिपादितानीति वृत्तार्थः ॥१३॥

भूषणादीनि प्रतिपाद्य तस्यैव माहात्म्यख्यापकं वृत्तद्वयमाह—

मूलं इमं धम्ममहादुमस्स, दारं सुपायारमहापुरस्स ।

पासायपीढं व दढावगाढं, आहारभूयं धरणी व लोए ॥१४॥

पहाणदव्वाण थ भायणं व, माणिक्क-णाणामणिमाइ-मुत्ता- ।

सिल-प्पवाला-ऽमललोहिंयक्ख-सुवण्णपुण्णं व महाणिहाणं ॥१५॥

१. ला० “न च नास्ति” ॥ २. सं० वा० सु० “कस्वभावः” ॥ ३. सं० वा० सु० “नमभि” ॥ ४. सं० वा० सु० “दक आग” ॥ ५, ६ ला० “वनी” ॥ ७. ला० “ख्यापनं” ॥ ८. ला० धरणीं व ॥ ९. ला० “मुत्त-सि” । ता० पु० “मोत्ता-सि” ॥ १०. सं० वा० सु० “यक्खा” ॥

‘मूलं’ति, मूलमिव मूलं=कन्दोऽधोवर्ति । ‘इमं’ एतत् सम्यक्त्वम् । ‘धम्ममहादुमस्स’ति धर्म एव महादुमः=प्रधानतरुधर्ममहादुमस्तस्य । तथा च—

पाडेज्जइ वायाईहिं जह उ अनिबद्धमूलओ रुक्खो ।

तह सम्मत्तविहीणो धम्मतरू नो दढो होइ ॥७६॥

जह सो च्विय दूरंगयमूलो सच्छायओ दढो होइ ।

तह धम्मतरू वि दढो जायइ सम्मत्तसंजुत्तो ॥७७॥

‘दारं’ति द्वारमिव द्वारं=मुखं प्रतोलीति यावत् । ‘सुपायारमहापुरस्स’ति सुष्ठु=शोभनः प्राकारः=शालो यत्र तत् सुप्राकारम्, महच्च तद्=बृहत्, पुरं च=नगरं महापुरम्, सुप्राकारं च तन्महापुरं च सुप्राकारमहापुर-मतस्तस्य । तथा हि—

जह दाररहियणयरं ण किंचि णयरप्पओयणं कुणइ ।

सम्मत्तदारवियलं तह धम्मउरं पि विण्णोयं ॥७८॥

तथा ‘पासायपीढं व दढावगाढं’ति प्रसीदन्ति नयन-मनांसि यत्रासौ प्रासादः=देवकुलम्, तस्य पीढं=गर्तापूरकः, दृढम्=अत्यर्थमवगाढम्=आजलान्तभूतलावमग्रम्, तदिव । तथा हि—

आनीरान्तमहीतलगतगर्तापूरको दृढो यद्वत् ।

प्रासादो धर्मोऽपि च तद्वत् सम्यक्त्वसंयुक्तः ॥७९॥

तथा ‘आहारभूयं धरणी व लोए’ ति आधारः=आश्रयस्तद्भूतं=तत्तुल्यम्, धरणिरिव=भूमिवत् । कस्य? षष्ठ्यर्थे सप्तम्याः प्रयुक्तत्वाद् लोके=लोकस्य जगतः । तथा हि—

जह पुहईतलमेयं समत्थलोयस्स होइ आहारो ।

तह सम्मदंसणं पि य आहारो होइ धम्मस्स ॥८०॥

तथा ‘पहाणदब्बाण य भायणं व’ ति प्रधानानि=प्रवराणि, तानि च तानि द्रव्याणि च क्षीरादीनि अतस्तेषाम् । चकारः समुच्चये । भाजनं=कुण्डादि तद्वत्=तदिव । तथा च—

कुण्डादिभाजनविशेषविवर्जितस्तु, निःशेषवस्तुनिचयो व्रजति प्रणाशम् ।

यद्वत् तथा विविधधर्मविशेषराशिः, सदृशनप्रवरभाजनविप्रहीणः ॥८१॥

तथा ‘माणिक-णाणामणिमाइ- मुत्ता-सिल-प्पवाला-ऽमललोहिक्ख-सुवण्णपुण्णं व

१. ला० ‘त्तो ॥ इति भावना । ‘दारं’ ति॥ २. सं० वा० सु० मनांसीति प्रासा ॥ ३. सं० वा० सु० प्रस्तुतत्वाद् ॥ ४. ला० ‘नि चैतानि ॥ ५. सं० वा० सु० ‘मुत्त-सि’ ॥ ६. ला० ‘यक्खा-सु’ ॥

महाणिहाणं'ति माणिक्यानि=महामौक्तिकानि, नाना=अनेकप्रकारा मण्यादयः=चन्द्रकान्ताद्याः, आदिशब्दाद् हीरकादिग्रहः, मुक्ताः=मौक्तिकानि, शिलाः=स्फटिकोपलाः, प्रवालानि=विद्रुमाणि, अमललोहिताक्षाणि=निर्मलरक्तरत्नानि, सुवर्णं=काश्चनम्, माणिक्यानि च नानामणयश्चेत्यादिद्वन्द्वः, तैः पूर्णं=भृतं महानिधानवत्=तद्बृहद्भ्राजनमिव । तथा हि—

जह बहुविहमाणिक्काइदव्वपरिपूरियं महणिहाणं ।
संसारिअणेयसुहाणं कारणं होइ जीवस्स ॥८२॥
तह बहुविहधम्मविसेससंजुयं सम्मदरिसणमिमं पि ।
अच्चंतियनिरुवममोक्खसोक्खसंसाहणं होइ ॥८३॥

इति वृत्तद्वयार्थः ॥१४-१५॥

एतच्चेदृग्विधं महाप्रभावमत्यन्तदुःप्रापं चावाप्य यद्विधेयं तदाह—

एयं महापुण्णफलं सहावसुद्धीएँ लद्धूण अलद्धपुव्वं ।
जिणाणमाणाएँ पयट्ठियव्वं, विसेसओ सत्तसु ठाणएसु ॥१६॥

‘एयं’ति एतत् पूर्वोक्तम् । ‘महापुण्णफलं’ति महापुण्यफलं=बृहच्छुभसञ्चयकार्यम् । यतः—

बहुभवकोडीविरइयकम्ममहासेलदलणवरकुलिसं ।
पाविज्जइ सम्मत्तं उवज्जिए पुण्णसंघाए ॥८४॥
मोक्खमहातरुणिरुवहयबीयभूयं विसुद्धसम्मत्तं ।
जं लब्भइ जीवेहिं तं बहुविहपुण्णमाहप्पं ॥८५॥

‘सहावसुद्धीएँ’ ति स्वभावशुद्ध्या=अकामनिर्जरादिकर्मक्षयावाप्तपञ्चदशाङ्गीक्रमलक्षणया ।

उक्तं च—

भूएसु जंगमत्तं, तेसु वि पंचेंदियत्तमुक्कोसं ।
तत्तो वि य माणुस्सं, माणुस्से आरिओ देसो ॥८६॥
देसे कुलं पहाणं, कुले पहाणे य जाइ उक्कोसा ।
तीय वि रूवसमिद्धी, रूवे वि बलं पहाणयरं ॥८७॥

१. ला० ‘सारियणेय’ ॥ २. ला० सम्मदंसणमिमं ॥ ३. ला० ‘सुद्धीअल’ । ता० सुद्धीयल ॥ ४. ला० ‘क्तं महापुण्य’ ॥ ५. ला० ‘ण्णपब्भारे’ ॥ ६. सं० वा० सु० तीए रू० ॥

होइ बले वि य जीयं, जीए वि पहाणयं तु विण्णाणं ।

विण्णाणे सम्मत्तं, सम्मत्ते सीलसंपत्ती ॥८८॥

सीले खाइयभावो, खाइयभावे विं केवलं णाणं ।

केवलिए पडिउण्णे पत्ते परमक्खरे मोक्खो ॥८९॥ (प० व० गा० १५६-१५९)

[? 'लद्धूणं' ति, 'लब्ध्वा' प्राप्य ।] 'अलद्धपूर्व' ति अलब्धपूर्वम्=अप्राप्तप्रथमम् । तथा हि—

अट्टविहकम्मतलसीससूडसरिसस्स मोहणिज्जस्स ।

उदहीसरिणामाणं इगुहत्तरिकोडिकोडीओ ॥९०॥

जइया जिएहि खवियाओ होंति करणेणऽहापवत्तेण ।

तइया अउव्वकरणं काउं पावंति सम्मत्तं ॥९१॥

‘जिणाणं’ ति जिनानां=मोहमहाराजनिर्मूलोन्मूलनावाप्तजयपताकानाम् । ‘आणाए’ ति आज्ञायां=तदादेशलक्षणायाम् । ‘प्रवर्तितव्यं’ प्रवृत्तिर्विधेया । किमविशेषेण ? नेत्याह-‘विसेसओ’ विशेषतः=तदन्यसमधिकतया । ‘सत्तसु’ ति सप्तसु=सप्तसङ्ख्येषु, स्थानकेषु=पात्रविशेषेषु बिम्बादिष्विति वृत्तार्थः ॥९६॥

इदानीं सप्त, स्थानकान्येव नामतः प्रतिपादयंस्तत्कृत्यादेशं वृत्तेनाऽऽह—

बिंबाण चेईहर-पुत्थयाणं, जिणाण साहूण य संजईणं ।

आणारुईसावय सावियाणं, समायरेजा उचियं तमेयं ॥९७॥

‘बिंबाणं’ ति (ण’त्ति) बिम्बानां=प्रतिकृतीनाम् । तथा ‘चेईहराणं’ ति चैत्यगृहाणां=बिम्बाधारभवनानाम् । तथा ‘पुत्थयाणं’ ति पुस्तकानां=पत्रसञ्चयलिखितागमानाम् । ‘जिणाणं’ ति (ण’त्ति) जिनसम्बन्धिनाम् । अग्रेतनपदचकारस्यावधारणार्थस्यात्र सम्बन्धात्, तेन जिनानामेव सम्बन्धीनि यानि बिम्ब-चैत्यगृह-पुस्तकानि, न शाक्यादिसत्कानि । तथा ‘साहूणं’ ति साधूनां=सत्क्रियादिगुणान्वितयतीनाम्, यत एवंगुणा एव साधवो भवन्ति । उक्तं च—

यः सत्क्रियाप्रवृत्तः सज्ज्ञानी निस्पृहः क्षमासहितः ।

धर्मध्यानाभिरतश्च साधुरिति कथ्यते सद्भिः ॥९२॥

१. ला० य ॥ २. ला० °डिपुण्णे ॥ ३. ला० °द्धउव्वं ॥ ४. सं० वा० सु० °सरणा ॥ ५. ला० °कोडको ॥ ६. सं० वा० सु० °या होंती कर ॥ ७. सं० वा० सु० °शेषेणेत्याह ॥ ८. ला० पोत्थयाणं ॥ ९. ला० °क्षमादियुतः ॥

तथा 'संजईणं'ति संयतीनां=साधुगुणोपेतसाध्वीनाम् । तथा 'आणारुईसावर्यं'ति विभक्तिलोपाद् आज्ञारुचिश्रावकाणाम् । आज्ञा=भगवदादेशस्तस्यां रुचिः=श्रद्धा येषां ते आज्ञारुचयः, शृण्वन्ति यतिमुखात् साधु-श्रावकसामाचारीमिति श्रावकाः । उक्तं च—

संपत्तदंसणाई पइदियहं जइजणा सुणेई इ ।

सामायारिं परमं जो खलु तं सावगं बेति ॥१३॥

आज्ञारुचयश्च ते श्रावकाश्च=उपासका आज्ञारुचिश्रावकास्तेषाम् । तथा 'सावियाणं'ति श्राविकाणां=पूर्वोक्तगुणयुक्तोपासिकानाम् । 'समायरेज्ज'ति समाचरेत्=कुर्यात् । 'उचियं' ति उचितं=सप्तस्थानकयथायोग्यं कृत्यम् । 'तमेयं'ति तदेतद् वक्ष्यमाणं कृत्यमिति वृत्तार्थः ॥१७॥

'यथोद्देशं तथा निर्देशः' इति न्यायमाश्रित्य बिम्बानामुचितं यत् प्राग् विधेयतयोक्तं तद् वृत्तद्वयेन प्रतिपादयति—

जिनबिम्बाख्यं प्रथमं स्थानकम्

वज्जेदनीलं-अंजण-चंदकंत-रिट्ठं-अंक-कक्केयण-विट्ठुमाणं ।

सुवण्ण-रूप्पा-अमलफालियाणं, साराण दव्वाण समुब्भवाओ ॥१८॥

महंतभामंडलमंडियाओ, संताओ कंताओ मणोहराओ ।

भव्वाण णिव्वाणणिबंधणाओ, णिम्मावएज्जा पडिमा वराओ ॥१९॥

'वज्ज'ति वज्राणि=सर्वरत्नप्रधानानि हीरका इत्यर्थः । 'इंदनील' ति इन्द्रनीलानि=नीलवर्णमहारत्नानि । 'अंजण'ति कज्जलरुचिरत्नानि । 'चंदकंत'ति चन्द्रकान्ताः=रजनिकर-करनिकरसंसर्गनीरक्षणस्वभावा मणयः । 'रिट्ठ'ति रिष्टानि=कृष्णरत्नानि । 'अंक'ति अङ्काः=शुभ्ररत्नविशेषाः । 'कक्केयण' ति कर्केतकानि=पीतरत्नानि । 'विट्ठुम'ति विट्ठुमाणि=प्रवालकानि । वज्राणि चेन्द्रनीलानि चेत्यादिद्वन्द्वस्तेषां सम्बन्धिनीः । तथा 'सुवण्ण'ति सुवर्णं=काश्चनम् । 'रूप्प'ति रूप्यं=रजतम् । 'अमलफालिय'ति अमलस्फटिकाः=निर्मलाकर्पोपलाः । सुवर्णं च रूप्यं चामलस्फटिकाश्च सुवर्णं-रूप्या-अमलस्फटिकाः, तेषां सम्बन्धिनीः । तथान्येषामपि 'साराणं'ति साराणाम्=उत्तमानाम् । 'दव्वाणं'ति द्रव्याणां=वस्तूनाम् । 'समुब्भवाओ'ति समुद्भवाः=तत्समुत्थाः । 'महंत-भामंडलमण्डियाओ'ति महच्च तद्=विशालं भामण्डलं

१. सं० वा० सु० 'य' ति ॥ २. ला० योग्यकृत्यम् ॥ ३. सं० वा० सु० 'तमेवं तदे० ॥ ४. ला० वज्जिंद' ॥ ५. ला० संता य कंता य मणो' ॥ ६. सं० वा० सु० वज्जं ति ॥ ७. सं० वा० सु० सम्बन्धिनी ॥ ८, १०. ला० रूप्रं ॥ ९. सं० वा० सु० 'लस्फटिका ॥ ११. ला० रूप्रा' ॥

च=प्रभाचक्रवालम्, तेन मण्डिताः=शोभिता महाभामण्डलमण्डिताः । 'संताउ'ति शान्ताः=राग-
द्वेषादि-संसूचकरमणी-प्रहरणादिचिह्नरहितत्वेन प्रशान्ताकृतयः । 'कंताउ'ति कान्ताः=दीप्तिमतीः ।
'मणोहराओ'ति मनोहराः=चित्तानन्ददायिनीः । 'भव्वाणं'ति भव्यानां= मुक्तिगमनयोग्यानाम् ।
'णिव्वाणणिबंधणाओ'ति निर्वाणनिबन्धनाः=मोक्षहेतुभूताः, विशिष्टभावोल्लासहेतुभूतत्वेन
कर्मक्षयकारका इति भावः । उक्तं च—

पासाईया पडिमा लक्खणजुत्ता समत्तऽलंकरणा ।

जह पल्हाएइ मणं तह णिज्जर मो वियाणाहि ॥१४॥

दट्ठूण मणभिरामं पसंतबिंबं जिणस्स भव्वजिया ।

आणंदपूरियंगा हवंति सिहिणो व्व घणसमए ॥१५॥

'निम्मावएज्ज'ति निर्मापयेद्=विधापयेत् । 'पडिम'ति प्रतिमाः=प्रतिकृतीः । 'पराउ'ति
पराः=प्रधानाः । इति वृत्तद्वयार्थः ॥१४-१९॥

केषां सम्बन्धिनीः प्रतिमाः ? इत्याह—

जिणेंदचंदाण णरेंद-चंद-नागेंद-देवेंदऽभिवंदियाणं ।

इति वृत्तार्द्धम् । 'जिणेंदचंदाण'ति जिनेन्द्रचन्द्राणाम्, जिनाः=अवधिजिनादयः,
तेषामिन्द्राः=स्वामिनः सामान्यकेवलिनः, तेषां चन्द्रा इव चन्द्रा जिनेन्द्रचन्द्राः=तीर्थकृतः, तेषां
प्रतिमा निर्मापयेदिति सण्टङ्कः । कथम्भूतानां तेषाम् ? अत आह-'नरेंद-चंद-नागेंद-
देवेंदऽभिवंदियाणं'ति नरेन्द्राः=चक्रवर्त्यादयः चन्द्राः=ज्योतिष्केन्द्राः, नागेन्द्राः=भवनपतिविशेषनायकाः
शेषभवनपतीन्द्रोपलक्षणमेतत्, देवेन्द्राः=त्रिदशपतयः, नरेन्द्राश्च चन्द्राश्चेत्यादिद्वन्द्वः,
तैरभिवन्दिताः=नमस्कृता ये ते तथा [? तेषाम्] । उक्तं च—

सुर-असुर-जोइसाणं वण-विजाहर-णराण जे पहुणो ।

भत्तिभरणिब्भरेहिं जिणेंदचंदा णमेज्जंति ॥१६॥

तासां प्रतिमानां स्व-परकारितानां यद् विधेयं तद् उत्तरार्धेनाऽऽह—

कुज्जा महग्घेहिं महारिहेहिं, अट्ठप्पगारा पडिमाण पूया ॥१७॥

इति वृत्तार्द्धम् । 'कुज्ज'ति कुर्याद्=विदध्यात् । 'महग्घेहिं'ति महाघैः=महामूल्यैः ।

१. पु० जिणिंदयंदाण ॥ २. ला० 'याणं ति । वृत्ता' ॥ ३. सं० वा० सु० 'न्द्राः सामा' ॥ ४. सं०
वा० सु० 'ता ये ते ॥ ५. ला० तासां च प्र' ॥ ६. ला० ता० 'प्पगारा ॥ ७. सं० वा० सु० प्रतिषु 'कुज्ज ति'
इति पाठो नास्ति ॥

‘महारिहेहिं’ति महाहैः=गौरव्यैः । ‘अष्टप्पयार’ति अष्टप्रकारा=अष्टभेदा । ‘पडिमाण’ति प्रतिमानां=जिनप्रतिकृतीनाम् । ‘पूय’ति पूजा=सपर्येति वृत्तार्थः ॥२०॥

तस्या एवाऽष्टप्रकारपूजायाः प्रतिपादनार्थमाह वृत्तम्—

पुप्फेहिं गंधेहिं सुगंधिएहिं, धूवेहिं दीवेहिं य अक्खएहिं ।
पाणाफलेहिं च घएहिं णिच्चं, पाणीयपुण्णेहिं य भायणेहिं ॥२१॥

‘पुप्फेहिं’ति पुष्पैः=जात्यादिकुसुमैः, पूजां कुर्यादिति पूर्ववृत्तानुवृत्तेन सम्बन्धः । उक्तं च—

प्रत्यग्रोन्मेषनिर्यद्धलपरिमलैर्गुम्फसौन्दर्यरम्यै-

भ्राम्यत्सौगन्ध्यलुब्धभ्रमरकुलकलक्राणवाचालितान्तैः ।

पुष्पैः किञ्जल्कवद्भिर्जलकणकलितैः प्रत्यहं पुण्यभाजः,

श्रीमज्जेन्द्रबिम्बं पुलकितवपुषः पूजयन्त्यादरेण ॥२७॥

तथा ‘गंधेहिं’ति गन्धैः=वासैः । उक्तं च—

जातीफलेला-मलयोद्धवादिक्षोदोद्धवत्वात् स्फुटजातगन्धैः ।

कर्पूरपानीयकृताधिवासै र्वासैर्जिनं पुण्यकृतोऽर्चयन्ति ॥२८॥

‘सुगंधिएहिं’ति सुगन्धिभिः=घ्राणेन्द्रियघ्राणिजनकैः ॥ एतच्च विशेषणमुभयपद-
योरप्यायोज्यम् । यतः पुष्पैरपि सुगन्धिभिरेव पूजा विधेया, सुगन्धिपुष्पसद्भावे सति
विशिष्टभावोत्पादकत्वात् । उक्तं च—

पवरेहिं साहणेहिं पायं भावो वि जायए पवरो ।

न य अण्णो उवओगो एएसिं सयाण लट्ठयरो ॥२९॥ (पञ्चा० गा० १६०)

अथ चेत् सुगन्धिपुष्पाण्येव न सम्पद्यन्ते, शक्तिर्वा न भवति, ततो यथासम्भवमपि पूजा
विधीयमाना गुणाय सम्पद्यते । उक्तं च—

कल्हारपत्तियाए णड्ढणीरेणं जिणेंदपूयाए ।

धन्ना कल्लणपरंपराएँ मोक्खम्मि संपत्ता ॥३०॥

अत्र चोक्तगाथायां धन्याकथानकं सूचितम् । तदपि मुग्धजनपूजाभावप्रकर्षप्रतिपादनार्थं
लिख्यते—

१. सं० वा० सु० ‘माणं’ ति ॥ २. ला० ‘नार्थं’ वृत्तमाह ॥ ३. ला० सुहं(यं)धि ॥ ४. ला०
‘यप्रीतिजन’ ॥ ५. ला० ‘या यथाशक्तिपुष्प’ ॥ ६. ला० ‘प्रकर्षसम्पादनार्थ’ ॥

१७. धन्याकथानकम्

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे महोदयाणईए पच्चासण्णं सिरिवद्धणं णाम णयरं । तत्थ य दरियारिमत्तमायंगघडाकुंभनिब्भेयपच्चलपउट्टकंठीरवो सिरिवम्मो णाम राया । तस्स य सयलंतेउरप्पहाणा निज्जियरइरूवलावण्णा सिरिकंता णाम महादेवी । ताणं च जम्मंतरोवज्जियपुण्णपब्भारसंजणियविसिद्धविसयं सुहमणुहवंताणं वच्चए कालो । अन्नया य देवी फल-फुल्लेरेहिरं णियकंतिविच्छाइयासेसवणलयं कप्पलयं सुमिणे पासेत्ताणं पडिबुद्धा । साहियं च जहाविहिणा सुमिणयं दइयस्स । तेण वि समाइट्ठं जहा 'देवि ! तुह सयलविलयायणप्पहाण बहुजणोवगारिणी धूया भविस्सइ । देवी वि 'एवं होउ'ति अभिणंदिऊण गया सट्ठाणं । तओ तं चेव दिणमाइं काऊण पवड्डमाणगब्भा पूरेज्जमाणजिणबिंबपूया-णहवणाइडोहला नियसमए य पसूया देवी । दिट्ठा य नियपहाजालेणोज्जोयंती तमुदेसं दारिया । निवेइओ य धूयाजम्मो णरेंदस्स । तेणावि जहोचियं ठिइपडियं काऊण निव्वत्तसुइजायकम्माए पइट्ठियं णाभं धूयाए रयणप्पभ ति । सा य निव्वाय-निव्वाघाय-गिरिकंदरसमल्लीण व्व चंपयलया वड्डइ देहोवचएण, सुक्कपक्खचंदलेह व्व कलाकलावेण य, जाव जायचोदसवारिसिय ति । तओ दासचेडियाचक्कवालसंपरिवुडा कंचुइसमेया पाइक्कवंदसंपरिखित्ता सुवण्णमयजंपाणारूढा हिंडइ पइदिणं अभिरममाणी उज्जाण-वावि-दीहिया-सरोवराईसु ।

अन्नया भणिया पियंकरियाऽहिहाणाए दासचेडीए 'सामिणि ! न कयाइ अम्हे महोदयानइतीरड्डिय उज्जाणेसु गयाओ, ता जइ सामिणीए पडिहासइ तो तत्थ गंतूण उज्जाणसिरिं नइं च पेच्छामो' । तओ सा सहरिसं 'एवं होउ'ति जंपमाणी गया तत्थ । अवलोइया य परिपेरंतेसु भमिऊण महानई, पविट्ठा य कोउणेण नईतीरड्डियं वरोज्जाणं । तत्थ य असोय- पुण्णाय-नाय-हिंताल-ताल-तमाल-सरल-सज्जऽज्जुण-सहयार-चंपय-बउल-तिलय-लउय- छत्तोय- सत्तिवण्णाइपहाणतरुवरमज्झड्डियं पेच्छइ अदब्भसरयब्भविब्भमं जिणमंदिरं । तं च दड्डूण हरिसुप्फुल्लोयणा जाव पविसइ ताव दिट्ठा अंकमहारयणविणिम्मिया भयवओ चंदप्पहसामित्थंकरस्स पडिमा । 'कहिं मण्णे मए एसा पडिया एयं च मंदिरं दिट्ठं'ति ईहा-ऽपूहमगणगवेसणं कुणमाणी मुच्छावसविमउलमाणलोयणा पव्वायंतवयणकमला थरथरंतसव्वंगोवंगा विमुक्कसंधिबंधणा धसत्ति धरणीयलम्मि निवडिया । तओ पच्चासण्णपरियणो 'किमेयं किमेयं ?' ति हाहकंदपरो विविहाओ चेट्ठाओ काउमाढत्तो । अवि य—

१. सं० वा० सु० 'द्दीवे भारहे ॥ २. सं० वा० सु० णाम देवी ॥ ३. सं० वा० सु० 'यविसय ॥ ४. ला० 'प्पह ति ॥ ५. ला० वि ॥ ६. सं० वा० सु० 'या [च] उदसवरि' ॥ ७. सं० वा० सु० पहासइ ॥ ८. सं० वा० सु० 'हिंताल-तमा' ॥ ९. ला० 'सत्तव' ॥ १०. ला० हरिसप्फु' ॥ ११. ला० 'यलं संनिव' ॥

अंगाईं मलइ को वि हु, को वि हु सलिलेणं सिंचई तुरियं ।
को वि हु वीयइ वरतालियंटवाएण अणवरयं ॥१॥

गोसीसचंदणेणं सरसेणं को वि लिंपई देहं । को वि हु तुरियं तुरियं गंतुं रायस्स पासम्मि ॥२॥

विण्णवई 'देव ! परितायह त्ति ण यै किंचि कारणं मुणिमो ।
किंतु अवत्था गरुई वट्टइ कुमरीएँ देहम्मि' ॥३॥

तओ राया तं निसामिऊण बौहोल्लोयणो संभमवसखलंतवयणो 'अरे ! वाहरह तुरियं विज्जं'ति भणमाणो जच्चतुरंगमारूढो झड त्ति गओ जिणमंदिरं । तयणुमग्गेण य सिरिकंतादेवीपमुहमंतेउरं, सामंत-मंति-पउर-लोगो य । इत्थंतरम्मि य सुमरेऊण पुव्वजाइं लद्धचेयणाउड्डिया कुमरी । रण्णा य उच्छंणे णिवेसिऊण पुच्छिया 'वच्छे ! किमेयं ?' ति । तीए भणियं—

'अडइहिं पत्ता णइहिं जलु तो वि ण वूहा हत्थ ।
अम्मो ! तसु कव्वाडियह अज्ज वि सा इ अवत्थ' ॥४॥

राइणा भणियं 'वच्छे ! ण किंचि एयमवगच्छामो ।' तीए संलत्तं 'ताय ! उवविसावेह लोयं, होह दत्तावहाणा, जेण सव्वं सवित्थरं साहेमि एयस्स दूहयस्स अत्थं' । वयणाणंतरं च पडिहारेण णिवेसिओ सव्वो वि लोगो । राइणा वि भणियं 'वच्छे ! दत्तावहाणो चेवाहं ता साहेहि सव्वं । रयणप्पहाए भणियं—

अत्थि ताव तुम्हाण पसिद्धं चैव एयं सिरिवद्धणं णाम णगरं । इत्थ य अत्थि आजम्मदोरिदोवहओ पइदिणं कट्ठभारयाऽऽणयणजणियभोर्येण ऽच्छायणवित्ती भगालिया- हिहाणो णाम कव्वाडिओ । तस्स य धन्ना णाम भारिया । ताणि य पइदिणं पच्छिमरयणीए उत्तरिऊण इमं महोदयं महणइं वच्चंति कट्ठाणं । सीसारोवियभारणाणि समागच्छंति जाव एस जो उज्जाणस्स अदूरसामंते वडरूखो, तस्स य छायाए वीसमेऊण णगरं पविसंति । अन्नम्मि दिणे वीसमंतीए भणिओ भत्ता धण्णाए 'नाह ! मम तिसाए कंठो सुसइ, ता जइ तुमं भणसि तो हं णईए पाणियं पिबित्ता समागच्छामि ।' तेण भणियं 'भदे ! घरं पि नाइदूरत्थं, ता तत्थेव वच्चामो ।' तीए भणियं 'बाढं तिसाभिभूय म्हि' । तेण भणियं 'जइ एवं तो सिग्घमागच्छाहि ।' गया य सा । पाउं च पाणियं

१. सं० वा० सु० 'लेहिं सिंचए ॥ २. सं० वा० सु० 'इ को वि परि' ॥ ३. सं० वा० सु० वि ॥ ४. सं० वा० सु० कुमारिस्स देह' ॥ ५. सं० वा० सु० बाहल्ल' ॥ ६. सं० वा० सु० 'ण सिरि' ॥ ७. सं० वा० सु० 'णा य उ' ॥ ८. ला० कुमारी ॥ ९. ला० भूहा ॥ १०. सं० वा० सु० अम्मी ॥ ११. सं० वा० सु० 'व सिरि' ॥ १२. सं० वा० सु० 'दरिदो' ॥ १३. ला० 'णवित्ती ॥ १४. सं० वा० सु० 'वच्चामि ॥ १५. सं० वा० सु० 'भूया तेण ॥

जाव समागच्छइ ताव पेच्छइ एयं वरोज्जाणं । तओ तीए चित्तियं 'अहो ! अम्हेहिं मंदभगेहिं गच्छंतेहिं अंधयारत्ताओ, आगच्छंतेहिं भारकंतेहिं ण कयाइ वि एयं उज्जाणं सच्चवियं, दिट्ठव्वदरिसणफलाणि य लोयणाणि, ता संपयं पि सहलीकरेमि लोयणाणि'ति । चित्तंती पइड्डा एयमुज्जाणं । तओ विम्हय-कोउग-विप्फारियलोयणा इओ तओ वलियकंधरं णाणाविहतरुगहणं पेच्छमाणा समागया एयं उदेसं । तओ सच्चवियं एयं जिणभवणं । अहो ! अच्छरियभूयं किं पि एयं देवहरयं दीसइ, ता पविसित्ता णिरूवेमि । पविसंती य पेच्छइ-

रणविणिम्मियसोवाणपत्तियं मणिणिबद्धभूमितलं । कंचणमयखंभुग्गयबहुविहभंगेल्लपुत्तलियं । ५॥
ईसरवरगेहं पिव रमणीयमणेगरूवयाइण्णं । भोयणमंडवसरिसं वरसिप्पकरोडयाईहिं । ६॥

आगासं व सुतारं सचंदयं वित्थडं सचित्तं च । वरणयरं व सुंसालं सगं व विमाणदेवजुयं । ७॥
एवंविहं णियंती जा पविसइ ताव पेच्छइ सहसा । रागग्गिपसमजलहरचंदप्पहणाहवरबिंबं । ८॥
तं पेच्छिऊणं सहसा भत्तिवसोल्लसियंयडरोमंचा । भूलुलियभालवड्डा पडिया पाएसु देवस्स । ९॥
विण्णवइ 'गुणे वंदणविहिं च जाणामि तुज्झ णो णाह ! जं पुण तुह भत्तीए होइ फलं होउ तं मज्झ' । १०॥

तयणंतरं च चित्तियं तीए 'जइ कह वि णवणपुव्वयं पूजिऊण वंदिज्जइ ता सोहणं हवइ, कतो पुण अम्हाणं पुण्णवियलाणं पुप्फाइसामग्गीअभावाओ एयं संभवइ ?' ति । चित्तंतीए पडिया चित्ते अडविकेयारे दिट्ठा कल्हारपत्तिया । 'कल्लं विहीए पूयं करिस्सामि'ति मणोरहापूरिज्जमाणहियया गया भत्तुणो समीवे । तेण पुच्छिया 'किं चिरावियं ?' । तीए भणियं 'णाह ! मए कस्सइ देवस्स एवंविहमच्चब्भुयं बिंबं दिट्ठं, तमवलोयंती य ठिया इत्तियं वेलं, ता तुमं पि गंतूणावलोइउं वंदेता य करेहि णियणयण-जम्म-जीवियाइं सहलाइं' । तेण वि 'आ पावे ! अम्हाणं ऊसूरं वड्डइ, तुमं पुण खज्जसि लग्गा देवेण' ति भणमाणेणं उप्पाडिओ कट्ठहारओ । पविट्ठाणि य णयरं । बीयदिणे पच्चग्गवारयं घेत्तूण नईपुल्लिणे नूमेत्ता गया अडविं । आगमणसमए य वत्थंचले घेत्तूण कल्हारपत्तियं समागया वीसमणट्ठाणं । तओ तीए भणियं 'णाह ! वच्चामो तस्स देवस्स वंदणत्थं, एसा य मए आणीया कल्हारपत्तिया, एयं च णईपाणीयं, ता णवेत्ता पूइता य वंदामो; जओ एवंविहदेवस्स पूयाइयं इहलोए परलोए य कल्लणकारयं भवइ' । तेण भणियं 'णिल्लक्खणे ! किं मज्झ वि जहा तुज्झगहो तहा विलगो ?' । तीए भणियं 'जं किंचि तुह पडिहासइ तं भणसु कुणसु य, अहं पुण जाव तस्स

१. ला० दट्ठ व्व' ॥ २. सं० वा० सु० 'णि-त्ति, संप' ॥ ३. ला० 'माणी' ॥ ४. सं० वा० सु० 'वियं जिण' ॥ ५. सं० वा० सु० 'खंभग्गय' ॥ ६. ला० 'सिप्पिक' ॥ ७. सं० वा० सु० 'सुसारं' ॥ ८. ला० 'हजिणबिंबं' ॥ ९. ला० 'ण तो सा भत्ति' ॥ १०. ला० 'यपाडरो' ॥ ११. सं० वा० सु० 'करेह' ॥ १२. ला० 'वि पावे' ॥ १३. ला० 'वट्टए' ॥ १४. 'ट्ठभारओ' ॥ १५. ला० 'लिणम्मि नूमिन्ता' ॥ १६. ला० 'गहिऊण' ॥ १७. ला० 'नईए पा' ॥ १८. ला० 'वंदेमो' ॥ १९. ला० 'ज्झ तहा गहो विल' ॥

देवस्स चलणजुगलं ण वंदियं ताव णागच्छामि त्ति निच्छओ' । तेणावि णिच्छयं णाऊणं जंपियं 'जं तुह रोयइ तं कुणसु'त्ति । तओ गया धण्णा । णईए पक्खालिया कर-चरणा । भरिओ सलिलस्स वारओ । पविट्ठा देवहरयं । ण्हविया पडिमा । पूइऊण य पुव्वक्कमेण वंदिया । तओ भगवंतं चेव हियएणुव्वहंती गया सत्थामं । एवं दिणे दिणे करेइ, जाव अन्नम्मि दिणे पुव्वकयकम्मदोसेण संजाओ तीए सरीरे महंतो रोगायंको । तेण य पीडिज्जमाणीए चिंतियं "अहो ! महमपुण्णता जेणऽज्ज भगवओ वंदणत्थं ण सक्केमि गंतुं, न णज्जइ 'एवंविहसरीरकारणे किं पि मे भवेस्सइ ?' ता सो चेव भगवं इहलोए परलोए य मह सरणं" । ति ज्ञायंती मरिऊण समुप्पण्णा एसा हं तुज्झ धूय त्ति ।

अज्ज पुण एयं परमेसैरवरबिंबं दड्ढूण समुप्पण्णं मे जाईसरणं । तेण कारणेण मए एवं पढियं । जइ उण तायस्स न पच्चओ तो वाहरावेह भग्गलियं । तओ रण्णा पुच्छिओ दंडवासिओ 'अरे अत्थि एत्थ भग्गलियाहिहाणो कव्वाडिओ ?' । तेण भणियं 'देव ! अत्थि' । राइणा भणियं 'सिग्घमाणेहि' । तओ कंपंतसव्वंगो आणीओ झत्ति तेण सो । रण्णा अभयपयाणाइणा समासासिऊणं पुच्छिओ 'किमत्थि का वि तुज्झ भज्जा ?' । तेण भणियं 'देव णत्थि संपयं, पुव्वं पुण आसि धण्णा णाम, किंतु पणरसमं वरिसं मयाए तीसे वट्ठइ' । तओ राइणा भणियं 'भद ! किं दरि[सि] जइ सा तुज्झ ?' । तेण भणियं 'ते(दे)व ! किं मयाणि कत्थ दीसंति ?' । राइणा भणियं 'दीसंति चेव, जओ चिट्ठइ पच्चक्खा चेव एसा तुह भारिया' । तेण जंपियं 'ण एसा मह भारिया किंतु तुम्ह धूय'त्ति । तओ रयणप्पहाए भणियं 'अरे मुरुक्ख ! सा चेवाहं तुज्झ भारिया धण्णाहिहाणा एयस्स भयवओ सयलदेवाहिदेवस्स तियसिंदविंदविंदज्जमाणचरणारविंदस्स चिंतामणि-कामधेनु-कप्पपायवऽब्भहियस्स पूयाइप्पहावेणं सयलकलाकलावाइगुणकलिया रायधूया संजाय म्हि' । साहियंइ एंगंतरमियहसियाइयाणि सव्वाणि सपच्चयाणि चिण्हाणि । तओ तेण जंपियं 'देव ! संभवइ एयं जओ जाणइ एसा मह दइयासंतियाणि रहस्साणि' । तीए भणियं 'पुव्वं ताव मए भण्णमाणेणावि ण पडिवण्णं तए मह वयणं ता संपयं पि करेहि जिणपूयाइयं धम्माणुट्ठाणं, जेण जम्मंतरे वि ण होसि एवंविहदुक्खाण भायणं' । तओ गुरुकम्मयाए जाहे ण किंचि पडिवज्जइ धम्मवयणं तओ 'अहो । असुहकम्मपरिणई जेण एवंविहे वि पच्चए ण पडिवज्जइ एस धम्मं'त्ति चिंतिऊण किंचि उचियं दाऊणावहीरिऊण तं, धम्माभिमुहं च काऊण पभूयलोयं उट्ठिया रायदुहिया रायाइनीसेसलोगो य । गयाणि य सव्वाणि सट्ठाणं ति ।

१. सं० वा० सु० 'ण जं तुह' ॥ २. सं० वा० सु० सत्थानं ॥ ३. सं० वा० सु० वि ॥ ४. ला० मज्झाऽउणया ॥ ५. ला० 'सरबिंबं' ॥ ६. ला० 'वेहि' ॥ ७. ला० 'णा आइट्ठं सि' ॥ ८. सं० वा० सु० 'सि ओ पु' ॥ ९. सं० वा० सु० 'ए त्ति तीसे' ॥ १०. सं० वा० सु० 'त्ति । रय' ॥ ११. ला० तुह भज्जा ध' ॥ १२. ला० 'याणि य ए' ॥ १३. ला० 'हो कम्मप' ॥ १४. ला० 'हं काऊ' ॥

तओ पइदिणं जिणवंदणं-ऽच्चण-ण्हवण-जत्ताइयाणि कुणंतीए, गुरुजणमाराहयंतीए, सुसाहुजणमुहविणिगयसिद्धंतं सुणंतीए, सुपत्ताइं पडिलाहयंतीए, दीणा-ऽणाहाइमणोरहे पूरंतीए, साहम्मियजणवच्छल्लुमायरंतीए, जणणि-जणगाण पडिबोहमुप्पायंतीए जाव गच्छंति कइवयदिवसा ताव अन्नम्मि दिवसे समागओ महपुरणयर सामिरिउविजयरायसंतिओ महंतओ । कयजहोचियपडिवत्तिणा य विण्णत्तं तेण जहा 'देव ! तुह धूयागुणगणमायणिऊण दढमावज्जियहियएण तीसे वरणत्थं पेसिओ हं देवेण रिउविजयराइणा, तो जइ तुम्ह पडिहाइ तो देज्जउ सा देवस्स' । राइणा वि 'एवं होउ'ति भणेऊण सक्करेत्ता विसर्जिओ महंतओ । तओ सोहणदिणे महया भडचडारेण सयंवरा चेव पेसिया रयणप्पहा । परिणीयांसोहणदिणे । तओ ताणं सब्भावसारं तिवगसंपायणपरं विसयसुहमणुहवंताणं वच्चए कालो । अन्नया य कंचुगिवयणाओ वियाणेऊण चउणाणसंपण्णविजय-सिंहसूरिसमागमणं णिगयाणि वंदणवडियाए । वंदेत्ता य णिसण्णाणि जहोचिये भूभागे । धम्मलाभपुव्वयं च भणियं भगवया—

जम्मण-मरणजलोहो दालिदमहोम्मिवीइपरिकलिओ । वाहिसयजलयरणो एसो रुदो भवसमुदो । ११।

एत्थ य णर-तिरिएसुं हिंडंतो णिययपावपडिबद्धो । दुक्खेहिं माणुसत्तं लहइ जिओ कम्मविवरेण । १२।

तं तुब्भेहिं लद्धं माणुसजम्मं कुलाइसंजुत्तं । ता उज्झिउं पमायं कुणह सया उज्जमं धम्मे । १३।

एवं च सोऊण संजायचरणपरिणामेहिं विण्णत्तं तेहिं 'भयवं ! जाव जेड्डउत्तं रज्जेऽहिसिंचामो ताव तुब्भं पायमूले पव्वज्जागहणेण सहलीकरेस्सामो करिकण्णचंचलं माणुसत्तणं'ति । भयवया वि 'मा पडिबद्धं करेज्जाह'ति भणिए गयाणि णियमंदिरं । साहिऊण य मंति-सामंताइयाण णिययाभिप्पायं, अहिसित्तो पुरंदराहिहाणो जेड्डउत्तो रज्जे । तओ महाविभूर्इए सिबियारूढाणि गयाणि भगवओ समीवे । आगमविहिणा य दिक्खियाणि भयवया । समप्पिया रयणप्पहा पवत्तिणीए । तओ अब्भसिऊण किरियाकलावं, काऊण विविहाणि तवच्चरणाणि, आराहिऊण गुरुयणं, संलिहिऊण अप्पाणं, पालिऊण णिकलंकं सामण्णं, पडिवज्जिऊणाऽणसणं, सुहज्झाणजोगेण चइऊण देहपंजरं गयाणि देवलोगं । एवं च कल्लाणपरंपराए सा धण्णा सिद्ध ति ।

[धन्याख्यानकं समाप्तम् । १७]

ता पहाणपुप्फाईणमसंपत्तीए इयरेहि वि पूया विहेज्जमाणा महाफला भवइ । संपत्तीए पुण पहाणेहिं चेव कायव्वा । अतो भणितम् 'सुगंधिएहिं'ति । 'धूवेहिं' ति धूपैः=अग्निदाह्यघनसार-

१. ला० 'वंदण-ण्हव' ॥ २. ला० 'इयं कु' ॥ ३. ला० जण(णं) समारा ॥ ४. ला० 'त्ताणि प' ॥ ५. ला० 'जणयाइयाण' ॥ ६. ला० कइ वि दियहा ॥ ७. ला० दिणे ॥ ८-९. ला० 'रिवु' ॥ १०. ला० 'या य सो' ॥ ११. ला० तो ॥ १२. ला० णं । अ० ॥ १३. सं० वा० सु० सुगंधेहिं ।।

सारङ्गमद-मीनोद्वारा-ऽगरु-प्रभृतिद्रव्यनिकरसंयोगैः । उक्तं च—

कर्पूरा-ऽगरु-चन्दनादिसुरभिद्रव्यव्रजोत्पादितै-

र्वह्युल्लासितलोलधूमपटलव्याप्तावकाशैर्दिशम् ।

सान्द्रामोदहतालिजालजटिलैर्घ्राणेन्द्रियाह्लादिभि-

धूपैर्धन्यजना जिनस्य सततं कुर्वन्ति पूजां मुदा ॥१०१॥

तथा 'दीवेहिं य'ति दीपैश्च=अन्धकारापहवर्ति-तैलसंयोगप्रज्वालिताग्निकलिकारूपैः उक्तं च—

पूजाविधौ विमलवर्त्तिसुगन्धतैलैरुद्यत्प्रभाप्रहतदेवगृहान्धकारम् ।

श्रीमज्जिनेन्द्रपुरतः प्रतिबोधयन्ति, धन्या नरा विशदभक्तिभरेण दीपम् ॥१०२॥

तथा 'अखण्णि'ति अक्षतैः=अष्टमङ्गलकादिरचनारचिताखण्डशाल्यादितण्डुलैः । उक्तं च—

शङ्ख-कुन्दावदातैर्जलक्षालितैर्गन्धशालैर्विशालैः सुगन्धोत्कटैः ।

सर्वदैवाक्षतैरक्षतैः पूजनं, तीर्थनाथस्य भक्त्या विधेयं बुधैः ॥१०३॥

तथा 'णाणाफलेहिं च' ति नानाफलैश्च=अनेकप्रकारपाकपूताग्रादिफलविशेषैः । उक्तं च—

पाकाधिरूढविविधोज्ज्वलवर्णशोभैर्नेत्राभिरामरचनैः स्पृहणीयगन्धैः ।

नानाफलैरपि च सुन्दरकन्द-मूलैः, पूजां जिनेन्द्रपुरतः प्रथयन्ति धन्याः ॥१०४॥

तथा 'घएहिं'ति घृतैः=प्राज्याज्यभेदैः । उक्तं च—

स्वच्छैरिन्द्रियसौख्यहेतुभिरलं सद्भाजनेष्वर्पितै-

राज्यैः प्राज्यसुगन्धवर्णकलितैर्निःशेषदोषापहैः ।

राग-द्वेषमदोद्भुरारिजयिनः श्रीमज्जिनस्याऽग्रतः ।

पूजां धन्यजनाः प्रहृष्टमनसः कुर्वन्ति सद्भक्तितः ॥१०५॥

'निच्चं'ति नित्यं=प्रतिदिनम् । यतः—

प्रतिदिवससञ्चयाद् वृद्धिमेति पुण्यं यदल्पमपि भवति ।

सरघामुखमात्रचितं, यथा हि मधु घटशतीभवति ॥१०६॥

एतच्च विशेषणं समस्तपूजास्वायोज्यम् । तथा 'पाणीयपुणोहिं य भायणेहिं'ति चकारस्य व्यवहितसम्बन्धात् पानीयपूर्णभाजनैश्च=सुगन्धि-स्वच्छ-शीतलजलभृतकरकादिस्थानविशेषैः । उक्तं च—

निर्मलोज्ज्वलजलोपशोभितं, पूर्णपात्रनिकरं कृतादरः ।

ढौकयेत् सततमेव वेश्मभाग्, जातसान्द्रपुलको जिनाग्रतः ॥१०७॥

इह पूर्वत्रं च चकारोऽनुक्तसमुच्चये, तेन नैवेद्य-वस्त्रा-ऽऽभरण-विलेपनादिपूजानाम-
प्यष्टप्रकारपूजायामन्तर्भावो द्रष्टव्य इति वृत्तार्थः ॥१२१॥

उक्तं पूजास्वरूपम् । साम्प्रतं यादृग्विधविशेषणयुक्तः सन् जिनबिम्बपूजाप्रवृत्तः प्राणी
यादृग्विधदुःखभाग् न भवति तद् वृत्तद्वयेनाऽऽह—

पूयं कुणंतो बहुमाणवंतो, उदारचित्तो जिणभत्तिजुत्तो ।

दारिद्र-दोहग्ग-दुरंतदुक्ख-दुव्वण्ण-दुग्गंध-दुरूवयाणं ॥१२२॥

संताव-संजोग-वियोग-सोग-णिहीण-दीणत्तणमाइयाणं ।

तिक्खाण दुक्खाण भवुब्भवाणं, ण भायणं होइ भवंतरे वि ॥१२३॥

‘पूयं’ति, पूजां=सपर्यां पूर्वोक्ताम् । ‘कुणंतो’ति कुर्वन्=विदधानः । ‘बहुमाणवंतो’ति
बहुमानवान्=आन्तरप्रीतिविशेषयुक्तः सन् अटवीमध्यस्थितशिवकपूजार्थनिरूपितधार्मिकविहित-
विशिष्टपूजावामपादोत्सारकशिवकोपरिक्षिप्तमुखगण्डूषदक्षिणहस्तस्थितपुष्पपूजाकरणानन्तर-
पादपतितशिवकसम्भाषणकुपितधार्मिकप्रत्ययार्थोत्सारितैकलोचनशिवकदर्शनोद्भूतखेदबहुमानवश-
परवशीभूतभल्ल्युत्खातनिजलोचनप्रदपुलिन्द्रकवत् । पुनरपि कथम्भूतः ? ‘उदारचित्तो’ ति
उदारचित्तः=अकृपणाशयः । पुनरपि कीदृशः ? ‘जिणभत्तिजुत्तो’ति जिनभक्तियुक्तः, जिनाः=
रागादिजेतारस्तीर्थकृतः, तेषां भक्तिः बाह्यकृत्यकरणरूपा तथा युक्तः=समन्वितो जिनभक्तियुक्तः ।
‘ण भायणं होइ भवंतरे वि’ इति संप्रत्ययः । केषाम् ? इत्याह-‘दारिद्र-दोहग्ग-दुरंतदुक्ख- दुव्वण्ण-
दुग्गंध-दुरूवयाणं’ति दारिद्र्यं=निर्द्रव्यता, तच्च सर्वापदामास्पदम् । उक्तं च—

निर्द्रव्यो ह्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसो,

निस्तेजाः परिभूयते परिभवान्निर्वेदमागच्छति ।

निर्विण्णः शुचमेति शोकविहतो बुद्धेः परिभ्रश्यति,

भ्रष्टश्च क्षयमेत्यहो ! निधनता सर्वापदामास्पदम् ॥१०८॥

१. सं० वा० सु० ‘त्र चकारो ॥ २. सं० वा० सु० ‘पूजनमप्य’ । ३. सं० वा० सु० ‘धशेषगुणयुतः
सन् ॥ ४. ला० ता० दालिद् ॥ ५. सं० वा० सु० भवोब्भ’ ॥ ६. दृश्यतां बृहत्कल्पसूत्रप्रथमांशस्य २५३
तमपत्रप्रथमटिप्पणीगतं कल्पचूर्णे निष्ठितमे तदुद्धारणम् ॥ ७. सं० वा० सु० ‘तः उदारचित्तः ॥ ८. ला० पुनः
कीदृ’ ॥ ९. सं० वा० सु० ‘या संयुक्तः ॥ १०. ला० सम्बन्धः ॥ ११. ला० ‘स्पदम् यत उक्तम्-नि’ ॥ १२.
ला० ‘हो अधन’ ॥

दौर्भाग्यं=सर्वजनाप्रियत्वं महामानसिकदुःखहेतुः । उक्तं च—

दुस्सहदोहगकलंकजलणजालावलीपलित्ताणं ।

जीवंतभयाण णिरत्थएण किं तेण जम्मेण ? ॥१०९॥

दुरन्तदुःखम्=अपाराशर्म । दुर्वर्णः=विरूपा देहरुचिः । दुर्गन्धः=दुष्टगन्धः । दु(दू)रूपकं=विशोभाकृतित्वम्, स्वार्थे कप्रत्ययः । दारिद्र्यं च दौर्भाग्यं चेत्यादिद्वन्द्वः, तेषाम् । तथा 'संताव-संजोग-विओगसोग-णिहीण-दीणत्तणमाइयाणं तिकखाण दुक्खाण'ति सन्तापः=चित्तखेदः, स च महादुःखकारणम् । यतः—

माणसियक्खेयाओ मणुयाणं होइ जा महापीडा ।

अकहेज्जंता वि फुडं लक्खेज्जइ तणुतणुत्ताओ ॥११०॥

संयोगः=अनिष्टजनमीलकः, सोऽपि दुःखाय यतः—

जोऽणिट्टमाणुसेणं संजोगो मामि ! जायए कह वि ।

सो गरुयदुक्खदंदोलिदायगो होइ अबुहाण ॥१११॥

वियोगः=अभीष्टबान्धवादिवस्तुविप्रयोगः, आक्रन्दादिमहाखेदकारणं चाऽसौ । यतोऽवाचि—

रुदितं यच्च संसारे बन्धूनां विप्रयोगतः ।

तेषां नेत्राश्रुबिन्दूनां समुद्रोऽपि न भाजनम् ॥११२॥

तथा—

इट्ठाणं वत्थूणं पियजणमाईण विप्पओगम्मि ।

जायइ गरुयं दुक्खं, एणं मोत्तूण गयराणं ॥११३॥

शोकः=जनकादिमरणजनितश्चित्तखेदः, समस्तापदामास्पदं चासौ, यत उक्तम्-शोको हि नाम पर्यायः पिशाच्याः, रूपान्तरमाचक्षते पातकस्य, तारुण्यं तमसः, विशेषो विषस्य, अनन्तकः प्रेतनगरनायकोऽयम्, अनिर्वृत्तिधर्मा दहनोऽयम्, अक्षयो राजयक्ष्माऽयम्, अलक्ष्मीनिवासो जनार्दनोऽयम्, अपुण्यप्रवृत्तः क्षपणकोऽयम्, अप्रतिबोधो निद्राप्रकारोऽयम्, अनलसधर्मा सन्निपातोऽयम्, अशिवानुरोधो वरो विनायकोऽयम्, अबुधसेवितो ग्रहवर्गोऽयम्, अयोगसमुत्थो ज्योतिःप्रकारोऽयम्, स्नेहाद् वायुप्रकोपः, मानसाद् अग्निसम्भवः, आर्द्रभावाद् रजःक्षोभः, रसाद्

१. सं० वा० सु० 'महामानसदुःख' ॥ २. सं० वा० सु० 'द्वन्द्वः । तथा ॥ ३. सं० वा० सु० 'वियोगः ॥ ४. ला० एक्कं ॥ ५. ला० पिशाचस्य, ॥ ६. सं० वा० सु० 'वरोधिना' ॥

अतिशेषः, रागात् कालपरिणाम इति । किञ्च—

संतावचित्तखेयं णाणाविहआवईओ मरणं च ।

धम्म-ऽत्थ-कामहाणिं लहइ णरो सोगसंतत्ते ॥११४॥

‘णिहीण’ति भावप्रधानत्वाद् निहीनत्वम्=अकिञ्चित्करत्वम् तदप्यशर्मकारि । यतः—

णिंदिज्जइ अणवरयं पुरिसो णियणिद्धबंधवेहिं पि ।

रूयजुओ वि हु ण हु जो, समत्थओ कज्जकरणम्मि ॥११५॥

दीनत्वं=सत्त्वविकलता, मानसिक-शारीरिकासुखनिमित्तं च तत् । यतः—

जनक ! सहोदर ! मामक ! पितृव्य ! सुत ! भागिनेय ! मम कार्यम् ।

एतत् कुरु देहीदं लल्लिं दीनः करोतीत्थम् ॥११६॥

सन्तापश्च संयोगश्च वियोगश्च शोकश्च निहीनत्वं च दीनत्वं च संताप-संयोग-वियोग-शोक-निहीन-दीनत्वानि, तान्यादिर्येषां व्याधि-पारवश्या-ऽङ्गच्छेदादीनां तानि तथा, तेषाम् । ‘तिक्खाण दुक्खाण’ ति तीक्ष्णानां=असह्यानां दुःखानाम्=अशर्मणाम् । ‘भवुब्भवाणं’ति संसारोत्थानम् । न=नैव । ‘भायणं’ति भाजनं=स्थानम् । ‘होइ’ति भवति=जायते । ‘भवंतरे वि’ ति भवान्तरेऽपि=जन्मान्तरेऽपि, आस्तामिह जन्मनीत्यपि शब्दार्थः । इति वृत्तद्वयार्थः ॥१२२-२३॥

जिनबिम्बपूजाकारी यादृग्विधो न भवति तदुक्तम् । साम्प्रतं यादृशो भवति तद्वृत्तद्वयेनाऽऽह—

भवे पुणोऽसेससुहाण ठाणं, महाविमाणाहिवई सुरेंदो ।

तओ चुओ माणुसभोगभागी, रायाहिराया व धणाहिवो वा ॥१२४॥

कलाकलावे कुसलो कुलीणो, सयाणुकूलो सरलो सुसीलो ।

सदेवमच्चा-ऽसुरसुंदरीणं, आणंदयारी मण-लोयणाणं ॥१२५॥

‘भवे’ति प्राकृतत्वाद् भवति=जायते । पुनःशब्दो भिन्नवाक्यार्थः । ‘असेससुहाणं’ति अशेषसुखानां=समस्तसौख्यानां दारिद्र्यादिविपरीतानाम् । ‘ठाणं’ति स्थानम्=आस्पदम् । पूर्वत्रेहलोक-परलोकयोः प्रस्तुतत्वाद्, एतदिहलोके । परलोके तु ‘महाविमाणाहिवई’ ति महाविमानाधिपतिः महान्ति च तानि=बृहत्प्रमाणानि विमानानि च=देवनिकेतनानि महाविमानानि,

१. ला० रूवजु ॥ २. ला० ‘त्वं च सत्त्व’ ॥ ३. ता० थाणं ॥ ४. ला० सुरेंदो ॥ ५. सं० वा० सु० ‘त्वादिह’ ॥ ६. सं० वा० सु० ‘के महा’ ॥

तेषामधिपतिः=स्वामी । 'सुरेंदो' ति देवप्रभुः, उपलक्षणं चैतद् इन्द्रसामानिकादीनाम् । देवसुखमभिधाय पारलौकिकमेव मनुजसुखमाह 'तओ चुओ'ति ततः=देवलोकाच्च्युतः=व्युपरतः सन्निति गम्यते । 'माणुसभोगभागी'ति मानुषाणां=मर्त्यानां भोगाः=शब्दादयस्तान् भजते=सेवते तच्छीलश्चेति मानुषभोगभागी । 'रायाहिराया व'ति राज्ञां=महासामन्तानामधिराजः=चक्रवर्ती राजाधिराजः, वा शब्द इन्द्राद्यपेक्षया विकल्पवाची । 'धणाहिवो व' ति धनाधिपः=द्रव्यस्वामीश्चर इत्यर्थः, स च प्रस्तावात् क्षत्रियवणिग्-ब्राह्मणादिः । वा=विकल्पे ।

सोऽपि किम्भूतः ? इत्याह- 'कलाकलावे'ति कलाः=लेख्यादिविज्ञानरूपास्तासां कलापः=सङ्घातः कलाकलापस्तस्मिन् । 'कुसलो'ति कुशलः=प्रवीणः । 'कुलीणो'ति कुलीनः=विशुद्धपितृपक्षः, मातृपक्षोपलक्षणं चैतत् । 'सयाणुकूलो'ति सदा=सर्वकाल-मनुकूलः=प्रियकारी, सतां वा=सत्पुरुषाणामनुकूलः सदनुकूलो दीर्घत्वमलाक्षणिकम्, यद्वा सत्=संसत् परिषदित्यर्थः, सा अनुकूला यस्य सः सदनुकूलः । 'सरलो'ति सरलः=अकुटिलः । 'सुसीलो'ति सुशीलः=शोभनस्वभावः । 'सदेवमच्चा-ऽसुरसुंदरीणं'ति मर्त्याश्च=मनुजाः असुराश्च= भवनपतयो मर्त्या-ऽसुराः, सह देवैः=वैमानिकैर्वर्तन्ते ये ते तथा, तेषां सुन्दर्यः=रामास्तासाम् । 'आणंदयारि'ति आनन्दकारी=रागाद्युत्पादयिता, भवतीति क्रिया सर्वत्र सम्बध्यते । 'मण-लोयणाणं'ति मनोलोचनानां=चित्त-चक्षुषाम्, सुरादिवनितानन्दकत्वे च भरत उदाहरणम् । तथा च—

जं गंगादेवीए अणुरायपरव्वसाए रइसोक्खं । सह भुंजंतो वसिओ तीसे भवणम्मि बहुकालं ॥१॥
इत्थीरयणाईणं अण्णाण वि चित्तलोयणाणंदं । जणयंतो जं भुंजइ उदारभोगुब्भवं लच्छिं ॥२॥
तज्जम्मंतरतद्दोसरोगपीडियजइस्स किरियाए । उव्वरियरणकंबल-चंदण-गोसीसमोल्लेण ॥३॥
कारावियजिणमंदिरठावियतब्बिंबभत्तिकरणस्स । सोक्खाणुबंधजणयं अण्णसरिसं फलं मुणह ॥४॥

इति वृत्तद्वयार्थः ॥२४-२५॥

इत्थं बिम्बोचितकरणफलमुपदर्श्य सम्प्रत्युपदेशदानपूर्वकं प्रकरणोपसंहारमाह—

कारेज्ज तम्हा पडिमा जिणाणं, ण्हाणं पड्डा बलि पूय जत्ता ।

अण्णच्चयाणं च चिरंतणाणं, जहारिहं रक्खण वद्धणं ति ॥२६॥

'कारेज्ज'ति कारयेद्=विधापयेत् । 'तम्ह'ति तस्मात् । 'पडिम'ति प्रतिमाः=प्रतिकृतीः । 'जिणाणं'ति जिनानां सम्बन्धिनीः । न केवलं प्रतिमा एव कारयेत्, किं तर्हि ?—'ण्हाणं'ति स्नानं=गन्धोदकादिस्नात्ररूपम् । उक्तं च—

१. ला० सुरेंदो ॥ २. सं० वा० सु० भजति ॥ ३. सं० वा० सु० 'वात् क्षात्र-व' ॥ ४. सं० वा० सु० यदि वा सत् ॥ ५. ला० पर्वदि ॥ ६. ला० 'दिविलयानन्द' ॥ ७. ला० 'हारं वृत्तेनाह' ॥ ८. ला० 'ति' ॥ २६॥ पढमं ठाणं ति॥

गान्धर्वनृत्ययुक्तं नान्दी-जयघोषघूर्णितदिगन्तम् ।

स्नात्रं सद्गुणपात्रं कुरुत जना ! जिनवरेन्द्रस्य ॥११७॥

‘पङ्कट’ति प्रतिष्ठां=पूर्वोक्तविधिकारितबिम्बानामाकारशुद्धि-स्नात्र-मन्त्रादिन्यासरूपाम् ।
‘बलि’ति बलिं=विविधनैवेद्यरूपम् प्रतिमानामग्रत इति शेषः । ‘पूय’ति पूजां पूर्वोक्तामेव ।
‘जत्त’ति यात्रां=कल्याणका-ऽष्टाहिकादिषूत्सर्पणारूपाम् । उक्तं च—

जत्तामहूसवो खलु उद्दिस्स जिणेस कीरई जो उ ।

सो जिणजत्ता भण्णइ तीइ विहाणं तु दाणाई ॥११८॥

दाणं तवोवहाणं सरीरसक्कार मो जहासत्तिं ।

उचियं च गीय-वाइय-थुइ-थुत्ता पिच्छणाई य ॥११९॥

(पञ्चा० गा० ४०४-४०५)

तथैतच्च सर्वं यात्राप्रारम्भप्रस्तावे विधेयं यथा-प्रवचनप्रधानगुरुणा द्रष्टव्योऽनुशासनीयश्च
राजा, यथा—

सामण्णे मणुयत्ते धम्माओ णरीसरत्तणं णेयं ।

इय मुणिऊणं सुंदर ! जत्तो एयम्मि कायव्वो ॥१२०॥

इङ्गीण मूलमेसो सव्वासिं जणमणोहराणं ति ।

एसो य जाणवत्तं नेओ संसारजलहिम्मि ॥१२१॥

जायइ य सुहो एसो उचियत्थापायणेण सव्वस्स ।

जत्ताए वीयरगाण विसयसारत्तओ पवरो ॥१२२॥

एईए सव्वसत्ता सुहिया खु अहेसि तम्मि कालम्मि ।

एण्हिं पि आमघाएण कुणसु तं चेव एतेसिं ॥१२३॥

तम्मि असंते राया दट्ठव्वो सावएहिं वि कमेण ।

कारेयव्वो य तहा दाणेण वि आमघाउ ति ॥१२४॥

तेसिं पि घायगाणं दायव्वं सामपुव्वगं दाणं ।

तत्तियदिगाणमुचियं, कायव्वा देसणा य सुहा ॥१२५॥

तित्थस्स वण्णवाओ एवं लोणम्मि, बोहिलाभो अ ।

केसिंचि होइ परमो अण्णेसिं बीयलाभो ति ॥१२६॥

१. ला० स्नान-म ॥ २. ला० ‘ति विशेषः ॥ ३. सं० वा० सु० ‘णाई या ॥ ४. ला० ‘द्वो
राजाऽनुशासनीयश्च यथा ॥ ५. सं० वा० सु० लोगाण ॥

जं च्विय गुणपडिवत्ती सव्वण्णुमयम्मि होइ परिसुद्धा ।

स च्विय जायइ बीयं बोहीए तेणणाएण ॥१२७॥

इय सामत्थाभावे दोहिं वि वग्गेहिं पुव्वपुरिसाण ।

इय सामत्थजुयाणं बहुमाणो होइ कायव्वो ॥१२८॥

ते धण्णा सप्पुरिसा जे एयं एवमेव णीसेसं ।

पुव्विं करिंसु किच्चं जिणजत्ताए विहाणेण ॥१२९॥

अम्हे उ तह अधण्णा, धन्ना उण एत्तिण्ण जं तेसिं ।

बहुमण्णामो चरियं सुहावहं धम्मपुरिसाणं ॥१३०॥

इय बहुमाणा तेसिं गुणाणमणुमोयणाणिओगेण ।

तत्तो तत्तुल्लं चिय होइ फलं आसयविसेसा ॥१३१॥

(पञ्चा० गा० ४१७-४२८)

किमेतत् स्वकृतानामेव बिम्बानां कारयेदुताऽन्यकृतानामपि ? इत्याह-‘अण्णच्चयाणं च’ति देशिशब्दत्वात् चकारस्यापिशब्दार्थत्वाद् अन्यकृतानामपि परप्रतिष्ठापितानामपीत्यर्थः । ‘चिरंतणानं’ति चिरन्तनानां=प्रभूतकालीयानां यतो नूतनबिम्बकरणात् सीदत्परकृतबिम्बपूजनं बहुगुणम् । ‘जहारिहं’ति यथार्हं=यथायोग्यम् । किं पूजादिकमेव कृत्यमुतान्यदपि ? इत्याह ‘रक्खण वद्धणं’ति चस्य गम्यमानत्वाद् रक्षणं वर्धनं च । रक्षणं तदुपद्रवकारिनिवारणतः । वर्धनं निर्मलताकरणाद्युत्तरोत्तरविशेषापादनतः । यद्वा रक्षणं वर्धनमपि च द्रव्यस्येति शेषः । तत्र रक्षणं भक्षितोपेक्षितप्रज्ञाहीनदोषवर्जनतः, यतश्चैत्यद्रव्य-रक्षणफलमुक्तमुपदेशपदेषु -

जिणपवयणवुद्धिकरं विभावणं णाण-दंसण-गुणाणं ।

रक्खंतो जिणदव्वं परित्तसंसारिओ होइ ॥१३२॥ (गा० ४१८)

जिनप्रवचनवृद्धिकरं तत्सन्तानाव्यवस्थितिकारितया । विभावनं=दीपकम् । तद्विनाशे च महान् दोषः । यतस्तत्रैवोक्तम्—

चेइयदव्वं साहारणं च जो दुहइ मोहियमईओ ।

धम्मं व सो ण याणइ अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥१३३॥ (उप० गा० ४१४)

१. सं० वा० सु० जं चिय ॥ २. ला० ‘महम्मि’ ॥ ३. स्तेनज्ञातेन=चौरोदाहरणेन ॥ ४. ला० ‘म्बकारणात् पूजनं’ ॥ ५. ला० वर्धनबिम्बद्रव्य ॥ ६. सं० वा० सु० ‘णविद्धिकरं’ ॥

चैत्यद्रव्यं=जिनेन्द्रबिम्बवित्तम् । साधारणं च=सङ्घसम्बन्धि च । यः=पापकर्मा । द्रुह्यति=भक्षयति । धर्मं=निःस्पृहालक्षणम् । वाशब्दात् तद्भोगविपाकं च न जानाति । 'अथवा' इति प्रकारान्तरे । बद्धायुर्नरकादिषु, द्रोहणकालात् पूर्वमिति । किञ्च आस्तां श्रावकः साधूनापि तद्विनाशे नोपेक्षा विधेया । यतः—

चेइयदव्वविणासे तहव्वविणासणे दुविहभेए ।

साहू उविकखमाणो अणंतसंसारिओ होइ ॥१३४॥ (उप० गा० ४१५)

चैत्यद्रव्यविनाशे । तद्द्रव्यं=तदुपयोगिदारूपलेष्टकादि । द्विविधभेदे=नूतन-लग्नोत्पाटितभेदात्, मूलोत्तरभेदाद्वा द्विप्रकारे । मूलं=स्तम्भ-कुम्भिकादि, उत्तरं=छादनादि, तस्मिन् । यद्वा द्विविधभेदे स्वपक्ष-परपक्ष-जनितविनाशे । तथा—

संजइचउत्थभंगे चेइयदव्वे य पवयणुड्डाहे ।

इसिघाए य चउत्थे मूलगगी बोहिलाभस्स ॥१३५॥

'वद्धणं च' ति वर्धनं=कलान्तरप्रयोगादिना वृद्धिनयनम् । यतः—

जिणपवयणुवुद्धिकरं पभावणं णाण-दंसण-गुणाणं ।

वहुंतो जिणदव्वं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥१३६॥

चेइय-कुल-गण-संघे उवयारं कुणइ जो अणासंसी ।

पत्तेयबुद्ध गणहर तित्थयरो वा तओ होइ ॥१३७॥

(उप० गा० ४१८-४१९)

'अनाशंसी' निस्पृहसेवोऽसौ—

जो निरुवलेवचित्तो चेइयदव्वं विवहूए सो उ ।

भुंजितु पवरलच्छिं संपावइ सासयं ठाणं ॥१३८॥

कारयेदिति क्रिया सर्वत्र सम्बन्धनीया । 'इतिः' प्रकरणपरिसमाप्ताविति वृत्तार्थः ॥२६॥

इति श्रीदेवचन्द्राचार्यविरचिते मूलशुद्धिविवरणे प्रथमस्थानकविवरणं समाप्तम् ॥

जिनभवनाख्यं द्वितीयं स्थानकम्

व्याख्यातं प्रथमस्थानकम् । तदनन्तरं च क्रमायातं द्वितीयमारभ्यते । अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः—पूर्वत्र जिनबिम्बकृत्यमभिहितम् । प्रतिष्ठितस्य जिनबिम्बस्य चैत्यगृहेण प्रयोजनमिति जिनभवनविधानमनेनोच्यत इति । अनेन सम्बन्धेनायातस्यास्यादिसूत्राणि दश ।

जिणिंदयंदाण य मंदिराइं, आणंदसंदोहणिसंदिराइं ।

रम्माइँ रुंदाणि य सुंदराइं, भव्वाण सत्ताण सुहंकराइं ॥२७॥

‘जिणिंदयंदाण’ति जिनेन्द्रचन्द्राणाम्, जिनाः=अवधिजिनादयस्तेषामिन्द्राः=सामान्यकेवलिनो जिनेन्द्रास्तेषां चन्द्रा इव अष्टमहाप्रातिहार्याद्यैश्वर्ययुक्तत्वाद् उपरिवर्तिनस्तीर्थकृतो जिनेन्द्रचन्द्रास्तेषां सम्बन्धीनि । ‘मंदिराइं’ति मन्दिराणि=आयतनानि विधापयेद् गृहीति दशमवृत्तपर्यन्ते (३६ तमे) क्रिया-कारकसम्बन्धः । कीदृग्विधानि तानि ? । अत आह ‘आणंदसंदोहणिसंदिराइं’ति प्राकृतत्वाद् आनन्दसन्दोहनिष्यन्दवन्ति, आनन्दः=सम्पदस्तस्य सन्दोहः=सङ्घात आनन्दसन्दोहस्तस्य निष्यन्दः=निर्यासः स विद्यते येषु तदुत्पादकत्वेन तानि तथा । तथा च—

आणंदणिब्भरंगो कयंबपुप्फं व पुलइओ पाणी ।

जहंसणेण जायइ कारेज्ज जिणालयं तमिह ॥२८॥

‘रम्माइँ’ति रम्याणि=रमणीयानि । ‘रुंदाणि य’ति रुन्दानि=विस्तीर्णानि । ‘चः’ समुच्चये । ‘सुंदराइं’ति सुन्दराणि=वास्तुविद्याभिहितयथावत्स्तरादिन्यासयुतानि । ‘भाव्वाण’ति भव्यानां=मुक्तिगतमनयोग्यानाम् । ‘सत्ताण’ति सत्त्वानां=प्राणिनाम् । अनुस्वारस्याऽलाक्षणिकत्वात्, ‘सुखकराणि’ शर्मोत्पादकानि, शुभकराणि वा कल्याणहेतुभूतानि । अत्र भव्यग्रहणेनाऽभव्यानां निषेधमाह, यतस्तेषामास्तां जिनभवने, जिनेऽपि दृष्टे न सौख्यमुत्पद्यते पालकादीनामिवेति वृत्तार्थः ॥२७॥ तथा—

मेरु व्व तुंगाइँ सतोरणाइं, विसालशालासबलाणयाइं ।

सोपाण-णाणामणिमंडियाइं, माणेक्क-चामीकरकुट्टिमाइं ॥२८॥

‘मेरु’व्व देवाचलमि(इ)व । ‘तुङ्गानि’ उच्चानि । ‘सतोरणानि’ ईलिकातोरणयुतानि । ‘विशालशालासबलाणकानि’ विशालाः=विस्तीर्णाः, शालाः=पट्टशाला येषु तानि तथा । शालाशब्दे

१-२. ला० ता० ‘दइंदाण ॥ ३. ला० ‘ण य’ ति ॥ ४. ला० तानि ? एतदाह ॥ ५. ला० ‘युक्तानि ॥ ६. सं० वा० सु० ‘त्ताणं ति ॥ ७. ला० ‘व्यादीनां ॥ ८. ला० पु० ‘सोमाण’ ॥ ९. ला० ता० ‘माणिक ॥ १०. ला० ‘ईलका’ ॥

दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् । सह बलाणकेन=जगतीनिर्गमद्वारेण वर्तन्ते यानि तानि तथा । विशालशालानि च तानि सबलाणकानि चेति समासः । 'सोपान-नानामणिमण्डितानि' सोपानैः=अवतरणैः, नानामणिभिश्च= चन्द्रकान्तप्रभृतिभिः, मण्डितानि=शोभितानि यानि तानि तथा । पूर्वापरनिपाताद् वा नानामणिमण्डितसोपानानि । 'माणिक्य-चामीकर-कुट्टिमानी' माणिक्यानि=महारत्नानि, चामीकरं=सुवर्णम्, तन्मयं कुट्टिमम्=उत्तानपट्टो येषु तानि तथेति वृत्तार्थः ॥२८॥ तथा-

विचित्तविच्छित्तिविचित्तचित्तं, सच्छत्त-भिंगार-स(सु)चामराङ्गं ।

ससालभञ्जी-मयरद्धङ्गं, वाउद्धयाणेयधयाउलाङ्गं ॥२९॥

विभक्तिलोपाद् 'विचित्रविच्छित्तिविचित्रचित्राणि' विचित्राः=नानाप्रकाराः, विच्छित्तयः=स्फीतयो येषु तानि तथा । विचित्राणि=शोभनानि, चित्राणि=चित्रकर्माणि, येषु तानि तथा । विचित्रविच्छित्तीनि च तानि विचित्रचित्राणि चेति समासः । तथा पाठान्तराद्वा विचित्राः=अनेकप्रकाराः, विच्छित्तयः=भक्तयः, ताभिर्विभक्तानि असम्मिलितानि पूतानि वा चित्राणि येषु तानि तथा । 'सच्छत्र-भृङ्गार-सुचामराणि' छत्रम्=आतपत्रम्, तच्च छत्रत्रयरूपम् । तत् तु त्रैलोक्यदेवाधिदेवत्वसंसूचकं जिनस्यैव भवति । भण्यते च—

छत्तत्तउ तउ उवरि देवइंदिण करि धरियउ,

कणयडंडुवरि हारलोलमालहिं परियरियउ ।

तिजगमज्झि देवाहिदेवु किर अन्नु न अइसउ,

पयडइ एउ निरुत्तु एहु 'जण ! कुणहु म संसउ' ॥१४०॥

भृङ्गाराः=गजमुखाकृतयः स्नात्रोपयोगिभाजनविशेषाः । सुचामराणि=प्रधानप्रकीर्णकानि । ततश्च छत्रं च भृङ्गाराश्चेत्यादिद्वन्द्वस्तैः सह वर्तन्ते यानि तानि यथा । 'ससालभञ्जिका-मकर-ध्वजचिह्नानि' सह शालभञ्जिकाभिः=लेप्यादिमयपुत्रिकाभिर्मकरध्वजचिह्नेन च=महा(३)केतु-लाञ्छनरूपेण वर्तन्ते यानि तानि तथा । मकरध्वजचिह्नं हि मकरकेतनजयसंसूचकम् । भण्यते च—

तत्तुत्तिन्नवरेन्नवन्नसुसुवण्णविणिम्मिउ,

जम्मि दंडु तह धवलु चेलु मंदानिलघुण्णिउ ।

सो जाणह अरहंतचिंधु एहु गहिउ महद्धउ,

णिज्जिणेवि जयजिणणजोहु दुज्जउ मयरद्धउ ॥१४१॥

१. 'विभक्तचित्त इति टीकाकृत्रिदिष्टं पाठान्तरम् ॥ २. ला० 'देउ ॥ ३. सं० वा० सु० प्रधानानि प्रकीर्णकविशेषाः । ततश्च ॥ ४. सं० वा० सु० तर्हि ॥

‘वातोद्धूतानेकध्वजाकुलानि’ वातेन=समीरणेनोद्धूताः=उत्क्षिप्ताः, अनेके=प्रभूताः, ध्वजाः=देवकुलोपरिपताकारूपास्तैः आकुलानि=सङ्कीर्णानि यानि तानि तथेति वृत्तार्थः ॥२९॥ तथा—

देवंग-पटंसुय-देवदूसउल्लोयरायंतनिरंतराई ।

विलोलमुत्ताहल-मल्लमालापालंबओऊलकुलाऽऽकुलाई ॥३०॥

पूर्वापरनिपाताद् ‘देवाङ्ग-पट्टांशुक-देवदूष्यराजदुल्लोचनिरन्तराणि’ देवाङ्गानि=प्रधानसिच-यानि, पट्टांशुकानि=पट्टसूत्रनिर्मितानि, देवदूष्याणि=सुरवस्त्राणि, तै राजन्=शोभमानो य उल्लोचः=आकाशतलशोभा तेन निरन्तराणि=व्याप्तानि यानि तानि तथा । विलोलमुक्ताफल-माल्यमालाप्रालम्बावचूलकुलाकुलानि’ विलोलाः=इतश्चेतश्चलन्त्यो मुक्ताफलानाम्=मौक्तिकानाम्, माल्यानां=सुमनसाम्, या मालाः=तद्ग्रथनरूपास्तासां प्रालम्बाः=लम्बमानपुष्पगण्डूषरूपास्तेषु अवचूलाः=स्तम्बकास्तेषां कुलानि=सङ्घातास्तैराकुलानि=व्याप्तानि यानि तानि तथेति वृत्तार्थः ॥३०॥ तथा—

कप्पूर-कत्थूरिय-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-सच्चंदण-कुंकुमाणं ।

डज्झंतकालागरुसारधूपणीहारवासंतदिगंतराई ॥३१॥

तत्र ‘दह्यत्कालागरुसारधूपनिर्हारवास्यमानदिगन्तराणि’ इति उत्तरार्धव्याख्या-दह्यंश्चासौ=धूमावस्थामनुभवन् कालागरुसारश्च=काकतुण्डागरुप्रधानः स चाऽसौ धूपश्च दह्यत्कालागरु-सारधूपः, तस्य निर्हारः=बहलगन्धस्तेन वास्यमानानि=सौगन्ध्यं नीयमानानि दिगन्तराणि येषु तानि तथा । केषां सम्बन्धीयो धूपः ? इत्यत आह ‘कर्पूर-कस्तूरिका-कुन्दुरुक्क-तुरुक्क-सच्चन्दन-कुङ्कुमानाम्’ इति पूर्वार्धम् । तत्र कर्पूरः=घनसारः, कस्तूरिका=मृगमदः, कुन्दुरुक्कं=चीटा(डा), तुरुक्कं=सीहलकम्, सच्चन्दनं=प्रधानश्रीखण्डम्, कुङ्कुमं=कश्मीरजम्, कर्पूरश्च कस्तूरिका चेत्यादिद्वन्द्वः, अतस्तेषामिति वृत्तार्थः ॥३१॥ तथा—

चउव्विहाऽऽउज्जसुवज्जिराई, गंधव्व-गीयद्धणिउद्धुराई ।

णिच्चं पणच्चंतसुनाडंगाई, कुद्धंतरासासहसाऽऽउलाई ॥३२॥

‘चतुर्विधातोद्यसुवादीनि’ चतुर्विधं=चतुःप्रकारं तत-वितत-घन-शुषिरभेदात्, तत्स्वरूपं च—

ततं वीणादिकं ज्ञेयं, विततं पटहादिकम् ।

घनं च कांस्यतालादि, वंशादि शुषिरं स्मृतम् ॥१४२॥

१. सं० वा० सु० ‘धानानि खिच’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘नां या मा’ ॥ ३. सं० वा० सु० ‘लागुरु’ ॥ ४. ला० ता० ‘दियंत’ ॥ ५-६. सं० वा० सु० ‘लागुरु’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘ण्डागुरु’ ॥ ८. ला० ता० ‘डयाई’ ॥

तच्च तदातोद्यं च=वादित्रं चतुर्विधातोद्यम्, तेन सुष्ठु प्रतिखरूपतया वादनशीलानि यानि तानि तथा । ‘गन्धर्व-गीतध्वन्युद्धराणि’ गन्धर्व=देवनिर्वाणकृतं गानम्, गीतं तु मनुजविहितम्, तयोर्ध्वनिः=मूर्च्छनादि-युक्तशब्दविशेषस्तेनोद्धराणि=उद्धतानि यानि तानि तथा । नित्यं=सदा । ‘प्रनृत्यत्सुनाटकानि’ प्रकर्षेण नृत्यन्ति=लास्यवन्ति सुष्ठु=शोभनानि, नाटकानि=पात्रसञ्चयनिर्मितानि येषु तानि तथा । ‘कुर्दद्रासकसहस्राकुलानि’ कुर्दन्तः=उल्ललन्तो ये रासकाः=हस्ततालादानपुरस्सर-तीर्थकरादिगुणगानप्रवृत्तपुरुषविशेषाः, स्त्र्याद्युपलक्षणं च पुलिङ्गनिर्देशः । तेषां सहस्राणि=दशश-तात्मकानि । बहुत्वसङ्ख्योपलक्षणमेतत् । तैः सङ्कुलानि=आकीर्णानि यानि तानि तथेति वृत्तार्थः ।।३२।। तथा—

वदंत पूयंत समोयरंत, रंगंत वगंत थुणंतएहिं ।

णच्चंत गायंत समुप्पयंत, उक्किट्टिनायाइकुणंतएहिं ।।३३।।

देवेहिं देवीहिं य माणवेहिं, नारी तिरिक्खेहिं य उत्तमेहिं ।

भक्तीए कोऊहल णिब्भरेहिं, लक्खेहिं कोडीहिं समाकुलाइं ।।३४।।

‘वदंत’ति वन्दमानैः=चैत्यवन्दनं विदधद्भिः । ‘पूयंत’ति पूजयद्भिः=अष्टप्रकारादिपूजां कुर्वद्भिः । ‘समोयरंत’ति समवतरद्भिः=आकाशादागच्छद्भिः । ‘रंगंत’ति रङ्गद्भिः=इतश्चेतश्च मन्दमन्दभ्रमद्भिः । ‘वगंत’ति वल्गद्भिः=फालादिदानवद्भिः । ‘थुणंतएहिं’ति स्तुवद्भिः स्तुति-स्तोत्राणि पठद्भिः । ‘णच्चंत’ति नृत्यद्भिः । ‘गायंत’ति गायद्भिः । ‘समुप्पयंत’ति समुत्पतद्भिः=आकाशं गच्छद्भिः । ‘उक्किट्टिनायाइकुणंतएहिं’ति उत्कृष्टि-नादादिकुर्वद्भिः । तत्रोत्कृष्टिनादः=सिंहनादः, आदिशब्दाद् हयहेषितादिग्रहः ।

कैरेवं कुर्वद्भिः समाकुलानि ? इत्याह-‘देवैः’ सुरैः, ‘देवीभिश्च’ अप्सरोभिः । चशब्दो विद्याधर-विद्याधरीसूचकः । ‘मानवैः मनुजैः’, ‘नारीभिः मनुषीभिः’, ‘तिरिक्खेहिं य’ति तिर्यग्भिश्च । ‘उत्तमैः’ प्रधानैः । पुनरपि तैः कथम्भूतैः ? इत्याह ‘भक्त्या’ अन्तर्वासनया, कौतुकेन च=कुतूहलेन, निभरैः=पूर्णैः । कियद्भिः? लक्षैः कोटिभिश्च, चकारो गम्यते । ‘समाकुलानि’ सङ्कीर्णानि । ‘रम्याकुलानि वा’ रम्याणीति वृत्तद्वयार्थः ।।३३-३४।।

कानि जिनायतनानि निदर्शनीकृत्य तानि विधापयेद् ? इत्यत आह—

विमाणमाला-कुलपव्वएसुं, वक्खार-नंदीसर-मंदरेसुं ।

अट्ठावए सासय-ऽसासयाइं, जिणालयाइं व महालयाइं ।।३५।।

१. सं० वा० सु० उक्कुट्टिना ॥ २. ता० भक्तीय ॥ ३. वा० सु० ला० रमाकु ॥ ता० र्वाकु ॥ ४. सं० वा० सु० ंद्भिः । पूज ॥ ५. ला० उक्कुट्टिना ॥ ६, ७. सं० वा० सु० ंत्कृष्टना ॥ ८. ला० मानुष्याभिः ॥

‘विमानमाला-कुलपर्वतेषु’ विमानमालाः=वैमानिकदेवनिवासपङ्क्तयः कुलपर्वताः=हिमाच-
लादयः, विमानमालाश्च कुलपर्वताश्च विमानमाला-कुलपर्वतास्तेषु, तथा । ‘वक्षार-नन्दीश्वर-मन्दरेषु’
वक्षाराः=विजयविभागकारिपर्वताः, नन्दीश्वरः=अष्टद्वीपः, मन्दरः=मेरुः, वक्षाराश्चेत्यादिद्वन्द्वस्तेषु तथा ।
अष्टापदे=अवध्याप्रत्यासन्नवर्तिते वैताढ्यपादपर्वते यत्र भरतचक्रिविनिर्मितं चैत्यायतनमस्ति ।
उपलक्षणं चैतत् शत्रुञ्जयादीनाम् । कथम्भूतानि ? यानि शाश्वतानि=अकृत्रिमाणि विमानमालादिषु,
अशाश्वतानि कृत्रिमाणि अष्टपदादिषु, जिनालयानीव=जिनायतनानिवत् तादृग्विधानीति भावार्थः ।
पुनः किम्भूतानि ? महालयानि=बृहत्प्रमाणानीति वृत्तार्थः ॥३५॥

केषु स्थानेषु तानि कारयेत् ? इत्यत आह—

उत्तुंगसिंगेसु महागिरीसु, पुरेसु गामा-ऽऽगर-पट्टणेसु ।

पए पए सव्वमहीयलम्मि, गिही विहाणेण विहावएजा ॥३६॥

‘उत्तुङ्गशृङ्गेषु, उच्चकूटेषु ‘महागिरिषु’ बृहत्पर्वतेषु ज्ञयन्तादिषु । पुरेषु=नगरेष्ववध्यादिषु ।
‘ग्रामाऽऽगर-पत्तनेषु’ ग्रसन्ति बुद्ध्यादीन् गुणानिति ग्रामाः=शालिग्रामादयः, आकराः-लवणा-
द्युत्पत्तिभूमयः शाकम्भर्यादयः, पत्तनानि=जल-स्थलमार्गयुक्तानि भृगुकच्छादीनि, ग्रामाश्चाकरा-
श्चेत्यादिविग्रहः तेषु । किं बहुना ? ‘पदे पदे’ स्थाने [स्थाने], ‘सर्वमहीतले’ निःशेषभूवलये, ‘गृही’
गृहस्थो यतः स एवात्राधिकारी, उक्तं च जिनभवनविधौ—

अहिगारी उ गिहत्थो सुहसयणो वित्तसंजुओ कुलजो ।

अक्खुद्धो धीबलिओ मइमं तह धम्मरागी य ॥१४३॥

गुरुपूजाकरणरई सुस्सूसाइगुणसंगओ चेव ।

नायाऽहिगमविहाणस्स धणियमाणापहाणो य ॥१४४॥

(पञ्चा० गा० ३०४, ३५०)

अनधिकारिणा तु तं विधीयमानं जिनभवनमपि दोषाय भवति यतस्तत्रैवोक्तं हरिभद्रसूरिणा—

अहिगारिणा इमं खलु कारेयव्वं, विवज्जे दोसो ।

आणाभंगाउ च्चिय, धम्मो आणाइ पडिबद्धो ॥१४५॥

आराहणाएँ तीए पुण्णं, पावं विराहणाए य ।

एयं धम्मरहस्सं विण्णेयं बुद्धिमंतेहिं ॥१४६॥ (पञ्चा० गा० ३०२, ३०३)

१. ला० कृतकानि ॥ २. ला० महालकानि ॥ ३, ४. ता० पु० ‘सुं’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘षु महा’ ॥ ६.
ला० ‘ष्ववन्त्यादिषु’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘वाधिकारी’ ॥ ८. सं० वा० सु० मयमं ॥ ९. सं० वा० सु० ‘णरुई’ ॥

कथं कारयेत् ? 'विधानेन' विधिना, यस्माद्विधिनैव विधीयमानं सर्वमप्यनुष्ठानं फलवद्भवति ।
उक्तं च—

विधिना विधीयमानं धर्मानुष्ठानमखिलमिह भवति ।

फलदं यस्मात् तस्माद् यत्नस्तत्रैव कर्तव्यः ॥१४७॥

विधापयेत्=कारयेदिति वृत्तदशकार्थः [२७-३६] ॥३६॥

कीदृशविधया सम्पत्त्या ?, किंविधेन च चित्तेन ?, कीदृशेन चाऽऽदरेण ?, कं वा
निदर्शनीकृत्य तानि कारयेत् ? इत्यतोऽर्थं वृत्तमाह—

जन्मन्तरोत्तमहंतपुण्यसंभारसंपत्तिसुसंपयाए ।

सुहासणं परमायरेणं, संकासजीवो णिवसंपई वा ॥३७॥

'जन्मान्तरोपात्तमहतपुण्यसम्भारसम्प्राप्तसुसम्पदा' जन्मान्तरं=पूर्वजन्मरूपं तस्मिन्, उपात्तम्=
उपार्जितम्, महद्=बृहत्, पुण्यं=शुभम्, तस्य सम्भारः=सञ्चयः, तेन सम्प्राप्ता=लब्धा, या
सुसम्पत्=प्रधानलक्ष्मीस्तया । 'शुभाशयेन' इति शुभः=प्रशस्तः, आशयः=चित्तं शुभाशयोऽतस्तेन ।
यत उक्तम्—

पिच्छिस्सं इत्थ अहं वंदणगणिमित्तमागं साहू ।

कयउन्ने भगवंते गुणरयणणिही महासत्ते ॥३८॥

सङ्किल्बचित्तो हि धर्मानुष्ठानमपि कुर्वन् न तत्फलमासादयति । उक्तं चोपदेशपदेषु—

तवसुत्तविणयपूया न संकिलिद्धस्स होंति ताणाय ।

खवगागमविणयरओ कुंतलदेवी उयाहरणा ॥३९॥ (गा० ४८५)

तथा—

संक्लिष्टचित्तः प्रकरोति पुण्यं, यस्तस्य तद् दोषविधायि नूनम् ।

यद्वज्ज्वरे नूतन एव जाते, सदौषधं तच्छमनाय दत्तम् ॥३५०॥

'परमादरेण' इति परमः=प्रकृष्टः, आदरः=यत्नोऽतस्तेन । यतः—

न हुं होइ किं पि फलयं अणायरेणं विहेजमाणं तु ।

इहलोइयं पि, किं पुण परलोगसुहावहो धम्मो ? ॥३५१॥

गृही जिनायतनानि विधापयेदिति सम्बन्धनीयम् । 'संकासजीवो व'ति इवार्थस्य गम्यमानत्वात् चैत्यद्रव्यभक्षकसङ्काशश्रावकजीववत् । तथा 'निवसंपई व'ति मौर्यवंशोत्पन्नसम्प्रतिसञ्ज्ञकनृपवद्वेति वृत्ताक्षरार्थः ॥३७॥ भावार्थः कथानकाभ्यामवसेयः, ते चेमे—

(१८. सङ्काशश्रावकजीवकथानकम्)

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे अणेगनगरीगुणखाणिभूया गंधिलावई^१ णाम णगरी । तीए य अत्थि सम्मत्तमूलदुवालसवयजुत्तो उवलद्धजीवा-ऽजीवाइनवतत्तो सव्वन्नृप्पणीयकिरिया-णुट्ठाणप्पसत्तो सुसाहुपयपंकयभत्तो जिणसासणाणुरंजियनीसेसगतो सुपत्तदत्तणाओवत्तचित्तो समसत्तु-मित्तचित्तो जिणवंदण-ऽच्चणाइकयपयत्तो, किं बहुणा ? समत्थगुणगणाऽऽहारसुपवित्तचित्तो संकासो णाम सावगपुत्तो । इओ य तत्थ अत्थि सक्कावयारं^२ णाम चेइयभवणं । जं च-

उत्तुंगसिहरसंठियवायविधुव्वंतधयवडाडोवं । रूवयसयसंकिण्णं अदब्भसरयब्भसंकासं ॥१॥

सक्कावयारणामं जिणभवणं तं पभूयदविणङ्गं । तेलोक्कसिरीसोभासमुदयसारेण घडियं व ॥२॥

तत्थ य सो संकाससावगो पइदिणं करेइ तत्तिं, वद्धारए कलंतराइणा तं दव्वं, करेइ लेक्खगाइयं सव्वं सयमेव, 'वीसासत्थाणं'ति ण कोइ परिपंथए । एवं च काले वच्चमाणे कयाई कहिंचि असुभकम्मोदयाओ भक्खियं तेण चेइयदव्वं । पमायाओ विसयगिद्धीओ य न जाओ पच्छातावो, न कयमालोयण-निंदण-गरहणाइयं, न य चिण्णं पच्छित्तं । अकयपडियारत्तणओ य तप्पच्चयं च बंधिऊण पभूयं संकिलिड्डकम्मं, अहाऽऽउयक्खएण मओ समाणो तक्कम्मविवागेण भमिओ चउगइसंसारकंतारे संखेज्जाइं भवगहणाइं ति । अवि य-

णिच्चंधयारतमसे मेय-वसा-मंस-पूयचिक्खल्ले । मयकुहियकडेवरसरिसगंधफुट्ठंतनासउडे ॥३॥

घाइज्जमाणजणपुण्णगामसमकलुणसद्गदब्भे । कवियत्थुतुल्लफासे अच्चंताणिट्ठरूव-रसे ॥४॥

छिज्जंतो भिज्जंतो छुरिया-कुंताइएहिं तिक्खेहिं । पच्चंतो कुंभीसुं रोविज्जंतो य सूलासु ॥५॥

करेज्जंतो आलिंगणाइं पज्जलियलोहनारीसुं । अच्छोडियंगमंगो सिलासु रयएहिं वत्थं व ॥६॥

जुप्पंतो जालाउललोहरहे तत्तवालुयापंथे । पाइज्जंतो तिसिओ तत्ते तउ-तंब-लोहरसे ॥७॥

फाडिज्जंतो करवत्त-जंतमाईहिं जुन्नदां व । छुब्भंतो जलणम्मी महिसभडित्तं व पावेहिं ॥८॥

वेयरणी असिपत्ते वणम्मि बहुदुक्खसंकडाविओ । तक्कम्मविवागेणं वसिओ नरयम्मि बहुकालं ॥९॥

तथा-

१. ला० 'सङ्कासश्रा' ॥ २. ला० 'ई नयरी' ॥ ३. ला० 'व्वण्णप्प' ॥ ४. ला० 'णाधार' ॥ ५. सं० वा० सु० 'पवित्तो सं' ॥ ६. ला० 'रं चेइ' ॥ ७. सं० वा० सु० 'कासो सा' ॥ ८. सं० वा० सु० 'त्थाण त्ति' ॥ ९. सं० वा० सु० 'यच्चित्तु' ॥

डहणं-डकण-छेयण-भेयणाई नत्थणय-लउड-कसपहरे ।

भारारौहण-चुंकण-मारण-दमणं छुहा तण्हा ॥१०॥

सीउण्ह-बंधणाईणि तिकखदुक्खाईं तेण सहियाईं । नारयदुहोवमाईं पतेण तिरिक्खजोणीसुं ॥११॥

कर-चरण-जिब्भ-नासाछेयं कारागिहेसु बंधं च । नेत्तोप्पाडण-वहणं पावेंतो निरवराहो वि ॥१२॥

गुरुरोग-सोग-दालिद-जलणजालावलीपलित्तंगो । वसिओ मणुयगईए बहुजणधिकारिओ दीणो ॥१३॥

किब्बिसियत्तण-ईसा-विसाय-भय-आणकरणमाईणि ।

दुक्खाईं सुरगणेसु वि सहियाईं तेण विसमाईं ॥१४॥

तयणंतरं च इहेव जंबुद्दीवे दीवे तगराए नगरीए इब्भपुत्तताए जाओ । तक्कम्मसेसप्पहावेण य कयं पिउणो वि दारिदं । 'मंदभग्ग'त्ति निंदिज्जे लोएणं । उवरए य पियरम्मि विविहवा-वारकरणपरायणस्स वि न संपज्जे भोयणमित्तं पि । तओ जत्थ जत्थ वृच्चइ तत्थ तत्थ अंगुलीए दाइज्जइ । एवं च अईवणिव्विण्णस्स अन्नया कयाइ विहरमाणो समागओ तत्थ भगवं केवली । विरइयं देवेहिं कणगपउमासणं । उवविट्ठो तत्थ भगवं । णिगओ वंदणत्थं सयलपुरलोगो । संजाओ य पवाओ जहा-तीया-ऽणागय-वट्टमाणजाणगो भगवं केवली समागओ । तं च सोऊण गओ वंदणत्थं संकासजीवइब्भउत्तो । वंदित्ता य उवविट्ठो । तओ पत्थुया भगवया धम्मदेसणा । अवि य—

संसारम्मि असारे परिब्भमंताण सव्वजीवाणं । जं अन्नभवोवत्तं तं को हु पणासिउं तरइ ? ॥१५॥

जं जं जीवाण जए उप्पज्जइ दारुणं महादुक्खं । तं तं अन्नभवंतरनिव्वत्तियपावकम्मफलं ॥१६॥

तओ इत्थंतरम्मि पत्थावं णाऊण पुच्छियं संकासजीवेण 'भयवं ! जइ एवं ता मए किमन्नभवे पावकम्मं कयं जस्सेरिसौ दारुणो विवागो ?' ति । तओ साहिओ सवित्थरो देवदव्व-भक्खणसंजणियदुक्खपउरो पुव्वभवप्पवंचो । तं च सोऊण संजायसंवेगो अत्ताणयं निंदिउमाढत्तो । अवि य—

“हा हा ! अहं अणज्जो पाविट्ठो पावकम्मकारी य । निल्लज्जो अकयत्थो निद्धम्मो विगयमज्जाओ ॥१७॥

पुरिसाहमो अहण्णो जेण मए माणुसम्मि जम्मम्मि । लद्धूण कुलं सीलं जिणिंदवरधम्मसंजुतं ॥१८॥

णाऊण वि सिद्धंतं लोभाभिहण मूढचित्तेणं । भुत्तं चेइयदव्वं एवंविहदुक्खसंजणं ॥१९॥

ता भयवं ! मे साहसु उवायमित्थं तु जेणं तं कम्मं । नेमि खयं नीसेसं चिंतिज्जंतं पि भयजणं' ॥२०॥

१. ला० 'रोयण' ॥ २. सं० वा० सु० दाइयइ ॥ ३. सं० वा० सु० 'ओ भगवं' ॥ ४. ला० निविट्ठो ॥
५. ला० 'ओ य वं' ॥ ६. सं० वा० सु० 'ली इहागओ' ॥ ७. सं० वा० सु० 'सो विवागो दारुणो ? ति' ॥
८. सं० वा० सु० 'ण तक्कम्मं' ॥

तओ भगवया भणियं 'भद् ! करेहि चेइयदव्वुञ्चिं जेणाऽवगच्छइ तं कम्म'ति । तओ तेण भगवओ चेव पायमूले गहिओ अभिगहो जहा 'गासच्छायणमेत्तं मोत्तूण सेसं जं किंचि मज्झ वित्तं भविस्सइ तं सव्वं चेइयदव्वं, जहा तत्थोवगरइ तहा करेस्सामि' ति । तओ अचिंतमाहप्पयाए अभिगहजणिय-कुसलकम्मस्स वित्थरिउमाढत्तो विभवणं । पेच्छिऊण य विभववित्थरं पमोयाइरेगाओ समुल्लसंतसुभ-सुभयरपरिणामाइसयसमुब्भिज्जंतरोमंचकंचुओ करेइ जिणभवणाइसु ण्हवण-ऽच्चणबलिविहाणाइं, पयट्ठावए अट्ठाहियामहिमाओ, विहेइ अक्खयनी(?नि)धियाओ, कारवेइ जिणोद्धारे । एवं च अक्खलियपसरं वयंतस्स वि जाव परिवट्ठइ रिद्धी ताव निइयाराभिगहपरिपालणबुद्धीए कारावियाइं पत्थुयपगरणवण्णियसरूवाइं जिणालयाइं, परट्ठावियाइं तेसु पुव्ववण्णियाइं बिंबाइं, दिट्ठभयत्तणेण य परिहरइ पयत्तेण जिणाययणपरिभोगं । उक्तं चोपदेशपदेष्वप्यत्रैव कथानके—

निट्ठीवणाइकरणं असक्कहा अणुचियासणाई य ।

आययणम्मि अभोगो एत्थ य देवा उदाहरणं ॥१५२॥

देवहरयम्मि देवा विसयविसविमोहिया वि न कयाइ ।

अच्छरसाहिं पि समं हास-क्किड्डाइ वि करेंति ॥१५३॥ (गाथा० ४१०-४११)

अनयोश्च तदुक्तैव व्याख्या—

निष्ठीवनं=मुखकफत्यागः । आदिशब्दात् प्रश्रवण-पुरीषा-ऽवील-ताम्बूलभक्षण-भोजनादि-ग्रहस्तेषाम् 'अकरणं' त्यागः । 'असत्कथा' स्त्री-राजादिवार्ता, अनुचितम्=अयोग्यमासनं=पीठकादि, आदिशब्दात् शयनादिपरिग्रहः । 'आयतने' जिनालये, 'अभोगः' अवस्थानादिपरिहारेण । अत्राऽर्थे देवा उदाहरणम् । 'देवगेहे' जिनालये, 'देवाः' अमराः, 'विषयविषविमोहिता अपि' रागोत्कटा अपि, 'न कदाचित्' नैवाऽप्सरोभिरपि 'समं' सार्धं हास्य-क्रीडाद्यपि कुर्वन्ति । यथा ते तथेदानीन्तनैरपि पुरुषैरिदं स्त्रीभिः सह चैत्यालये वर्ज्यमित्युक्तो गाथाद्वयार्थः ।

एवं च सौ महाणुभावो आसायणमकरंतो सव्वत्थ वि धम्माणुट्ठाणे अविहिपरिहारपरो आजम्मं पि विसुद्धमभिगाहं परिपालेऊण सम्ममाराहगो जाओ ति ।

(सङ्काशश्रावकजीवकथानकं समाप्तम् १८)

१. ला० 'व्वस्स वु' ॥ २. ला० जिणाययणा ॥ ३. दृश्यतां षट्त्रिंशत्तमं यावत् वृत्तदशकम् ॥ ४. समालोक्यतामष्टादशैकोनविंशतिसङ्ख्यं वृत्तद्वयम् ॥ ५. ला० 'व्वत्रैव' ॥ ६. सं० वा० सु० 'सणाईणि' ॥ ७. ला० 'लन-ता' ॥ ८. ला० देवगृहे ॥ ९. सं० वा० सु० सो ऊ(उ)ण म' ॥ १०. सं० वा० सु० 'हं पाले' ॥

गतं सङ्काशजीवाख्यानकम् । अधुना सम्प्रतिनृपाख्यानकमाख्यायते । अपि च—

(१९. सम्प्रतिनृपाख्यानकम्)

सुर-असुर-जोइ-वणयर-विज्जाहर-णरवईहिं पणिवइओ ।

आसि जिणो सिरिवीरो वीरो अप्पच्छिमो भरहे ॥१॥

तेण 'चिरायकलिओ' कलिरुणं पंचमो गणहरिंदो । निययपएऽणुण्णाओ सामिसुहम्मो सुहम्मो ति । २ ।
तस्स विणेओ जंबू जंबूणयणिघसतुल्लतणुतेओ । सुर-णरवंदियचरणो अपच्छिमो केवलहराणं । ३ ॥
तत्तो गुणाण पंहवो पंहवो णामं गणाहिवो जाओ । सुयकेवली महप्पा, तस्स य सीसो तओ जाओ । ४ ।
सेज्जंभवो ति सेज्जं भवोयही तारगो जओ जेण । दसवेयालियमेयं मणगस्सट्ठाइ णिज्जूढं । ५ ॥
तस्सीसो जसमदो जसभदो गणहरो समुप्पण्णो । तत्तो च्विय संभूओ णाम वरसूरी । ६ ॥
तत्तो य भद्बाहु ति भद्बाहु जुगप्पहाणगणी । तस्स वि य थूलभदो सुथूलभदो गणी जाओ । ७ ॥
चउदसपुव्वधराणं अपच्छिमो जो इम्मि भरहम्मि । उस्सप्पिणीइमाए अणेगगुणगारवग्घविओ । ८ ॥
जो मयरद्धयकरिकरडवियडकुंभयडपाडणपडिडो । दढदाढविउडियमुहो खरणहरो केसरिकिसोरो । ९ ।
दो सीसा तस्स तओ जाया दसपुव्वधारया धीरा । जेडो अज्जमहागिरि अज्जसुहत्थी य अणुजेडो । १० ॥

तओ तेसिं दुण्हं पि थूलभदसामिणा जुयंजुया गणा दिण्णा । तहा वि अइपीइवसेण एणओ चेव विहरंति । अन्नया कयाइ अनिययविहारेण विहरमाणा कोसंबिणामणयरिं गया । तत्थ खुडलयवसहिवसेण पिहप्पिहं ठिया । तत्थ य तया महंतं दुब्भिकखं वट्टइ । ततो अज्जसुहत्थिसाहुणो पविट्ठा भिक्खणिमित्तं महाधणवइधणसत्थवाहगेहं । तओ पविसंते दट्ठूण साहुणो सहसा सपरियणो अब्भुट्ठिओ धणसत्थवाहो । वंदिया य साहुणो । आइट्ठा य भारिया जहा 'आणेहि लहुं सीहकेसरमाइयं पहाणाहारं जेण पडिलाहेमि भयवंते' । तव्वयणाणंतरमेव समाणिओ पहाणाऽऽहारो तीए । तओ समुब्भिज्जमाणरोमंचकंचुएणं हरिसवसविसट्ठंतवयणकमलेणं पडिलाहिया मुणिणो, वंदिया य सपरियणेणं, अणुव्वइया य गिहदुवारं जाव । एयं च सव्वं दिट्ठं भिक्खट्ठा पविट्ठेणं एणेणं दमणेणं । तं च दट्ठूण चित्तियं तेण, अवि य-

धन्ना अहो ! कयत्था एए च्विय एत्थ जीवलोगम्मि । एवंविहे वि एवं भत्तीए जे णमिज्जंति ॥११॥
नरलोयदुल्लहाणि य विविहपगाराणि भक्खभोजाणि । पज्जतीए अहियं लहंति दुब्भिकखकाले वि ॥१२॥

१. ला० अवि या ॥ २. ला० 'रपहूहिं' ॥ ३. "वीरो(रोड)ग्रणी: मु० टिप्पणी ॥ ४. ला० चलणो ॥
५. ला० 'लधराणं' ॥ ६. ला० पभवो पभवो ॥ ७. ला० तेण ॥ ८. ला० चोइसपु' ॥ ९. ला० 'या य क'
॥ १०. ला० 'ते साहुणो दट्ठूण स' ॥ ११. ला० 'हेहिं' एवं ॥

अहयं तु पुण अधन्नो कयसणगासप्पमाणमित्तं पि ।
 न य उवलभामि कत्थ वि बहुविहलल्लिं कुणंतो वि ॥१३॥
 जइ विं य कहंचि को वि हु अणिसं दीणाइं जंपमाणस्स ।
 वियरइ कयसणगासं तह वि हु अक्कोसए अहियं ॥१४॥
 ता एए च्विय मुणिणो आहाराओ जहिच्छलद्धाओ ।
 मग्गामि किंचिमेत्तं करुणाए दिंति जइ कह वि ॥१५॥

तओ एवं चिंतितुण मग्गिया भत्तं तेण ते साहुणो । साहूहिं भणियं 'भद ! न एयस्स अम्हे सामिणो जाव गुरूहिं ण अणुण्णायं, ता गुरू चेव इत्थत्थे जाणंति' । तओ सो साहूणं पिट्ठओ गओ जाव दिट्ठा अज्जसुहत्थिसूरिणो, मग्गिया य । साहूहि वि कहियं जहा 'अम्हे वि मग्गिया आसि' । तओ गुरूहिं दिण्णसुयणाणोवओगेहिं 'पवयणाहारो भविस्सइ'ति णाऊण भणिओ 'जइ पव्वयाहि तो देमो ते जहिच्छियमाहारं' । 'एवं होउ'ति तेण पडिवण्णे दिक्खिओ । अव्वत्तसामाइयं च दाऊण भुंजाविओ जहिच्छं । तओ सिणिद्धाहारभोयणाओ जाया विसूइया । परिक्खीणत्तणओ य आउस्स समुप्पन्नमहावेयणासंघट्ठो मरेऊण अव्वत्तसामाइयप्पभावओ उप्पण्णो अंधयकुणालकुमारस्स उत्तो । को सो कुणालो ?, कहं वा अंधओ जाओ ? एयं साहेज्जइ-

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे गोल्लविसए सयलरम्मयागुणगणणिहाणं चणयगामो णाम गामो । तत्थ रिजुवेय-जजुवेय-सामवेया-ऽथव्वणवेयजाणगो सिक्खा-वायरण-कप्प-च्छंद-निरुत्त-जोइसविऊ मीमंसावबोहगा णायवित्थरवियाणगो पुराणवक्खाणणिउणो धम्मसत्थवियारचउरो चणी णाम माहणो । सो य महासावगो । तस्स य घरे वसहीए ठिया सुयसागराहिहाणा सूरिणो-

अन्नया य तस्स माहणस्स भारिया सावित्ती णाम पसूया उगयाहिं दाढाहिं दारयं । तस्स य णिव्वत्तबारसाहस्स कयं णामं चाणक्को ति । पांडिय सूरिण पाएसु कहिओ दाढावुत्तंतो । तओ आयरिएहिं भणियं 'राया भविस्सइ' ति । माहणेण य घरंगण चितियं 'हा कट्ठं ! कहं मम वि पुत्तो होऊण अणेगाणत्थसत्थणिबंधणं महारंभाइपावट्ठाणकारणं रज्जं करेस्सइ ?, ता तहा करेमि जहा न करेइ एस रज्जं' ति । घट्ठाओ सिल्लमेण दाढाओ । तओ पुणो वि साहियं गुरूणं जहा 'घट्ठाओ मए दारयस्स दाढाओ' । गुरूहिं भणियं "दुड्डु विहियं, जओ—

जं जेण पावियव्वं सुहं व असुहं व जीवलोगम्मि । अण्णभवकम्मजणियं तं को हु पणासिउं तरइ ? ॥१६॥

१. ला० वि हु य कहवि को ॥ २. सं० वा० सु० दिण्णं सुयणाणोवओगपुव्वयं 'पव' ॥ ३. ला० 'साविबो' ॥ ४. ला० पाडिओ य सू ॥ ५. ला० 'ओ य दा' ॥ ६. सं० वा० सु० 'इ ति, ता ॥ ७. सं० वा० सु० पसाहियं गुरूणं 'घट्ठा' ॥

जं जेण जह व जइया अन्नम्मि भवे उवज्जियं कम्मं । तं तेण तया(हा) तइया भोत्तव्वं णत्थि संदेहो ॥१७॥

धारेज्जइ इंतो जलणिही वि कल्लोलभिण्णकुलसेलो ।

ण हु अण्णजम्मणिम्मियसुहा-ऽसुहो दिव्वपरिणामो ॥१८॥

ता णिच्छएण होयव्वं एएण पडंतरिएण राइणा” । तओ कमेण जाओ उम्मुक्कबालभावो चाणक्को । पढियाणि य तेण वि चउदस विज्जाठाणाणि । परिणाविओ य समाणकुल-सीलभारियं । उवरए य पियरम्मि ‘सावगो’ ति अप्पसंतुट्ठो गमेइ कालं । अन्नया कयाइ सा बंभणी गया भाइवीवाहे पेइयघरं । आगयाओ अण्णाओ वि ईसरगेहपरिणीयाओ, तासिं च ताणि माया-पीइपमुहाणि माणुसाणि कुणंति गोरवं । अवि य—

धोवेइ को वि पाए, सुगंधतिल्लेहिं को वि मक्खेइ । नाणाविहेहिं उव्वट्टणेहिं उव्वट्टए को वि ॥१९॥

ण्णवेइ को वि, को वि हु वत्था-ऽलंकारमाइ अप्पेइ ।

को वि विलेवणमाणइ, किं बहुणा इत्थ भणिणं ? ॥२०॥

भोयण-सयणाईसु वि गोरवई परियणो पयत्तेण । विविहोल्लावकहाहिं आयरतरएण उल्लवइ ॥२१॥

तं च चाणक्कभज्जं ‘अत्थहीण’ ति काउं वयणमित्तेण वि ण को वि गोरवेइ, कम्मं च कारेज्जइ । एगाणिणी चेव एणदेसे चिट्ठइ । वत्ते य वीवाहे विसज्जणकाले इयराण विसिट्ठवत्था-ऽलंकारा-ऽऽभरणेहिं महंतो उवयारो कओ, तीसे पुण इयरवत्थाइएहिं अप्पो चेव । तओ सा ‘धिसि धिसि दारेइभावस्स जत्थ माया-वित्ताणि वि एवं परिभवं कुणंति’ ति अट्टदुहट्टव्वमट्टा महाचिंतासोगसागरगया पत्ता पइगेहं । दिट्ठा चाणक्केण ‘हा ! किमेयं ? जमेसा पीइहराओ वि समागया सखेया उवलक्खेज्जइ !’ ति चित्तेऊणसमाउच्छिया खेयकारणं । ण य किंचि जंपेइ । तओ णिब्बंधेण पुच्छियाए जंपियं जहा “अहं ‘तुज्ज दरिदस्स करे विलगं’ ति काऊण माया-वित्तेहिं वि अवमाणिया, ‘अवमाणिय’ ति काऊणाधीई जाया” । तओ चित्तियं चाणक्केण ‘सत्यमेतत्, यतोऽर्थ एव गौरव्यः, न गुणाः । उक्तं च—

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्याऽप्यधो गच्छतु,

शीलं शैलतटात् पतत्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना ।

१. सं० वा० सु० ‘या होयव्वं ॥ २. ला० ‘म्मनियकम्मनिम्मिओ देवपरि’ ॥ ३. ला० विचोइस ॥ ४. सं० वा० सु० ‘लभारियं ॥ ५. ला० ‘या य क’ ॥ ६. सं० वा० सु० ‘ओ ईसर’ ॥ ७. ला० ‘मुहमाणसा वि कु’ ॥ ८. ला० कोइ ॥ ९. ला० ‘ज्जणाकाले ॥ १०. ला० ‘त्थाऽऽभरणा-लंकाराइएहिं महं’ ॥ ११. सं० वा० सु० सा चित्तेइ ‘धिसि ॥ १२. ला० ‘सट्टमहा’ ॥ १३. सं० वा० सु० ‘यं ? ति ज’ ॥ १४. ला० ‘ओ समागया वि ॥ १५. ला० ‘ण पुच्छिया ॥ १६. ला० माया-वित्तेण वि ॥ १७. सं० वा० सु० ‘या इति काऊण ॥

सौ(शौ)र्ये वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः केवलं,
येनैकेन विना गुणास्तृणलवप्रायाः समस्ता इमे ॥१५४॥

तथा-

धनैर्दुःकुलीनाः कुलीनाः क्रियन्ते, धनैरेव पापाञ्जना निस्तरन्ति ।
धनेभ्यो विशिष्टो न लोकेऽस्ति कश्चिद्, धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम् ॥१५५॥

किञ्च—

झीणविहवो न अग्घइ पुरिसो विण्णाण-गुणमहग्घो वि ।
धणवंतो उण णीओ वि गारवं वइह लोगम्मि ॥२२॥
कुल-सील-गुणा-सोडीर-चंगिमा तह य ललियमुल्लवणं ।
अकयत्थं सव्वमिणं होइ च्चिय अत्थरहियाणं ॥२३॥
कण्णकडुयं पि वयणं घेप्पइ अमयं व धणसमिद्धस्स ।
न उणो तं सयलकलाकलावकलियं पि अधणस्स ॥२४॥
जस्सत्थो तस्स जणो, जस्सत्थो तस्स बंधवा बहवे ।
धणरहिओ उ मणूसो होइ समो दास-पेसेहिं ॥२५॥
ता वज्जियसंसारो सया समत्थो समत्थभुवणम्मि ।
मुणिणाहो व्व महेज्जइ विबुहेहिं वि नूण एसत्थो ॥२६॥
अणहुंतया वि हुंतीएँ हुंति, हुंता वि जंति जंतीए ।
ओजीइ समं णीसेसगुणगणा जयउ सा लच्छी ॥२७॥

ता सव्वप्पगारेहिं चेव अत्थो उवज्जियव्वो । अत्थि य पाडलिउत्ते नयरे नंदो नाम राया,
सो य बंभणाण सुवण्णं देइ, ता तत्थ वच्चाभि' । त्ति संपहारिऊण गओ तत्थ । पविट्ठो य कहिंचि
दिव्वजोएण पमत्ताणं दारवालाणं रायसभाँए । दिट्ठं च रायनिमित्तमुवकप्पियमासणं, उवविट्ठो य
तत्थ । इओ य ण्हायसव्वालंकारविभूसिओ सनेमितिओ समागओ तत्थ नंदराया । चाणक्कं च दट्ठूण
जंपियं नेमितिण जहा 'देव ! एरिसे मुहुत्ते एस बंभणो रायसीहासणे निविट्ठो जारिसे नंदवंसस्स
छायं अवहरिऊण ठिओ, ता अरोसवंतेहिं सामेण विणएण य उट्ठवेयव्वो । तओ राइणा
दवावियमण्णमासणं । भणियं च दासचेडीए जहा 'भट्ट ! एयं रायसीहासणं, ता पसायं काऊण इत्थ
उवविसह' । तओ चाणक्केण चिंतियं 'एयं चेवाजुत्तं जमदिण्णे आसणे उवविसिज्जइ, एयं तु

सव्वजहणं जमुट्टिज्जइ' । ति सामत्थेऊण 'अस्तु, अत्र मे कुण्डिका स्थास्यति' इति कुंडियं ठवेइ । पुणो अण्णं रइयमासणं तत्थ तिदंडं । अन्नत्थ जण्णोव्वीयं । एवं जं जं ठवेइ तं तं रुंधइ । तओ 'धट्ठो'ति रुट्ठेण राइणा पाएसु गहेऊण कट्ठाविओ । उट्ठित्ता य पइण्णं करेइ, यथा-

‘कोशेन भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम् ।

उत्पाट्य नन्दं परिवर्तयामि, महाद्रुमं वायुरिवोग्रवेगः॥

जइ एयं न उप्पाडेमि तो एयं न छोडेमि' ति सिहाए गंठिं बंधेइ । 'जं तुज्झ पिउणो रोयइ तं करेज्जासु'ति भणमाणेहिं पुरिसेहिं अद्धयंदं दाऊण निच्छूढो । तओ णिगंतूण णयराओ चिंतिउमाढत्तो जहा 'कया मए कयत्थिज्जमाणेण कोहाभिभूएण माणमहापव्वयारूढेण अण्णाणबहलतमंधयारपडलाव-लुत्तविवेयलोयणेण महई पइण्णा, सा य णित्थरियव्वा । यत उक्तम्—

तरियव्वा व पइण्णिआ, मरियव्वं वा समरे समत्थएण ।

असरिसजणउप्फेसणया न हु सहियव्वा कुले पसूएण ॥१५६॥

ता कहं नित्थरियव्व ?' ति चिंतयंतस्स पुव्वसमायणियं चडियं चित्ते गुरुवयणं जहा 'मए पडंतरिएण राइणा होयव्वं' । ण य तेसिं महानुभावाणं वयणमण्णहा होइ । जओ—

अवि चैलइ मेरुचूला, अवराओ उग्गमिज्ज दिण्णाहो ।

मुंचेज्ज व मज्जायं जलणिहिणो, पडइ सगो वि ॥२९॥

नरयव्व उवरि होज्जा, ससिणो बिबं मुइज्ज अग्गी वि । ण य होइ अण्णहा तं विसिट्ठणाणीहिं जं दिट्ठं । ३०।

ता 'गवेसामि किं पि बिबं' ति । परिव्वायगवेसेणं गओ नंदस्स रण्णो मोरपोसगगामं । समुयाणंतो य पयट्ठो मयहरगेहं । जाव पिच्छइ तत्थ सव्वाणि माणुसाणि उव्विगाणि । पुच्छिओ य चाणक्को तेहिं जहा 'भगवं ! जाणसि किं पि ?' । चाणक्केण भणियं 'सव्वं जाणामि' । तओ तेहिं भणियं 'जइ एवं ता अवणेहि मयहरधूयाए चंदपियणदोहलयं, जओ दोहलयअसंपत्तीए कंठगयपाणा सा वराई, ता देहि पसायं काऊण माणुसभिकखं' ति । तओ 'हंत ! भवियव्वं इमीए गब्भे मम मणोरहाऽऽपूरणसमत्थेण केणावि सुपुरिसेणं' ति चिंतिऊण भणियं चाणक्केण 'पूरेमि अहं इमीए दोहलयं जइ मे गब्भं पयच्छह' ति । तओ 'इमीए जीवमाणीए अण्णे गब्भा भविस्संति'ति सामत्थेऊण पडिवन्नं तेहिं । सक्खिसमक्खं च काऊण काराविओ चाणक्केण पडमंडवो । पुण्णिमारयणीए य नहयलमज्झभागट्टिए ससहरे कयं उवरि छिदं । ठावियं च सव्वरस-ऽऽखीरदव्वसंजोगपडिउण्णं हेट्ठओ थालं । भणिया य सा 'पुत्ति ! तुज्झ निमित्तेण मए मंतेहिं

१. ला० 'वइयं' ॥ २. ला० ठविज्जइ ॥ ३. सं० वा० सु० पयन्नं ॥ ४. ला० 'जासि' ति ॥ ५. सं० वा० सु० 'हिं अद्ध' ॥ ६. सं० वा० सु० य पयण्णि ॥ ७. सं० वा० सु० वणइ ॥ ८. ला० सव्वमाणु ॥ ९. ला० 'परिपुण्णं' ॥

आगरिसिऊण आणियो एस चंदो ता पियसु' ति । तओ सा सहरिसं 'चंदं'ति मन्नमाणी जत्तियं जत्तियं पिवइ तत्तियं तत्तियं उवरि पुरिसो उच्छाडेइ । अद्धपीए य 'किं गब्भो पडिउन्नो भवेस्सइ न व ?' ति परिकखणत्थं भणिया जहा 'चिट्ठउ इत्तिओ, लोयाणं देज्जिही' । सा नेच्छइ । तेण भणियं 'जइ एवं ता पियसु, लोगनिमित्तमन्नमाणिस्सामि' । ति पूरिऊण दोहलयं दव्वोप्पायणणिमित्तं गओ धाउविवरेसु । तत्थं णाणाविहेहिं धाउवायप्पओगेहिं उवज्जियं पभूयं दविणजायं । आगओ य कालंतरेण तस्स गब्भस्स पउत्तिवियाणणत्थं । तओ पेच्छइ गामस्स बाहिं सयललकखणसंपुण्णं दारयं रायनीईए रममाणं । अवि य—

धूलीविलिहियबहुदेस-णगर-गामाण मज्झयारम्मि ।

फरिह-ऽट्टालय-पायार-भवणउवरइयणगरम्मि ॥३१॥

धूलीमयसिंहासणअभिरूढं डिंभमंति-सामंतं ।

नयरारक्ख-बलाहिय-पडिहार-पुरोहिय-भडेहिं(?डोहं) ॥३२॥

भंडागारिय-तलवर-सेणावइ-कट्टियाइपरिगरियं । तेसिं वि य विलहंतं गामा-ऽऽगर-देसमाईणि । ३३ ।

सत्थाह-महायण-सेट्ठि-पगइपभिईहिं विण्णविज्जंतं । एमाइ नरवरीसरनीईपरमं तयं दट्ठं ॥३४॥

परितुट्ठो चाणक्को पुरओ होऊण कुणइ पत्थणयं । तस्स परिकखणहेउं विणएणं जंपए एवं । ३५ ।

'देवऽम्हं पि य देज्जउ किंचि पसायं विहितु' सो भणइ । 'तुह गौउलाइं बंभण ! दिण्णाइं गेण्ह गंतूणं' । ३६ ।

(ग्रन्थाग्रम्-३०००)

तओ चाणक्केण भणियं 'देव ! गौउलाइं गेण्हमाणो मारेज्जामि' । तेण भणियं 'वीर भोज्जा वसुंधरा' । तओ चाणक्केण 'विण्णाण-सूरत्तणाइं पि अत्थि, ता जोगो एस मम मणोरहाणं'ति चिंतिऊण पुच्छिओ एगो डिंभो जहा 'कस्सेस दारगो ?, किं नामधेओ ?' । तओ डिंभेण भणियं जहा 'एस मयहरधीयापुत्तो परिव्वायगसंतिओ चंदगुत्तो नाम । तओ 'एसो सो'त्ति हरिसभरणिभरंगेण चाणक्केण भणियो चंदगुत्तो जहा 'अहं सो परिव्वायगो जस्स संतिओ तुमं, ता एहि वच्छ ! जा ते सच्चयं रायाणं करेमि' । तओ "जंमाणवेइ अज्जो"त्ति जंपमाणो लग्गो तप्पिड्डओ चंदगुत्तो । चाणक्को वि डिंभरूवाणं वुत्तंतं साहिय तं धेतूण पलाणो । मेलिऊण चाउरंगं बलं कओ चंदउत्तो राया । ठिओ अप्पणा मंतिपए । एवं च महासामग्गिं काऊण गया पाडलिउत्तं । रोहिऊण य तं ठिया । तओ नंदराया एयं णाऊण सव्वसामग्गीए निग्गओ । जायमाओहणं । अवि य—

१. सं० वा० सु० 'रिसा ॥ २. सं० वा० सु० इत्तियं ॥ ३. ला० 'त्थ य णा' ॥ ४. ला० सव्वलक्ख ॥ ५. सं० वा० सु० 'विरइयब' ॥ ६. ला० 'सामंता ॥ ७-८. ला० गोयला' ॥ ९. ला० 'मधिज्जो ? ॥ १०. सं० वा० सु० जहा आणवेइ ॥

वज्जंततूरनिस्सणं, खिप्पंतसेल्लभीसणं । पढंतभट्टवंदयं, आवेतअद्धचंदयं ॥३७॥

घुस्संतनाम-गोत्तयं, भणंततिकवकुंतयं । पडंतखग्गघाययं, मुच्चंतणैयसाययं ॥३८॥

छिज्जंतरायचिंधयं, तुट्टंतवम्मबंधयं । पडंतआयवत्तयं, मरंतभूरिस्सत्तयं ॥३९॥ इति ।

तओ एवंविहे समरभरे वट्टमाणे नंदरायजोहेहिं भणं चंदगुत्तसेणं, भयपराहीणं च महावायावधूय-अकालजलयपडलं व इति विलीणं दिसोदिसिं । तं च तारिसं दट्ठूण तुरंगमारूढा एगदिसिं गहाय पण्डा चंदगुत्त-चाणक्का । तेसिं च पिट्ठओ लगा आसवारा ।

तओ 'मा नज्जीहामो' ति तुरंगे मुत्तूण पलायमाणा जाव चडिया सरोवरपालीए ताव पिच्छंति जच्चतुरंगमारूढं पिट्ठओ समागच्छमाणं एगं पुरिसं । तं च दट्ठूण भणिओ चीरपक्खालणवावडो नीरंतट्ठिओ रायरयो चाणक्केण जहा 'अरे रे ! लहुं लहुं पलायसु जओ भणं चंदगुत्त-चाणक्केहिं पाडलिउत्तं, गवेसिऊण घेप्पंति य नंदवक्खिया' । तमायण्णिऊण पण्डो रयो । गोविओ चंदगुत्तो पउमिणीसंडमज्जे । अप्पणा य रयगट्ठाणे ठिओ वत्थाणि धोविउमाढतो । तओ पुच्छिओ आसवारेण जहा 'रे ! दिट्ठा कत्थइ चंदगुत्त-चाणक्का ?' । चाणक्केण भणियं 'ण याणामि चाणक्कं, चंदगुत्तो पुण एस पउमिणीसंडमज्जे निलुक्को चिट्ठइ' । तेण वि णिरूविओ, दिट्ठो य । तओ अप्पिओ तेण चाणक्कस्स अस्सो । तेण भणियं 'बीहामि अहमेयस्स' । तओ झाडे बंधेऊण आसं, मोत्तूण खग्गमेगपासे, जलावयरणणिमित्तं जाव ओगुडिओ मुयइ आउगं ताव खग्गं गहाय चाणक्केण विणिवाइओ । सट्ठेऊण य, चंदगुत्तं, चडेऊण आसे पलाणा । 'मा नज्जीहामो' ति भएण सो वि तुरंगमो मुक्को । वच्चंतेण य पुच्छिओ चंदगुत्तो चाणक्केण जहा 'रे ! किं चिंतियं जं वेलं मए सिट्ठो?' । चंदगुत्तेण भणियं 'एवं चेव मे रज्जं भविस्सइ, अज्जो चेव जाणइ, ण गुरुवयणे वियारणा कायव्वा' । यत उक्तम्—

मिणगोणसंगुलीहिं गणेहिं वा दंतचक्कलाइं से ।

'इच्छं' ति भाणिऊणं कज्जं तु त एव जाणंति ॥१५७॥

कारणविऊ कयाई सेयं कायं वयंति आयरिया ।

तं तह सदहियव्वं भवियव्वं कारणेण तहिं ॥१५८॥

जो गेणइ गुरुवयणं भणंतं भावओ विसुद्धमणो ।

ओसहमिव पिज्जतं तं तस्स सुहावहं होइ ॥१५९॥

१. ला० 'यबंधयं' ॥ २. ला० 'यं' ॥ ति ॥ ३. ला० 'तुरंगमे' ॥ ४. ला० 'नीरट्ठिओ' ॥ ५. सं० वा० सु० 'हा 'कत्थह(इ) अरे दिट्ठा चंद' ॥ ६. ला० 'जंप्पियं' ॥ ७. सं० वा० सु० 'संपुडम' ॥ ८. ला० 'ण चंद' ॥

तओ णायं जहा 'जोगो एसो ण कहिंचि विपरिणमइ' । पुरओ वच्चंताणं छुहाए पीडिओ चंदउत्तो । तं एगत्थ वणगहणो पमुत्तूण भत्ताणयणणिमित्तं जाव पविसइ एगत्थ गामे ताव पिच्छइ सम्मुहमागच्छंतं चच्चियसव्वंगं उताणियपोट्टं एगं बंभणं । तं च दड्डूण पुच्छियं चाणक्केण 'किमत्थि कस्सइ गेहे भोज्जाइयं?' । तेण भणियं 'अत्थि एगस्स जजमाणस्स गेहे पगरणं, तत्थ बंभणाणं जहेच्छाए दिज्जए भोयणं । अवि य-

दिज्जइ विविहो कूरो दहिएण करंबिओ जहेच्छाए । अवगणियसत्तु-मित्तं ता वच्च तुमं पि तत्थेव । ४०।

अइभत्तो सो दाया भट्टाण विसेसओ अओ वच्च । इण्हिं चेव य भोत्तुं अहमवि तत्तो समायाओ' । ४१।

तओ 'मातत्थ पविट्ठं कोइ वियाणिही ता एयस्स चेवं पोट्टं फांडेऊण अहुणोवभुत्तमविणट्ठं करंबयं घेतूण वच्चाभि'त्ति चिंतिऊण तस्स पोट्टं फालिय पुडगं भरित्ता आगओ चंदगुत्तसमीवं । भुंजाविय जहिच्छं चंदगुत्तं पुणो पड्डिया ।

रयणीए पत्ता एगत्थ सन्निवेसे । तओ तत्थ भिक्खं भममाणा गया एगाए मय्हरआभीराए गेहे । इत्थंतरम्मि य तीए णियडिंभरूवाणं उत्तरियमेत्ता चेव परिविट्ठा विलेवी । तओ एगेण अयाणमाणेण बालेण छूढो तम्मज्जे हत्थो । दड्डो य सो जाव अक्कदइ ताव भणिओ तीए 'पाविट्ठ ! निब्बुद्धिय ! तुमं पि चाणक्कवंगलो' ति । तओ चाणक्केण नियनामासंकिएण पुच्छिया सा 'अम्मो ! को एस चाणक्को जस्स संतिर्या तए एवं उवमा दिन्ना ?' । तीए जंपियं "पुत्त ! सुम्मए कोइ चाणक्को, तेण य चंदगुत्तो राया कओ, खंधावारं च काऊण रोहियं पाडलिउत्तं, तओ नंदेण समरं काऊण सचंदगुत्तो विणासिओ, ता मुरूखो सो जो एयं पि ण याणइ जहा 'पढमं पासाणि धिप्पंति, तओ पासेहिं गहिण्हिं नगरं गहियमेव भवइ', ता पुत्त ! एसो वि मम डिंभो तस्समाणो चेव जो रब्बाए पासाणि अघेतूण मज्जे हत्थं छुहइ" । तओ 'बालादपि हितं वाक्यं' इति नीइवक्कं सुमरंतेण अमयमिव गहियं तव्वयणं ।

गओ हिमवंतकूडं नाम पव्वयं । तत्थ य पव्वयएण सबरराइणा सह कया पीई । भणिओ य सो जहा 'गेणहामो पाडलिपुत्तं अद्धमद्धेणं च विभइस्सामो रज्जं । तेण वि तहेव पडिक्खणं । तओ महासामग्गीए मंडलंतराणि ओयविंता पत्ता एगत्थ णयरे । रोहियं च । सव्वपयत्तेण य लगाण वि न पडइ । तओ चाणक्को परिव्वायगवेसेण णगरवत्थुणिरिक्खणत्थं पविट्ठो अब्भितरे । दिट्ठाओ य

-
१. सं० वा० सु० 'णवइ ॥ २. ला० 'ओ य व' ॥ ३. सं० वा० सु० छुहाइ ॥ ४. ला० 'णे मोत्तूण ॥ ५. सं० वा० सु० 'इ ताव एगत्थ गामे पि' ॥ ६. ला० चच्चिक्रियस' ॥ ७. सं० वा० सु० 'स्स य गे' ॥ ८. सं० वा० सु० मा पविट्ठं तत्थ कोइ ॥ ९. सं० वा० सु० 'व पिट्ठं ॥ १०. ला० फालिऊण ॥ ११. ला० 'यहरियाभीरीए ॥ १२. ला० बालएण ॥ १३. ला० 'क्कंदेइ ॥ १४. ला० 'या ते उव' ॥ १५. सं० वा० सु० वाच्चं ॥ १६. ला० महया साम' ॥

सुहलगणपइडियाओ इंदकुमारियाओ । ताणं च पहावेणं ण पडइ तं णगरं । लोगो य आयतो पुच्छइ ।
चाणक्केण मायापवंचणिउणेण जंपियं, अवि य—

भो भो ! एरिसलगे इंदस्स कुमारियाओ एयाओ । इह ठाणे ठवियाओ न फिट्ठई रोहओ जेण ॥४२॥
लक्खणबलेण एयं मे णायं पच्चओ य इह एसो । अवणित्ताण य तुब्भं ओसरिही रोहओ किंचि ॥४३॥
अवणेंति जाव ते वि हु ओसारइ ताव रोहयं किंचि । तो दिट्ठपच्चएणं जणेण मूलाणि वि खयाणि ॥४४॥

एवं च भंजेऊण णगरं गया पाडलिउत्तं । निस्संचारं च रोहिउं ठिया । कोइ य दिणे दिणे
महासंगामं नंदो । एवं च वच्चंतेसु दिणेषु जाव उवक्खीणो नंदराया ताव मणियं धम्मदुवारं । दिन्नं
च तेहिं जहा 'एगरहेण जं सकसि तं णीणाहि' । तओ नंदराया,

'धिद्धि ति रायलच्छी अदीहपेही मुहुत्तरमणीया । परिचइऊणाऽऽढत्ता एगए दुज्जणसहावा ॥४५॥

खणमेत्तं रमणीया होऊण विणा वि कारणं सहसा ।

खलमहिल व्व विलुट्ठइ झड ति एसा अहह ! कट्ठं ॥४६॥

इय चिंतंतो दो भज्जाओ एयं च कन्नगारयणं पहाणरयणाणि य रहम्मि समारोवेऊणं
निगओ । निगच्छंतस्स य सा कण्णया चंदउत्तं पलोयंती नंदेण भणिया 'आ पावे ! मम सव्वं पि
रज्जं एएण गहियं तुमं पि एयं चेव पलोयसि ता गच्छसु'ति रहाओ उत्तारेऊण मुक्का ।
चंदगुत्तरहम्मि समारुहंतीए भग्गा नव अरया । 'अवसउणो'ति मण्णमाणेण निवारिया चंदउत्तेण ।
चाणक्केण भणियं "मा णिवारेहि, 'णवपुरिसजुगाणि तुह रज्जं होहि' ति महासउणो एस" । तओ
समारूढा एसा कण्णगा । पविट्ठा य ते णगरं । विभत्तं दोहिं विभागेहिं सव्वं । एगो य कण्णगा,
दोण्ह वि अणुरागो तीए उवरिं । तओ चाणक्केण 'सतुकण्णया मा सोहणा न भवेस्सइ'ति चिंतिऊण
भणिओ चंदगुत्तो 'जेट्ठभाया तुज्झ एसो, ता एयस्स चेव एसा हवइ'ति भणेऊण णिवारिओ
चंदगुत्तो । पव्वयगपरिणावणत्थं च समाढता सव्वसामणी । अवि य-

उब्भविया वरवेई संठवियं जलणकुंडमइरम्मं । मंगलतूरं विसरं पवज्जियं भरियनहविवरं ॥४७॥

पज्जालियो य जलणो महु-घयसित्तो य विसमजालाहिं ।

लायंजली उ खित्ता जोइसिएणं खणंद्रे(णद्धे)णं ॥४८॥

अंधारियं च गगणं तमालदलसामलेण धूमेणं । सुविसुद्धे वि हु लगे गणिए, दिव्वण्णभंतीए ॥४९॥

मुत्तीए संकंतो भूमिसुओ तक्खणम्मि नीयत्थो । एत्थंतरम्मि गहिओ कण्णाइ करो णरिदेण ॥५०॥

१. ला० 'ओ । ताणं ॥ २. ला० फिट्ठए ॥ ३. सं० वा० सु० ते जहा ॥ ४. ला० नीणेहि ॥ ५.
ला० इइ चिं ॥ ६. ला० एवं(गं) चकण्णयं पहा ॥ ७. ला० 'ण निगच्छं ॥ ८. ला० 'म्मि य समा' ॥
९. ला० 'ढा कण्ण' ॥ १०. सं० वा० सु० सयं । एगा ॥ ११. ला० गा कण्ण' ॥

जा परियंचइ जलणं राया ता बालियाकरणाओ । विसभाविय त्ति काउं घोरविसं रायणो झत्ति ॥५१॥
 संचरियं तत्तो सो विसवेगऽब्भाहओ भणइ एवं । 'अइ भाय ! भायवच्छल ! मरिज्जए चंदगुत्त' त्ति ॥५२॥
 तो विसवेगं णाउं 'रुभामि विसं' त्ति चंदगुत्तनिवो । जावाणवेइ पुरिसे भिउडिं ता कुणइ चाणक्को ॥५३॥
 सुमरंतो नीईए वयणमिणं कलुसिओ सचित्तेण । 'अर्धराज्यहरं मित्रं यो न हन्यात् स हन्यते' ॥५४॥
 णाऊणं तब्भावं मज्झत्थो चेव संठिओ राया । पव्वयगो वि य पंचत्तमुवगओ वेयणक्कंतो ॥५५॥

तओ दोसु वि रज्जेसु चंदगुत्तो चेव राया जाओ ।

इओ य नंदरायसंतिया पुरिसा चोरियं कुणंति । चाणक्को वि चोरगाहमगणत्थं
 परावत्तियवेसो भिक्खं भमइ । तओ पिच्छइ नलदामकुविंदं पडयं वुणमाणं, तस्स य पुत्तो रममाणो
 मैकोडएहिं खइओ । सो य रडंतो पिउणो णिवेयइ । तेण वि कुद्धेण मुइंगबिलं खणेऊण कारीसं
 पक्खिविय सव्वे दड्ढा । तओ 'सोहणो एस णयरारक्खो' त्ति ठिओ चाणक्कचित्ते । घरं गएण
 सदावेत्ता ठाविओ तलारपए । तेण वि वीसासेत्ता भणिया सव्वे वि तक्करा जहा 'विलसह संपयं
 जहिच्छाए अम्ह चेव रज्जं' । तओ अण्णम्मि दिणे सव्वे वि सपुत्तदारा णिमंतिया । भोयणोवविट्ठाण
 य दाराइं पिहित्ता गेहं पज्जालिऊण उत्थाइया ।

तओ णगरस्स सुत्थे जाए पुणो वि 'को मज्झ अहिओ ?' त्ति चिंतंतस्स कप्पडियत्तणे
 अदिन्नभिक्खो चडिओ एणो गामे चित्ते । रूसेऊणतस्सोवरिं दिन्नो गामेल्लगाणं खुद्दाएसो जहा 'रे !
 तुम्ह गामे अंबगा वंसा य संति, ता अंबगे छित्तूण वंसाण परिकखेवं करेह' । तओ तेहिं गामेल्लएहिं
 परमत्थमयाणमाणेहिं नियबुद्धीए 'अंबगा रक्खणीय त्ति रायाएसो संभावेज्जइ' त्ति परिभावेऊण वंसे
 छिंदिरुण अंबगाण पागारो कओ । तओ तं विवरीयवयणकरणछिंदं लाइऊण सनर-नारि-डिंभरूव-
 चउप्पओ दाराणि पिहित्ता सव्वो पलीविओ गामो ।

तओ अन्नम्मि दिणे कोसणिरूवणं कुणंतेण दिट्ठं सव्वं सुण्णं भंडागारं । तप्पूरणत्थं च कया
 कूडपासया । ठावियं च नियपुरिससमेयं दीणारपडिउन्नं सुवण्णमयं थालं । भणइ य सो पुरिसो 'जो
 ममं जिणइ सो एयं थालं गेण्हइ, अह मया जिप्पइ तो एणं दीणारं देइ' । तओ तेण थाललोभेण
 पभूयलोगो रमइ, न य कोई जिणइ, जओ ते पासया तस्स पुरिसस्स इच्छाए पडंति ।

चाणक्केण य चिंतियं 'पभूयकालिओ एस उवाओ ता अन्नं उवायं पयट्ठेमि' त्ति । ता 'को
 उण उवाओ भवेस्सई ?, हुं नायं मज्जं पाएमि सव्वे कोडुंबिणो जेण णियघरवत्ताए परमत्थं कहंति,
 जओ-

१. ला० अइ भाइ ! भाइव ॥ २. सं० वा० सु० 'रं भृत्यं यो ॥ ३. ला० मक्कोड' ॥ ४. ला० 'ण
 य त' ॥ ५. सं० वा० सु० 'ओ विव' ॥ ६. सं० वा० सु० तो ॥ ७. सं० वा० सु० 'इ ? त्ति हुं ॥

कुवियस्स आउरस्स य वसणं पत्तस्स रागरत्तस्स । मत्तस्स मरंतस्स य सन्भावा पायडा हुंति' ॥५६॥

त्ति परिभाविऊण णिमंतिओ कोडुंबियलोगो । पाइओ सव्वो वि मज्जं, न य अप्पणा पियइ। तओ जाव सव्वे मत्ता ताव मयपराहीणो व्व तेसिं भावपरिक्खणत्थं जंपिउमाढत्तो, अवि य-

दो मज्झ धाउरत्ताओ कंचणकुंडिया तिदंडं च ।

राया मे वसवत्ती, एत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६०॥

अण्णो असहमाणो भणइ-

गयपोययस्स मत्तस्स उप्पइयस्स जोयणसहस्सं ।

पए पए सयसहस्सं, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६१॥

अन्नो भणइ-

तिलआढयस्स उत्तस्स निष्फण्णस्स बहुसइयस्स ।

तिले तिले सयसहस्सं, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६२॥

अन्नो भणइ-

नवपाउसम्मि पुण्णाएँ गिरिनइयाएँ सिग्घवेगाए ।

एगाहमहियमित्तेण णवणीएण पालिं बंधामि, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६३॥

अण्णो भणइ-

जच्चाण णवकिसोराण, तद्विवसेण जायमित्ताण ।

केसेहिं नहं छाएमि, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६४॥

अण्णो भणइ-

दो मज्झ अत्थि रयणाणि, सालपसूई य गह्मभिया य ।

छिन्ना छिन्ना वि रुहंति, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६५॥

अन्नो भणइ—

सयसुक्किलो णिच्चसुयंधो, भज्ज अणुव्वय णत्थि पवासो ।

निरिणो य दुपंचसओ, इत्थ वि ता मे होल वाएहि ॥१६६॥

एवं च तेसिं भावं णाऊण मगिया जहोचियं दव्वइत्ता । गोहणइत्तो एगदिवसणवणीयं,
आसवई एगदिवसजायतुरंगे, धण्णइत्तो सालिरयणाणि मगिओ । एवं भंडागार-कोट्टागाराणि
पडिपुण्णाणि कयाणि । तओ सत्थचित्तो रज्जधुरमणुपालेमाणो चिट्ठइ ।

अह अण्णया कयाई संजायं महारोखं दुवालससंवच्छरियं दुब्भिक्खं । अवि य—

लुहसुसियमयकलेवरसुनिरंतरसंकुलाइ धरणीए । जीवंतयलोगाणं संजाया दुग्गमा मग्गा ॥५७॥
जत्थ य पुरिसाएहिं खज्जंतं जाणिऊण जणणिवहं । गामाओ गामं पि वि न जाइ भयवेविरो लोगो ॥५८॥
जत्थ उ काइ पुरंधी नियपुत्तं भोयणं विमग्गंतं । मुत्तूण जाइ अण्णं देसं णियजीयकंखाए ॥५९॥
का वि पुणो णियजीवियलुद्धा अइघोरपावपरिणामा । मोत्तूण कुलं सीलं भक्खइ वावाइउं पुत्तं ॥६०॥
अन्ना वि सत्तवंता गयजीयस्सावि णिययतणयस्स । अइणेहमोहियमणा वयणे पक्खिवइ आहारं ॥६१॥
अन्ना वि रोवमाणं मग्गंतं भोयणं तओ कुद्धा । उव्वेइया लुहाए घायं दाऊण णिहणेइ ॥६२॥
जत्थ य भत्ता भज्जं मुंचइ, भज्जा वि णिययभत्तारं । जत्थ य भिक्खयरेहिं य लब्भइ किंचि काउं जे ॥६३॥
साहूण गिहत्थाण य गिहाओ गेहम्मि वच्चमाणाणं । हेज्जंति गोवियाइं वि जत्थ डइल्लेहिं भत्ताइं ॥६४॥
किं बहुणा भणिणं ?, सव्वं असमंजसं तहिं जायं । अइघोरे दुब्भिक्खे पाडलिपुत्तम्मि णयरम्मि ॥६५॥

इओ य अणागयमेव णाऊण तत्थ विहारक्कमागएहिं जंघाबलपरिक्खीणेहिं सिरिविजयसूरीहिं
तत्थेव वुट्ठावासं काउकामेहिं ठाविओ निययपए अण्णो सूरी । दिन्ना य एगंतठियस्स बह
सायिसओवएसा । पेसिओ सबाल-वुट्ठाउलगच्छेण सह अन्नत्थ सुब्भिक्खदेसे ।

तत्थ य दुवे खुड्डगा आयरियपडिबंधेण अइदूरं गयाण साहूण कहिंचि दिट्ठिं वंचेत्ता
समागया गुरुसमीवं । वंदिया गुरुणो । णिवेइओ णिययाभिप्पायवुत्तंतो । गुरूहिं भणियं 'दुड्डकयं
जमागया, जओ इत्थ अमाया-पुत्तं दुब्भिक्खं भविस्सइ, तां वच्चह पुणो वि साहुमज्जे' । तेहिं
भणियं 'तुम्ह चेरणाराहणं कुणंताणं जं होइ तं होउ, जओ न चएमो तुम्ह पायमूलं मोत्तुं' । तओ
धरिया सूरीहिं । जाए य पुव्ववण्णिए दुब्भिक्खे जं किंचि सूरिणो मणोज्जं लहंति तं तेसिं बालगाणं
पयच्छंति । तओ चितियं खुड्डएहिं 'ण एयं सुंदरं, जओ गुरूम्मि सीयमाणे का अम्हाणं गई
भविस्सइ ?, जओ—

जेण कुलं आयत्तं तं पुरिसं आयेरेण रक्खेह । ण हु तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति । ६६।

१. सं० वा० सु० 'साईहिं, मनुष्यभक्षकैरित्यर्थः ॥ २. ला० का वि पु' ॥ ३. ला० 'वाइयं पु' ॥ ४.
सं० वा० सु० काउं जं ॥ ५. ला० पाटलि' ॥ ६. ला० वुट्ठवा' ॥ ७. सं० वा० सु० य कयएणं' ॥ ८. ला०
'साइस' ॥ ९. ला० 'ओ य स' ॥ १०. ला० 'भिप्पेय' ॥ ११. ला० तो ॥ १२. ला० चलणा' ॥ १३. ला०
गुरूहिं सीयमाणेहिं का ॥ १४. ला० रक्खाहि ॥

विगलीयमयम्मि जरजजरम्मि हल्लंतदंतमुसलम्मि । होइ सणाहं जूहं जूहवइम्मि धरंतम्मि ॥६७॥

तां जो अम्हेहिं कुडुंतरिएहिं निसुणिओ अहिणवसूरीण गुरूहिं देज्जमाणो अंजणपओगो तं करेमु' ति । परोप्परं सैवितीए तहेवाऽणुडिओ, सिद्धो य । तेण य अंजणप्पओगेण अदिस्समाणा दो वि गया राइणो चंदउत्तस्स भोयणमंडवं । उवविट्ठा य रण्णो उभयपासेसु । भोत्तूणं य णरवइथाले दिणे दिणे समागच्छंति । राया वि अण्णदिणोव्वरियभत्तप्पमाणे जाए अजिण्णभएण उट्ठविज्जइ विज्जेहिं । एवं च एगजणभत्ते तिहिं जणेहिं भुज्जमाणे अतिप्पमाणो दुब्बलीहोइ चंदउत्तो । तं च तारिसं दड्डूण भणियं चाणक्केण, 'किं तुमं पि दुक्कालिओ ? जेण दुब्बलो जाओ' ति । चंदगुत्तेण भणियं 'सच्चं, अज्जो ! ण याणामि कारणं, किंतु अहं ण तिप्पामि' । चाणक्केण चिंतियं 'नूणं को वि सिद्धो अवंतराओ एयस्साऽऽहारं भक्खेइ, अओ एस ण तिप्पइ' । तओ बीयदिणे पक्खित्तो सव्वत्थ भोयणमंडवे इट्ठालचुण्णो, दिट्ठा य दुण्हं बालवयसाणं पयपंती, णायं च जहा 'दो लहुवयसा सिद्धा समागच्छंति' । अन्नम्मि दिणे भोयणमंडवस्स दुवाराइं पिहित्ता कओ मज्झे धूमो । तेण य गलियं तल्लोयणाणमंजणं । दिट्ठा य रण्णो उभयपासोवविट्ठा दुवे चेल्लया । तओ चंदगुत्तो 'अहमेएहिं विट्ठालिओ' ति विमणदुम्मणो जाओ । तं च तारिसमवलोइऊण चाणक्केण भणियं, अवि य—

रे ! किं विमणो जाओ ? अज्जं चिय नूण सुद्धओ तं सि । बालकुमारजईहिं सह भुत्तो जं सि एगत्य ॥६८॥
को साहूहिं समाणं भोत्तुं पावेइ एगथालम्मि ? । ता तं चिय सकयत्थो सुलद्धमिह जीवियं तुज्झ ॥६९॥

धण्णो य पुण्णभाई परमपवित्तो तुमं चिय णरिंद ! ।

लाभा उ ते सुलद्धा जं बालमुणीहिं सह जिमिओ ॥७०॥

एए च्विय सकयत्था जियलोए वज्जिऊण जे भोए । बालत्ते णिक्खंता जिणिंदधम्मे जओ भणियं ॥७१॥

धण्णा हु बालमुणिणो बालत्तणयम्मि गहियसामण्णा ।

अणरसियणिव्विसेसा जेहिं न दिट्ठो पियवियोगो ॥७२॥

एवमणुसासेऊण चंदउत्तं विसज्जिया चेल्लया । अप्पणा य गओ गुरूसमीवं । भणिया य गुरूणो 'जइ तुब्भं पि सीसा एवं करेति ता कत्थऽण्णत्थ सोहणं भविस्सइ ?, ता णिवारेज्जह एए' । तओ गुरूहिं भणिओ चाणक्को जहा 'भद ! सावगो होऊण अप्पणं विगोएसि ?, नाममित्तेण चेव तुट्ठो ?, एवंविहपमत्तयाए नित्थरिहिसि संसारं ?, जमेएसिं दुण्हं पि खुड्डगाणं ण वहसि वट्ठमाणिं, एएण चेव कारणेणं साहू अण्णत्थ पेसिया, एए उण वलिऊणाऽऽगया, ता किं इत्तियस्स पावारंभस्स अण्णं ते फलं भविस्सइ ?, उक्तं च—

१. 'ता' इति सं० वा० सु० प्रतिषु नास्ति ॥ २. ला० निसुओ ॥ ३. सं० वा० सु० सविती ॥ ४. ला० ण णर ॥ ५. ला० 'णेहिं अ' ॥ ६. ला० समत्थभोय ॥ ७. ला० लाभा हु ते ॥ ८. ला० 'ए उज्झिऊण ॥ ९. सं० वा० सु० 'सिं खुड्ड' ॥

जस्स ण जइणो गेण्हंति कह वि जत्तेण जोइयं दाणं ।
सो किं गिही ? मुहा होइ तस्स घरवासवासंगो ॥१६७॥

तथा—

पं(व)ल्लरि पाणिइ नवइं तंणि, अण्णु वि अण्णह उप्परि नाडइ ।
भल्लउ तावहिं जाणियइ, जावहि जलहरु बिंदु न पाडइ' ॥१६८॥

एयमायण्णिऊण लज्जिओ चाणक्को ।

‘इच्छामो अणुसट्ठिं, जं उद्धरिओ अहं निवडमाणो । चोयणवरवहणेणं संसारमहासमुद्दाओ ॥७३॥
फासुयएसणिणं अहापवत्तेण भत्तपाणेणं । कारेज्जह अणुदिवसं अणुगहं मज्झ गेहम्मि ॥७४॥
खमियव्वं च असेसं जमुवालंभेण खेइया सामि !’ इय भणिउं चाणक्को गओ य निययम्मि गेहम्मि ॥७५॥

तत्थ य चिंतिउमाढत्तो ‘हंत खुड्डओ व्व अदिस्समाणो जइ को वि वइरिओ विसं संकामेइ
ता न सोहणं होइ, किंच पुव्वं पि विसकण्णगापओगाओ कहिंचि छुट्ठो एस राया, तो संपयं तहा
करेमि जहा विसप्पओ—

गाओ न चेव भयं हवइ’ । त्ति संपहारेऊण सहमाणं सहमाणं भुंजाविओ विसमिस्समाहारं ।
रण्णो य धारिणी णाम महादेवी । तीसे य पहाणगब्भाणुभावेण समुप्पण्णो दोहलओ, अवि य—

धण्णाओ कयत्थाओ ताओ जणणीओ जाओ नरवइणा । भुंजंति एगथाले सहेगसीहासणगयाओ ॥७६॥

किं ताण जीविणं ? विहलं चिय ताण गब्भउव्वहणं ।

जाओ न रण्णा समयं भुंजंती एगथालम्मि ॥७७॥

तओ तम्मि दोहले अपुज्जमाणे परिदुब्बलंगी संजाया । तारिसिं च दइण पुच्छियं
चंदगुत्तरण्णा जहा ‘पिए !

किं तुज्झ नेय पुज्जइ साहीणम्मि वि मए?,

किमहवा वि भणिया केणइ किंचि वि दुव्वयणमणज्जकज्जेणं ॥७८॥

किं वा वि केणइ तुहं आणाए खंडणं कयं देवि ! ? ।

कस्स अयंडे कुविओ जमराया अज्ज भो ! सहसा?’ ॥७९॥

पडिभणइ धारिणी तो ‘नेयाणं होइ देव ! एणं पि । गब्भाणुभावजणिओ किंतु महं डोहलो एसो ॥८०॥

१. ला० पत्तरि ॥ २. ला० तृणि ॥ ३. ला० ‘मुहम्मि ॥ ४. ला० ‘दियहं ॥ ५. ला० खुड्डय व्व ॥
६. ला० वेरिओ ॥ ७. ला० तारिसियं च ॥ ८. सं० वा० सु० केण य ॥ ९. ला० ‘डे सहसा, जमराया अज्ज
परिकुविओ ॥ १०. ला० ‘णं देव ! होइ एक्कं पि ॥

जइ नरवइणा सद्धिं अहयं भुंजामि एगथालम्मि' । तो भणइ णिवो 'चेट्टसु वीसत्था, पूरिमो एयं' । ८१।

तओ बीयदिणे भोयणोवविट्ठो पंभणिओ तीए राया एगत्थभोयणं । तेण वि जाव तं तहेव पडिवन्नं । तओ णिवारिओ चाणक्केण जहा 'मा देहि म्हुयभाविओ एस सव्वो वि तुज्झ संतिओ आहारो' । तओ दिणे दिणे मगंतीए वि चाणक्कभणं न देइ-सया । अण्णदिणम्मि य अणागच्छंते चाणक्के मणिओ एकवलं । दिण्णो य तेण । तओ जाव तं मुहगयमासाएइ ताव पत्तो चाणक्को । दिट्ठा य पलिसायंती । 'अहो ! अकज्जं, अहो ! अकज्जं'ति भणमाणेण छुरियं गहाय पोट्टं फालेऊण कट्ठिओ दारगो । घयाइमज्जे य धरिऊण पूरियाणि अपुण्णदिणाणि । जणणीए तं कवलं पलिसायंतीए पडिओ तस्स उत्तमंगे एगो बिंदू, तेण तस्स बिंदुसारो चेव णामं कयं । वट्ठिओ देहोवचएण कलाकलावेण य । उवरए य पियरम्मि सो चेव राया जाओ । भणिओ य धावीए जहा 'पुत्त ! सम्मं चाणक्कस्स वट्ठेज्जसु' । सो वि तहेव वट्ठइ ।

अण्णया य एगंतसंठिओ भणिओ णंदसंतिएण सुबंधुणा सचिवेण जहा 'देव ! जइ वि अम्हाणमुवरितुब्भे अप्पसाया तहा वि जमेयस्स पट्टस्स हियं तमम्हेहिं विण्णवेयव्वं, तत्थ जो एस चाणक्कमंती सो अईवखुट्ठो, जओ एएण देवस्स जणणी आरडंती पोट्टं फालेऊण मारिया, ता तुब्भे वि पयत्तेण अप्पाणं रक्खेज्जह' । तओ राइणा पुच्छिया अंबधाई जहा 'अंब ! किमेयं सच्चं जं मह जणणी चाणक्केण विणासिया ?' । तीए भणियं 'पुत्त ! सच्चं'ति । तओ कुविओ चाणक्कस्सोवरि राया । आगच्छंतं दट्ठण ठिओ ज्झत्ति परम्मुहो । इयरो वि पिसुणप्पवेसं णाऊण तओ चेव णियत्तेऊण गओ नियगेहं । तत्थ दव्वं सयणवगं च जहोचियं निजोजिऊण एगत्थोवरगो मंजूसामज्जे गंधसमुगयं सपत्तयं छोदूण तालयाणि दाऊण णिगओ णयराओ । अणसणं गहाय ठिओ कारीसमज्जे इंगिणिमरणेण ।

इओ य अम्मधाईए भणिओ राया 'पुत्त ! दुट्ठं कयं जममच्चो परिभूओ, जओ एयसंतियं ते रज्जं पाणा य' । ति भणिऊण साहिओ सव्वो वि पुव्वो वइयरो । 'ता खामित्ता सिग्घमंणेहि' । तमाइण्णेऊण राया वि गओ सपरियणो चाणक्कसमीवं । खामेत्ता य भणइ 'एह पसायं काऊण घरं वच्चामो' । चाणक्केण भणियं 'सव्वं परिचत्तं मए, जओ पडिवण्णमणसणं' । तओ निच्छयं णाऊण खामेत्ता वंदित्ता य गओ बिंदुसारो णिययगेहं । सुबंधुणा वि 'जइ कह वि णियत्तइ ता ममं णिक्कंदं उप्पाडैइ' ति चिंतितुण विण्णत्तो राया जहा 'देव ! चाणक्कस्स संपयं समसत्तु-मित्तभावस्स देवाणुमएण पूयं करेमि ?' । राइणा वि 'एवं करेह' ति भणिए मायाए पूयं काऊण धूवमुप्पाडेऊण वियालवेलाए कारीसमज्जे इंगालं छोदूण गओ नियगेहे । इयरो वि तेण जलणेण डज्झंतो सम्मं सहइ । अवि य—

१. ला० पणइओ ॥ २. सं० वा० सु० 'ज्जेण धरे' ॥ ३. ला० 'ए य तं' ॥ ४. सं० वा० सु० 'माणेह' ॥ ५. सं० वा० सु० मम ॥ ६. ला० 'डेय ति' ॥ ७. सं० वा० सु० 'गालमं(गं)छो' ॥

देहं असुइदुगंधं भरियं बहुपित्त-मुत्त-रुहिराणं । रे जीवे ! इमस्स तुमं मा उवरिं कुणसु पडिबंधं ॥८२॥
 पुण्णं पावं च दुवे वच्चइ जीवेण णवरि सह एयं । जं पुण इमं सरीरं कत्तो तं चलइ ठाणाओ ? ॥८३॥
 तिरियत्तणम्मि बहुसो पत्ताओ तुमे अणेगवियणाओ । तो ताओ संभरंतो सहसु इमं वेयणं जीव ! ॥८४॥
 नरयम्मि वि जीव ! तुमे णाणादुक्खाइं जाइँ सहियाइं । इण्हिं ताइँ सरंतो विसहेज्जसु वेयणं एयं ॥८५॥

किंच—

जाव न मुंचामि लहुं पाणेहिं इत्थ जीयसंदेहे । ताव इमं जिणवयणं सरामि सोमं मणं काउं ॥८६॥
 एगो उ जाइ जीवो, मरइ य उप्पज्जई य तह एगो । संसारे भमइ एगो, एगो च्विय पावए सिद्धिं ॥८७॥
 नाणम्मि दंसणम्मि य तह य चरित्तम्मि सासओ अप्पा । अवसेसा दुब्भावा वोसिरिया जावजीवाए ॥८८॥

हिंसा-ऽलिय-चोरिके मेहुण्ण-परिणहे य निसिभत्ते ।

पच्चक्खामि य संपइ तिविहेणाऽऽहार-पाणाइं ॥८९॥

जे मे जाणंति जिणा अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु । ते हं आलोएमो उवड्ढिओ सम्मभावेणं ॥९०॥

छउमत्थो मूढमणो कित्तियमित्तं च संभरइ जीवो ।

जं च न सुमरामि अहं मिच्छा मिह दुक्कडं तस्स ॥९१॥

अण्णं च मज्झ संपइ जुत्तं अप्पहियमेव काउं जे । मरणम्मि समावण्णे तम्हा सुमरामि अरहंते ॥९२॥
 इणमो अरहंताणं णमो, णमो तह य सव्वसिद्धाणं । आयरियुज्झायाणं णमो, णमो सव्वसाहूणं ॥९३॥
 एवं सुहपरिणामो चाणक्को पयहिऊण णियदेहं । उववण्णो सुरलोगे विमाणमज्झम्मि तियसवरो ॥९४॥

सुबंधुणा वि पत्थावेण विण्णत्तो राया 'देव ! चाणक्कणिहेण पसाओ कीरउ' । णरवइणा वि 'तह'ति पडिवण्णे गओ तत्थ । दिट्ठं च तं सव्वं सुण्णं । सम्मं निरूवयंतेण दिट्ठं एगोवरगस्स ढक्कियं दुवारं । 'जं किंचि सारं तमित्थ भविस्सइ'ति चिंतंतेण विहाडियं जाव पिच्छाइ मंजूसं । 'अरे ! पहाणरयणाणि इत्थ भविस्संति' ति भित्तूणं तालयाणि सा वि उग्घाडिया जाव समुग्गयं मंघमघंतगंधमवलोएइ । 'हुं वइरा इत्थ होहिंति'ति परिभावेऊण उग्घाडिओ । पेच्छइ य तत्थ पत्तयं सुगंधिगंधियं । तओ गंधे अग्घाइऊण पत्तयं वाएइ । लिहियं च तत्थ-

'अग्घाइऊण गंधे एए जो पियइ सीयलं सलिलं । भुंजइ मणोज्जिभुज्जं वरखाइम-साइमं चेव ॥९५॥

जिंघइ सुगंधगंधे सुमणस-कप्पूरपभिइए रम्मे । पेच्छइ मणोहराइं रूवाइं चित्तमाईसु ॥९६॥

१. सं० वा० सु० 'व तुमं इमस्स उवरिं मा कु' ॥ २. सं० वा० सु० 'त्ता य तुमे ॥ ३. ला० ताय सरं ॥ ४. सं० वा० सु० न मुच्चामि ॥ ५. सं० वा० सु० 'गो वि जाइ ॥ ६. ला० 'णाणं ॥ ७. ला० महं ॥ ८. सं० वा० सु० वि विन्नत्तो पत्थावेणं राया ॥ ९. ला० भंतूण ॥ १०. ला० 'मघितं गंध' ॥ ११. ला० सुगंधगंधं ॥ १२. सं० वा० सु० एयं जो ॥ १३. ला० 'जभोजं ॥

वीणा-वेणुवरुणं कायलगीयाइयं निसामेइ । विलया-तूलि-उवाहणगाई फासे ई सेवेइ ॥१७॥
 किं बहुणा ?, पंचणह वि विसयाण मणोहरं तु जो विसयं । भुंजइ सो जमगेहं वच्चइ णत्थेत्य संदेहो ॥१८॥
 विहियसिरतुंडमुंडणवेसो पंतासणाइकयवित्ती । साहु व्व चिट्ठई सो धरइ जियं, अण्णहा मरइ' ॥१९॥
 इय वाइऊण ततो चिंतइ मंती सुबंधुणामो सो । 'धिसि धिसि मह बुद्धीए मएण जो मारिओ तेण ॥१००॥
 मइमाहणं सो च्विय चाणक्को धरउ जीवलोगम्मि । जेण मएण वि अहयं जियंतमयगो विणिम्मविओ'
 इय चिंतिऊण तो सो विण्णासेत्ता अणाहपुरिसम्मि । जीवियलुद्धो धणियं चिट्ठइ वरसाहुकिरियाए ॥१०२॥
 किंतु अभव्वत्तणओ भावविहूणो भवम्मि भीमम्मि । भमिही अणंतकालं विसहंतो तिकखदुक्खाइं ॥१०३॥

तस्स य बिंदुसारनरवइस्स पुहइतिलयाए देवीए अणुरत्तपत्तनियरो छायासमण्णिओ
 सुमणोवसोहिओ समाणंदियबहुजणो असोगतरु व्व संजाओ असोगसिरी नाम पुत्तो । सो य
 जुव्वणत्थो 'सव्वकलाकुसलो'ति णिवेसिओ पिउणा जुवरज्जपए । उवरए पियरम्मि सो चेव मंति-
 सामंताईहिं अहिसित्तो रज्जे । रज्जधुरं उव्वहंतस्स य समुप्पण्णो कुणालाहिहाणो पुत्तो । बालत्तणे
 चेव ठाविऊण जुवरायपए 'उवरयजणणीओ'ति सावक्कमायाभएण पहाणमंति-परियणसमेओ दाऊण
 उज्जेणिं कुमारभुत्तीए पेसिओ ।

तओ तत्थ अइसिणेहेण य पइदिणं पेसेइ सहत्थलिहियलेहे । अन्नया य कलागहणजोगं
 णाऊण कुमारं महंतए उदिसिऊण लिहियं लेहम्मि राइणा 'अधीयतां कुमारः' इति । पडिवाइऊण
 लेहं 'अणुव्वाणऽ-क्खरं' ति असंवत्तेऊण तत्थ चेव ठाणे मोत्तूण उड्डिओ राया सरीरचिंताए ।
 रायपासोवविट्ठाए य कुमारसर्वाक्कजणणीए 'कस्स राया सव्वायरेण लेहं लिहइ ?' ति चिंतिऊण
 वाइओ । नियपुत्तरज्जत्थिणीए य दिन्नो अगारस्सोवरि बिंदू, मुक्को तम्मि चेव ठाणे । समागएण
 राइणा 'हत्थमुक्को लेहो पडिवाइओ वि पुणो वि पडिवाइयव्वो'ति वयणमसुमरंतेण संवत्तिओ ।
 मुद्धिऊण य दिण्णो लेहवाहयहत्थे । तेण वि गंतूण समप्पिओ कुणालस्स । तेण वि लेहयस्स ।
 सो वायइत्ता ठिओ तुण्हिक्को । कुमारेण भणियं 'किं न वाएसि लेहं ?' । तहा वि न किंचि जंपइ ।
 तओ सयमेव घेतूण वाइओ जाव पेच्छइ 'अंधीयतां कुमारः' इति । तओ भणइ 'अम्ह मोरियवंसे
 सव्वत्थ अप्पडिहया आणा, ता जइ अहं पि तायस्साऽऽणं लंघेमि ता को अन्नो पालेस्सइ ?, किंच
 जइ एवं तायस्स पियं तो एवं कीरइ' ति । तत्तसलायं गहेऊण अंजियाओ दो वि अच्छीओ । इमं
 च सोऊण महासोगाभिभूएण चिंतियं राइणा-

अन्यथैव विचिन्त्यन्ते पुरुषेण मनोरथाः । दैवेनाऽऽहितसद्भावाः कार्याणां गतयोऽन्यथा ॥१०४॥

१. ला० य ॥ २. सं० वा० सु० 'याइ दे' ॥ ३. ला० 'ए य पि' ॥ ४. ला० 'क्कयमा' ॥ ५. ला०
 'ओ । तत्थ ॥ ६. अनुद्धाताक्षरम्=अशुष्काक्षरम् ॥ ७. ला० 'ओ [सरीर] चिंता ए राया ॥ ८. ला० 'ण य रा'
 ॥ ९. ला० 'गेण्हिऊण ॥

अण्णह परिचितेज्जइ सहरिसकंडुज्जएण हियएण । परिणमइ अण्णह च्विय कज्जारंभो विहिवसेण । १०५

ता 'किमंधस्स रज्जेणं' ?'ति दिण्णो एगो गामो । सव्व(व)क्किपुत्तस्स य दिण्णा कुमारभुत्तीए उज्जेणी । कुणालो वि अईवगंधव्वक्कलाकुसलो, गंधव्वे चेव पसत्तो चिट्ठइ ।

इत्थंतरम्मि सो कोसंबीदमगजीवो अज्जसुहत्थिसयासगहियअव्वत्तसामाइयप्पभावाओ समुप्पण्णो तस्स कुणालस्स भज्जाए सरयसिरीए गब्भम्मि पुत्तत्ताए । संजाओ य दोसु मासेसु वइक्कंतेसु जिण-साहुपूयणाइदोहलो । पूरिओ य जहासत्तीए कुणालेण । पसूया य कालक्कमेण सरयसिरी । वद्धाविओ य दासचेडीए कुणालो पुत्तजम्मेण । तओ 'चुल्लमायाए विहलीकरेमि मणोरहे, गिण्हामि णियरज्जं'ति चिंतिऊण निग्गओ गामाओ कुणालो अण्णायचरियाए । गायंतो पत्तो पाडलिपुत्तं । तत्थ वि मंति-सामंताईण गेहेसु गायमाणेण रंजियं सव्वं पि नगरं । भणिउं च पयट्ठो सव्वलोगो, अवि य—

'पच्छण्णवेसधारी हाहा-हूहूण को वि अण्णयरो । एसो किं वा वि सयं समागओ तुंबुरू नूणं ? ॥१०६॥ किं वा गंधव्वेसो ?, किं वावि हु किन्नरो, नरो अहवा ?' । एवं जंपंताणं लोगाणं रायपासम्मि ॥१०७॥ संजाओ उल्लावो कोऊहलपूरिण तो रण्णा । हक्कारिओ कुणालो गायइ अह जवणियंतरिओ ॥१०८॥ जम्हा उ 'पुहइपाला नियंति वियालिंदियं नरं नेय' । तम्हा अदूरपासे ठविओ सो जवणियंतरिओ ॥१०९॥ गायंतेण य तेणं धणियं आवज्जिओ धरणिनाहो । भणइ 'वरं वरसु तुमं गंधव्विय ! दिज्जए जेण' ॥११०॥

तओ कुणालेण पढियं—

चंदंशुत्तप्पपुत्तो य बिंदुसारस्स नत्तुओ । असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागिणिं ॥१११॥

राइणा वि णाऊण णियतणयं बाहजलभरभरेज्जमाणलोयणेण अवणेऊण जवणियं णिवेसिओ णियउच्छंगे । भणियं च 'पुत्त ! किमप्पं जाइयं ?' । तओ मंतीहिं भणियं 'देव ! न एयमप्पं किंतु पभूयं, जओ राईणं रज्जं कागिणी भण्णइ । पिउणा भणियं 'पुत्त ! किमंधस्स रज्जेणं ?' ति । तेण भणियं 'ताय ! पुत्तो मे करेस्सइ रज्जं' । राइणा जंपियं 'कय्यो ते पुत्तो समुप्पण्णो ?' । तेण भणियं 'संपइ'ति । तओ राइणा वि संपइ चेव णामं कयं । वत्ते य दसाहे आणावेऊण णिवेसिओ रज्जे । कालक्कमेण य जाओ पयंडसासणो णरवई । साहियं च अद्धभरहं । ओयविया य बहू अणारियदेसा ।

१. ला० 'ण्णा भुत्ती' ॥ २. ला० 'व्वपसत्तो चेव चिट्ठइ ॥ ३. ला० 'पूयाइ' ॥ ४. ला० पयत्तो ॥ ५. ला० 'धव्वो सो ॥ ६. सं० वा० सु० 'ओ णरवईदो ॥ ७. श्लोकोऽयं बृहत्कल्पभाष्ये २९४ तमः ॥ ८. ला० उ ॥ ९. ला० 'णनयणजुअलेण अव' ॥ १०. ला० रज्जेणं तेण ॥ ११. ला० 'या पुत्तो ॥ १२. ला० 'ण लवियं 'ताय ! संपइ ति ॥

अण्णयां य उज्जेणिसंठियस्स णरवइणो जियंतसामिपडिमावंदणणिमित्तं अहासंजमविहारेणं विहरमाणा समागया अज्जसुहत्थिसूरिणो । ते य कयाइ हट्टमगेण वच्चमाणा गया दिट्ठिगोयरमोलोयणठियस्स राइणो । दट्ठूण य चिंतियमणेण 'हंत ! कहिंच्चिं मम दिट्ठपुव्व व्व पडिहासंति एए । 'कत्थ मण्णे दिट्ठपुव्व ?' ति ईहापोहसमुब्भूयसंभमवसपरिक्खलमाणमगण-गवेसणं कुणमाणो णिवडिओ ओलोयणे । तओ पच्चासण्णपरियणेण सित्तो चंदणरसाइणा, वीइओ तालविंटवीयणगाईहिं । खणंतरेण य पुव्वजाइं सरेऊण उट्ठिओ समाणो गओ सूरिसमीवे । वंदिया सूरिणो । भत्तिभरनिब्भरोद्धुसियरोमणिवहेणं पप्फुल्लवयणसयवत्तेणं भालवट्ठणिहियकरकमलेण विण्णत्तं णरवइणा 'भगवं ! जिणधम्मस्स किं फलं ?' । [सूरिणा जंपियं] 'सग्गमोक्खा फलं' । राइणा जंपियं 'सामाइयस्स किं फलं ?' । सूरिणा लवियं 'अव्वत्तस्स रज्जाइफलं' । तओ संजायपच्चएण भणियं 'एव्वमेयं, णत्थि संदेहो, परं किमोलक्खह न वा ममं ?' । तओ सूरिहिं सुओवओगं दाऊण भणियं 'सुट्ठु ओलक्खामो, जओ तुमं कोसंबीए मम सीसो आसि' । तओ सविसेसभत्ति-बहुमाणसमुब्भूयसंभमवसपरिक्खलमाणऽक्खर-वयणविण्णासेण पुणो वि वंदिया सूरिणो । अवि य—

दुक्खत्तजंतुसंताणसुक्खसंदोहदायग ! गुणइ ! । करुणाणीरमहोयहि ! विसिद्धसुयणाणसंपण्ण ! ॥११२॥

मिच्छत्ततिमिरदिणयर ! दप्पियपरवाइवारणमइंद ! ।

नर-विज्जाहर-सुरनय ! तुंज्ज णमो होउ मुणिणाह ! ॥११३॥

जइ तइया मह करुणं न करेत्तो सामि ! तं सि जियजणय ! । तो णिच्छएण अहयं निवडंतो दुहसयावत्ते ॥११४॥

तुह पायपसाएणं अणण्णसरिसं इमं मए रज्जं । पत्तं, ता इण्हिं पि वि जं कायव्वं तमाइससु ॥११५॥

तओ सूरिहिं भणियं 'भद् ! धम्मप्पहावो एस, ता संपयं पि तत्थेव जत्तं कुणसु' । तओ 'जमाईसंति गुरुपाय' ति भणिय गहिओ सावगधम्मो । तप्पभिइं च

वंदइ जिणिंदबिंबे पूयइ अट्ठप्पयारपूयाए । गुरुपज्जुवासणरओ पडिलाहइ समणवरसंघं ॥११६॥

दीणाईणं दाणं देइ जहेच्छाइ कुणइ जीवदयं । पैरणवण्णिण्णविहिणा कारवइ जिणेंदवरभवणे ॥११७॥

गामा-ऽऽगर-नगराइसु जिणवरभवणेहिं मंडिया वसुहा उत्तुंगधयवडेहिं तेण कया पुहइणाहेण ॥११८॥

समणाण सुविहियाणं तेणं सुस्सावएण नरवइणा । पच्चंतियरायाणो सव्वे सदाविया सिग्घं ॥११९॥

कहिओ य तेसिं धम्मो वित्थरओ गाहिया य सम्मत्तं । अप्पाहिया य बहुसो समणाणं सावगा होह ॥१२०॥

अह तत्थेव ठियाणं ताणुज्जेणीइ जिणहरे जत्ता । पारद्धा तीइ र्हो विणिग्गओ महविभूईए ॥१२१॥

१. सं० वा० सु० 'चि दिट्ठ' ॥ २. ला० 'हावूहमगणं (ण)-गवेसणं' ॥ ३. सं० वा० सु० 'णा य(प)लवि' ॥ ४. सं० वा० सु० 'वमेवं' ॥ ५. सं० वा० सु० 'सबहुमाण-भत्तिसमु' ॥ ६. ला० 'यवरवाइ' ॥ ७. ला० तुम्ह ॥ ८. सं० वा० सु० 'इसइ' ॥ ९. प्रस्तुतप्रकरणस्यैव सप्तविंशतितमादारभ्य षट्त्रिंशत्तमं यावत् वृत्तम्, तत्र वृत्तदशके वर्णितविधिना इत्यर्थः ॥ १०. ला० 'यरुवे कार' ॥ ११. सं० वा० सु० 'वणेसु मं' ॥

अवि य—

भंम-भेरि-भाणयसदाउलु, जयजयसद्विहियकोलाहलु ।
 काहल-संख-करडसदुब्भडु, पवणोद्धयउदंडसुधयवडु ॥१२२॥
 मदल-तिलिम-पंडहकयपटुरवु, भवि^१ह विणिहयघोरमहाभवु ।
 वेणु-वीण-सारंगियतारउ, रयणविणिम्मियरूवयसारउ ॥१२३॥
 कंसालय-कंसियसदुक्कडु, जणसम्मदसेरकयसंकडु ।
 झल्लरिरावभरियगयणंगणु, नच्चिरसिंगारियविविहंगणु ॥१२४॥
 महुरगेज्जविम्हावियनरगणु, कुसुमो^२मालिउ नं नंदणवणु ।
 उल्लसंतरासयसयसंकुलु, मुहलविलयगेज्जंतसुमंगलु ॥१२५॥
 थरि धरि कीरमाणआरत्तिउ, कमिण पडिच्छमाणजणभत्तिउ ।
 इय अणेयअइसइगुणजुत्तउ, संपइरायह गेहि पहुत्तउ ॥१२६॥
 तो नरनाहु चित्ति विहसेविणु, निग्गउ अण्णु महण्णु लएविणु ।
 पूयवि रहु रोमंचियगत्तउ, अणुगच्छइ सामंतिहि^३ जुत्तउ ॥१२७॥

तओ तमच्चब्भुयभूयं रहमहिमं निएऊण भणिया सव्वे वि सामंता 'जइ मं मण्णह तो तुब्भे वि सरज्जेसु एवं करेह' । तेहिं पि तहेव कयं । अत्राऽर्थे निशीथगाथाः—

जइ मं जाणह सामिं समणाणं पणमहा सुविहियाणं ।
 दव्वेण मे न कज्जं एवं खु पियं कयं मज्झ ॥१२८॥
 वीसज्जिया य तेणं गमणं घोसावणं सरज्जेसु ।
 साहूण सुहविहारा जाया पच्चंतिया देसा ॥१२९॥

घोसावणं = अमाघाताद्युद्धोषणारूपाम् ।

अणुजाणे अणुजाई पुप्फारुहणाइं उक्किरणगाइं ।
 पूयं च चेइयाणं ते वि सरज्जेसु कारंति ॥१३०॥

अनुयानं=रथयात्रा । तत्राऽनुयाति स राजा समस्तसामन्तादिपरिवृतः । पुष्पा-
 रोहणान्युत्किरणगानि=रथपुरतः पुष्पवृष्ट्यादिरूपाणि । चैत्यपूजां च राजा करोति । तच्च दृष्ट्वा तेऽपि
 स्वराज्येषु सर्वं कुर्वन्ति ।

१. सं० वा० सु० पडखु ॥ २. ला० 'यहं वि' ॥ ३. सं० वा० सु० 'सारंगय' ॥ ४. ला० 'गेयवि'
 ॥ ५. सं० वा० सु० 'मालिय नं' ॥ ६. ला० उल्ललंत' ॥ ७. सं० वा० सु० 'यानं रथयानं रथयात्रा ॥

अत्रया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि ठियं संपइराइणो चित्ते जहा 'पइट्टेमि अणारियदेसेसु साहूण विहारं' । ति चित्तेऊण भणिया अणारिया 'जहा जहा मम पुरिसा तुब्भे करं मगंति तथा तथा देज्जह' । तओ पेसिया साहुरूवधारिणो पुरिसा । भणंति य ते जहा 'अम्हं एवंपं बायालीसदोसविसुद्धवसहि-भत्त-पाण-वत्थ-पत्ताइयं देज्जइ, इमं इमं च अण्णं पढणाइयं कज्जइ, तओ राइणो पियं भवइ' । अणारिया वि राइणो तोसणत्थं तहेव सव्वं करेति । एवं च साहुसामायारीभाविएसु अणारियखित्तेसु विण्णत्ता सूरीणो जहा 'भयवं ! किमणारिएसु न विहरंति साहुणो ?' । गुरूहिं भणियं 'जओ नाणाई नोवसप्पंति' । रण्णा भणियं 'किं कारणं नोवसप्पंति ?' । सूरीहिं भणियं 'न याणंति ते सामायारि' । रण्णा जंपियं 'जइ एवं तो पेसह साहुणो, पेच्छह सरूवं' । तओ रण्णो उवरोहेण पेसिया सूरीहिं अणारिएसु कइवि संघाडगा । तओ ते दइण्ण 'रायसंतिया एए बलाहिय'त्ति मण्णमाणा जहासिक्खवियसामायारीए सव्वं पयच्छंति । तओ साहूहिं आगंतूण अज्जसुहत्थिणोणिवेइयं जहा 'सव्वत्थ सुहविहारो, उस्सप्पंति णांणाईणि' । एवं च संपइराइणा अणारियदेसेसु वि साहूण विहारो पयट्ठिओ । ते य धम्मसिक्खागहणेण तप्पभिइं भद्गा जाया । भणियं च णिसीहे—

समणभडभाविएसुं तेसुं देसेसु एसणाईहिं ।

साहू सुहं विहरिया तेणं ते भद्गा जाया ॥१७२॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पत्थिवो निजियसत्तुसेणो ।

समंतओ साहुसुहप्पयारे, अकासि अंधे दमिले य घोरे ॥१७३॥

कयाइ तेण राइणा पुव्वभवोदरियत्तणं सुमरेऊण कया चउसु वि नयरदुवारेसु महासत्तायारा । तत्थ दिज्जए अवारियसत्तु-मित्तं महादाणं । उव्वरियं च महाणसियाणं भवइ । ते रण्णा पुच्छिया 'उव्वरियसेसं कस्स भवइ ?' । तेहिं भणियं 'देव ! अम्हाणं' । तओ रण्णा ते समाइड्ठा जहा 'तुब्भे तं' साहूणं देज्जह, अहं तुम्हाणं दव्वं दाहामि' । ते 'तह'त्ति पइडिवज्जेऊण रायाएसं, तं साहूणं दिति । नगरे य भणिओ कंदुइग-नेसत्थिय-दोसियाइओ सव्वो वि लोगो जहा 'जं साहूणं उवगरइ तं सव्वं देज्जह, अहं भे मोल्लं दाहामि' । तओ लोगो तथा काउमारद्धो । अज्जसुहत्थिसूरी पुण्णं एयं जाणमाणो वि सिस्साणुरागेण ण णिवारेइ ।

इओ य अज्जमहागिरी विभिण्णोवासए ठिया । तेहिं च चोइया अज्जसुहत्थिणो जहा

१. ला० 'या य क' ॥ २. ला० पयट्टेमि ॥ ३. ला० एवं बायालदोस' ॥ ४. सं० वा० सु० इमं च अ' ॥ ५. ला० 'यारी ए भावि' ॥ ६. ला० रत्ता य भ' ॥ ७. 'ण' रण्णो सं' ॥ ८. ला० 'हत्थीण णि' ॥ ९. ला० ति य णा' ॥ १०. सं० वा० सु० दिवारि (१ दवावि)जए ॥ ११. ला० पडिच्छिऊण ॥ १२. ला० 'ण जाण' ॥

‘कीस अज्जो ! जाणमाणा वि रायपिंडमणेसणियं च गेण्हह ?’ । अज्जसुहत्थिणा भणियं “जहा राया तहा पय”ति रायाणमण्युत्तमाणा एए पयच्छंति” । तओ ‘माइ’ति काऊण रुट्ठेहिं अज्जमहागिरीहिं भणिओ जहा ‘अज्जो ! तुमं मम अज्जप्पभिइ विसंभोगो । भणियं चाऽऽगमे-

सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।

साहूहिं संथवं कुज्जा णाणीहिं चरित्तजुत्तेहिं ॥१७४॥

सरिकप्पे सरिछंदे तुल्लचरित्ते विसिट्ठतरए वा ।

आएज्ज भत्त-पाणं सएण लाभेण वा तूसे ॥१७५॥

एयं च सोऊण आउट्ठो अज्जसुहत्थी मिच्छादुक्कडं दाऊण भणइ ‘न पुणो एवं काहामि, खमह मह एगावराहं’ । तओ पुणो वि संभुत्तो । संपइराया वि रज्जं काऊण विसुद्धं सावगधम्ममणुपालेऊण गओ देवलोगं । सुमाणुसत्ताइकमेण य सिद्धिं पावेस्सइ ति ।

गतं सम्प्रतिनृपाख्यानकम् ।

इति वृत्तार्थः ॥३७॥

भणितमपूर्वचैत्यनिर्माणम् । अधुना तस्य परकृतचैत्यानां च यत् कृत्यं तत् प्रकरणोपसंहारं च वृत्तेनाऽऽह—

देज्जा दवं मंडलं-गोउलाइं, जिण्णाइं सिण्णाइं समारएज्जा ।

नट्ठाइं भट्ठाइं समुद्धरिज्जा, मोक्खंगमेयं खु महाफलं ति ॥३८॥

‘देज्ज’ति दद्यात्=प्रयच्छेत् । ‘दवं’ति द्रव्यं=वित्तम् । ‘मंडल-गोउलाइं’ति मंडलानि=जनपदान्, गोकुलानि=गोत्रजान् तान्यपि दद्यादिति सम्बन्धः । ‘जिण्णाइं’ति जीर्णानि=जर्जरी-भूतानि । ‘सिण्णाइं’ति खिन्नानि=भूस्वेदादिनाऽधिकं दुर्बलीभूतानि । ‘समारएज्ज’ति समारचयेत्=सन्ध-येदित्यर्थः । ‘नट्ठाइं’ति नष्टानि=भूतलसमीभूतानि । ‘भट्ठाइं’ति भ्रष्टानि=तत्प्रदेशस्याऽप्यलक्ष्यतया नाशमुपगतानि । ‘समुद्धरिज्ज’ति समुद्धरेत्=पुनर्नवीकुर्यात् । यतः=‘मोक्खंगं’ति मोक्षाङ्गं=निर्वाणाङ्गम् । ‘एयं’ति एतत्=पूर्वोक्तम् । ‘महाफलं’ति बृहत्फलमित्यर्थः । इतिः=प्रकरणपरिसमाप्ताविति वृत्तार्थः ॥३८॥

श्रीदेवचन्द्राचार्यविरचिते मूलशुद्धिविवरणे द्वितीयं स्थानकं विवरणतः समाप्तम् ॥

[जिनागमाख्यं तृतीयं स्थानकम्]

व्याख्यातं द्वितीयस्थानकम् । सम्प्रति तृतीयमारभ्यते । अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः पूर्वत्र जिनभवनकृत्यमुक्तम्, तच्चाऽऽगमादेव जायत इति तत्स्थानकं वाच्यम् । तस्य च तन्माहात्म्यख्यापकमादिवृत्तमिदम्-

देवाहिदेवाण गुणायराणं, तित्थंकराणं वयणं महत्थं ।

मोत्तूण जंतूण किमत्थि ताणं, असारसंसारदुहाहयाणं ? ॥३९॥

‘देवाहिदेवाणं’ति देवाधिदेवानाम्, देवाः=पुरन्दरादयस्तेषामधिदेवाः=नायका जिनाः, अतस्तेषां सम्बन्धि वचनं मुक्त्वा नाऽन्यत् त्राणमस्तीति सम्बन्धः । ‘गुणायराणं’ति गुणाकराणाम्, गुणाः=क्षान्त्यादयस्तेषामाकराः=उत्पत्तिभूमयो गुणाकराः । यथा ह्याकरेषु यानि वस्तून्नुत्पद्यन्ते तानि तेषूच्चीयमानान्यपि न वृद्ध्यन्ति, एवं भगवद्गुणा अपि वर्ण्यमाना न निष्ठां यान्तीत्यभिप्रायः । उक्तं च—

मइ-सुयतुरियतुरंगमसणाहओहीमणोरहरहेण ।

जस्स गुणत्थुइपंथे अंतं पत्तो न सक्को वि ॥१७६॥

अन्यदेवा अप्येवंविधा भविष्यन्तीत्याशङ्कापनोदार्थमाह—‘तित्थंकराणं’ति तीर्थकृताम्, तरन्त्यनेन प्राणिन इति तीर्थं द्रव्य-भावभेदाद् द्विधा । तत्र द्रव्यतीर्थं नद्यादिषु समवतारः, न तेनाऽत्राऽधिकारः । भावतीर्थं तु संसारसागरोत्तारणसमर्थं चतुर्विधश्रीश्रमणसङ्घरूपं प्रथमगणधररूपं वा, तत् कुर्वन्तीति तीर्थङ्कराः । अतस्तेषां ‘वयणं’ति वचनम्=आगमः । ‘महत्थं’ति महार्थं=प्रभूतवाच्यम् । उक्तं च-

सव्वनईणं जा होज्ज वालुया सागराण जं सलिलं ।

तत्तो वि अणंतगुणो अत्थो एगस्स सुत्तस्स ॥१७७॥

‘मोत्तुं’ति [मोत्तूण ति] मुक्त्वा=विमुच्य । ‘जंतूण’ति जन्तूनां=शरीरिणाम् । ‘किमत्थि’ति किमस्ति?, न किञ्चिदित्यभिप्रायः । ‘ताणं’ति त्राणं=शरणम् । कथम्भूतानां जन्तूनाम् ? ‘असार-संसारदुहाहयाणं’ति असारसंसारदुःखाहतानाम्, असारः=निःसारः, संसारः=चतुर्गतिरूपस्तत्र दुःखम्=अशर्मरूपं तेनाऽऽहतानां=पीडितानामिति वृत्तार्थः ॥३९॥

जिनवचनमेव त्राणं नाऽन्यदित्युक्तम्, तच्च यथा त्राणं भवतीति तथा सार्धरूपकत्रयेणाऽऽह-

१. सं० वा० सु० इति स्थानं ॥ २. सं० वा० सु० त्थंगरा ॥ ३. ला० ति देवाः पुर ॥ ४. ला० ना निष्ठां न या ॥ ५. ला० चतुर्वर्णं श्री ॥ ६. सं० वा० सु० या सव्वउयहिजं तोयं ॥ ७. ला० एत्तो ॥ ८. ला० यः ॥ त्राणं ॥

नज्जंति जं तेण जिणा जिणाहिया, भावा मुणिज्जंति चरा-ऽचरं जगं ।
संसार-सिद्धी तह तग्गुणा-ऽगुणा, तक्कारणाइं च अणेगहा तहा ॥४०॥

धम्मा-ऽधम्मं गम्मा-ऽगम्मं गम्मए आगमेणं,
कज्जा-ऽकज्जं पेज्जा-ऽपेज्जं जं च भोज्जं न भोज्जं ।
जुत्ता-ऽजुत्तं सारा-ऽसारं मज्झिमा-ऽमज्झिमं च,
भक्खा-ऽभक्खं सोक्खा-ऽसोक्खं जेण लक्खंति दक्खा ॥४१॥

सद्धासंवेगमावन्ना भीया दुक्खाण पाणिणो ।
कुणंता तत्थ वुत्ताइं पावंति परमं पयं ॥४२॥

तम्हा एसो दुहत्ताणं ताणं सत्ताणमागमो ॥४३ पू०॥

‘नज्जंति’ति ज्ञायन्ते=अवबुध्यन्ते । ‘जं’ति यत्=यस्मात् । ‘तेणं’ति तेन=आगमेनेति सण्टङ्कः ।
‘जिण’ति जिनाः=तीर्थकरा अतीताऽनागत-वर्तमानाः । तथा ‘जिणाहिया भावा मुणिज्जंति’ति
जिनाहिताः=पारगतप्रतिपादिताः भावाः=जीवादपदार्था औदयिकादयो वा, मुण्यन्ते=अवगम्यन्ते ।
‘चराऽचरं जगं’ति चरा-ऽचरं त्रस-स्थावररूपम्, जगत्=त्रैलोक्यम्, तेनैव ज्ञायत इति योगः । ‘संसार-
सिद्धि’ति संसार-सिद्धी=भव-मोक्षौ । तत्र संसारः=चतुर्गतिरूपः, उक्तं च—

संसारणं संसारो सुर-नर-तिरि-नरयगइचउक्कम्मि ।

सिद्धिश्च=अष्टप्रकारकर्ममलरहितजीवस्वरूपावस्थानम् । उक्तं च-

मोक्खो उ कम्ममलवज्जियस्स जीवस्सऽवत्थाणं ॥१७८॥

‘तह तग्गुणा-ऽगुण’ति तथा यथासम्भवं तद्गुणा-ऽगुणौ । संसारस्याऽगुणाः=दुःखफलत्वादयः ।
उक्तं च—

दुक्खफ(प्फ)ले दुहायाणे दुक्खरूवे दुहालये ।
अहह ! वण्णेज्जमाणो वि लोमुद्धोसकरे भवे ॥१७९॥

सिद्धेश्च गुणाः=अनन्तानन्द-सौख्यादयः । उक्तं च-

न वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं नेय सव्वदेवाणं ।
जं सिद्धाणं सोक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं ॥१८०॥

१. ला० लक्खंति । ता० लक्खंति ॥ २. ला० पावंति ॥ ३. सं० वा० सु० *ष्टकर्म ॥ ४. सं० वा०
सु० दुहहफलदुहा ॥ ५. रोमोद्धर्षकाराः ॥ ६. ला० *क्खं न वि य स ॥

सुरगणसुहं समगं सव्वऽद्धापिंडियं अणंतगुणं ।

न वि पावइ मुत्तिसुहं णंताहि वि वग्गवग्गूहिं ॥१८१॥

सिद्धस्स सुहो रासी सव्वऽद्धापिंडिओ जइ हवेज्जा ।

सो णंतवग्गभइओ सव्वागासे न माइज्जा ॥१८२॥ (आव० नि० गा० ९८०-९८२)

‘तत्कारणां च अणेगह’ति तत्कारणानि च=संसार-सिद्ध्योर्निमित्तानि, मिथ्यात्वादीनि संसारस्य, ज्ञानादीनि च सिद्धेः, अनेकधा=अनेकप्रकाराणि, अनेकप्रकारैर्वा सूक्ष्म-सूक्ष्मतरभेदभिन्नैः । ज्ञायन्ते इति क्रिया सर्वत्र योजनीया । ‘तह’ति तथाशब्द उत्तरवृत्तसम्बन्धनार्थं इति वृत्तार्थः ॥४०॥

‘धम्मा-ऽधम्म’ति धर्मश्चाऽधर्मश्च धर्मा-ऽधर्मम् । एवमग्रेतनपदेष्वपि समाहारो वाच्यः । तत्र धर्मा-ऽधर्मौ लौकिक-लोकोत्तरभेदाद् द्विविधौ । लौकिकधर्मो ग्रामधर्मादिः । स च कथानकादवसेयः । तच्चेदम्—

[२०. नागदत्तकौटुम्बिककथानकम्]

अत्थि इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे लाडदेसे धन्नपूरयं नाम गामं । तत्थ कोडुंबिया न समुदायधम्मेण वट्ठंति । ताण य मज्झे णागदत्तो णाम कोडुंबिओ । तेण य ते सिक्खविया जहा “न जुज्जे तुम्हाणं विसंहई काउं, यत उक्तं नीतिशास्त्रे—

संहतिः श्रेयसी पुंसां स्वपक्षे तु विशेषतः ।

तुषैरपि परित्यक्ता न प्ररोहन्ति तण्डुलाः ॥१८३॥

न य विसंहयाणं रायकुले वि गयाणं पओयणं सिज्जइ, कुंदेहि य भक्खिज्जइ, ता मा विपडिवत्तिं कुणह” । न पडिवत्तं च तेहिं तव्वयणं । विसंहयं च णाऊण राय-कुण्ड-भट्टपुत्ताइएहिं उवइविउमाढत्तो सो गामो । तारिसं च दइण सो नागदत्तो निरुवइवनिवासनिरुवणत्थं सगडियाए आरोहेऊण गओ रंधेज्जयं नाम गामं । जाव य तत्थ पहुत्तो ताव पेच्छइ नियपओयणेणेव केणवि उकुरुडिओवरि अत्थाइयामंडवे निविट्ठे सव्वे गामगोहे । तओ तेण ‘अहो ! सोहणं जायं जमेगत्थ मिलिया चेव सव्वे गामपुरिसा उवलद्ध’ति चिंतिऊण ताण पुरओ चेव उज्जुत्तेऊण मुक्का सगडी । काऊण य उचियपडिवत्तिं उवविट्ठो तप्पुरओ, विण्णत्तं च जहा ‘अहमेत्थ तुम्ह गामे वसिउं इच्छामि, जइ तुब्भे गुणे पयच्छह । तेहि वि गुणे दाऊण भणिओ ‘सिग्घमागच्छाहि’ । तओ उट्टेऊण जाव

१. ला० द्विधा ॥ २. ला० “वेभार” ॥ ३. सं० वा० सु० धण्णपुरयं ॥ ४. ला० गामो ॥ ५. ला० “हइं च” ॥ ६. ला० “कुण्डपुत्ता” ॥ ७. ला० “वनियनिवा” ॥ ८. सं० वा० सु० गंधेज्जयं ना” ॥ ला० रंधेज्जं ना” ॥ ९. ला० णइ उक्कु ॥ १०. ला० उज्जोत्तिऊण ॥ ११. ला० “क्का गड्डी । का” ॥

सगडिं जोत्तेइ ताव न पेच्छइ सगडीए एणं चक्कं । भणिया य तेण गामवरा जहा 'अवहडं मम सगडीओ केणावि एणं चक्कं, ता कहं गच्छामि ?' । तओ तेहिं एगवक्कयाए भणियं जहा 'एगचक्केण चेवाऽऽगया एसा' । तेण भणियं 'कहमेगचक्केण गंडी समागच्छइ ?, किंच मए आगच्छमाणेण सयमेव ओवंगेऊण जंतिया' । तेहिं भणियं 'दीसइ चेवेसा जंतिया, परं चक्कं विणा जंतिया, जओ अम्हेहिमेवं चेवाऽऽगच्छमाणा, दिट्ठ ति, ता भंतिओ तुमं, जइ अम्हाणं न पत्तियसि ता पुच्छ एयाणि तुहागमणमगतडडियाणि डिंभरूवाणि' । पुच्छियाणि तेण । तेहि वि तं चेव सिट्ठं । तओ तेण 'कहमेत्तिया मिच्छावाइणो भविस्संति ?, ता अहं चेव भंतिओ भविस्सामि' ति चिंतितुण जोत्तिया सगडी । आरुहिरुण खेडिया बइल्ला । तओ तेहिं सदेऊण भणिओ जहा 'भद ! बालो वि एवं वियाणइ न एगचक्केण गंडी वहइ, किंतु तुह विन्नत्तिवाउलस्स अम्ह मज्झाओ एणेण, चक्कमवहरिऊण तह चेव जंतिया, दिट्ठं च सव्वमेयमम्हेहिं, परमम्हाणमेस गामधम्मो जं एणेण सुंदरमसुंदरं वा कयं तं सव्वेहिं सबालवुंइहेहिं तहेव पडिपूरेयव्वं, ता जइ एएण गामधम्मेण सपुत्त-दारो णिव्वहसि तो आगच्छाहि नऽन्नह' ति । तओ तेण हरिसियचित्तेण पडिवण्णमागमणं । तेहिं भणियं 'जइ एवं तो भण किं ते साहेज्जं करेमो ?' । तेण भणियं 'सव्वमक्खूणं मम, किंतु अप्पेह चक्कं जेण गंतूणाऽऽगच्छामि' । अप्पियं तेहिं चक्कं । गओ सो नियगेहं । काऊण य सह पुत्त-कलत्तेहिं एगवक्कयं आगंतूण वसिओ तत्थ गामि ति ।

[नागदत्तकौटुम्बिककथानकं समाप्तम् २०]

ईदृग् लौकिको धर्मस्तद्विपरीतस्त्वधर्मः । लोकोत्तरस्तु धर्मो यतीनां श्रित्य श्रुत-चारित्र्यरूपः सर्वतः, श्रावकांस्त्वङ्गीकृत्य स एव देशतः, अधर्मस्तूभयोरपि हिंसादिकः । 'गम्मा-ऽगम्मं' ति गम्मा-ऽगम्यम् । तत्र गम्यं लौकिकं स्वकलत्रादि, अगम्यं भगिन्यादि । लोकोत्तरं यतीनां गम्यमार्थक्षेत्रादि, अगम्यमनार्यविषयादिः, श्राद्धानां तु गम्यं स्वभार्यादि, अगम्यं परकलत्रादि । 'गम्मइ' ति गम्यते=ज्ञायते, 'सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्थाः' इति वचनात् । 'आग्मेणं' ति आगमेन=अर्हत्सिद्धान्तेन । 'कज्जा-ऽकज्जं' ति कार्या-ऽकार्यम् । लौकिकं कार्यमविरुद्धवाणिज्यादि, अकार्यं कूटतुला-कूटमानादि । लोकोत्तरं साधूनां कार्यं सद्गुणानादि, अकार्यं समाचारीविलोपादि; श्रावकाणां कार्यं चैत्यपूजादि, अकार्यं लोकविरुद्धासेवनादि । 'पेज्जा-ऽपेज्जं' ति पेया-ऽपेयम् । लौकिकं पेयं दुग्धादि, अपेयं रुधिरादि । लोकोत्तरं पेयं साधूनां प्राशुकैषणीयसौवीरादि, अपेयमप्कायादि; देशविरतानां पेयमुदकादि, अपेयं मद्यादि । 'जं च भोज्जं न भोज्जं' ति चकारस्य व्यवहितसम्बन्धाद् यद्भोज्यं यच्च

१. सं० वा० सु० गंडी । सु० गंती ॥ २. सं० वा० सु० उवंगेऊण ॥ ३. ला० 'णि य ते' ॥ ४. ला० 'बुट्ठाऊलेहिं' ॥ ५. ला० 'यं च ते' ॥ ६. सं० वा० सु० लत्तेण य ए ॥ ७. ला० 'चारित्र्यरूपः' ॥ ८. ला० 'कांश्चाङ्गी' ॥ ९. सं० वा० सु० 'गमेण ति' ॥ १०. ला० 'त्तरं साधूनां पेयं' ॥

न भोज्यम् । तत्र भोज्यं लौकिकमोदनादि, न भोज्यं गोमांसादि । लोकोत्तरं भोज्यं यतीनामेषणीयपिण्डादि, न भोज्यं तदेवाऽनेषणीयादि, विरता-ऽविरतानां तु भोज्यमसंसक्तभक्तादि, न भोज्यमनन्तकायादि । 'जुता-ऽजुतं' ति युक्ता-ऽयुक्तम् । लौकिकं युक्तमभ्यागतागतप्रतिपत्त्यादि, अयुक्तं परद्रोहादि । लोकोत्तरं युक्तं व्रतिनां परोपकारकरणादि, अयुक्तं सिद्धान्तार्थगूहनादि, श्राद्धानां तु युक्तं यतिपर्युपासनादि, अयुक्तं पाषण्डिकोपसेवादि । 'सारा-ऽसारं'ति सारा-ऽसारम् । लौकिकं सारं वज्र-गोशीर्ष-चन्दन-स्रग-ऽङ्गनादि, असारं खरोपलैरण्डकाष्ठ-कण्डकादि । लोकोत्तरं सारं मुनीनां नवब्रह्मचर्यगुप्तिमनाथब्रह्मचर्यपरिपालनादि, असारं तस्यैवातिक्रम-व्यतिक्रमा-ऽतिचारा-ऽनाचारादिदोषैर्मलिनीकरणादि; श्रावकाणां सारं सर्वविरतिलालसपरिणामादि, असारं प्रमादादि । 'मज्झिमा-ऽमज्झिमं'ति मध्या-ऽमध्यम् । तत्र मध्यमुभयपक्षेऽपि सारा-ऽसारमध्यवर्ति, अमध्यं तु सारा-ऽसारमेव । 'भक्खा-ऽभक्खं'ति भक्ष्या-ऽभक्ष्यम् । लौकिकं भक्ष्यं मोदक-नालिकेरादि, अभक्ष्यं किम्पाकफलादि । लोकोत्तरं भक्ष्यं यतीनां तदेवैषणीयादि, अभक्ष्यमप्राशुकादि, श्रावकाणामपि भक्ष्यं तदेवाविरुद्धम्, अभक्ष्यं भटित्रीकृतफलादि । 'सोक्खा-ऽसोक्खं'ति सौख्या-ऽसौख्यम् । लौकिकं सौख्यं विषयसुखादि, असौख्यं तदप्राप्त्यादि । लोकोत्तरं सौख्यं संयतानां व्रतपर्यायधृत्यादि, असौख्यं तत्रैवारत्यादि । उक्तं च—

देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसिणं ।

रयाणं, अरयाणं च महानरयैसालिसो ॥१८४॥ (दश० प्र० चू० गा १०)

श्रावकाणां सौख्यं पौषधानुष्ठानकरणादि; असौख्यं शङ्का-काङ्क्षाद्याकुलितचित्तादि । यद्वा उभयोरपि सौख्यं मोक्षः, असौख्यं संसारः । 'जेण'ति येन=आगमेन । 'लक्खंति'ति लक्षयन्ति=निश्चिन्वन्ति । 'दक्खं'ति दक्षाः=पण्डिता इति वृत्तार्थः ॥४१॥

ततश्च- 'सद्धासंवेगं'ति श्रद्धासंवेगः, श्रद्धया=संयमानुष्ठानकरणरूपया, संवेगः=सांसारिक-सुखे दुःखाभिप्रायः, अतस्तम् । 'आवण्णं'ति आपन्नाः=प्राप्ताः । 'भीयं'ति भीताः=चकिताः । 'दुक्खाणं'ति दुःखानां=शारीरिक-मानसिकबाधारूपाणाम् । 'पाणिणो'ति प्राणिनः=जन्तवः । 'कुणंतं'ति कुर्वन्तः=विदधानाः । 'तत्थ वुत्ताइं'ति तत्र=आगमे, उक्तानि=कथितानि । 'पावेंति परमं'ति प्राप्नुवन्ति=लभन्ते, परमं=प्रकृष्टम् । 'पयं'ति पदं स्थानमिति श्लोकार्थः ॥४२॥

निगमनाह- 'तम्ह'ति तस्मात् । 'एसो'ति एषः=प्रत्यक्षः । 'दुहऽत्ताणं'ति दुःखार्तानां=दुःखपीडितानाम् । 'ताणं'ति त्राणं=शरणम् । 'सत्ताणं'ति सत्त्वानां=प्राणिनाम् । 'आगमो'ति

१. ला० कण्टका ॥ २. ला० 'चारदो' ॥ ३. ला० 'यसारिसो' ॥ ४. सं० वा० सु० 'कव्याधिरू' ॥
५. ला० 'नि 'पाविति' [त्ति] प्राप्नुवन्ति लभन्ते, 'परमं' ति परमम् ॥

आगमः=सिद्धान्त इति श्लोकार्थः ॥ ४३ पू० ॥

न केवलं त्राणम्, आलम्बनमप्यसौ । यत आह श्लोकस्योत्तरार्धम्—

भवकूवे पडंताणं एसो आलंबणं परं ॥४३॥

भवकूवे=संसारवटे । पततां=निमज्जताम् । एषः=आगमः । आलम्बनम्=अवष्टम्भ-
नमुद्धरणरज्जुरित्यर्थः । परं=प्रधानमिति श्लोकोत्तरार्धार्थः ॥४३॥

साम्प्रतमागमस्य नाथ-बन्धुत्वे एकश्लोकेनाऽऽह—

एसो णाहो अणाहाणं सव्वभूयाण भावओ ।

भावबंध्यु इमो चेव सव्वसोक्खाण कारणं ॥४४॥

एष 'नाथः' नायकः । 'अनाथानाम्' अस्वामिकानाम् । केषाम् ? 'सर्वभूतानां'
निःशेषजन्तूनाम् । 'भावतः' परमार्थतः । यथा हि स्वामी समाश्रितान् रक्षति एवमसावप्य-
हिंसाप्रतिपादनपरवाक्योपदेशतः सर्वजन्तून् रक्षति । तथा 'भावबन्धुः' परमार्थभ्राता । 'इमो चेव' ति
एष एव । 'सर्वसौख्यानां' समस्तनिर्वृतीनाम् । 'कारणं' हेतुः । तथा हि—

जह बंध्यु वरसिक्खं वियरंतो सोक्खकारणं होइ ।

तह आगमो वि सिवसुहहेऊ नाणाइदाणाओ ॥४५॥

इति श्लोकार्थः ॥४४॥ अधुनाऽऽगमस्यैव दीपरूपतां श्लोकेन प्रतिपादयति—

अंधयारे दुरुत्तारे घोरे संसारचारए ।

एसो चेव महादीवो लोया-ऽलोयावलोयणो ॥४५॥

'अन्धकारे' तमोबहुले । 'दुरुत्तारे' कष्टनिर्गमे । 'घोरे' रौद्रे । 'संसारचारके' भवगुप्तिगृहे ।
एष चैव महादीपः, 'लोका-ऽलोकावलोकनः' निःशेषपदार्थप्रदर्शकः । इति श्लोकार्थः ॥४५॥

आगमश्चक्षुर्भूत इति श्लोकेनाऽऽह—

जेणं सग्गा-ऽपवग्गाणं मगं दाएइ देहिणं ।

चक्खुभूओ इमो तेणं सव्वेसिं भव्वपाणिणं ॥४६॥

१. सं० वा० सु० 'कूवे' ॥ २. ला० 'तानाम्' । भावतः ॥ ३. सं० वा० सु० 'व' एव ॥ ४. ता० 'लोयऽव' ॥
५. ला० 'दार्थदर्श' ॥

‘जेण’ति येन कारणेन । ‘स्वर्गा-ऽपवर्गाणां’ देवलोक-मोक्षाणां ‘मार्गं’ पन्थानं ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूपम् । ‘दाएइ’ति दर्शयति । ‘देहिनां’ प्राणिनाम् । ‘चक्षुर्भूतः’ दृष्टिकल्पः । ‘इमो’ अयम् । ‘तेण’ति तेन कारणेन । ‘सर्वेषां’ समस्तानाम् । ‘भव्यप्राणिनां’ मुक्तिगमनयोग्यजन्तूनाम्, यस्माद् अभव्यानामयमपि न सन्मार्गदर्शको जायतेऽतो भव्यानामित्युक्तम् । इति श्लोकार्थः ॥४६॥

सम्प्रति जननी-जनकरूपतामस्य श्लोकेनाऽऽह-

आगमो चेव जीवाणं जणणी णेहणिब्भरा ।

जोग-खेमंकरो निच्चं आगमो जणगो तहा ॥४७॥

आगमश्चैव जीवानां ‘जननी’ माता ‘स्नेहनिर्भरा’ अञ्जसाऽऽपूर्णा । तथा हि-

पालण-पोसण-परिवद्धणाइ पुत्ताण कुणइ जह माया ।

तह एसो जीवाणं करेइ जिणभणियसिद्धंतो ॥४८॥

‘जोग-खेमंकरो’ति तत्राऽभिनवस्योपार्जनं योगः, पूर्वोपार्जितस्य च रक्षणं क्षेमम्, ते करोतीति योग-क्षेमकरः । ‘नित्यं’ सदा । आगमो ‘जनकः’ पिता । तथा=तेनैव प्रकारेण । तथा हि—

पुव्वोवजियगुणरक्खणाओ अप्पुव्वकरणओ चेव ।

सिद्धंतो जीवाणं जणगो व सजोग-खेमकरो ॥४९॥

इति श्लोकार्थः ॥४७॥ इदानीं सार्थवाहत्वमस्योपदर्शयन् श्लोकमाह-

राग-द्वेस-कसायाइदुड्ढसावयसंकुले ।

एसो संसारकंतारे सत्थाहो मग्गदेसओ ॥४८॥

राग-द्वेषौ=प्रीत्यप्रीतिस्वभावौ, कषायाः=क्रोध-मान-माया-लोभाः, ते आदिर्येषां महामोहादीनां ते तदादयः, त एव दुष्टश्चापदाः=रौद्रसिंह-व्याघ्रादयस्तैः संकुले=व्याप्ते । एष ‘संसारकान्तारे’ भवारण्ये । ‘सार्थवाहः’ सार्थनायकः । मार्गदिशकः=वर्तनीप्रदर्शकः, तथा हि-

जह निरुवहयं मग्गं सत्थाहो तग्गुणे वियाणंतो ।

देसेइ सत्थियाणं कंतारे सावयाइण्णे ॥४९॥

तह जीवाणं बहुविहआवयसयसंकुलम्पि भवगहणे ।

णाणाईणिरुवहयं मग्गं दंसेइ जिणसमओ ॥५०॥

१. सं० वा० सु० ‘इ’ दर्श ॥ २. ला० ता० जोग-क्खेमं ॥ ३. ला० ता० ‘णओत’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘व जननी माता जीवानां ॥ ५. सं० वा० सु० तं क’ ॥ ६. ला० ‘णउ व्व सुजोग’ ॥ ७. ला० ‘वइस’ ॥

इति श्लोकार्थः ॥४८॥ सम्प्रति हस्तालम्बकपुरुषत्वमस्य श्लोकेनाऽऽह-

सारीर-माणसाणेयदुःख-कुग्गाहसागरे ।

बुडुंताणं इमो झति हत्थालंबं पयच्छइ ॥४९॥

‘शारीर-मानसानेकदुःख-कुग्गाहसागरे’ शरीरे भवानि शारीराणि शस्त्राभिघात-रोगाद्युद्भवानि, मनसि भवानि मानसानि राग-द्वेषेर्ष्या-चिन्ताजानि, अनेकानि=प्रचुराणि, दुःखानि=पीडाः, कुग्गाहाः=मिथ्याभिनिवेशाः, त एव सागरः=समुद्रः शारीर-मानसानेकदुःख-कुग्गाहसागरः तस्मिन् । ‘बुडुंताणं’ति बुडतां=निमज्जताम् । ‘इमो’ अयम् । ‘झगिति’ शीघ्रम् । हस्तालम्बमिव ‘हस्तालम्बं’ सामर्थ्यात् तन्निस्तरणोपायं सम्यक्त्वादि । प्रयच्छति=ददाति । तथा हि-

जह सागरे पडंतं हत्थालंबेण को वि उद्धरइ ।

दुहसागरे पडंतं जिणसिद्धंतो तहुद्धरइ ॥१९०॥

इति श्लोकार्थः ॥४९॥ इदानीं भाण्डागारतामस्य श्लोकेनाऽऽह-

महाविज्जासहस्साणं महामंताणमागमो ।

भूइट्ठाणं सुदिट्ठाणं एसो कोसो सुहावहो ॥५०॥

महाविद्याः=प्रज्ञप्ति-रोहिणिप्रमुखस्त्रीसमधिष्ठिताः साधनविधि-युक्ता वाऽक्षरपङ्क्त्यस्तासां सहस्राः=दशशतात्मकास्तेषाम् । ‘महामन्त्राणां’ चेटकादिपुरुषाधिष्ठितानां साधनविधिविकलानां वा वर्णसन्दर्भणाम् ।

उक्तं च—

इत्थी विज्जाऽभिहिया पुरिसो मंतो त्ति तव्विसेसोऽयं ।

विज्जा ससाहणा वा साहणरहियो भवे मंतो ॥१९१॥ (आव० नि० गा० ९३१)

‘आगमः’ सिद्धान्तः । ‘भूयिष्ठानां’ प्रभूतानाम् । ‘सुदृष्टानां’ सातिशयानाम् । एष ‘कोशः’ भाण्डागारम् । ‘सुखावहः’ सुखकृत् ।

अन्यदर्शनसिद्धान्तेष्वपि महाविद्यादयो दृश्यन्त इति चेत् । तन्न, तेषामित एवोद्धतत्वात् । उक्तं च सिद्धसेनदिवाकरेण-

सुनिश्चितं नः परतन्त्रसूक्तिषु, स्फुरन्ति याः काश्चन सूक्तसम्पदः ।

तथैव ताः पूर्वमहार्णवोद्धृता, जगत्प्रमाणं जिनवाक्यविप्रुषः ॥१९२॥

१. ला० ता० ‘सागरे’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘च्छइ’ ॥ ३. ला० ‘शरीरभवा’ ॥ ४. ला० ‘जातानि, अने’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘इ’ ॥ इदानीं ॥ ६. पु० ण आग ॥

इति श्लोकार्थः ॥५०॥ चिन्तामणिरप्यसाविति श्लोकार्थमाह-

चिन्ताईयं फलं देइ एसो चिन्तामणी परो ॥५१ पू०॥

‘चिन्तातीतं’ चिन्तातिक्रान्तम् । ‘फलं’ कार्यम् । ‘देइ’ ति ददाति । एष ‘चिन्तामणिः’ चिन्तारत्नम् । ‘व(प)रः’ प्रधानः चिन्तातीतफलदायकत्वादेव ॥५१ पू०॥

कियद्वा शृङ्गग्राहं भणिष्यामि ? इति समस्तादेशसङ्ग्रहार्थं श्लोकोत्तरार्थमाह-

मण्णे तं नत्थि जं नत्थि इत्थ तित्थंकरागमे ॥५१॥

‘मन्ये’ इत्याऽऽप्तवादसंसूचकः । अवधारणस्य गम्यमानत्वात् तद् नास्त्येव यद् अत्र=जिनागमे नाऽस्तीति श्लोकार्थः ॥५१॥

आगमादरवता यत् कृतं भवति तच्छ्लोकेनाऽऽह-

आगमं आयरंतेण अत्तणो हियकंखिणा ।

तित्थणाहो गुरू धम्मो ते सव्वे बहुमणिया ॥५२॥

आगमम् ‘आद्रियमाणेन’ प्रमाणीकुर्वता । कथम्भूतेन (?केन) ? जन्तुनेति गम्यते । ‘आत्मनः’ स्वस्य । ‘हितकाङ्क्षिणा’ श्रेयोर्थिना । ‘तीर्थनाथः’ अर्हन् । ‘गुरुः’ यथावस्थितशास्त्रार्थवेदी । ‘धर्मः’ दुर्गतिप्रपतदङ्गिगणधारकः । ‘ते’ पूर्वोक्ताः । ‘सर्वे’ समस्ताः । ‘बहुमताः’ गौरव्याः । कृता भवन्तीति क्रियाध्याहारः । इति श्लोकार्थः ॥५२॥

तद्बहुमानवतो यत् कृतं भवति तच्छ्लोकेनाऽऽह-

बहुमाणेण एयम्मि नत्थि तं जं न मन्निंयं ।

तेलोक्के मन्नणेज्जाणं वुत्तो ठाणं जओ इमो ॥५३॥

‘बहुमानेन’ आन्तरप्रीतिविशेषेण । ‘एयम्मि’ एतस्मिन्नागमे । ‘नास्ति’ न विद्यते । तद् यद् न ‘मतम्’ आदृतम् । ‘त्रैलोक्ये’ जगति । माननीयानां ‘व्युक्तः’ प्रतिपादितः । ‘स्थानम्’=आश्रयः । ‘जओ’ ति यतः=यस्मात् कारणात् । ‘इमो’ ति अयं सिद्धान्तः । इति श्लोकार्थः ॥५३॥

किञ्चाऽऽगमस्यैव प्रमाणतामुपदर्शयन् श्लोकमाह-

१. ला० ‘त्थि एत्थं ति’ ता० ‘त्थि मेत्थं ति’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘मण्णे’ इ’ ॥ ३. ला० तदाह श्लोकेन ॥ ४. ता० ‘णमत्त’ ॥ ५. ला० ‘ता हि यत्’ ॥ ६. ला० ता० ‘णमेय’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘ति यस्मा’ ॥ ८. ला० ‘र्थः’ ॥५३॥ जिनागमस्यैव ॥ ९. ला० ‘णतां प्रदर्श’ ॥

न यागमं पमोत्तूणमन्नं मण्णंति सूरिणे ।

पमाणं धम्ममग्गम्मि दिट्ठंतं बेति केवली ॥५४॥

‘न च’ नैव । आगमं प्रमुच्य=परित्यज्य । ‘अन्यद्’ एतद्व्यतिरिक्तम् । ‘मन्यन्ते’ प्रमाणीकुर्वन्ति । ‘सूरयः’ पण्डिता आचार्या वा । ‘प्रमाणं’ साधकम् । ‘धर्ममार्गे’ धर्मविचारे । अत्रार्थे ‘दृष्टान्तं’ निदर्शनम् । ‘ब्रुवते’ तमेव प्रतिपादयन्ति, जिना इति गम्यते । ‘केवलिनं’ क्षीणरागादिदोषं प्रत्यक्षज्ञानिनम्, तथा चागमवता सिद्धान्तदृष्ट्या शोधितमाहारमाधार्क्यमपि भुङ्क्ते केवल्यपि । उक्तं च—

ओहो सुओवउत्तो सुयणाणी जइ वि गिण्हइ असुद्धं ।

तं केवली वि भुंजइ अपमाण सुयं भवे इहरा ॥१९३॥ (पि० नि० गा० ५२४)

इति भाव इति श्लोकार्थः ॥५४॥ किञ्च कल्याणभागिनामेवागमे बहुमान इति प्रतिपादनार्थं श्लोकमाह—

कल्लाणाणं महंताणं अणंताणं सुहाण य ।

भायणं चेव जे जीवा ते तं भावेंति भावओ ॥५५॥

‘कल्याणानां’ श्रेयसाम् । ‘महतां’ बृहत्प्रमाणानाम् । ‘अनन्तानाम्’ अपरिमेषाणाम् । ‘सुखानां च’ शर्मणां च । ‘भायणं’ति भाजनं=स्थानम् । ‘चैव’ इत्यवधारणार्थः, तेन भाजनमेव । ये ‘जीवाः’ प्राणिनः । ते ‘तं’ति तमागमम् । ‘भावयन्ति’ परिभावयन्ति चेतस्यवस्थापयन्तीत्यर्थः । ‘भावतः’ बहुमानेन । इति श्लोकार्थः ॥५५॥

व्यतिरेकमाह—

अण्णाणं मंदपुण्णाणं णिसामंताण कत्थइ ।

कण्णसूलं समुप्पज्जे अमयं पि विसं भवे ॥५६॥

‘अन्येषाम्’ अपरेषामभव्यादीनाम् । ‘मन्दपुण्यानाम्’ अल्पशुभकर्मणाम् । ‘निशमयतां’ शृण्वताम् । ‘कत्थइ’ति क्वापि जिनागमव्याख्यानादौ । ‘कण्णसूलं’ति कर्णशूलं=श्रवणदुःखम् । ‘समुप्पज्जइ’ति समुत्पद्यते=जायते । एवं च तेषाम् ‘अमृतमपि’ सुरान्नमपि । ‘विषं’ गरलम् । ‘भवति’ जायते इति । अत्रार्थे कथानकम्—

१. ला० ‘नम् । कुर्वते प्रतिपा’ ॥ २. सं० वा० सु० कर्मण्यपि ॥ ३. सं० वा० सु० उक्तम् ओहो ॥ ४. सं० वा० सु० ‘नामागमे’ ॥ ५. ला० ता० भाविति ॥ ६. ला० ‘णाम् । ‘भाय’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘त्यय ति ॥ ८. ला० ‘ख्यादौ ॥ ९. सं० वा० सु० ‘वतीति जायते इति । अत्रापि कथा’ ॥

(२१. वसुदत्तकथानकम्)

अत्थि इहेव जंबुद्वीव^१ दीवे भारहे वासे जयउरं नाम नगरं, जं च वरगंधव्वियकुलं व सदसत्थं व धणुद्धरसरीरं व ससरं, निसियकरवालं व माणससरं व सुकइवयणं व सुवाणियं, पडिवण्णवच्छलणरउलं व महामइहियं व वाउसरीरं व सुसरणं, समुदतलं व किमिरायरइयवत्थं व हत्थिवयणं व सुरयणं ति ।

तत्थ य नमंतसामंतमउलिमणिरयणकिरणजालेहिं । विच्छुरियचरणजुगलो अत्थि णिवोणाम जियसत्तू । १ ।
तस्स य निज्जियतिहुयणविलया रूवाइगुणगणोहेण । सयलंतेउरपवरा देवी कुंदप्पहा अत्थि । २ ।
अण्णो वि तत्थ सेट्ठी धणयत्तो णाम अत्थि विक्खाओ । सयलकलागमकुसलो गोरव्वो णरवरेंदस्स । ३ ।
सो वसुमइणामाए पियाएँ सह पुव्वपुण्णसंजणिए । पंचपयारे भोगे भुंजइ सुरलोगसारिच्छे । ४ ।
एवं च विसयसोक्खं भुंजंताणं कमेण अह ताणं । वसुदत्तो णाम सुओ उप्पण्णो पच्छिमवयम्मि । ५ ।
बावत्तरिं कलाओ कमसो अह सिक्खिओ विसिद्धाओ । सव्वकलापवराए सद्धम्मकलाइ वियलो उड । ६ ।

तओ सिक्खविओ माया-वित्तेहिं 'वच्छ ! धम्मकलावियलाओ सव्वकलाओ वि विहलाओ चेव, जओ—

बाहत्तरीकलापंडिया वि पुरिसा अपंडिया चेव । सव्वकलाण पहाणं जे धम्मकलं न याणंति । ७ ।
विण्णाणविणयमैई नीसेसगुणा वि णिप्फला चेव । धम्मरहियाणं पुत्तय !, ता जत्तं कुणसु तत्थेवा । ८ ।
सो य जिणागमसवणाओँ चेव जाणेज्जए अपरिसेसो । ता गंतुं पयमूले सुगुरुणं सुणसु तं चेव' । ९ ।

तओ एवं भणिओ वि गुरुकम्मयाए जाहे ण किंचि पडिवज्जइ तओ भणिओ जणणीए सेट्ठी 'अज्जउत्त ! अम्हाणं पि पुत्तो होऊण एवविहचरिएहिं भमिही संसारकंतारमेस कुमारो, ता तहा करेहि जहा निसुणेइ एस सिद्धंतं' । सेट्ठिणा वि 'जुत्तं भणइ'त्ति मण्णमाणेण अणिच्छंतो वि उवरोहेण णीओ गुरुसमीवे, निवेसिओ य जिणागमवक्खाणे । अभव्वत्तणओ य जहा जहा निसुणेइ तहा तहा कण्णसूलं उप्पज्जइ चित्तखेओ य । जणओवरोहेण य वच्चइ पइदिणं, परं ण किंचि पडिहासइ सवणाइयं । भणइ य जहा—

१. ला० 'वे भार' ॥ २. ला० 'रकुलं' ॥ ३. ला० व ससरणं ॥ ४. ला० 'लाणं पवरं जे' ॥ ५. सं० वा० सु० 'माई असेस [सु] गुणा' ॥ ६. सं० वा० सु० 'ण सुंदर ! ता' ॥ ७. सं० वा० सु० 'एवंचरि' ॥ ८. ला० निसुणेहि ॥ ९. ला० उवरोहिऊण ॥

‘ताय ! किमालप्पालं एयं निसुणेज्जई असंबद्धं । वायसदसणपरिक्खणसच्छं व जियाइविरहाओ ॥ १० ॥
 गियबुद्धिसिप्पकप्पणविरइयसत्थेहिं मुद्धजणणिवहं । भक्खंति वियारेउं विविहपयारेहिं पासंडी ॥ ११ ॥
 ‘सव्वण्णुविरइयमिणं’ भणंति लोगाण पच्चयणिमित्तं । वायावित्थरचडुला मायावी संतरूवधरा ॥ १२ ॥
 गत्थि च्चिय सव्वण्णू सिद्धंतो कह णु विरइयो तेण ? । ता उम्मत्तयवयणे व्व तत्थ कह आयरो तुम्ह ? ॥ १३ ॥

किञ्च-

एयं निसुणंताणं जायइ सवणाण वेयणा अम्ह । डज्जंति य अंगाइं, ता वच्चाओ गिहं ताय ! ॥ १४ ॥

तओ सेट्ठिणा चिंतियं ‘हंत अभव्वो कोवेस, तां किमणेण खेइएण ?’ । उट्ठिता गया
 गियगेहं । उचियसमएण य परिणीओ वसुदत्तो समाणकुलं बालियं । तीए य सह
 विसयसुहमणुहवंतस्स अत्थ-कामासेवणं कुणंतस्स धम्म-मुखविमुहस्स अगम्मा-ऽभक्खा-
 ऽपेयाइसु पइट्ठस्स बहुजीवघायणिरयस्स रोद्द-ऽट्ठज्झाणपरायणस्स समागओ अहाउयकालो ।
 मरिऊण समुप्पण्णो अहे सत्तमपुढवीए । भोत्तूण य तत्थ तेत्तीसं सागरोवमाइं परमाउं
 समुप्पण्णो मच्छत्ताए ।

तत्थ न्निआउयक्खएण मरिऊण समुप्पण्णो इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रिट्ठउरे नगरे
 चक्कचरगोभद्दमाहणस्स जलणप्पहाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए । जाओ कालक्कमेणं । कयं
 च से णामं अग्निदेवोति । वड्ढिओ देहोवचएणं, परं वायारहियमूयलओ कूरचित्तो विसतरु व्व
 सव्वजीवउव्वेयकारी । पियकमागयं च कुणइ चक्कवरवित्तिं ।

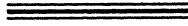
अण्णया य रायवल्लहपुरिसेण तप्पुरओ केलीए मोडियं तिणं । तओ कोहाभिभूएण लउ-
 डेणाहणेऊण विणासिओ रायवल्लहो । रीइणा वि नेत्तोप्पाडण-कर-चरण-सवण-नासांइछे-
 याइकयत्थणाहिं कयत्थेऊण मारिओ समाणो घोरपरिणामो समुप्पण्णो छट्ठपुढवीए उक्कोसठिई
 णारगो ।

तत्तो उव्वट्ठेऊण समुप्पण्णो पुणो वि मच्छो । सो य जीवंतओ चेव गहिओ धीवरेहिं
 तत्तत्तिल्लाईहिं सिंचिऊण विणासिओ समाणो समुप्पण्णो आभीरघोसे आभीरत्ताए । परं महामुरूखो

१. ला० ‘परिक्खास’ ॥ २. ला० प्रती ‘किञ्च’ इति नास्ति ॥ ३. ला० णं उप्पज्जइ सवणवेयणा
 अम्हं ॥ ४. ला० तो ॥ ५. सं० वा० सु० ‘कुलला’ ॥ ६. ला० ‘म्म-मोक्ख’ ॥ ७. ला० पयट्ठ’ ॥ ८. सं० वा०
 सु० रोद्दज्झाण’ ॥ ९. ला० ‘ण य स’ ॥ १०. सं० वा० सु० तेत्तीससाग’ ॥ ११. ला० नियाउ’ ॥ १२. ला०
 रिट्ठपुरे ॥ १३. ला० ‘ए माहणीए कु’ ॥ १४. सं० वा० सु० ‘ओ कमेण’ ॥ १५. सं० वा० सु० ‘वो । व’ ॥
 १६. ला० उव्वेयारी ॥ १७. ला० ‘क्कयर’ ॥ १८. ला० लउडएणा’ ॥ १९. ला० रायणा ॥ २०. ला०
 ‘साच्छेया’ ॥ २१. ला० उव्वट्ठिओ समु’ ॥ २२. ला० मच्छओ ॥

जडो मइवियलो सव्वहा पाहाणकप्पो न किंचि करणेज्जा-ऽकरणेज्जं वियाणइ जाव जाओ जोव्वणत्थो । जोव्वणोम्मायवसेण मुरुक्खत्तणेण य विद्धंसइ भगिणी-जणणीओ वि । अण्णया णियगेहपिट्ठओ सिणायंती तेणंतेण वच्चमाणेण दिट्ठा गामभोइयभारिया । गओ य तीए समीवे वाडिं उल्लंघेऊण । बलामोडीए भुंजमाणस्स पोक्कारियं तीए । समागओ ठक्कुरो । तओ तेण वसणछेय-लिंगपलीवणाइकयत्थणाहिं कयत्थिज्जंतो मरेऊण समुप्पण्णो पंचमपुढवीए णारगो । तत्तो वि उव्वट्ठेऊण मेच्छजाईए संजाओ जाइंधदारगो । तओ परिपालणभएण गलगं मोडेऊण जणणीए मारिओ, गओ य नरगे । एवं च अभव्वत्तणओ अणंतं संसारमाहिं डिस्सई ।

[वसुदत्तकथानकं समाप्तम् । २१.]



इति श्लोकार्थः ॥५६॥

अस्यैवाऽर्थस्य निगमनाय श्लोकमाह—

ता एयं जेऽवमण्णंति बाला हीलंति आगमं ।

घोरंधारे दुरुत्तारे अहो गच्छंति ते नरा ॥५७॥

‘तत्’ तस्मात् । ‘एयं’ति एनमागमम् । ये ‘अपमानयन्ति’ अगौरव्यतया पश्यन्ति । ‘बालाः’ अज्ञाः । तथा हीलन्ति दुर्वचनभाषणतः ‘आगमं’ सिद्धान्तम् । ‘घोरान्धकारे’ बहलरौद्रतिमिरे । ‘दुरुत्तारे’ दुःखोत्तारे । ‘अधः’ नरकपृथ्वीलक्षणे । ‘गच्छन्ति’ प्रयान्ति । ते ‘नराः’ पुरुषाः, पूर्वकथानकोक्तश्रेष्ठिसुतवत् । इति श्लोकार्थः ॥५७॥

किञ्च—

जिणाऽऽणं लंघए मूढो ‘किलाहं सुहिओ भवे’ ।

जाव लक्खाइँ दुक्खाणं आणाभंगे कओ सुहं? ॥५८॥

‘जिनाज्ञं’ जिनागमादेशरूपाम् । तां ‘लङ्घयति’ व्यतिक्रामति । ‘मूढः’ अज्ञः । ‘किल’ इत्याप्तवादसंसूचकः । ‘अहम्’ इत्यात्मनिर्देशः । ‘सुखितः’ शर्मवान् । ‘भवे’ति भविष्यामि । परं यावल्लक्षान् दुःखानां प्राप्नोतीति गम्यते । यत ‘आज्ञाभङ्गे’ आज्ञाविनाशे ‘कुतः’ कस्मात् सुखम् ? ।

१. सं० वा० सु० ‘ण दस’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘ओ दारगो ॥ ३. ला० ‘ण जणणीए गलगं मोडेऊण मा’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘इ ति श्लो’ ॥ ५. ला० ‘पृथिवील’ ॥ ६. ला० व्रजन्ति ते ॥ ७. ता० क्खाणि दुक्खा’ ॥ ८. ला० ‘ति अतिक्रमयति ॥

उक्तं च-

जह नरवइणो आणं अइक्कमंता पमायदोसेणं ।
पावंति बंध-धणहरण-वसण-मरणाऽवसाणाइं ॥१९४॥

तह जिणवराण आणं अइक्कमंता पमायदोसेणं ।
पावंति दुग्गइपहे विणिवायसहस्सकोडीओ ॥१९५॥ (ओघनि० भा० गा० ४५-४६)

इति श्लोकार्थः ॥५८॥ आगमस्यैव माहात्म्यख्यापकं श्लोकमाह-

कट्टमम्हारिसा पाणी दूसमादोसदूसिया ।
हा ! अणाहा कहं हुंता ?, न हुंतो जइ जिणागमो ॥५९॥

‘कट्टम्’ इति खेदे । ‘अम्हारिस’ति अस्मादृशाः=अस्मत्सदृशाः । ‘प्राणिनः’ जीवाः ।
‘दुःषमादोष-दूषिताः’ चतुर्थाग्रेतनाऽरककलङ्काङ्किताः । उक्तं च-

ओहट्टइ सम्मत्तं मिच्छत्तबलेण पेळ्ळियं संतं ।
परिवट्ठंति कसाया ओसप्पिणिकालदोसेणं ॥१९६॥
फिट्टइ गुरुकुलवासो, मंदा य मई वि होइ धम्मम्मि ।
एयं तं संपत्तं जं भणियं लोगनाहेणं ॥१९७॥

उवगरण-वत्थ-पत्ताइयाण वसहीण सट्ठयाईणं ।
जुज्झिस्संति कएणं जह नरवइणो कुडुंबीणं ॥१९८॥
कलहकरा डमरकरा असमाहिकरा अनिव्वुइकरा य ।
पाएण दूसमाए निद्धम्मा निद्वया कूरा ॥१९९॥
अह कोह-माण-मय-मच्छरेहिं आवूरिऊण जणणिवहं ।
सव्वज्जव-तवसारो धम्मो वि जिओ अहम्मेणं ॥२००॥

विसयाउंरा उ जीवा ववहारेसु य समुज्जया पावा ।
होहिंति दूसमाए पणट्ठधम्मा कुसीला य ॥२०१॥
सयणो णिच्चविरुद्धो, लुद्धो गिद्धो य मित्त-सुहिसत्थो ।
चंडो निरणुक्कंपो तइया लज्जुज्झिओ लोगो ॥२०२॥

१. ला० ‘ओ ॥ ति श्लो’ ॥ २. ता० होंता ? न होंतो ॥ ३. सं० वा० सु० अस्मत्सदृशाः ॥ ४. ला०
‘रा य जी’ ॥ ५. ला० ‘द्धो कुद्धो य ॥

‘हा ! अणाह’ति हा इति प्रलापे, ‘अनाथाः’ त्राणवर्जिताः कथमभूवन् ? न कथञ्चिदित्यर्थः ।
‘न हुंतो’ति नाऽभूद् यदि जिनागमः=अर्हत्सिद्धान्तः परमत्रातेत्युपमाशयः । तथा हि—

दूसमकालमि नरा सरणविहीणा लहंति दुक्खाइं ।

सारीर-माणसाइं नारय-तिरि-मणुय-देवेसु ॥२०३॥

तायारमविंदंता चउविहगइगमणगुविलसंसारे ।

चुलसीइजोणिलक्खे सुदुक्खतविया भमंति जिया ॥२०४॥

आगमे तु त्रातरि दुःषमार्कलेऽपि भवोदधिस्तीर्यत इति । उक्तं च-

कूरा वि सहावेणं विसयविसवसाणुगा वि होऊण ।

भावियजिणवयणमणा तेलुक्कसुहावहा हुंति ॥२०५॥

इति श्लोकार्थः ॥५९॥ यद्येवं ततः किम् ?-

तम्हा ताणं महाणाहो बंधू माया पिया सुही ।

गई मई इमो दीवो आगमो वीरदेसिओ ॥६०॥

‘तम्हा’ति तस्मात् । ‘त्राणं’ शरणम् । ‘महानाथः’ महानायकः । ‘बन्धुः’ स्वजनः ।
‘माता’ जननी । ‘पिता’ जनकः । ‘सुहृत्’ मित्रम् । ‘गतिः’ सुदेवत्व-सुमानुषत्व-सिद्धिगतिरूपा ।
‘मतिः’ स्वाभाविकी बुद्धिः । ‘इमो’ति अयम् । ‘दीवो’ति द्वीपः=समुद्रान्तर्वर्तिस्थलरूपः, दीपो
वा=चारकादिष्वन्धकारापहवह्निकलिकालक्षणः । आगमो ‘वीरदेशितः’ चरमतीर्थकरूपरूपित इति
श्लोकार्थः ॥६०॥

अयं च साम्प्रतं क्रमादागतोऽल्पातिशयश्चेति प्रतिपादनार्थं श्लोकमाह-

सूरीपरंपरेणेसो संपत्तो जाव संपयं ।

किंतु साइसओ पायं वोच्छिन्नो कालदोसओ ॥६१॥

सूरीणाम्=आचार्याणां परम्परा=शिष्य-प्रशिष्यादिरूपा, लिङ्गव्यत्ययात्, तथा । ‘एषः’
अयम् । ‘सम्प्राप्तः’ आगतो यावत् ‘साम्प्रतम्’ अद्यकालम् । किन्तु ‘सातिशयः’
महापरिज्ञाध्ययनाद्यतिशयग्रन्थरूपः । ‘प्रायः’ बाहुल्येन । ‘व्यवच्छिन्नः’ त्रुटितः । ‘कालदोषतः’
दुःषमानुभावतः । तथा हि कालिकाचार्येण स्वपौत्रगर्ववत्सागरचन्द्राचार्यप्रतिबोधनाकाले

१. ला० ‘त्यभिप्रायः’ । तथा ॥ २. सं० वा० सु० ‘काले भवो’ ॥ ३. ला० तेलोक्क ॥ ४. ता० देवो
॥ ५. सं० वा० सु० ‘वत्त्वं परत्वे सिद्धि’ (?) ॥ ६. सं० वा० सु० ‘ण प्रपौत्र’ ॥

प्रतिपादितोऽयमर्थः । स च कथानकगम्यः । तच्चेदम्-

[२२. कालकाचार्यकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे धरावासं णाम णगरं । तत्थ वइरिवारसुंदरीवेहव्वदिक्खागुरू वइरिसीहो णाम राया । तस्स य सयलंतेउरपहाणा सुरसुंदरी णाम देवी । तीसे य सयलकलाकलावपारगो कालगकुमारो णाम पुत्तो । सो य अण्णया कयाइ आसवाहणियाए पडिणियत्तो सहायारवणोज्जाणे सजलजलहरारावगंभीरमहुरणिग्घोसमायण्णेऊण कोउगेण तन्निरूवणत्थं पविट्ठो तत्थ, जाव पेच्छइ सुसाहुजणपरिवारियं बहुजणाणं जिणपण्णत्तं धम्ममाइक्खमाणं भगवंतं गुणायरायरियं । वंदेऊण य उवविट्ठो तप्पुरओ । भगवया वि समाढत्ता कुमारं उद्देसिऊण विसेसओ धम्मदेसणा । अवि य—

“यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते, निघर्षण-च्छेदन-ताप-ताडनैः ।

तथैव धर्मो विदुषा परीक्ष्यते, श्रुतेन शीलेन तपो-दयागुणैः ॥२०६॥

तथा-

जीवो अणाइणिहणो पवाहओऽणाइक्कम्मसंजुत्तो । पावेण सया दुहिओ, सुहिओ पुण होइ धम्मेण । १॥
धम्मो चरित्तधम्मो सुयधम्माओ तओ य नियमेण । कस-छेय-तावसुद्धो सो च्विय कण्णं व विण्णेओ
पाणवहाईयाणं पावट्ठाणाण जो य पडिसेहो । ज्ञाण-ऽज्झयणाईणं जो य विही एस धम्मकसो ॥३॥
बज्झाणुट्ठाणेणं जेण ण बाहिज्जई तयं णियमा । सभवइ य परिसुद्धं सो उण धम्ममि छेउ त्ति ॥४॥
जीवाइभाववाओ बंधाइपसाहगो इहं तावो । एएहिं सुपरिसुद्धो धम्मो धम्मत्तणमुवेइ ॥५॥
एएहिं जो न सुद्धो अन्नयरम्मि वि न सुद्धु णिव्वडिओ । सो तारिसओ धम्मो णियमेण फले विसंवयइ
एसो य उत्तमो, जं पुरिसत्थो एत्थ वंचिओ णियमा । वंचेज्जइ सयलेसुं कल्लाणेसुं न संदेहो ॥७॥
एत्थ य अवंचओ ण हि वंचिज्जइ तेसु जेण तेणेसो । सम्मं परिक्खियव्वो बुहेहिं सइ निउणदिट्ठीए” ॥८॥
इय गुरुवयणं सोउं कुमरो विगलंतकम्मपब्भारो । संजायचरणभावो एवं भणितं समाढत्तो ॥९॥

‘मिच्छत्तमोहिओ हं जहवट्ठियधम्मरूवकहणेण ।

पडिबोहिओ महायस !, संपइ आइससु करणेज्जं’ ॥१०॥

तो भगवं तब्भावं णाउं आइसइ साहुवरधम्मं ।

सो वि तयं पडिवज्जिय गओ तओ णिवसमीवम्मि ॥११॥

१. सं० वा० सु० णा सुंदरी ॥ २. ला० ‘यापडि’ ॥ ३. ला० ‘सेसेण ध’ ॥ ४. ला० अपि च ॥
५. सं० वा० सु० तथा हि ॥ ६. ला० उ ॥ ७. सं० वा० सु० वयं ॥ ८. सं० वा० सु० संसवइ य पडिसुद्धं ॥
९. ला० ‘य जाइ तओ ॥

अह महया कट्टेणं मोयाविय-जणय-जणणिमाईए । बहुरायउत्तसहिओ जाओ समणो समियपावो ॥१२॥

अह गहियदुविहसिक्खो गीयत्थो जाव भाविओ जाओ ।

तां गुरुणा गिययपए ठविओ गच्छाहिवत्तेण ॥१३॥

पंचसयसाहुपरिवारपरिवुडो भवियकमलवणसंडे । पडिबोहिंतो कमसो पत्तो उज्जेणिणगरीए ॥१४॥

नयरस्स उत्तरदिसासंठियवणसंडमज्झयारम्मि । आवासिओ महप्पा जइजोगे फासुयपएसे ॥१५॥

तं णाऊणं लोगो वंदणंविडिगाइ णिगओ झत्ति । पणमेत्तु सूरिपाए उवविट्ठो सुद्धमहिवट्ठे ॥१६॥

तो कालयसूरीहिं दुहतरुवणगहणदहणसारिच्छो । धम्मो जिणपणत्तो कहिओ गंभीरसदेण ॥१७॥

तं सोऊणं परिसा सव्वा संवेगमागया अहियं । वण्णंती सूरिगुणे गियणियठाणेसु संपत्ता ॥१८॥

एवं च भवियकमलपडिबोहणपराण जाव वोलिंति कयवि दियहा ताव भवियव्वयणिओएणं समागयाओ तत्थ साहुणीओ । ताणं च मज्झे सरस्सइ व्व पोत्थियावग्गहत्था, न याकुलीणा; गोरि व्व महातेयन्निया, न य भवाणुरत्तचित्ता; सरयकालनइ व्व सच्छासया, न य कुग्गाहसंजुया; लच्छि व्व कमलालया, ण य सकामा; चंदलेह व्व सयलजणाणंददाइणी, ण य वंका; किं बहुणा ?, गुणेहिं रूवेण य समत्थणारीयणप्पहाणा साहुणीकिरियाकलावुज्जया कालयसूरिलहु-भइणी सरस्सइ णाम साहुणी वियारभूमीए णिगया समाणी दिट्ठा उज्जेणिणगरिसामिणा गद्दभिल्लेण राइणा, अज्झोववण्णेण य

हा ! सुगुरु ! हा ! सहोय र ! हा ! पवयणणाह ! कालयमुण्णिंद ! ।

चरणधणं हीरते मह रक्ख अणज्जणरवइणा' ॥१९॥

इच्चाइविलवंती अणिच्छमाणी बलामोडीए छूढा अंतउरे । तं च सूरीहिं णाऊण भणिओ जहा- 'महाराय !

प्रमाणानि प्रमाणस्थै रक्षणीयानि यत्नतः ।

विषीदन्ति प्रमाणानि प्रमाणस्थैर्विसंस्थुलैः ॥२०७॥

किंच रायरक्खियाणि तवोवणाणि हुंति । यतः-

नरेश्वरभुजच्छायामाश्रित्याऽऽश्रमिणः सुखम् ।

निर्भया धर्मकार्याणि कुर्वते स्वान्यनन्तरम् ॥२०८॥

१. ला० तो ॥ २. ला० 'यउज्जाणमज्झ' ॥ ३. ला० 'णपडियाए' ॥ ४. ला० कइवि ॥ ५. ला० 'यानियोगेणं' ॥ ६. ला० 'दयारिणी' ॥ ७. सं० वा० सु० रुवेहिं सम' ॥ ८. ला० 'हुयध' ॥ ९. सं० वा० सु० 'तं रक्खेहि अण' ॥

ता विसज्जेहि एयं, मा नियकुलकलंकमुप्पाएहि । यत उक्तम्-

गोत्तु गंजिदु [?गोत्तु गंजिदु] मलिदु चारित्तु,
सुहडत्तणु हारविदु, अजसपडहु जगि सयलि भामिदु ।

मसिकुच्चउ दिन्नु कुलि जेण केण (?तेण, जेण) परदारु हिंसि(?हीरि)दु ॥२०९॥

ता महाराय ! उच्चिड्ढकायपिसियं व विरुद्धमेयं । तओ कामाउरत्तणओ विवरीयमइत्तणओ
य ण किंचि पडिवण्णं राइणा । यतः-

दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगत्यन्धः पुरोऽवस्थितं,
रागान्धस्तु यदस्ति तत् परिहरन् यन्नास्ति तत् पश्यति ।
कुन्देन्दीवर-पूर्णचन्द्र-कलश-श्रीमल्लतापल्लवा-
नारोप्याशुचिराशिषु प्रियतमागात्रेषु यन्मोदते ॥२१०॥

‘ता मुंच राय ! एयं तवस्सिणिं मा करेहि अण्णायं । तइ अण्णायपवत्ते को अन्नो नायवं होइ ?’ ॥२०॥
एवं भणिओ राया पडिवज्जइ जाव किंचि णो ताहे । चउविहसंधेण तओ भणाविओ कालगज्जेहिं ॥२१॥
संधो वि जाव तेणं ण मणिओ कह वि ताव सूरीहिं । कोववसमुवगएहिं कया पइण्णा इमा घोरा ॥२२॥
‘जे संघपच्चणीया पवयणउवघायगा नरा जे य । संजमउवघायपरा तदुविक्खाकारिणो जे य ॥२३॥
तेसिं वच्चांमि गइं जइ एयं गद्दभिल्लरायाणं । उम्मूलेमि ण सहसा रज्जाओ भड्डमज्जायं’ ॥२४॥

कायव्वं च एयं, जओ भणियमागमे—

तम्हा सइ सामत्थे आणाभट्ठम्मि नो खलु उवेहा ।
अणुकूलेअरएहिं य अणुसट्ठी होइ दायव्वा ॥२११॥

तथा—

साहूण चेइयाण य पडणीयं तह अवण्णवाइं च ।
जिणपवयणस्स अहियं सव्वत्थामेण वारेइ ॥२१२॥

तओ एवं पइण्णं काऊण चिंतियं सूँरिणा जहा ‘एस गद्दभिल्लराया महाबल-परक्कमो गद्दभीए
महाविज्जाए बलिओ ता उवाएण उम्मूलियव्वो’ । ति सामत्थेऊण कओ कवडेण उम्मत्तयवेसो तिय-
चउक्क-चच्चर-महापहट्ठाणेसु य इमं पलवंतो हिंडइ-यदि गर्दभिल्लो राजा ततः किमतः परम् ?, यदि

वा रम्यमन्तःपुरं ततः किमतः परम् ? , यदि वा विषयो रम्यस्ततः, किमतः परम् ? ,यदि वा सुनिविष्टा पुरी ततः किमतः परम् ? , यदि वा जनः सुवेषस्ततः किमतः परम् ? , यदि वा करोमि भिक्षाटनं ततः किमतः परम् ? , यदि वा शून्यगृहे स्वप्नं करोमि ततः किमतः परम् ? ।

इय एवं जंपंतं सूरिं दडूण भणइ पुरलोगो । ‘अहह ! ण जुत्तं रण्णा कयं जओ भणिणिकज्जम्मि ॥२५॥
मोत्तूण णिययगच्छं हिंडइ उम्मत्तओ नयरिमज्जे । सयलगुणाण णिहाणं कड्डमहो ! कालगायरीओ’ ॥२६॥
गोवाल-बाल-ललणाइसयललोयाओ एयमइफरुसं । सोऊण निंदणं पुरवरीइ नियसामिसालस्स ॥२७॥

मंतीहिं तओ भणिओ नरणाहो ‘देव ! मा कुणसु एवं ।

मुयसु तवस्सिणिमेयं अवण्णवाओ जओ गरुओ ॥२८॥

किंच गुणीण अणत्थं जो मोहविमोहिओ नरो कुणइ । सोऽणत्थजलसमुद्दे अप्पाणं खिवइ धुवमेयं’ ॥२९॥
तं मंतिवयणमायणिऊण रोसेण भणइ णरणाहो । ‘रेरे ! एयं सिक्खं गंतूणं देह नियपिउणो’ ॥३०॥
तं सोउं तुण्हिक्का संजाया मंतिणो इमं हियए । काउं ‘केण णिसिद्धो जलही सीमं विलंघंतो ?’ ॥३१॥

तं च कुओ वि णाऊण णिगओ णयरीओ सूरी । अणवरयं च गच्छंतो पत्तो सगकूलं णाम कूलं ।
तत्थ जे सामंता ते साहिणो भणंति । जो यं सामंताहिवई सयलनरेंदवंदचूडामणी सो साहाणुसाही
भण्णइ । तओ कालयसूरी ठिओ एगस्स साहिणो समीवे । आवज्जिओ य सो मंत-तंताईहिं ।

इओ य अण्णया कयाइ तस्स साहिणो सूरिसमणियस्स हरिसभरणिब्भरस्स
णाणांविहविणोएहिं चिड्डमाणस्स समागओ पडिहारो, विण्णत्तं च तेण जंहा ‘सामि !
साहाणुसाहिदूओ दुवारे चिड्डइ’ । साहिणा भणियं ‘लहुं पवेसेहि’ । पवेसिओ अ वयणाणंतमेव ।
णिसण्णो य दिण्णासणे । तओ दूएण समप्पियं उवायणं । तं च दडूण नवपाउसकालणहयलं व
अंधारियं वयणं साहिणो । तओ चिंतियं सूरिणा ‘हंत ! किमेयमपुव्वकरणं उवलक्खेज्जइ ? , जओ
सामिपसायमागयं दडूण जलददंसणेणं पिव सिहिणो हरिसभरनिब्भरा जायंते सेवया, एसो य
सामवयणो दीसइ, ता पुच्छामि कारणं’ ति ।

एत्थंतरम्मिं^१ साहिपुरिसदंसियविडहरे गओ दूओ । तओ पुच्छियं सूरिणा ‘हंत !
सामिपसाए वि समागए किं उव्विणो विय लक्खीयसि ?’ । तेण भणियं “भगवं ! न पसाओ,
किंतु कोवो समागओ, जओ अम्ह पहू जस्स रूसइ तस्स णामंकिंयं मुदियं छुरियं पडवेइ, तओ

१. ला० ‘म् ? , विषयो यदि वार र’ ॥ २. ला० ‘म् ? , सुनिविष्टा पुरी यदि वा ततः ॥ ३. ला०
‘ड्डमओ का’ ॥ ४. ला० एवम’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘णं ठवई’ ॥ ६. ला० एवं ॥ ७. ला० इ ॥ ८. सं० वा०
सु० सूरिणो (णा) सम’ ॥ ९. सं० वा० सु० ‘णाविणो’ ॥ १०. सं० वा० सु० जहा साहा’ ॥ ११. ला०
‘रणमवलक्खिज्जइ’ ॥ १२. ला० जायंति ॥ १३. ला० ‘म्मि य सा’ ॥

केणइ कारणेण अम्होवरि रूसेऊण पेसिया एसा छुरिया, एईए यऽप्पा अम्हेहिं घाइयव्वो, 'उग्गदंडो'त्ति काऊण ण तव्वयणे वियारणा कायव्वा' । सूरिणा भणियं 'किं तुज्झं चेव रुट्ठो उयाहु अण्णस्स वि कस्सइ ?' । साहिणा भणियं 'मम वज्जियाणमण्णेसिं पि पंचाणउईरायाणं, जओ दीसइ छण्णउइमो इमीए सत्थियाए अंको' त्ति । सूरिणा जंपियं 'जइ एवं ता मा अप्पाणं विणासेहि' । तेण भणियं 'न पहुणा रुट्ठेण कुलक्खयमंतरेण छुट्ठेज्जइ, मए उण मए ण सेसकुलक्खओ होइ' । सूरिणा भणियं 'जइ एवं तहा वि वाहरसु णियदूयपेसणेणं पंचाणउइं पि रायाणो जेण हिंदुगदेसं वच्चामो' । तओ तेण पुच्छिओ दूओ जहा 'भद ! के ते अण्णे पंचाणउई रायाणो जेसिं कुविओ देवो?' । तेण वि सव्वे णिवेइया ।

तओ दूयं विसज्जिऊण सव्वेसिं पि पेसिया पत्तेयं णियदूया जहा 'समागच्छह मम समीवे, मा नियजीवियाइं परिच्चयह, अहं सव्वत्थ भलिस्सामि' । तओ ते दुपरिच्चयणीयत्तणओ पाणाणं सव्वं सामणिं काऊण आगया इडि त्ति तस्म गमीवे । ते य समागए दट्ठूण तेण पुच्छिया सूरिणो 'भगवं ! किमम्हेहिं संपयं कायव्वं ?' । सूरिहिं भणियं 'सबल-वाहणा उत्तरेऊण सिंधुं वच्चह हिंदुगदेसं' । तओ समारुहिऊण जाणवत्तेसु समागया सुरट्ठविसए । इत्थंतरम्मि समागओ पाउससमयो । तओ 'दुग्गमा मग्ग'त्ति काउं सुरट्ठविसयं छन्नउइविभागेहिं विभज्जिऊण द्विया तत्थेव ।

एत्थंतरम्मि य महाराओ व्व रेहिरपुंडरीओ, गरुयसमरारंभसमओ व्व उल्लंतबहुगोवो, पढमपाउसो व्व दीसंतसियबलाहओ, मुणिवइ व्व रायहंससंसेविओ, पहाणपासाओ व्व सच्चवेज्जंतमत्तवारणो समागओ सरयकालो । जत्थ य सुयणजणचित्तवित्तीओ व सच्छाओ महानईओ, सुकविवाणीओ व निम्मलाओ दिसाओ, परमजोगिसरीरं व नीरयं गयणंगणं, मुणिणो व्व सुमणोभिरामा सत्तच्छयतरुणो वरथवइनिम्मियदेवउलपंतीओ व सुताराओ रयणीओ त्ति । अवि य-

निष्फण्णसव्वसासा जत्थ मही अहियरेहिरा जाया । ठिक्कंति दरियवसहा पमुइयंओविंदमज्झगया ॥३२॥
पीऊसपूरसरिसा ससहरकिरणावली तमिस्सासु । पव्वालेइ असेसं अहियं भुवणोयरं जत्थ ॥३३॥
सालिवणरक्खणोज्जयपामरिगिज्जंतमहुरगीएहिं । पडिबज्झंता पहिया पंथाओ जत्थ भस्संति ॥३४॥
इय बहुजियतोसयरे पत्ते सरयम्मि नवरि विद्वाणो । ज्झत्ति रहंगो भवचित्तरूवसंसाहणत्थं व ॥३५॥

एवंविहं च सरयकालसिरिमवलोइऊण णियसमीहियसिद्धिकामेण भणिया ते कालयसूरिणा जहा 'भो किमेवं णिरुज्जमा चिट्ठह ?' । तेहिं भणियं 'आइसह किं पुण करेमो ?' । सूरिणा भणियं 'गेण्हह

१. ला० वरिं रू ॥ २. ला० तुज्झ ॥ ३. 'तेण भणियं' इति पाठः ला० प्रतेरेवोपलब्धः ॥ ४. ला० मए पुसू मएण सेसकुलस्स खेमं भवइ । ण ॥ ५. सं० वा० सु० हिंडग ॥ ६. सं० वा० सु० ते पंचा ॥ ७. सं० वा० सु० सव्वसा ॥ ८. सं० वा० सु० या छड त्ति ॥ ९. ला० समीवं ॥ १०. ला० 'यगोवंद' ॥

उज्जेणिं, जओ तीए^१ संबद्धो पभूओ मालवदेसो, तत्थ पज्जतीए तुम्हाणं णिव्वाहो भविस्सइ^२ । तेहिं भणियं^३ 'एवं करोमो, परं णत्थि संबलयं, जम्हा एयम्मि देसे अम्हाण भोयणमेत्तं चेव जायं' । तओ सूरिणा जोगचुण्णचहुंटियामेत्तपक्खेवेण सुवण्णीकाऊण सव्वं कुंभारावाहं भणिया 'एयं संबलयं गेण्हह'^४ ।

तओ ते^५ तं विभज्जिऊण सव्वसामग्गीए पयट्ठा उज्जेणिं पइ । अवंतरे य जे के वि लाडविसयरायाणो ते साहिता पत्ता उज्जेणिविसयसंधिं । तओ गद्दभिळो तं परबलमागच्छंतं सोऊण महाबलसामग्गीए निग्गओ, पत्तो य विसयसंधिं । तओ दुण्हं पि दप्पुद्धरसेण्णाणं लग्गमाओहणं । अवि य-

निवडंततिक्खसरझसर-सेल्ल-वावल्ल-सव्वलरउट्ठो । खिप्पंतचक्क-पट्टिस-मोगगर-णारायबीभच्छो ॥३६॥

असि-परसु-कुंत-कुंगीसंघट्टुंतसिहिफुलिंगोहो । भडपुक्कारवट्ठो रयछाइयसूरकरपसरो ॥३७॥

एवंविहसमरभरे वट्ठंते गद्दभिळणरवइणो । सेण्णं खणेण णट्ठं वायाहयमेहवंदं व ॥३८॥

तं भग्गं दट्ठूणं वलिऊणं पुरवरीए णरणाहो । पविसित्तु तओ चिट्ठइ रोहगसज्जो णियबलेण ॥३९॥

इयरे वि निस्संचारवल्लयबंधेण णयरिं रोहेऊण ठिया । कुणंति य पइदिणं ढोयं । अन्नम्मि दिवसे जाव ढोएण उवट्ठिया ताव पेच्छंति सुणयं कोट्टं । तओ तेहिं पुच्छिया सूरिणो 'भगवं ! किमज्ज सुणयं कोट्टं दीसइ ? । तओ सूरिहिं सुमरेऊण भणियं जहा 'अज्ज अट्ठमी, तत्थ य गद्दभिळो उववासं काऊण गद्दभिं महाविज्जं साहइ, ता निरूवह कर्त्थइ अट्ठालोवट्ठियं गद्दभिं' । निरूवंतेहि य दिट्ठा, दंसिया य सूरिणं । सूरिहि भणियं जहा 'एसा गद्दभी जावसमत्तीए महइमहालयं सद्धं काहिइ, तं च परबलसंतियं जं दुपयं चउप्पयं वा सुणेस्सइ तं सव्वं मुहेण रुहिरं उगिरंतं निस्संदेहं भूमीए निवडेस्सइ, ता सव्वं सजीवं दुपयं चउप्पयं घेतूण दुगाउयमित्तं भूमागमोसरह, अट्ठोत्तरसयं च सद्धवेहीणं महाजोहाणं मम समीवे ठावेह' । तेहि वि^६ तं तहेव सव्वं कयं । ते य सद्धवेहिणो भणिया सूरिहिं 'जया इमा रासही सद्धकरणत्थं मुहं णिवाएइ तया अकयसद्दाए चेव एयाए तुब्भे नाराएहिं मुहं भरेज्जह, कयसद्दाए उण तुब्भे वि न सक्केस्सह पहरिउं, ता अप्पमत्ता आयण्णापूरियसरा चेड्डह' । तेहि वि तह चेव सव्वं कयं ।

तओ य आयण्णायट्ठियधणुविमुक्कसरपूरपुण्णवयणाए तीए तिरिक्खीए पीडियाए न य चइयमारसिउं 'पडिहयसत्ति' ति । तओ विज्जा तस्सेव साहगस्सुवरिं काउं मुत्तपुरीसं लत्तं दाऊण झत्ति गया । तओ सूरिणा भणिया ते जहा 'गेण्हह संपयं, इत्तियं चेव एयस्स बलं' ति । तओ ते पागारं भंजिऊण पविट्ठा उज्जेणीए । गहिओ सजीवगाहं गद्दभिळो । बंधेऊणं समप्पिओ

१. ला० 'ए पडिबद्धो ॥ २. ला० कुंभकारावाहं ॥ ३. ला० संबलंगिण्ह ॥ ४. ला० तेणं विभं ॥ ५. ला० पट्टिया ॥ ६. ला० भडवुक्कारवट्ठो ॥ ७. ला० 'चारं व' ॥ ८. ला० 'त्थ वि अट्ठालए ठवियं ॥ ९. ला० 'रूविंते' ॥ १०. सं० वा० सु० काहिसइ ॥ ११. ला० 'णं मम ॥ १२. ला० वि तहेव ॥ १३. ला० इयं रा' ॥ १४. ला० 'ण य स' ॥

सूरिपायाणं ।

सूरीहिं तओ भणिओ रेरे पाविट्ट ! दुट्ट ! निळज्ज ! । अइणज्जकज्जउज्जमसज्ज ! महारज्जपब्भट्ट ! ॥४०॥
जमणेच्छंतीए साहुणीइ विद्धंसणं कयं तुमए । न य मणिओ य संघो, तेणऽम्हेहिं इमं विहियं ॥४१॥
महमोहमोहियमई जो सीलं साहुणीइ भंजेइ । जिणधम्मबोहिलाभस्स सो नरो देइ मूलणिं ॥४२॥
निण्णट्टबोहिलाभो भमिहिसि नूणं तुमं पि संसारे । रे ! णंतदुक्खपउरे किंच इहं चेव जं जम्मे ॥४३॥
पत्तो बंधण-ताडण-अवमाणणजणियविविहदुक्खाइं । संघावमाणणातरुवरस्स कुसुमोगगो एसो ॥४४॥
नरय-तिरिक्ख-कुमाणुस-कुदेवगइगमणसंकडावडिओ ।
जमणंतभवे भमिहिसि तं पुण विरसं फलं होही ॥४५॥

जो अवमण्णइ संघं पावो थेवं पि माणमयलित्तो । सो अप्पाणं बोलइ दुक्खमहासागरे भीमे ॥४६॥
सिरिसमणसंघआसायणाइ पावेति जं दुहं जीवा । तं साहिउं समत्थो जइ पर भगवं जिणो होइ ॥४७॥
जेण महंतं पावं कयं तए णेय मणिओ संघो । संभासस्साणरिहो अम्हाणं जइ वि रे ! तह वि ॥४८॥
बहुपावभरकंतं दुहजलणकरालजालमालाहिं । आलिंगियं तुमं पासिऊण करुणाइ पुण भणिमो ॥४९॥
निंदण-गरिहणपुव्वं आलोएऊण कुणसु पच्छित्तं । दुक्करतवचरणरओ जेणऽज्ज वि तरहि दुहजलहिं ॥५०॥
इय करुणाए सूरीहिं जंपियं सुणिय गद्दभिळ्ळो सो । अइसंकिलिड्डकम्मो गाढयरं दूमिओ चित्ते ॥५१॥
दूमियचित्तं णाउं कालयसूरीहिं सो तओ भणिओ । 'मुक्को सि एगवारं संपइ रे ! जाहि णिव्विसओ' ॥५२॥
तं सूरिवयणमायणिऊण पुहईसरेहिं सो तेहिं । देसाओं धाडिऊणं मुक्को दुहिओ परिब्भमइ ॥५३॥
भमिउं मओ समाणो चउगइसंसारसायरे भीमे । भमिही अणंतकालं तक्कम्मविवागदोसेणं ॥५४॥
तो सूरिपज्जुवासयसाहिं रायाहिरायमह काउं । भुंजंति रज्जसोक्खं सामंतपयट्ठिया सेसा ॥५५॥
सगकूलाओ जेणं समागया तेण ते सगा जाया । एवं सगराईणं एसो वंसो समुप्पण्णो ॥५६॥
जिणसासणोण्णइपराण ताण कालो सुहेण परिगलइ । सूरिपयउमगब्भे छप्पयलीलं कुणंताणं ॥५७॥
कालंतरेण केणइ उप्पाडेत्ता सगाण तं वंसं । जाओ मालवराया णामेणं विक्कमाइच्चो ॥५८॥
पुहईए एगवीरो विक्कमअकंतभूरिणरणाहो । अच्छरियचरियआयरणपत्तवरकित्तिपब्भारो ॥५९॥
नियसत्ताराहियजक्खरायसंपत्तवरतियवसेण । अविगणियसत्तु-मित्तं जेण पयट्ठिवियं दाणं ॥६०॥
पयराविओ धराए रिणपरिहीणं जणं विहेऊण । गुरुरित्थवियरणाओ णियओ संवच्छरो जेण ॥६१॥

१. सं० वा० सु० किंचि इ ॥ २. ला० 'त्तो ताडणं-बंधण अ' ॥ ३. ला० 'पइडि' ॥ ४. सं० वा० सु० 'णययप' ॥ ५. सं० वा० सु० केणय उ ॥ ६. सं० वा० सु० 'ए ऊ(उ)ण' ॥ ७. ला० 'ययो स' ॥

तस्स वि वंसं उप्पाडिऊण जाओ पुणो वि सगराया । उज्जेणिपुरवरीए पयपंकयपणयसामंतो ॥६२॥
 पणतीसे वाससए विक्कमसंवच्छराओ वोलीणे । परिवत्तिऊण ठविओ जेणं संवच्छरो णियगो ॥६३॥
 सगकालजाणणत्थं एयं पासंगियं समक्खायं । मूलकहासंबद्धं पगयं चिय भण्णए इण्हिं ॥६४॥
 कालयसूरीहिं तओ सा भगिणी संजमे पुणो ठविया । आलोइयपडिकंतो सूरी वि सयं गणं वहइ ॥६५॥

इओ य अत्थि भरुयच्छं णामं णगरं । तत्थ य कालयसूरिभाइणेज्जा बलमेत्त-भाणुमेत्ता भायरो
 राय-जुवरायाणो । तेसिं च भगिणी भाणुसिरी । तीसे पुत्तो बलभाणू णाम कुमारो । तओ तेहिं
 बलमित्तभाणुमित्तेहिं परकूलाओ समागए सूरिणो सोऊण पेसिओ मइसागरो णाम णियमहंतओ उज्जे-
 णिं । तेण य तत्थ गंतूण सगराइणो महाणिब्वंधेण विसज्जावेऊण वंदिऊण य विण्णत्ता सूरिणो, अवि य—

‘बलमेत्त-भाणुमेत्ता भयवं ! भूलुलियभाल-कर-जाणू ।

भत्तिभरनिब्भरंगा तुहपयकमलं पणिवयंति ॥ ६६॥

करकमलमउलमउलं मोलिम्मि ठवित्तु विण्णवंति जहा ।

तुह विरहतरणिखरकिरणणियरपसरेण सयरहं ॥ ६७॥

संतावियाइं धणियं जओ सरीराइं अम्ह ता सामि ! । नियदंसणमेहोब्भवदेसणणीरेण निव्ववसु ॥६८॥

किं बहुणा ?, करुणारससमुद्द ! अम्हाणमुवरि कारुणं । काऊणं पावहरं वंदावसु निययपयकमलं ॥६९॥

तओ कालयसूरिणो सगरणो सरूवं साहिऊण गया । भरुयच्छे । पवेसिया य महया
 विच्छडेणं । वंदिया भावसारं बलमेत्त-भाणुमेत्त-भाणुसिरि-बलभाणूहिं । समादत्ता य भगवया
 भवणिव्वेयजणणी धम्मदेसणा, अवि य—

तुसरासि व्व असारो संसारो, विज्जुलयाओ व चंचलाओ कमलाओ,
 उप्पहगामुयवोलावणयसामण्णं तारुणं, दारुणदुहदाइरोगा भोगोवभोगा, माणस-सारीरियखेयनिब्वंधणं
 धणं, महासोगाइरोगा इड्डजणसंपओगा, णिरंतसरिसडणसीलाणि आउयदलाणि । ता एवं ठिए भो
 भव्वा ! लद्धूण कुलाइजुत्तं ! माणुसत्तं निद्लेयव्वो पमाओ, कायव्वो सव्वसंगचाओ, वंदणीया
 देवाहिदेवा, कायव्वो सुगुरुचलणसेवा, दायव्वं सुपत्तेसु दाणं, ण कायव्वं णियाणं, अणुगुणेयव्वो
 पंचणमोक्कारो, कायव्वो जिणाययणेषु पूयासक्कारो, भावियव्वो दुवालस भावणाओ, रक्खेयव्वो
 पवयणोहावणाओ, दायव्वो सुगुरुपुरओ णियदुच्चरियालोयणा, कायव्वो सव्वसत्तखामणा,
 पडिवज्जेयव्वं पायच्छित्तं, न धारियव्वमसुहचित्तं, अणुट्टियव्वणि जहासत्तीए तवच्चरणाणि,
 दमियव्वणि दुदंताणि इंदियाणि, झाएयव्वं सुहज्झाणं वोच्छेज्जे जेण संसारसंताणं । किं बहुणा?,

१. ला० °छरस्स वो° ॥ २. ला० सगं ॥ ३. सं० वा० सु० °भायेण° ॥ ४. ला० °ण्णविति° ॥ ५.
 ला० °या य भा° ॥ ६. सं० वा० सु० पस्सेडण° ॥ ७. ला० मणुयत्तं ॥ ८. सं० वा० सु० वंदेयव्वा दे° ॥ ९.
 ला० °चरण° ॥ १०. ला० दुदंतकरणाणि, झा° ॥

एवमायरंताणं तुम्हाणं भवेस्सइ अचिरेणेव निव्वाणं ति ।

इय सूरिवयणमायणिऊण संजायचरणपरिणामो । सो बलभाणू कुमरो रोमंचोच्चइयसव्वंगो ॥७०॥
करकोरयं विहेउं सिरम्मि अह भणइ एरिसं वयणं । 'संसारचारगाओ णित्थारहि णाह ! मं दुहियं ॥७१॥
भवभयभीयस्स महं उत्तमणस्सेविया इमा सामि ! । दिज्जउ जिणेंददिक्खा जइ जोगो मा चिरावेह' ॥७२॥

इय कुमरणिच्छयं जाणिऊण सूरीहिं तक्खणं चेव ।

आपुच्छिऊण सयणे विहिणा अह दिक्खिओ एसो ॥७३॥

रायाई परिसा वि य नमिउं सूरिं गया नियं ठाणं । मुणिणो वि णिययसद्धम्मकम्मकरणोज्जया जाया ॥७४॥
एवं चिय पंडियहं मुणिवइपयपंकयं णमंतेते । णरणाहे दड्डूणं भत्तिब्भरणिब्भरे धणियं ॥७५॥
सव्वो वि णगरलोगो जाओ जिणधम्मभाविओ अहियं । सच्चमिणं आहाणं 'जह राया तह पया होइ' ॥७६॥

तं च तारिसं पुरक्खोहमवलोइऊण अच्चंतदूमियचित्तेणं रायपुरओ सूरिसमक्खं चेव भणियं
राय-पुरोहिण्ण जहा 'देव ! किमेएहिं पासंडिएहिं तईबज्झायरणणिरएहिं असुइएहिं ?' ति । एवं च
वयंतो सो सूरीहिं अणेगोववत्तीहिं जाहे णिरुत्तरो कओ ताहे धुत्तिमाए अणुलोमवयणेहिं राइणो
विप्परिणामेइ । अवि य—

'एए महातवस्सी नीसेसगुणालया महासत्ता । सुर-असुर-मणुयमहिया गोरव्वा तिहुयणस्सावि ॥७७॥
ता देव ! जेण एए पहेण गच्छंति तेण तुम्हाणं । जुत्तं न होइ गमणं अक्कमणं तप्पयाण जओ ॥७८॥
गुरुपयअक्कमणेणं महई आसायणा जओ होइ । दुगइकारणभूया अओ विसज्जेह पहु ! गुरुणो' ॥७९॥

तओ विप्परिणयचित्तेहिं भणियं राईहिं 'सच्चमेयं, परं कहां विसज्जिज्जंति ?' । तओ
पुरोहिण्ण भणियं 'देव ! कीरउ सव्वत्थ णगरे अणेसणा, तीए य कयाए असुज्जंते भत्त-पाणे सयमेव
विहरिस्संति' । तओ राईहिं भणियं 'एवं करेहि' । तओ परूवियं सव्वत्थ णगरे पुरोहिण्णं जहा
'एवं एवं च आहाकम्माइणा पयारेण साहूण देज्जमाणं महाफलं भवइ' ।

तओ लोगो तहेव काउमारद्धो । तं च तारिसमउव्वकरणं दड्डूण साहियं साहूहिं गुरूणं । ते
वि सम्मं वियाणेऊण रायाभिप्पायं अपज्जोसविए चेव गया मरहट्टयविसयालंकारभूयं पड्डाणं णाम
णगरं । तत्थ य सूरीहिं जाणावियं जहा 'न ताव पज्जोसवेयव्वं जाव वयं णागया' । तत्थ उण
परमसावगो सायवाहणो णाम राया । सो य सूरीणो समागच्छंते णाऊण जलयागमुकंठियसिहि व्व
हरिसणिब्भरो जाओ । कमेण य समागया तत्थ सूरीणो । तओ साइवाहणराया सूरिं समागयं

१. सं० वा० सु० अचिरेण निं ॥ २. सं० वा० सु० पयदिं ॥ ३. ला० अच्चंतं दू ॥ ४. सं० वा०
सु० रायाणो ॥ ५. ला० हवइ ॥ ६. सं० वा० सु० 'जिस्संति ॥ ७. ला० च अहोक् ॥ ८. सं० वा० सु० 'ण
देज्जमाणं साहूण म' ॥

णाऊण सपरियणो चउव्विहसिरिसमणसंघसमणिओ णिगओ अभिमुहं । वंदिया य भावसारं
सूरिणो । अवि य—

भवियकमलावबोहय ! मोहमहातिमिरपसरभरसूर ! । दप्पिड्डुड्डपरवाइकुंभिणिदलणबलसिंह ! ॥८०॥

पणयणरविसरपहुमउलिमउडमणिकिरणरंजियसुपाय ! ।

जिणसासणोण्णईपर ! कलिकालकलंकमलसलिल ! ॥८१॥

कालाणुरूवपरिवट्टमाणसुयजलहिपारसंपत्त ! । सप्पंतदप्पकंदप्पसप्पकप्परणपरपरसु ! ॥८२॥

इय नीसेसगुणालय ! करुणापर ! परमचरण ! रणरहिय ! ।

सुगहियनाम ! नरुत्तम ! तुज्झ णमो होउ मुणिणाह ! ॥८३॥

एवं च पणयस्स णरवइणो दिण्णो भगवया धम्मलाभो । अवि य—

कलिकालकलिलमलबहलपडलपक्खाल्लणेगसलिलोहो ।

सयलदुहाचलकुलदलणजलियबलसूयणत्थसमो ॥८४॥

चिंतामणि-कप्पट्टम-कामियघड-कामधेणुमाईण । जियउज्जियमाहप्पो भवणवोत्तारणतरंडो ॥८५॥

सग्गा-ऽपवणदुग्गमनरगऽगलभंगमोणरसमाणो । तुह होउ धम्मलाहो नरेंद ! जिण-गणहरोदिट्ठो ॥८६॥

एवं च महाविच्छट्ठेणं पविट्ठा णगरे सूरिणो । वंदियाइं समत्थचेइयाइं । आवासिया य जइ-
जणजोगासु अहाफासुयासु वसहीसु ।

तओ पइदिणं सिरिसमणसंघेण बहुमण्णेज्जमाणानं सायवाहणरदिणं सम्माणेज्जमाणानं
विउसवगेण पज्जुवासेज्जमाणानं णीसेसजणेण वंदेज्जमाणानं भवियकमलपडिबोहणपरणं समागओ
कमसो पज्जोसणासमओ ।

तत्थ य मरहट्टयदेसे भद्वयसुद्धपंचमीए इंदस्स जत्ता भवइ । तओ विण्णत्ता सूरिणो राइणा
जहा 'भयवं ! पज्जोसणादिवसे लोयाणुवत्तीए इंदो अणुगंतव्वो होही, तेण कारणेण वाउलत्तणाओ
चेइयंपूया-ण्हवणाइयं काउं न पहुप्पामो, ता महापसायं काऊण करेह छट्ठीए पज्जोसवणं' । तओ
भगवया भणियं—

“अवि चलइ मेरुचूला, सूरु वा उगमेज्ज अवरए ।

न य पंचमीए रयणिं पज्जोसवणा अइक्कमइ ॥२१३॥

१. ला० लसीह ! ॥ २. सं० वा० सु० 'खहु ॥ ३. ला० 'णायर ! ॥ ४. ला० 'लणोक्कस' ॥ ५.
ला० जिणउज्जिय' ॥ ६. ला० साइवा' ॥ ७. ला० हणं कुणं ताणं स' ॥ ८. ला० पज्जोवस(सव)णास' ॥ ९.
ला० 'सवणा' ॥ १०. ला० इयाणं पू' ॥

जओ भणियमागमे—

जहा णं भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवेइ,
तहा णं गणहरा वि । जहा णं गणहरा तथा णं गणहरसीसा वि । जहा णं गणहरसीसा तथा
णं अम्ह गुरुणो वि । जहा णं अम्ह गुरुणो तथा णं अम्हे वि वासावासं पज्जोसवेमो, नो
तं रयणिमइक्कमिज्जा” ।

राइणा भणियं ‘जइ एवं तो चउत्थीएहवइ ?’ । सूरीहिं भणियं ‘एवं होउ गत्थित्थ दोसो,
जओ भणियमागमे-अरेणावि पज्जोसवेयव्वमिति । तओ हरिसवसुप्फुल्लोयणेण जंपियं राइणा
‘भगवं ! महापसाओ, महंतो अम्हाणमणुगाहो, जओ मम अंतेउरियाणं पव्वोववासपारणए साहूणं
उत्तरपारणयं भवेस्सइ’ । तओ गिहे गंतूण समाइट्ठाओ अंतेउरियाओ ‘तुम्हाणममावासाए उववासो
होही, पारणए य साहूणं उत्तरपारणयं भवेस्सइ, ता तत्थ अहापवत्तेहिं भत्त-पाणेहिं साहुणो
पडिलाहेह’ । जओ भणियमागमे—

पहसंत-गिलाणेसु य आगमगाहीसु तह य कयलोए ।

उत्तरवारणगम्मी दाणं तु बहुफ(प्फ)लं होइ ॥२१४॥

पज्जोसवणाए अट्ठमं ति काऊण पाडिवए उत्तरपारणयं भवइ । तं च दट्ठण तम्मि दिणे लोगे
वि साहूणं तहेव पूयं काउमाढत्तो । तप्पभिइं मरहट्ठविसए समणपूयालओ णाम छणो पवत्तो । एवं
च कारणेण कालगायरिएहिं चउत्थीए पज्जोसवणं पवत्तियं समत्थसंघेण य अणुमन्नियं ।४ तथा
चावाचि—

कारणिया य चउत्थी चेइय-जइसाहुवासणनिमित्तं ।

उद्दिसिय सालवाहण पयट्टिया कालियऽज्जेण ॥२१५॥

स्वत्वेण य पक्खियाईणि वि चउत्थीए आयरियाणि, अण्णहा आगमोत्ताणि पुण्णिमाए
त्ति । एवंविहगुणजुत्ताण वि कालयसूरीणं कालंतरेण विहरमाणं कम्मोदयवसेणं जाया दुव्विणीया
सीसा । तओ चोइया सूरीहिं । तथा वि ण किंचि पडिबज्जंति । तओ पुणो वि भणिया जहा—

“भो भो महानुभावा ! उत्तमकुलसंभवा महापुरिसा ! इंदाईण वि दुलहं लद्धं सामण्णमकलंकं ।८७।
एवमविणीययाए गुरुआणाइक्कमं विहेऊण । दुक्करतवचरणमिणं मा कुणह गिरत्थयं वच्छ ! ।८८।

१. ला० न तं ॥ २. ला० °ए भगवओ (भवउ)सू ॥ ३. ला० °लाणम्मि य आगमगहणे य लोयकय दाणे ।
उत्तरपारणगम्मि य दाणं तु बहुफ(प्फ)लं भणियं ॥२१४॥४. <1>एतादृक्चिह्नान्तर्गतः पाठः मुद्रित पाठभेदे प्रत्यन्तरो-
पलब्धत्वेन निर्दिष्टः मुद्रिते प्रत्यन्तरगत वोपालभ्यते ॥ ५. स्वस्तिकद्विकान्तर्गतः पाठः प्रत्यन्तरे नास्तीति मुद्रिते निर्दिष्टम् ॥

यत उक्तमागमे—

छट्ट-ऽट्टम-दसम-दुवालसेहिँ मास-ऽद्धमासखवणेहिँ ।

अकरिंतो गुरुवयणं अणंतसंसारिओ होइ ॥२१६॥

गुरुआणाभंगाओ रणणे कट्टं तवं पि काऊण ।

तह वि हु पत्तो नरगं सो कूलयवालओ साहू ॥२१७॥

गुरुआणाइक्रमणे आयावेंतो करेइ जइ वि तवं ।

तह वि न पावइ मोक्खं पुव्वभवे दोवई चेव ॥२१८॥”

एवं पि भणिया ते ण मुंचंति दुव्विणीययं, ण करेंति गुरुवयणं, न विहिंति पडिवत्तिं, जंपंति उल्लंठवयणाइं, कुणंति सेच्छाए तवं, आयरंति णिययाभिप्पाएण सामायरिं । तओ गुरुणा चिंतियं-

‘तारिसा मम सीसा उ जारिसा गलिगद्दभा । गलिगद्दभे चइत्ता णं दढं गेण्हइ संजमं ॥८९॥

तथा—

छंदेण गओ छंदेण आगओ चिट्ठए य छंदेण ।

छंदे यं वट्टमाणो सीसो छंदेण मोत्तव्वो ॥२१९॥

ता परिहरामि एए दुव्विणीयसीसे” । तओ अण्णम्मि दिणे रयणीए पसुत्ताणं साहिओ सेज्जायरस्स परमत्थो जहा ‘अम्हे नियसिस्ससिस्साणं सागरचंदसूरीणं पासे वच्चामो, जइ कहवि आउट्ठा णिब्बंधेण पुच्छंति तओ बहु खरंठिऊण भेसिऊण य साहेज्जसु’ । ति भणिऊण णिगया । पत्ता य अणवरयसुहपयाणएहिं तत्थ, पविट्ठा निसीहियं काऊण । ‘थेरो को वि अज्जओ’ ति काऊण अवज्जाए,

अप्पुव्वं दट्ठणं अब्भुट्ठाणं तु होइ कायव्वं ।

साहुम्मि दिट्ठपुव्वे जहारिहं जस्स जं जोगं ॥२२०॥

इति सिद्धंतायारमसुमरेऊण न अब्भुट्ठिओ सागरचंदसूरीणा । वक्खाणसमत्तीए य णाणपरीसहमसहमाणेण पुच्छियं सागरचंदेण ‘अज्जया ! केरिसं मए वक्खाणियं ?’ । कालयसूरीहिं भणियं ‘सुंदरं’ । तओ पुणो वि भणियं सागरचंदसूरीणा ‘अज्जय ! पुच्छेहि किं पि’ । कालगसूरीहिं भणियं ‘जइ एवं तो वक्खाणेह अणिच्चयं’ । सागरचंदेण भणियं ‘अण्णं विसमपयत्थं

१. ला० °द्दहा ॥ २. ला० अ ॥ ३. ला० °यसिस्से ॥ ४. सं० वा० सु० °पयाणेहिं ॥ ५. सं० वा० सु० °च्छिया सा” ॥

वक्खाणावेसु' । तेण भणियं 'न विसमपयत्थमवगच्छामि' (ग्रन्थाग्रं ४०००) । तओ समाढत्तो वक्खाणेउं 'तत्ति (?त्तं) धम्मह किं न चित्तेह ?' इच्चाइ । अत्राऽन्तरे भणितं कालिकाचार्यैः 'नास्ति धर्मः प्रत्यक्षादिप्रमाणगोचरातिक्रान्तत्वात् खरविषाणवदिति । उक्तं च—

प्रत्यक्षेण ग्रहोऽर्थस्य निश्चितेन प्रशस्यते ।

तदभावेऽनुमानेन वचसा तद्ध्यतिक्रमः ॥२२१॥

न तु प्रत्यक्षादिना प्रमाणेनाऽसौ गृह्यत इत्यलं तद्विषययत्नेन' । 'अव्वो ! पियामहाणुकारी को वेस खडेक्करो मण्णमाणेण भणियं सागरचंदेण "तत्र यदुक्तं नाऽस्ति धर्मस्तत्र प्रतिज्ञापदयोर्विरोधं प्रकटमेव लक्षयामः' नाऽस्ति चेद् धर्म इति कथम् ?, धर्म इति चेद् नाऽस्तीति कथम् ? । अथ पौर्धर्म-स्याभ्युपगतत्वादेवमुच्यते तर्हि भवन्तं पृच्छामः परकीयोऽभ्युपगमो भवतः प्रमाणमप्रमाणं वा ? । यदि प्रमाणम्, सिद्धं नः साध्यम् । अथाऽप्रमाणं तर्हि स एव दोषः । यच्चोक्तं प्रत्यक्षादिप्रमाण-गोचरातिक्रान्तत्वात् तदप्यसद्, यतः कार्यद्वारेणाऽपि धर्मा-धर्मौ प्रत्यक्षेण गृह्येते इति । उक्तं च—

धर्माज्जन्म कुले शरीरपटुता सौभाग्यमायुर्धनं,

धर्मेणैव भवन्ति निर्मलयशो-विद्या-ऽर्थसम्पच्छ्रियः ।

कान्ताराच्च महाभयाच्च सततं धर्मः परित्रायते,

धर्मः सम्यगुपासितो भवति हि स्वर्गा-ऽपवर्गप्रदः ॥२२२॥

अन्यच्च—

नियरूवोहामियखयरराय-मयण व्व के वि दिसंति । मंगुलरूवा अण्णे पुरिसा गोमाउसारिच्छा ॥१०॥
परिमुणियासेससमत्थसत्थसुरमंतिविब्भमाके वि । अण्णाणतिमिराच्छण्णा अण्णे अंधव्व वियरंति ॥११॥
संपत्ततिवगगसुहा एगे दीसंति जणमणाणंदा । परिवज्जियपुरिसत्था उव्वियणेज्जा विसहर व्व ॥१२॥
धरियधवलायवत्ता बंदियणोग्घुट्टपयडमाहप्पा । वच्चंति गयारूढा, अण्णे धावंति सिं पुरओ ॥१३॥
पणइयणपूरियासा निम्मलजसभरियमहियलाभोगा । अण्णे उ कलंकेल्ला पोट्टं पि भरंति कह कह वि ॥१४॥
अणवरयं देंताण वि वड्डइ दव्वं सुयं व केसिंचि । अण्णेसिमदेताण वि घेप्पइ णरणाह-चोरेहिं ॥१५॥
इय धम्मा-ऽधम्मफेलं पच्चक्खं जेण दीसए साहु । मोत्तूणमहम्मं आयरेण धम्मं चिय करेसु ॥१६॥

इओ य ते दुट्ठसीसा पभाए आयरियमपेच्छमाणा इओ तओ गवेसणं कुणंता गया सेज्जायरसमीवं । पुच्छिओ य जहा 'सावय ! कहिं गुरुणो ?' । तेण भणियं 'तुब्भे चेव जाणह णियं

१. सं० वा० सु० तत्थि धम्मह (?) ॥ २. ला० 'द्वारेण प्रत्यक्षेण धर्मा-धर्मौ गृह्येते ॥ ३. ला० 'रनाहम्' ॥ ४. ला० एक्के ॥ ५. सं० वा० सु० 'लाइव' ॥ ६. ला० धाविंती ॥

गुरुं, किमहं वियाणामि?’ । तेहिं भणियं ‘मा एवं कहेहि, न तुज्झ अकहिऊण वच्चंति’ । तओ सिज्जायरेण भिउडिभासुरं वयणं काऊण भणिया “अरे रे दुड्डसेहा ! ण कुणह गुरुण आणं, चोइज्जंता वि न पडिबज्जह सारण-वारणाईणि, सारणाइविरहियस्स आयरियस्स महंतो दोसो । जओ भणियमागमे—

जह सरणमुवगयाणं जीवाण णिकित्ते सिरे जो उ ।

एवं पूरणियाणं आयरिओ असारओ गच्छे ॥२२३॥

जीहाए वि लिहंतो न भद्दओ सारणा जहिं णत्थि ।

डंडेण वि ताडंतो स भद्दओ सारणा जत्थ ॥२२४॥

सारणमाइविउत्तं गच्छं पि य गुणगणेण परिहीणं ।

परिवत्तणाइवगो चइज्ज इह सुत्तविहिणा उ ॥२२५॥

तुब्भे य दुव्विणीया ‘आणाए अवट्टमाण’त्ति काऊण परिचत्ता । ता पावा ! ओसरह मम दिट्ठीपहाओ, अण्णहा भणेस्सह—ण कहियं ति’ । तओ भीया सेज्जायरं खमावेत्ता भणंति । अवि य—

“दंसेहि एगवारं अम्ह गुरू जेण तं पसाएउं । आणाणिदेसपरा जावज्जीवाँइ वट्टामो ॥२७॥

किं बहुणा ? सूरीणं संपइ हियइच्छियं करेस्सामो ।

तो कुणसु दयं सावय ! साहेहि ‘कहिं गया गुरूणो ?’ ॥२८॥

तओ ‘सम्मं उवडिय’त्ति नाऊणं कहिय सब्भावं पेसिया तत्थ । गच्छंतं च साहुवंदं लोगो पुच्छइ ‘को एस वच्चइ ?’ । ते भणंति ‘कालगसूरी’ । सुयं च सवणपरंपराए सागरचंदेण सूरीणा पियामहागमणं । पुच्छिओ कालगसूरी ‘अज्ज ! किं मम पियामहो समागच्छइ ?’ । तेण भणियं ‘अम्हेहि वि समायणियं’ । तओ अण्णम्मि दिणे तयणुमंगलगं पत्तं साहुवंदं । अब्भुट्टियं सागरचंदेण । तेहिं भणियं ‘उवविसह तुब्भे, साहुणो चेव एए, गुरूणो उण पुरओ समागया’ । आयरिएण भणियं ‘ण को वि इत्थाऽऽगओ खडेकरमेगं मोत्तूण’ । इत्थंतरम्मि समागया वियारभूमीओ कालगसूरीणो । अब्भुट्टिया य पाहुणगसाहुवंदेण । सागरचंदेण भणियं ‘किमेयं ?’ । साहूहिं भणियं ‘भगवंतो कालगसूरीणो एए’ ति । तओ लज्जिएण अब्भुट्टिता खामिया, बहुं च झूरिउमाढत्तो । गुरूहिं भणियं ‘मा संतप्प, न तुज्झ भावदोसो, किंतु पमार्यदोसो ।

अण्णया य वालुयाए पत्थयं भरावेत्ता एगत्थ पुंजाविओ, पुणो वि भराविओ, पुणो वि

१. ला० एवं सारणियाणं ॥ २. सं० वा० सु० ‘विहणाओ ॥ ३. सं० वा० सु० ‘साहेउं ॥ ४. ‘वाय चिट्टामो ॥ ५. सं० वा० सु० साहेह क’ ॥ ६. ला० ‘चंदसू’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘अम्हेहि समा’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘यस्स । अ’ ॥

पुंजाविओ। एवं च भरिओव्विरेयणं कुणंतस्स सेसीहूओ पत्थओ । तओ पुच्छिओ गुरूहिं जहा
‘बुज्झियं किंचि ?’ । तेण भणियं ‘ण किंचि’ । गुरूहिं भणियं “जहेस वालुयापत्थओ पडिपुण्णो
तहा सुहम्मसामिस्स पडिपुण्णं सुयनाणं साइसयं च, तयविक्खाए जंबूसामिस्स किंचूणं अप्पाइसयं
च, तत्तो वि पभवस्स अप्पतरमप्पतराइसयं च जओ छट्ठाणगया ते वि भगवंतो सुव्वंति । एवं च
कमसो हीयमाणं हीयमाणं जाव मह सयासाओ तुह गुरूणो अइहीणं, तस्स वि सयासाओ तुह
हीणतरं ति । किंच पाएण पणट्ठाइसयं अप्पं च दूसमाणुभावाओ सुयं, ता मा एवंविहेण वि सुएण
गव्वं उव्वहसु । भणियं च-

आसव्वण्णुमयाओ तरतमजोगेण हुंति मइविभवा ।

मा वहउ को वि गव्वं ‘अहमेक्को पंडिओ एत्थ’ ॥२२६॥

इय अच्छेरयचरिओ गामा-ऽऽगर-नगरमंडियं वसुहं । आणावडिच्छबहुसिस्सपरिवुडो विहरई भगवं १९
अह अण्णयासुरिंदो भासुरबुंदी पलंबवणमालो । हार-ऽद्धहार-तिसरय-पालंबोच्छइयवच्छयलो ॥१००॥
वरकडय-तुडियथंभियभुयाजुगो कुंडलुल्लिहियगंडो । वररयणकरुक्कडकिरीडरेहंतिसरभागो ॥१०१॥
किं बहुणा ? सिंगारियसयलंगो विमलवत्थपरिहाणो । सोधम्मसुरसभाए तिहं परिमाण मज्झम्मि १०२
सत्तहं अणियाणं अणियाहिर्वईण तह य सत्तहं । तायत्तीसयअंगाभिरक्खसामाणियसुराणं ॥१०३॥
सोहम्मनिवासीणं अण्णसिं लोगपालमाईण । सुरदेवीणं मज्झे सक्को सीहासणवरम्मि ॥१०४॥
उवविंडो ललमाणो वरिड्ढितियसाहिवत्तरिद्धीए । आलोइय(?यइ) लोगद्धं विउलेणं ओहिणाणेणं ॥१०५॥
तो पेच्छइ सीमंधरसामिजिणं समवसरणमज्झत्थं । कुणमाणं धम्मकहं पुव्वविदेहम्मि परिसाए ॥१०६॥
उट्ठितु तओ सहसा तत्थ ठिओ चेव वंदई भगवं । सुरणायगरिद्धीए तओ गओ सामिमूलम्मि ॥१०७॥
वंदितु सए ठाणे उवविसिउं जा सुणेइ जिणवयणं । ता पत्थावेण जिणो साहइ जीवे निगोयक्खे ॥१०८॥
तं सोऊण सुरिंदो विम्हयउप्फुल्ललोयणो एवं । सिरकयकयंजलिउडो जंपइ परमेण विणएणं ॥१०९॥
‘भगवं ! भारहवासे इय सुहुमनिगोयवण्णणं काउं । किं मुणइ कौइ संपइ निरइसये दूसमाकाले ?’ ॥११०॥

तो भणइ जिणो ‘सुरवइ ! कालगसूरी णिगोयवक्खाणं ।

भरहम्मि मुणइ अज्ज वि जह वक्खायं मए तुम्ह’ ॥१११॥

तं सोउं वज्जहरो कोऊहल्लेण इत्थ आगंतुं । काउं बंभणरूवं वंदेत्ता पुच्छई सूरिं ॥११२॥

‘भगवं ! णिगोयजीवा पण्णत्ता जे जिणेहिं समयम्मि । ते वक्खाणह मज्झं अईव कोऊहलं जम्हा’ ॥११३॥

१. ला० ‘लुल्लहि’ ॥ २. सं० वा० सु० वररयणकरुक्कडकिरीड ॥ ३. ला० ‘ण्णेसि वि लो’ ॥ ४.
ला० ता ॥ ५. ला० को वि ॥

तो भणइ मुणिवरेंदो जलहरगंभीरमहुरणिगोसो । ‘जइ कोउगं’ महंतं सुणसु महाभाग ! उवउत्तो । ११४।
गोला य असंखेज्जासंखनिगोओ य गोलओ भणिओ । एक्केक्कम्मि णिगोए अणंतजीवा मुणेयव्वा’ । ११५।
इच्चाइ वित्थरेणं वक्खाए सूरिणा सहस्सक्खो । सविसेसणाणजाणणणिमित्तमह पुच्छए पुण वि । ११६।

“भगवं ! अणासगमहं काउं इच्छामि वुड्ढभावाओ ।

ता ‘मह केत्तियमाउं ?’ साहेहि जहड्डियं णाउं” । ११७।

तो सुयणाणेण गुरू उवउत्ता जाव ताव वड्ढंति । दिवसा पक्खा मासा वासा वासस्सया पलिया । ११८।

अयरौ उ दुण्णि तस्सा-ऽऽउमाणमवलोइऊण तो सूरी ।

सविसेसुवओगाओ जाणइ ‘वज्जाउहो एसो’ । ११९।

‘इंदो भवं’ ति सूरीहिं जंपिए ललियकुंडलाहरणो । जाओ णियरूवेणं पुरंदरो तक्खणं चेव । १२०।

भूलुलियभाल-करयल-जाणू रोमंचकंचुइज्जंतो । भत्तिभरणिभ्रंगो पणमइ सूरीण पयकमलं । १२१।

“अइसंकिलिड्डूसमकाले वितए जिणागमो जेण ।

धरिओ गुणगणभूसिय ! तुज्झ णमो होउ मुणिणाह ! । १२२।

णिरइसए वि हु काले णाणं विप्फुरइ निम्मलं जस्स ।

विम्हावियत्तियलोकं तस्स णमो होउ तुह सामि ! । १२३।

जेणोण्णई तए पवयणस्स संघस्स कारणे विहिया । अच्चब्भुयचरिएणं पयपउमं तस्स तुह नमिमो” । १२४।

इय थोऊण सुरिंदो सुमरंतो सूरिनिम्मलगुणोहं । आयासेणुप्पइउं पत्तो सोहम्मकप्पम्मि । १२५।

सूरी वि य कालेणं जाणेत्ता णिययआउपरिमाणं । संलेहणं विहेउं अणसणविहिणा दिवं पत्तो । १२६।

[कालकाचार्यकथानकं समाप्तम् । २२.]

इति श्लोकार्थः । ६१।

यद्येवं न किमप्यसौ विशिष्टप्रयोजनं साधयिष्यत्यल्पत्वाद् निरतिशयत्वाच्च इत्यारेकापनोदार्थं
श्लोकमाह—

पयमेगं पि एयस्स भवणिव्वाहयं भवे ।

इत्तोऽणंता जओ सिद्धा सुव्वंते जिणसासणे । ६२।

‘पदं’ वाक्यम्, ‘एकमपि’ अद्वितीयमपि, ‘एतस्य’ आगमस्य, ‘भवनिर्वाहकं’ संसार-

१. ला० “जा, असंखणिगोयगो” ॥ २. ला० “रा वि दोण्णि” ॥ ३. ला० पइक्” ॥ ४. ला०
“यतेलोकं” ॥ ५. ला० पयमेक्कं पि०। ता० पयं एक्कं पि ॥ ६. ला० एत्तो० ता० तत्तो ॥

निस्तारकम्, “भवे”ति भवति=जायते, रौहिणेयकादीनामिव । हेतुमाह ‘इतो’ति अतः अस्मा-
दागमादिति सम्बध्यते । ‘अनन्ताः’ सङ्ख्यातीताः, ‘यतः’ यस्मात्, ‘सिद्धाः’ क्षीणनिःशेषकर्माशाः
प्राणिन इति गम्यते, ‘श्रूयन्ते’ समाकर्ण्यन्ते, ‘जिनशासने’ अर्हद्दर्शने । उक्तं च-

एकमपि तु जिनवचनाद्यस्मान्निर्वाहकं पदं भवति ।

श्रूयन्ते चानन्ताः सामायिकमात्रपदसिद्धाः ॥२२७॥

इति श्लोकाक्षरार्थः ॥६२॥ भावार्थस्तु रौहिणेयककथानकादवसेयस्तच्चेदम्—

[२३. रौहिणेयककथानकम्]

अत्थित्थ जंबुदीवे भारहवासस्स मज्झखंडमि । जणवयगुणाण ठाणं णामेणं जणवओ मगहा ॥१॥
तत्थऽत्थि सयलतियलोयपायडं तियसणयरसंकासं । रम्मत्तणमाईहिं रायगिहं णाम वरणगरं ॥२॥
तत्थ निहयारिवगो सिरिवीरजिणिंदपयकमलभसलो । उत्तमसम्मत्तधरो णामेणं सेणिओ राया ॥३॥
णिजियरइरूवाओ दुण्णि पहाणाओ तस्स भज्जाओ । णामेण सुणंदा-चेल्लुणाओ गुणरयणरासीओ ॥४॥
तत्थऽत्थि सुणंदाए सुबुद्धिमाहप्पविजियतियसगुरू । णीसेसगुणणिहाणं अभयकुमारो ति णाम सुओ
इओ य तम्मि चेव णयरे अत्थि वेभारगिण्णूढगुहागिहगब्भकयणिवासो लोहखुरओ णाम
चोरो । जो य,

रुद्धो खुद्धो कूरो भीमो साहस्सिओ पयंडो य । णिच्चजियघायणरओ लोहियपाणी महापावो ॥६॥
महु-मज्ज-मंससतो परमहिलारूयवसणगयचित्तो । वीसत्थमित्तदुहगो परवंचणबहुपवंचेल्लो ॥७॥
रायगिहे नगरम्मिं बहुऊसव-पसव-विद्धि-वसणेसु । मत्त-प्पमत्त-वक्खित्त-सुत्त-पवसंतसत्ताणं ॥८॥
लहिऊणं छिद्दाइं हरइ धणं पाणिणो विणासेउं । चोरिक्कयाएँ चेव य अणवरयं कप्पए वित्तिं ॥९॥

तस्स य रोहिणिणामेण भारिया तीए कुच्छिसंभूओ ।

पिउणो गुणेहिं तुल्लो अत्थि सुओ णाम रोहिणिओ ॥१०॥

अह अण्णया कयाई संपत्ते मरणकालसमयम्मि । लोहखुरेणं भणिओ णियपुत्तो एरिसं वयणं ॥११॥

‘जइ कुणसि मज्झ वयणं उवएसं किंपि तो पयच्छामि’ ।

पुत्तेण वि पडिभणिओ ‘भण ताय ! जमभिमयं तुज्झ ॥१२॥

जम्हा हु जम्मदाई गुरू य देवो ममं तुमं ताय ! । तुम्हाएसमकाउं कस्सऽण्णस्सा करेस्सामि ?’ ॥१३॥

१. सं० वा० सु० ‘कं भवति ॥ २. ला० एतो ति ॥ ३. ला० ‘लतइलो’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘रिगुहागृढगभ ॥
५. सं० वा० सु० ‘विद्धिसदणेसु ॥ ६. ला० तुम्हा ॥ ७. ला० ‘वो तुमं ममं ता’ ॥

तव्वयणं सोऊणं रंजियचित्तो पयंपई जणगो । 'जइ एवं ता वयणं ण हु सोयव्वं जिणिंदस्स ॥१४॥
 जो गुणसिलएसुर-नरपहुपणयपओ पयासई धम्मं । तियसकयसमवसरणम्मि संठिओ वीरणामोत्ति ॥१५॥
 सेसं जं तुह रोयइ कुणसु तयं वच्छ ! निव्वियप्पेण' । इय उवएसं दाउं पंचत्तं पाविओ एसो ॥१६॥
 इयरो वि मयगकिच्चं काउं जणयस्स चोरिय कुणइ । निद्धंसपरिणामो कुव्वंतो पिउसमाएसं ॥१७॥

इत्थंतरम्मि य नर-विज्जाहरा-ऽसुरा-ऽमरविसरपहुपणमिज्जमाणपायपउमजुगलो कणयमयप-
 उमपंतिगब्भ-दुल्ललियपयप्पयारो चोदससमणसहस्ससंपरिवुडो तित्थयरिद्धीए दिप्पंतो गामा-ऽऽगर-
 णगराइसु विहरमाणो समागओ भगवं महावीरो । विहियं तियसेहिं समवसरणं । कहिउं च पवत्तो
 सजलजलहरांभीराए जोयणणीहारिणीए भारईए धम्मदेसणं ।

इत्थंतरम्मि य सो तक्करो नियगेहाओ निगओ रायगिहं पइ पड्डिओ । अंतराले य
 समवसरणंपच्चासण्णे समागएण चिंतियं 'हंत ! जइ एएण मग्गेण वच्चारिं तओ भगवओ
 वयणसवणेण जणयआणाए भंगो भवइ, न य अण्णो मग्गे अत्थि, ता कहमेस वग्घ-दुत्तडीणाओ
 णित्थरेयव्वो ?' । त्ति परिभावेमाणस्स बुद्धी जाया जहा 'उभयकण्णे करसाहाहिं ठइऊण
 दुयमवक्कमामि' त्ति । तओ तहेव काऊणं गओ रायगिहं । तत्थ य ईसरगेहेसुं खत्तखणणाइणा दव्वं
 गेणहेऊण वच्चइ णियट्ठाणं ।

एवं दिणे दिणे कुणमाणस्स अण्णम्मि दिणे समवसरणऽब्भासमागयस्स भग्गे चरणतले
 कंटगो, सिग्घगङ्गाणं खुत्तो गाढं, न चएइ अणवणीएण गुंतुं । तओ 'न अण्णा गइ' त्ति एगसवणाओ
 अंगुलीमवणेऊण जाव कंटयं उद्धरेइ ताव देवसरूवं वक्खाणंतस्स समणस्स भगवओ पविट्ठं तस्स
 कण्णे अणमिसणयणा अमिलीणमल्लदामा नीरयसरीरा भूमिअसंफासिणो देव' त्ति वयणं । तओ
 'हा ! पभूयं निसुयं' त्ति झंड त्ति कंटयं उद्धरेऊण तहेव कण्णं मुदिऊण सिग्घमवक्कंतो । तओ
 पइदिणं मुसिज्जमाणं णगरमवलोइऊण गया णगरमहंतया राइणो समीवे । ढोइऊण उवायणं
 कयसम्माणा य विण्णविउमाढत्ता, अवि य—

‘तुह देव ! भुयापंजरगयाण अम्हाणं किंचि णत्थि भयं ।

किंतु मुसिज्जइ णगरं चोरेहिं सामिवियलं व ॥१८॥

ता देव ! तहा किज्जउ जह रक्खा होइ सयलणगरस्स । किं बहुणा भणिएणं ?, संपइ देवो पमाणं ति' ॥१९॥

तं च सोऊण दट्ठोड्डिभिउडि भासुरेण भणिओ दंडवासिओ राइणा जहा रे रे ! किमेवं णगरं

१. ला० तो ॥ २. ला० 'रिउं कु' ॥ ३. सं० वा० सु० 'हुणमेज्ज' ॥ ४. ला० 'ब्भइदुल्ल' ॥ ५. ला०
 विरइयं ॥ ६. ला० 'लयणं' ॥ ७. ला० 'म्मस्स दे' ॥ ८. ला० 'मि तो भ' ॥ ९. ला० 'ण य ग' ॥ १०. सं०
 वा० सु० 'सु खण' ॥ ११. ला० 'त्तणओ ण खु' ॥ १२. ला० वक्खाणं समण' ॥ १३. ला० 'लायम' ॥ १४.
 ला० झडि त्ति ॥ १५. ला० 'व य क' ॥ १६. ला० 'ण नत्थि किंचि भ' ॥ १७. ला० हा अरे रे ॥

मुसेज्जइ ?' । तेण भणियं जहा 'देव ! किमहं करोमि जओ दिट्ठो वि सो चोरो ण घेतुं पारियइ, विज्जुक्खित्तकरणेण गेहाओ गेहं गंतूण पागाराओ णिग्गच्छइ, वयं तु मग्गेण जाव तयणुमग्गेण लग्गामो ताव सो न नज्जइ 'कत्थइगओ ?' ति, सुव्वइ य सवणपरंपराए जह अत्थि महाचोरो रोहिणीओ णाम, न य अम्हेहिं दिट्ठो णाओ वा, ता देव ! अण्णस्स कस्सइ सम्पेहि दंडवासियत्तणं, अहं पुण अणेगोवाएहिं पि ण सक्केमि तं चोरं घेतुं' ति । तओ निरूवियं अभयकुमारस्स वयणं राइणा । अभयकुमारेण वि सिक्खविओ दंडवासिओ जहा 'दिवसओ चाउरंगिणीसेणं पउणीकाऊण तं च चोरं णगरे पविट्ठं णाउं बाहिं सव्वणगरं चाउरंगबलेण वेढित्ता अप्पमत्तेहिं होयव्वं, जोहे तज्जिऊण अब्भंतरे हक्केयव्वो, तओ पच्छा जया विज्जुक्खित्तकरणं दाउं भूमीए निवडइ तथा सिग्घं गहेयव्वो' ।

तलारेण वि एगम्मि दिणे सव्वं तहेव पउणीकयं । तेण वि तम्मि दिवसे गामंतराएण तं ण णायं । अयाणमाणो य पविट्ठो णगरमज्जे, जाव तहेव गहिओ, बंधेऊण सम्पिओ सेणियरायस्स । तेण वि अइकोहाहिभूएण वज्झो समाणत्तो । तओ भणियमभयकुमारमहामंतिणा जहा 'देव ! ण एस सलोदो गहिओ जेण णिव्वियारं निग्गहेज्जइ, अविआणियसरूवो चोरो वि रायउत्तो गणेज्जइ' । सेणिण भणियं 'ता किं किज्जउ ?' । अभयकुमारेण भणियं 'वियारेऊण णिग्गहेज्जह' । तओ पुच्छिओ सेणिण जहा 'को तुमं ?, कत्तो वा समागओ ?, भवसि वा तुमं रोहिणेयगो ?' । तेण वि णियणामासंकिण भणियं जहा 'अहं सालिगामवत्थव्वगो दुग्गचंडाहिहाणो णाम कोडुंबिओ, पओयणवसेण एत्थाऽऽगओ, पेच्छणयलोभेण ठिओ एगत्थ देवउले महइं रयणिं, तओ जाव गिहाभिमुहं वच्चामि ताव हक्किओ दंडवासियपुरिसेहिं, तओ भएण करणं दाऊण जाव सालाओ निग्गच्छामि ताव गहिओ तुम्ह पुरिसेहिं, बंधेत्ता य आणीओ एत्थ, संपयं देवो पमाणं' ति । तओ गोत्तीए धराविऊण पेसिओ तत्थ तप्पउत्तिजाणणत्थं एगो पुरिसो । जाव तेण पुट्ठो गामो ताव सो सव्वो वि 'रोहिणिण पण्णविओ' ति काऊण भणइ जहा 'अत्थि इत्थ क्थव्वओ दुग्गचंडो कोडुंबिओ परं गामं गओ' ति । आगंतूण य तेण णरेण सव्वमक्खायमभयस्स । तओ चित्तियमभयकुमारेण जहा 'एस ण सम्मं जाणेज्जइ, अदिट्ठचोरो य राया भवइ, ता उवाएण जाणेयव्वो' ति पउणीकयं महाविमाणानुकारिरिद्धिविच्छेडेणं एगं सत्तभूमियं भवणं,

अवि य—

देवंगदेवदूसाइविविहवत्थेहिं जणियउल्लोयं । मोत्तियमालापेरंतविविहवररणथवइल्लं ॥२०॥

१. सं० वा० सु० करेमो ॥ २. ला० 'णियगो नाम ॥ ३. ला० 'प्पइ(ह)दं' ॥ ४. ला० 'रं नयरमज्जे प' ॥ ५. ला० 'व्वं ति, जोहे ॥ ६. ला० 'ण य स' ॥ ७. ला० 'लोत्तो ॥ ८. सं० वा० सु० 'हुइं रयणी ॥ ९. सं० वा० सु० 'ओ, संप' ॥ १०. ला० 'त्तिवियाणणत्थं ॥ ११. ला० 'त्थव्वो दु' ॥ १२. ला० 'हा न एस सम्मं ॥ १३. ला० 'ल्लोवं ॥

वज्जेदनील-मरगय-कक्केयणमाइरणरासीहिं । दससु वि दिसासु भित्तीविहायआबद्धसुरचावं । २१ ।
 वरपंचवण्णपुप्फोवयाररेहंतभूमितलभाणं । मणिकोट्टिमपडिबिंबियभित्तीकयचित्तसंघायं ॥ २२ ॥
 शंभोलंबियचामर-दप्पणसंघायसोहियमुयारं । जियमयणरूवसमवयउम्मत्तजुवाणसयकलियं ॥ २३ ॥
 नवजुव्वणोद्धुराहिं उब्भडसिंंगारजणियसोहाहिं । अच्छरसासरिसाहिं समणियं वारविलयाहिं ॥ २४ ॥
 मुच्छिज्जमाणवरवेणु-वीणरवमिलियगेयलय-तालं । करणंगहारेहिरनवरसणच्चंतपिच्छणयं ॥ २५ ॥
 वज्जंतपडह-मद्लरवरम्मं सयण-आसणसणाहं । सब्वत्तो विणिवारियदिणयरकिरणावलीपसरं ॥ २६ ॥
 वररयणनियरउल्लसियकिरणपहयंधयारपब्भारं । किं बहुणा भणिएणं ?, तियसविमाणं व पच्चखं ॥ २७ ॥

तओ अभयकुमारेण मज्जं पाइऊण मत्तो समाणो सोविओ तत्थ पल्लंकोवरि देवदूसंतरिओ सो रोहिणेयगचोरो । खणंतरेण य मयविगमे पडमवणेऊण जाव समुट्ठिओ समाणो दिसालोयं करेइ ताव पेच्छइ तं तारिसमदिट्ठउव्वं रिद्धिसमुदयं । इत्थंतरम्मि य अभयकुमारसिक्खविएहिं भणियं तेहिं नर-नारीगणेहिं, अवि य 'जय जय नंदा जय जय भद्दा जय नंदा भदं ते, अजियं जिणाहि सत्तुवगं, जियं पालयाहि भिच्चवगं, जियविग्घो इव निवसाहि देव ! नियविमाणमज्जे, अम्हाणं तुमं सामिओ, तुज्झ अम्हे किंकरा, तुमं देवो उप्पण्णो । ता अणुभुंजाहि एयाओ अच्छराओ, एयाओ रयणरासीओ, इमं विमाणं, इमे य पंचप्पयारे भोए'ति । एवमायण्णिऊण जाव चित्तेइ 'हंत ! किमहं देवो समुप्पण्णो ?' ताव समुवट्ठियं पेच्छणयं । जावाऽऽढत्तो समहत्थो ताव सुवण्णमयदंडधारिणा भणियं एणेणं पुरिसेणं 'अरे ! किमेयमाढत्तं ?' । तेहिं भणियं 'णियपहुपुरओ णियविण्णाणदरिसणं' । तेण भणियं 'दरिसेह, परं देवलोगायारं करेज्जउ देवो' । तेहिं भणियं 'केरिसमायारं ?' । तेण भणियं 'किमेत्तियं पि वीसरियं ?, जओ जो देवलोगे समुप्पज्जइ सो पुव्वभवकयनियसुकय-दुकयनिवेयणाणंतं देवलोगरिद्धिं उवभुंजइ' । तेहिं भणियं 'सच्चं, सामिसमागम-णाणंदसमूसुयमणाण विसुमरियमेयं ति, ता पसीयउ अज्जो !, कारवेज्जउ देवलोगट्ठिइं देवो जेण अम्हे णियणिओगमणुचिट्ठामो' । तओ भणिओ तेण रोहिणेयगो जहा 'देव ! पसायं काऊण साहेइ पुव्वकयं जेण पच्छा देवलोगरिद्धिमुवभुंजह' । तओ चित्तियं तेण जहा 'हंत ! किमेयं एवमेव सच्चं ?, किं वा मम वियाणणत्थं मइमाहप्पदुल्लिय अभयकुमारमंतिविलसियं ? ति, जइ सच्चं तो कहेज्जमाणे वि ण दोसो, अह पवंचो तो कहिज्जमाणे गरुओ अणत्थो, ता कहमेयं जाणियव्वयं ?' । ति चित्तेमाणस्स सुमरियं तं कंटयावणयणकाले कण्णपविट्ठं देवसरूवपडिवायगं भगवओ वयणं । तओ परिभाविं जहा 'जइ तं भगवया वक्खाणियं देवसरूवं मिलइ तां सव्वं सच्चं साहेस्सामि जमेए

१. ला० 'ट्टपुव्वं' ॥ २. सं० वा० सु० 'ओ, रय' ॥ ३. ला० 'एयमा' ॥ ४. ला० कारविज्जउ ॥ ५. ला० व्ववकय' ॥ ६. सं० वा० सु० सव्वं, सा' ॥ ७. ला० गमाणंदसमू सुयाणं विसु' ॥ ८. ला० गविभूइमु' ॥ ९. सं० वा० सु० 'णे गुरुओ अ' ॥ १०. सं० वा० सु० तं ॥

पुच्छिस्संति, अह णो तो अण्णं किं पि उत्तरं करेस्सामि' । त्ति चिंतिऊण णिरिक्खिया ते तेण, जाव पेच्छइ सव्वे उम्मेस-णिमेसं कुणमाणा मिलाणमल्लदामा पासे य मलाविलसरीरत्तणेण वीयणगहत्था भूमिसंफासकारिणो य । तओ णायं जहा 'सव्वो एस पवंचो' ति । तओ 'उत्तरं किंपि कायव्वं' ति परिभावेतो पुंण वि भणिओ तेणं जहा 'देव ! किमज्ज वि विलंबेज्जइ ?, किं न पेच्छह सव्वो वि समूसओ देव-देवीगणो ?' । तओ जंपियं रोहिणियगेणं "जइ एवं तो मए पुव्वभवे दिण्णाइं सुपत्तदाणाइं, कारावियाइं देवाययणाइं, पंडिआवियाइं तेसु वि बिंबाइं, विहियाओ विविहाओ पूया-जत्ताओ, सम्माणिओ सुयण-सयण-बंधुवग्गो, पज्जुवासिया गुरुणो, सुया तस्स सयासाओ धम्मदेसणा, लिहावियाइं पुत्थयाइं, पालियं सीलं, अत्तसमा सव्वे वि मण्णिया जिंया, न जंपियमलियं, परिहरियमदत्तं, जणणिसमाओ मण्णियाओ सव्वाओ वि परजुवईओ, विहिओ संतोसो, भावियाओ भावणाओ अण्णं पि एवंविहं सोहणाणुट्ठाणं मए समायरियं' ति । पडिहारेण भणियं-एयं सुंदरं, संपइ असुंदरं पि य साहसु' । तेण भणियं 'ण मए किंचि असोहणं विहियं' । पडिहारेण भणियं 'न एगसब्भावेण जम्मो वोल्इ ता जं पि चोरिय-पारदारियाइयं तं पि निव्वियप्पं सीसउ' । तेण भणियं 'किमेवंविहेहिं असुहकम्मायारेहिं इत्थ देवल्लोगे उववज्जिज्जइ ?' । तओ तेहिं एयमायण्णिऊण साहियं अभयस्स । तेण वि सेणियरायस्स जहा 'देव ! अदिट्ठचोरो अचोरतुल्लो भवइ, ता जो एवंविहउवाएण वि न नज्जइ सो कहं चोरो भविस्सइ ?, ता मुच्चउ' । राइणा भणियं 'जइ एवं ता जं तुमं जाणासि तं होउ' ति । तओ भवणाओ णिक्कालेऊण मुक्को । रोहिणेयगो वि^३ रायगिहं चेव दट्ठूण चिंतिउमाढत्तो 'हंत ! न सोहणो जणओवएसो जओ एगस्स वि भगवओ वयणस्स इत्तियं माहप्पं जेण इहलोगे चेव जीवंतओ मुक्को, अण्णहा न नज्जइ केणइ^४ कुमारेण मारिओ हुंतो, परलोगे पुण अवस्सं न सोहणयरं किंपि भविस्सइ, ता ण कज्जं ईइसेण अणत्थबहुलेण जणगोवएसेणं' । ति चिंतिऊण गओ भगवओ समीवे । तओ वंदिऊण भावसारं थोउमाढत्तो, अवि य—

‘नीसेसजंतुरक्खय ! खयमोहमहानरेंदबलपसर ! पसरंतकेवलण्णाणायणायाइसब्भाव ! ॥२८॥

भावियसमत्थभावण ! वणगय ! णीसेसदुक्खनलिणीण ।

इण ! भुवणस्स महामह ! महकय ! जिण ! सरण ! रणरहिय ! ॥२९॥

जे तुह वयणामयपाणलालसा पाणिणो जए के वि । अणुदियहं ते धण्णा, सफलं चिय जीवियं ताण । ३० ।

१. सं० वा० सु० 'म्मेसं नि' ॥ २. ला० पुणो वि ॥ ३. ला० 'पयट्ठा' ॥ ४. ला० 'ओ पूया' ॥ ५. ला० 'स्ययासाओ' ॥ ६. ला० 'पोत्थ' ॥ ७. ला० 'जीवा' ॥ ८. सं० वा० सु० एवं ॥ ९. ला० 'पि साह' ॥ १०. ला० 'किंपि' ॥ ११. सं० वा० सु० 'पारदारियाइयं' ॥ १२. ला० 'वल्लोगट्ठाणे उव' ॥ १३. सं० वा० सु० वि एवंविहं चेव ॥ १४. सं० वा० सु० 'ओ उवएसस्स' ॥ १५. सं० वा० सु० इ केणइ कुं ॥ १६. सं० वा० सु० इय भुव' ॥

अहयं तु पुण अहण्णो पाविट्ठो तुम्ह वयणसवणम्मि । ढंकेऊण य कण्णे झड त्ति वोलींतओ पुव्विं । ३१

नाह ! अणिच्छंतेण वि जमेगवयणं सुयं मए कहवि ।

तेणऽज्ज जीविओ हं, भवाओ तह चेव निव्विण्णो । ३२ ।

ता तुज्झ णमो सामिय !, संपइ तं कुणसु जेण अचिरेण । लंघेतु भवअरण्णं खिप्पं वच्चामि सिद्धिउरं । ३३

तओ भगवया कया भवणिव्वेयजणणी धम्मदेसणा । तं च सोऊण पडिबुद्धा बहवे पाणिणो । इत्थंतरम्मि समुल्लसंतजीववीरिएणं समुब्भिज्जमाणरोमंचकंचुगेणं समुप्फुल्लंतवयणसयवत्तेणं समुदलज्जंतकम्मजालेणं समुप्पज्जंतचरणपरिणामेणं विण्णत्तं रोहिणियगेणं जहा 'भगवं ! किमहं जोगो पव्वज्जाएण व ? त्ति । भगवया भणियं 'सुट्ठु जोगो' । तेण भणियं 'जइ एवं ता गेण्हामि पव्वज्जं, परं अत्थि किंचि सेणियराएण सह वत्तव्वं' । तओ भणियं सेणियरायेणं जहा 'भो महासत्त ! भण निव्वियप्पं जं ते रोयइ । तेण भणियं 'जइ एवं तो महाराय ! एसो सो अहं रोहिणेयगो णाम चोरो, जो सवणपरंपराए तुम्हाण वि पयडो चेव, जेण भगवओ एगवयणप्पसाएण अहरीकयसुरगुरुमइमाहप्पं पि निरत्थीकयं अभयकुमारमहामंतिमइविलसियं, ता भो महाराय ! मं मोत्तूण ण अण्णेण केणावि मुट्ठं तुह नगरं, ता देहि संपयं नियसक्खिणो जेण दसेमि तं सव्वं दविणजायं, तओ पच्छा सहलीकरेमि पव्वज्जाए मणुयजम्मं' ति । तओ णिरूवियमभयकुमारंस्स वयणं राइणा । उट्ठिओ य अभयकुमारो कोऊहल्लेण य पुरलोगो गओ रोहिणियगेणं सह । दरिसियं च गिरि-णइ-वणनिगुंज-मसाणाइएसु तं सव्वं थवियदव्वं । समप्पियं अभयकुमारेण जं जस्स संतियं तं तस्स त्ति । रोहिणियगो वि परमत्थं साहिऊण णियमाणुसाण ताणि पडिबोहेत्ता समागओ भगवओ समीवे । सेणिया-अभयकुमारेहिं विहिज्जमाणं निक्खमणमहिमो विहिणा निक्खत्ता संवेगाइसयाओ करेइ उगं तवोणुट्ठाणं । अवि य—

कयाइ छट्ठाओ पुणऽट्ठमाओ, दुवालसाओ दसमाइयाओ ।

चउत्थ-आयंबिल-निव्वियाओ, कयाइ मासाओ तहऽद्धमासा ॥ ३४ ॥

कयाइ दोमास-तिमासियाओ, तुरि(री)य-छम्मासिय-पंचमासा ।

तवाओ पारेइ तहा पवित्तं करेइ एगावलिमाइयं पि ॥ ३५ ॥

एवं कुणंतस्स तवोवहाणं, सीयं सहंतस्स हिमागमम्मि ।

आयावयंतस्स य गिम्हयाले, छण्णम्मि संचिट्ठयओ य वासे ॥ ३६ ॥

१. ला० ढंकेऊण ॥ २. ला० झडित्ति ॥ ३. ला० 'यणं मए सुयं क' ॥ ४. ला० नित्थिण्णो ॥ ५. ला० 'तचारित्तपरि' ॥ ६. ला० 'इ त्ति । ते' ॥ ७. सं० वा० सु० 'यं तो महा' ॥ ८. ला० रुणुद्धिमा ॥ ९. ला० दरिसेमि ॥ १०. ला० 'रवयणं' ॥ ११. ला० च गिरि-गिरिणइ ॥ १२. सं० वा० सु० 'णमहिमो नि' ॥ १३. ला० 'तो करेइ संवेगाइसओ उगं' ॥ १४. सं० वा० सु० 'वित्ति क' ॥

सुक्कस्स लुक्खस्स निमंसयस्स, देदिप्पमाणस्स तवस्सिरीए ।
 आणं कुणंतस्स गुरूण णिच्चं, कमेण पत्तो अह अंतकालो ॥३७॥
 आपुच्छिऊणं जिणवीरणाहं, काऊण संलेहणमगभावो ।
 गीयत्थसाहूहिं समं गिरिम्मि, गंतूण सुद्धम्मि सिलायलम्मि ॥३८॥
 विहीएँ पाओवगमं विहेउं, ठवित्तु चित्ते जिण-सिद्धमाई ।
 चइत्तु देहं तिदिवम्मि जाओ, सुरोत्तमो भासुरबुंदिधारी ॥३९॥
 तओ चुयस्सावि य माणुसत्ते, पहाणरिद्धी पुण धम्मलाहो ।
 पुणो वि देवत्त-सुमाणुत्तकमेण पावेस्सइ सिद्धिसोक्खं ॥४०॥

गतं रौहिणेयकथानकम् । २३.

इति श्लोकभावार्थः ॥६२॥ यस्मादेवं महाप्रभावोऽयमागमस्तस्मात्-

विहीए सुत्तओ तम्हा पढमं पढियव्वओ ।
 सोच्चा साहुसगासम्मि कायव्वो सुद्धभावओ ॥६३॥

‘विधिना’ विधानेन मण्डलीप्रमार्जन-निषद्यादान-कालनिवेदनरूपेण,

काले विणए बहुमाणे उवहाणे तह [य] अणिणहवणे ।

वंजण अत्थ तदुभए अट्टविहो णाणमायारो ॥२२८॥ (दश० नि० गा० १८४)

इति ज्ञानातिचारवर्जनलक्षणेन च । ‘सूत्रतः’ पाठरूपतया । ‘तस्मात्’ इति पूर्ववृत्तसम्बन्धनार्थः । ‘प्रथमम्’ आदौ श्रवणादिभ्यः समस्तानुष्ठानेभ्यो वा तत्पूर्वकत्वादनुष्ठानानाम् [? ‘पठितव्यः=अभ्यसनीयः] तदनन्तरं च ‘श्रुत्वा’ समाकर्ण्य व्याख्यानिकमुखात् । अत्रापि-

ठाणं पमज्जिऊणं दोणिण णिसेज्जाओ हंति कायव्वा ।

एगा गुरुणो भणिया, बीया पुण होइ अक्खाणं ॥२२९॥ (आव० नि० गा० ७०४)

निदा-विगहापरिवज्जिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं ।

भत्ति-बहुमाणपुव्वं उवउत्तेहिं सुणेयव्वं ॥२३०॥ (आव० नि० गा० ७०७)

अभिकंखंतेहिं सुभासियाइं वयणाइं अत्थसाराइं ।

विम्हियमुहेहिं हरिसागाएहिं हरिसं जणंतेहिं ॥२३१॥ (आव० नि० गा० १०८)

१. ला० सुक्खस्स लुक्ख ॥ २. सं० वा० सु० ‘णमुग्ग’ ॥ ३. ला० ‘त्तु हियए जि’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘णुसाइक्क’ ॥ ५. सं० वा० सु० श्लोकार्थः ॥ ६. सं० वा० सु० ‘रं शु’ ॥

मूयं हुंकारं वा बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा ।

तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ट सत्तमए ॥२३२॥ (आव० नि० गा० २३)

इत्यादिविधिर्वक्तव्यः । 'साधुसकाशे' यतिसमीपे सुतीर्थत्वात् तेषाम् । ततश्च 'कायव्वो'ति कर्तव्यः अनुष्ठेयस्तदुक्तानुष्ठानकरणेन । अत्रापि-

जोगो जोगो जिणसासणम्मि दुक्खक्खया पउंजंतो ।

अण्णोण्णमबाहाए असवत्तो होइ कायव्वो ॥२३३॥ (ओघनि० गा० २७७)

इत्यादिविधिरायोज्यः । 'शुद्धभावतः' विशुद्धाध्यवसायेनेति श्लोकार्थः ॥६३॥

यद्येवं कानि तत्कारणानि ? इति प्रश्ने श्लोकमाह-

सुप्पसण्णा जिणाणाए कारणं गुरुणो परं ।

पोत्थयाणि य णाणस्स संपयं साहणं तओ ॥६४॥

'सुप्रसन्नाः' अतिप्रसादवन्तः, प्रसादिता हि गुरवः श्रुतं प्रयच्छन्ति । उक्तं च-

विणओणएहिं पंजलिउडेहिं छंदमणुयत्तमाणेहिं ।

आराहिओ गुरुयणो सुयं बहुविहं लहुं देइ ॥२३४॥ (आव० नि० गा० १३८)

'जिणाणाए' जिनाज्ञया=तीर्थकरोपदेशेन, 'विनीतविनेयेभ्यः' श्रुतं दातव्यमेव' इत्येवंरूपया । 'कारणं' हेतुः 'गुरवः' यथावच्छास्त्रार्थवेदिनः, 'परं' प्रधानम्, 'पुस्तकानि च' लिखित-जिनागमपत्रसञ्चयरूपाणि, 'ज्ञानस्य' श्रुतज्ञानस्य, 'साम्प्रतम्' अस्मिन् दुःषमाकाले 'साधनं' निष्पादकम् । 'ततः' इत्युत्तरश्लोकसम्बन्धनार्थः । इति श्लोकार्थः ॥६४॥

जिणाणाबहुमाणेणं विहाणेणं लिहावए ।

पोत्थयाणि महत्थाणि वत्थमाईहिं पूयए ॥६५॥

'जिनाज्ञाबहुमानेन' तीर्थकरादेशप्रीत्या, 'विधानेन' विधिना, लेखयेत् पुस्तकानि 'महार्थानि' तल्लिखितग्रन्थानां महार्थत्वेन प्रचुराभिधेयानि, यत एवंपविधपुस्तकलेखनस्य बहुगुणत्वात् । तथा हि-

न ते नरा दुर्गतिमाप्नुवन्ति, न मूकतां नैव जडस्वभावम् ।

न चान्धतां बुद्धिविहीनतां च, ये लेखयन्तीह जिनस्य वाक्यम् ॥२३५॥

लेखयन्ति नरा धन्या ये जैनागमपुस्तकम् ।

ते सर्वं वाङ्मयं ज्ञात्वा सिद्धिं यान्ति न संशयः ॥२३६॥

ततश्च 'वस्त्रादिभिः' वेष्टनप्रभृतिभिः । आदिशब्दात् पुष्पाद्यष्टप्रकारपूजाग्रहः । 'पूजयेद्' अर्चयेदिति श्लोकार्थः ॥६५॥ इत्थमागमं पुस्तकेषु लेखयित्वा यत् कर्तव्यं तच्छ्लोकेनाह-

गीयत्थाणं सुसीलाणं पगासिंताणमागमं ।

विहाणेण मुणिंदाणं दाणं तत्तो निसामणं ॥६६॥

'गीतार्थानां' पठितावबुद्धार्थानाम् । 'सुशीलानां' शोभनचारित्राणाम्, यतस्त एव योग्या गुणभाजनत्वात् । उक्तं च-

यावच्छीलं निर्मलं सुप्रशस्तं, तावत्सर्वाः सम्पदो हस्तसंस्थाः ।

तच्चेन्मोहादुज्झितं खण्डितं वा, दोषध्वाङ्गाऽऽवासवृक्षश्च जातः ॥२३७॥

'पगासिंताणमागमं'ति प्रकाशयतां=प्रकटीकुर्वतां व्याख्यानादिद्वारेण, आगमं=सिद्धान्तम् । 'विधानेन' विधिना, प्रकाशयतामित्यत्र सम्बध्यते । अविधिप्रकाशने दोषसम्भवात् । यत उक्तम्-

आमे घडे णिहितं जहा जलं तं घडं विणासेइ ।

इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेइ ॥२३८॥ (जी० भा० गा० २६०१)

काकाक्षिगोलकन्यायेनाग्रेतनदानपदेऽपि सम्बध्यते । ततश्च विधानेन 'मुनीन्द्राणाम्' आचार्याणाम्, 'दानं' वितरणम्, पुस्तकानां विधेयमिति भावः । पुस्तकदानविधिप्रतिपादनार्थं चोक्तं वृद्धैः, तथा च—

दाउं आसण-वत्थ-पत्तपैभिइं सव्वं मणोमोयगं,

ठाऊणं पुरओ कयंजलिउडं वत्तव्वमेवं जहा ।

'संसारे जलहिम्मि दुत्तरतरे तुम्हे तरंडं जओ,

वक्खाणेण इमस्स मज्झ परमा कज्जा पभो ! णिज्जरा' ॥२३९॥

उपलक्षणं च पुस्तकदानम् । यतः—

पत्त पसत्थ सुभुज्ज सुविहियहु, पोत्थयजोग्गहु तह कत्तणियहु ।

लेहणि खडिय सुवेढण दोरा, देंतु लहइ फलु णाणह केरा ॥२४०॥

'तत्तो निसामणं'ति ततः=तेभ्यः सकाशाद् निशामनं=श्रवणं तेषां पुस्तकानामिति श्लोकार्थः ॥६६॥

तथा—

१. ला० 'नकप्र' ॥ २. सं० वा० सु० 'द्वागमानाम्' ॥ ३. ला० 'पथियं स' ॥ ४. सं० वा० सु० 'णं पुस्त' ॥

कुज्जागमविहाणेणं पोत्थयाणं च वायणं ।

उगहं च पयत्तेण कुज्जा सव्वणुसासणे ॥६७॥

‘कुर्याद्’ विदध्यात्, ‘आगमविधानेन’ सिद्धान्तोक्तन्यायेन, पुस्तकानां च ‘वाचनं’ स्वयमुच्चारणम् । चकारोऽनुक्तसमुच्चये, तेन येषामेव पुस्तकानां वाचनेऽधिकारोऽस्ति गृहस्थस्य तान्येव वाचनीयानि, न शेषाणि आज्ञाभङ्गा-ऽनवस्था-मिथ्यात्व-विराधनादिमहादोषकारित्वात् । तत्र चोपधानादिकरणेऽनधिकारित्वात् गृहस्थस्य तद्वाचने आज्ञाभङ्गः, तद्भङ्गाच्च धर्मस्याऽप्यभावः । उक्तं च-

आणाए च्विय चरणं, तब्भंगे जाण ‘किं न भगं ?’ ति ।

आणं वड्ढकमंतो कस्साएसा कुणइ सेसं ? ॥२४१॥

तथा—

अहिगारिणा खु धम्मो कायव्वो, अणहिगारिणो दोसो ।

आणाभंगाउ च्विय धम्मो आणाइ पडिबद्धो ॥२४२॥

तथानवस्थापि, उक्तं च—

एणेण कयमकज्जं करेइ तप्पच्चया पुणो अण्णो ।

सायाबहुलपरंपरवोच्छेओ संजम-तवाणं ॥२४३॥ (श्रावकधर्मविधि० गा० ३)

मिथ्यात्वं च भणिताकरणात्, उक्तं च—

जो जहवायं न कुणइ मिच्छिद्धिटी तओ हु को अण्णो ? ।

वट्ठेइ य मिच्छतं परस्स संकं जणेमाणो ॥२४४॥

विराधनां च देवतादिभ्यः सकाशात् प्राप्नोति, उक्तं च—

उम्मायं व लभेज्जा रोगायकं व पाउणे दीहं ।

केवलिपणत्ताओ धम्माओ वा वि भंसेज्जा ॥२४५॥

‘उगहं च’ ति अवग्रहं च=स्वीकारं च, चकाराद् विप्लवादौ महद्यत्नेन रक्षणं च पुस्तकानामिति गम्यते । ‘प्रयत्नेन’ बृहदादरेण मञ्जूषादिस्थापनतः । ‘कुर्यात्’ विदध्यात् । ‘सर्वज्ञशासने’ विभक्तिव्यत्ययात् सर्वज्ञशासनस्य अर्हद्दर्शनस्येति श्लोकार्थः ॥६७॥ तथा—

अन्नेसिं भव्वसत्ताणं जहाथामं पगासए ।

सव्वं वावारमुज्झित्ता कुज्जा सज्झायमुत्तमं ॥६८॥

‘अन्येषाम्’ आत्मव्यतिरिक्तानाम्, ‘भव्यसत्त्वानां’ मुक्तिगमनयोग्यप्राणिनाम्, ‘यथाथा-
(स्था)म’ यथासामर्थ्यम्, ‘प्रकाशयेत्’ प्रकटीकुर्यात् । यस्मादुक्तं श्रावकवर्णके ‘एस णं
देवाणुप्पिया ! णिगंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे’ इत्यादि । तद्व्याख्यानद्वारेण वा सामर्थ्ये सति
प्रकाशयेत् । तथा ‘सर्व’ निःशेषम्, ‘व्यापारं’ गृहकृत्यम्, ‘उज्झित’ति प्रोज्झ्य= त्यक्त्वा, ‘कुर्याद्’
विधेयात्, ‘स्वाध्यायं’ परावर्तनालक्षणम्, ‘उत्तमं’ प्रधानम्, यस्मात् स्वाध्यायेनाप्यागमस्य भक्तिः
कृता भवतीति श्लोकार्थः ॥६८॥ तथा—

पुव्वरत्ताऽवरत्तम्मि चित्तेज्जा पणिहाणवं ।

भावेज्जा भावणासारं परं अप्पाणमेव य ॥६९॥

‘पूर्वरात्रा-ऽपररात्रे’ रात्रिप्रहरद्वयोर्ध्वम्, ‘चिन्तयेत्’ चेतस्यवस्थापयेत्, आगममित्यध्याहारः
प्रणिधानवान् चित्तसमाधानवान् । तथा ‘भावयेत्’ परिभावयेत्, ‘भावनासारं’ भावनाप्रधानम्,
‘परम्’ आत्मव्यतिरिक्तम्, ‘आत्मानमेव च’ स्वयमेव च, अनुप्रेक्षाया अपि स्वाध्यायभेदत्वात्,
एतदपि सिद्धान्तकृत्यमेवेति श्लोकार्थः ॥६९॥

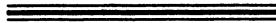
प्रकरणोपसंहारमुपदेशं च वृत्तेनाऽऽह-

एयं जिणिंदागमपोत्थयाणं, किच्चं दिसादंसणमेत्तं ।

सुसावगो सासणभत्तिमंतो, करेज्ज णाऊण जहारिहं ति ॥७०॥

‘एयं’ति एतज्जिनेन्द्रागमपुस्तकानाम्, ‘कृत्यं’ कर्तव्यम्, ‘दिसादंसणमेत्तं’ति दिग्दर्शनमात्रम्,
‘उत्तं’ति उत्तं=प्रतिपादितम् । ततश्च ‘सुश्रावकः’ शोभनः श्रमणोपासकः, ‘शासनभक्तिमान्’
अर्हद्दर्शनबहुमानवान्, ‘करेज्ज’ति कुर्यात्, ‘णाऊण’ति ज्ञात्वा=अवबुध्य पूर्वोक्तकृत्यमेव,
यथार्हं=यथायोग्यम् । इतिशब्दः प्रकरणपरिसमाप्ताविति वृत्तार्थः ॥७०॥

इति श्रीदेवचन्द्राचार्यविरचिते मूलशुद्धिविवरणे तृतीयस्थानकविवरणं समाप्तमिति ॥



साधुकृत्याख्यं चतुर्थं स्थानकम्

व्याख्यातं तृतीयस्थानकम् । सम्प्रति चतुर्थमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहाऽयमभिसम्बन्धः पूर्वत्र पुस्तककृत्यमभिहितम्, पुस्तकानि च साधुमुखात् श्रोतव्यानि साधुभ्यो देयानि साध्वाधाराणि चेति । अतः साधुकृत्यस्थानकम्, तस्य चेदमादिसूत्रम्—

मुणीण णाणाङ्गुणालयाणं, समुद्वचंदाइनिदंसणाणं ।

जयं जया जाण जहाणुरूवं, तयं तथा ताण तहा विहेह ॥७१॥

‘मुनीनां’ साधूनाम् । ‘ज्ञानादिगुणालयानां’ ज्ञानप्रभृतिगुणावासानाम् । ‘समुद्र-चन्द्रादिनिदर्शनानां’ सागर-शशधरप्रमुखदृष्टान्तानाम् । “जयं”ति यकत् । “जय”ति यदा । “जाण”ति येषाम् । “जहाणुरूवं”ति यथानुरूपं=यथायोग्यम् । “तयं”ति तकत् । “तय”ति तदा । “ताण”ति तेषाम् । “तह”ति तथैव । “विहेह”ति कुरुतेति वृत्तार्थः ॥७१॥

कस्मादेवं मुनीनां यथायोग्यं विधेयम् ? इति प्रश्ने प्रत्युत्तरदानार्थं वृत्तद्वयमाह—

जं जोणिलक्खागहणम्मि भीमे, अणोरपारम्मि भवोवहिम्मि ।

कल्लोलमाला व सया भमंता, दुक्खं व सोक्खं व सयं सहंता ॥७२॥

मणुस्सजम्मं जिणनाहधम्मं, लहंति जीवा खविऊण कम्मं ।

महाणुभावाण मुणीण तम्हा, जहासमाही पडितप्पियव्वं ॥७३॥

‘यद्’ यस्मात् । ‘योनिलक्षगहने’ चतुरशीत्युत्पत्तिस्थानलक्षगह्वरे, दीर्घत्वमलाक्षणिकम् । ‘भीमे’ भयानके । ‘अणोरपारे’ अनर्वाभागपर्यन्ते । ‘भवोदधौ’ संसारसमुद्रे । ‘कल्लोलमालावत्’ लहरीसङ्घातवत् । ‘सदा’ सर्वकालम् । ‘भ्रमन्तः’ पर्यटन्तः । दुःखं वा सौख्यं वा ‘स्वयम्’ आत्मना ‘सहन्तः’ अनुभवन्तः ।

ततश्च ‘मनुष्यजन्म’ मनुजभवम् । तदनन्तरं च जिननाथधर्मं ‘लभन्ते’ प्राप्नुवन्ति, ‘जीवाः’ जन्तवः । ‘क्षपयित्वा’ खोटयित्वा, ‘कर्म’ स्वोपार्जितम् । उक्तं च—

कम्माणं तु पहाणाए आणुपुब्बिं कयाइ उ ।

जीवा सोहिमणुप्पत्ता आययंति मणुस्सयं ॥२४६॥ (उ० अ० ३ गा० ७)

तथा—

जह महण्णवमज्झि रुव्विल्लकल्लोलपेल्लिय समिलं चलइ वलइ,

खलइ धावइ तुडिजोइण पुणु कहवि परिभमंत जुगछिड्ड पावइ ।

१. सं० वा० सु० ला० वहम्मि ॥ २. ला० अणुपुब्बिं उत्तराध्ययनसूत्रे ‘आणुपुब्बी’ इत्यस्ति ॥ ३. सं० वा० सु० आययंति ॥ ४. सं० वा० सु० रुवेल्लं ॥ ५. सं० वा० सु० ल वलइ, ॥ ६. ला० पक्खलइ ॥

तह भवसागरि निवडियह दुलहउ माणुसजम्मु,
तत्थ वि धण्णउ कोइ लहइ जइ पर जिणवरधम्मु ॥२४७॥ इत्यादि ।

एवं च स्थिते 'महानुभावानाम्' अचिन्त्यशक्तियुक्तानाम् 'मुनीनां' साधूनाम् । 'तम्ह'ति तस्मात् । 'यथासमाधि' यथासमाधानं यथासमाधौ वा । 'प्रतितर्पयितव्यं' विनयितव्यं विनय-
वैयावृत्त्यादिकरणप्रीणनेनेति वृत्तद्वयार्थः ॥७२-७३॥ तदेवं प्रतितर्पणमभिधातुकामो
विनयमूलत्वाद्धर्मस्य, उक्तं च—

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाओ पच्छा समुविंति साला ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ सि पुप्फं च फलं रसो य ॥२४८॥

एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चाऽभिगच्छइ ॥२४९॥ ति (द० अ० ९ उ० २ गा० १-२)

विनयं कायवाङ्मनोभेदात् त्रिप्रकारं तावदादौ श्लोकत्रयेणाऽऽह—

कायव्वं ताव दिट्ठाणं अब्भुट्ठाणं ससंभमं ।
अंजलीपग्गहो सम्मं, आसणस्स पणामणं ॥७४॥
आसणाभिग्गहो चेव, विहाणेण य वंदणं ।
ठाणट्ठियाण कालम्मि भत्तीए पज्जुवासणा ॥७५॥
इंताणं सम्मुहं जाणं, गच्छंताणं अणुव्वए ।
काएणं अट्ठहा एसो विणओ ओवयारिओ ॥७६॥

'कर्तव्यं विधेयं तावद् 'दृष्टानाम्' अवलोकितानां मुनीनामित्यनुवर्तते । 'अभ्युत्थानम्'
आसनादिमोचनम्, 'ससम्भ्रमम्' अत्यादरेण कायतरलतारतया शीघ्रमूर्ध्वीभवनम् १ ।
'अञ्जलिप्रग्रहः' शिरसि करकोरककरणम्, 'सम्यग्' यथावस्थिततया २ ।
आसनप्रणामनम्=उपवेशनदौकनम् ३ ।

'आसनाभिग्रहः' उपवेशनकदाननिश्चयः ४ । चैवशब्द उक्तसमुच्चये । 'विधानेन'
पञ्चविंशदावश्यकदिकरणरूपविधिना । उक्तं च-

अवणामा दोण्णहाजायं आवत्ता बारसेव उ ।
सीसा चत्तारि गुत्तीओ तिण्णि दो य पवेसणा ॥२५०॥

१. ला० दुलहु ॥ २. तत्थु वि धण्णुउ को वि ल ॥ ३. सं० वा० सु० 'ओ से पु' ॥ ४. ता० ताण
दि ॥ ५. सं० वा० सु० 'ताणमणु' ॥ ६. सं० वा० सु० 'एण अ' ॥

एग निक्खमणं चेव पणुवीसं वियाहिया ।

आवस्सगाओं परिसुद्धं किङ्कम्मं जेहि कीरइ ॥ २५१ ॥

किङ्कम्मं पि करितो न होइ किङ्कम्मनिज्जराभागी ।

पणुवीसामण्णयरं साहू ठाणं विराहेंतो ॥ २५२ ॥ (आव० नि० गा० १२०३-१२०५)

आवस्सयपरिसुद्धं किङ्कम्मं जो पउंजइ गुरूणं ।

सो पावइ णिव्वाणं अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २५३ ॥

‘वन्दनकं’ द्वादशावर्तम् ५ । ‘स्थानस्थितानां’ वसत्यादिष्ववस्थितानां ‘काले’ प्रस्तावे ‘भक्त्या’ अन्तर्वासनया ‘पर्युपासना’ क्षणमात्रं मुनिचरणसमीपावस्थानम् ६ ।

“इंताणं”ति आगच्छतां, ‘सम्मुखं यानं’ प्रत्युद्गमनम् ७ । गच्छतां ‘अनुव्रजेत्’ तैः सार्धं कियन्मात्रमपि भूभागं गच्छेत् ८ । ‘कायेन’ शरीरेण ‘अष्टधा’ अष्टप्रकारः ‘एषः’ पूर्वोक्तः ‘विनयः’ मुनिभक्तिकरणरूपः ‘औपचारिकः’ बाह्यरूप इति श्लोकत्रयार्थः ॥ ७४-७६ ॥

साम्प्रतमान्तरः । तत्र वाग्विनयप्रतिपादनार्थं सार्धश्लोकमाह—

भासियव्वं हियं वक्कं जं परीणामसुंदरं ।

मियं थेवेहिं वण्णेहिं सहावमहुरं तहा ॥ ७० ॥

पुव्वं बुद्धीएँ पेहेत्ता भासियव्वं सुहासियं ॥ ७८ पू० ॥

‘भाषितव्यं’ जल्पनीयम् ‘हितं’ श्रेयस्कारि ‘वाक्यं’ वचनम्, यत् ‘परिणामसुन्दरम्’ आयतिसुखावहम्, ‘मितं’ परिमितं स्तोकवर्णैः=अल्पाक्षरैः, ‘स्वभावमधुरं’ श्रवणपेशलम् । तथाशब्दोऽग्रेतनश्लोकसम्बन्धनार्थः । ‘पूर्वं’ प्रथमं ‘बुद्ध्या’ मत्या ‘प्रेक्ष्य’ पर्यालोच्य भाषितव्यं ‘सुभाषितं’ निर्दूषणम् । उक्तं च—

बुद्धीएँ णिएऊणं भासेज्जा उभयलोगपरिसुद्धं ।

स-परोभयाण जं खलु ण सव्वहा पीडजणं तु ॥ २५४ ॥

द्वितीयभाषणक्रिया भिन्नभिन्नश्लोकत्वादिति सार्धश्लोकार्थः ॥ ७७-७८ पू० ॥

साम्प्रतं मनोविनयं श्लोकोत्तरार्धेनाऽऽह-

दुट्ठं चित्तं निरुंभेत्ता उदीरे कुसलं मणं ॥ ७८ उ० ॥

‘दुष्टम्’ आर्त-रौद्रानुगतं, ‘चित्तं’ मनः ‘निरुंभेत्ता’ निरुध्य ‘उदीरे’ उल्लासयेत् ‘कुशलं’

१. ला० ता० थेवेहि ॥ २. सं० वा० सु० भासेय ॥ ३. ला० ता० निरुंभित्ता ॥ ४. ला० “रयेत् उल्ला” ॥

धर्मध्यानानुगतं 'मनः' चित्तम् । यत उक्तम्—

रक्षेदं चित्तसद्रत्नं यस्मादन्तर्धनं परम् ।
 धर्मोऽधर्मः सुखं दुःखं यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥२५५॥
 यदेदं निस्पृहं भूत्वा परित्यज्य बहिर्धर्मम् ।
 स्थिरं सम्पत्स्यते चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२५६॥
 भक्ते स्तोतरि कोपान्धे निन्दाकर्तरि चोत्थिते ।
 यदा समं भवेच्चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२५७॥
 स्वजने स्नेहसम्बद्धे रिपुवर्गेऽपकारिणि ।
 स्यात् तुल्यं ते यदा चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२५८॥
 शब्दादिविषयग्रामे सुन्दरेऽसुन्दरेऽपि वा ।
 एकाकारं यदा चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२५९॥
 गोशीर्षचन्दनालेपि-वासीच्छेदकयोर्यदा ।
 अभिन्ना चित्तवृत्तिः स्यात् तदा ते परमं सुखम् ॥२६०॥
 सांसारिकपदार्थेषु जलकल्पेषु ते यदा ।
 अश्लिष्टं चित्तपद्मं स्यात् तदा ते परमं सुखम् ॥२६१॥
 दृष्टेषूद्दामलावण्यबन्धुराङ्गेषु योषिताम् ।
 निर्विकारं यदा चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२६२॥
 यदा सत्त्वैकसारत्वादर्थकामपराङ्मुखम् ।
 धर्मे रतं भवेच्चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२६३॥
 रजस्तमोविनिर्मुक्तं स्तिमितोदधिसन्निभम् ।
 निष्कल्लोलं भवेच्चित्तं तदा ते परमं सुखम् ॥२६४॥
 मैत्री-कारुण्य-माध्यस्थ्य-प्रमोदोद्दाममानसम् ।
 यदा मोक्षैकतानं स्यात् तदा ते परमं सुखम् ॥२६५॥

पुनर्मनोग्रहणं दुष्टा-ऽदुष्टद्विभेदमनससूचनार्थमित्युत्तरार्थार्थः ॥७८३०॥

१. ला० 'पि च' ॥ २. ला० 'संसारिषु प' ॥ ३. सं० वा० सु० 'द्रेषु रूपलाव' ॥ ४. ला० 'दधिसम्भवम्' ॥ ५. ला० 'मभावनम्' ॥ ६. ला० 'नं तत्' । तदा ॥ ७. ला० 'नः सूच' ॥

साम्प्रतं शेषकृत्यप्रतिपादनार्थं श्लोकषट्कमाह—

जहा जहा महाणम्मि आढिया होंति साहुणो ।

सव्वं सव्वपयत्तेण कुज्जा कायव्वयं तहा ॥७९॥

यथा यथा 'महाणम्मि' महाजने 'आढिय'ति आदृताः 'हुंति' भवन्ति 'साधवः' यतयः 'सर्व' समस्तं 'सर्वप्रयत्नेन' निःशेषप्रयत्नेन कुर्यात् 'कर्तव्यं' कृत्यम् 'तथा' तेनैव प्रकारेण ॥

गुणानं बहुमाणेणं वण्णवायं वए फुडं ।

जहा गुणानुरागेण लोगो मगं पवज्जई ॥८०॥

'गुणानां' क्षान्त्यादिकानाम्, 'बहुमानेन' आन्तरप्रीत्या, 'वर्णवादं' श्लाघाम्, । यथा-

साधूनां दर्शनं श्रेष्ठं, तीर्थभूता हि साधवः ।

तीर्थं पुनाति कालेन, सद्यः साधुसमागमः ॥२६६॥

तथा-

साहूण वंदणेणं णासइ पावं असंकिया भावा ।

फासुयदाणे णिज्जर उवग्गहो णाणमाईण ॥२६७॥

वदेत् 'स्फुटं' प्रकटम्, यथा गुणानुरागेण 'लोकः' जनो 'मार्गं' ज्ञानादिकं प्रतिपद्यते । यतः—

ज च्चिय सुहपडिवत्ती सव्वण्णुमयम्मि होइ पॅरिसुद्धा ।

स च्चिय जायइ बीयं बोहीए तेणणाएण ॥२६८॥

अहापवत्तसुद्धाणं संताणं फासुयाण य ।

एसणिज्जाण कप्पाणं तिहा वि विहिणा सयं ॥८१॥

'यथाप्रवृत्तशुद्धानां' यथाप्रवृत्तानि आत्मग्रहाद्यर्थं व्यापारितानि, तानि च तानि शुद्धानि च विशुद्धजीविकोत्पादितानि, तेषामशनादिद्रव्याणां यतीनां दानमिति सम्बन्धः । 'सतां' गृहे विद्यमानानां तत्तद्यतकादिगृहीतानां तत्र प्राधूर्यकसमायातसाधुनिमित्तदरिद्रभगिनीश्वरश्रेष्ठिगेहगृहीततैलपलिकाप्रतिदान-शक्ति विकलवर्धिततैलपलिकाप्राप्तदासत्वनारीवद् दोषसम्भवात् । 'फासुयाण य'ति प्रासुकानां=गतजीवानाम्, 'एषणीयानां' द्विचत्वारिंशदोषविशुद्धानाम्, 'कल्पनीयानां' साधुयोग्यानाम्, 'त्रिधाऽपि' इति मनोवाक्कायशुद्ध्या 'विधिना' विधानेन 'सयं'ति स्वयम्=आत्महस्तेन, 'स्वहस्तेन हि यद्दत्तं तदेव धनिनां धनम्' इति वचनात् ॥

१. सं० वा० सु० काइव्व ॥ २. ला० सर्वादरेण निः० ॥ ३. ला० °णाण बहुमाणेण व ॥ ४. सं० वा० सु० पडिसुद्धा ॥

काले पत्ताण पत्ताणं धम्मसद्धा-कमाङ्गणा ।
असणार्इण दव्वाणं दाणं सव्वत्थसाहणं ॥८२॥

‘काले’ प्रस्तावे तस्यैव बहुफलत्वात् । उक्तं च-

काले दिण्णस्स पहेणयस्स अग्घो ण तीरण काउं ।
तस्सेव अथक्कपणामियस्स गिण्हंतया णत्थि ॥२६९॥

‘प्राप्तानां’ गृहाङ्गणमागतानाम् ‘पात्राणां’ विशिष्टगुणवतां क्रयादिनिवृत्तानाम्, उक्तं च-

आरंभणियत्ताणं अकुणंताणं अकारवेताणं ।
धम्मट्ठा दायव्वं गिहीहि धम्मे कयमणाणं ॥२७०॥ (बृ० क० भा० गा० २८०९)

‘धर्मश्रद्धा-क्रमादिना’ धर्मश्रद्धया च विशिष्टभावोल्लासेन; क्रमेण च देशप्रसिद्धेन, आदि-
शब्दात् सत्कार-सन्मानादिग्रहः, ‘अशनादीनाम्’ ओदनादीनाम्, आदिशब्दात् पान-खाद्या-
ऽऽस्वाद्यादिग्रहः । उक्तं च—

अशनमखिलं खाद्यं स्वाद्यं भवेदथ पानकं, यतिजनहितं वस्त्रं पात्रं सकम्बलप्रोज्जनम् ।
वसतिफलकं प्रख्यं मुख्यं चरित्रविवर्धनं, निजकमनसः प्रीत्याधायि प्रदेयमुपासकैः ॥२७१॥

‘द्रव्याणां’ वस्तूनां ‘दानं’ वितरणम्, यतिभ्य इति गम्यते । पूर्वोक्तगुणकलापोपेतवस्तुभिश्च
ये प्रतिलाभयन्ति साधून् त एव धन्याः । यत उक्तम्-

प्रायः शुद्धैस्त्रिविधविधिना प्राशुकैरेषणीयैः,
कल्प्यप्रायैः स्वयमुपहितैर्वस्तुभिः पानकाद्यैः ।
काले प्राप्तान् सदनमशनं श्रद्धया साधुवर्गान्,
धन्याः केचित् परमवहिता हन्त ! सन्मानयन्ति ॥२७२॥

‘सर्वार्थसाधकं’ निःशेषार्थकारकम् । उक्तं च—

तर्षेऽम्बु क्षुधि भोजनं पथि रथः शय्या श्रमे नौर्जले,
व्याधौ सत्प्रतिचारकौषधभिषक् सम्पद्विदेशे सुहृत् ।
छायोष्णे शिशिरे शिखी प्रतिभये त्राणं तमिस्त्रे प्रभा,
दानं संसरतां भवे प्रतिभवे चिन्तामणिर्देहिनाम् ॥२७३॥

दाणु भूय वसि करइ दाणु सोहगु पयासइ,
 दाणु विग्घणिहलइ दाणु जणि जसु उल्लासइ ।
 दाणु सगु अपवगु देइ अन्नु वि जं जं मणि,
 दाणतुल्लु ण वि अत्थि इत्थ तिहुयणि चिंतामणि ॥२७४॥

आदिशब्दसूचितवस्तूनि स्वयमेवाऽऽह-

असणं खाइमं पाणं साइमं भेसहोसहं ।
 वत्थं पडिगाहं चेव रओहरण कंबलं ॥८३॥

‘अशनं’ भक्तादि । उक्तं च-

असणं ओयण-सत्तुग-मुग्ग-जगाराइ खज्जगविही य ।
 खीराइ सूरणाई मंडगपभिई य विण्णेयं ॥२७५॥ (पञ्चा० गा० २२)

तत्र ओदनः=कूरम् । जगारीशब्दस्तु सिद्धान्तभाषया गदितत्वाद् अव्याख्येयः । ‘खाइमं’
 खादिमं=भक्तोस(क्तौष)कादि । उक्तं च—

भक्तोसं दंताई खज्जूरं नालिकेर-दम्खाई ।
 कक्कडिगं-डंबग-फणसाइ बहुविहं खाइमं णेयं ॥२७६॥ (पञ्चा० गा० २२९)

‘पाणं’ति पानकं=सौवीरादि । उक्तं च—

पाणं सोवीर-जवोदगाइ चित्तं सुराइयं चेव ।
 आउक्काओ सव्वो कक्कडगजलाइयं चेव ॥२७७॥ (पञ्चा० गा० २८८)

‘साइमं’ति खाद्यं=दन्तपचनादि । उक्तं च—

दंतवणं तंबोलं चित्तं तुलसी-कुहेडगाईयं ।
 महु-पिप्पलि-सुंठाई अणेगहा साइमं णेयं ॥२७८॥ (पञ्चा० गा० २३०)

‘भेसहं’ति भेषजं प्रचुरद्रव्यनिष्पन्नं नागरावलेहादि पथ्यं वा, ‘ओसहं’ति एकद्रव्यमेव,
 ‘वत्थं’ति वस्त्रम्, ‘पडिगाहं’ति पतद्ग्रहकः पात्रमित्यर्थः । चेवशब्दो दण्डकादिसूचनार्थः ।
 ‘रओहरणं’ति रजोहरणं=दण्डकदशादिनिष्पन्नमिति भावः, ‘कंबलं’ति कम्बलमौर्णिकम् ॥ •

१. ला० वस ॥ २. सं० वा० सु० विग्घणिहलणु ॥ ३. ला० ‘ब्दसूचि’ ॥ ४. सं० वा० सु० पु०
 सओसहं ॥ ५. सं० वा० सु० इ ॥ ६. ला० ‘दनं कूरं ॥ ७. ला० मं’ति खाद्यं भक्तो ॥ ८. ला० नालिए ॥
 ९. ला० यं च तहा ॥ १०. ला० ‘गाई य ॥ ११. ला० ‘मं होइ ॥ १२. ला० ‘हकं पा’ ॥

पीढगं फलगं चेव सेज्जा संथारगं तहा ।

धम्मोवगरणं णाणा णाणाईण पसाहणं ॥८४॥

‘पीठकम्’ आसनम्, ‘फलकं’ शयनकाष्ठम्, ‘चव’शब्दः शेषभेदसंसूचनार्थः, ‘शय्या’ वसतिः सर्वाङ्गीणशयनं वा, ‘संस्तारकः’ अर्धतृतीयहस्तप्रमाणः कम्बलीमयः, ‘तथा’ तेनैव प्रकारेण, ‘धर्मोपकरणं’ धर्मसाधनम्, ‘नाना’ अनेकप्रकारम्, ज्ञानादीनां ‘प्रसाधनं’ कारणम्, देयमिति सम्बध्यते । इति श्लोकषट्कार्थः ॥७९-८४॥

साम्प्रतं दानदायिनामिहलोक-परलोकफलसूचकदृष्टान्तान् श्लोकद्वयेनाऽऽह-

असणाईण दाणेणं इहइं भोगसंपया ।

इड्डा दिड्डा य दिड्डंता मूलदेवाइणो बहू ॥८५॥

परलोगम्मि सत्थाहो धणो गामस्स चिंतओ ।

सैयंसो चंदणा दोणो संगमो कयउन्नओ ॥८६॥

‘अशनादीनां’ पूर्वोक्तानाम्, ‘दानेन’ वितरणेन, ‘इहइं’ ति अत्रैव जन्मनि, ‘भोगसम्पद्’ भोगलक्ष्मी-र्भवतीत्यध्याहारः । अत्राऽर्थे ‘इष्टा’ अभीप्सिताः, ‘दृष्टाश्च’ अवलोकिताः, चकारात् श्रुताश्च, ‘दृष्टान्ताः’ उदाहरणानि, ‘मूलदेवादयः’ मूलदेवप्रभृतयः, ‘बहवः’ प्रभूता इति ॥

‘परलोके’ अन्यजन्मनि, सार्थवाहो ‘धनः’ धननामा प्रथमतीर्थकृज्जीवः, ‘ग्रामस्य चिन्तकः’ पश्चिमतीर्थकरज्जीवः, ‘श्रेयांसः’ प्रथमजिनप्रथमपारणकदाता, ‘चन्दना’ चन्दनबाला गृहीतदुस्तराभिग्रहश्रीवीरजिनपारणककारयित्री, श्रेयांस-चन्दनयोश्च तद्भवापेक्षया मुक्तिपदं परलोकः, तच्च दानफलमित्यभिप्रायः, ‘दोणो’ति द्रोणनामा कर्मकरः, ‘सङ्गमकः’ शालिभद्रज्जीवः, कृतपुण्यकश्च प्रतीतः । एते दृष्टान्ताः पारलौकिकदानफलविषया इति श्लोकद्वयाक्षरार्थः ॥८५-८६॥

भावार्थस्तु कथानकेभ्योऽवसेयः । तानि चामूनि, तत्र तावद् मूलदेवकथानकं कथ्यते—

[२४. मूलदेवकथानकम्]

अत्थि पाडलिपुत्तं णाम नगरं, जं च संकेयठाणं पिव रम्मयाए, कुलहरं पिव लच्छीए, मंदिरं पिव समत्थकुसलायाराणं, णिवासो व्व विविहविलासाणं, आगरो व्व सुयणजणरयणाणं, आलओ व्व धम्मस्स, उप्पत्तिभूमि व्व नीसेसविज्जाणं ति । तत्थाऽसेसकलाकुसलो महाविण्णाण-

रूव-लावणवन्नतारुणसमण्णिओ दक्खो विणीओ सरलो चाई कयण्णू गुणाणुराई पंडिओ वियङ्को पडिवण्णसोहिओ सूहवो पियंवयो दीण्णवच्छलो जूयवसणी चोरियापसत्तो महाधुत्तो साहसजुत्तो य अत्थि मूलदेवो णाम छड्लो । भणियं च—

मणहरकलाभिरामो संपुण्णससि व्व तत्थ परिवसइ । विउसेसु परमविउसो, धम्मरओ धम्मियणरेसु । १।
 रूवीसु पंचबाणो, समणो समणेसु, माइसु वि माई । सरलेसु परमसरलो, कारुणिओ दीण-किविणेसु । २।
 चोरेसु परमचोरो, जूययरेसुं च परमजूययो । धुत्तेसु परमधुत्तो, साहसियनरेसु साहसिओ । ३।
 इय जेण जेण समयं संबंधं जाइ तस्स तं भावं । परिणमइ मूलदेवो आयरिसो चेव दव्वेसु । ४।
 विम्हावित्तो लोयं अणेगकोउहलेहिं सो तत्थ । वियरइ पुरे जहेच्छं जूए य अइप्पसंगिल्लो । ५।
 ‘जूयवसणि’ त्ति काउं जणगेणऽवमाणिओ पुरवराओ । णिगंतूणं पत्तो उज्जेणिं णाम वरणयरिं । ६।
 जीएँ कलंकं मयलंछणम्मि, अथिरत्तणं च रइकलहे । करगहणं वीवाहे, अकुलीणत्तं सुरगणेसु । ७।
 सुमिणम्मि विप्पलंभो, कामिणिलोयम्मि विब्भमो जीए । विग्गह-णिवाय-उवसणदंसण सदसत्थेसु । ८।
 राया वि जीएँ नियबलनिदारियदरियरिवुनरेदोहो । पणइयणकप्परुक्खो जियसत्तू दसदिसिपयासो । ९।

तीएँ य नगरीए सो मूलदेवो रायउत्तो गुलियापओगेण कयवामणयरूवो विम्हावेइ विचित्तकहाहिं गंधव्वकलाहिं णाणापओगेहिं य णागरजणं, पत्तो य परं पसिद्धिं ।

इओ य अत्थि तत्थ रूव-लावण-विण्णाणगव्विया देवदत्ता णाम पहाणगणिया । अवि य—

चउसड्डिकलाकुसलो चउसड्डिविलासिणीगुणसमग्गा । बत्तीससु अच्चत्थं कुसला पुरिसोवयारेसु । १०।
 इगुणत्तीसविसेसे रममाणी पवरपोढिमाजुत्ता । इगवीसरइगुणधरा अट्टारसदेसभासविऊ । ११।
 इय सव्वेसु वि वेसियसत्थविसेसेसु सा सुनिम्माया । रंजिज्जेण केण वि सामण्णरेण सुवियङ्का । १२।

तओ कोउगेण तीएँ खोहणत्थं पच्चूससमए आसण्णत्थेण आढत्तं सुमहुरं बहुभंगि घोलिकंठं अण्णणवण्णसंवेहरमणेज्जं गंधव्वं । सुयं च तं देवदत्ताए, चित्तियं च ‘अहो ! अउव्वा वाणी, ता देवो एस कोइ, ण मणुस्समेत्तो’ । गवेसाविओ चेडीहिं । गवेसिऊण कहिओ ताहिं जहा ‘सामिणि ! एस महुमहाणुकारी असेसविण्णाणणिहाणं सव्वणयरीज्जमणोहारी को वि बाहिं गायणच्छलेणं वसीक्रेइ जण’ । तओ तीएँ पेसिया माहवाहिहाणा खुज्जचेडी । गंतूण य विणयपुव्वयं भणिओ तीएँ “भो

१. ला० वण्ण-तारुणयस ॥ २. ला० ‘ण-किविणवच्छलो तहा जूय’ ॥ ३-४. ला० जूइय ॥ ५. सं० वा० सु० सुमण ॥ ६. ला० ‘ए नय’ ॥ ७. सं० वा० सु० म्हावेत्तोविचि ॥ ८. ला० ‘णाको उगेहिं या। ९. ला० ‘लाकलिया च’ ॥ १०. ला० ‘णवरा ॥ ११. ला० ‘देसिभा’ ॥ १२. सं० वा० सु० ‘ता दिव्वो एसा। १३. ला० ‘मणहारी ॥

महासत्त ! अम्ह सामिणी देवदत्ता विण्णवेइ 'कुणह पसायं एहं अम्ह घरं' । तेण वि वियङ्कयाए भणियं 'न पओयणं मे गणियांसंणेणं, निवारिओ विसिद्धाण गणियायणसंजोगो । भणियं च-

या विचित्रविटकोटिनिघृष्टा, मद्य-मांसनिरताऽतिनिकृष्टा ।

कोमला वचसि चेतसि दुष्टा, तां भजन्ति गणिकां न विशिष्टाः ॥२७९॥

याऽपतापनकराऽग्निशिखेव, चित्तमोहनकरी मदिरैव ।

देहदारणकरी क्षुरिकेव, गर्हिता हि गणिकाऽसलिकेव ॥२८०॥

अन्यस्मै दत्तसङ्केता, वीक्षतेऽन्यं, गृहे परः ।

अन्यश्चित्तेऽपरः पार्श्वे, गणिकानामहो ! नरः ॥२८१॥

कुर्वन्ति चाटुकर्माणि यावत् स्वार्थः प्रपूर्यते ।

च्युतसारं विमुञ्चन्ति निर्लक्षाऽलक्तकं यथा ॥२८२॥

अओ णत्थि मे गमणाभिलासो । तीए वि अणेगाहिं भणिइभंगीहिं आराहेऊण चित्तं महानिबन्धेण करं घेतूण णीओ घरं । वच्चंतेण य सा खुज्जा कलाकोसल्लेण विज्जापओगेण य अप्फालेऊण कया पउणा । विम्हयखेत्तमणाए य पवेसिओ सो भुवणे । दिट्ठो देवदत्ताए वामर्णयरूवो वि अउव्वलावण्णधारी, विम्हियाए दवावियमासणं । निसण्णो य सो । दिण्णो तंबोलो । दंसियं च माहवीए अत्तणो रूवं । कहिओ य वड्यरो । सुट्ठुयं विम्हियाए पारद्धो आलावो । महुराहिं वियङ्कभणिईहिं तेण आगरिसियं तीए हिययं । भणियं च-

अणुणयकुसलं परिहासपेसलं लडहवाणिदुल्ललियं ।

आलवणं पि हु छेयाण कम्मणं किं च मूलीहिं ? ॥२८३॥

एत्थंतरे आगओ तत्थ एगो वीणावायगो । वाइया तेण वीणा । रंजिया देवदत्ता, भणियं च 'साहु भो वीणावायग ! साहु, सोहणा ते कला' । मूलदेवेण भणियं 'अहो ! अइणिउणो उज्जेणीजणो जाणइ सुंदरा-ऽसुंदरविसेसं' । देवदत्ताए भणियं 'भो ! किमेत्थ खूणं ?' । तेण भणियं 'वंसो चेव असुद्धो, सगब्भा य तंती' । तीए भणियं 'कहं जाणेज्जइ ?' । तेण भणियं 'दंसेमि अहं' । तओ समप्पिया वीणा । कड्ढिओ वंसाओ पाँहाणो, तंतीओ वालो, समारेऊण वाइउं पवत्तो । कया पराहीणमाणसा सपरियणा देवदत्ता । पच्चासंणे य करेणुया सया रमणसीला

१. सं० वा० सु० 'ह घरं' ॥ २. सं० वा० सु० 'यासम(संग)मेणनि' ॥ ३. ला० 'क्षुरिकेव' ॥ ४. सं० वा० सु० 'सो' । तेहि वि ॥ ५. ला० 'करे घे' ॥ ६. सं० वा० सु० 'ण अप्फा' ॥ ७. ला० 'भवणे' ॥ ८. सं० वा० सु० 'णकयरूवो' ॥ ९. ला० 'हिं आगरिसियं तेण तीए' ॥ १०. सं० वा० सु० 'पाहणो' ॥ ११. ला० 'पयत्तो' ॥ १२. सं० वा० सु० 'सण्णकरे' ॥

आसि, सा वि ठिया घुमंती ओलंबियकण्णा । अईवविम्हिया देवदत्ता वीणावायगो य 'अहो ! पच्छण्णवेसो विस्सकम्मा एस' । णिवडिऊण चलणेसु विण्णत्तं वीणावायगेण 'सामि ! सिक्खामि तुज्झ सयासे वीणाकलं' ति । मूलदेवेण भणियं 'ण सम्ममहं वियाणामि, जाणामि पुण जे एईए पारगा' । देवदत्ताए भणियं 'के ते ? कहिं वा दिट्ठा ?' । मूलदेवेण भणियं 'भण्णए पाडलिउत्ते विक्रमसेणो कलायरिओ । मूलदेवो य ताण अहमासणसेवी' ।

इत्थंतरम्मि य समागओ विस्सभूई णाम णट्टायरिओ । तओ भणियं देवदत्ताए 'एस महाणट्टायरिओ, भरहं एयस्स पच्चक्खं सव्वं' । मूलदेवेण भणियं 'आमं महाणुभावो एस, एयस्सागई चेव साहेइ विण्णाणाइसयं । जावाढतो भरहम्मि वियारो तओ वामणयवेसधारिणं पेच्छिऊणं विस्सभूई रीढं पकरिओ । तओ मूलदेवेण चिंतियं 'पंडेच्चाऽभिमाणी एस, ता करेमि एयस्स सिक्खं' ति । तओ पुणो वि पुच्छिओ जहा 'एयस्स य एयस्स य एयस्स य कहमविरोहो भवइ ?' । तेण वि जंपियमसंबद्धं किं पि । मूलदेवेण भणियं 'भो एवंविहेणावि विण्णाणेण गव्वं वहसि ?' । तओ तुण्हिको ठिओ विस्सभूई । भणिओ य मूलदेवो देवदत्ताए जहा 'भो महाभाग ! सोहणं तुब्भेहिं भणियं, किंतु एयं एवंविहं चेव, ण इत्थ कीवि परिहारो अत्थि' । मूलदेवेण भणियं 'को इत्थ परिहारो कीरइ ? इमं वा(चेव) चोज्जं ति, जओ एयमेवंविहं, एयं च एवंविहं' ति । तओ तुट्ठा देवदत्ता चिंतियं च 'किं एसो भरहो पच्छण्णरूवी आगओ ? ति, ता अवस्सं पुज्जंति मे मणोरहा एयम्मि' । पुच्छिओ य अण्णाणि वि संदिद्धट्टाणाणि । कयाणि सव्वाणि वि निस्संदिद्धाणि । लज्जापराहीणमाणसो य 'संपयं नट्टवेला ता लहुं पउणीहोही' ति भणेऊण उट्ठिओ विस्सभूई ।

देवदत्ताए वि भणिया दासचेडी 'हला ! हक्कारेहि अंगमदयं जेण दो वि अम्हे मज्जामो' । मूलदेवेण भणियं 'अणुमण्णह अहं चेव करेमि तुज्झऽब्भंगणकिरियं' । 'किमेयं पि जाणसि ?' । 'ण याणामि, परं ठिओ जाणगाण सगासे' । तओ आणियाणि सयपागाईणि तेलाणि । आढतो अब्भंगिउं । अउव्वपाँलिगाइविहाणेण कया पराहीणमाणसा एसा । चिंतियं च णाए 'अहो ! विण्णाणाइसओ, अहो ! अउव्वो करयलफासो, ता भवियव्वं इमिणा केणइ पच्छन्नरूवेण सिद्धपुरिसेण, ण एवरूवस्स एवं पगरिसो ति, ता पगडीकारावेमि से सरूवं' ति । णिवडिया

१. ला० 'स्स सव्वं पच्चक्खं । मू० ॥ २. ला० 'व कहइ ॥ ३. ला० 'मि से सिक्खवणं ति ॥ ४. ला० 'स्स स [र]स्स कह' ॥ ५. ला० हवइ ॥ ६. ला० गव्वमुव्वहसि ॥ ७. ला० 'हा महा' ॥ ८. ला० कोइ ॥ ९. ला० 'ण लविअं 'को' ॥ १०. ला० 'रो कीइसं कीइसं वा चो' ॥ ११. ला० वयत्ता ॥ १२. ला० एससो ॥ १३. ला० 'होइ ति ॥ १४. सं० वा० सु० हक्कारेह अं' ॥ १५. ला० तुम्ह अब्भं' ॥ १६. ला० 'पालगाइ' ॥ १७. ला० तो ॥ १८. सं० वा० सु० 'डिकरेमि से ॥

चलणेसु, भणिओ य 'भो महाणुभाव ! असरिसगुणेहिं चेव णाओ उत्तमपुरिसो पडिवण्णवच्छलो दक्खिण्णपहाणो य तुमं, ता दंसेहि अप्पाणयं, बाढं उक्कंठियं तुह दंसणस्स मे हिययं' ति । पुणो पुणो णिब्बन्धे कए ईसि हसेऊण अवणीया वेसपरावत्तिणी गुलिया मूलदेवेण । जाओ सहावत्थो दिणमणि व्व दिप्पंततेओ, अणंगो व्व कामिणीयणमणोहरो, चंदो व्व जणमणाणंदयारी, बुद्धो व्व सुविभत्तगतो अप्पडिरूवलावण्णजुव्वणधरो । तं च दडूण हरिसवसोब्धिण्णबहलरोमंचा णिवडिया चरणेसु । भणियं च 'सामि ! महापसाओ' ति । तओ अब्भंगिओ एसो सहत्थेहिं । मज्जियाइं दो वि महाविभूईए । परिहाविओ देवदूसे । भुत्तं थोवथोवं । सिक्खविया य अउव्वकरण-नट्ट-गंधव्वाइयं । पुणो वि भणियं देवदत्ताए 'महाभाग ! न तुमं वज्जिय अणुरंजियं मे अवरपुरिसेण माणसं, ता सच्चमेयं-

णयणेहिं को ण दीसइ ? केण समाणं ण हुंति आलावा ? ।

हिययाणंदं जं पुण जणेइ तं माणुसं विरलं ॥१३॥

ता ममाऽणुरोहेण इत्थ घरे णिच्चमेवाऽऽगतव्वं' । मूलदेवेण भणियं 'गुणाणुरागिणि ! अण्णदेसेसु णिद्धणचंगेसु अम्हारिसेसु ण रेहइ पडिबन्धो, न इ थिरीहवइ, पाएण सव्वस्स वि कज्जवसेण चेव णेहो, भणियं च—

वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः शुष्कं सरः सारसाः,
पुष्पं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपा दग्धं वनान्तं मृगाः ।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं नृपं सेवकाः,
सर्वः कार्यवशाज्जनोऽभिरमते कः कस्य को वल्लभः ॥

तीए भणियं 'सदेसो परदेसो वा अकारणं सप्पुरिसाणं, भणियं च—

देसु परायउं आपणउ' काउरिसह पडिहाइ ।
सीहहं जहिं वणि अत्थवइ, पियरि विढत्तउं नाइ ॥२८५॥

अण्णं च-

जलहिविसंघडिएण वि निवसेज्जइ हरसिरम्मि चंदेण ।

जत्थ गया तत्थ गया गुणिणो सीसेण वुज्झंति ॥२८६॥

१. ला० अत्ताण ॥ २. सं० वा० सु० यं ति, बा ॥ ३. सं० वा० सु० 'णीमणमणोहारो ॥ ४. ला० चलणे ॥ ५. ला० 'णो भणि ॥ ६. ला० माणसं ॥ ७. ला० रेहए ॥ ८. सं० वा० सु० सर्वः स्वार्थव ॥ ९. सं० वा० सु० वाऽऽइकारणं सप्पु ॥ १०. ला० 'उ अप्पणउ ॥ ११. ला० कावुरिसहं पडि ॥ १२. ला० 'ह जिणि व ॥ १३. ला० अत्थमइ ॥ १४. ला० विढत्तउ ॥

तहा अत्थो वि असारो नं य तम्मि वियक्खणाण बहुमाणो, अवि य गुणेषु चेवाऽणुरागो हवइ ति । जओ-

वाया सहस्समंइया, सिणेहणिज्झाइयं सयसहस्सं ।

सब्भावो सज्जणमाणुसस्स कोडिं विसेसेइ ॥२८७॥

ता सव्वहा पडिवज्जसु मम पत्थणं' ति । तओ पडिवण्णमणेण । जाओ तेसिं णिब्भरो णेहसंबंधो ।

एवं जाव विसिद्धविणोएण चिट्ठंति ताव 'पेच्छणयवेला वट्ठइ' ति काऊणाऽऽगओ तीए हक्कारणत्थं रायपडिहारो । गया य पच्छणवेसधारिणं मूलदेवं धेतूण । आढत्ता नच्चिउं । वाइओ मूलदेवेण पडहो । अक्खित्तो राया ससामंतो पाडलिपुत्तनयरसामिपेसियरायदोवारियविमलसीहो य । तुट्टेण य राइणा दिण्णो से वरो । नासीकओ य । पुणो तीए गाइयं मूलदेवसहियाए मणोहरयं, तयणुलणं च नच्चियं दुवइखंडं । तओ अच्चंतं तुट्टेण राइणा दिण्णमंगलगमाभरणं । विमलसीहेण भणियं 'भो महाराय ! पाडलिउत्ते मूलदेवस्स परं एरिसो विण्णाणाइसओ एईए य, नत्थि अन्नस्स तइयस्स, ता अम्हाऽणुमएणं देज्जउ एईए मूलदेवाणंतरविण्णाणपडागा नट्टिणीपट्टो य' । दिण्णं च तं राइणा । तओ देवदत्ताए चरणेषु निवडेऊण भणिओ राया 'देव ! महापसाओ, परमणुकमो एस जं पढमो लाभो उवज्झायस्स भवइ, उवज्झाओ य एस अम्हाणं, संपयं देवो पमाणं' । राइणा भणियं 'भो महानुभाव ! अणुमण्णीयउ एयमेईए' । मूलदेवेण भणियं 'जं देवो आणवेइ' । तीए भणियं 'सामि ! महापसाओ'ति ।

इत्थंतरम्मि वाइया वीणा मूलदेवेण । कओ सव्वो वि पराहीणमाणसो रंगो । तओ जंपियं विमलसीहेण 'महाराय ! पच्छणरूवी मूलदेवो खु एसो, ण अण्णस्स एरिसं विण्णाणं, न वा एरिसस्स विण्णाणस्स अण्णो उवज्झाओ, रायाएसेण य भमिया मए पुहई, न एत्थं तइयं रयणं दिट्ठं ति, ता धण्णो तुमं जस्सेरिसरयणसंगहो' । तओ राइणा भणिओ मूलदेवो 'भो महानुभाव ! महंतमम्हाण कोउगं ता जइ सच्चमेयं ता अम्होवरोहेण पयडेसु अत्ताणयं' । तओ सहासमवणीया गुलिया । ससंभमं उट्टिऊण पेरिरि(र)द्धो विमलसीहेण । निवडिओ य एसो रायचरणेषु । पूइओ सगोरवं तेणं । एवं च अच्चंताणुरत्ता तम्मि देवदत्ता चिट्ठए विसयसुहमणुहवंती ।

१. सं० वा० सु० न तम्मि ॥ २. सं० वा० सु० 'मद्विया ॥ ३. ला० 'णिज्जाइयं ॥ ४. ला० तेसिं नेहनिब्भरो सं बं ॥ ५. सं० वा० सु० 'यरिसा' ॥ ६. ला० चलणे ॥ ७. ला० 'ढमलाभो ॥ ८. ला० 'आ' । एत्थं ॥ ९. ला० तइयं ॥ १०. सं० वा० सु० परिसत्तो ॥ ११. ला० 'चलणे' ॥ १२. ला० सगउरवं ॥

तस्स य मूलदेवस्स सव्ववसणेहिंता वि जूयवसणे महंता आसत्ती, खणं पि न चिट्ठइ तव्विरहिओ। तओ देवदत्ताए भणिओ 'पिययम ! कोमुइमयलंछणस्स व हरिणपडिबिंबं तुम्ह सव्वगुणालयाण कलंकं चेव जूयवसणं बहुदोसणिहाणं च, यत उक्तम्-

धनक्षयकरं निन्द्यं कुल-शीलविदूषणम् ।

प्रसूतिः सर्वपापानां लोके लाघवकारणम् ॥२८८॥

संक्लिष्टचेतसो मूलमविश्वासकरं परम् ।

पापप्रवर्तितं द्यूतं विद्वद्भिः परिकीर्तितम् ॥२८९॥

तहा-

कुलकलंकणु सच्चपडिवक्खु,

गुरुलज्जा सोयहरु धम्मविग्घु अत्थह पणासणु,

जं दाण-भोगिहिं रहिउ पुत्त-दार-पिइ-माइमोसणु ।

जहिं न मुणेज्जइ देवगुरु, जहिं नवि कज्ज अकज्ज ।

तणुसंतावणि कुगइपहि तहिं पिय ! जूइ म रज्ज ॥२९०॥

ता सव्वहा परिहरसु इमं । अइरसेण ण सक्कइ परिहरिउमेसो ति ।

एत्तो य अत्थि नगरीए तत्थ रूवेण तुलियकंदप्पो । णियकुलभवणपईवो बंधवकुमुयाकरससंको ॥२९१॥

पणइयणकप्परुक्खो निम्मलजसपसरधवलियदियंतो । रिद्धीए धणयसरिसो सत्थाहो अयलणामो ति

सो य मूलदेवाओ पुव्वमेव तीए अणुरत्तो निरंतरदव्वपयाणाइणा भोगे भुंजइ, वहइ य मूलदेवस्सोवरि मणागं पओसं, मग्गइ य मूलदेवस्स छिद्दाणि, न गच्छइ तस्संकाए य मूलदेवो तीए घरं । अवसरमंतरेण भणिया य देवदत्ता जणणीए 'पुत्ति ! परिच्चयसु मूलदेवं, ण किंचि णिद्धणचुंगेण पओयणमेएण, सो महाणुभावो अयलो दाया पेसइ पुणो पुणो पभूयं दव्वं, तां तं चेवंगीकस्सु सव्वप्पणयाए, न एगम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइं माइंति, तां मुंच जूयारियमिमं' ति । तीए भणियं 'अंब ! नाहं एगंतेण धणाणुराणिणी, अवि य गुणेसु चेव पडिबद्धा' । जणणीए भणियं 'केरिसा तस्स जूयारस्स गुणा ?' । तीए भणियं 'केवलगुणमओ खु सो, जओ—

१. सं० वा० सु० 'तो य जू' ॥ २. ला० तओ भणिओ देवदत्ताए पिय' ॥ ३. सं० वा० सु० 'णस्सेव ह' ॥ ४. सं० वा० सु० अकज्जु ॥ ५. ला० 'पहि तिहिं' ॥ ६. सं० वा० सु० रज्जु ॥ ७. ला० 'रिच्चि(च्च)यसु ॥ ८. ला० 'कए प' ॥ ९. ला० उ० य मूल' ॥ १०. ला० 'तो दाया अयलो पेसइ पुणो पभू' ॥ ११. सं० वा० सु० 'रेह स' ॥ १२. ला० तो ॥ १३. ला० पु० जूयकारस्स ॥

सयलकलापत्तडो सरणागयवच्छलो पियाभासी । धीरो उदारचित्तो गुणाणुरागी विसेसणू ॥१६॥

अओ न परिच्चयामि एयं' । तओ सा अणेगेहिं दिड्ढंतेहिं आढत्ता पडिबोहेउं-आलत्ताए मणिए नीरसं पणामेइ, उच्छुखंडे पत्थिए छोइअं पणामेइ, कुसुमेहिं जाइएहिं कुसुमाणि चुंटेऊण बिंयुत्थमालं ढोएइ । चोइया पडिभणइ-जारिसमेयं तारिसो एस ते पिययमो, तहा विं न तुमं परिच्चयसि, सत्यश्चाऽयं प्रवादः-

अपात्रे रमते नारी, गिरौ वर्षति माधवः ।

नीचमाश्रयते लक्ष्मीः, प्राज्ञः प्रायेण निर्धनः' ॥२९१॥

देवदत्ताए भणियं 'पत्तमपत्तं वा कहमपरिक्खियं जाणेज्जइ ?' । जणणीए भणियं 'ता कीरउ परिक्खा' । देवदत्ताए य हड्डुत्ताए भणियं "जइ एवं ता गंतूण भणसु अयलं जहा 'देवदत्ताए उच्छुम्मि अहिलासो, ता पडवसु' । भणिओ बाइयाए । तेण वि अणुगहं मणममाणेण पेसियाणि उच्छुसगडाणि हरिसियाए जणणीए भणियं 'वच्छे ! पेच्छसु अयलसामिणो दाणसत्तिं' । सविसायं च भणियं देवत्ताए 'किमहं करेणूकया जेणेवंविहं समूलडालं उच्छुं पुंजीकरेज्जइ ? , ता संपयं भणसु मूलदेवं' । भणिओ सो वि । तेण वि घेत्तूण दोणि पम्हलपुंडुच्छुजडीओ निच्छोल्लेऊण कयाओ दुयंगुलपमाणाओ गंडियाओ, चाउज्जाएण य अववुणियाओ कप्पूरेण य वासियाओ सूलाहि य मणागं भिण्णाओ, पच्चगसरावसंपुडं भरेऊण पेसियाओ । दड्ढूण य हरिसभरनिब्भराए भणिया जणणी 'पिच्छ अम्मो ! पुरिसाणमंतरं ति, ता अहं एएसिं गुणाणमणुरत्ता' ।

जणणीए चित्तियं 'अच्चंतमोहिया एसा न परिच्चयइ अत्तणा, तो करेमि किंपि उवायं जेण एसेव कामुओ गच्छइ विदेसं, तओ सुत्थं हवइ' । ति चित्तिऊण भणिओ तीए अयलो 'कहसु एईए पुरओ अलियगामंतरगमणं, पच्छा मूलदेवे पविट्ठे मणुस्ससामग्गीए आगच्छेज्जसु विमाणेज्जसु य तं, जेण विमाणिओ संतो देसच्चायं करेइ, ता पउणो चिट्ठिज्जसु, अहं ते वत्तं दाहामि' । पडिवण्णं च तेण ।

अण्णम्मि दिणे 'अहमज्ज गामंतरं गमिस्सामि'त्ति भणेऊण पभूयदविणं च दाऊण णिगओ अयलो । पविसिओ य तीए मूलदेवो । जाणावियं च जणणीए अयलस्स । समागओ य महासामग्गीए । दिट्ठो य पविसमाणो देवदत्ताए । भणिओ य मूलदेवो 'नाह ! ईइसो चेवं इत्थ

१. सं० वा० सु० 'गुच्छमा' ॥ २. ला० वि तुमं न परि' ॥ ३. ला० 'ए हड्ड' ॥ ४. सं० वा० सु० 'ए उच्छुम्मि' ॥ ५. सं० वा० सु० 'विहाणि समूलडालउच्छुयपुंजी' ॥ ६. ला० 'जीकिज्जइ' ॥ ७. ला० 'णदेणिण लडीओ' ॥ ८. सं० वा० सु० 'लपुडुच्छु' ॥ ९. सं० वा० सु० 'ण वा' ॥ १०. ला० चिट्ठेसु ॥ ११. ला० अज्ज गा' ॥ १२. ला० 'व एस अव' ॥

अवसरो, पडिच्छियं च जणणीए एयपेसियं दव्वं, ता तुब्भे पल्लंकेहोओ मुहुत्तगं चेड्डह जाव विसज्जेमि एयं, । तओ तहेव ठिओ एसो । जाणाविओ य जणणीए अयलस्स । णिसण्णो सो पल्लंके । भणिया य सा तेण 'करेह ण्हाणसामग्गिं' । 'एवं'ति भणियं कया सामग्गी । भणियं च देवदत्ताए 'उट्टेह नियंसह पोत्तिं जेण-ऽअभंगिज्जह' । अयलेण भणियं जहा "दिट्ठो अज्ज मए सुमिणगो जहा 'नियत्थिओ चेव अब्भंगियगतो एत्थ पल्लंके आरूढो ण्हाओ म्हि' ता सच्चं सुमिणयं करेमो" । देवदत्ताए भणियं 'नणु विणासेज्जइ महगं तूलि-गंडुवगाइयं' । तेण भणियं 'अण्णं विसिद्धयरं दुगुणतिगुणं दाहामि' । जणणीए भणियं 'एवं होउ' । तओ तत्थ ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्ठिओ य उण्ह-खलीउदगेहि य मज्जिओ । भरिओ तेण हेड्डिओ मूलदेवो । गहियाउहा पविट्ठा पुरिसा । सण्णिओ जणणीए अयलो । गहिओ तेण मूलदेवो वालेहिं, भणिओ य 'रे संपयं निरुव्वहि जइ अत्थि कोइ ते सरणं ?' । तओ मूलदेवेण वि कोसीकयनिसियकरालकरवालकरनरविसरपरिवारियमत्ताणयं णिएऊण चिंतियं 'निराउहत्तणओ ण संपयं पोरुसेणुव्वरामि, एएसिं कायव्वं च वेरनिज्जायणं' । इय सामत्थेऊण भणियं 'जं वो रोयइ तं करेहि' । अयलेण वि 'किमेइणा उत्तमपुरिसेण विणासिएण ?, न दुल्लहाइं च विसमदसाविभागेण उत्तमपुरिसाणं पि वसणाइं, भणियं च—

सयलजयमत्थयत्थो देवाऽसुर-खयरसंथुयपयावो ।

दिव्ववसेण गसेज्जइ गहकल्लोलेण सूरु वि ॥२९२॥

सायरु सरियउ सरवरइ, भरओहरउ करंति ।

धर्णिं भणु दियहा देवह वि, एक्कइं दसइ न जंति ॥२९३॥

को इत्थ सया सुहिओ ?, कस्स व लच्छी थिराइं पेम्माइं ? ।

कस्स व न होइ खलियं ?, भण को व न खंडिओ विहिणा ? ॥२९४॥

चिंतिऊण भणिओ मूलदेवो 'एवंविहावत्थगओ मुक्को तुमं संपयं, ता ममावि एयावत्थगयस्स एवं करेज्जसु' ।

तओ विमणदुम्मणो 'पेच्छ कहमेण छलिओ मि' ति चिंतयंतो निग्गओ नयराओ । ण्हाओ^{१३} सरोवरे । कया पडिवट्ठी । तओ 'गच्छामि विदेसं, कोमि किंपि इमस्स पडिविप्पिओवायं' ति चिंतिऊण पत्थिओ बेण्णायडाभिमुहं । गामा-ऽऽगर-नगराइमज्झैणं^{१४} वच्चंतो पत्तो

१. सं० वा० सु० हयं । ता तेह ॥ २. सं० वा० सु० 'ट्ठो मए अज्ज सु' ॥ ३. ला० ण्हाओ मि ति (त्ति) ता ॥ ४. ला० 'ए जंपियं ए' ॥ ५. ला० 'ओ उण्हरवलीयउद' ॥ ६. ला० 'हियउ(ओ य) तेण ॥ ७. सं० वा० सु० अ ॥ ८. ला० 'वेह जइ ॥ ९. ला० इइ सा' ॥ १०. ला० धण्णेसणु दि' ॥ ११. ला० 'त्थकय व्व गय' ॥ १२. ला० 'ओ य स' ॥ १३. ला० गाम-नग' ॥ १४. ला० 'ण य व' ॥

दुवालसजोयणायामाए अडवीए मुहं ।

तत्थ य 'जइ कोइ वायासहाओ वि दुइओ लब्भइ ता सुहेणं चेव छिज्जए अडवि' ति चिंतयंतो जाव चिट्ठइ ताव समागओ संबलथइयासणाहो टक्कबंभणो, पुच्छिओ य 'भो भट्ट ! केदूरं गंतव्वं ?' । तेण भणियं 'अत्थि अडवीए परओ वीरणिहाणं णामं ठाणं तं गमेस्सामि, तुमं पुण कत्थ पत्थिओ ?' । मूलदेवेण भणियं 'बेण्णायडं' । इयरेण भणियं 'जइ एवं ता एहि गच्छम्ह' । तओ पयट्ठा दो वि । मज्झणसमये य वच्चंतेहिं दिट्ठं सरोवरं । धोविया तत्थ हत्थ-पाया । गओ मूलदेवो पालिसंठियं तरुच्छायं टक्केण वि छोडिया संबलथइया । गहिया वट्ठगमि सत्तुगा । ते जलेण उल्लेत्ता लगो खाइउं । मूलदेवेण चिंतियं 'एरिसा चेव भुक्खापहाणा बंभणजइ भवइ, वा भुत्ते मे दाहिस्सइ' । भट्टो वि भुंजेत्ता बंधेत्ता थइयं पयट्टो । मूलदेवो वि 'नूणं' अवरण्हे दाहिइ' ति चिंतंतो अणुपयट्टो । तत्थ वि तहेव भुत्तं, न दिण्णं । 'कल्लं दाहिइ' ति आसाए गच्छइ । वच्चंताणं य आगया रयणी । तओ ओसरिऊण मग्गाओ पसुत्ता । पच्चूसे पुंणो वि पत्थिया । मज्झण्हे तहेव थक्का । तहेव भुत्तं टक्केण । ण दिण्णमेयस्स । जाव तइयदियहे विचिंतियं 'मूलदेवेण णित्थिण्णपाया अडवी ता अज्ज अवस्स ममं दाहिस्सइ एस' । जाव तत्थ वि न दिण्णं । णित्थिण्णा य तेहिं अडवी जाया । तओ दुण्ह वि अण्णोणवट्ठाओ । तओ भट्टेण भणियं 'भो ! तुज्झ एसा वट्ठा, ममं पुण एसा, ता वच्च तुमं एयाए' । मूलदेवेण वि 'एयस्स पहावेण अडवी मए णित्थिण्ण' ति चित्तेऊण भणियं 'भट्ट ! मूलदेवो मज्झ णामं, णित्थिण्णा य तुह प्पहावेणं अडवी, जइ मए किं पि कयाइ पओयणं सिज्झइ तओ आगच्छेज्ज बेण्णायडं, किं च तुज्झ णाम ?' । भट्टेण भणियं 'सद्धडो, जणकयावडं' केण निग्घिणसम्मो णाम' । तओ पत्थिओ भट्टो सगामाभिमुहं, मूलदेवो वि बेण्णायडसम्मुहं ति ।

अंतराले य दिट्ठं वसिमं । तत्थ पविट्टो भिक्खाणिमित्तं । हिंडियमसेसं गामं । लद्धा कुम्मासा, न किं पि अन्नं । पत्थिओ जलासयाभिमुहं । इत्थंतरम्मि य तवसुसियदेहो महाणुभावो महातवस्सी दिट्टो मासोववासपारणयणिमित्तं तत्थ पविसमाणो । तं च पेच्छिय हरिसवसोब्भिण्णबलपुलएणं चिंतियं 'अहो ! धन्नो कयत्थो अहं, जस्स एयम्मि देसकाले एस महप्पा दंसणपहमागओ, ता अवस्स भवियव्वं मे कल्लाणपरंपराए, एयपडिलाहणेण य दिण्णो भवइ समत्थदुक्खाण जलंजली, महापत्तं च एसो, जओ-

१. सं० वा० सु० तत्थ वि जइ ॥ २. ला० तो ॥ ३. ला० भद् ! के ॥ ४. सं० वा० सु० 'यं अड' ॥ ५. ला० मंत्थाणं ॥ ६. ला० 'ठियत्' ॥ ७. ला० 'हिइ' ॥ ८. ला० भुंजिऊण बंधित्ता ॥ ९. ला० 'ण इ आ' ॥ १०. ला० 'णो मत्थि' ॥ ११. ला० 'इ तो आ' ॥ १२. ला० 'यडे किं' ॥ १३. सं० वा० सु० तुज्झं ॥ १४. ला० 'डक्केण' ॥ १५. सं० वा० सु० 'त्तं पवि' ॥ १६. ला० 'ण्णपुल' ॥ १७. ला० 'व्वं ममक' ॥

दंसण णाणविसुद्धं पंचमहव्वयसमण्णियं धीरं । खंती-मद्व-अज्जवजुत्तं मुत्तिप्पहाणं च ॥१७॥
सज्झाय-ज्झाण-तवोवहाणनिरयं विसुद्धलेसागं । पंचसमियं तिगुत्तं अकिंचणं चत्तगिहसंगं ॥१८॥
एरिसपत्तसुखेत्ते विसुद्धसद्धाजलेण संसितं । निहियं तु दव्वसस्सं इह-परलोगे अणंतफलं ॥१९॥

ता इत्थ कालोचिया देमि एयस्स एए चेव कुम्मासा, जओ अदायगो एस गामो, एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसावं दाऊण पडिणियत्तइ, अहं उण दोण्णि तिण्णि वारं हिंडामि ता पुणो वि लभेस्सामि, आसण्णो य अवरो बीओ गामो ता पयच्छामि सव्वे ईमि'त्ति । पणमिऊण पणामिया भगवओ कुम्मासा । साहुणा वि तस्स परिणामपगरिसं णाऊण दव्वाइसुद्धिं च वियाणिऊण 'धम्मसील ! थोवे देज्जह' ति भणिऊण धरियं पत्तगं । तेण वि पवड्डमाणपरिणामाइसएण सव्वे वि दाऊण पढियं—

‘धण्णाणं खु नराणं कुम्मासा हुंति साहुपारणए’

एत्थंतरम्मि गयणंगणगयाए महरिसिभत्ताए मूलदेवभत्तिरंजियाए भणियं देवयाए ‘पुत्त मूलदेव ! सुंदरमणुचेड्डियं तए, ता एयाए गाहाए पच्छिमद्धेण मगसु जं वो रोयइ जेण संपाडेमि सव्वं’ । मूलदेवेण भणियं ‘जइ एवं तो—

गणियं च देवदत्तं दंतिसहस्सं च रज्जं च’ ॥२०॥

देवयाए भणियं ‘पुत्त ! निच्चिंतो वियरसु अवस्सं महरिसिचरणाणुभावेण अइरेण चेव संपजिस्सइ एयं’ । मूलदेवेण भणियं ‘भगवइ ! एवमेयं’ ति । वंदिऊण रिसिं पडिणियत्तो । साहू वि गओ उज्जाणं । लद्धा अण्णा भिक्खा मूलदेवेण । भोत्तूण पयट्ठो बेण्णायडाभिमुहं । पत्तो कमेण तत्थ ।

पसुत्तो रयणीए बाहिं पहियसालाए । दिट्ठो चरिमजामम्मि सुमिणगो ‘किर पंडिउणमंडलो निम्मलपहापयासियजीवलोगो मयंको वयणेणोयरम्मि पविट्ठो’ । अण्णेण वि कप्पडिएण सो चेव सुमिणगो दिट्ठो, कहिओ य तेण चक्कयरकप्पडियाण । तत्थेगेण भणियं ‘अहो ! सोहणो सुमिणगो, लहिहिसि तुमं घय-गुल-संपुण्णं महंतं मंडयं’ । तेण वि ‘एवं होउ’त्ति भणियं । ‘न याणंति एए सुमिणयस्स परमत्थं’ ति न कहियं मूलदेवेण । लद्धो य कप्पडिएण घरछायणियाए जहोवइट्ठो मंडगो, तुट्ठो य एसो । निवेइओ कप्पडियाण ।

मूलदेवो वि पहाए गओ एगमारामं । आवज्जिओ कुसुमसमुच्चयसाहेज्जेण मालागारो ।

१. ला० ‘समाहियं’ ॥ २. ला० वारेहिं ॥ ३. सं० वा० सु० ‘स्सामो त्ति, आ’ ॥ ४. सं० वा० सु० इम त्ति ॥ ५. सं० वा० सु० ‘वस्स भत्ति’ ॥ ६. ला० ‘यं तुमे ता’ ॥ ७. ला० पच्छद्धेण ॥ ८. सं० वा० सु० ‘मेवं ति’ ॥ ९. ला० ‘ण य प’ ॥ १०. ला० चरिमजामेसु ॥ ११. ला० पडिपुण्ण ॥ १२. ला० एअं हो ॥ १३. सं० वा० सु० ‘छाइणि’ ॥ १४. ला० ‘इयउ(ओ य)क’ ॥

दिण्णाइं तेण पुप्फ-फलाइं । ताइं घेत्तूण सुइभूओ गओ सुमिणसत्थपाढयस्स गेहं । कओ तस्स पणामो । पुच्छिया खेमा-ऽऽरोगवत्ता । तेण वि संभासिओ सबहुमाणं, पुच्छिओ पओयणं । तेण जोडेऊण करसंपुडं कहिओ सुमिणयवइयरो । उवज्झाएण वि सहरिसेण भणियं 'कहेस्सामि सुहे मुहुत्ते सुमिणयफलं, अज्ज ताव अतिही होसु अम्हाणं' । पडिवण्णं च मूलदेवेण । तओ ण्हाय-जिमियावसाणे भणिओ उवज्झाएण 'पुत्त ! पत्तवरा मे एसा धूया, ता परिणेषु एयं ममोवरोहेण' । मूलदेवेण भणियं 'ताय ! कहमनायकुल-सीलं जामाउयं करेसि ?' । उवज्झाएण भणियं 'पुत्त ! आयारेण चेव जाणेज्जइ अकहियं पि कुलं । उक्तं च-

आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषितम् ।

सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम् ॥२९५॥

तहा—

को कुवलयाण गंधं करेइ ?, महरत्तणं च उच्छूणं ? ।

वरहत्थीण य लीलं ?, विणयं च कुलप्पसूयाणं ? ॥२९६॥

अहवा-

जइ होंति गुणा ता किं कुलेण ?, गुणिणो कुलेण न हु कज्जं ।

कुलमकलंकं गुणवज्जियाण गरुयं चिय कलंकं' ॥२९७॥

एवमाइभणिईए पडिवज्जाविऊण परिणाविओ । कहियं सुमिणयफलं 'सत्तदिणब्भंतरे राया होहिसि' । तं च सोऊण जाओ पहट्टमणो । अच्छइ य तत्थ सुहेण ।

पंचमे य दिवसे गओ नगरबाहिं । सुत्तो य चंपगतच्छायाए । इओ य तम्मि चेव दिवसे अपुत्तो राया कालगओ अहिवासियाणि आस-हत्थि-छत्त-चामर-भिंमारलक्खणाणि पंच दिव्वाणि । आहिंंडियाणी नयरीमज्झे, न य कोइ दिट्ठो रज्जारिहो । तओ णिगयाणि बाहिं परिभमंताणि समागताणि तमुद्देसं । तओ दड्डूण मूलदेवं हिंसियं तुरंगेण, गुलगुलियं गइं देण, अहिसित्तो भिंगारेण, विज्जिओ चामरेहिं, ठियमुवरि उदंडपुंडरीयं । तओ कओ लोएहिं जयजयारवो, पणच्चियं पायमूलेहिं, पयट्ठो अविहवविलयाण मंगलसट्ठो, पवज्जियाइं नंदितूराइं, आरोविओ जयकुंजरेण णियखंधे । पवेसिओ महाविभूईए । अहिसित्तो मंति-सामंतेहिं । भणियं च गयणंगणगयाए देवयाए 'भो भो !

१. ला० एसा कण्णया ता परिणेषु ममोवरोहेण एयं । मू० ॥ २. सं० वा० सु० 'यसीलं ॥ ३. ला० 'व नज्जइ अ' ॥ ४. ला० 'लं, यत उक्तम् आ' ॥ ५. ला० जल्पितम् ॥ ६. ला० 'व णयरे अपु' । ७. ला० 'रिब्भमं' ॥ ८. ला० तुरंगमेण, गुलुगु ॥ ९. सं० वा० सु० गयंदे ॥ १०. सं० वा० सु० 'एहिं जया' ॥ ११. सं० वा० सु० जइकुं ॥ १२. ला० गयणयलगया ॥

एस मंहाणुभावो असेसकलापारगो देवयाहिडियसरीरो विक्रमराओ णाम राया, ता एयस्स सासणे जो ण वट्टइ तस्स णाऽहं खमामि' ति । तओ सव्वो सामंत-मंति-पुरोहियाइओ परियणो आणाविहेओ जाओ । चिट्ठइ य उदारविसयसुहमणुहवंतो । आढत्तो उज्जेणिसामिणो जियसत्तुराइणा सह संववहारो, जाव जायापरोप्परं निरंतरा पीई ।

इओ य देवदत्ता तारिसं विडंबणं मूलदेवस्स पेच्छिय विरत्ता अईव अयलोवरि । तओ निब्भच्छिओ अयलो 'भो ! अहं वेसा, न उण तुहं कुलघरिणी, तहा वि मम गेहत्यो एवंविहं ववहरसि, ता मम कारणेणं न पुणो वि खिज्जियव्वं' । ति भणिय गया राइणो संग्गासे । चरणेसु णिवडिऊण विण्णत्तो तीए राया 'देव ! तेण वरेण किज्जउ पसाओ' । राइणा भणियं 'भण जं वो पडिहाइ' । तीए भणियं 'जइ एवं ता मूलदेवं वज्जिय नऽण्णो पुरिसो ममाऽऽणवेयव्वो, एसो य अयलो मम घरागमणे णिवारेयव्वो' । राइणा भणियं 'एवं, जहा तुह रोयइ, परं कहेहि को एस वुत्तंतो ?' । तओ कहिओ माहवीए । रुट्ठो राया अयलोवरि 'भो ! मम ईए नगरीए एयाइं दोण्णि रयणाइं ताइं पि खलीकरेइ एसो' । तओ हकारिय अंबाडिओ भणिओ 'रे ! तुमं इत्थ राया जेणेवं ववहरसि ?, ता निरूवेहि संपयं सरणं, करेमि तुह पाणविणासं' । देवदत्ताए भणियं 'सामि ! किमेइणा सुणहप्पाएण पडिखद्धेण ?' । राइणा भणियं 'रे ! छुट्ठो ताव संपयं ईए महाणुभावाए वयणेणं, सुद्धी उण ते तेणेव मूलदेवेण इहाऽऽणिएणं भविस्सइ' । तओ चरणेसु निवडिऊण निग्गओ रायउलाओ । आढत्तो गवेसिउं दिसोदिसिं । तओ जाव न लद्धो ताव तीए चेव ऊणिमाए भरेऊण भंडस्स वहणाइं गओ पारसकुलं ।

इओ य मूलदेवेण चिंतियं, 'किमेइणा सुंदरेणावि रज्जेण पियादेवदत्ताविरहिण ? , जओ भणियं—

भुज्जउ जं वा तं वा, निवसेज्जउ पट्टणे अरण्णे वा ।

इट्ठेण जत्थ जोगो तं चिय रज्जं, किमण्णेण ? ॥२९८॥

इट्ठा य मे देवदत्ता' । तओ पेसिओ लेहो कोसल्लियाइं च देवदत्ताए, राइणो य । भणिओ य राया 'मम ईए देवदत्ताए उवरि महंतो पडिबंधो, ता जइ एवं ईए अभिरुइयं तुम्हं य पडिहाइ

१. ला० 'त्तो य उ' ॥ २. ला० 'णा सह' ॥ ३. सं० वा० सु० 'या निरंतरा परोप्परं पीई' ॥ ४. सं० वा० सु० 'ओ-भो' ॥ ५. ला० 'ह घरिणी' ॥ ६. ला० 'महगे' ॥ ७. सं० वा० सु० 'एवं ववह' ॥ ८. ला० 'णं खिज्जि' ॥ ९. ला० 'णियं गया' ॥ १०. ला० 'सयासं' । चलणेसु ॥ ११. ला० 'कीरउ' ॥ १२. सं० वा० सु० 'वं जं तुह', ॥ १३. ला० 'यए प' ॥ १४. ला० 'सुणयप्पा' ॥ १५. ला० 'चलणे' ॥ १६. सं० वा० सु० 'डप्पवह' ॥ १७. ला० 'सउलं' ॥ १८. ला० 'तो जइ ईए' ॥ १९. ला० 'म्ह पडि' ॥

तो पसायं काऊण पसह एयं' । तओ राइणा भणियां रायदोवारिया 'भो ! किमयमेवंविहं लिहियं विक्कमराएण ?, किमम्हाण तस्स य अत्थि कोइ विसेसो ? जओ अम्ह रज्जं पि तस्स नियरज्जं चेव किं पुण देवदत्ता ?, परमिच्छउ सा' । तओ वाहरावेऊण भणिया देवदत्ता राइणा "भदे ! पुव्वं तए विण्णत्तमासि 'मूलदेव' मोत्तूण न अण्णो पुरिसो ममाऽऽणवेयव्वो' ता एस सो मूलदेवो देवयाए पसाएणं महानरेदो जाओ, इमे य तेण तुज्झाऽऽणयणत्थं पेसिया पहाणपुरिसा, ता गम्मउ तस्सयासं जइ तुज्झ पडिहाइ' । तीए भणियं 'महापसाओ, [पुण्णो य] तुम्हाऽणुण्णाए मणोरहो एस अम्हाणं' । तओ महाविम्भेण पडूऊण पेसिया एसा । पत्ता य तत्थ । तेण वि पवेसिया महाविभूईए । जायं च परोप्परमेगरज्ज । एवं च अच्छए मूलदेवो सह देवदत्ताए उदारं विसयसुहमणुहवंतो जिणभवणबिंबपूयात्तप्परो ति ।

इयो य सो अयलो पारसउले विढवियबहुदव्वो पवरं च भंडं भरेऊण आगओ बेण्णायडं । आवासिओ बाहिं । पुच्छिओ लोगो 'किमभिहाणो एत्थ राया ?' । कहियं च लोगेहिं 'विक्कमराउ' ति । तओ मणि-मोत्तिय-विदुमाण थालं भरेऊण गओ राइणो पेक्खगो । दवावियमासणं राइणा । निसण्णो य । 'अव्वो ! कत्थ एस सो अयलो ?' ति पच्चभिण्णाओ राइणा । ण णाओ एएण राया । तओ पुच्छियं राइणा 'कुओ सेट्ठी आगओ ?' । तेण भणियं पारसउलाओ । सम्माणिएणं य जहोचियपडिवत्तीए भणियमयलेण 'देव ! पेसह कोइ उवरिगो जो भंडं णिरूवेइ' ।

तओ राइणा भणिओ 'पवहणकोउगेणाहं सयमेवाऽऽणमेस्सामि' ति । अयलेण भणियं 'देव ! पसाओ' । तओ पंचउलसमणिओ गओ राया । दंसियं पवहणेसु संख-फोप्फल-चंदणा-ऽगुरु-मंजिट्ठाइयं भंडं । पुच्छियं पंचउलसमक्खं राइणा 'भो सेट्ठी ! इत्तियं चेवं भंडं ?' । तेण भणियं 'इत्तियं चेव' । राइणा भणियं 'भो ! सम्मं साहेज्जसु जओ मम रज्जे सुंकचोरियाए सारीरो निगहो' । अयलेण भणियं 'किं देवस्स वि अन्नहा निवेइज्जइ' । रण्णा भणियं 'जइ एवं तो कोरहं सिट्ठस्स अद्धदाणं, परं तोलेह मम समक्खं चोल्लागइ' । तोलियाइं पंचउलेण । तओ भारेण पायप्पहारेण धरावेहेण य लक्खियं मंजिट्ठाइमज्झगयं सारभंडं । तओ उक्किल्लावियाइं चोल्लागइं निरुवियाइं सम्मं जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं कत्थइ रूपं कत्थइ मणि-

१. ला० पेसेह ॥ २. ला० 'या दोवा' ॥ ३. ला० मेयं(वं) लिहि ॥ ४. ला० 'वं वज्जिय न ॥ ५. सं० वा० सु० एसो मू ॥ ६. ला० 'याकरणे तप्प' ॥ ७. सं० वा० सु० परवं (वरं) भंडं ॥ ८. सं० वा० सु० 'मसेणो ति ॥ ९. ला० 'वियं रायणा आसणं । नि' ॥ १०. ला० एसो अय ॥ ११. ला० 'ण जहो' ॥ १२. ला० कोवि उ ॥ १३. ला० 'स्सामि । अय' ॥ १४. ला० 'यं वह' ॥ १५. सं० वा० सु० 'ख-पोफल' ॥ १६. ला० 'व इमं ? तेण ॥ १७. सं० वा० सु० 'यं देव ! ॥ १८. ला० 'ह सेट्ठिस्स ॥ १९. सं० वा० सु० 'इं । संतोलि' ॥ २०. ला० 'ट्ठाए मज्झ' ॥ २१. ला० सारं भं ॥ २२. सं० वा० सु० उक्खेल्ला ॥ २३. सं० वा० सु० 'इ जाव ॥ २४-२६. सं० वा० सु० कत्थय ॥

मोत्तिय-पवालगाइमहग्घं भंडं । तं च दट्ठण रुट्ठण रण्णा णियपुरिसाण दिण्णो आएसो 'अरे ! बंधह पच्चक्खचोरं इमं' ति । वयणाणंतरमेव बद्धो तेहिं थरथरंतहियओ । दाऊण य रक्खवाले जाणेहिं गओ सभवणं राया । सो वि आरक्खगेहिं आणीओ रायसमीवं । गाढबद्धं च दट्ठण भणियं राइणा 'अरे ! छोडेह लहुं' ति । छोडिओय । तओ पुच्छिओ राइणा 'सत्थवाहपुत्त ! पच्चभिर्जाणासि ममं ?' । तेण भणियं 'देव ! सयलपुहईविक्खायजसे महाणरिदे को ण याणइ ?' । राइणा भणियं 'अलं उवयारवयणेहिं, फुडं साहसु जइ जाणसिं, । तेण भणियं 'देव ! जइ एवं, तो ण याणामि सम्मं' । तओ राइणा वाहराविया देवदत्ता । आगया वरच्छर व्व सव्वंगभूसणधरा । ओलक्खिया अयलेण । लज्जिओ मणम्मि बाढं । भणियं च तीए "भो ! एसो सो मूलदेवो जो तुमे भणिओ तम्मि काले 'ममावि कयाइ विहिनिओगेण वसणं पत्तस्स एवं चेव करेज्जसु', ता एस सो अवसरो मुक्को य तुममज्ज सरीरसंसयमावण्णो वि पणय-दीणजणवच्छलेण ऽज्जउत्तेण' । इमं च सोऊण विलक्खमाणसो 'महापसाओ' ति भणिय पडिओ राइणो देवदत्ताए य चरणेसु, भणियं च 'कयं मए जं तथा सयलजणणिव्वुतिकरस्स णीसेसकलासोहियस्स देवस्स णिम्मलसहावस्स पुण्णिमाचंदस्सेव राहुणा कयत्थणं तं खमउ मह देवो, तुम्ह कयत्थणामरिसेण महाराओ वि न देइ उज्जेणीए पवेसं' । मूलदेवेण भणियं 'खमियं चेव मए जस्स तुह देवीए कओ पसाओ, तहा उवयारी चेव तुममम्हाणं, जओ न जीवियदाणाओ अण्णं दाणमत्थि' । तओ पुणो वि निवडिओ दोण्ह वि चरणेसु । परमायेरेण ण्हाविओ जेमाविओ देवदत्ताए । पंहराविओ महग्घवत्थाइं राइणा । पेसिओ उज्जेणिं, मूलदेवराइणो अब्भत्थणाए य खमियं जियसत्तुराइणा ।

निग्घिणसम्मो वि रज्जे निविट्ठं मूलदेवं सोऊण आगओ बेण्णायडं । दिट्ठो राया, तओ-
'लोकयात्रा भयं लज्जा, दाक्षिण्यं त्यागशीलता ।

पञ्च यत्र न विद्यन्ते न कुर्यात् तेन सङ्गतिम्' ॥२९९॥

इति चिंतिऊण दिण्णो अदिट्ठेसेवाएसो चेव गामो । 'महापसाओ' ति भणिऊण गओ सो गामं ति ।

अण्ण्या^{२३} नगरं पइदियहं तक्करेहिं मुसिज्जइ, न य आरक्खगा चोरपयं पि लहिउं पारंति । तओ

१. ला० 'त्तियाइं पवा' ॥ २. सं० वा० सु० 'गाइं महग्घभंडं' ॥ ३. ला० 'ण निय' ॥ ४. ला० सो रे ! बं' ॥ ५. ता० 'ले जणेहिं' ॥ ६. ला० वि आणिओ आरक्खगेणं राय' ॥ ७. ला० 'ओ । तओ ॥ ८. ला० 'जाणसि ॥ ९. सं० वा० सु० जओ जा' ॥ १०. ला० 'सि अयलेण भणि' ॥ ११. सं० वा० सु० 'यं 'जइ ॥ १२. ला० 'हरिया ॥ १३. ला० 'या य अय' ॥ १४. सं० वा० सु० 'स मूल' ॥ १५. ला० 'रो, पमुक्को ॥ १६ ला० 'ण । तं च ॥ १७. ला० चलणे' ॥ १८. ला० 'व्वुइक' ॥ १९. ला० परिघविओ य म' ॥ २०. ला० 'ओ य उ' ॥ २१. ला० 'ता । यत्रैतानि न विद्यन्ते ॥ २२. सं० वा० सु० 'ट्ठेसेवो एसो ॥ २३. ला० 'या य न' ॥ २४. आरक्खिया चो' ॥

चित्तियं राइणा, अवि य—

‘जइ एवमणाहं पिव चोरेहिँ मुसिज्जए ममावि पुरं । तो पुरिसयार-पंडिच्चबुद्धिमाईहिँ मज्झ अलं ॥२१॥
अहयं चिय सव्वेसु वि अत्थेसु इमेसु कोविओ धणियं । तामहपुरिमोसयतक्कराण नणु धिड्ढिमागरुई ॥२२॥
इय चिंतिऊण राया नीलपडं पाउणित्तु रयणीए । तक्करावेसणत्थं विणिग्गओ निययगेहाओ ॥२३॥
हिंंडित्तु पुरवरीए सव्वेसु वि संकणिज्जठाणेसु । अइउव्वाओ सुत्तो सुण्णे एगत्थ देवउले ॥२४॥

एत्थंतरम्मि समागओ मंडियाहिहाणो महातक्करो । उट्ठविओ एसो पाएण ‘अरे ! को तुमं इत्थ पसुत्तो ?’ । मूलदेवेण भणियं ‘कप्पडिओ’ । इयरेण भणियं ‘जइ एवं ता एहि मणुस्सं करेमि’ । तेण भणियं ‘महापसाओ’ । तओ गया दो वि एगत्थ ईसरगेहे । खणिऊण खत्तं नीणियं मंडिएण पभूयं सारदविणं आरोवियं मूलदेवस्स उत्तमंगे । कओ मग्गओ । सयं च गहियंकरालकरवालो पर्यट्ठो पिट्ठओ । गया जिण्णोज्जाणं । विहाडेऊण भूमिघरदुवारं पविट्ठा अब्भंतरे । तत्थ य तस्स भणिणी कुमारिणा रूववई जोव्वणत्था चिट्ठइ । सा तेण भणिया जहा ‘इमस्स पाहुणयस्स चरणे पक्खालेसु’ । सा वि कूवतडडियवरासणे निवेसिऊण मूलदेवं चरणे धोविउमाढत्ता । तओ अच्चंतसुकुमालं चरणफासं संवेइऊण ‘अहो ! पुरिसरयणं किंपि एयं’ति चिंतिऊण णिरूविओ सव्वंगेसु । तओ संजायदढाणुरागाए य सणिऊण भणिओ सणियं सणियं जहा ‘जे अण्णे पुरिसा समागच्छंता ते हं इमम्मि तुह पिट्ठिडियकूवए पार्यधोयणच्छलेण पक्खिवंती, तुमं पुण णं खिवामि, ता ममोवरोहेण सिग्घमवक्कमाहि, अण्णहा दोणहं पि न सोहणं भवेस्सइ’ । तओ कज्जगइमवगच्छिऊण दुयं निग्गओ राया ।

इयरीए वि नियक्खूणभएण अक्कंदियं जहा ‘एस सो पुरिसो निग्गओ निग्गओ’ति । तओ अद्धसंगोर्वि यदव्वं मोत्तूण गहियकंककरवालो धाविओ पिट्ठओ मंडिओ । पच्चासणीहूयं णाऊण नगरचच्चरूद्धियपहाणखंभंतरिऊण नट्ठो राया । इयरो वि कोवंतरियलोयणो ‘एस सो पुरिसो’ति कंकासिणा दुहा काऊण पहाणखंभं गओ सट्ठाणं । राया वि ‘लद्धो चोरो’ ति निव्वुयहियओ गओ नियगेहं ।

पहाए य रायवाडियाल्लेणं तन्निरूवणत्थं निग्गओ, जाव बहुपट्टयावेदियजंघो गहियथिरथोरल्लडी सणियं सणियं संचरंतो अद्धोग्घाडवयणो दिट्ठो दोसियहट्ठे तुण्णायकम्मं करेमाणो । ‘रयणीए दीवएण वयणं दिट्ठं’ति काऊण पच्चभिण्णाओ । गिहागएण य ‘हक्कारेहि अमुगं तुण्णायं’ ति पेसिओ आरक्खगो ! । तेण वि जाव सहिओ तओ ‘किमज्ज रायउले आहवणं ?, नूणं सो पुरिसो न वावाइओ भवेस्सइ’ ति साभिसंको गओ रायसमीवं । दवावियं राइणा महारिहमासणं, सम्माणेऊण

१. ला० ‘ओ य ए’ ॥ २. ला० उत्तिमं ॥ ३. ला० ‘यकरवालो ॥ ४. ला० ‘यट्ठो पि’ ॥ ५. ला० चलणे सोविउ’ ॥ ६. ला० ‘यं जहा ॥ ७. ला० ते इहं इ’ ॥ ८. ला० ‘यसोयण’ ॥ ९. ला० ‘ण पक्खिवा’ ॥ १०. सं० वा० सु० ‘क्कमहि ॥ ११. ला० ‘वियं द’ ॥ १२. ला० ‘ण्णीभूयं च णा’ ॥ १३. ला० लट्ठी य सणियं संच’ ॥ १४. ला० तुणारं’ ति ॥ १५. ला० ‘रक्खिओ । तेण ॥ १६. ला० ‘यउलं । समीवं द’ ॥ १७. ला० महारि’ ॥

महापडिवत्तीए भणिओ जहा देहि अम्हाणं नियभगिणिं । तेण वि 'नूणमेसो चेव सो राया भविस्सइ' ति, कज्जपरमत्थमवगच्छिऊण दिण्णा, परिणीया य । सो वि ठविओ महंतगो । तओ राया पइदिणं मग्गावेइ तीए मुहाओ आभरण-वत्थाइयं जाव समागरिसियं सव्वं दव्वं । पुच्छिया रण्णा सा 'केत्तियमज्ज वि अत्थि एयस्स दव्वं ?' । तीए भणियं 'देव एत्तियं चेव' । तओ अणेगाहिं विडंबणाहिं विडंबिऊण णिग्गाहिओ । "एवं साहुणा वि जाव गुणलाभो ताव देहो पालेयव्वो । तयभावे निग्गाहेयव्वो संलेहणा-ऽणसणाईहिं ।" एयं पसंगओ भणियं ।

मूलदेवो वि उदारं रज्जसिरिमणुहवेऊणाऽऽउपज्जंते परिवालिय गिहिधम्मं समाहीए मओ देवलोगं गओ ति ।

एवमैहिकदानफलगतं गतं मूलदेवकथानकम् । २४.

आदिशब्दाद् देवधर-देवदित्रा-ऽभिनवश्रेष्ठिप्रभृतयो ज्ञातव्याः । तत्र देवधरकथानकमिदम्-

[२५. देवधरकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे कलिंगाजणवए रम्मत्तणाइगुणगणोहामिय-तियसपुंरिसोहासमुदयं कंचणपुरं णाम णगरं । तत्थय गरुयपरक्कमक्कं तदरियारिमंडलो सँदाणुरत्तभूमिमंडलो रूवाइगुणगणोहामियाऽऽखंडलो भामंडलो णाम राया । तस्स य नियछाय व्व सयाणुवत्तिणी कित्तिमई नाम देवी ।

इओ य तम्मि चेव नारे सयलमहायणप्पहाणो सुंदराहिहाणो सेट्ठी । सुंदरी से भारिया । तीसे य जायाणि अवच्चाणि विणिघायमावज्जंति । अणेगोवायपराए वि न एणं पि जीवइ । तओ कयाइ महामाणसियदुक्खक्कंताए चिंतियं, अवि य-

धी धी ! मम जम्मेणं निप्फलपसँवेण दुक्खपउरेणं । जेणेगं पि अवच्चं नो जीवइ मँह अपुण्णाए ॥१॥

नूणं अवहरियाइं कस्सइ रयणाइं अण्णजम्मम्मि । जेण ममाऽवच्चाइं निमित्तविरहेण वि मरंति ॥२॥

अइहरिसनिब्भरेहिं जाइं अकज्जाइं कहव कीरंति । ताणेरिसो विवागो दुव्विसहो ज्झत्ति उवणमइ ॥३॥

एवं चिंताउराए समागया देसियालियागयसूरपालरायउत्तभज्जा पियमई नाम तीए पियसही । जंपियं च तीए 'हला ! किमुव्विग्गं विय लक्खीयसि ?' । सुंदरीए भणियं—

१. ला० नूणं एस-चेव ॥ २. ला० सव्वं पि दं ॥ ३. ला० 'यज्ज वि' ॥ ४. सं० वा० सु० व्वो । एयं ॥ ५. ला० रज्जसिर्णि अणुधुंजिऊण आऊ ॥ ६. सं० वा० सु० 'वआ(स्या)ख्यानकम् ॥ ७. सं० वा० सु० 'नकम्-अत्थि ॥ ८. ला० 'पुरसो' ॥ ९. ला० 'त्थ गुरु' ॥ १०. ला० सयाणुरत्तभूमंड ॥ ११. सं० वा० सु० 'ए य चिं' ॥ १२. ला० चिद्धि । मज्जमेणं ॥ १३. ला० 'सरेण ॥ १४. ला० मम अ' ॥ १५. ला० एवं च चिं' ॥

‘पिइ-माइ-भाइ-भगिणी-भज्जा-पत्ताइयाण सव्वाण । कीरइ जं पि रहस्सं न रहस्सं तं पि हु सहीणं ॥४॥

ता भगिणि ! अवच्चमरणं मम गुरुयमुव्वेगकारणं’ । पियमईए भणियं—

‘जं जेण जहा जम्मंतरम्मि जीवेणुवज्जियं कम्मं । तं तेण तहा पियसहि ! भोत्तव्वं नत्थि संदेहो ॥५॥

परं मा संतप्प, मं गब्भवइं मोत्तूण गओ देसियालियाए मम पिययमो, ता जं ममाऽवच्चं भविस्सइ तं मए तुज्झाऽवस्सं दायव्वं’ । सुंदरीए भणियं ‘जइ एवं ता मह गेहे चेवाऽऽगंतूण चिट्ठसु जओ ममाऽवि सममाहूओ चिट्ठए गब्भो, ता जइ कहिंचि दिव्वजोएणं समयं पसवामो तो अईवसोहणं भवइ, न य कस्सवि रहस्सं पयडियव्वं’ । सा वि ‘तह’ति सव्वं पडिवज्जिऊण ठिया तीए चेव गिहे । कम्मधम्मसंजोएणं समगं चेव पसूयाओ । कओ य मयग-जीवंतयदारगाण परावत्तो । कइवयदिणेहिं च तहाविहरोगेण पंचत्तमुवगया पियमई । सुंदरीए य अणेगाइं सिट्ठिराइं लोगे पयडिऊण जहोचियसमए कयं दारयस्स नामं देवधरो ति । पवद्धमाणो य जाओ अट्ठवारिसिओ ।

तओ जाव सिक्खिओ बावत्तरिं कलाओ ताव पुव्वकयकम्मदोसेण मयाइं जणणि-जणयाइं, उच्छण्णो सयणवगो, पणट्ठो सव्वो विविहविहव्वित्थरो, जाओ एगागी, गहिओ महादीहेण । अणिव्वहंतो य करेइ वुत्ताणत्तयं धणसेट्ठिगेहे । भुज्जइ तत्थेव । ‘कुलजो य सावओ’ति जाइ पइदिणं चेइयभवणेसु, वंदए चेइयाइं, गच्छए साहु-साहुणीवंदणत्थं तदुवस्सएसु । एवं च वच्चमाणे काले अण्णया कयाइ कम्हि पगरणे परिवट्ठं संपयाहिहाणाए सेट्ठिणीए विसिट्ठं मणुणं च तस्स भोयणं । एत्थंतरम्मि य,

परिचत्तसव्वसंगं विविहतवच्चरणसोसियनियंगं । पढियेक्कारसअंगं जयदुज्जयनिज्जियाणंगं ॥६॥
तिहिं गुत्तीहिं सुगुतं समियं समिईहिं सत्तसंजुत्तं । समदिट्ठसत्तु-मित्तं सुसाहुजुयलं तहिं पत्तं ॥७॥
तं दट्ठं देवधरो पयडसमुब्भिज्जमाणरोमंचो । चित्तेइ ‘अहो ! दुलहा जाया मह अज्ज सामग्गी ॥८॥
पत्तं वित्तं चित्तं तिण्णि वि पुण्णाइं पुण्णजोएण । ता सहलं नियजीयं करेमि पडिलाहिउं मुणिणो’ ॥९॥
इय चित्तिऊण गंतुं मुणिपामूले नमंतसिरकमलो । विण्णवइ ‘कुणह भयवं ! महऽणुगहमेयगहणेणं’ ॥१०॥
साहूहिं वि तं नाउं अइगरुयपवड्ढमाणपरिणामं । ‘थोवं दिज्जसु सावय ! भणिऊणं उड्डियं पत्तं ॥११॥
तेण वि ‘इच्छं इच्छं’ पयंपमाणाण ताण साहूण । रहसवसपरवसेणं सव्वं पत्तम्मि पक्खित्तं ॥१२॥
‘अज्जं चेव कयत्थो जाओ हं’ भाविऊण तत्थेव । उवविट्ठो ठाणम्मिं पुरओ थालं विहेऊण ॥१३॥

१. ला० ‘त्ताययाण ॥ २. सं० वा० सु० ‘ओ देसिओ देसियालिए ॥ ३. ला० समाहूओ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘स्सय र’ ॥ ५. ला० ‘गं च पसू’ ॥ ६. ला० पिइमई ॥ ७. सं० वा० सु० ‘सट्ठिराइं ॥ ८. ला० ‘ववित्थारो ॥ ९. ला० ‘ओ य महा’ ॥ १०. ला० ‘जए त’ ॥ ११. ला० ‘जोगियसा’ ॥ १२. सं० वा० सु० पइंपमा’ ॥

एत्थंतरम्मि भोयणसमयदेववंदणत्थमब्भंतरं पविसिउकामेण दिट्ठो सेट्ठिणा । तओ भणियाऽणेण नियभारिया संपया जहा 'परिवेसेहि देवधरस्स' । तीए भणियं 'परिविट्ठं मए एयस्स अमुगं अमुगं च पहाणभोयणं, परं एएण सव्वं साहूण दिण्णं' । सेट्ठिणा भणियं 'धण्णो खु एसो जेणेवं कयं, ता पुणो वि परिवेसेहि' । तीए भणियं 'नाऽहमेवंविहं वियाणामि' । सेट्ठिणा भणियं 'मा अणुमोयणाठाणे वि खेयं करेहि, जओ अणुमोयणाए वि तुल्लं चेव फलं हवइ, भणियं च-

अप्पहियमायरंतो, अणुमोयंतो वि सोगाइं लहइ । रहकारदाणअणुमोयगो मिगो जह य बलदेवो ॥१४॥
ता भुंजावेहि मणुण्णेणं' । ति भणिऊण पविट्ठो देववंदणत्थमब्भंतरे । संपयाए वि वक्खित्तत्तणओ जाव न परिवेसियं ताव इयरो वि अभिमाणगओ चिंतिउमारद्धो, अवि य-

“कट्ठमहो ! दालिदं गिरिवरगरूया वि सुपुरिसा जेणं ।

तिण-तूलसयासाओ वि जायंति जयम्मि लहुययरा ॥१५॥

किं ताण जीविणं नराण दोगच्चातावतवियाणं । इयरजणजणियपरिभवअवमाणक्खाणि भूयाणं ? ॥१६॥
अत्थो च्चिय पुरिसत्थो एक्को भुवणम्मि लहइ परभावं । बहुदोसजुया वि नरा गोरव्वा जेण जायंति ॥१७॥
धण्णा गलए पायं दाउं अवमाणणाण सव्वाणं । तेलोयवंदणिज्जा जाया समणा समियपावा ॥१८॥

अहयं तु पुण अहण्णो जो नवि सक्केमि गिण्हिउं दिक्खं ।

अवमाणगरूयदुक्खाइं तेण निच्चंपि विसहेमि” ॥१९॥

एवं च चिंतंतस्स निग्गओ सेट्ठी । दिट्ठो य तयवत्थो चेव । तओ भणिओ सेट्ठिणा 'उट्ठेहि वच्छ ! मए समं भुंजसु' । तओ उट्ठिओ देवधरो, भुत्तो य पहाणाहारेहिं सह सेट्ठिणा । तओ इहलोए चेव महारिसिदाणप्पहावोवज्जियमहारज्जाइलाभस्स वि जिण-साहु-साहुणीवंदण-पज्जुवासणापरस्स जम्पंतर—निकाइयाऽसुह-कम्मफलमणुहवंतस्स वच्चए कालो ।

इओ य तम्मि चेव नयरे अत्थि रयणसारो नाम सेट्ठी । महलच्छी तस्स भारिया । ताणं च विसयसुहमणुहवंताणं समाहूओ महलच्छीए गब्भो । जाव जाओ छम्मासिओ ताव पंचत्तीहूओ सेट्ठी । महलच्छी वि पसूया निययसमए विणिज्जियामरसुंदरीरूवं सयललक्खणसंपुण्णं दारियं । ततो 'अपुत्तलच्छि'ति दारियानिवाहमित्तं किंचि दाऊण गहिओ सव्वो वि घरसारो राइणा । उचियसमए कयं कुमारियाए नाम रायसिरि ति । पवइमाणी य बालिया चेव रायमुक्कदव्वपयाणेण गिण्हाविया कलाओ जणणीए ।

इत्थंतरम्मि पइमरण-दव्वविणासाइमहादुक्खसंतत्ता खिज्जिऊण कालगया महालच्छी ।

१. ला० 'या जहा ॥ २. सं० वा० सु 'हुइ परभायं ॥ ३. ला० महालं ॥ ४. सं० वा० सु० नियसं ॥
५. ला० 'ए य क ॥ ६. ला० म्मि य पइ ॥

रायसिरी वि संगहिया लच्छीनामाए नियमाउसियाए, परिवालए ईसरगिहाइसु कम्मं काऊण । सा वि रायसिरी 'साविय'ति भावसारं वंदए पइदिणं चेइय-साहु-साहुणीओ, दाणधम्माइवियलं च निंदए अप्पणं, अवि य—

“हा हा ! मह जम्मेणं इमेण अइनिप्फलेण जाएणं । अयगलथणसरिसेणं इह-परलोयत्थवियलेणं । २० ।
 इहलोए गासो वि हु संपज्जइ मज्झ पुण्णवियलाए । अइगरुयकिलेसाऽऽयासजणियकम्मेण जणणीए । २१ ।
 परलोओ पुण विहलो होही मह दाणसत्तिवियलाए । जम्मंतरनिव्वत्तियगरुयमहापावपसराए । २२ ।
 धिसि धिसि मम भुत्तेणं निच्चं पत्ते असंविभत्तेणं । परिचत्तुत्तमसत्तेण वित्तसंपत्तिवियलाए” । २३ ।
 अह अण्णया य तीए माउसियाए महिब्भगेहम्मि । ओवाइयलाहणए लद्धा वरमोयगा चउरो । २४ ।
 तो भणिया रायसिरी तीए ‘उवविससु पुत्ति ! भुंजाहि । अज्ज मए आणीया तुहं कज्जे सीहकेसरया’ । २५ ।
 उवविट्ठा सा बाला ते घेतुं सा पलोयइ दुवारं । ‘जइ एइ कोइ अतिही तो लट्ठं होइ’ चिंतंती । २६ ।
 जम्हा मह उवणीयं जणणीए अज्ज सुंदरं भोज्जं । तं दाऊणं पत्ते करेमि सुकयत्थमप्पणं । २७ ।
 इत्थंतरम्मि भिक्खं भममाणीओ गुणेहिं कलियाओ । दुद्धरबंभव्वयधारियाओ तवसोसियंगीओ । २८ ।
 समतिण-मणि-मुत्ताओ जुगमित्तिनिहितचित्तणेत्ताओ । भवियव्वयावसेणं सुसाहुणीओ समायाओ । २९ ।
 तो पुज्जंतसमीहियमणोरहोप्पण्णपयडपुलयाए । संभमखलंततुरिययरगमण-वसणाए बालाए । ३० ।
 पडिलाभियाओ ताओ तिकरणसुद्धेण सुद्धदाणेणं । आणंदअंसुपप्पुयलोयणतामरसजुयलाए । ३१ ।

तओ तेण पत्त-चित्तसुद्धेण दाणेण इहलोयफलं चेव निव्वत्तियं विसिद्धं भोगहलियं कम्मं, ‘धण्णा संपुण्णा हं जीए एयं संपण्णं’ति सुकडाणुमोयणेण पुणो पुणो संपोसियं । माउसियाए वि ‘धण्णा एसा जा बाला वि एवं करेइ’ति मण्णमाणीए पसंसिया ।

तओ तहा वि जा न सक्कइ निव्वाहिउं लच्छी कण्णयं ता समप्पिया सुव्वयाहिहाणाए पवित्तिणीए, भणियं च ‘भयवइ ! न समत्था हं निव्वाहिउं, जइ तुम्हाणं पडिहाइ तो गिण्हह एयं पत्तभूयं’ ति । अंगीकया पवत्तिणीए । मोत्तूण तं तत्थेव गया लच्छी न्निगैहे । भोयणसमए य भणिया पवित्तिणीए जहा ‘पुत्ति ! भुंजसु’ । तीए भणियं ‘भयवइ ! एरिसे दारुणे सीयकाले सीएणवाएण य विज्झडिज्जमाणीहिं समणीहिं महया कट्ठेणाऽऽणीयमिणं भत्तं कहमहं गिहत्था भुंजामि ?’ । पवत्तिणीए

-
१. ला० निंदइ ॥ २. सं० वा० सु० अइण ॥ ३. ला० ‘तरि निव्व’ ॥ ४. ला० तुज्झ कए सी ॥
 ५. ला० कोवि अ० ॥ ६. ला० ‘त्ते करेमि कय’ ॥ ७. ला० गुणोहकलि ॥ ८. सं० वा० सु० ‘त्तित्ता’ ॥
 ९. सं० वा० सु० वयणाए ॥ १०. ला० तिगर ॥ ११. ला० पत्तसुद्धेण ॥ १२. ला० एयं पुत्रंति ॥ १३. सं० वा० सु० पुणो संपो ॥ १४. ला० एस जा ॥ १५. ला० तो ॥ १६. ला० ‘हासइ’ ॥ १७. ला० ‘यगेहं’ ॥ १८. ला० ‘ए भ’ ॥ १९. ला० ‘ण य वा’ ॥ २०. ला० ‘णाणियं भत्तं’ ॥

भणियं पुँत्ति ! सोहणदिणे पव्वाइस्सामि ता भुंजाहि' । तओ भुत्तं रायसिरीए । पवत्तिणीए य तहाविहं तीए ससूयत्तणं पिच्छिऊणं पुट्ठा कण्णपिसाइया विज्जा 'किमेसा जोगा न व ?' ति । विज्जाए भणियं 'मा ताव पव्वाविस्सह' ।

पवत्तिणी वि 'पुणो पुच्छिस्सामि'ति ठिया तुण्हिका जावाऽऽओ उण्हायालो । तत्थ य खरयरविकरसंतत्ताओ पस्सेयजलाविलगत्ताओ छुहा-तण्हऽत्ताओ भत्त-पाणयभारक्कंताओ भिक्खायरियापडिनियत्ताओ पिच्छिऊण साहुणीओ भणिउमाढत्ता रायसिरी 'भयवइ ! एवंविहकट्टेण एयाहिं महाणुभावाहिं समाणीयं भत्तपाणं मम गिहत्थाए भुंजमाणीए महंतमासथण्डाणं, ता पव्वावेहि मं सिग्घं' ति । पवत्तिणीए वि 'धीरा होहि, जओ वरिसमित्ते फग्गुणसुद्धएक्कारसीए तुह सुज्झंतलगं'ति संठविऊण पुणो पुट्ठा विज्जा । विज्जाए भणियं 'अज्ज वि भोगहलियमत्थि एईए' ।

पवत्तिणी वि 'चेइय-साहु-साहुणीणं भत्तिं करिस्सइ'ति मण्णमाणी ठिया तुण्हिका जावाऽऽओ पाउसो । निवडियं वरिसं । तत्थ वि तीए तहाविहं चेव भावं नाऊण पवत्तिणीए पुणो पुट्ठा विज्जा जहा 'कित्तियमेईए भोगहलियं ?' । विज्जाए भणियं जहा 'एसा पंचण्हं पंचुत्तराणं देवीसयाणं अग्गमहिंसी भविस्सइ, पण्णासं च वरिसाइं भोगहलियं भुंजिस्सइ' । 'पवयणुण्णइं करिस्सइ'ति मण्णमाणी ठिया उयासीणयाए चेव पवत्तिणी ।

अण्णया य साहुणीवंदणत्थमागएण दिट्ठा देवधरेण, पुच्छिया पवत्तिणी 'किमेसा अज्ज वि न पव्वाविज्जइ ?' । पवत्तिणीए भणियं 'जओ अजोगा' । 'जइ एवं किमत्थमसंजयं पोसेह ?' । तीए भणियं 'जओ संघस्सुण्णइंकरा भविस्सइ' । तेण भणियं 'कहं ?' । तीए भणियं 'न पभूयं वट्ठइ कहिउं' । तओ तेण अभोयणाइँए कओ निब्बंथो । जहट्ठियं सिट्ठं । तओ चिंतियं देवधरेण 'अहो ! अचिंता कम्मपरिणइं जमेसा वणियकुलोप्पणा वि एवंविहं रायलच्छिं पाविस्सइ, भुंजिऊण य रायलच्छिं मण्णे दुग्गइं वच्चिस्सइ, ता परिणेमि एयं जेण रायलच्छिं चेव न पावइ, न य दुग्गइं जाइ' । ति चिंतिऊण भणिया पवत्तिणी 'भयवइ ! किमहमेयं परिणेमि ?' । तीए य दो वि कण्णे पिहित्ता [जंपियं] 'सावय ! किमयाणो विय पुच्छसि ? न वट्ठइ एयमम्हाण जंपिउं' । देवधरेण भणियं 'मिच्छा मि दुक्कडं, जमणुवओगो कओ' ।

तओ गओ लच्छीसयासं । भणिया य विणयपुव्वयं 'अंबे ! दिज्जउ मम रायसिरी' । तीए भणियं 'पुत्त ! दिण्णा मए साहुणीणं' । तेण भणियं 'न पव्वावइस्संति ताओ तं' । तीए भणियं 'कहं वियाणसि ?' । तेण भणियं 'ताहिं चेव सिट्ठं' । लच्छीए भणियं 'जइ एवं तो पुच्छामि ताओ' ।

१. सं० वा० सु० पुत्त ! ॥ २. ला० 'स्सामो ॥ ३. ला० 'ए तहा' ॥ ४. सं० वा० सु० सभूयत्तणं ॥ ५. ला० 'रविकिरणसं' ॥ ६. ला० 'तण्हण्हाओ ॥ ७. ला० यणाठाणं ॥ ८. ला० 'व्वावेह ॥ ९. ला० 'ण्णयं क' ॥ १०. ला० 'ए व व्बंथे (कए निब्बंथे) जह' ॥

तेण भणियं 'एवं होउ, परमण्णहा न कायव्वं' । तओ पुच्छिया पवित्तिणी लच्छीए जहा 'किं सच्चं चेव न दिक्खिस्सह रायसिरिं ?' । पवित्तिणीए भणियं 'सच्चं' । तओ तीए 'दारिद्रपतो वि गुणजुत्तो सावयधम्मजुत्तो सामण्णपुत्तो य एस देवधरो, न य मह कम्मकरीहत्थाओ अण्णो को वि महिद्धिपत्तो गिण्हिस्सइ, एसो य महायरेण मग्गइ'ति चित्तिऊण दिण्णा देवधरस्स रायसिरी । कम्मधम्मसंजोएण जायं तीए चेव फग्गुणसुद्धेक्कारसीए वारेज्जयलगं । तओ कीरंतेसु वारिज्जमंगलेसु भाविउं पवत्ता रायसिरी, अवि य—

'जइ अंतरायकम्मं न हु हुंतं मज्झ पुण्णवियलाए । संजमभरवहणसमुज्जयाएँ कयनिच्छयमणाए ॥३२॥
तो दिज्जितो वेसो अज्जं मह सयण-सावयजणेहिं' । वण्णणए कीरंते संविग्गा भावए एवं ॥३३॥
पुणरवि लग्गदिणम्मी चिंतइ कीरंतए पमक्खणए । 'निक्खमणऽभिसेयमहो, वट्ठंतो अज्ज मह इण्हिं ॥३४॥
सयणाइसंपरिवुडा सव्वालंकारभूसिया अहुणा । वच्चंती जिणभवणे बहुमंगलतूरसदेहिं' ॥३५॥
माइहरे उवविट्ठा चिंतइ 'कयजिणपइक्खिणा इण्हिं । गुरुणा सह भत्तीए वंदंती चेइए अहयं ॥३६॥
चउविहसंघसमक्खं अप्पिज्जंतो गुरुहिं मह वेसो । रयहरणाई संपइ, संपइ कीरंतओ लोओ' ॥३७॥

हत्थाऽऽलेवयसमए भावइ 'हा ! जीव ! एस सो समओ ।

गुरुयणमणुभासंतो गिण्हंतो जत्थ सामइयं' ॥३८॥

'इण्हिं पर्यक्खिणंती समत्थसंघेण खिप्पमाणेहिं । वासेहिं समोसरणं' भावइ मंडलयभमणम्मि । ३९ ।
तयणु 'असेस्सज्जेहिं वंदिज्जंती तओ पुण गुरुहिं । अणुसट्ठिं दिज्जंतिं संवेगगया निसामंती ॥४०॥

हा ! जीव ! अलक्खण ! सव्वविरइनिहिगहणलालसो कह तं ।

वेयालेण व बलियंतरायकम्मेण विद्विओ ?' ॥४१॥

एवं च भावेमाणी परिणीया जहरिहपडिवत्तीए । विण्णतो य सेट्ठी देवधरेण जहा 'ताय अप्पेह किंचि उवस्सयं' । तओ अप्पियं सेट्ठिणा नियवाडगेगदेससंठियं तिणहरं । आणीया य तत्थ तेण रायसिरी । सा य अईवभत्ताणुरत्ता भत्तुणो ।

तओ तीए सह विसयसुहमणुहवंतो जाव चिट्ठइ ताव चिंतियं सेट्ठिणा जहा 'एस महानुभावो देवधरो मम सामण्णपुत्तो महासत्तो उदारचित्तो पभूयगुणजुत्तो ता कारवेमि किंचि वाणिज्जं, पेच्छामि से विण्णाणं, जइ जुग्गो तो जहाजुत्तं करिस्सामि' । त्ति परिभाविऊण भणिओ जहा 'वच्छ ! घेत्तूण मम

१. ला० 'द्वपुत्तो ॥ २. सं० वा० सु० 'कराह' ॥ ३. ला० महिद्धिओ पुत्तो ॥ ४. ला० 'जयमं' ॥ ५. ला० ण य हुंतं ॥ ६. ला० सइणा ॥ ७. सं० वा० सु० उरुय ॥ ८. सं० वा० सु० पइक्खि ॥ ९. ला० 'भवण' ॥ १०. ला० 'जणेणं वं' ॥ ११. ला० य तेण तत्थ रा ॥ १२. सं० वा० सु० 'वभत्ताणुरत्ता । तओ ॥ १३. ला० 'म पुत्तो ॥ १४. ला० जोगो तो जहाजोगं क' ॥

सयासाओ भंडमुल्लं करेहि किंचि पत्त-सागाइयं वाणिज्जं' । तेण वि तहेव कयं । उप्पायए भोयणवयाइयं जाव पच्चासणीभूओ पाउसो ।

तओ भणिया तेण भारिया जहा 'आणेहि कुओ वि इट्ठखंडाणि जेण तुण्णेमि एयं अईवदुब्बलं वरंडयं ति, मा वरिसायाले सुत्ताणं चेव उवरिं पडिस्सइ' । तीए वि तहेव कयं । तस्स य तं तुण्णेमाणस्स दुब्बलिट्ठगमवणितस्स निग्गयाणि पंच सयाणि दम्माण । तओ तीए अदंसिऊण चेव कयाणि ओवट्ठीए । कयकज्जेण य गंतूण हट्ठे सयमेगं वैचिऊण कयं तीए किंचि वत्थाभरणं । तीए भणियं 'पिययम ! कुओ तए एयं कयं ?' । तेण भणियं 'साहुसयासाओ दम्मसयमेगं मग्गिऊण एयं कयं' । तीए भणियं 'जइ एवं ता अलमेइणा' । तेण भणियं 'मा बीहेहि महाधणं विसिद्धो परमवच्छलो य मम साहू, न किंचि एत्तिण तस्स गणं' । तओ परिहियं तीए । सो वि ववहरंतो थोवदिवसेहिं चेव जाओ दम्मसहस्ससामी ।

अण्णदियहम्मि भणिओ सो तीए जहा 'न वट्ठए सावयाणं वरिसायाले मट्ठियं खणिउं, ता आणेहि किंपि खणित्तयं जेण संगहेमि मट्ठियं' । तओ तेणाऽऽणीया सिद्धिगेहाओ कुंसिया । तीए लवियं 'नाऽहमेइए खणिउं सक्केमि' । तेण भणियं 'पविरलमाणुसाए वियालवेलाए अहमेव खणिस्सामि, तुमं पुण पिडयं कोत्थलयं च गिण्हिज्जसु, जेण कोत्थलयं भरित्ता अहमवि समागच्छामि अण्णहा लज्जिज्जइ मट्ठियमाणंतेहिं' । तओ तीए तहेव कयं । तेण वि कुंसियाए आहणिऊण जाव पाडिया भिउडी ताव तत्थ पयडीहूयं दसलक्खदीणारमुल्लं रयणाइपूरियं महानिहाणं । तेण भणियं 'पिए ! झत्ति ओसरामो इओ ठाणाओ' । 'किं कारणं ?' ति तीए पुच्छिण जंपियं तेण 'पिए ! पिच्छ एस अम्हाण कालो पयडीहूओ' । तीए जंपियं 'न एस कालो किंतु तुज्झऽचित्तपुण्णाणुभावेणाऽऽणीया एसा महालच्छी' । तेण लवियं 'अत्थि एवं जइ कहवि राओ वियाणइ तो महंतो अणत्थो' । तओ 'ममाऽऽसंकं करेइ' ति चिंतिऊणं जंपियं रायसिरीए 'ण मम सयासाओ पयडीहोइ एसत्थो, ता गिण्हाहि निव्विसंको नियभागधेयोवणीयमेयं जा न को वि पेच्छइ' । तओ तेण कुंसियाए विहाडिऊण मुद्दाओ पक्खित्तं कोत्थले रयणाइयं, भायणं पि पिडयमज्झं काऊण दिण्णा उवरि मट्ठिया । समागयाइं नियगेहे । निय(ह)णियं गिहेगदेसे । अण्णया मंतियं तीए सह भत्तुणा जहा 'पाहाणभूयमिणं दविणं, जओ—

जिणपडिमासुं तम्मदिरेसु तप्पूय-ण्हवण-जत्तासु ।

जं न वि लगाइ पिययम ! पाहाणसमं तयं दविणं ॥४२॥

१. ला० 'यं भित्तिं, मा ॥ २. ला० वेच्चिउण ॥ ३. ला० एवं क' ॥ ४. ला० णवइविसि' ॥ ५. सं० वा० सु० वरिसयाले ॥ ६. ला० विना कसिया ॥ तीए भणियं-नाह ! एह(इ)एखणिउं ण सक्केमि ॥ ७. ला० 'यं विर' ॥ ८. ला० विना कसिया' ॥ ९. ला० लपियं ॥ १०. ला० 'ण भणियं ॥ ११. ला० विना कसिया' ॥ १२. ला० 'त्थलए रय' ॥

भत्ते पाणे वत्थे सयणा-ऽऽसण-वसहि-ओसहाईसुं ।
 जं साहु-साहुणीणं न वि दिज्जइ तं पि उवलसमं ॥४३॥
 भोयण-तंबोला-ऽऽसण-वत्थाइसु जं न कहवि उवगरइ ।
 साहम्मियाण पियं! तं पि मुणसु लिङ्खमं रित्थं ॥४४॥
 जं न नियअंगभोगे, न य मित्ताणं, न दीण-विहलाणं ।
 उवओगं जाइ धणं तं पि हु धूलीसमं नाह ! ॥४५॥

ता किमेइणा मुच्छपरिणहमेत्तेण ?' । तेण भणियं 'एवं ठिए को उवाओ ?' । तीए भणियं 'परिणेहि सेट्ठिधूयं कमलसिरिं, जेण सव्वा संभावणा भवइ' । तेणुल्लवियं 'अलं मम तुमं मोत्तूण अण्णाए' । तीए जंपियं 'नाह ! गुण-दोसवियारणाए जं बहुगुणं तं कायव्वमेव' । तेण भणियं 'जइ एवं ते निबंध्यो ता केणुवाएण सा पावियव्वा ?' । तीए भणियं "परिचिया चेव सा ते, ता उवयरेहि फलाइणा, अहं पुण विभूसाए उवयरिस्सामि, यत उक्तम्—

अन्न-पानैहीरेद्वालां यौवनस्थां विभूषया ।
 पण्यस्त्रीमुपचारेण, वृद्धां कर्कशसेवया ॥३००॥

सा य किंपि बाला किंपि जोव्वणत्था, अओ एवं चेव वसवत्तिणी भविस्सइ" । तओ 'सोहणं भणसि'त्ति पडिवज्जिऊण देइ पइदिणं तीए फलाइयं । एवं च अणुलग्गा सा देवधरस्स जाइ तेण सह तग्गिहे । मंडेइ पइदिणं तं रायसिरी । गिहं गया य पुच्छिया जणणीए 'को तुह फलाइयं देइ ?, को य मंडेइ ?' । तीए भणियं 'देइ फलाइयं देवधरो, मंडेइ पुण बाइया' । 'को देवधरो ? का बाइया ?' पुणो पुट्ठा जणणीए । तीए भणियं 'देवधरो जो पइदिणं अमहं गे[ग्रन्थाग्रम् ५०००]हे समागच्छइ, बाइया पुण तस्स चेव भारिया' ।

अण्णया देवधरेण सह समागच्छंतं धूयं पेच्छिऊण हसिया जणणीए 'वच्छे ! अइसुलग्गा दीससि, किमेइणा चेव अप्पाणं परिणाविस्ससि ?' । कमलसिरीए लवियं 'को इत्थ संदेहो, जइ मं अण्णस्स दाहिह तो हं निच्छएण अप्पाणं वावाइस्सामि' । जणणीए जंपियं 'मुद्धे ! तस्सऽण्णा भारिया चिट्ठइ' । कमलसिरीए भणियं 'सा मम भगिणी, अलं तव्वित्ताए मम अण्णेण सधणेणावि वरेण' । तओ अइगरुयाणुरायपरवसं नाऊण साहियं जहडियं चेव संपयाए सेट्ठिणो । तेण भणियं 'पिए ! जइ वच्छाए निबंध्यो ता होउ एवं चेव, जओ रूवाइगुणपगरिसो चेव देवधरो, दारिदुउच्छायणे पुण अहं चेव भलिस्सामि, परं अणुणएमि से भज्जं' । संपयाए वि 'तह'त्ति पडिवण्णं । तओ आइट्ठो

१. ला० ययम !, मुण तं पि सिलोवमं रित्थं ॥ २. ला० मंडइ ॥ ३. ला० 'या पु' ॥ ४. ला० 'ए भणियं ॥ ५. ला० 'ण सोहणे' ॥

सेट्टिणा देवधरो 'वच्छ ! दंसेहि अम्हाणं नियभारियं' । तेण वि 'जं ताओ आणवेइ'त्ति भणंतेण सदाविया रायसिरी, समागया य सा निवडिया सेट्टिचलणेसु । 'अविहवा होहि'त्ति भणंतेण निवेसिया उच्छंगे सेट्टिणा । दट्ठूण विणिज्जियसयलविलयायणं तीए रूवाइसोहासमुदयं चित्तियं धणसेट्टिणा, अवि य—

“जो एयाए गरुयाणुरायरत्ताएँ निस्सहंगीए । सव्वंगं उवगूढो मह धूयं इच्छिही कह सो ? ॥४६॥

लावण्णामयसरसीएँ निच्चमेयाइ जो समं रमइ । सो मज्झ सुयं रमिही कह रूववइं पि देवधरो ? ॥४७॥

पडिकूलाए एयाएँ भुंजिही कहणु विसयसोक्खाइं ? । अइमुद्धा मह धूया एईइ पँइम्मि जा लुद्धा ॥४८॥

ता किमेइणा ?, भावमुक्लंकेमि ताव एयाणं, पच्छा जहाजुत्तं करिस्सामि' । ति भाविऊण भणिया रज्जसिरी 'वच्छे ! मह धूयाए कमलसिरीए तुह भत्तुणो उवरि मुहतो अणुरागो, ता जइ तुमं असंतोसं न करेसि ता देमि से तं' । रज्जसिरीए भणियं 'ताय ? मुहतो मह पमोओ, ता पूरेउ ताओ मह भणिणमणोरहे' । सेट्टिणा भणियं 'पुत्ति ! जइ एवं ता तुह उच्छंगे चेव पक्खित्ता कमलसिरी, अओ परं तुमं चेव जाणसि' । रज्जसिरीए जंपियं 'ताय ! महापसाओ' । देवधरो वि भणिओ 'पुत्त ! गिण्हाहि तुहाऽणुरत्ताए एयाए करं करेणं' ति । 'जं ताओ आणवेइ' ति पडिवण्णमणेण । तओ महाविभूईए कारियं पाणिग्गहणं सेट्टिणा । तओ रायसिरी-कमलसिरीणं दिण्णं दोण्ह वि तुल्लमाभरणाइयं । काराविओ महाववहारं जामाउओ । विढवए पभूयं दविणजायं । विणिओयए पुव्वलद्धं जिणभवणाइसु ।

इओ य विवाहदिणनिमंतियाऽऽगयाए कमलसिरिवयंसियाए मइसागरमंतिधूयाए पउमसिरिनामाए दट्ठूण देवधरं कया सहीण पुरओ महापइण्णा, अवि य-

'जइ परिणइ देवधरो हला ! ममं कहवि दिव्वजोएण । ता भुंजामि भोए, अण्ह नियमो इहं जम्मे' ॥४९॥

तं च तारिसं तीए महापइण्णं सोऊण से सहीहिं साहियं तज्जणणीं^१ए पियंगुसुंदरीए । तीए वि मइसायरमंतिणो । तेण वि हक्कारिऊण सेट्टी दिण्णा सगउरवं देवधरस्स पउमसिरी । उव्वूढा महाविभूईए । दिण्णं मंतिणा तिण्ह वि स^२माणमाभरण^३इयं ।

तओ नीयं राइणो पायवंदणत्थं बहुवरं मंतिणा । सम्मणिऊण निवेसियं वरासणेसु राइणा । देवधर-रूवाइसएण जाव रंजियमणो चिट्ठइ राया ताव 'वरपत्त'त्ति सव्वालंकारविभूसिया

१. सं० वा० सु० रज्जसिरी ॥ २. ला० 'सव्वविल' ॥ ३. ला० नीसहं ॥ ४. सं० वा० सु० पयम्मि ॥ ५. ला० 'लक्खामि' ॥ ६. ला० 'री चट्टे ! मह' ॥ ७. ला० 'तो मे पसाओ, ता' ॥ ८. ला० 'णीए मणो' ॥ ९. सं० वा० सु० पुत्त ! जइ ॥ १०. ला० 'सिरीए वयं' ॥ ११. ला० 'ए । तीए' ॥ १२. ला० 'समाभर' ॥ १३. सं० वा० सु० 'णाइं । तओ ॥

जणयचरणनमणत्थं पेसिया किच्चिमइदेवीए नियतणया देवसिरी नाम । सा य समागतूण निवडिया जणयचलणेसु । निवेसिया निययंके राइणा । निरुविया य सव्वंगेसु जाव संपत्तजोव्वण ति । तओ जाव तीए जोगवरनिरूवणे चित्तं देइ राया ताव दिट्ठा देवसिरी निब्भराणुरायपरवसाए चलंततारयाए सकडक्खचक्खूए पुणो पुणो देवधरं निरिक्खंती । तओ चित्तियं नरवइणा ‘हंत ! अच्चंताणुरत्ता लक्खिज्जए एसा एयम्मि, रूवाइगुणपगरिसो य एसो, ता अणुहवउ वराई जहिच्छियवरसोक्खयं’ ति । भणिओ मइसागरो जहा ‘एसा वि देवसिरी गुणरयणजलहिणो तुह जामाउयस्स मए दिण्णा’ । मंतिणा भणियं ‘महापसाओ’ । तओ राइणा करावियं महाविच्छेड्डेणं पाणिग्गहणं । दिण्णं चउण्हं पि जणीणं समाणमाभरणाइयं, दिण्णो य नरकेसरिपडिरायसीमासंधीए समत्थरज्जप्पहाणो महाविसओ । निरुविया देवधरेण तत्थ नियमहंतया । सयं च रायदिण्णसव्वसामग्गीपडिपुण्णसत्ततलमहापासायट्ठिओ रज्जसिरीपमुहचउभारियापरिवुडो विसयसोक्खमणुहवंतो दोगुंदुगदेवो व्व कालं गमेइ ।

इओ य सुयं नरकेसरिराइणा जहा ‘मह संधिविसओ दिण्णो नियजामाउंणियगस्स’ । तओ कोवानलफुरंतजालाकरालमुहकुहरभासुरेण भणिओ नियपरियणो नरकेसरिणएण जहा ‘पेच्छह भामंडलराइणो अम्हाणमुवरि केरिसा पराभवबुद्धी, जेण किराडो अम्ह संधिपरिपालगो ठविओ, ता विलुं पह तव्विसयं जेण न पुणो वि एवं करेइ’ । तओ तव्वयणाणंतरमेव विलुत्तो सव्वो वि देवधरविसओ, निवेइयं च एयं भामंडलराइणो । तओ समुप्पण्णपराभवामरिसवसपरवसेण तक्खणमेव ताडाविया पयाणयभेरी राइणा, तओ निगंतुमारब्धं राइणो सेत्तं, अवि य—

गलगज्जियभरियनहा कणयकयाऽऽहरणतडिचमक्किल्ला ।

पज्जरियदाणसलिला चलिया करिणो नवघणं व्व ॥५०॥

मणपवणसरिसवेगा तिकखवुरुक्खणियखोणिरयनियरा । कुंचियमुहघोररवा विणिग्गया तुरयसंघाया ॥५१॥

मंजीरयरवपूरियदिसिविवरा विविहधयवडसणाहा । सव्वाऽऽउहपडिपुण्णा विणिग्गया तुंगरहनिवहा ॥५२॥

दप्पिट्ठदुड्डपडिवक्खसुहडंनिट्ठवणजायमाहप्पा । वगंता बुक्कंता संचल्ला पक्कापाइक्का ॥५३॥

गयगज्जिय-रहघणघण-हयहीसिय सुहडसीहनाएहिं । बहुतूरनिनाएण य फुट्ठं न नहंगणं सहसा ॥५४॥

एवं च पक्खुभियमहासमुदरवतुल्लं निग्घोसमायण्णिऊण पुट्ठो कंचुगी देवधरेण, अवि य—

‘किं फुट्ठइ गयणयलं ?, दलइ मही ?, किं तुडंति कुलसेला ? ।

किं व युगंतो वट्ठइ ?, भद ! जमेयारिसो घोसो’ ॥५५॥

तओ तेण विण्णायपरमत्थेण सव्वं सवित्थरं साहियं । तओ पराभवजणियकोव्वंफुं-

१. ला० ‘यसुहमणु’ ॥ २. ला० ‘गवाणि’ ॥ ३. ला० ‘रायएण’ ॥ ४. ला० ‘न्न, गल’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘घणो व्व’ ॥ ६. ला० ‘डविहवण’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘यद्यु [ग्यु] रुसुहड’ ॥ ८. ला० ‘इ य नहं’ ॥ ९. ला० किं च जुगंतो वट्ठइ, भद जओ एरिसो घोसो ॥ १०. ला० ‘वफुरंत’ ॥

रफुरंतओट्टेणं तिवलीतरंगभंगुरभालवट्टेणं पुत्तो पुणो छुरियानिवेसियपउट्टेणं भणियं देवधरेणं 'अरे ! लहुं' पगुणीकरेह मत्तमायंगं जेण तायमणुगच्छामि' । तहाकयं निउत्तपुरिसेहिं । सयं च ण्हायविलित्तालंकियदेहो निबद्धसियकुसुमोवसोहिओ पहाणदुगुल्लनिवसणो उडंडपुंडरीयनिवारि-याऽऽयवो गहियजमजीहाकरालकरवालो आरुहिउं जयकुंजरं पत्तो रायसमीवे । दिट्ठो य राइणा समागच्छमाणो, चिंतियं च 'धण्णो हं जस्सेरिसो जामाउओ, अहवा कयसुकयकम्मा देवसिरी जीसे एसो भागावडिओ' । इत्थंतरम्मि य चलणेसु निवडिऊणं विण्णत्तं देवधरेण 'देव ! न मत्तमायंगे मोत्तूण गोमाउएसु केसरिकमो निवडइ, ता देह ममाऽऽएसं जेण अहं चेव सासेमि तं दुरायारं, किंच अहं 'वणिओ'त्ति कलिऊण लूडिओ तेण मह विसओ, ता देव ! मए चेव तत्थ गंतव्वं' । राइणा वि हरिसभरुब्भिज्जमाणरोमंचेण भणियं 'वच्छ ! मा एवं विण्णवेसु, न य मम सयमगच्छंतस्स संतोसो भवइ' । तओ लक्खिऊण भावं ठिओ तुण्हिक्को एसो । खणंतरेण अग्गगमणत्थं विण्णत्तमेण 'देव ! देहि आएसं' । नरवइणा संलत्तं 'विण्णवसु पसायं' । तेण भणियं 'देव ! जइ एवं तो अग्गाणीएण पसाओ भवउ' । नरनाहेण भणियं 'पुत्त ! न सुंदरमेयं, जओ नाऽहं विओयं साहुं समत्थो, गव्वूयसत्तगयं अग्गाणीयं' । तेण भणियं 'पइदिणं सिग्घवाहणेहिं समागतूण देवपाए पणमिस्सामि' । तओ तन्निच्छयं नाऊण पडिवण्णं नरपहुणा । अणवरयं च गच्छमाणा पत्ता विसयसंधिं ।

तओ चारपूरिसेहितो नाऊण जंपियं पडिवक्खनरनाहेण 'अरे ! गिण्हह अविण्णायअम्हसामत्थं अग्गाणीए समागच्छमाणं तं किराडं' । तओ तव्वयणाणंतरमेव सन्नद्धं सव्वं पि सेण्णं । तस्समेओ अप्पतक्किओ चेव समागओ एसो । तं च समागच्छंतं पेच्छिऊण लहुं चेव सन्नज्झिय संपलगं देवधरसेण्णं, जायं च महाऽऽओहणं, अवि य—

कत्थइ करालकरवालकप्परिज्जंतनरसिरकवालं । कत्थइ उब्भडनच्चिरकबंधकयविविहपेच्छणयं ॥५६॥
 कत्थइ सुतिक्खकुंतग्गभिन्नकरिकुंभगलियमुत्तोहं । कत्थइ मुग्गरचुण्णियकडयडभज्जंतरहनियरं ॥५७॥
 कत्थइ रुहिरासवपाणतुट्ठनच्चंतडाइणिसणाहं । कत्थइ नरमंसामिसभक्खिरफेक्करियसिवनिवहं ॥५८॥
 कत्थइ धणुगुणखिप्पंततिक्खसरविसरछइयनहविवरं । कत्थइ सत्थक्खणखणसंघट्टुडंतसिहिजालं ॥५९॥
 कत्थइ सुण्णासणसंचरंतगय-तुरय-रहवरसमूहं । कत्थइ भडपरितोसियसुराणमुच्चंतकुसुमभरं ॥६०॥
 कत्थइ भीसणकयविविहरूवकिलिकिलियपेयसंघायं । कत्थइ करालकत्तियवावडकररक्खसीभीमं ॥६१॥
 इय रुदे समरभरे हत्थाऽऽरोहं पयंपई कुमरो । 'रे ! नेहि मज्झ हत्थिं नरकेसरिकरिसमीवम्मि' ॥६२॥
 'आएसु' त्ति पयंपिय चुंभावइ रिउकंरिस्स दंतगे । नियकरिवरदंतेहिं विण्णाणवसेण सो मिंठो ॥६३॥

१. ला० 'निय(यं)सणो ॥ २. ला० 'यकम्मा ॥ ३. ला० चेवासासेमि ॥ ४. ला० न मम ॥ ५. ला० देह ॥
 ६. ला० ता ॥ ७. ला० 'पुरिसेहिं नाऊ' ॥ ८. सं० वा० सु० घाई ॥ ९. ला० 'एसो' त्ति ॥ १०. ला० 'किरिंद दंत' ॥

अह उल्ललितु पतो नरकेसरिसिंधुरम्मि देवधरो । जंपइ 'एस किराडो पतो हं राय ! उड्डेहि ॥६४॥

णिण्हसु आउहमिणिं, पेच्छसु मम वणियसंतियं विरियं' ।

'नीओ' ति अरुइयं पि हु लेइ निवो खणवररणं ॥६५॥

अमरिसवसेण राया जा पहरं देइ ताव कुमरेण । वंचितु तयं बद्धो राया वरदप्पकलिएण ॥६६॥

इओ य जाणवियं परबलागमणं पवणवेयवरियासंपेसणेण कुमरमंतीहिं भामंडलराइणो । सो वि पहाणबलसमेओ समागओ तुरियतुरियं । कुमारेण वि समप्पिओ नरकेसरी । तेणावि संहरिसं समालिंकिऊण कुमारं छोडाविया नरकेसरिबंधा । सम्माणिऊण भणिओ जहा 'कुमारभिच्चो होऊण भुंजसु नियरज्जं' । सो वि कुमारस्स दाऊण नियतणयं मित्तसिरिं अभिमाणधणयाए मोत्तूण रज्जं निक्खंतो सुगुरुसमीवे । नरनाह-कुमारा वि नरकेसरिपुत्तं रज्जे अहिसिंचिऊण समागया न्थियनयीए ।

तओ पत्थावं नाऊण भणिया सव्वे वि नियसुया नरवइणा पुत्ता ! जइ तुम्हाण वि पडिहाइ तो अहिसिंचामि तुम्ह भणिपियिं रज्जे' । तेहिं भणियं 'करेह, जं वो रोयइ अणुगहो एस अम्हाणं' । तओ संसिऊण मंति-महंतयाणं पहाणलगे अहिसित्तो दोसु वि रज्जेसु कुमारो । सयं च गहिऊण सामण्णं जाओ सकज्जसाहगो भामंडलराया ।

देवधरनरिंदस्स वि नरकेसरिसामंतेहिं सहोवायणेहिं दिण्णाणि अट्ठाइज्जसयाणि कण्णयाणं, नियनरिदेहि वि एवं चेवं । एवं च जायाणि पंच सयाणि पंचुत्तराणि देवीणं ठविया सव्वासिं अगमहिंसी रज्जसिरी । भुंजए उदारभोए । जाओ महासासणो नरवई ।

अण्णयां पुव्वावत्थं सुमरिऊण देवी-नरिदेहिं पयट्ठाविया जिणसासणस्सअब्भुण्णई, तहा य—
११ काराविज्जंति जिणमंदिराई, १२ षट्ठाविज्जंति, तेसु बिंबाई, समायरिज्जंति ण्हवण-विलेवणपूइणाई, निव्वत्तिज्जंति अट्ठाहियामहिमाओ, घोसिज्जंति अभयप्पयाणाई, भामिज्जंति रहवरा, दिज्जंति दीणा-
ऽणाहाण अणुकंपादाणाई, विहिज्जंति साहम्मियपडिवत्तीओ, वियरिज्जंति साहु-साहुणीणं भत्तिपुव्वाई महादाणाई, लिहाविज्जंति पुत्थयाई पूइज्जंति विहीए, सुव्वंति जिणभासियाई, सेविज्जए सामाइयाइयमावस्सयं, धिप्पए पव्वदियहेसु पोसहं, किं बहुणा ?, जहा जहा जिणसासणस्स, अब्भुण्णई भवइ तहा तहा कुणंताणं वच्चए कालो ।

अण्णया समागओ चउनाणसंपण्णो भयवं जसभद्दसूरी । गओ राया तव्वंदणत्थं सह देवीए

१. ला० सु वणियस्स सं ॥ २. ला० पहाणवे ॥ ३. ला० कुमार ॥ ४. ला० 'ययनय' ॥ ५. सं० वा० सु० पुत्त ! ॥ ६. ला० 'पइ र' ॥ ७. ला० 'महल्लयाणं' ॥ ८. ला० दिन्नाई ॥ ९. सं० वा० सु० 'व' । जाव जायाणि ॥ १०. ला० 'या य पुव्वा' ॥ ११. ला० कारवि ॥ १२. सं० वा० सु० 'इड्डवि' ॥ १३. सं० वा० सु० 'सु वि बिं' ॥ १४. ला० 'पुव्वयाई' ॥ १५. ला० 'संपुण्णो' ॥

वंदिओ भावसारं सूरी । निसण्णो सुद्धभूमीए, समाढत्ता य भयवया धम्मदेसणा, अवि य-
 रिद्धी सहावचवला, रोग-जराभंगुरं हयसरीरं । सुविणयसमं च पेम्मं, ता चरणे आयरं कुणह ॥६७॥
 गिहिधम्म-साहुधम्माण अंतरं जेण जिणवरिंदेहिं । कणयगिरि-सरसवेहिं निदिट्ठं समयसारम्मि ॥६८॥
 विसयसुहनियत्ताणं जं सोक्खं होइ इत्थ साहूणं । परतत्तिविरहियाणं चक्कहरस्सावि तं कत्तो ? ॥६९॥
 बहुजम्मंतरसंचियकिलिड्डगुरुकम्मसेलनिदलणं । मुणिगणसेवियमेयं चारित्तं कुलिससारिच्छं ॥७०॥
 एगदिणदिक्खिओ वि हु वंदिज्जइ रायरायमाईहिं । चारित्तस्स पहावो एसो नरनाह ! पच्चक्खो ॥७१॥
 एगदिवसम्मि जीवो पव्वज्जमुवागओ अणणमणो । जइ वि न पावइ मोक्खं अवस्स वेमाणिओ होइ ॥७२॥
 कंचण-मणिसोवाणं थंभसहस्सूसियं सुवण्णतलं । जो कारेज्ज जिणघरं तस्स वि तवसंजमो अहिओ ॥७३॥
 ता उज्झिऊण नरवर ! गिहवासं सव्वदुक्खआवासं । गिण्हसु मुणिकयवासं चरणं संसारणिण्णासं ॥७४॥

तं च सोऊण संजायचरणपरिणामेण विण्णत्तं राइणा “भयवं ! रायसिरिपुत्तं गुणहरं जाव रज्जे
 अहिसिंचामि ताव तुम्ह पासे गिण्हिस्सामि जमेयं तुब्भेहिं वणिणयं चरित्तं, परं ताव अवणेह एयं
 संसयं ‘किमहं देवी य बालत्ते चेव सयणविरहियाइं जायाइं ? , किं वा महादारिद्राभिभूयाइं
 संवुत्ताइं ?” । भयवया भणियं ‘सुण महाराय !’

इओ अईए दुइए भवग्गहणे नंदिवद्धणे गामे आसि तुमं कुलवद्धणो नाम कुलपुत्तगो,
 महादेवी वि संतिमई नाम तुह भारिया । पयईए तणुकसायाणि दाणरूइणि य । अण्णया य
 पहपडिवण्णं विहरमाणं समागयं तुम्ह गेहे साहुजुवलयं, तं च दड्डूण भणियं तुमए ‘पिए ! पिच्छ एए
 अदिण्णदाणा कुंडुंब-सुहि-सयणपरिपालणपराभग्गा भिक्खं भमंति, को वा एएसिं सयणविरहियाणं
 तवो’त्ति । संतिमईए भणियं ‘नाह ! एवमेयं, नत्थि संदेहो, सुड्डु लक्खियं अज्जउत्तेण’ । तप्पच्चयं
 च बद्धं सयणविओयजं निबिडकम्मं ।

इओ य अत्थि तम्मि गामे पभूयधणसमिद्धं एणं जिणमंदिरं, पडियगए य तद्व्वं महाधणवई
 जिणदेवो नाम सावगो । अण्णया य वयणविप्पडिवत्तीए पराभूओ जिणदेवेण तुमं, गिहागएण कहियं
 संतिमईए । तीए भणियं ‘नाह ! सो देवडिगिरिओ देवदव्वेण मयंधो न किं पि पेच्छइ, ता सोहणं
 होइ जइ तं देवदव्वं कहिंचि विणस्सइ’ । तुमए भणियं ‘पिए ! सुंदरं संलत्तं, ममावि एव
 चेवाऽभिरुइयं’ । तेण य संकिलिड्डपरिणामेण निव्वत्तियं दालिदपच्चयं कम्मं । अणालोइय-
 पडिकंताणि य मरिऊण जायाणि तुब्भे ति ।

१. ला० ‘देण ॥ २. सं० वा० सु० तओ वि ॥ ३. ला० सयलदु’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘रणानुराएण ॥
 ५. ला० तुम्हेहिं ॥ ६. ला० चारित्तं ॥ ७. ला० ए भव’ ॥ ८. ला० ‘जुयल’ ॥ ९. ला० ‘ए पेच्छ ॥ १०.
 ला० कुटुंब’ ॥ ११. सं० वा० सु० ‘च्चयं बद्धं ॥ १२. ला० ‘ण य क’ ॥ १३. ला० एयं चाभिरु’ ॥

तं च सोऊण जायं तेसिं जाइस्सरणं । भणियं च णेहिं 'एवमेयं नत्थि संदेहो, अवगयमेयं जाइस्सरणेण सव्वमहेहिं, परमेयं रज्जं कस्स कम्मस्स फलं ?' । भयवया भणियं 'जमित्थेव जम्मे तया तुब्भेहिं साहु-साहुणीणं भत्तीए दाणं दिण्णं तमिहलोए चेव फलयं संवुत्तं, भणियं चाऽऽगमे-

इहलोए कडा कम्मा इहलोए चेव उईरिज्जंति, इहलोए कडा कम्मा परलोए उईरिज्जंति, परलोए कडा कम्मा इहलोए उईरिज्जंति, परलोए कडा कम्मा परलोए उईरिज्जंति ।

ता सव्वहा सुहाणुट्ठाणे जत्तो कायव्वो' ति । तओ 'इच्छं'ति पडिवज्जिऊण गओ निवो नियगेहे । ठाविऊण कुमारं रज्जे महया विभूर्इए देवी-निवेहिं गहियं सामण्णं । पालियं निकलं कमहाऽऽयं जाव अणसणविहाणेण गयाणि दुवालसमकप्पे । तओ चुयाणि महाविदेहे सिज्जिस्संति ति ।

[देवधरकथानकं समाप्तम् । २५.]

साम्प्रतं देवदिनाख्यानकमाख्यायते—

[२६. देवदिनकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे तिहुयणालंकारभूयं तिहुयणपुरं नाम नयरं । तत्थ य दुव्वारवेरितिमिरभरपसरदिणयरो तिहुयणसेहरो नाम राया । तस्स य सयलंतेउरप्पहाणा तिहुयणा नाम देवी । तीसे य कुच्छिसमुब्भवो तिहुयणदत्तो नाम कुमारो ।

इओ य तम्मि चेव नयरे अट्टारससेणिप्पसेणिनायगो अहिगयजीवा[-ऽजीवा] इपयत्थसत्थो राइणो माणणिज्जो सुमई नाम सेट्ठी । तस्स य विणिज्जियामरसुंदरीरूवा चंदप्पहा नाम भारिया । तीसे य रायगपत्तीए तिहुयणाए सह महंता पीई । अणया य 'माउसिय'त्ति काऊण नियपुरिसपरिवारिओ गओ तिहुयणदत्तकुमारो चंदप्पहाए गेहे । ण्हविय-विलित्ता-ऽलंकियदेहो काऊण निवेसियो निययंके तीए, अघाओ उत्तिमंगे, चिंतिउं च पवत्ता, अवि य—

'धण्णा कयपुण्णा सा मज्झ सही, तीए जीवियं सहलं । कयलक्खणा वि स च्चिय जीसे एवंविहो पुत्तो अण्णाओ वि नारीओ सुलद्धजम्माओ जीवलोगम्मि । जाओ नियकुच्छिसमुब्भवाण वरडिंभरूवाणं । २। मम्मणपयंपिराणं उच्छंणनिवेसियाण उल्लावे । दिंति म्हुस्सरेणं नाणाविहचाडुयपराणं ॥३॥ अहयं तु पुण अधण्णा एत्तो एणयरमवि न संपत्ता' । इय चिंताए दीहं नीससिय विसज्जए कुमरं ॥४॥

तओ जाव पत्तो गेहे ताव पुच्छियं देवीए 'केणसो सव्वालंकारभूसिओ कओ कुमारो ?' ।

१. ला० 'लोगकडा' ॥ २. ला० तत्तो ॥ ३. सं० वा० सु० 'ति । देव' ॥ ४. सं० वा० सु० 'वे भार' ॥ ५. ला० 'हो य का' ॥ ६. ला० 'ग्धाइयो' ॥ ७. ला० 'यं पुणो अध' ॥ ८. ला० 'रविभू' ॥

कहियं च परियणेणं जहा 'तुह वयंसियाए, परं कीरउ कुमारस्स लवणुत्तारणाइयं, जओ कुमारस्सोवरि खित्ता तीए नीसासा' । देवीए भणियं 'मा एवं जंपह, तीए नीसासा वि कुमारस्साऽऽसीवाया भविस्संति' । तओ ठिओ तुण्हिक्को परियणो । देवीए य चिंतियं 'हंत ! किं कुमारं दड्डूण तीए मुक्का नीसासा ? हुं नायं, जओ अपुत्ता सा, ता किं मे सहियत्तणेणं जइ से नियतणयं दाऊण न पूरिज्जंति मणोरहा' । एवं च चिंताउराए समागओ राया । पुच्छियं च तेण 'देवि ! किमुव्विग्गा विय लक्खीयसि ?' । तओ साहियं जहट्टियं चेव तस्स तीए । तेण भणियं 'जइ एवं तो मा उव्वेयं करेहि, तहा हं उवायं पेच्छेस्सामि जहा तुह सहीए पुत्तो भविस्सइ' । देवीए भणियं 'नाह ! महापसाओ' । तओ बीयदिवसे भणिओ सेट्ठी राइणा 'अपुत्तो तुमं, ता पुत्तुप्पायणत्थं आराहेहि भयवइ महाकुलदेवयं तिहुयणेसरिं देविं, जओ सन्निहियपाडिहेरा सा भयवइ देइ आराहिया जम्मगियं' । सेट्ठीणा भणियं 'देव ! किमेइणा ?, जइ पुव्वकम्मोवत्तो ता भविस्सइ पुत्तो' । राइणा भणियं 'जइ वि एवं तहा वि ममोवरोहेण कायव्वमेवेयं' । तओ 'रायाभिओगो'ति चित्ते परिभाविऊण पडिवज्जिऊण सव्वं गओ नियगेहे । कहिओ वइयरो चंदप्पहाए । तीए लवियं 'नाह ! एवं कज्जमाणे सम्मत्तलंछणं भविस्सइ' । सुमइणा भणियं 'पिए ! रायाभिओगेण कज्जमाणे न सम्मत्तकलंकमुप्पज्जइ' । तओ अण्णदियहम्मि गहिय सव्वं सामणिं सभारिओ गओ तिहुयणेसरिमंदिरे सेट्ठी । ण्हवण-विलेवणपूयाइयं कंराविऊण भणिया देवया "भयवइ ! देवो भणइ 'भयवइं पुत्तं मणसु', ता देहि मे पुत्तं" । तओ देवयाए चिंतियं 'अहो ! निरवेक्खया एयस्स, तहा वि नियपसिद्धिनिमित्तं कायव्वं चेव एयस्स सन्निहाणं' । ति चिंतिऊण भणियं देवयाए जहा 'भद ! होही ते पुत्तओ' । तेण भणियं 'को पच्चओ ?' । 'दूमेमि मणागमेयं निरवेक्खं'ति चिंतिऊण जंपियं देवयाए 'जया गब्भो भविस्सइ तया तुह घरिणी देववंदणत्थं पविसमाणी जिणहरं निवडंतयं पेच्छिस्सइ सुविणे' । 'धम्मपडणीओ होहि'ति मणागं दूमियचित्तो गओ सेट्ठी नियगेहे ।

तओ अण्णया कयाइ देवयाकहियंसुमिणं पासिऊण विउद्धा से भारिया । निवेइयं च तीए तस्स जहा 'सामि ! दिट्ठो सो मए सुविणगो किंतुं सविसेसो, जओ किलाऽहं गहियपूयोवगरणा जाव पविसामि जिणमंदिरं ताव पेच्छामि निवडंतयं, उवरिपडणभएण य उप्पिं पलोयंतीए पूइओ भयवं, तओ जाव बाहिं निग्गच्छामि ताव तं सव्वं पुणणवीभूयं पुव्विं एगपडागमवि अपुब्बं पहाणपंचपडागोवसोहियं दड्डूण जायहरिसा विउद्धा, संपयं तुमं पमाणं' । तेण भणियं 'पिए ! आवायकडुओ वि परिणइसुंदरो एस सुविणगो, ता होही ते पुत्तो, पढमं आवइभायणं होऊण पच्छा

१. ला० तो ॥ २. ला० ता मा उव्वेवं कं ॥ ३. सं० वा० सु० 'त्तो वि मवि' ॥ ४. सं० वा० सु० 'वयं महा' ॥ ५. ला० 'यणसि' ॥ ६. सं० वा० सु० 'वं ता ममो' ॥ ७. ला० ओ गेहे ॥ ८. ला० 'दिणम्मि' ॥ ९. ला० 'सरिमंदिरं से' ॥ १०. ला० कारवि ॥ ११. ला० पुत्तो ॥ १२. ला० होहिइ' ति ॥ १३. ला० 'सुविणयं पा' ॥ १४. ला० 'तु एसो विसे' ॥ १५. ला० 'व्वं पंच' ॥ १६. ला० होहि पुत्तो ॥

महारिद्धिसमुदयं पाविस्सइ' । तीए वि 'एवमेयं'ति पडिवज्जिऊण बद्धो सउणगंठी । तओ संपज्जंतसयलमणोरहा पसूया नियसमए सव्वंगसुंदराहिरामं दारयं । वद्धाविओ सुहंकराहिहाणाए सदासचेडीए सेट्ठी । तीसे य पारिओसियं दाऊण कयं महावद्धावणयं । अवि य—

वज्जइ तूरु गहिरसद्दाउलु, नच्चइ वारविलासिणिपाउलु ।

दिज्जइ दाणु अवारियसत्तउ, एइ महायणु वद्धावंतउ ॥५॥

आयारिमइ समत्थइं किज्जहिं, सयणाणि य उवयार लइज्जहिं ।

मेल्लाविज्जहिं सयलइं बंदइं, पडिलाहिज्जहिं मुणिवरविंदइं ॥६॥

जिणवरबिंबइं संपूइज्जहिं, सयण असेस वि सम्माणिज्जहिं ।

अहवा किं वणिज्जइ तेत्थु, संतेऊरु निवु आगउ जेत्थु ॥७॥

एवं च कमेण वत्ते वद्धावणयमहूसवे, पत्ते दुवालसमवासरे कयं दारयस्स नामं देवदिण्ण त्ति । पवङ्कमाणो य जाव जाओ अट्टवारिसिओ ताव समप्पिओ कलायरियस्स । गिण्हए असेसाओ कलाओ ।

अण्णया य अणज्झयणदिणे उवविट्ठो कहिंचि वक्खाणे । तत्थ य तम्मि समए वक्खाणिज्जए दाणधम्मो यथा—

दानेन भूतानि वशीभवन्ति, दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् ।

परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानाद्, दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति ॥८॥

दानेन चक्रित्वमुपैति जन्तुदानेन देवाधिपतित्वमुच्चैः ।

दानेन निःशेषयशोभिवृद्धिर्दानं शिवे धारयति क्रमेण ॥९॥

एवं च सोऊण चिंतियमेण 'अहो ! दाणमेवेगं इहलोए चेव सव्ववसणनिवारणक्खमं सिवसुहण्यं चेत्य वन्नियं, ता तत्थेव जत्तं करेमि' । तओ देइ चट्ठाईणं खाउयमाइ । पुणो पवङ्कमाणो भंडागाराओ घेत्तूण दव्वं देइ किविण-वणीमगाईणं, पूएइ जिणबिंबाइं, पडिलाहए भत्तिजुत्तो भत्तपोत्त-पत्ताइएहिं साहु-साहुणीओ, सम्माणेइ साहम्मियजणं । तओ अइपभूयदव्वविणासं दट्ठूण विण्णत्तो सेट्ठी तण्हाभिमूयाहिहाणेण भंडागारिएण 'सामि ! देवदिण्णो दाणवसणेण पभूयं अत्थसारं विणासेइ' । सेट्ठिणा भणियं 'मा निवारेहिसि, देउ, पुज्जिस्सइ दिंतस्स ई' । तेण भणियं 'कहमहं संखं

१. ला० निययस' ॥ २. ला० 'मय समच्छहिं कि' ॥ ३. सं० वा० सु० 'ज्जइ स' ॥ ४. ला० बंदहिं ॥ ५. सं० वा० सु० 'ज्जइ मु' ॥ ६. ला० वित्ते ॥ ७. ला० 'त्तपत्ताइ' ॥ ८. सं० वा० सु० 'ण्हाभूया' ॥ ९. ला० वि ॥

वियाणिस्सामि ?' । सेट्टिणा जंपियं 'पढमं चेव संखिऊण पगुणीकाऊण मेलेज्जसु' । सो वि तहेव करेइ । इयरो वि जं जं पडिहाइ तं तं देइ । एवं च वच्चए कालो । इओ य^१अत्थि तण्हाभिभूयस्स मुद्धाए भारियाए कुच्चिसमुभवा अइरूवस्सिणी बाला नाम कण्णया । 'अइपंडिय'ति काऊण लोएण बालपंडिय ति नामं कयं । सा य परिब्भमंती गया दिट्ठिगोयरं देवदिण्णस्स । दट्ठूण य चिंतियमणेण । अवि य—

“अकरप्फंसमिमीए नूणं रूवं विणिम्मियं विहिणा । जेण क^२राऽऽलिद्धाणं न होइ एयारिसी सोहा ॥१०॥ सव्वाण वि रमणीणं मन्ने घेतूण रूवलावण्णं । विहिणेसा निम्मविया, कहऽण्णहा एरिसं रूवं ? ॥११॥ अवियारा वि य बाला जहिं जहिं जाइ मंथरगईए । तहियं तहियं तरुणा मयणेण परव्वसा हुंति ॥१२॥ किं बहुणा ?, निम्मविया एसा मयणस्स नणु पयावइणा । बहुनरवसियरणत्थं महोसही फुरियतेइल्ला ॥१३॥

सो च्विय धण्णो, सो चेव सूहवो, तस्स जीवियं सहलं ।

एईए वयणकमले अलि व्व जो पियइ मयरदं ॥१४॥

किं तस्स जीविणं एईए थणथलीए उवरिम्मि ।

अइवित्थडम्मि जो न वि लोट्टइ दंडाऽऽहयअहि व्व ? ॥१५॥

किं वा वि हु बहुएणं ?, सुरयर्मयनिवहतियससरियाए । एईए सव्वंगे मज्जइ हंस व्व सो धण्णो” ॥१६॥ इय अच्चंतणुरतो चिंतइ “कह मज्झ होहिई एसा ? । हुं, नायं ‘से जणयं करेमि दाणाइसंगहियं’ ॥१७॥

जओ भणियं—

जं गिण्हिऊण इच्छइ तं पढमं आमिसेण गिण्हाह ।

पच्छा आमिसलुद्धो काहिइ कज्जं अकज्जं वा ॥१८॥

जइ^{१३} एयं न पावेमि तो अवस्स मए इओ निगंतव्वं, ता जाणावेमि केणइ अलक्खोवाएण एयं से जणयस्स तीए य” ।

तओ दिण्णो अण्णम्मि दिणम्मि पहाणहारो तण्हाभिभूयस्स । तेण भणियं ‘सामि ! किमेस हारो ?’ । कुमारेण भणियं ‘हारो हं, तुमं पुण पडिहारो, ता तुह समप्पिओ जहाजुत्तं करेज्जासि’ । तेण वि वयणपरमत्थमयाणमाणेण तदुवरोहेण गहिओ । समप्पिओ बालपंडियाए । तीए पुच्छियं ‘ताय ! किमेस हारो ?’ । तेण भणियं ‘दिण्णो देवदिण्णेण’ । तीए वि तदंसणाओ तह च्वेव समुप्पण्णरागाइरेगाए पुव्वमेव लक्खियकुमारभावाए परमत्थवियाणणत्थं पुच्छियं ‘ताय ! किं पुण

१. सं० वा० सु० मिद्धिज्ज” ॥ २. ला० वि तं तहे” ॥ ३. सं० वा० सु० य तण्हाभूय” ॥ ४. ला० कुच्छिं सि समु” ॥ ५. ला० “ण चिंति” ॥ ६. सं० वा० सु० करालिद्धाए ॥ ७. ला० एईए थणत्थली” ॥ ८. ला० “मह(य)वद्धतिय” ॥ ९. सं० वा० सु० सव्वंगं ॥ १०. ला० गिन्हेह ॥ ११. ला० सबद्धो काही कज्जं ॥ १२. सं० वा० सु० “इ य एवं न ॥ १३. सं० वा० सु० अण्णदि” ॥ १४. सं० वा० सु० “मं पाडि” ॥ १५. ला० “गाए पु” ॥

भणियं कुमारेण ?' । तेण जंपियं 'एयं' ति । तओ तीए विण्णायपरमत्थाए पढियं—

कौट्टह हारु न घल्लियइ, जेण कुणइ धणनासु । सो हियडइ पर धारियइ, सयलसुहहं आवासु' ॥१९॥

अस्यायमभिप्रायः 'कोट्टात्' प्राकारात् 'हारः' कुमारः 'न प्रक्षिप्यते' न निष्कास्यते येन करोति धननाशम्, किन्तु हृदयस्थ एव धार्यते येन सुखावासः, इति हृदयम् ।

जणएण तमबुज्झमाणेण न किंचि जंपियं । तीए वि 'वियड्डयाए एयं पओयणं सिज्झिस्सइ' ति भाविरुण पत्थावेण विण्णत्ता जणणी 'अंब ! देह मं देवदिण्णस्स' । जणणीए भणियं 'वच्छे ! पंडिया वि किमयाणा विव जंपसि ?, जओ तुह जणओ वि तस्स कम्मयरो ता कहं तुह तेण सह संबंधो भविस्सइ ?, ता अण्णं किं पि समाणविहवं वरेसु' । तीए भणियं 'अंब ! करेहि ताव जत्तं, अण्णहा मंचयनिवडियाणं भूमी' । तहड्डिया चेव । तओ तीए दढाणुरायं लक्खिरुण मुद्धाए विण्णत्तं जहड्डियं चेव चंदप्पहाए । तीए वि साहियं भत्तुणो तेण भणियं "पिए ! सामण्णपुत्तो वि कम्मयरो अम्हाणं से जणओ, परं ममावि कहियं कुमारवयंसएहिं जहा 'कुमारो वि तीए दढमणुरत्तो' ता कुमारभावमुवलक्खिरुण जहाजुत्तं करिस्सामो' । पत्थावेण य जहा कुमारो निसुणेइ तहा पढियं सेड्डिणा—

'न त्यजेत् पितृ-मित्राणि, पन्त्या अपि न विश्वसेत् । तद्धनं च न गृह्णीयात्, स्वदासीं नैव कामयेत्' । २०

लक्खियजणयभावेण य जंपियं कुमारेण 'ताय ! दुब्बलयभिती निवडमाणा अब्भितरनिवडिया उदाहु बहिननिवडिया सोहणा ?' । सेड्डिणा भणियं 'अब्भितरनिवडियाए न किंचि इट्ठाइयं विप्पणस्सइ, अओ ईइसा चेव सोहणा' । तेण भणियं 'जइ एवं तो किमेयारिसं जंपियं तुब्भेहिं ?' । सेड्डिणा वि तब्भावं लक्खिरुण कओ महाविभूईए वीवाहो । पइदिणपवड्डमाणुरायाइं सविसेससिंगारुब्भडाइं च जाव चिट्ठंति ताव केणइ पओयणेण य बहिनियं बालपंडियं दड्डूण नियसहीमुदिसिरुण जंपियं एगाए महिलाए, अवि य-

'सहि ! पुण्णभाइणीणं मज्झे एयाए दिज्जे रेहा । जा एवंविहगेहे पत्ता बहुरिद्धिवित्तारे' ॥२१॥

इयरीए भणियं—

'सहि ! मा जंपसु एवं, गयविहवनरेण जइ समुव्वूढा ।

कुणइ महंतं लच्छिं तो हं मण्णामि पुण्णवइ' ॥२२॥

तं सोऊणं वयणं चिंतइ अह बालपंडिया एवं । 'परिणइसुंदरमेयं वयणमहो ! जंपियमिमीए ॥२३॥

१. ला० कोट्टहिं ॥ २. ला० परि ॥ ३. सं० वा० सु० वि न वियड्डयाए पविणाब एयं ॥ ४. सं० वा० सु० दढाणुरत्तो ॥ ५. ला० उयाहु ॥ ६. ला० अओ सा चेव ॥ ७. सं० वा० सु० केणय प ॥ ८. ला० विज्जे ॥ ९. सं० वा० सु० ण जं समु ।

ता दव्वविद्ववणत्थं नियनाहं पेसिऊण अण्णत्थ । पुण्णोवज्जणनिरया सयं च चिड्डामि, जेणं सो ॥२४॥

विद्ववइ पभूयदव्वं' इय चिंतिय जा गिहम्मि संपत्ता । ता नियपइं नियच्छइ चिंताभरसायरे पडियं ॥२५॥

तं च तारिसं दडूण पुच्छियं तीए 'नाह ! किमुव्विणो विय लक्खीयसि ? । तेण भणियं "पिए ! अत्थि महंतमुव्वेगकारणं, जओ अहमज्ज कयसविसेससिंगारो मित्तमंडलपरिवारिओ दिट्ठो दोहिं पुरिसेहिं, ताणिक्केण लवियं—

एसो च्विय सलहिज्जइ एको जो ललइ विविहरिद्धीए । वियरइ य महादाणं निरंतरं मत्तहत्थि व्व' बीएण तओ भणियं 'किं भद्द ! पसंसिओ तए एसो । जो पुव्वपुरिसअज्जियलच्छिं जणणिं व भुंजेइ ॥२७॥ जो नियभुयदंडज्जियलच्छीए कुणइ एरिसं चिट्ठं । तं चिय मण्णामि अहं सप्पुरिसं, कुपुरिसं इहरा' ॥२८॥ ता पिए ! देसंतरं गंतूण नियभुयादंडेहिं जाव नोवज्जिया लच्छी न ताव मे चित्तस्स निव्वुई भवइ' । तीए वि हरिसभरनिब्भरंगीए जंपियं "नाह ! सुंदरो तेऽभिप्पाओ, जओ—

सो च्विय सुहओ सो चेव पंडिओ सो विद्वत्तविण्णाओ । जो नियभुयदंडज्जियलच्छीए उवज्जए कित्तिं ॥२९॥ ता नाह ! पुज्जंतु ते मणोरहा, करेहि जहासमीहियं" । तेण चिंतियं "पवसिउकामे भत्तारे न का वि नारी एवं जंपइ, जओ—

पवसंते भत्तारे सोक्खं नारीण जाइ नणु सव्वं । साहीणपिययमाणं हवंति संसारसोक्खाइं ॥३०॥

एसा य अभिन्नमुहराया एवं जंपइ ता नूणं अन्नासत्ता भविस्सइ, सोहणं च एयं जओ एसा वि पडिबंधट्ठाणं न संजाया" । काऊण निच्छयं गओ जणयसयासे विण्णत्तो य, यथा—

'तात ! मामनुजानीहि, धनोपार्जनकाम्यया । गच्छाम्यहं विदेशेषु, करोमि पुरुषक्रियाम्' ॥३१॥

जनकेनोक्तम्—

'विद्यते विपुलं वत्स ! कुलक्रमसमागतम् । धनं ते दानसम्भोगविलासकरणक्षमम् ॥३२॥

तत् तदेव नियुज्जानस्तिष्ठात्रैव निराकुलः । यतो वियोगं ते वत्स ! नैव सोढुमहं क्षमः' ॥३३॥

देवदिन्नेनोक्तम्—

'या पूर्वपुरुषैस्तात ! भूरिलक्ष्मीरुपार्जिता । तां भुज्जानस्य सत्पुंसः कथं न त्रपते मनः ? ॥३४॥

ततः प्रयच्छ मेऽनुज्ञां प्रसादार्द्रेण चेतसा । स्वभुजोपात्तवित्तेन येन कीर्तिं करोम्यहम्' ॥३५॥

तओ निच्छयं नाऊण विसज्जिओ जणणि-जणएहिं । जाव काउमादत्तो सव्वं सामणिं तओ

‘मा कयाइ एसा निवारइ !’ ति मण्णमाणेहिं भणिया सुण्हा से जणएहिं ‘वच्छे ! देसंतरं गंतुकामो दीसइ ते भत्ता’ । तीए भणियं “ताय ! तुब्भेहिं जायस्स सप्पुरिसपयमणुवत्तमाणस्स अज्जउत्तस्स जुत्तमेवेयं, यत उक्तम्—

स्थानत्यागं करिष्यन्ति सिंहाः सत्पुरुषा गजाः । स्थाने चैव मरिष्यन्ति काकाः कापुरुषा मृगाः’ ॥३६॥

तमायण्णिऊण ताणि वि तह चेव चिंतिऊण ठियाणि तुण्हिक्काणि । संवूढे य कुमारे नियरासिसमप्पणेण कया चउरासी वणियपुत्ता कुमारस्स सहाया सेट्ठिणा । तओ समागए सोहणदिणे गइंदारूढो वियरंतो महादाणं निगंतूण ठिओ पत्थाणमंगले कुमारो । बालपंडिया वि पहाणकरेणयारूढा कयउक्किट्टसिंगारा पप्फुल्लवयणपंकया गया कुमारदंसणत्थं । खणंतरेणे विण्णत्तो ‘सामि ! देह आएसं’ । कुमारेण वि लोयाणुवित्तीए आवीलसमणियं दिण्णं करबीडयं । तीए वि मुहे पक्खिविऊण ‘सामि ! पुणरवि तुमे दिण्णो चेव पविसिही मम मुहे तंबोलो’ ति भणंतीए बद्धा वेणिया, पहट्टमाणसा चेव गया नियगेहे । लोगो वि तं तारिसं दट्ठूण तह चेव चिंततो पविट्ठो नयरं ।

कुमारो वि ‘अहो ! विचित्तं ईत्थीण चेड्डियं, तं न नज्जइ को वि परमत्थो’ ति भावमाणो पयट्ठो अगओहुत्तो । कमेण य पत्तो गंभीरयं नाम वेलाउलं, जाव गयवरु व्व पहाणपासाओ व्व सुरयणो व्व मुणिवरो व्व नरनाहो व्व मयंरहिओ, पेयवणं व संखदरिसणं व महासंखकुलाउलो, रहवर व्व सचक्को, देवकुलं व सपीढो, सेण व्व ससफरिओ, अब्भुट्ठितो व्व उडंतमहंतकल्लोलेहिं, आलिंयंतो व्व तरंगमालाबाहाहिं, हक्कारितो व्व संखुब्भमाणजलयरमहानिनाएहिं, हसंतो व्व फेण्ट्टहासेहिं, आलवंतो व्व विहंगजंपिएहिं, दिट्ठो रयणायरो । पूइऊण य तं निरुवियाइं जाणवत्ताइं । ताण य मज्झाओ जिणवयणं व अक्खयं गुणाहारं सुचीवरऽद्धासियं नेगमाइट्ठाणं वरसियवडं महत्थुप्पत्तिकारणं सम्मासियजणकयविहवं बुडंतजंतुसंताणतारणक्खमं पहाणदेवयाहिट्ठियं भाडियं महाजाणवत्तं । संकामियं समत्थं पि तत्थ भंडं ।

तओ संगहिएसु-तंदुल-कणिक्का-जल-कट्टाईसु काऊणं गुरु-देवपूयं, दाऊण महादाणं सपरियणो समारूढो जाणवत्ते । तओ समागयाए जलहिवेलाए समाणिएसु पूयाविहाणेसु उब्भियासु नाणाविहपडागासु संचारिएसु आवल्लएसु उक्खित्तासु नंगरासु उड्डीकएसु कूवएसु उब्भिएसुं सिडेसुं उवउत्तेसुं कुच्छिधार-कण्णधार-गब्भे-ज्य-निज्जामएसुं विमुक्क(क्कं) बंधणेहितो जाणवत्तं । साणुकूलवायजोगेण य थोवदिवसेहिं चेव ओगाढं बहूइं जोयणाइं जलहिमज्जे ।

१. सं० वा० सु० ‘रय ति ॥ २. सं० वा० सु० ‘माणेण भ’ ॥ ३. सं० वा० सु० ‘गयंदा’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘यरंतओ म’ ॥ ५. ला० ‘ण य वि’ ॥ ६. सं० वा० सु० ‘ए मुहे ॥ ७. सं० वा० सु० ‘गो तं ॥ ८. ला० इत्थीचे’ ॥ ९. ला० ताव ॥ १०. सं० वा० सु० ‘महरहि’ ॥ ११. ला० ‘णट्टट्टहा’ ॥ १२. सं० वा० सु० ‘मासासियजणं कय’ ॥ १३. सं० वा० सु० ‘संतरण’ ॥ १४. ला० ‘ण य गुरुदेवयपूयं, दाऊण य म’ ॥

इओ य सा बालपंडिया ण्हाण-विलेवण-विभूसाइवज्जिया पोसहनिरया आइंबिलाइकुणमाणी पाएण साहुणीवसहीए चिट्ठइ । तओ अण्णया आवज्जियचित्तेहिं भणिया सा साहुणी-जणय-जणणी-सासू-ससुराइएहिं 'वच्छे ! अइसुकुमालं ते सरीरं, ता मा एवमइदुकरं तवं करेहि' । तीए विण्णत्तं-

'मा कुणह गुरू ! खेयं, छम्मासा जाव ताव काहामि । कट्ठाणुट्ठाणमिणं, परओ पुण अणसणं घेच्छं । ३७। जइ एइ न मे भत्ता परिपूरियनियमणोरहो इहयं । तो तुम्हाण समक्खं नियमेण इमं वयं मज्झ' ॥३८॥

तेहिं भणियं 'पुत्ते ! महंतं देसंतरं गओ ते भत्ता, न छम्मासेहिं तत्तो आगतुं पारिज्जइ, तो मा एवंविहं पइण्णं करेहि' । तीए लवियं 'कया चेव एसा, न एत्थत्थे अण्णं किं पि भणियव्वं' । नाऊण से निच्छयं ठियाणि तुण्हिकाणि ।

अण्णया य निवडंतए महासीए अप्पावरणा अणावरिएँ य पएसे साहुणीउवस्सयस्संतो चेव रयणीए ठिया काउस्सणोणं । एत्थंतरम्मि य समागओ रइसेहरो नाम महानाहियवाई पयंडवाणमंतरो । दिट्ठा य सा तेण । तीएँ य रूवाइसयपरवसीकयमाणसेण पच्चक्खीहोऊण भणिया सा, अवि य—

'पडिवज्जसु मं बाले !, तुह गुणगणरंजिओ जओ अहयं ! रइसेहरनामाणं देवं लक्खेहि मं सुयणु ! ॥३९॥

देवो विं किंकरो हं अज्जप्पभिइं तुहं पिए ! होहं । ता पडिवज्जसु मं जेण दुल्लहं पुण इमं देहं ॥४०॥

पंचणहं भूयाणं समुदाएँ इमं जओ जायं । न य अत्थि कोइ धम्मो, न य परलोगो न निव्वाणं' ॥४१॥

एवं जंपंतस्स वि तस्स न सा देइ उत्तरं जाव । ताव बलामोडीए आढत्तो भुंजिउं पावो ॥४२॥

तीए तवतेएणं जाव न सक्केइ उग्गहं भेतुं । ताव विलक्खीभूओ रुट्ठो एवं विचित्तेइ ॥४३॥

'एईए भत्तारं मारेमि पइव्वयाएँ दुट्ठाए । जेणेसा तव्विरहे मरइ मर्हासोयसंतत्ता' ॥४४॥

नाऊण विभंणेणं कुमरं जलहिस्स मज्झयारत्थं । वेगेण हरिसियमणो पत्तो सो तत्थ वहणम्मि ॥४५॥

विगरालरूवधारी जंपइ 'रे ! सरह देवयं इट्ठं । बोलेमि जओ तुब्भं पोयमिणं अज्ज जलहिम्मि' ॥४६॥

कुमरेणं सो भणिओ 'केणऽवराहेण ववससे एवं ?' । पडिभणइ सुरो 'दुव्विलसिएण तुह दुट्ठभज्जाए' ॥४७॥

'महपुव्वचित्तियं निच्छएण संभवइ जेण तियसो वि । जंपइ एरिसवयणं' इय भाविय भणइ पुण कुमरो ॥४८॥

'जइ सा असिट्ठचित्ता ता तं चियं किं न तियस ! सासेसि ?' ।

सो भणइ 'तवोतेएण तीएँ पभवामि नो अहयं' ॥४९॥

^{१२} तो कुमारो वि 'मिच्छदिट्ठी को वेस महापावो, ^{१३} न य सक्किया णेण मह पिया चारित्ताओ

१. सं० वा० सु० 'य नियमणोहर(रह)सयाइं ॥ २. ला० ता ॥ ३. सं० वा० सु० न अत्थेत्थ-
(त्थत्थे) ॥ ४. ला० 'ए पए' ॥ ५. ला० 'ए रू' ॥ ६. ला० तो ॥ ७. ला० 'एणं जओ इमं जा' ॥ ८. ला०
'हादुक्खसं' ॥ ९. सं० वा० सु० 'वइं इ' ॥ १०. ला० 'य तियस ! किं न सा' ॥ ११. ला० तओते' ॥ १२.
ला० तओ कु' ॥ १३. ला० ण सक्कि' ॥

धम्माओ वा चालितं ति रोसेण इह समागओ, तां कयाइ एवं पि ववसइ' ति भाविऊण जाव सुमरेइ पंचनमोक्कारं ताव उच्छल्लिऊणं जाणवत्तं गओ सो निययट्ठाणं । उत्तिण्णा सव्वे वि वणियउत्ता फलगाणि गहिऊण अण्णण्णदीवेसु ।

देवदिण्णेण वि समासाइयं फलयखंडं । पंचनमोक्कारपरावत्तणपरायणो य पत्तो तीरप्पएसं, कम्मधम्मसंजोगेण य दिट्ठो सुट्ठिण्णं लवणाहिवइणा, 'साहम्मिओ' ति काऊण तुट्ठेण भणिओ 'भद ! रयणायरो हं, तुट्ठो य तुह इमाए पंचनमोक्कारभत्तीए, ता गच्छाहि इओ जोयणसयपंचगसंठिय-रयणपुरपच्चासण्णवणसंडमज्झट्ठियमममित्तमणोरहजक्खसयासं, सो य मह वयणेणं जं किंचि तुमं पत्थिहिसि तं सव्वं संपाडिस्सइ' ति । तेण भणियं 'भयवं ! कहमहं तेत्तियं देसंतरं गंतुं चएमि ?' । तओ समप्पियं सुट्ठिण्ण से एगममयरसं दाडिमफलं, भणिओ य 'एयस्स बीयाणि भक्खंतो वच्चेज्जसु, तओ महप्पभावेण छुहा-तण्हा-परिस्समाइवज्जिओ लहुं तत्थ पविस्ससि' ।

एसो वि 'आएसो' ति भणित्ता पयट्ठो गंतुं । पत्तो य थोवदिवसेहिं चेव तं वणं । दिट्ठं च नाणामणिविणिम्मियं डज्झंतकालागरु-कप्पूराइनिम्मियधूवगंधुद्धयाभिरामं साहयजणविहियपूओवयारं रयणमयमणोहरपडिमाहिट्ठियं मणोरहजक्खभवणं । तओ जाव तत्थ पविट्ठो ताव पच्चक्खीहोऊण संभासिओ मणोरहजक्खेण 'भद ! किं रयणायेण पेसिओ तुमं ?' । 'एवं' ति तेण जंपिए भणियं जक्खेण 'जइ एवं तो गच्छ एयमि अदूरदेसट्ठिए रयणपुरे । एत्थ य सक्को नाम नरवई । सो य जं किंचि जत्तियं वा तुमं चिंतिहिसि तं सव्वं चउगुणं दाहिइ' ।

तओ गओ एसो नये जाव पिच्छइ तं सव्वं पि असि-मसि-किसि-वाणिज्जाइविरहियं पि पंचप्पयारभोगासेवणपसत्तं विविहकीलापरायणं । तत्थ य पेच्छंतो नाणाविहकोउगाइं पत्तो रायमंदिरं । दिट्ठो य इंदो व्व विचित्तविणोएहिं ललमाणो जो जं चिंतइ तं तस्स चउगुणं पयच्छंतो नरवई । तं च दट्ठूण पुच्छिओ एगो पुरिसो, अवि य—

'वाणिज्जाइअत्थोवज्जणरहिओ वि जं इमो ललइ । पुरलोगो लीलाए तं कत्तो पावए अत्थं ?' ॥५०॥

तेण भणियं—

'पायालाओ किं निग्गओ सि ?, पडिओ सि किं व गयणाओ ? ।

किं वा वि जलहिपाराओ आगओ ? पुच्छसे जमिणं' ॥५१॥

कुमारेण जंपियं—

१. ला० तो ॥ २. ला० 'ओ नि' ॥ ३. ला० 'त्तपरायणो पत्तो ॥ ४. सं० वा० सु० 'व पवि' ॥ ५. ला० विविहविणो ॥ ६. सं० वा० सु० 'च्छए ज' ॥

‘मारूससु, सच्चं चिय जलनिहिपाराओँ आगओँ अहयं । पोयविवत्तीएँइहं, ताकहसु जहड्डियं सव्वं’ ॥५२॥

पुरिसेण लवियं—

‘जइ एवं तो निसुणसु, एसो अम्हाण संतिओ राया । पच्चासण्णवणत्थं पइदियहं भद् ! सत्तेणं ॥५३॥

साहेइ महपभावं नामेण मणोरहं महाजक्खं । तुट्ठो य देइ रण्णो महामहंतं वरं एसो ॥५४॥

तस्स पभावेण निवो जत्तियमेत्तं जणो विचिंतेइ । तत्तियमेत्तं अत्थं सव्वं पि चउग्गुणं देइ’ ॥५५॥

तं सोऊण चिंतियं कुमारेण “जइ एवं तो किमेइणा पणइएण ?, तं चेव जक्खं साहेमि, परं पेच्छामि ताव-कहं राया साहेइ ?” । तओ गओ जक्खालए, रुक्खंतरीओ य ठिओ पच्छण्णो जाव अइकंते रयणीपढमजामे समागओ करवालबीओ राया, पूइऊण विण्णत्तो अणेण जक्खो, अवि य-

‘भो भो जक्ख महायस ! अचिंतमाहप्पसत्तिसंजुत ! । कयसत्तुत्तमभत्तयसं मत्तसतोहपरिताए(?ण) ॥५६॥

पच्चक्खो होज्ज ममं’ झड ति जालावलीकरालम्मि । पक्खिवइ अगिक्कुंडे अप्पाणं सकनरनाहो ॥५७॥

तओ जक्खेण उक्खितो सत्तीए, सित्तो य कुंडियानीरेण जाओ पुण्णवो, भणिओ य ‘भो महासत्त ! वरं वरेहि’ । तेण भणियं ‘जइ एवं तो तुहप्पभावेण जो जं चिंतइ तस्स तं चउग्गुणं देज्जामि’ । ‘एवं होउ’ति जक्खेण पडिभणिए पणमिऊण गओ राया नियट्ठाणं ।

बीयदिणे तेणेव कमेण विण्णविऊण जक्खं दिण्णा जलणकुंडे झंपा देवदिण्णेणं । तहेव जाओ वरओ जक्खो । देवदिण्णेण वि ‘तुह चेव पासे चिट्ठउ’ति भणिऊण दिण्णा बीया झंपा । पुणो वि दिण्णो जक्खेण बीओ वरो । एवं तइयवाराँए वि दिण्णो । पुणो वि चउत्थवाराए जाव देइ झंपं ताव गहिओ बाहाए जक्खेण, भणिओ य ‘भद् ! एसा सिरत्तयाऽऽलिंगिया पहाणसत्ती दिण्णा मम इंदेण, एईए पभावेण देमि तिण्णि वरे, न उण अहिए, ता मग्गसु जं वा रोयइ’ । देवदिण्णेण भणियं ‘जइ एवं तो एक्कवरेण जा रण्णो सिद्धी तं एक्कसिं साहिओ जावजीवं पि मम पयच्छ, बीएण मए जीवंतए न अण्णस्स दायव्वा, तइयं पुणो वि पणइस्सं’ । ‘एवं’ति जक्खेण पडिवण्णे ठिओ पच्छण्णो ।

इत्थंतरम्मि समागओ राया । निवारिओ जक्खेण । राइणा भणियं ‘किं कारणं निवारेसि ?’ । जक्खेण भणियं ‘दिण्णा तिण्णि वि वरा एगस्स महासत्तस्स’ । तओ [गओ] विमणदुम्मणो राया

१. ला० भणियं ॥ २. ला० तं च सो ॥ ३. ला० ता कहं ॥ ४. सं० वा० सु० ‘रियउवट्ठिओ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘इओ विण्ण’ ॥ ६. सं० वा० सु० समत्तसत्तेसु परि ॥ ७. ला० हमुपरित्त ॥ ८. ला० ममं, ति झत्ति ॥ ९. ला० प्पसाएण ॥ १०. सं० वा० सु० ‘ए दि’ ॥ ११. सं० वा० सु० मणियं भद् ॥ १२. सं० वा० सु० वो ॥ १३. सं० वा० सु० ‘ण य भ’ ॥ १४. सं० वा० सु० जा च रण्णो ॥ १५. ला० जीयंत ॥ १६. ला० पाठ पतनम् ॥

नियगेहे, निवण्णो य सयणीए । तत्थ य तत्तवाल्याखित्तमीणस्स व दंडाहयभुयंगस्स व वागुरापडियहरिणस्स व तल्लुव्वेल्लिं कुणमाणस्स वोलीणा रयणी राइणो । पभाए य गओ रायदंसणत्थं कुमारो । दिट्ठं च सोगाभिभूयं सव्वं पि रायमंदिरं । पुच्छिओ य कोइ जहा ‘किमज्ज सोगाभिभूयं सव्वं पि रायमंदिरं दीसइ ?’ । तेण सिट्ठं ‘भद् ! जओ अज्ज अम्ह सामी केणावि कारणेण जलणं पविसिस्सइ, तेण सोगाभिभूयं सव्वं पि रायमंदिरं’ । कुमारेण जंपियं ‘जइ एवं तो धीरा भवह, जेण सव्वं पि सुत्थं करेमि’ । त्ति समासासिऊण गओ रायसमीवे । भणियं च ‘देव ! किमेयमियरजणचिट्ठियं तुब्भेहिं समाढत्तं ?’ । राइणा भणियं ‘भद् ! किमेयाए तुज्झ चिंताए ?’ । तेण जंपियं ‘देव ! कारणवसेण पुच्छामि, ता महोवरोहेण साहेउ देवो’ । अइनिब्बधं नाऊण कहियं नरिदेण “भद् ! दाणवसणं महंतमत्थि, तं च जक्खप्पसाएण पूरियमित्थियं कालं, अज्ज पुण तप्पसायविरहियस्स न संपज्जइ, किंच ‘तव्विरहियस्स किं जीविणं ?’ ति चिंताए एयमाढत्तं” । तेण भणियं ‘जइ एवं तो अज्ज प्पभिइं मह सिद्धीए आजम्मं पि चिरंतणट्ठिईए देसु दाणं, मा य जक्खं साहिज्जसु’ । तओ अणिच्छमाणेण वि महया निब्बन्धेण पडिवण्णं नरिदेण । इयरो वि पुणो वि गओ वणसंडे । तहिं च जाव एगम्मि सरोवरे मज्जिऊण उत्तरइ ताव भणिओ एक्काए मज्झिमवयाए नारीए ‘महाभाग ! कुओ किं निमित्तं वा इहाऽऽगओ सि ?’ । तेण भणियं ‘जलहिपाराओ समागओ सुट्ठिण लवणाहिवइणा तुट्ठेण पेसिओ मणोरहजक्खसगासं’ । तओ तीए हरिसियमणाए जंपियं ‘जइ एवं तो उवविसाहि एव तरुवरच्छायाए जेण साहेमि किंपि रहस्सं’ । तव्वयणमणुयत्तमाणो य उवविट्ठो एसो । सा वि उवविसिऊण साहिउमाढत्ता जहा—

“अत्थि गयणाभोगलगसिहरसयसंकुलो समत्थविज्जाहरावासो रयणविणिम्मियजिण-भवणविभूसिओ वेयट्ठो नाम गिरिवरो । तत्थ गयणवल्लहं नाम नयरं । तं च परिपालए समत्थविज्जाहरनरिंदचूडामणी चंदसेहरो नाम राया । तस्स य सयलंतेउरप्पहाणाओ सिरिकंता - कणगमाला - विज्जुमाला - मेहमाला - सुतारा - नामाओ पंच महादेवीओ । ताणं च जहासंखं कणगप्पहा - तारप्पहा - चंदप्पहा - सूरप्पहा - तेलुक्कदेवी - नामाओ सयलकलाकुसलाओ रूवाइविणिज्जियामरसुंदरीओ पंच दुहियाओ । ताणं च कएण पुच्छिओ जणएण नेमिस्सिओ चंदसेहरेण ‘को एयाणं भत्ता भविस्सइ ?’ । नेमिस्सिओ भणियं ‘जो तुह कणिट्ठभाया सूरसेहरो नाम आसि तो मरिऊण मणोरहजक्खो समुप्पण्णो, तए सह अज्ज वि भाइसिणेहेण वट्ठइ, तस्स पासट्ठियाणं एयाणं समीहियवरसंपत्ती भविस्सइ’ । तओ जणएण समप्पियाओ ताओ मणोरहजक्खस्स ताणत्थं । एएण कयाओ इयरपुरिसदुइंसणाओ एक्कगुण-दुगुणतिगुणाइयाओ सरीरलेसाओ देवकुलासणपायालगिहे पच्छण्णीकयाओ चिट्ठंति, ता जइ कहिंचि तुह एस जम्मणियं वियरइ तो तुमं ताओ मग्गेसु, अहं च

ताणं चेव अंबधाई वेगवई नाम तुह रूवाइगुणगणावज्जिया एवमुवइसामि” ।

कुमारो वि ‘जमंबा आणवेइ तं कीरइ’ ति जंपिऊण गओ जक्खसगासे । विण्णत्तो य ‘भयवं ! देहि मे तइयवरेण जाओ तुह पासे चिट्ठंति पायालगिहगयाओ कण्णयाओ । ‘नूणं ताहिं चेव जायाणुरागाहिं अप्पा एयस्स दंसिओ भविस्सइ, कहऽण्णहा एस वियाणइ ?’ ति चिंतिऊण जंपियं जक्खेण ‘वच्छ ! अत्थि कण्णयाओ परं अच्चंतदुरालोयतेयाओ’ । कुमारेण भणियं ‘होंतु, तहा वि पयच्छ’ । तओ दंसियाओ तँइलोक्कदेविज्जियाओ चत्तारि कण्णयाओ । ताणं च कुमारसमीवागयाणं पण्डाओ जक्खकयलेसाओ । कुमारेण भणियं ‘पंचमं किं न देसि ?’ । जक्खेण जंपियं ‘जओ सा एयाण चउण्हं पि सयासाओ तिगुणतेया अइदुरालोया’ । कुमारेण लवियं ‘तहा वि दंसेहि ताव’ । तओ पयडीकया सूरमुत्ति व्व दुइंसणा । सा वि कुमारसमीवागया जाया साभाविया । सव्वाओ वि तं दट्ठूण जायाओ गाढाणुरायाओ । विम्हिण्णं य जक्खेण ‘एयसंतियाओ चेव एयाओ’ ति चिंतिऊण भणियाओ ‘वच्छे ! किं तुम्हाण रोचए एस भत्ता ?’ । ताहिं भणियं ‘ताय ! महापसाओ’ । मणोरहेण जंपियं ‘अत्थि एयस्स अच्चंतगुणालया जेड्डभारिया, तव्विणयपरण चेव एस भत्ता भवइ’ । ताहिं भणियं ‘को जेड्डभगिणीए विणयम्मि विरोहो ?’ । तओ दिण्णाओ जक्खेण । हक्कारिऊण य चंदसेहररायं कओ महाविभूईए विवाहो । दिण्णं च जक्खेण तासिं महादाणं । तओ तेलोक्कदेवीए भणियं ‘ताय ! बाइयाए किं दाहिसि ?’ । तओ जक्खेण समप्पियं मुद्धारयणं । तीए भणियं ‘किमिच्छिण ?’ । तेण भणियं ‘पुत्ते ! इत्थ चिंतामणिरयणं चिट्ठइ’ । तओ हरिसियाए गहियं तीए । सम्माणिऊण जक्खं गओ चंदसेहरो । ताहिं वि विज्जापभावेण विउरुव्वियं वासभवणं । तत्थ य ताहिं समं वियङ्गविणोएण विलसिऊण पसुत्तो कुमारो ।

एत्थंतरम्मि भवियव्वयानिओगेण ‘किमह बाइया कुणइ ?’ ति अवलोयणीविज्जाए अवलोइयं तलोक्कदेवीए जाव ‘पडिपुण्णो अवही, नाऽऽगओ मे भत्त ति पभाए अणसणं गिण्हिस्सामि’ ति कयनिच्छया मलमलिणपंचचीवरावरियसरीरा काउस्सगसंठिया दिट्ठा बालपंडिया । तओ ‘पहाए एसा महाणुभावा अगच्छंते अज्जउत्ते नियमा अणसणं गिण्हइ’ ति भाविऊण गया जक्खसमीवं । साहिओ परमत्थो । तेण वि ‘एवमेयं’ ति नाऊण भणिया ‘वच्छे ! लहं चेव वच्चह जओ पहायप्पाया रयणी । दिण्णो य सहाओ नियकिंकरो धरणीधरो नाम जक्खो । तेण वि विउरुव्वियं महाविमाणं, पूरियं रयण-मणि-मोत्तिय-विट्ठम-कणगाइ-याणं । आरोविओ सुहप्पसुत्तो चेव कुमारो । समारूढाओ सपरियणाओ ताओ । उक्खित्तं अंगुलियाए धरिऊण धरणीधरेण विमाणं । तओ वेगेण जाव वच्चइ ताव किंकिणीजालरवेण विउद्धो कुमारो ‘किमेयं ?’ ति पुच्छिया

१. ला० ‘गमई’ ॥ २. ला० देह ॥ ३. सं० वा० सु० णय ति जंपियं ॥ ४. ला० तेलोक्क ॥ ५-६. ला० ‘ण भणियं’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘रमोत्ति’ ॥ ८. ला० ‘ण जक्खे’ ॥ ९. ला० रोयए ॥ १०. सं० वा० सु० ‘ण्णं । तेलो’ ॥ ११. सं० वा० सु० तओ चेव अवसेण जाव ॥

तेलुक्कदेवी । तीए वि सव्वं साहियं ।

तओ पेच्छंतो गामाऽऽगर-नगराड्मंडियं मेइणीतलं पत्तो झत्ति नियनयरे । दिट्ठा य साहुणीवसहीए काउस्सगड्डिया बालपंडिया । तं च दड्डूण पक्खितं तदुवरि तेलोक्कदेवीए देवदूसं । तओ संभंताए ‘नमो अरहंताणं’ ति काउस्सगं पारिऊण निरूवियं उवरिहुतं । दड्डूण य विमाणं ससज्झसा पविट्ठा अब्भंतरे । ‘किमेयं ?’ ति पुच्छियाओ अज्जाओ । ताहिं कहियं ‘तुह तवप्पभावेण देवागमो भविस्सइ ति संभावज्जइ’ । जाव एवं जंपंति ताव तत्थेव अवयरियं विमाणं । उग्गओय अंसुमाली । इयराणि वि उत्तरिऊण विमाणाओ निसीहियं काऊण पविट्ठाणि अब्भंतरे । पणमियाओ साहुणीओ । इयरा वि दड्डूण नियदइयं संभंता अब्भुट्टिया । पडियाओ ताओ तीए चलणेसु । तमायणिऊण समागओ रायाइनयरलोगो जणयाइसयणवग्गो य । तओ विसज्जिऊण धरणीधरं सव्वदव्वं गहाय महाविभूईए गओ नियगेहं । पारद्धं वद्धावणयं ।

एत्थंतरे पुच्छिओ कुमारो वणियउत्तंवत्तं तप्परियणेण । तओ जावऽज्ज कुमारो वि पडिवयणं न देइ ताव विज्जापहावेण विण्णायपरमत्थाए ‘मा रसे विरसो होउ’ ति भाविंतीए दिण्णमुत्तरं तलोक्कदेवीए, जहा ‘अज्जउत्तो विमाणेण लहुं चेवाऽऽगओ, ते वि भूपयारेण पड्डिया कालेणाऽऽगमिस्संति’ । ‘अहो ! वयणकोसल्लं मम पियाए’ ति रंजिओ कुमारो ।

पइदिणं च जाव पुच्छंति लोगा ताव बालपंडियानिमित्तदिण्णचिंतामणिरयणप्पभावेण कुमारेण सुमरिओ जक्खो । तक्खणं चेव समागओ एसो । भणियं च तेण ‘किं निमित्तमहं सुमरिओ ?’ । कुमारेण भणियं ‘जेण तुह धूयाकयमुत्तरं नित्थरिउं न पारेज्जइ’ । जक्खेणुत्तं ‘जइ एवं तो अहं ते सव्वे संपाडिऊण सिग्घमागमिस्सामि’ । कुमारेण भणियं ‘पसाओ’ । अणुट्टियं च सव्वं जहाऽभिहियं जक्खेण । एवं च कुमारस्स इहलोए चेव दाणफलोवणीयचिंतामणिरयणप्पहावेणं संपज्जंतसयलसमीहियस्स जिणसाहुपूयापरायणस्स दीर्गाईणं दाणं वियरंतस्स सव्वहा पुव्वचिंतियनियमणोरहे पूरंतस्स पंचप्पयारं विसयसुहमणुहवंतस्स वोलीणो पभूयकालो । जाया जोगपुत्ता ।

अण्णयां तत्थ समागया विहरमाणा सीलसागराभिहाणा सूरिणो । निग्गओ तेसिं वंदणवड्डियाए सभारिओ देवदिण्णो । वंदियाभावसारं सपरिवारा सूरिणो । लद्धासीसो य निसण्णो सुद्धभूमीए । समाढत्ता य धम्मदेसणा सूरीहिं; अपि च-लब्धायां सामग्र्यां धर्म एव यत्नो विधेयः, उक्तं च—

१. ला० ‘ओ अं’ ॥ २. ला० ‘या । निवड्डियाओ य ताओ ॥ ३. ला० ‘ययगेहं ॥ पारद्धं चेव वद्धा’ ॥ ४. ला० ‘त्तवुत्तं परि’ ॥ ५. ला० ‘ज्ज कु’ ॥ ६. ला० ‘ज्जाए परिहाविऊण विण्णा ॥ ७. ला० पुच्छति लोको ताव ॥ ८. ला० समरि’ ॥ ९. सं० वा० सु० च जहा’ ॥ १०. ला० ‘वं कुमा’ ॥ ११. ला० ‘णाइदाणं’ ॥ १२. ला० ‘णो य पभू’ ॥ १३. ला० ‘या य तत्थ ॥ १४. ला० ‘या य भाव’ ॥ १५. सं० वा० सु० ‘परियणा सू’ ॥

भो भव्या ! भवभीमसागरगतैर्मानुष्य-देशादिका, सामग्री न सुखेन लभ्यत इति प्रायः प्रतीतं सताम् । तद्युष्माभिरिमां पुरातनशुभैरासाद्य सद्योऽनघां, सर्वज्ञप्रतिपादिते प्रतिदिनं धर्मे निवेश्यं मनः ॥५८॥ स च द्वेधा समाख्यातः साधु-श्रावकभेदतः । यत्नस्तत्रैव कर्तव्यो, यत उक्तं मनीषिभिः ॥५९॥ तावद्दुःखान्यनन्तानि, तावद्रागादिसन्ततिः । प्रभवः कर्मणस्तावत्, तावज्जन्मपरम्परा ॥६०॥ विपदस्तावदेवैतास्तावत् सर्वा विडम्बनाः । तावद्दीनानि जल्पन्ति नरा एव पुरो नृणाम् ॥६१॥ तावद्दौर्गत्यसद्भावस्तावद्रोगसंमुद्भवः । तावदेव बहुक्लेशो घोरः संसारसागरः ॥६२॥ यावन्न लभ्यते जीवैः सद्धर्मोऽयं जिनोदितः । यदा तु सत्त्वैर्लभ्येत कथञ्चिद्वैवयोगतः ॥६३॥ तदा निर्धूय पापानि यान्ति ते परमां गतिम् । अनन्तानन्दसम्पूर्णां निःशेषक्लेशवर्जिताम् ॥६४॥

तओ संजायचारित्तपरिणामेण विण्णत्तो गुरु देवदिण्णेण 'जाव कुडुंबसुत्थं करेमि ताव पव्वज्जागहणेणं संपाडिस्सामि तुम्हाऽऽएसं' । गुरुहिं भणियं 'मा पडिबन्धं करिज्जसि' । 'इच्छं' ति भणिऊण गओ नियगेहे । ठावियो जेड्डुपुत्तो धणवई नाम कुडुंबे । तओ कीरमाणीसु जिणाययणेसु अट्ठाहियामहिमासु, पडिलाहिज्जमाणेसु साहु-साहुणीसमुदएसु, विहिज्जमाणासु साहम्मियजणपडिवत्तीसु, दिज्जमाणेसु दीणा-ऽणाहाईण दाणेसु, किं बहुणा?, सव्वसामग्गीसमुदएण दिक्खिओ सभारियो गुरुणा देवदिण्णो । दिण्णा य अणुसट्ठी, अपि च—

इहाऽपि भो ! भवन्त्येव प्रशमामृतपायिनः । प्रव्रज्याग्राहिणो जीवा निर्बाधसुखपूरिताः ॥६५॥ सा च भागवती दीक्षा युष्माभिरधुना स्फुटम् । सम्प्राप्ता तेन सम्प्राप्तं यत् प्राप्तव्यं भवोदधौ ॥६६॥ केवलं सततं यत्नः प्रमादपरिवर्जितैः । यावज्जीवं विधातव्यो [?] ऽत्र यस्मादिदमुच्यते ॥६७॥ नाऽधन्याः पारमेतस्या गच्छन्ति पुरुषाधमाः । ये तु पारं व्रजन्त्यस्यास्त एव पुरुषोत्तमाः ॥६८॥

तओ 'इच्छामो अणुसट्ठिं' ति भणिए समप्पियाओ साहुणीओ सीलमइनामाए पवत्तिणीए । गहिया दुविहा वि सिक्खा । पालियमहाऽऽउयं जाव निक्कलं काममण्णं । अंते य कयसंलेहणाकम्माणि अणसणविहिणा मरिऊण उप्पण्णाणि दुवालसमकप्पे देवत्ताए । तत्तो चुयाणि महाविदेहे सिद्धिं पाविस्संति । ततश्च—

जं आवइपत्तस्स वि जलहिवई सुट्ठिओ सुरो तुट्ठो । विहियं गुरुसण्णिज्जं तं फलमित्थेव दाणस्स ॥६९॥ जं ताओ विणिज्जियतियसविलयलावण्णरूवसोहाओ । पत्ताओ कामिणीओ तं फलमित्थेव दाणस्सा ७०॥ जं पंचवण्णसुकुमालसहणमणहारिदेवदूसाइं । जायाइं अणेगाइं तं फलमित्थेव दाणस्स ॥७१॥

१. सं० वा० सु० 'मुद्धता' ॥ २. ला० 'बसत्थं' ॥ ३. ला० 'लं यत्नः सततं, प्र' ॥ ४. ला० 'हा सिक्खा' ॥ ५. ला० 'मारसाहिण' ॥

जं चिंतामणि-वेडुज्ज-वज्ज-कक्केयणाई रयणाइं । लद्धाईं सुतेयाइं तं फलमित्थेव दाणस्स ॥७२॥
 जं मणि-मोत्तिय-विट्ठुम-सुवण्णमाईण विविहदव्वाणं । लद्धाओ रासीओ तं फलमित्थेव दाणस्स ॥७३॥
 जं सद्-गंध-रस-रूव-फरिसविसया अणोवमा पत्ता । किती य अणण्णसमा तं फलमित्थेव दाणस्स ॥७४॥
 इय एवमाइ विविहं इहलोए च्चिय फलं मुणेऊण । दाणस्स अणण्णसमं अहो ! तयं देह सत्तीए ॥७५॥

[देवदित्राख्यानकं समाप्तम् । २६.]

साम्प्रतमभिनवश्रेष्ठिकथानकमाख्यायते—

[२७. अभिनवश्रेष्ठिकथानकम्]

इह चेव जंबुदीवे दाहिणभरहऽद्धखंडमज्झमि । अत्थि पुरी पोराणा वेसाली नाम सुपसिद्धा । १।
 तं परिवालइ दरियारिरायवणसीहदलणगुरूसरहो । अट्टारस गणराईण सामिओ चेडओ राया ॥२॥
 एत्तो य जुण्णसेट्ठी अहिणवसेट्ठी य तत्थ निवसंति । दारिद-ईसरत्ताण मंदिरं वाणिजा दोण्णि ॥३॥
 अह अण्णया कयाई संपत्तो तिहुयणेसरो वीरो । छउमत्थकालियाए अहाऽऽणुपुव्वीइ विहरंतो ॥४॥
 पत्ते वरिसारत्ते एगत्थ उवस्सयमि छण्णमि । चाउम्मासियखमणेण संठिओ काउसणेण ॥५॥
 दिट्ठो य तेण जुण्णेण सेट्ठिणा भत्तिनिब्भरमणेण । रोमं चकंचुइज्जंतमुत्तिणा झत्ति पणिवइओ ॥६॥
 ‘अज्जं चेव कयत्थो जाओ हं, अज्ज जीवियं सहलं । जं पावपंकसलिलं चरणजुयं भयवओ पणयं’ ॥७॥
 एवं च भयवओ पायपंकयं नमइ अणुदिणं एसो । सिक्कयकयं(रं)जलिउडो खणमेकं पज्जुवासेइ ॥८॥
 चिंतइ य ‘नूणमेसो भयवं चउमासियमि खमणमि । चिट्ठइ निच्चलदेहो पइदियहं दीसए जेण ॥९॥
 जइ कहवि मज्झ गेहे भयवं पारेइ पारणदिणमि । संपत्ते तो अहयं मन्नेमि कयत्थमप्पाणं’ ॥१०॥
 इय एवमाइचिंतापरस्स कमसो य तस्स वोलीणा । चउरो मासा तत्तो पत्ते पारणगद्विसमि ॥११॥
 वंदित्तु ओणयसिरो विण्णवइ ‘तिलोयबंधव ! मुणिंद ! । महगेहपारणेणं अज्ज पसायं कुणह भयवं !’ ॥१२॥
 इय वोत्तूणं गेहे गंतुं सामगियं विहेऊण । चिट्ठइ एगगमणो दुवारदेसं निरूवंतो ॥१३॥
 ‘एसाऽऽगच्छइ एसाऽऽगच्छइ भयवं’ मणेण चिंतंतो । ‘पारावियभयवंतो होमि कयत्थो न संदेहो ॥१४॥
 दुहसयतरंगमालाउलाओ बहुवसणजलयरणगाओ । भवसायराओ तिण्णो मि होमि जइ एइ जिणनाहो’ ॥१५॥
 इय सुह सुहयखवड्ढंतगरुयपरिणामकंटओ जाव । चिट्ठइ ताव जिणो वि हु पविसइ नवसेट्ठिगेहमि ॥१६॥
 ‘इहलोये चिय फलयं जायइ दिण्णं समत्थसत्ताणं । दाण’मिय भावणाए सेट्ठी पारावए भयवं । ॥१७॥
 अह तकखणेण तम्मंदिरमि पाउब्भवंति दिव्वाइं । पंच अणण्णसमाइं सुपत्तदाणप्पभावेण ॥१८॥

१. स० वा० सु० देत सत्तीए ॥ २. सं० वा० सु० ‘यारिसत्तुवण’ ॥ ३. ला० ‘रायाण’ ॥ ४. ला० पत्ते वासास्ते ॥ ५. सं० वा० सु० सिक्कयंजलिपुडे ख’ ॥ ६. सं० वा० सु० तो दियहं म’ ॥ ७. ला० ‘दियहमि’ ॥ ८. मुपा० ‘संसि रूवं’ ॥ ९. सं० वा० सु० सुभयतरवड्ढं ॥

इयरो वि यं सुरदुंदुभिसदं सोऊण जाव सवियको । जाओ ता केणावि हु सिट्ठं जह 'पारिओ भयवं' ॥१९॥
ता वड्ढियपरिणामो जाओ, भयवं पि विहरिओऽन्नत्थ । एत्तो य पासजिणतित्थकेवली आगओ तत्थ ॥२०॥
नयरीओ तओ लोगो वंदणवड्ढियाँ निग्गओ झत्ति । भयवं पि कहइ धम्मं भवण्णवुत्तारणरंडं ॥२१॥

अवि य—

भो भो भव्वा ! सरणं धम्मो च्चिय होइ एत्थ संसारे । जिणपण्णत्तो, सेसं सव्वं पि हुँ आलजालसमं ॥२२॥
सव्वाओ रिद्धीओ समत्थसंसारियाँ सोक्खाइं । सुकएणं धम्मेणं हवंति सग्गा-ऽपवग्गा वि ॥२३॥
दाणाइचउपयारो पण्णत्तो सो य तित्थनाहेहिं । ताँ कुणह तयं जेणं पावह अचिरेण सिवसोक्खं ॥२४॥
एत्थंतरम्मि नवसेट्ठिपुण्णपब्भारविम्हिओ लोगो । पत्थावं लहिऊणं पुच्छइ परमेण विणएणं ॥२५॥
'भयवं ! एत्थ पुरीए संपइ को गरुयपुण्णसंजुत्तो ?' । भयवं पि जुण्णसेट्ठिं बहुपुण्णं अक्खए तत्थ ॥२६॥
लोगो वि आह 'भयवं ! न तेण पाराविओ जिणो किंतु । बीएण, तग्गिहम्मि य पाउब्भूयाँ दिव्वाइं' ॥२७॥
भयवं पि भणइ 'जइ सो न सुणंतो पारणं जिणवरस्स । खणमेक्कं तो नियमा पावेंतो केवलं नाणं ॥२८॥
इयरस्स पुणो दिव्वाइं चेव इहलोइयं फलं जायं । न उणो पारत्तहियं विसिट्ठभावाइरहियस्स' ॥२९॥
सोऊण इमं बहुमाणमुव्वहंती उ जुन्नसिट्ठिम्मि । नियनियगेहेसु गया नमिऊणं केवलिं परिसा ॥३०॥

अभिनवश्रेष्ठिकथानकं समाप्तम् । २७.

एवमन्येऽपि दृष्टान्ताः कथनीया इति प्रथमश्लोकभावार्थः ॥८५॥

साम्प्रतं द्वितीयश्लोकभावार्थमाह । तत्र धनसार्थवाहकथानकमाख्यायते—

[२८. धनसार्थवाहकथानकम्]

जंबुद्वीवम्मि दीवम्मि विदेहे पुव्वपुव्वए । अत्थि देवपुरायारं नयरं खिइपइड्डियं ॥१॥
धणओ व्व धणो नाम सत्थवाहो गुणऽणिओ । अत्थि विक्खायकित्तीओ बाहत्तरिकलाऽऽलओ ॥२॥
अण्णया सो कुडुंबस्स जागरियं जाव जगइ । रत्तीए पच्छिमे जामे ताव चित्तम्मि से ठियं ॥३॥
'निग्गतुं जो न पेच्छेइ महीवीढमिमं नरो । अच्छेरासयाइन्नं सो नरो कूयदद्दुरो ॥४॥
न विलासा, न पंडिच्चं, न य वायावियद्धया । न देसभासाविण्णाणं, न अण्णं किं पि सोहणं ॥५॥
जाव धुत्तसमाइन्ना नाणावुत्तंतसंकुला । बहुहा नो पारिपूता पुरिसेण वसुंधरा ॥६॥
ता गच्छामि महीवीढदंसणट्ठा तहेव य । सबाहोवत्तचित्तेण कित्तिं वत्तेमि सत्तमं' ॥७॥
सामगियं विहेऊण, घोसावित्ता सुघोसणं । जहा 'वच्चइ सत्थाहो वसंतपुरमुत्तमं ॥८॥

१. ला० हु ॥ २. ला० 'दं सुणिऊण ॥ ३. ला० 'यागओ ॥ ४. मुपा० हु डं(इं)दयालसमं ॥ ५ ला० तो ॥ ६. सं० वा० सु० न किं अण्णं पि सो' ॥ ७. सं० वा० सु० परित्तंता ॥

संपयं जो समं तेण वच्चई समणाइओ । तस्स सव्वेसु कज्जेसु धणो कुणइ निव्वुइं ॥९॥
 एवमुग्घोसणं सोउं पयट्ठा बहुपाणिणो । सूरि वि गंतुमिच्छंति धम्मघोसा सगच्छया ॥१०॥
 साहुसंघाडगो एगो सत्थवाहस्स अंतिए । सरूवजाणणट्ठाए धम्मघोसेहिं पेसिओ ॥११॥
 सत्थवाहो यं तं दट्ठं पुच्छई भत्तिनिब्भरो । आगमणकारणं तेण सिद्धं सव्वं सवित्थरं ॥१२॥
 सत्थवाहाऽऽह 'जइ एवं गंतुं सत्थनिवेसणे । संठाह मं पडिक्खंता' तओ एत्थंतरम्मि य ॥१३॥
 अंबयापुण्णपिडण्ण को वि तत्थ समागओ । सत्थाहट्ठोयणट्ठाए, जईणोसो वि दावए ॥१४॥
 तओ साहूहिं सो वुत्तो 'कंदमूल-फलाइयं । जईणं कप्पए नेय महाभाग ! सचेयणं' ॥१५॥
 धणेण ते वि तो पुट्ठा कप्पा-ऽकप्पं समासओ । संखेवेणावि साहिता सूरिपासम्मि ते गया ॥१६॥
 साहिए सव्ववुत्तंते, पंचसयसमण्णिओ । मुणीणं तत्थ ठाणम्मि गओ सूरी गुणायरो ॥१७॥
 पसत्थे सत्थवाहो वि दिणे तत्थ समागओ । समत्थपुरलोगेण सव्वओ परिवारिओ ॥१८॥
 संवूढे सव्वसत्थम्मि पत्थिओ अगओ तओ । चलिए यऽसेसलोयम्मि वच्चए स सुहेण तो ॥१९॥
 कुव्वंतो सव्वमक्खूणं सत्थस्स कमसो तओ । पत्तो भीमाडविं एकं छिण्णावायं महालियं ॥२०॥

जा य भारहकह व्व अज्जुण-भीम-नउलालंकिया, सुजणजणमुत्ति व्व सुचित्तया, कुनडपेच्छव्व सकुरंगया, जिणिंदभवणभूमि व्व संचरंतबहुसावया, सुसाहुतणु व्व ससंवरा, सिद्धि व्व सवरहिया, मयमतविलासिणि व्व समयणा, हरमुत्ति व्व सगंगया, अलयाउरि व्व बहुविहवा, सुयणजणमवित्ति व्व बहुनया, कुंजणचिट्ठ व्व बहुआवया, कुंचंधरबुंदि व्व सदाढिया, जिणिंदावलि व्व बहुसत्तय ति । तीए वि पत्तो बहुमज्झदेसभागं । इत्थंतरम्मि य संगामारूढविजइनरिंदो व्व गुरुतरवारिधारानिवाओवसामियपरपक्खो वाहिणीपूरेहिरो कयगज्जियरवो अब्भुण्णइपहाणो सचावो सभागओ पाउसकालो । अवि य—

फुरमाणविज्जुलाऽऽडोवभीसणो चलिरइंदगोविल्लो । दुस्संचारचिलिच्चिलकद्धमभरभरियमग्गालो ॥२१॥
 अइविरसददुराऽऽरडियंसह[?परि]पुण्णदसदिसिविहाओ । पसरंतगिरिर्नईनीरपूरपरिखलियपहगमणो २२
 इय एवंविहजलयाऽऽगमम्मि संभगमग्गणइपसरो । उप्पंसुलयपएसे छाएऊणं ठिओ सत्थो ॥२३॥
 वच्चंतेहिं दिणेहिं समत्थसत्थम्मि निट्ठियं धण्णं । सच्चित्तकंद-फल-मूलभोयणा तो जणा जाया । २४।
 मुणिणो वि गिरिगुहावसहिसंठिया चित्तकयसमाहाणा । नाणाविहतवनिरया ज्ञाण-ऽज्झयणेण चिट्ठंति ॥२५॥
 बहुवोलीणे वासे चिंतइ रयणीय पच्छिमे जामे । सत्थाहो 'मह सत्थे के सुहिया? दुं'खिया के वा?' ॥२६॥

१. ला० वि ॥ २. ला० 'चस्सयस्सम' ॥ ३. ला० गणाय ॥ ४. ला० 'च्छण व्व ॥ ५. सं० वा० सु० 'णमुत्ति व्व ॥ ६. ला० कुजाण ॥ ७. ला० कुच्चं धरणबुंदि ॥ ८. सं० वा० सु० 'यसहदसदि' ॥ ९. सं० वा० सु० 'पएसे आवसिऊणं ठिओ ॥ १०. ला० भोइणो ॥ ११. ला० दुत्थिया ॥

इय चिंतंतस्स तओ झड ति चित्ते चमक्किया मुणिणो ।

‘अहह अहो हा ! कड्डं, होहिंति महामुणी दुहिया ॥२७॥

जम्हा जिणिंदमुणिणो कंदं मूलं फलं च सच्चित्तं । न छिवंति करयलेण वि तम्हा ते दुक्खिया एके ॥२८॥
धी धी ! मज्झ पमाओ, तत्तिमकाउं जओ तवस्सीण । इह-परलोगावाए खित्तो अप्पा अपुण्णेण ॥२९॥
कल्लं पहायकाले समत्थतत्तिं मुणीण हं काहं’ । इय चिंतंतस्स झड ति जामिणी तस्स वोलीणा ॥३०॥

तो जायम्मि पहाए पुच्छइ नियपरियणं जहा ‘मुणिणो ।

निवसंति कत्थ ?’ तेणावि अक्खियं इत्थ गिरिविवरे ॥३१॥

जम्हा दिणपंचग-सत्तगाओ पक्खाओ अहव मासाओ । दीसंति इओ इंता ते मुणिणो भत्त-पाण्डा ॥३२॥
तो परिवारनिंदरिसियमणेण जाव सो तहिं पत्तो । ता पिच्छइ ते मुणिणो विचित्ततवसोसियसरीरे ॥३३॥

दड्ढूण तओ लज्जाऽवणयसिरो सूरिपायपउमम्मि ।

पणओ गुरुणा वि तओ दिण्णो वरधम्मलाभो सो(से) ॥३४॥

भणियं च तेण ‘भयवं ! खमह महं जं पमायदोसेणं । नेय कया भे तत्ती एत्तियकालं विमूढेण’ ॥३५॥
तो पत्थावं नाउं गुरूहिं से धम्मदेसणा विहिया । संवेयकरी परमा भवण्वुत्तरणवरपोया ॥३६॥
तं सोऊणं जंपइ ‘मुणिणो पेसेह मज्झ गेहम्मि । पडिलाहयामि जेणं अहापवत्तेहिं वत्थूहिं’ ॥३७॥
ता तब्भावं नाउं गुरूहिं सह तेण पेसिया मुणिणो । गिहपत्तेणं य तेण वि निरुविया रसवई सव्वा ॥३८॥
जाव न किंचि वि सिज्झइ घएण पडिलाहिया मुणी ताव । रोमंचकंचुइज्जंतमुत्तिणा हड्डतुट्टेण ॥३९॥
कालाइविसुद्धेण य तेण य दाणेण मोक्खफल्यस्स । सम्मत्तमहातरुणो बीयं संपावियं तेण ॥४०॥
तं च घयं परिभुत्तं सबाल-वुद्धाउलेण गच्छेण । सम्मं च परिणयं तं तत्ततवयबिंदुनाएण ॥४१॥
एवं कमेण वत्ते वरिसारत्तम्मि सत्थवाहो वि । सत्थेण समं पत्तो अभिरुइए झत्ति नयरम्मि ॥४२॥
तत्थ वि दड्ढूण निवं कयसम्माणो य तेण नियभंडं । विणिवट्टइ मणचिंतियलाभाओ अहियलाभेण ॥४३॥
घेत्तूण य पडिभंडं पुणो वि रण्णा विसज्जिओ संतो । संपत्तो नियगेहे सत्थेण समं सुखेमेणं ॥४४॥
तत्थ य निययमणोरहसंपायणतप्परस्स लीलाए । वच्चइ सुहेण कालो अणुहवमाणस्स विसयसुहं ॥४५॥
एवं कमेण पत्ते पज्जंते संचइत्तु सो देहं । तेणं दाणफलेणं मिहुणगपुरिसो समुप्पण्णो ॥४६॥
उत्तरकुराइ मणहरूवो बत्तीसलक्खणसमेओ । समरूवजोव्वणाए पहाणनारीइ संजुत्तो ॥४७॥
कप्पतरुब्भवहियइड्डविसयसुहसंगमेक्कदुल्लिओ । पलिओवमतियमाउं भोत्तूणं सुरवरो जाओ ॥४८॥
सोहम्मे वरकप्पे, भासुरबुंदी पलंबवणमालो । तिपलियठिई [? य] तत्तो चइऊण महव्वलो जाओ ॥४९॥

१. ला० ‘लेहिं वि ॥ २. ला० धिद्धि मज्झ ॥ ३. ला० ‘निंदसिय’ ॥ ४. सं० वा० सु० भे भत्ती ॥ ५. ला० ‘वुत्तारणप्पवरा ॥ ६. ला० वत्थेहिं ॥ ७. सं० वा० सु० ‘ण वि ते’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘ते तं च’ ॥ ९. ला० ‘राए म’ ॥

इय उसभसामिचरियं वत्तव्वं ताव जाव मोक्खम्मि । सुर-नरवंदियचलणो संपत्तो खवियकम्मंसो ॥५०॥
 इय घयदाणेण धणो तेरसमभवम्मि जिणवरो जाओ । ता दाणम्मि पयत्तं कुणह सया निययसत्तीए ॥५१॥
 धणसत्थवाहचरियं संखेवेणं मए समक्खायं । सेसभवग्गहणाइ य सेयंसकहाणए वोच्छं ॥५२॥

[धनसार्थवाहकथानकं समाप्तम् + २८.]

साम्प्रतं ग्रामचिन्तकोदाहरणमाख्यायते—

[२९. ग्रामचिन्तकोदाहरणम्]

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे महाविदेहे वासे गामस्सेगस्स चिंतओ निरूविओ केणइ राइणा । सो य अन्नया कयाइ तव्वयणेण चेव गहियजलपत्थयणो गिहजोगकट्टाणयणनिमित्तं पंचसयाणि सगडाणि घेतूण पविट्ठो महाडविं । इओ य कहिंचि सत्थपरिब्भट्ठो तेण सगडमगेण तण्हा-लुहापरिकिलामियसरीरो परिब्भमतो पत्तो तमुद्देसं एगो साहुगच्छो । दिट्ठो य तेण गामचिंतगेण । तओ 'हा ! कहमित्थ एए समागय ?' ति चिंतंतो संभमेण गओ साहुसमीवे । वंदिया भावसारं । ताणं च मज्झे सरयसमओ व्व महानरिंद व्व वायभगनरो व्व वुड्डपुरिसो व्व सुवेज्जो व्व गयरओ, ससहरो व्व कुविओ व्व जिणसिद्धंतो व्व पीयमयरो व्व समओ, सच्चविओ महासूरी । वंदिरुण पुच्छिओ 'भयवं ! किमेरिसे महारणे तुब्भे समागया ?' । सूरीहिं भणियं 'भद्द ! पंथाओ परिब्भट्ठा' । तओ तेण नीया निययावासे । भत्तिभरनिब्भरंगेण य पडिलाभिया । चिंतिउं च पवत्तो, अवि य—

'अडवीमज्झम्मि इमे अचिंतचिंतामणी महासत्ता । पत्ता मए सुपत्ता, अहो ! महं पुण्णपब्भारो ॥१॥
 कत्थाऽहं कंतारे समागओ ?, कहव दिव्वजोएण । विसमदसंतरपत्ता कत्थ इमे साहुणो पत्ता ? ॥२॥
 एवंविहसामगी सभागधेज्जाण होइ पुरिसाणं । ता नूण इओ होही कल्लाणपरंपरा मज्झ ॥३॥
 जे पावपंकमलिणा होंति नरा ताण न हु इमे समणा । एवंविहपत्थावे दंसणविसयं समुवयंति' ॥४॥
 इय चिंतंतेण तओ चलणजुयं पुण वि वंदियं ताणं । भुत्तुत्तरे य खगं घेतूणं दंसए मगं ॥५॥
 सूरीहिं वि अइभद्गभावं नाऊण तस्स वक्खायं । सम्मदंसणमणहं बीयं सिवसोक्खवरतरुणो ॥६॥
 कम्मखओवसमेण य पडिवण्णं तेण तं गुरुसगासे । सूरीहिं तओ भणिओ 'न पमाओ एत्थ कायव्वो ॥७॥

यतः—

अत्रासं विमलं कलङ्कविकलं नीरेखवृत्तान्वितं, त्रैलोक्येऽद्भुतवर्णविंदमहितं प्रह्लादसम्पादकम् ।

१. ला० तो ॥ २. ला० 'णाइं, से' ॥ ३. सं० वा० सु० य कयाइ ॥ ४. ला० 'रिंदो व्व ॥ ५. ला० 'मेत्थ महा' ॥ ६. ला० 'ण पडि' ॥ ७. सं० वा० सु० 'उं पव' ॥ ८. सं० वा० सु० 'विणयं' ॥ ९. ला० 'रीहिं अइ' ॥ १०. ला० 'वादसहितं ॥

संसाराम्बुनिधौ सकर्णहृदयं सम्यक्त्वरत्नोत्तमं, सम्प्राप्यापि ।

महाफलोदयगुणं कः स्यात् प्रमादी पुमान् ? ॥ ८ ॥

तओ 'जहा भयवंतो समाइसंति तहा करिस्सामि' ति [?भणिउं] मग्गे समोयारिऊण गुरुणो पडिनियत्तो गामचिंतगो । काऊण य तं त(तं) रायकज्जं गओ नियगेहं । तत्थ वि जिणवंदणऽच्चणपरायणस्स सुसाहुबहुमाणनिरयस्स जिणपण्णत्तसिद्धंतपडिवत्ती कुणंतस्स पंचनमोक्कारसलिलप्पवाहपक्खालियबहलकम्ममलपटलस्स अविरयसम्मदिट्ठिस्स चेव समागओ अहाऽऽउयकालो । समाहिणा य चइऊण सरीरपंजरं समुप्पण्णो सोहम्मकप्पे पलिओवमाऊ महिद्धिओ तियसो ति ।

तत्तो ठिईखणं चइउं एत्थेव भरहवासमि । नयरीइ विणीयाए सिरिपढमजिणिंदतणयस्स ॥९॥
 भरहाहिवस्स पुत्तो भरहनरिंदस्स सो समुप्पण्णो । मिरिई नाम पसिद्धो पढमोसरणमि जयपहुणो ॥१०॥
 सिरिउसभसामितित्थंकरस्स वयणामयं सुणेऊण । संवेगभावियमणो जाओ समणो समियपावो ॥११॥
 अह अण्णया कयाई संपत्ते गिम्हकालसमयमि । सेय-मलाऽऽविलगतो उव्विणो चिंतए एवं ॥१२॥
 'मेस्सगिरिसरिभारं सामण्णमिणं जिणेसरुद्धिं । उत्तमसत्ताइणं न समत्थो हं समभिवोदुं ॥१३॥
 तायस्स य लज्जाए वयभट्टो कह गिहम्मि वच्चामि ? । कह तरियव्वो य इमो वग्घमहादुत्तडीनाओ ?' ॥१४॥
 इय चिंतंतस्स तओ झड ति नियगा मई समुप्पणा । जह पारीवज्जमहं एवंविहयं पवज्जामि' ॥१५॥

जओ भणियमागमे—

समणा तिदंडविरया भयवंतो निहुयसंकुचियगत्ता ।

अजिइंदियदंडस्स उ होउ तिदंडं ममं चिंधं ॥३०१॥

लोइंदियमुंडा संजया उ, अहयं खुरेण ससिहाओ ।

थूलगपाणवहाओ वेरमणं मे सया होउ ॥३०२॥

निक्किंचणा य समणा अकिंचणा, मज्झ किंचणं होउ ।

सीलसुयंधा समणा, अहयं सीलेण दुगंधो ॥३०३॥

ववगयमोहा समणा, मोहच्छन्नस्स छत्तयं होउ ।

अणुवाहणा य समणा, मज्झं च उवाहणा होंतु ॥३०४॥

१. सं० वा० सु० 'णं किं स्यात् ॥ २. सं० वा० सु० 'इसति ॥ ३. मुपा० य राय' ॥ ४. मुपा० 'वत्ति(त्तिं) कु' ॥ ५. मुपा० 'पडल' ॥ ६. मुपा० 'णा चइऊण देहपंजरं ॥ ७. मुपा० 'हम्मे क' ॥ ८. मुपा० ला० ठिइक्खणं ॥ ९. ला० रीय वि' ॥ १०. सं० वा० सु० मिरई ॥ ११. ला० 'गिरिसमभारं ॥ १२. सं० वा० सु० अजियंदिय' ॥

सुक्कंबरा य समणा निरंबरा, मज्झ धाउरत्ताइं ।
 होंतु इमे वत्थाइं अरिहो मि कसायकलुसमई ॥३०५॥
 वज्जेतऽवज्जभीरू बहुजीवसमाउलं जलारंभं ।
 होउ मम परिमिणं जलेण ण्हाणं च पियणं च ॥३०६॥
 एवं सो रुड्गमई नियगमइविगप्पियं इमं लिंगं ।
 तद्धिय-हेउमुजुत्तं पारीवज्जं पवत्तेइ ॥३०७॥
 अह तं पागडरूवं दडुं पुच्छेज्ज बहुजणो धम्मं ।
 कहई जईण तो सो वियालणे तस्स परिकहणा ॥३०८॥
 धम्मकहाअक्खित्ते उवट्टिए देइ सामिणो सीसे ।
 गामा-ऽऽगर-नगराइं, विहरइ सो सामिणा सद्धिं ॥३०९॥

(आ० नि० गा० ३५३-३६१)

अह अण्णया कयाई विहरंतो उसभसामित्थयरो । गामा-ऽऽगर-नगरेसुं विणीयनयरिं समणुपत्तो ॥१६॥
 तो भरहचक्कवट्ठी जिणिंदपयकमलवंदणनिमित्तं । नीसरिओ भत्तीए पियरं नमिऊण उवविट्ठो ॥१७॥
 भयवं पि कहइ धम्मं, कहंतरं जाणिऊण भरहो वि । पुच्छइ 'किमित्तियाए परिसाए मज्झयारम्मि ॥१८॥

होही को वि जिणिंदो इह चेव य भारहम्मि वासम्मि ?' ।

देवेइ तयं मिरियं भयवं जह 'एस तित्थयरो ॥१९॥

देविंदवंद-असुरिंदवंदिओ सत्तरयणिपरिमाणो । होही अपच्छिमो इह भरहे सिरिवीरनामो त्ति ॥२०॥
 पढमो य दसाराणं, मूयविदेहाइ तह य वरचक्की' । तं सोउं भरहवई भत्तीए वंदई मिरियं ॥२१॥
 तिपयाहिणं विहेउं रोमंचंचियतणू तओ थुणइ । 'लाभा हु ते सुलद्धा, धण्णो कयपुण्णओ तं सि ॥२२॥
 जं ताएण वि कहिओ चरिमो तित्थंकरो इहं तह य । पढमो य वासुदेवो, मूयविदेहाए चक्की य ॥२३॥
 न वि ते पारीवज्जं वंदामि अहं इमं च ते जम्मं । जं होहिसि तित्थयरो अपच्छिमो तेण वंदामि' ॥२४॥
 इय थोऊणं भरहो पियरं आपुच्छिऊण नयरीए । पविसरइ-सपरिवारो, मिरिई वि हु तं गिरं सोच्चा ॥२५॥
 मल्लो व्व रंगमज्झे तिवइं अप्फोडिऊण तिकखुत्तो । गव्वाऽऽवरियदेहो अह जंपइ एरिसं वयणं ॥२६॥
 'अहयं च दसाराणं, पिया य मे चक्कवट्ठिवंसस्स । अज्जो तित्थयराणं अहो ! कुलं उत्तमं मज्झ ॥२७॥
 जइ वासुदेव पढमो, मूयविदेहाइ चक्कवट्ठित्तं । चरिमो तित्थयराणं अहो ! कुलं एत्तियं मज्झ' ॥२८॥

१. सं० वा० सु० परिणएणं ॥ २. ला० 'सुग्गु (गु) त्तं ॥ ३. ला० कहयइ ज' ॥ ४. सं० वा सु० 'इ निच्चं सो सा' ॥ ५. सं० वा० सु० 'दाएइ तयं मिरई ॥ ६. ला० 'दए मिरई ॥ ७. सं० वा० सु० 'णं, होउ अल(लं) एत्तियं ॥

इय एवंविहगव्वेण तेण अइगरुयदुक्खसंजणगं । बद्धं नीयागुत्तं कोडाकोडीओं अयरारणं ॥२९॥
 एवंविहचिट्ठाए जिणेण सह तस्स विहरमाणस्स । भयवं पि य संपतो सेले अट्ठावए मोक्खं ॥३०॥
 अह कइया वि हु जाए रोगायंके सुदारुणे तस्स । अस्संजओ त्ति काऊण नेय साहूहिं पडियरिओ ॥३१॥
 चित्तेइ तओ एसो 'जइ बीओ कहवि होइ ता लट्ठं' ! एत्थंतरम्मि पत्तो कविलो नामेण निवतणओ ॥३२॥

अक्खाए जइधम्मे सो जंपइ 'किं ण तुज्झ किरियाए ।
 पुण्णं किंचि वि जायइ' ? पडिभणइ तयं तओ मिरिई ॥३३॥
 'अत्थि इहइं पि किंचि वि', तं सोउं जंपए तओ कविलो ।
 'जइ एवं तुह किरियं अवियप्पमहं पि काहामि' ॥३४॥

मिरिई वि 'मज्झ सरिसो एसो पावो त्ति को वि' नाऊण ।

नियदिक्खाए दिक्खइ, एवं परिवायगा जाया ॥३५॥

'इहयं पि अत्थि किंचि वि' एणेकेण दुट्ठवयणेण । अयरारण कौडिकोडी संसारो मिरिइणा भमिओ ॥३६॥
 इय वीरनाहचरियं सव्वं पि सवित्थरं कहेयव्वं । 'सुपसिद्धयं' ति काउं अम्हेहिं न इत्थ तं लिहियं ॥३७॥

ग्रामचिन्तकोदाहरणं समाप्तम् । २९.

अधुना श्रेयांसकथानकमाख्यायते—

[३०. श्रेयांसकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे कुरुजणवयालंकारभूयं गयउरं नाम नयरं । तत्थ य बाहुबलिपुत्तो सोमप्पभो नाम राया । तस्स य पुत्तो सेज्जंसो नाम कुमारो । सो य अण्णया कयाइ रयणीए चरिमजामे सुमिणयम्मि मंदरं सामलीहूयं पासइ, सो य मए अमयकलसेहिं सित्तो विसेसओ पुण्णवो जाओ । सोमप्पभेणावि सहस्सरस्सिबिंबाओ रस्सीओ निवडियाओ सुमिणए दिट्ठाओ, सेज्जंसेण उक्खिविरुण संजोइयाओ अहिययरं दिप्पिउमाढत्ताओ । नगरसेट्ठिणा पुण कोइ महल्लपुरिसो सत्तुसिन्नेण सह जुज्झमाणो सुमिणए दिट्ठो, तेण तं सत्तुसेत्तं निट्ठवियपायं, सेज्जंसकुमारेण य से साहिज्जं कयं तेण सव्वं मुसुमूरियं । पभाए सव्वे वि मिलिया परोप्परं साहिति । परं सुमिणत्थमबुज्झमाणा जंपंति जहा 'कुमारस्स किंपि कल्लाणं होहिइ' ति । तओ उट्ठित्ता नियनियगेहेसु गया । सेज्जंसो वि नियगेहउवरिमतलगवक्खए नगरसोहासमुदयमवलोयंतो चिट्ठइ ।

१. ला० इइ ए ॥ २. ला० 'इ तओ तयं मि' ॥ ३. ला० किंचिं ता ॥ ४. ला० कोडकोडी ॥ ५. सं० वा० सु० 'त्तो सेसओ ॥ ६. ला० 'बा रस्सी' ॥ ७. ला० 'ण से ॥ ८. सं० वा० सु० होई ति ॥ ९. ला० 'वक्खे न' ॥

एतो य भयवं उसभसामी गहियजिणदिक्खो कयमोणव्वओ जत्थ जत्थ पविसइ तत्थ तत्थ वत्थाऽऽभरणा-ऽलंकार-कण्णया-रयण-करि-तुरगाइएहिं उवनिमंतिज्जइ, जँओ न जाणइ जणो 'केरिसा भिक्खा? केरिसा वा भिक्खयर?' ति । एवं च विहरमाणस्स भयवओ बोलीणो संवच्छरो तम्मि दिणे । दिट्ठो पओलीदुवारेण पविसमाणो सेज्जंसकुमारेण । दट्ठूण य चित्तिउं पवत्तो, अवि य—

‘जारिसमिमं पियामहरूवं लिगं वयं पमाणं च । तारिसयं मम कत्थइ पडिहासइ दिट्ठपुव्वं च ॥१॥
ता कत्थ पुणो दिट्ठं?’ इय ईहा-ऽपूह-मगणपरस्स । जायं जाइस्सरणं, तेणं वि सो जाणिउं सव्वं ॥२॥
‘पडिलाहेमि जिणिदं जइ एइ कहंचि मेह गिहे’ एवं । भावित्तु गवक्खाओ उत्तरिय गिहंगणं पत्तो ॥३॥
एत्थंतरम्मि तदंसणाय खोयरसपुण्णघडएहिं । संपत्ता के वि नरा, भयवं पि समागओ तत्थ ॥४॥
तो दट्ठं तिजगगुरुं पयडसमुब्भिण्णबहलरोमंचो । गहिउं ईक्खुरसकुडं भणइ ‘अणुगहह मं भयवं!’ ॥५॥
तो ‘सुज्झइ’ ति काउं जिणनाहेणं वि पसारिया पाणी । सेज्जंसेण वि खित्तो सव्वो वि रसो करयलम्मि । ६
अवि चंदिम-सूरेसुं सिहा विलगोइ, नेय हत्थाओ । एक्को वि पडइ बिंदू, जम्हा जिणअइसओ एसो ॥७॥
‘अज्जं चेव कयत्थो जाओ हं, अज्ज जीवियं सहलं । माणुसजम्मस्स फलं अज्जं चिय नणु मए लद्धं ॥८॥
जं पारिओ जिणिदो मह गेहे’ जाव चिंतई एवं । ताव गयणंगणाओ वुट्ठं गंधोदयं सुरहि ॥९॥
सुरकरकोरयमुक्का जयजयसदेण पडइ गयणाओ । परिलिंतमत्तमहुयरझंकारा कुसुमवरवुट्ठी ॥१०॥
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं गयणम्मि गहिरघोसाओ । आबद्धइंदधणुहो मुक्को रयणाण संघाओ ॥११॥
चेलुक्खेवो य कओ, तहा य पप्फुल्ललोयणा तियसा । जंपंति तत्थ एवं ‘अहो ! सुदाणं महादाणं ॥१२॥
कुमर ! कयत्थो सि तुमं, तुज्झ सुलद्धं च माणुसं जम्मं । जेणऽज्ज तए तिहुयणनाहो पाराविओ एवं’ ॥१३॥
सोऊण तयं सोमप्पभाइओ पुरजणो तहिं पत्तो । विम्हयउप्फुल्लमुहो पुच्छइ परमेण कोट्टेण ॥१४॥

‘कुमर ! तए कह नायं जह दिज्जइ भयवओ इमं दाणं ?’ ।

‘जाइस्सरणाओ मए नायमिणं’ जंपई कुमरो ॥१५॥

‘अण्णं च भयवया सह सिणेहसंबद्धओ अहं भमिओ ।

अट्ठभवगहणाइं’ पुणो वि तो पुच्छई लोगो ॥१६॥

‘केरिसयाइं ताइं ? साहसु कोउहलं जओ अम्ह’ ।

‘जइ एवं तो निसुणह’ कुमरो कहिउं समाढत्तो ॥१७॥

१. सं० वा० सु० तओ ॥ २. सं० वा० सु० ‘ण चिं’ ॥ ३. ला० जाईसर’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘ण विसेसण जा’ ॥ ५. ला० मम गिहे ॥ ६. ला० ता ॥ ७. ला० उच्छुरस’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘हेणं प’ ॥ ९. ला० सयलो वि ॥ १०. ला० ‘दय सुरेहिं’ ॥ ११. मुपा० ‘प्पहाइ सव्वो वि पुरजणो पत्तो ॥ १२. ला० विम्हियउ’ ॥ १३. सं० वा० सु० ‘यं दाइज्जइ भ’ ॥ १४. पु० ला० जाईसर’ ॥

इहेव जंबुद्दीवे दीवे मंदर-गंधमायण-नीलवंत-मालवंतमज्झवत्तिणीए सीयामहान-
ईमज्झविभत्ताए उत्तरकुराए अहं मिहुण^१इत्थिया, भयवं पि पुण पियामहो मिहुणगपुरिसो अहेसि । तओ
वयं अण्णया कयाइ दसप्पयारकप्पतरुवरुप्पणसुरलोयसरिसपंचविहभोगोवभोगलालियसरीराइं
उत्तरदहतीरदेसड्डियनवणीय-तूलफासमणिकोड्डिमतलुगयकप्पतरुवरबहलच्छायातलोवविट्ठाइं चिट्ठामो ।
इत्थंतरम्मि य तत्थ खीरहारसरिसनीरवारपूरियहरयमज्जनकरणाणंतरं गयणंगणाभोगुप्पइयसुरसरीर-
किरणनियरुज्जोइयदिसावलयावलोयणुप्पणचिंताभरमंथरविमलउप्पमाणलोयणजुयलो मोहमुवगओ सो
मह मिहुणगपुरिसो । खणंतरेण य सयमेव समाससिऊण जंपियमणेण 'हा सयंपभे ! कहिं गया सि ?
देहि मे पडिवयणं' ति । तओ सयंपभाभिहाणायन्नणसमुप्पण्णाणुभूय-पुव्वनामवियक्क-
वसपणस्समाणचेयणा अहं पि निवडिया धरणिवट्ठे । थोववेलाए य समासासणाणंतरसमुप्पण-
जाईसरणाए जंपियं मए 'नाह ! अहं सा सयंपभा' । तेण भणियं 'कहं सा तुमं सयंपभा !' । मए
भणियं—

अत्थि अट्ठावीसलक्खप्पमाणगिवाणविमाणसंकुलो पुव्वकयसुकयफल-
विसेससमासाइयपंचप्पयारविसयसुहसोहासमुदयसमाणरूवजोव्वण-लावण्णपुणसुर-सुरंगणासणाहो
ईसाणो नाम कप्पो । तत्थ य अत्थि सिरिप्पहं नाम विमाणं । तप्पभू य ललियंगओ नाम देवो ।
सयंपहा से अगमहिंसी । ताण य अच्चंताणुरत्ताणं दिवसो व्व समइक्कंतो बहू कालो । अण्णया य
मिलायमाणकुसुमो विमणदुम्पणो विमउलमाणलोयणो चिंताभरनिब्भरो दिट्ठो सो तीए । 'नाह !
किमेयं ?' ति पुच्छावसाणे जंपियमणेण "पिए ! अत्थि महंतमुव्वेयकारणं, जओ जम्मंतरे थोवो तवो
मए कओ, ता 'तुब्भेहिं समं विउज्जीहामि' ति महंतमुव्वेयकारणं" । तीए भणियं 'कहं तुब्भेहिं थोवं
तवच्चरणं कयं ?' । तेण भणियं—

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणनगरासण्णगंधिलावई विजयमज्झड्डियवेयइडगिरि-
सेढीवत्तिगंधारजणवयालंकारभूयविज्जा-सिद्धिसमिद्धजणसमद्धासियगंधसमिद्धपुरप्पहुसयबल
महारायसुयअइबलरायपुत्तो महाबलो नाम राया । तस्स य पुव्वपुरिसंपरंपरागओ खत्तियकुलुप्पणो
बालमित्तो जिणवर्यणपरिकप्पियमई अत्थि सयंबुद्धो नाम मंती । बीओ य महामिच्छत्तमोहियमणो
संभिन्नसोओ नाम, सो यं तस्स राइणो बहूसु कज्जेसु पुच्छणिज्जो । अण्णया य
कलरिभियतंतीतलतालरवुम्मीसगंधव्वसणाहपेच्छणयरंगमज्झड्डियसालंकारमणोहरनट्टियानट्ट-
क्खित्तमाणसो जाव चिट्ठइ राया ताव भणिओ सयंबुद्धेण-देव !

१. सं० वा० सु० 'तमज्झ' ॥ २. ला० 'णगइत्थि' ॥ ३. सं० वा० सु० पियमयो मिहुं ॥ ४. ला०
'गललि' ॥ ५. ला० 'ण अच्चं' ॥ ६. सं० वा० सु० तओ कओ ॥ ७. ला० विजुज्जी' ॥ ८. ला० 'वे गंध' ॥
९. ला० 'यणे परि' ॥ १०. ला० इ ॥

सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंबणा । सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा' ॥१८॥

तओ जंपियं राइणा—

‘कहं सवणामयं गीयं विलावो त्ति पभाससे ? । कहं वा लोयणब्भुदयं नट्टं वयसि विडंबणा ? ॥१९॥

कहं वा देहऽलंकरणाऽलंकारा भारमिच्छसि ? । कहं वाऽसारसंसारसारा कामा दुहावहा ?’ ॥२०॥

तओ भणियं सयंबुद्धेण— “देव ! जहा काइ इत्थिया पवसियपइया पइणो समागमकंखिया तग्गुणगणं सुमरंती पच्चूससमए परियंदइ तहा पहुणो रंजणत्थं तप्पुरओ से गुणनियरं वन्नितो गायणो वि गायइ, ता तत्तओ गीयं विलाओ चेव । तहा जहा जक्खाइडो कोइ अणेगकर-चरणचेट्टाओ पयासेइ तहा नच्चमाणो वि विविहवरकराइचेट्टाओ पयासेइ, ता परमत्थओ एयं पि विडंबणा । जहा य कोइ पहुणो समाएसेण मउडाइअलंकारं वहइ तब्भारेण य पीडिज्जइ एवं जइ कोइ जोगअंगोवंगनिवेसियमाभरणं वेहेइ ता किं न सो भारो भवइ ? । तहा कामा वि जहा हरिणाईहिं निसेविज्जमाणा बहुदुक्खया भवंति एवं नर-नारीणं पि ते इहलोए चेव किलेसाऽऽयासदुहकरा परलोए नरगाइदायगा भवंति, ता कहं ते न दुहावहा ? । तम्हा परलोयसुहत्थिणा ते परिहरियव्व’ त्ति ।

संभिन्नसोएण भणियं— ‘देव ! सयंबुद्धो अदिट्ठसुहनिमित्तं पच्चक्खोवलब्भमाणविसयसुहं परिहरंतो जंबुक इव मुहमागयं मंसपेसिं परिहरिय मच्छमभिलसंतो पच्छायावभायणं भविस्सइ’ । सयंबुद्धेण भणियं ‘संभिन्नसोय ! जो सरीरविभवाईणाऽणिच्चयमवगच्छिय इहलोयसुहपडिबद्धो निव्वाणाइसुहपसाहयतवसंजमाणुट्ठाणपरायणो न भवइ सो संपत्तरयणायरकुसलजणपसंसियसयल-गुणगणाहारसुतेयसुभागयसुरयणपरिचायगकायमणियाणुरत्तनिप्फलपयासदारिद्रपराभवाइदुहजलण-जालावलीपुलोट्टनरो व्व विबुहजणनिंदणिज्जो भवइ’ । संभिन्नसोएण भणियं “गगणपडणा-संकियतद्धरणनिमित्तउड्हपायटिट्ठिभीसुयणं व इमं तुज्झाऽणागयपयत्तकरणं मम पडिहाइ, किंच किं जुत्तं ‘मरणं भविस्सइ’ त्ति अणागयमेव मसाणगमणं ? ता मा परिच्चय अणागयसुहनिमित्तं संपयसुहं, पत्ते य मरणकाले परलोगहियमायरिस्सामो” । सयंबुद्धेण भणियं ‘मुद्ध ! न संपलंगाओर्हण-ओरुद्धनयर-संपलित्तगेहेसु तप्पडिवक्खभूयकारितुरयदमण-भत्तपाणिंधणो-वणयण-कूवखण्णाइयाणि काउं तीरंति, जइ पुण दमण-भरण-खणणाईणि कयाणि हुंताणि ता परबलमहणचिरावत्थाण-विज्झावणाणि सुहेण कीरंति, किंच मा तुच्छयविसयसुहमोहिओ अवगणियमोक्खसोक्खो कौल्हुगो व्व अप्पाणं विणासेहि’ । इयरेण भणियं ‘को एस जंबुगो ?’ । सयंबुद्धेण भणियं जहा “एगम्मि अरण्णे

१. ला० ‘डंबियं’ ॥ २. सं० वा० सु० जंपिओ रा’ ॥ ३. ला० ‘हकरा’ ॥ ४. सं० वा० सु० जया इ को’ ॥ ५. ला० वहइ ॥ ६. सं० वा० सु० लवियं ॥ ७. सं० वा० सु० ‘हगयमंसपेसी प’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘हणा ओरद्ध’ ॥ ९. सं० वा० सु० ‘क्खच्चयक’ ॥ १०. ला० ‘णाईणि’ ॥ ११. सं० वा० सु० किंतु मा तुज्झ य विसय’ ॥ १२. ला० ‘हविमोहि’ ॥ १३. सं० वा० सु० कोलहगो ॥

गिरिवरतलविभागसंठि यगिरिसरियाइपरिभमणसील-महामत्तकरिवरदंसणुप्पणवह-
परिणामवाहपुरिससंवणं ताऽऽपूरियसरप्पहारवेयणापरिगयनिवडमाणकरिमुत्ताहलदसणगहण-
परिणामविमुक्कसजीवधणुधावियकरिसरीरपडणद्धचंपियमहा- कायविसहरखइयमयपुलिंद-भुयग-
गयसरीराणि दिट्ठाणि कहिंचि परिभममाणेणएणेण सियालेण । ‘सज्जी(जी)वा ण वि(व) ?’ ति पुणो
पुणो ओसक्कणाऽवसक्कणपुव्वकयनिज्जीवनिच्छओ हरिसभर-निभरो चिंतितुं पवत्तो ‘अहो ! एयाणि
मम आजम्मभक्खं भविस्संति, ता ताव एयं सज्जीवधणुपडंचाकोडिविलगं न्हारं भक्खेमि, पुणो पच्छा
निराउलो एयाणि भक्खिस्सामि’ । ति चिंतितुण तं न्हारं भक्खिउमाढत्तो । तओ
विमुक्कसंधिबंधणधणुतिकखगकोडिविद्धगलप्पएसो विणट्ठो, ता तुमं पि मा तहा विणस्सार्हि’ ।
एत्थंतरम्मि भणियं राइणा ‘सयंबुद्ध ! किं अत्थि कोइ परलोओ ?’ । तेण भणियं “सामि ! जया
बालकाले तुब्भे मए सह नंदणवणं गया तया अम्ह समीवे समागओ एगो कंतरूवधरो देवो । तेण
य जंपियं ‘भद ! महाबल ! अहं तुह जणय्जणओ सयबलो चिन्नजिणभणियव्वओ लंतगाहिर्वई
जाओ, ता भद ! अत्थि परलोगो, सुकड-दुक्कडकम्मफलविवागो य, किं बहुणा ? जिणधम्मपरायणेण
भवियव्वं’ । ति भणिऊण अदंसणं गओ । ता सामि ! जइ तं सुमरह तो सदहह परलयं’ । राइणा
भणियं ‘भद ! सुमरामि पियामहवयणं’ । तओ लद्धावगासेण भणियं सयंबुद्धेण “जइ एवं तो देव !
तुम्ह वंसे पुव्वं कुरुचंदो नाम राया अहेसि । तस्स कुरुमइदेवी हरियंदो य कुमारो । सो य
रायानाहियवायधम्मभावियमणो महारंभाइपसत्तो समागए मरणकाले नरगे वि असमायमाणं
तप्पडिरुवियं वेयणं वेइउमाढत्तो, अवि य—

सुइसुहयरमहुरं पि य गीयं अक्कोसणं ति मन्नेइ । जीहारसालुयाइं दव्वाइं मुणइ विट्ठ ति ॥२१॥
कोट्टपुडाई गंधे लक्खइ मयकुहियमडयगंधे व्व । चक्खुल्लोयणलेसे रूवे परिकलइ सोऽणिट्ठे ॥२२॥
कोमलतूलीसेज्जं कंटयसिज्जं व वेयई पावो । विवरीयं पडियारं कुणइ तओ तस्स हरियंदो ॥२३॥
एवं सो मरिऊणं नरएसु अणुत्तरेसु उववन्नो । तं पिउमरणं दड्ढं धम्मम्मि मणं कुणइ कुमरो ॥२४॥
गंधसमिद्धं च इमं पालइ पिइकमसमागयं विहिणा । अन्नम्मि दिणे भणिओ तेणिक्को खत्तियकुमारो । २५।

जह ‘मम धम्मियवयणं बुहयणपासाओ सुणिय कहियव्वं ।

भद ! तए निच्चं पि हु एस च्विय तुज्झ मह सेवा’ ॥२६॥

तओ सो सुबुद्धी तस्साऽणुदिणं धम्ममाइक्खइ । राया वि संवेगाओ तस्स वयणं पडिवज्जइ ।
अन्नया य नयरबहिसंठियमुणिसमुप्पणकेवलनाणमहिमानिमित्तसमागयसुरसमूहावलोयणुप्पन्नहरिसो गओ

१. ला० ‘हाकरि’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘सवणोययापूरिय’ ॥ ३. ला० ‘दय भु’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘ण
सिया’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘ण’ ति पुणो ॥ ६-७. ला० न्हारं ॥ ८. ला० ‘हि’ ति । ए’ ॥ ९. ला०
यअइबलपियासयबलो ॥ १०. सं० वा० सु० वि य असम्माय’ ॥ ११. ला० पि हु गी’ ॥ १२. ला० तहेव पडि’ ॥

सुबुद्धी राइणो समीवे । साहिए य वुत्तंते कोऊहलपूरिज्जमाणमाणसो मणपवणजइण- गमणतुरंगमारूढो गओ राया भयवओ समीवे । तओ पणामाणंतरं निविट्ठो सुद्धभूमीए । सुणमाणो य केवलमुहारविंदविणिगयं धम्मं, कहंतरमवगच्छिय नियपिउपरल्लोयगइं पुच्छिउमाढत्तो । तओ केवलिकहियसुव्वमाणभयावहनियपिउसत्तमपुढवीदुहसायरसवणसमुप्पणसंवेगाइसओ गओ नियनयरं । पुत्तसंकामियरज्जो य सुबुद्धिं भणइ जहा 'तुमे मम पुत्तस्स संपयं उवएसो दायव्वो' । सुबुद्धिणा भणियं 'देव ! मम पुत्तो इयाणिं नियसामिणो उवएसं दाही, अहं पुण तुब्भेहिं सह पव्वइस्सामि' । एवं च दो वि गहियसामण्णा सकज्जसाहगा जाया । ता देव ! तस्स हरियंदस्स वंसे^१ संखाईएसु नरनाहेसु गएसु संपयं तुब्भे नरनाहा, सुबुद्धिवंसे य अहं । तं 'नियाहियारो' ति नाऊण विन्नप्पसे । अयंडविण्णवणकारणं पुण इमं-अज्ज मए नंदणवणं गएण दट्ठूण चारणमुणिणो पुच्छिया तुम्हाऽऽअण्णमाणं । तेहिं वि मासमितं चेव सिट्ठं' ।

तं च सोऊण जलगयाऽऽमगमट्टियामल्लगं व सीयमाणसव्वंगेण भणियं राइणा 'मित्त ! किमित्तियाओ संपयं करिस्सामि ?' । सयंबुद्धेण भणियं 'न सव्वविंयाणं दिवसं पि थोवं' । तओ तव्वयणाणंतमेव पुत्तविइणरज्जो गओ जिणमंदिरं । तत्थ य काऊण पूयं पच्चक्खायचउव्विहाहारो पडिवन्नपाओवगमणो मरिऊण समुप्पन्नो तुम्ह सामी एस अहं पिए ! ललियंगओ ति । सो वि मम मित्तो काऊण सामण्णं इत्थेव दढधम्मो नाम तियसो जाओ ।

ता एवं मए थोवो तवो अणुचिण्णो । तं अज्ज ! एयं मम तयाललियंगएण साहियं ।

एत्थंतरम्मि य ईसाणदेवरायसयासाओ समागओ सो दढधम्मदेवो । भणियं च तेण 'ललियंगय ! देवराया नंदीसरदीवं जिणमहिं काउं वच्चइ, गच्छामि अहं, विइयं ते होउ' । ति भणिऊण गओ सो । अम्हे वि इंदाणत्तीए गयाइं नंदिस्सरं । खणेण य कया जिणाययणेसु महिमा । तयणंतरं तिरियलोयसासयचेइयपूयण-वंदणं कुणमाणो चुओ ललियंगओ । तव्वि-रहानलजालाकलावकवलज्जमाणकलेवरा गया हं सपरिवारा सिरिप्पभं विमाणं । परिमुयमाणसोभं च मं दट्ठूण आगओ सयंबुद्धो । भणियं चाऽणेण 'सयंपभे ! चवणकालो ते वट्ठइ, ता करेहि जिणाययणेसु पूयं जेण बोहिलाभो भवइ' ।

तओ हं तव्वयणाणंतरं नंदिस्सरदीवाइजिणमंदिरपूयापरायणा चुया समाणी समुप्पन्ना जंबुदीवयविदेहपेक्खलावइविजयमज्झड्डिय पुंडरिगिणीपुरीपहुवइरसेण [ग्रन्थाग्रम् ६०००] - चक्कवट्ठिदेवीए गुणवईए कुच्छिंसि धूयत्ताए । जाया कालक्कमेणं । कयं मे नामं सिरिमइ ति । तओ

१. ला० 'ओ णयरं' ॥ २. सं० वा० सु० 'ति भणिऊण' ॥ ३. ला० 'गपरिमाणं' ॥ ४. ला० 'जंपियं' ॥ ५. ला० 'इया' ॥ ६. ला० 'ण य स' ॥ ७. ला० 'तइया' ॥ ८. सं० वा० सु० 'ओ आगाओ' ॥ ९. सं० वा० सु० 'यवंद' ॥ १०. ला० 'चुयणका' ॥ ११. सं० वा० सु० 'ओ तव्व' ॥ १२. ला० 'पुरि [ग्रन्थाग्रं ६०००] पहु' ॥ १३. सं० वा० सु० 'कयं नामं' ॥

हं पिउभवणपउमसररायहंसी व धाईजणपरिगाहिया जमगपव्वयसंसिया इव लया सुहेण वुड्ढिं गया । गहियाओ साइसयाओ कलाओ । अन्नया य पओसे सव्वओभद्दं नाम पासायमभिरूढा नयरबाहिं मणोरमुज्जाणट्टियसुट्टियायरियकेवलनानुप्पत्तीए दट्ठूण देवसंपायं 'कहिं मण्णे मए एयं दिट्ठं' ति ईहा-
 ऽपूहपरा सुमरिऊण पुव्वजाई महादुक्खाभिहया मुच्छिया पडिचारियाजणेण जलकण-
 सम्मिस्सवाउदाणेणाऽऽसासिया चित्तेमि 'न नज्जइ कहिं पि सो मे पिओ ललियंगओ देवो, तेण य विणा किमियरजणेणोभट्ठणं' ति मूयत्तणं गिण्णिऊण ठिया । तओ पडिचारियाजणेण य 'जंभगेहिं इमीसे वाया अक्खित्तं' ति काऊण मंत-तंत-बलिविहाणाइओ कराविओ उवयारो । न य मए मुक्कं मूयत्तणं । अक्खरालिहणेणं देमि आणत्तिं पडिचारियाणं ।

अन्नया पमयवणट्टिया विरहं नाऊण भणिया पंडियाहिहाणाए धावीए पुंत्ति ! जइ केणइ कारणेणं मूयत्तणं कयं तो कहेहि जेण तयणुरूवं चिट्ठामि' । मए भणियं 'अत्थि अम्मो ! कारणं मूयत्तणस्स, परं को तं साहिउं समत्थो ?' । तीए हट्ठतुट्ठाए भणियं 'साहेहि पुंत्ति ! कारणं जेण तत्थ पयत्तं करेमि' । मए भणियं "जइ एवं तो सुणह,

अत्थि धायइसंडे दीवे पुव्वविदेहे मंगलावइविजए नंदिगामो नाम सन्निवेसो । तत्थ अहं इओ तइयभवे दारिहकुले 'सुलक्खणा-सुमंगला-धन्निया-उव्वियाईणं छण्हं भइणीणं पच्छओ जाय' ति निव्विन्नचित्तेहिं न कयं मे नामं माया-पित्तेहिं, लोयप्पसिद्धीए निन्नामिय ति भन्नामि, सव्वजणावमंणेण वि सकम्मवसओ जीवामि । ऊसवे य कयाई ईसरडिंभयाणि नाणाविहभक्ख-
 हत्थगयाणि सगिहेहिंतो निग्गयाणि दट्ठूण जाइया मए माया 'अम्मो ! देहि मे मोयगाइयं भक्खं जेण डिंभेहिं सह रमामि' । तीए य रुट्ठाए 'आ पावे ! कओ इहं भक्खा ? वच्चसु अंबरतिलयं पव्वयं, तत्थ फलाणि खायसु मरसु व' ति भणंतीए हणिऊण निच्छूढा गिहाओ । रोवंती य निग्गया गेहाओ । तओ अंबरतिलयपव्वयाभिमुहपट्टियजणसमुदयमवलोइऊण गया तेण सह तत्थ । सच्चविओ य सो मए गिरिवरो, अवि य—

अइकसिणनिद्धजलहरखंडं पिव लोयलोयणाणंदो । उत्तुंगसिहरहत्थेहिं अंबरं मिणिउकामो व्व ॥२७॥

झरमाणनिज्झरारावभरियगिरिगरुयकुहरदिसिविवरो । नर-विज्जाहर-किन्नरमिहुणसमारद्धगंधव्वो ॥२८॥

गंधइढसाउफल-फुल्ल-पत्तभनमिंरतरुवरसणाहो । बहुजाइपक्खि-सावयगणाण कुलमंदिरसमाणो ॥२९॥

सज्झाय-झाण-वक्खाणपगुणगुणिमुणिगणाण सुहंवासो ।

किं बहुणा ?, तियसाण वि रम्मत्तणकयचमकारो ॥३०॥

१. सं० वा० सु० 'व्वभद्दं' ॥ २. सं० वा० सु० नइज्जइ ॥ ३. ला० 'क्खरलि' ॥ ४,७. सं० वा० सु० पुत्त ! ॥ ५,६. ला० 'यगत्त' ॥ ८. सं० वा० सु० सुणाहामि, अत्थि ॥ ९. ला० 'उज्झिया' ॥ १०. ला० माणे वि ॥ ११. सं० वा० सु० स्वरिहियसणाहो ॥ १२. ला० सहवा ॥

तत्थ जणो साउफले गिण्हइ उच्चुच्चतरुवरोहिंतो । भूपडियपक्कसाउफ(?फ्फ)लाणि भुत्ताणि य मए वि । ३१ ।
 तौ लोएण समाणं गिरिस्स जा रम्मयं गिरूवेमि । ता निसुओ सुइसुहओ सदो एगत्य गंभीरो ॥ ३२ ॥
 तस्सऽणुसारेण अहं जणेण सह जाव तत्थ वच्चामि । ता धम्ममाइसंते पेच्छामि जुगंधरायरिए ॥ ३३ ॥
 ता हरिसनिब्भरंगी सूरिं वंदितु लोयमज्झमि । उवविट्ठा निसुणेमिं तव्वयणविणिग्गयं धम्मं ॥ ३४ ॥
 तो चोदसपुव्वधरो चउनाणी सो गणी विसेसेण । आइक्खिउं पवत्तो अम्हाण विबोहणट्ठाए ॥ ३५ ॥

अवि य—

मिच्छत्तेणं पमाएणं कसाया-ऽविरईहिं य । दुट्ठजोगेहिं बंधंति कम्मं जीवा निरंतरं ॥ ३६ ॥
 अदेवे देवबुद्धी य, असाहूसु स साहुया । अतत्ते तत्तविण्णाणं, मिच्छत्तमियमाहियं ॥ ३७ ॥
 मज्जं विसय-कसाया निदापणगमेव य । विगहाणं चउक्कं च पमाओ पंचहाऽऽहिओ ॥ ३८ ॥
 कट्ठ-पिट्ठेहिं निप्पन्नं मज्जं दुविहमाहियं । सदा रूवा रसा गंधा फासा विसय कित्तिया ॥ ३९ ॥
 कोहो माणो य माया य लोभो चउरो चउव्विहा । संजलणाइभेएहिं कसाया सोलसेव उ ॥ ४० ॥
 निदा य निदनिदा य पयला य तयज्जिया । पयलापयला चेव थीणगिद्धी य पंचमा ॥ ४१ ॥
 थीकहा-देसभासाई भत्ते संभारवन्नणं । देसेसु रम्मयाई य निग्गमाइ निवक्कहा ॥ ४२ ॥
 विरईवज्जणं चेवाऽविरई परिकित्तिया । दुट्ठा मणो-वई-काया दुट्ठजोगा वियाहिया ॥ ४३ ॥
 कम्मबंधस्स हेऊणि सव्वाणेयाणि वज्जह । जेण लंघितु संसारं सिग्घं मुखम्मि गच्छह ॥ ४४ ॥

तओ एयमायन्निऊण विबुद्धा बहवे पाणिणो । मए वि कहंतरं वियाणिऊण पुच्छिया गुरुणो
 ‘भयवं ! किं ममाओ वि अत्थि कोविदुक्खिओ ?’ । भयवया भणियं ‘निन्नामिगे ! अत्थि निरया,
 निच्चंधयारतमसा ववगयगह-चंद-सूर-नक्खत्ता । पूयवसाबीभत्सा(च्छा)चिलिच्चिला असुहगंधरसा ॥ ४५ ॥
 ईह विहियपावकम्मा जीवा जायंति तत्थ नेरइया । बीभत्स(च्छ)दंसणिज्जा पच्चक्खा पावपुंज व्व ॥ ४६ ॥
 स-परोदीरिय-साभावियाइं दुक्खाइं जाइं पुण तेसिं । नो वणिउं समत्थो ताणि नरो जो न सव्वण्णू ? ॥ ४७ ॥
 तिरिया वि जाइं अइदारुणाइं विसहंति विविहदुक्खाइं । तण्हा-छुहाइयाइं ताइं नो साहिउं तरइ ॥ ४८ ॥
 तुह दुक्खाओ दारुणतराइं ताइं अणंतगुणियाइं । परवसयाणं भदे ! नारय-तिरिएसु घोराइं ॥ ४९ ॥
 अप्पवसा तं सि पुणो, सदे गंधे य रूव रस फासे । अमणुत्ते परिहरिउं सेवेसि मणोरमे निच्चं ॥ ५० ॥
 तौ अप्पं तुह दुक्खं, किंतु तुमं पासिउं सुकयधम्मे । जीवे सुहप्पसत्ते अत्ताणं मन्नसे दुहियं ॥ ५१ ॥

१. ला० ता ॥ २. ला० म्हाणं बोह ॥ ३. सं० वा० सु० ‘ए ॥ मिच्छ’ ॥ ४. ला० निप्पन्नं ॥ ५. ला० तइज्जि ॥ ६. ला० निग्गमाइ ॥ ७. ला० दुहिओ ॥ ८. ला० इय वि ॥ ९. सं० वा० सु० ‘हरियं से’ ॥ १०. सं० वा० सु० ‘णोगए नि’ ॥ ११. ला० तो ॥ १२. सं० वा० सु० ‘सियं सु’ ॥ १३. ला० अप्पाणं ॥

तां जइ सव्वुकुट्टं सुखं पत्थेसि कुणसु ता धम्मं' । तो संवेगयाए नमिऊण इमं गुरू भणिया ॥५२॥
 'जत्तियमित्तं सत्ता काउं मे देहि तत्तियं धम्मं' । तोऽणुव्वयाइं गुरुणा गिहत्यधम्मो महं दिन्नो ॥५३॥
 गुरुपायपंकयं वंदिऊण तुट्ठा गिहम्मि गंतूण । पालेमि जहासत्तिं तं धम्मं अप्पसंतुट्ठा ॥५४॥

तओ छट्ठ-ऽट्ठमाइनाणाविहत्तवोविहाणनिरयाए वोलिओ जाव कोइ कालो ताव पडिवन्नं मए^१
 तत्थ अणसणं । तत्थट्ठिया य अन्नदियहम्मि पेच्छामि पुरओ एकं देवं, अवि य—

हारविराइयवच्छं रयणुकुडमउडसोभमाणसिरं । नियदेहकंतिपसरंतकिरिणउज्जोवियदियंतं ॥५५॥
 रयरहियपवरकिंकिणिसणाहदेवंगवत्थपरिहाणं । अइअच्चब्भयरूवं इयभणिरं महररावेणं ॥५६॥
 'निन्नामि ! पलोयसु सिणिद्धदिट्ठीए मं तहा कुणसु । एवंविहं नियाणं निस्संदिद्धेण चित्तेण ॥५७॥
 जइ अत्थि किंचि सुचारियतवस्स एयस्स फलमसंदेहं । तो हं इमस्स भज्जा होज्जामि भवम्मि अण्णम्मि ॥५८॥
 जेणं मए समाणं भुंजसि भोगाइं देवलोगम्मि' । इय वोत्तूणं तियसो, सहसा अहंसणीहूओ ॥५९॥
 तदंसणपच्चयभावियाइ विहियं मए वि तं सव्वं । सुमरंती नवकारं मरिउं ईसाणकप्पम्मि ॥६०॥
 तस्सेव य ललियंगयसुरस्स जाया मि अण्णमहिसि ति । अच्चंतकंतरूवा सिरिप्पभे वरविमाणम्मि ॥६१॥

तओ ओहिणाणोवओगमुणियदेवत्तकारणा ललियंगयसुरसमेया गया जुगंधरसूरिवंदणत्थं ।
 दिट्ठा य तया तम्मि चेव सहावसुंदरअंबरतिलयगिरिवरेगदेससंसियमणोरमुज्जाणमज्झट्ठिय-
 कंकेल्लितलोवविट्ठा सूरिणो, वंदिया भावसारं । पुणो नियवुत्तंतकहणाणंतरसमारद्धमहरस्सरगंध-
 व्वसणाहवरऽच्छरापेच्छणववहारेण पूइऊण गया नियट्ठाणं । भुंजिऊण य पभूयकालं तत्थ भोए चुओ
 मम पिययमो । तयणंतरं अहं पि चविऊण समुप्पन्ना एत्थ । देव्वोज्जोयदंसणसंजायजाईसरणा य 'किं
 तेण विणा इयरजणेण संलत्तेण ?' ति मोणमालंबिऊण ट्ठिया । ता एयं मे अम्मो ! कारणं' । तीए
 भणियं 'सुंदरं कयं जमेयं साहियं, उवाओ पुण एत्थ—एयं ते पुव्वचारियं पडे लिहिज्जउ, तओ हं
 हिंडावेमि, जइ कहिंचि मणुस्सजाईए समुप्पण्णो भविस्सई तो एयं दट्ठूण से जाईस्सरणमुप्प-जिस्सई' ।
 मए वि 'जुत्तिजुत्तं' ति कलिऊण सज्जिओ पडो । आलिहिओ य विविहवत्तेहिं । तत्थ पढमं
 नंदिगामो लिहिओ । तओ अंबरतिलगसंसियकुसुमियासोगतरुतलोवविट्ठा जुगंधरसूरिणो, देवमिहुणं^{१३}
 वंदणागयं, ईसाणो कप्पो, सिरिप्पभं विमाणं, तदेव मिहुणं, महाबलो राया सयंबुद्ध-
 संभित्रसोयसहिओ, निन्नामिका य तवसोसियसरीरा, ललियंगओ सयंपभा य सनामाणि । तओ
 निरिप्पन्ने लेक्खे धाई पडं गहाय उप्पइया जुवइकेसपास-कुवलय-पलाससमाणं नहयलं । खणेण य

१. ला० तो जइ सव्वुकुट्टं ॥ २. ला० 'तवोवहा' ॥ ३. ला० ए अण' ॥ ४. सं० वा० सु०
 'डसोभमाण मउडसिरं ॥ ५. ला० 'जोइय' ॥ ६. ला० 'सूरिचरणवंद' ॥ ७. ला० 'यकंकिल्लत' ॥ ८. ला० तो
 एयं मे कार' ॥ ९. ला० लिहिय ॥ १०. ला० ता ॥ ११. ला० जाईसरणं समुप्प' ॥ १२. ला० 'लयकुसु' ॥
 १३. 'णं च वं' ॥ १४. ला० 'मिया तव' ॥ १५. सं० वा० सु० 'मा । तओ ॥ १६. सं० वा० सु० 'प्पन्नलिक्खे' ॥

नियत्ता, पुच्छिया मए ‘अम्मो ! कीस लंहुं नियत्ता सि ?’ । तीए भणियं ‘‘पुत्ति ! सुण कारणं, इह अम्ह सामिणो तवपिउणो वरिसवट्ठमाणनिमित्तं विजयवासिनरवइणो पाएणाऽऽगया, ता जइ कयाइ ताण मज्झे ते हियदइओ होइ तो कयमेव कज्जं ति चित्तिऊण नियत्तऽम्हि, जइ पुण इह न होही तो परिमण्णे जत्तं कस्सिंसांमि’’ । मए भणियं ‘सोहणं’ । गया य सा पट्ठणं गहाय पुव्वावरण्हे । समागया य वियसंतमुहकमला भणइ ‘पुत्ति ! निव्वुया होहि, दिट्ठो तुह दइओ ललियंगओ’ । मए । पुच्छिया ‘अम्मो ! कहसु कहं ?’ ति । सा भणइ-

‘‘पुत्ति ! रायमणो पसारिओ पट्ठणो । तओ तं पस्समाणा आलिकखकुसला पसंसंति रेहानिवेसाइयं, जे अकुसला ते वन्न-रूवाईणि पसंसंति । एत्थंतरम्मि दुम्मरिसणरायसुओ दुदंतो कुमरो सपरिवारो तत्थाऽऽगओ । मुहुत्तमित्तं तमवल्लोइऊण मुच्छिओ, आसत्थो पुच्छिओ परिवारेण ‘सामि ! किं मुच्छिया ?’ । तेण भणियं ‘पट्ठणालिहियनियचरियदंसणसमुप्पण्णजाईसरणवसेण’ । तेहिं भणियं ‘कहं ? [तेण भणियं] ‘जओ अहं ललियंगओ देवो आसि, सयंपभा य मे देवि’ ति । मए पुच्छिओ ‘पुत्त ! को एस सन्निवेसो ?’ । तेण भणियं ‘पुंडरिगिणी नयरी, पव्वयं मेरुं साहइ, अणगारो कोवि एस न सुमरामि नामं, कप्पं सोहम्मं कहेइ, राया मंतिसहिओ कोवि एस, तवस्सिणी कावि एसा, न सुमरामि से नामं ति । अओ ‘अलियवाइ’ ति नाऊण मए भणिओ ‘पुत्त ! संवायइ सव्वं जम्मंतरे वीसरियं किंतु जइ सव्वं तुमं ललियंगओ ता धाईसंडनंदिगामे कम्मदोससमुप्पन्न-पंगुलियसयंपहाए आगमकुसलाए तुहवियाणणत्थमेयं नियचरियमालिहियं, मए धाईसंडगयाए दिट्ठं, तयणुकंपाए य तुह गवेसणत्थमिह आणीयं, ता एहि पुत्त ! जेण नेमि धाईसंडं, पासिज्जउ सा पुव्वभवसिणेहसंबद्धा वराई । उवहसिओ मित्तेहिं लज्जाए अवक्कंतो । मुहुत्तंतरेण समागओ लोहगलपुराओ धणो नाम कुमरो । लंघण-पवणेसु अणणसरिसो ति लोएण वड्ढरजंघो ति भणइ । सो य तं पट्ठणं दट्ठूण भणइ ‘केणेयं लिहियं?’ । तओ मए भणियं ‘किं निमित्तं पुच्छसि ?’ । तेण भणियं ‘मम चरियमिमं, जओ अहं सो ललियंगओ आसि, सयंपहा य मे देवी, ता निस्संसयं तीए लिहियं; तंदुवइट्ठेण वा केणावि तक्केमि’ । तओ मए पुच्छियं ‘जइ एयं ते चरियं ता साहसु को एस सन्निवेसो ?’ ति । तेण भणियं ‘नंदिगामो एस, पव्वओ अंबरतिलओ, जुगंधरा एए सूरिणो, इमा य खमणकिलंतो निन्नामिया, सयंबुद्धसंभिन्नसोयसहिओ एस राया महव्वलो, ईसाणकप्पो, सिरिप्पभं विमाणं’ । एवं सव्वं सपच्चयं कहियं । तओ मए तुट्ठाए भणियं ‘पुत्त ! जा एसा सिरिमइकुमारी तुह पिउच्छादुहिया सा सयंपभा, ता जाव रण्णो निवेएमि ताव निस्संसयं

१. सं० वा० सु० लंहुं पयत्त । २. ला० पुत्र । सणसु कारणं इय अम्ह ॥ ३. ला० ‘गोणेणं जत्तं ॥ ४. ला० ‘स्सामि ति । मए ॥ ५. ला० पडगं ॥ ६. ला० पडगो ॥ ७. सं० वा० सु० ‘हाकुसलाइयं ॥ ८. ला० पडगा ॥ ९. सं० वा० सु० को एस ॥ १०. सं० वा० सु० संवयइ ॥ ११. सं० वा० सु० ‘संडं दिट्ठं ॥ १२. ला० पडगं ॥ १३. सं० वा० सु० ‘तओ मे भणि ॥ १४. सं० वा० सु० तउव ॥ १५. सं० वा० सु० ‘ता य नि’ ॥ १६. ला० ‘मई कु’ ॥

तुममेयं लभसि' । तओ सुमणसो एसो गओ नियगेहं । अहं पि कयकज्जा समागया तुह निवेयणत्थं, ता जामि रण्णो निवेएमि, जेण तुह पियसंगमो होइ' । ति वोत्तूण गया रायसमीवं । निवेइयं जहट्टियं राइणो । सो ममं देविं च सदाविरुण भणिउमाढतो, अवि य—

“सुणसु पिए ! ललियंगयमेयं जाणामि जह अहं न तथा ।

वच्छा वि मुणइ जम्हा एत्थेव य चेव दीवम्मि ॥६२॥

अवरविदेहे सलिलावयम्मि विजयम्मि बीयसोगाए ।

नयरीए जियसत्तू आसि निवो तस्स देवीओ ॥६३॥

दोण्णि मणोहरि-केगइ नामाओ ताण दो सुया कमसो ।

अयल-बिहीसणनामा, पंचत्तमुवागए जणए ॥६४॥

साहिता विजयद्धं जाया बलदेव-वासुदेवा उ । पणमंतभूरिसामंतमउलिमणिघट्टपयवीढा ॥६५॥

अह अयलं बलदेवं मणोहरी भणइ अण्णया एवं ।

‘तुहपिउ-तुहरज्जसिरीओ वच्छ ! विउलाओ भुत्ताओ ॥६६॥

भवभयभीया इण्हिं परलोगहियं करेमि पव्वज्जं । तौ अणुमण्णेहि लहुं' न विसज्जइ सो वि नेहेण ॥६७॥

तीए तओ निब्बंध्ये कए इमो भणइ ‘अंब ! जइ एवं । तौ दियलोगाओ ममं आगंतुं वसणकालम्मि ॥६८॥

पडिबोहिज्जसु ‘एवं’ ति सा वि पडिवज्जिऊण तव्वयणं । घेतूण सव्वविरइं पढेइ एक्कारसंगाइं ॥६९॥

संपुण्णपुव्वकोडिं काऊणं संजमं तओ मरिउं । लंतगकप्पे इंदो उप्पन्नो दिव्वकंतिधरो ॥७०॥

सो य अहं, एत्तो वि य दोण्णि वि बल-केसवा बहुं कालं । भुंजंति रज्जमउलं अहउण्णया वाहगालीए

तुरगारूढा दोण्णि वि विणिग्गया अवहरित्तु तुरएहिं । खित्ता महाडवीए अणोरपाराए घोराए ॥७२॥

गोसंचरेण भग्गे पयमग्गे वलइ सव्वसेन्नं पि । सासापूरियहियया आसा वि हु पाविया निहणं ॥७३॥

आउक्खएण तत्तो बिभीसणो कालमुवगओ तत्थ । तम्मोहमोहियमणो अयलो वि य वहइ खंधगयं ॥७४॥

‘किर मुच्छिओ’ ति एसो, नेउं ठावेइ सीयवणगहणे । भवियव्वयावसेणं उवओगो तो मए दिण्णो ॥७५॥

दट्ठुं तयवत्थगयं संगारं सरिय लंतगाओ अहं । करिय बिहीसणरूवं समागओ तस्स बोहत्थां ॥७६॥

भणिओ य ‘अहं भाउय !’ गओ मि विज्जाहरेहिं सह जुज्झं ।

काउं जे, ते जिणिउं समागओ पुण वि तुहपासं ॥७७॥

एयं च अंतरं जाणिऊण केणावि विप्पलद्धो सि । देवेणं तं भाउय ! दुट्ठेण अणज्जकम्मेणं ॥७८॥

तौ सक्कारेसु इमं कलेवरं जं तए समुव्वूढं । एत्थ नइसंगमम्मी, तहाकए तम्मि पुण भणइ ॥७९॥

१. ला० तुमेव लभ ॥ २. ला० ‘मं च दे’ ॥ ३. ला० ‘वइम्मि’ ॥ ४. सं० वा० सु० ‘हरके’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘हरा भ’ ॥ ६. ला० तो ॥ ७. ला० ता ॥ ८. ला० वाहिया ॥ ९. सं० वा० सु० संसारं ॥ १०. ला० तो ॥

‘संपइ वच्चा^१मु गिहं’ पडिवण्णे तो समागया गेहे । भुंजंति नियं रज्जं, अहण्णदियहम्मि एगत्य ॥८०॥
 जा उवविट्ठा चिद्दामु आसणे ताव पयडियं सहसा । रूवं मणोहरी^२ए मए, तओ एस संभंतो ॥८१॥
 पभणइ ‘अम्मो ! तुब्भे, कत्थ इहं ?’ तो मए समक्खायं । संकेइयाइ सव्वं ‘ता कुण धम्मज्जमं वच्छ ! ॥८२॥
 नीसारे संसारे’ इय वोतुं लंतगं गओ अहयं । अयलो वि वयं गिण्हइ रज्जं पुत्तस्स दाऊण ॥८३॥
 काऊण तवच्चरणं देवो ललियंगओ समुप्पण्णो । तन्नेहेण सभज्जं पुणो पुणो नेमि नियपासे ॥८४॥
 इय भोत्तूणं भोगे अयरस्स उ^३ सत्त नवविभागे उ । चविओ तम्मि य ठाणे अण्णो ललियंगओ जाओ ॥८५॥
 तं पि य तत्तुल्लगुणं पुत्तसिणेहेण नेमि अणवरयं । एवं कमसो नीया सतरस ललियंगया तत्थ ॥८६॥
 जं सिरिमई^४ वियाणइ सो वि मएण्णेगसो तहिं नीओ । चविऊण तओ संपइ, एसो हं एत्थ उप्पण्णो ॥८७॥
 ता सदावेह लहुं भो भो पडिहार ! वइरजंघं^५ ति । जेण पयच्छामि इमं तस्साइहं सिरिमई कण्णं ॥८८॥
 सदाविओ य तेणं समागओ वइरजंघकुमरो वि । कयउब्भडसिंगारो सव्वंगं पुलइओ तो सो ॥८९॥

केरिसो य सो ? सकलरयणिकरसोम्मवयणचंदो, तरुणरविरस्सिबोधितपोंडरीयलयणो, मणिमंडियकुंडलघट्टियपीणगंडदेसो, गरुलाऽऽययतुंगनासो, सिलप्पवालकोमलसुरत्तदसणच्छओ, कुंदमउलमालाकारसिणिद्धदसणपंती, वयत्थवसभणिभखंधो, वयणतिभागूसियरयणावलिपरिणद्धगीवो, पुरफलिहाऽऽयामदीहबाहू, नगरकवाडोब्रमाणमंसलविसालवच्छो, करगसंगेज्झमज्झदेसो, विमउलपंकयसरिच्छनाभी, मिगपत्थियतुरगवट्टियकडी, करिकरकरणिल्लऊरुजुयलो, णिगूढजाणुप्पएससंगयहरिणसमाणरमणिज्जजंघो, सुपणिहियकणगकुम्मसरिसलक्खण-संबद्धचलणजुयलो । पणओ य भणिओ राइणा ‘पुत्त वइरजंघ ! पुव्वभवसिणेहसंबद्धं परिणेहि एयं सयंपभं सिरिमई’ । तओ अहं अवलोइया तेण कलहंसेण व कमलिणी, परिणीया य महाविभूईए । अण्णया य पभूयचेडियाइपरिवारसमेया सुबहुवत्थाऽऽभरणदव्वाइदाणपुव्वं विसज्जिया ताएण । कमेण पत्ता य लोहगगलं । तत्थ य जम्मंतरोवज्जियविसिद्धपुण्णपब्भारसंपज्जंतसयलिनंदियाणं-दज्जणयसुहसागरावगाढाणं जाओ पुत्तो । वड्ढिओ देहोवचएणं कलाकलावेण य ।

इओ य मम जणओ लोगंतियसुरसंबोहिओ पुक्खलपालनियसुयसंकाभियरज्जभारो तिथ्यरलिंगेण पव्वइओ । कयविविहतवोविसेसुप्पन्नकेवलनाणदिणयरकरपसरपणासियतिमिरपसरो भवियकमलसंडावबोहणं कुणमाणो विहरिउं पवत्तो ।

पोक्खलपालस्स वि विसंवइया पच्चंतरायाणो । तओ वइरजंघहकारणनिमित्तं पेसिओ महंतओ । समागंतूण य विण्णतं जहा ‘एयवइयरेण तुमं सिरिमइसमेओ सिग्घमागच्छाहि, जइ मए

१. ला० ‘च्चा^१मि गि’ ॥ २. ला० द्दामि आ’ ॥ ३. सं० वा० सु० उ भत्त’ ॥ ४. सं० वा० सु० तंमि य ॥ ५. सं० वा० सु० पइच्छा’ ॥ ६. ला० इ ॥ ७. ला० ‘ओ नियमहं’ ॥

जीवंतएण पओयणं' । तओ अम्हे नियपुत्तं नयरे ठविऊण पत्थियाणि, जाव पत्ताणि सरवणं नाम वणसंडं । तस्स य मज्झेण पंथो वच्चइ । तओ लोणेण वारियाणि 'मा एएणं मगेणं वच्चह, इत्थ दिट्ठिविसो सप्पो चिट्ठइ' । तओ अम्हे अण्णमगेण पत्ताणि पोंडरिगिणिं । अम्हाऽऽगमणं च सोऊण भउब्भंतलोयणा पणया सामंता पोक्खलपालस्स । तेण वि अम्हे पूइऊण विसज्जियाणि पत्थियाणि सनगरं, लोणेण य भणियं 'सरवणस्स मज्झेण गंतव्वं जओ मुणिकेवलनाणुप्पत्तिमहिमाकरण- निमित्तोवइयदेवप्पहाजालेण पडिहयं सप्पस्स दिट्ठिविसं' । कमेण पत्ताइं तत्थ, आवासियाणि य । तहिं च सागरसेण-मुणिसेणा मम सहोयरा अणगारा पुरओ ठिया । तओ अम्हेहिं दिट्ठा तवलच्छिपडिहत्था सारदसरजलपसन्नहियया सारदसगलससिसोमदंसणा तियसपरिसापरिवुडा धम्ममाइक्खमाणा । परेण य भत्तिबहुमाणेण वंदिया सपरिवारा । फासुएण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाहिया य । तओ अम्हे तेसिं गुणे अणुगुणिताइं चिंतितं पवत्ताइं, अवि य—

‘धण्णा कयपुण्णा खलु सुलद्धमेयाण माणुसं जम्मं । चइऊण रायलच्छिं जे पव्वइया जिणमयम्मि ॥१०॥
सुयजलहिपारगामी दुक्कतवचरणकरणउज्जुत्ता । भवियकमलावबोहणदिणमणिणो पयडमाहप्पा ॥११॥
बहुविहलद्धिसणाहा निम्मलजसपसरधवलियदियंता । खंता दंता मुत्ता गुणसयजुत्ता महासत्ता ॥१२॥
होही सो कोवि दिणो, जइया परिचत्तसव्वसंगाइं । एवंविहमुणिदिक्खं गुरुपयमूलम्मि घेच्छामो ॥१३॥
किरियाकलावकरणुज्जयाइं तवखवियपावकम्माइं । संवेगभावियाइं इय अणुकारं करिस्सामो ॥१४॥
किं वा बहुणा परिचिंतिएण ?, अइचंचलम्मि जीयम्मि । पुत्तं ठवित्तुं रज्जे सिग्घं दिक्खं गहिस्सामो' ॥१५॥
इय विहियनिच्छयाइं सुहभावणभावियाइं नियनयरे । पत्ताइं, पुत्तेण वि भिच्चयणं अम्ह विरहम्मि ॥१६॥
दाणाईसंगहियं काउं विसजोगधूविओ धूवो । वासहरे अम्हाणं दिण्णो विणिवायणट्ठाए ॥१७॥
तमबुज्झंताणि तहिं वीसज्जियपरियणाणि सुत्ताणि । विससंदूसियधाऊणि झत्ति कालं विहेऊण ॥१८॥
उप्पण्णाइं जुवलयधम्मेण एत्थ उत्तरकुराए । सव्वमिणं विन्नायं नाह ! मए जाइसरणाओ ॥१९॥

ता सामि ! जा निन्नामिगा जा सयंपभा जा य सिरिमई सा अहं । जो महब्बलो जो ललियंगओ जो य वयरजंघो ते तुब्भे त्ति, एवं जीसे नामं गहियं भै सा अहं सयंपभा । तओ सामिणा भणियं 'अज्जे ! जाइं सुमरिऊण देवुज्जोयदंसणेण चिंतेमि 'देवभवे वड्ढिहि' त्ति मे 'सयंपभा' आभट्ठा, तं सव्वमेयं कहियं त्ति । परितुट्ठमाणसाणि पुव्वभवसुमरणसंधुक्कियसिणेहाणि सुहागयविसयसुहाणि तिण्णि पलिओवमाणि जीविऊण कालगयाणि सोधम्मो कप्पे देवा जाया ।

तत्थ वि तिण्णि पलिओवमाणि देवलोगसुहमणुहविऊणं सामी चविऊण वच्छगावइविजयमज्झट्ठियपहंकरानयरीए सुविहिवेज्जपुतो केसवो नाम समुप्पन्नो । अहं पुण तत्थेव

अभयघोसो नाम सेट्टिसुओ संजाओ। तत्थ वि परमपीईपराणं राया-ऽमच्च-सेट्टि-सत्थवाहसुया परममिक्ता संजाया । एवं च मेत्तीपराणं अण्णोण्णगिहागमणेण कालो अइक्कमइ । अण्णया इ कयाइ वेज्जसुयगेहे चिट्ठंताणं समागओ एगो किमिकुट्टोवदुओ तवस्सी, तं च दट्ठूण वेज्जसुयमुद्दिसिय जंपियमहेहिं, अवि य—

‘सच्चं चिय भो विज्जा ! तुब्भे जं कुणह दव्वलोभेणं । किरियं, दीणाईए दूरंदूरेण परिहरह’ ॥१००॥

तो भणइ वेज्जपुत्तो ‘मा एवं भणह दीण-किविणाणं । अहयं करेमि किरियं अवियप्पं धम्मबुद्धीए’ ॥१०१॥

अम्हेहिं तओ भणियं ‘जइ एवं तो णु किं न एयस्स ।

साहुस्स कुणह किरियं किमिकुट्टेणं उवहयस्स?’ ॥१०२॥

एसो वि आह ‘आमं, करेमि परं किंतु मज्झ सामगी ।

नत्थि जओ इह कज्जं तिहिं दव्वेहिं महग्घेहिं’ ॥१०३॥

तत्थेकं महगेहे लक्खप्पाणं समत्थि वरतेल्लं । कंबल-गोसीसाइं नत्थि दुवे लक्खमुल्लाइं’ ॥१०४॥

‘पूरेमु इमं अम्हे’ इय वोत्तुं वुड्ढसेट्ठिगेहम्मि । संपत्ता घेत्तूणं जुयलं दीणारलक्खाणं ॥१०५॥

दट्ठूणऽम्हे सेट्ठी अब्भुट्ठिय आसणाइं दाऊणं । जंपइ जोडियहत्थो ‘कुमार ! आइसह करणिज्जं’ ॥१०६॥

‘कंबल-गोसीसाइं अम्हाणं देह लक्खमोल्लाइं । दो लक्खे घेत्तूणं’ भणिए पडिभणइ ‘किं कज्जं ?’ ॥१०७॥

‘साहुकिरियानिमित्तं’ वुत्ते अम्हेहिं चिंतए सेट्ठी । ‘एए चेव कयत्था बाल च्चिय जं रया धम्मे ॥१०८॥

अम्हे उ पुण अधन्ना जं वुड्ढत्ते वि आगए तह वि । महमोहमोहियमणा न चेव धम्मे मइं कुणिमो’ ॥१०९॥

इय चिंतिऊण एसो दाउं दुन्नि वि विणा वि दव्वेणं । घेत्तूणं सामन्नं, अंतगडो केवली जाओ ॥११०॥

इयरे वि य तं साहुं गंतुं अब्भंगयंति तेल्लेण । तव्वीरिएण किमिया तयागया निगया सव्वे ॥१११॥

कंबलरयणेण तओ पावरिउं जाव ते तहिं लगा । मयगे कलेवरम्मी ताहे पप्फोडिया सव्वे ॥११२॥

गोसीसचंदणेण लित्तो साहु वि सत्थओ जाओ । एवं चिय मंसगया विणिगया बीयवाराए ॥११३॥

तइयाए अट्ठिगया पच्छा संरोहणीए रोहेउं । नीसेसवणे खामित्तु ते गया निययठाणेसु ॥११४॥

उव्वरियसेसचंदण-कंबलमुप्पणअद्धमोल्लेण । धुव्वंतधयवडाडोवसंकुलं सिहरसयकलियं ॥११५॥

भव्वयणभावसंदोहकारयं जिणवरिंदवरभवणं । काराविऊण सव्वे धणियं संवेगरंगया ॥११६॥

माया-पिइमाईयं सच्चं सम्माणिऊण सयणजणं । भवभयभीया गिण्हंति भावओ सुगुरुपासम्मि ॥११७॥

चारित्तं सव्वुत्तममुणिवरनियरोहिं फरिसियमुयारं । सुपवित्तं सव्वुत्तमसोक्खमहामोक्खसंजणयं ॥११८॥

पालित्तु निक्कलंकं अणसणविहिणा चइत्तु तो देहं । इंदसमाणा देवा अच्चुयकप्पे समुप्पण्णा ॥११९॥

१. सं० वा० सु० ‘त्थ पर’ ॥ २. ला० य ॥ ३. ला० परि ॥ ४. ला० ‘म्मा, तहेव प’ ॥ ५. ला० ‘पियमा’ ॥ ६. सं० वा० सु० सत्तुत’ ॥

ततो य आउयक्खए चविऊण इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पुंडरिगिणीए नयरीए वइरसेणस्स राइणो मंगलावईए देवीए धारिणीबीयनामाए कुच्छिंसि सामी वेज्जजीवो पुत्तत्ताए समुप्पणो, चोद्दसमहासुमिणसूइओ य जाओ कालक्कमेण । पइट्ठावियं से नामं वइरनाभो त्ति । इयरे वि रायसुयादओ कणगनाभ-रुप्पनाभ-पीढ-महापीढनामाणो चत्तारि वि वइरनाभभायरो समुप्पणा । कणगनाभ-रुप्पनाभाणं बाहु-सुबाहु त्ति बीयनामाणि । अहं पि तत्थेव अभयघोसो नाम रायपुत्तो संजाओ । वड्डिया सव्वे देहोवचएण कलाकलावेण य ।

तओ अहं बालो चेव वइरनाभं समल्लीणो जाओ सारही । एत्थंतरम्मि य सुर-नरनमंसिज्जमाणपायपंकओ लोगंतियसुरविबोहिओ वइरनाभस्स रज्जं दाऊण निक्खंतो तित्थयरदिक्खाए भयवं वइरसेणो । उप्पन्नदिक्खनाणो य विहरिउं पयत्तो । वइरनाभो य उप्पन्नचक्काइमहारयणो चक्की जाओ । कणगनाभादयो य महासामंता । एवं च पभूयकालं रज्जमणुभुंजिऊण निव्विन्नकामभोगा नियपिउतित्थयरसमीवे पव्वइया । अहं पि तेहिं सह गहियदिक्खो समणो जाओ । वइरनाभो पढियचोद्दसपुव्वो भगवया सूरिपएऽणुणाओ । इयरे एक्कारसंगधारिणो । तत्थ य बाहू वेयावच्चं करेइ, अवि य—

पंच्ह मुणिसयाणं आणेउं भत्त-पाणमुवणेइ । वरचीर-पत्त-कंबल-दंडयमाईणि य जहेच्छं ॥१२०॥
 ओसह-भेसज्जाणि य पीढय-संधार-फलहगाईणि । जो जं इच्छइ साहू आणइ अगिलाइतं तस्स ॥१२१॥
 बीओ पुणो सुबाहू सज्झाय^१-ऽज्झयण-झाणझवियाण । विस्सामणं करेई अपरिस्संतो महासत्तो ॥१२२॥
 भोगहलं बाहुवलं दोहिं वि कम्मं समज्जियं तेहिं । सव्वुक्किट्ठसरूवं देवाण वि कयचमक्कारं ॥१२३॥
 पीढ-महापीढा पुण सरंति अणवरयमेव सज्झायं । अणवरयं चिय सूरी पसंसणं कुणइ पढमाणं ॥१२४॥
 चिंतंति तओ इयरे 'रायसहावं गुरू न मुंचंति । जो च्विय करेइ कज्जं अणवरयं तं पसंसंति' ॥१२५॥
 इय मायाइ गुरूणं उवरिं अप्पत्तिएण थीगोत्तं । बंधंति, वयमुदारं पालियंमहेहि बहुकालं ॥१२६॥
 अंते अणसणविहिणा छप्पि जणा अहसमाहिणा कालं । काऊणं सव्वट्ठे विमाणपवरम्मि उप्पणा ॥१२७॥
 तेत्तीससागराइं तत्थ सुहं भुंजिऊण तो सामी । पुव्वभवबद्धतित्थयरनामकम्मोदयवसेणं ॥१२८॥
 चविउं इह उप्पणो पढमो तित्थं करो उसभनाहो । नर-सुरवंदियचलणो पियामहो एस पच्चक्खो ॥१२९॥
 सेसा कमेण भरहो बाहुबली बंभि सुंदरी अहयं । तत्थ जिणेणाऽऽइट्ठं 'जहेस तित्थं करो पढमो ॥१३०॥
 भरहम्मि वइरनाहो, सेसा तत्थेव लहिय मणुयत्तं । उप्पणदिक्खनाणा सासयसोक्खं लहिस्संति' ॥१३१॥
 ता भो ! जिणिंदलिंगं दड्डूणं सुमरिया मए जाई । भिक्खादाणं पि इमं ततो च्विय जाणिउं दिण्णं ॥१३२॥

१. सं. वा. सु. 'णराई' ॥ २. ला० 'यरे य ए' ॥ ३. सं० वा० सु० 'य-ज्झाणऽझयणझवि' ॥ ४. सं० वा० सु० 'य अम्हे' ॥ ५. ला० तो ॥

तं सोऊणं रायाइएहिं उब्भिण्णपयडपुलएहिं । अहियं पसंसिओ सो, तओ गया नियय्ठाणेसु ॥१३३॥
 सेज्जंसेण वि पहुणो पारणठाणम्मि रयणमयपीढं । पयअक्कमणभएणं विहियं अच्चेइ तियकालं ॥१३४॥
 तं दड्ढं लोगो वि हु करेइ तह चेव, तं च कालेणं । गच्छंतेण पसिद्धं जायं संचउरपेढं ति ॥१३५॥
 उप्पण्णम्मि य नाणे जिणस्स तो गिण्हिऊण सामण्णं । उप्पाडिऊण नाणं सेज्जंसो सिवपयं पत्तो ॥१३६॥
 भवणं धणेण, भुवणं जसेण भयवं रसेण पडिहत्थो । अप्पा निरुवमसोक्खे सुपत्तदाणं महग्घवियं ॥१३७॥

[श्रेयांसाख्यानकं समाप्तम् ॥३०॥]

सम्प्रति चन्दनाख्यानकम्—

[३१. चन्दनार्याकथानकम्]

अत्थि इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे अंगाजणवए गयणंगलग्गमहासाल-गोपुर- उट्ठालय-
 तोरण-भवण-देवकुलालंकिया चंपा नाम नयरी । तत्थ य गिरिवरु व्व वणराइविराइओ खगसंगओ
 सारंगसमण्णिओ सुवंसो सुगंडो सुपाओ दहिवाहणो नाम राया । तस्स य चेडयमहारायदेहुब्भवा
 सावयधम्मज्जया धारिणी नाम देवी । सा य अण्णया कयाई सुहपसुत्ता रयणीए चरम-जामे
 फुल्लफलसमद्वासियं अणेयजणोवयारिणिं नियच्छायाविणिज्जियसयलवणलयं कप्पलयं सुमिणे पासिऊणं
 पडिबुद्धा । साहियं जहाविहिं दइयस्स । तेण वि तेलोक्कब्भहियबहुजणोव-
 यारिसमत्तनारीयणप्पहाणधूयाजम्मेणाऽभिनंदिया । सा वि 'तह'ति पडिवज्जिऊण सुहं गब्भमुव्वहंती पत्ते
 पसूइसमए पसूया दारियं । कमेण य कयं से वसुमइ ति नामधेयं ।

एतो य वच्छाजणवयालंकारभूयकोसंबिवरपुरीए सयाणिओ नाम राया । मिगावई तस्स देवी ।
 ताण वि दोण्ह वि राईणं परोप्परं वेरं वट्ठइ । अण्णया गओ सयाणिओ दहिवाहणस्सोवरिविक्खेवेणं ।
 पवत्ते य महासंगामे कहिंचि देव्वजोएण पणासिओ दहिवाहणो । सयाणिएण लूडिजमाणीए नयरीए
 समुग्घुट्ठो नियबले जग्गहो 'जो जं लेइ तस्स तं सुगहियं चेव' । तओ एणेण उट्ठिएण कुलगेहं पइ
 पलायमाणी गहिया वसुमइधूयासमण्णिया धारिणी नाम देवी । अंतराले य सो गच्छमाणो पुट्ठो एणेणं
 पुरिसेणं जहा 'किमेयाहिं काहिसि ?' । तेण भणियं जहा 'एसा मम पत्ती भविस्सइ, इमं च दारियं
 विक्केहामि' । तं च सोऊण चिंतितुमाढत्ता धारिणी, अवि य—

‘हद्धी ! निघिण नित्तिसं कम्मविहि ! काइं एरिसं विहियं ।

जं तिहुयणिक्कवीरो वि मह पई एव विद्विओ ॥१॥

१. सं० वा० सु० विहिउं ॥ २. ला० तिक्कालं ॥ ३. सं० वा० सु० 'व बहुयका' ॥ ४. ला० अंगज ॥
 ५. सं० वा० सु० 'णलग्ग' ॥ ६. ला० 'ट्टाल-तो' ॥ ७. ला० सत्ता रं ॥ ८. सं० वा० सु० 'विहं द' ॥ ९.
 सं० वा० सु० 'मत्थना' ॥ १०. सं० वा० सु० 'भूसिय' ॥ ११. सं० वा० सु० पलाणो दं ॥

तत्तियमित्तेणं चिय किं न ठिओ ? जं पुणो इमस्साहं ।
 अइकूरकम्मपुरिसस्स हंदि वसवत्तिणी विहिया ॥२॥
 हा निदयविहि ! संपइ न मुणसि किं निच्छयं महमणस्स ? ।
 जं सीलखंडणम्मि वि धणियं अब्भुज्जओ जाओ ॥
 ता किं च इमो पावो बला वि मह सीलखंडणं काही ? ।
 बाला इमा वराई लहिही किं वा वि हु अणत्थं ? ॥४॥

कुलगेहअसंपत्ती पईविरह(हं) सीलभंगसवणं च । धूयाविक्रिणणं चिय चिंतंती सा मया झत्ति ॥५॥
 तो तीइ अयंडे च्विय तं मरणं पेच्छिऊण तेण तओ । अइकोमलवयणेहिं बहूहिं संठाविया बाला ॥६॥

एवं च कमेण पत्तो कोसंबीए । तिणाणि सीसे दाऊण विक्रिणणत्थं समोयारिया हट्टमगे ।
 दिट्ठा य धणावहाहिहाणेण सेट्ठिणा, चिंतियं च 'अहो ! कण्णयाए आगीई, ता भवियव्वं
 महाकुलुप्पण्णाए इमाए, ता गिण्हामि एयं जेण मह एईए जणएण सह [सं]बंधो भवइ'त्ति । दाऊण
 मोल्लं गहिया । समप्पिया मूलाहिहाणाए नियभारियाए धूयापडिवत्तीए सुहेण चिट्ठइ ।
 अइसिसिरसीयलसहावत्तणओ य चंदणबाल ति से बीयं नामं संजायं । एत्थंनम्मि य समारूढा एसा
 जोव्वणं, अवि य—

अइसरसकोमलाइं जायाइं तीइ अंगमंगाइं । कामुयजणमोहणकारया य अद्धुगया सिहिणो(णा) ॥७॥
 पडिपुण्णचंदमंडलतुल्लं वयणं मणोहरं सहइ । लावण्ण-वण्ण-कंती-रूयाइं अणण्णसरिसाइं ॥८॥
 मयरद्धयनरवइमंदिरम्मि नवजोव्वणे वि वट्ठंती । जोव्वणवियाररहिया सुहेण सा चिट्ठए तत्थ ॥९॥

अण्णयां कयाइ घम्माऽऽयवसंतत्तगत्तो अहियं परिस्संतो पस्सेयजलाविलनिस्सहसरीरो
 बाहिराओ समागओ सेट्ठी । दिट्ठा य चंदणाए । तओ तहाविहमन्नमपेच्छमाणी चलणसोयं घेतूण
 उवट्ठिया । 'धूय'त्ति काऊण न निवारिया सेट्ठिया । तओ अहिजायत्तणओ सरीरस्स,
 विणीयविणयत्तणओ सहावस्स, जोव्वणारंभारियत्तणओ अंगाणं, अच्छायरेण चलणे सोयमाणीए छुट्ठो
 कुंतलकलावो, कदमोवरिनिवडमाणो य धरिओ सेट्ठिणा लीलालट्ठीए । दिट्ठो य उवरिमतलट्ठियाए
 मूलाए । चिंतितं च पवत्ता—

'अहह ! कह पेच्छ एसो मूढो धूयं पवज्जितं एयं । अइरागमोहियमणो करेइ एवंविहं चेड्डं ? ॥१०॥
 अहवा एयाएसुं(ईसं) जोव्वण-लावण्ण-रूव सोहगं । दट्ठूण मुणी वि दढं मयणेण परव्वसो होइ ॥११॥

१. सं० वा० सु० 'इदुक्खं' ॥ २. सं० वा० सु० 'विक्रिणणं' ॥ ३. सं० वा० सु० 'यं 'हा कण्ण' ॥ ४.
 ला० से जायं विइयनामं ॥ एत्थं ॥ ५. ला० 'रूवाइ अ' ॥ ६. सं० वा० सु० 'व्वणम्मि वट्ठ' ॥ ७. ला० 'या
 य क' ॥ ८. ला० 'ट्ठो चंद' ॥ ९. मुपा० अहियजा' ॥ १०. ला० अहवा एसुं जोव्वं ॥

ता जइ कहिंचि एयं परिणइ एसो दढाणुरागवसो ।

सुविणे वि हु नामं पि वि न गिणहए मज्झ निच्छयओ ॥१२॥

ता दूरविणट्टं पि हु कज्जं एयं न जाव निव्वडइ । ताव करेमि पयत्तं, को नहछेइ(यं) उवेक्खेइ ? ॥१३॥

जावऽज्ज वि कोमलओ वाही ता कीरए नणु तिगिच्छा । गाढासज्जीभूओ पयत्तमवि निप्पलं होइ' ॥१४॥

नियचित्तदुट्ठिमाए अलियं पि हु इय विगप्पए बहुयं । अहवा वि दुज्जणजणो अप्पसमं मण्णए सव्वं ॥१५॥

भणियं च—

ववहरइ अण्णह च्विय सुद्धसभावो जयम्मि साहुजणो । मण्णइ तमण्णह च्विय दुट्ठसभावो खलयणो वि । १६।

तओ जाव विणिगओ गेहाओ सेट्ठी ताव कासवयं सदाविऊण मुंडावियं से सीसं । दिण्णाणि पाएसु नियलाणि । छूढा य उवरगे । निबद्धाणि संकलाथंभएण सह नियलाणि । ढक्किय दुवारं भणिओ य परियणो 'जो सेट्ठिणो एयं साहिस्सइ तस्स वि एस चेव दंडो' ति । तओ भोयणवेला, पुच्छियं सेट्ठिणा 'किमज्ज न दीसइ चंदणा ?' । मयरदाढमूलाभएण न केण वि किंचिवि साहियं । 'बहिं रमइ' ति मण्णमाणेण भुत्तं सेट्ठिणा । बिइय-तइयदिवसेसु वि एवं चेव सारिया । नवरं चउत्थदियहे कओ सेट्ठिणा निब्बंधो जहा 'जाव न चंदणा दिट्ठा न ताव भोत्तव्वं' । तओ 'किं मह मूला करिस्सइ ति मह जीविण वि जीवउ सा गुणगणमई बालिय' ति मण्णंतीए सिट्ठो एक्काए वुइढदासीए सेट्ठिणो परमत्थो । तओ समाउलचित्तेण उग्घाडियं उवरगदुवारं । दिट्ठा य सिरावणीयचिहुरभारा तण्हा-छुहाकिलामियतणू अंसुजलाहलियकवोला । तं च दट्ठूण बाहोल्लोयणो गओ महाणसं जाव मूलाए सव्वं असणं [अ]ब्भंतरे छोट्ठूण तालियं दुवारं । तओ निरूवंतेण अवण्णाए असंगोविया सुप्पेक्ककोणसंठिया दिट्ठा कुम्मासा । तओ ते चेव घेत्ठूण समप्पिया चंदणाए सेट्ठिणा, भणिया य 'पुत्त ! जाव लोहारं सदिऊण तुह नियलाणि भंजावेमि मणुण्णं च भोयणमुवक्खडावेमि ताव तुमं एए चेव भुंजसु, मा अइच्छुहाए सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ' । ति भणिऊण गओ लोहारगेहं । तओ सुप्पपणामि मच्छियापुंजसच्छहे पेच्छिऊण, अत्तणो पुव्वावत्थं सरिऊण सोएउं पवत्ता । कहं ?-

'जइ देव ! सयलतियलोयतिलयभूओ कओ कुले जम्मो ।

ता कीस अयंडि पयंडमागयं दुसहदालिदं ? ॥१७॥

जइ जाया पिइ-माईण नियतणूओ वि वल्लहा अहयं ।

ता ताण मरणदुक्खाण भायणं कीस निम्मविया ? ॥१८॥

जइ नाम विओगो बंधवाण निक्करुण ! तइं कओ देव्व ! ।

ता किं अवरं एयं मज्झं पेसत्तणं विहियं ? ॥१९॥

इय निययावत्थं निंदिऊण सुकुलुगयं च सविसेसं । पुणरुत्तनित्ताहं बुनिब्भरं रुवइ सा बाला ॥२०॥
 एवं च निंदिऊणं नियक्कम्मं, सोइऊण य अवत्थं । भुक्खक्खामक्कवोलं वयणं ठविऊण करकमले ॥२१॥
 ते पुलइय कुम्मासे सविसेसं मण्णुभरियगलविवरा । चित्तेइ 'लु(लु)हत्ताणं न किंचि तं जं न पडिहाइ ॥२२॥
 किंतु नियजणयगेहे एक्कासणपारणम्मि वि जहेच्छं । चउविहसंघं पडिलाहिऊण पुण आसि पारिंती ॥२३॥
 इण्हिं तु अट्ठमोवासपारणे विसमदसगया वि अहं । अविदिण्णसंविभागा कहं पु पारेमि गयपुण्णा ? ॥२४॥
 जइ एइ कोवि अतिही ता दाउं कित्ति ए वि कुम्मासे । पारेमि' चिंतिऊणं दुवारदेसं पलोएइ ॥२५॥

एत्थंतरम्मि य नित्थिण्णसंगमयाऽमरमहोवसगवगेण गहिओ अभिगहो जगगुरुणा
 सिरिवद्धमाण-सामिणा, तंजहा-दव्वओ सुप्पेक्ककोणेण कुम्मासे, खेत्तओ दायारीए एगो पाओ
 उंवरस्संतो एगो बहिं, कालओ नियत्तेसुं भिक्खायरेसुं, भावओ जइ महारायकुलुगयकण्णया वि होऊण
 पत्ते दासत्तणे अवणीयसिरोरुहा नियलावद्धचलणजुयला मण्णुभरोरुद्धकंठगयगिरा रोयमाणी पयच्छइ तो
 पारेमि, नऽनह ति । एवं तत्थ कोसंबीए जणेण अणुवलक्खिज्जमाणाभिगहविसेसो विहरिउं पयत्तो ।

अण्णया य पविट्ठो सुगत्तामच्चस्स मंदिरं । नीणिगया दासचेडीहिं भिक्खा । अधित्तूण निग्गओ
 भगवं । दिट्ठो नंदाहिहाणाए अमच्चि ए भणियं च णाए 'हला ! किं न भयवया गहिया भिक्खा' ? । ताहिं
 भणियं 'सामिणि ! एस भयवं दिणे दिणे एवं चेव गच्छइ, संपइ चउत्थो मासो वट्ठइ' । तओ 'हा धी !
 भयवओ कोवि अभिगहो भविस्सइ'ति अधिईए अमच्चं भणइ जहा 'किं तुज्झ अमच्चत्तणेणं जइ भयवओ
 अभिगहं न मुणसि ?' । अमच्चस्स वि अधिई जाया । इओ य-राइणो सयाणियस्य मिगावईए देवीए
 विजया नाम पडिहारी, सा पओयणंतरेण तत्थाऽऽगया । तीए सव्वं निवेइयं मिगावईए । तस्सावि अधिई
 जाया । निवेइयं च राइणो 'किं तुज्झ रज्जेणं जइ भगवओ अभिगहं न पूरेसि, न याणसि भयवं एत्थ
 विहरमाणं ?' । तेणावि 'पूरेमि संपयं'ति देविं समासासिऊण सोगाभिभूएण हक्कारिओ अमच्चो ।
 अमच्चेणावि पासंडिणो पुच्छिया अभिगहविसेसा । तेहिं भणियं महाराय ! विचित्ता जइजणे णं अभिगहा
 कहं नज्जंति ?, परं दव्वओ विचित्तदव्वाइं, खित्तओ नाणापएसड्डियदायगाइ, कालओ पढमपहराइ,
 भावओ हसंत-रोवंत-नच्चंत-गायंत-रमंताइ । तओ राइणो आएसेण सव्वो वि लोगो तहा दाउमाढतो ।
 तहा वि जाव न गिण्हइ जयगुरू ताहे अच्चंताउलीभूओ जणो चिंतिउं पयत्तो, कहं ?—

‘एस अउण्णो सव्वो वि जणवओ जेण जयगुरू पित्थ ।

नाणुगहेइ ववएसविहिविदिण्णऽण्ण-पाणेहिं ॥२६॥

जस्स न जइणो गिण्हंति कहवि जत्तेण जोइयं दाणं । सो किं गिही ?, मुहा होइ तस्स घरवासवासंगो' ॥२७॥
जह जह न लेइ बहुविहपयारभत्तं पणामियं पुरओ । तह तह किलम्मइ जणो जयगुरुचिंतालसो वियलो ॥२८॥
इय निंदियनियविभवोवभोगसंपत्तिविहलजियलोओ ।

अकयत्थं पिव भण्णइ सयलं धण-परियणसमिद्धिं ॥ २९ ॥

एवं च विहरमाणो पंचदिवसूणछम्मासेहिं पविट्ठो धणावहसेट्ठिमंदिरं, दिट्ठो य पुव्ववणिग्यसरूवाए चंदणबालाए, चित्तिं पवत्तो, अवि य—

‘सुकयत्था कयपुण्णा अहयं चिय एत्थ जीवलोगमि । जीए पारणगदिणे समागओ एस परमप्पा ॥३०॥
जइ कहवि एस भयवं एए मेऽणुगहेइ कुम्मासे । तो दुहपरंपराए दिण्णो हु जलंजली होइ’ ॥३१॥
जावेवं सा चिंतइ ता भयवं तीइ संठिओ पुरओ । भत्तिभरनिब्भरंगी समुट्ठिया झत्ति तो एसा ॥३२॥
घेत्तूणं कुम्मासे ‘जयगुरुणो अणुचिय’ ति रोवंती । संकलबद्ध ति बहिं विणिगमं काउमचयंती ॥३३॥
विकखंभित्ता पाएहिं एलुयं भणइ जयगुरुं ‘भयवं ! गिण्हह जइ कप्पंती अणुगहं मज्झ काऊण’ ॥३४॥
‘पुण्णोऽवहि’ ति परिभाविऊण सामी वि उड्डए हत्थं । सा वि तयंतेखिविउं पुणो वि परिभावे एव ॥३५॥
‘पावेइ पुण्णभाई तइया भवणमि एरिसं पत्तं । जइया महल्लकल्लाणसंभवो जंतुणो होइ ॥३६॥
कल्लाणपद्धईओ उवट्ठियाओ पुणो वि नणु मज्झ । सव्वाओ जयपहुणा अणुगहो जं सयं विहिओ ॥३७॥
जमभिगहपारणए भयवं पाराविओ जिणो वीरो । नर-सुर सिवसोक्खाइं तं नूणं हत्थपत्ताइं’ ॥३८॥

एत्थावसरमि य ‘अहो दाणं सुदाणं महादाणं’ ति भणमाणेहिं सुरसमूहेहिं कओ आयासतले चेलुक्खेवो, निवडिया नहंगणाओ तियसतरूकुसुमवुट्ठी, विमुक्कं गंधोदयं मेहमंडलेहिं, पवाइओ सुरहिसमीरणो, वज्जिया नहंगणे देवदुंदुही, विमुक्का सुरवेहिं वररणवुट्ठी, कहं चिय-

सुरवरसहत्थपम्मुक्कविविहमणिकिरणरंजियदियंता । अण्णोणवण्णसोहा विहाइ सुरचावलट्ठि व्व ॥३९॥
परिमलमिलंतभसलउलवलयपरिलित्तबद्धझंकारा । सुरतरूपसूणवुट्ठी निवडइ रइमासलदियंता ॥४०॥
उच्छलइ ललियकरकमलतालणुव्विल्लसद्दसद्दालो । दुंदुहिरावो गंभीरवज्जिराउज्जसंवलिओ ॥४१॥
इय ललियभुउव्वेल्लियकरमउलंजलिमिलंतसिरकमलं । सुरजयजयसंरावेण निवडिया रयणवुट्ठि त्ति ॥४२॥

तओ तियसेहिं कओ पुण्णवो कुंतलकलावो, विहियं पुव्वलावण्णरूवसोहासमुदयाओ वि अहिययरसोहं सरीरं । तओ समुच्छलिओ नयरीए हलहलारवो जहा ‘पाराविओ भयवं धणसेट्ठिगेहे, निवडिया तत्थ रयणवुट्ठी’ । एयं च जणपरंपराओ सोऊण समागओ सेट्ठी, सयार्णियनरवई य । दिट्ठं च तं सेट्ठिणो गेहं दिसि दिसि निहत्तरयणसंचयं । विम्हउप्फुल्ललोयणो य भणित्तं पवत्तो नरवई जहा

१. ला० ‘वन्ना, अ’ ॥ २. ला० ‘एहिं उवं(उबंरं) भणं’ ॥ ३. ला० तहंते ॥ ४. सं० वा० सु० ‘वेरेहिं रयण’ ॥ ५. ला० ‘य(?र)वुव्वे’ ॥ ६. ला० त्ति ॥ कओ तियसेहिं पुण’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘ए कोलाहला’ ॥ ८. ला० ‘णिओ नर’ ॥ ९. ला० सेट्ठिगेहं ॥

‘भो सेट्ठि ! धण्णां तुमं जस्सेरिसी तिहुयणतिलेयभूया धूया जीए एरिसं भयवओ पारावणदाणफलमासाइयं । जओ—

अहमित्थ पत्थिवो किर पुरीए, कोड्डुबिओ पुण तुमं ति ।

इय अंतरे वि गुरुणा तह वि तुमं चेवऽणुगहिओ ॥४३॥

न य विहवो न य जाई न पहुत्तं कारणं कुसलयाए ।

भवणम्मि अत्थिणो जस्स इति सो पुण्णभाइ’ ति ॥४४॥

इय एव पत्थिवो थुइसमिद्धिसंबद्धविविहभणिएहिं ।

अहिणंदइ जा सव्वाथरेण कयगोरवं सेट्ठिं ॥४५॥

ताव य रण्णा सह समागएण अंतेउरमहल्लएण दिट्ठा चंदणा, पुणरुत्तवियक्कपरायणेण पच्चभिण्णाया । पच्च-भिण्णाणाणंतं च चलणेसु निवडिऊण रोइउं पयत्तो । तं च रोयंतं दट्ठूण राइणा देवीए य भणियं ‘भो ! किमेयं ?’ । तेण वि साहियं ‘देव ! जहेसा दहिवाहणरायधूया धारिणीकुच्छिसमुब्भवा वसुमई नाम कण्णया कहं पि एत्थाऽऽगया न जाणामि’ । तओ राइणा वसुमई पुच्छिया । तीए य जं जहावत्तं तं तहा सव्वं साहियं जाव धणसेट्ठिहत्थागमणं धूयापट्ठित्ति-सिणेहनिब्भरपरिपालणाइ-पत्थुयसंबंधावसाणं । तं च सोऊण सिणेह-निब्भरं निवेसिया उच्छंगे राइणा देवीए य । तओ विण्णत्तं तीए जहा ‘तुब्भेहिं सेट्ठिणा य अब्भणुण्णाया इच्छामि धम्मायरणं काउं, जओ—

संसारे बहुविहदुहकिलेससयसंकुले असारम्मि । को नाम कयविवेओ रमेज्ज सुहसंगवामूढो ? ॥४६॥

इह जम्मे च्विय दट्ठूण तारिसी सुकुलजम्मसंभूई । जाया पुणो वि एसा परपेसकिलेसिया मुत्ती ॥४७॥

तं तारिसबहुविच्छड्डविट्ठिरिल्लऽह पुव्वसंभूई । संपइ को गोट्ठीसु वि साहिज्जंतं पि सदहइ ? ॥४८॥

इय कलिउं संसारम्मि कम्मणो वसवियंभियव्वाइं । को नाम सयन्नो निमिसयं पि सज्जेज्ज संसारे ? ॥४९॥

एयं च समायण्णिऊण राइणा भणियं जहा ‘पुत्ति ! अज्ज वि बालो वयविसेसो, अलंघो जोव्वणवियारो, दुज्जओ मोहप्पसरो, बलिओ इंदियगामो, ता विलसिऊण संसारविलसियव्वाइं, उवभुंजिऊण सयलिंदियसुहाइं, अणुभुंजिऊण सुरवस्समास(सा)इयं धणसमिद्धिं पच्छा जुज्जइ काउं धम्मोज्जमो; संपयं तु,

कत्थ इमं तुह तेलोक्कजंतुकयविम्वहं तणुसरूवं । कत्तो लायण्णुदलणपच्चलो तवविसेसो ? ति ॥५०॥

१. सं० वा० सु० ‘ण्णो जस्से’ ॥ २. सं० वा० सु० ‘लया धूया’ ॥ ३. ला० ‘स्स जंति सो पुण्णभाय ति ॥ ४. ला० ‘च्चित्रयाणंतं’ ॥ ५. ला० पवत्तो ॥ ६. ला० धूयप’ ॥ ७. सं० वा० सु० ‘परपेसिकि’ ॥ ८. सं० वा० सु० ‘णुहविऊण ॥ ९. सं. वा. सु. ‘समाणाइयं ॥

तुह ललियकंतिलायणहारिणो सुंदरस्स रूवस्स । हिमपवणो कमलस्स व विणासभूओ हवेज्ज तवो ॥५१॥
जं जत्थ जया जुज्जइ काउं तं तह कुणंति बुहसंघा । किं कुणइ दारुकुंभम्मि कोइ बालो वि हव्ववहं ? ॥५२॥
इय तह तुह तणुलइयाए रुइरलायणकंतिसोहाए । होइ तवो कीरंतो विद्धंसणकारओ नूणं ॥५३॥

अण्णं च—

तामरससच्छहं तुह सरीरयं कह सहेज्ज तिक्कतवं ? । तिक्काऽऽयवं दुमो चेव सहइ नो किसलउब्भेओ ॥५४॥
तिक्कं तवसंतावं सहेइ वयपरिणओ, न बालतणू । आयवदंसणमित्तेण सुसइ गोपयगयं वारि ॥५५॥
इय वयवुद्धि च्चिय होइ कारणं इट्ठसाहणत्थम्मि । उज्जोवइ पुण्णससी, न इंदुलेहा जयं सयलं ॥५६॥

तओ एयमायण्णिऊण ईसिवियसावियवयणकमला जंपिउं पवत्ता चंदणा जहा “महाराय ! किं पडिबुद्धबुद्धिणो एवं विहाइं जंपंति ?, जओ—

सो च्चिय कालो जायइ तवस्स इह पंडिया पसंसंति । सामत्थं जत्थ समत्थवीरिए होइ जंतूणं ॥५७॥
अण्हिंदियत्थसामत्थयाजुओ पढमजोव्वणे चेव । सयलाण वि करणीयाण पच्चलो जायए जंतू ॥५८॥
जइया पुण सयलिंदियवेयेल्लावण्णनीसहसरीरो । इह उट्ठिउं पि न तरइ तइया किं कुणउ कायव्वं ? ॥५९॥
वीरियसज्जो जायइ तवो त्ति तणुमित्तसाहणो नेय । कुलिसं चिय दलइ गिरी, न कयाइ वि मट्ठियापिंडो ६०॥
इय रहिओ कह सामत्थयाए काउं तरेज्ज किंपि नरो ? । इच्छामि तेण काऊण जोव्वणे च्चय धम्ममइं ॥६१॥

अण्णं च एसा चेव रयणवुट्ठी पुण्णाणुबंधसंसिणी उच्छाहइ मं धम्मज्जमे, किंच तुब्भेहिं न सुयं विउसजणजंपियं ‘न धम्मरहिया सव्वसंपयाणं भायणं हवंति’ । एत्थावसरम्मि य पुरंदरेण भणिओ सयाणियपत्थिवो जहा “भो नराहिव ! मा एवं भणसु, जओ-

किं न [हु] मुणियं तुमए ‘एसा संपुण्णसीलगुणविहवा । चंदणतरुणो साह व्व चंदणा सीयला धणियां ६२॥
एसा हु भयवओ वद्धमाणतित्थंकरस्स पढमयरा । अज्जाण संजमुज्जमपवत्तिणी होहिई अणहा’ ॥६३॥

हिययविचित्तियसरहसपव्वज्जाकाललालसा एसा ।

आभासिउं पि जुज्जइ न अन्नहा, किं थं बहुएण ? ॥६४॥

चिट्ठं निहेलणे च्चिय तुम्हं ता जाव होइ सो समओ । जयगुरुणो पव्वज्जाणुगहकरणस्स जो जोग्गो ॥६५॥
एयं पि इमाए चेव होइ सुरमुकरयणवुट्ठिधणं । गिण्हउ, जहिच्छियं देउ जस्स जं जोगमेत्ताहे’ ॥६६॥
तो सा सुराहिवइणो अणुमइमेत्तेण सव्वधणसारं । सेट्ठिस्सइणुमण्णेउं, नरवइगेहं पइ पयट्ठा ॥६७॥

१. सं० वा० सु० न थंदु ॥ २. ला० ‘यल्लूविइणइण(यल्लविइण्ण) नीस’ ॥ ३. सं० वा० सु० इय उ ॥
४. ला० हि ॥ ५. सं० वा० सु० होही अणग्घा ॥ ६. ला० च ॥ ७ सं० वा० सु० बहवेण ॥ ८. सं० वा० सु०
‘उ गिहंगणे च्चिय ॥ ९. सं० वा० सु० पइट्ठा ॥

दीणा-ऽणाहाईणं वियरंती तं धणं जहेच्छाए । नीया सयाणिणं समंदिरं गोरवं काउं ॥६८॥
सुरनाहवयणउच्छाहिणं संपूइऊण धणसेट्ठिं । कण्णंऽतेउरमज्जे ठविया काऊण अक्खूणं ॥६९॥

तओ सा विमुक्काऽसेसालंकार वि साहीणसीलालंकारविभूसियावयवा अच्चंतमणोहरुप्पण-
लावणजोव्वणपयरिसा वि परिणयवयाऽऽयरणा अवमणियासेसविसइंदिया वि असमसमासा-
इयसमसुहा भयवओ केवलनाणुप्पत्तिसमयं पडिच्छमाणी तत्थ चिट्ठइ । उप्पन्ने य भयवओ केवलनाणे
महाविभूर्इए अणुगम्ममाणा सुरा-ऽसुर-नरेहिं गया भयवओ समीवे । दिक्खिया य जहाविहिणा
भयवया जाया छत्तीसण्हं अज्जियासहस्साणं पवत्तिणी । कालंतरेण य उप्पाडिऊण केवलनाणं पत्ता
परमसोक्खं मोक्खं ति ।

चन्दनार्याकथानकं समाप्तम् । ३१.

अधुना द्रोणकाख्यानकमाख्यायते—

[३२. द्रोणकाख्यानकम्]

नीसेसदेसभूसणमज्जे चूडामणि व्व जो सहइ । वसुहाविलासिणीए सो अत्थिह कोसलाविसओ ॥१॥
तत्थऽत्थि तियसपुरवरसिरिसोहासमुदणं समसरिसं । दससु दिसासु पयासं वरनयरं सिरिउरं नाम ॥२॥

तत्थ य निस्संसयससहरकरपसरसरिसजसविसरवलक्खीकयसयलवसुहावलओ तारापीडो नाम
राया । अहरीकयसुरा-ऽसुर-विज्जाहर-नररमणीरूया रइसुंदरी नाम से भारिया ।

इओ य तम्मि चेव निवसंति सयलपुरप्पहाणसेट्ठिपुत्ता सुधण-धणवइ-धणीसर-
धणयाहिहाणा परोप्परपीइपहाणा चत्तारि वयंसया । ते य अण्णया कयाइ असाहिय जणणि-जणयाणं
गहियपहाणसुवण्णभंडमुल्ला संबलयवाहयदोणगाभिहाणेक्कम्मकरमेत्तपरियणा पट्ठिया रयणदीवं ।

अण्णया य वच्चंताणं समागया महाडवी । नित्थिण्णाए य तीए निट्ठियप्पायं तेसिं संबलयं ।
एत्थंतरम्मि य दिट्ठो अणेहिं पडिमापडिवण्णो एणो महामुणी, चिंतियं च-

‘तवसोसियतणुयंगं दुद्धरकिरियाकलावकयचित्तं । मयणणिपसमजलयं पंचिंदियतुरयनिग्गहणं ॥३॥

नीसेसगुणाहारं पहाणपत्तं इमं पयत्तेण । पडिलाहंती भत्ताइएहिं जे भत्तिसंजुत्ता ॥४॥

ते धण्णा कयपुण्णा, ताण सुलद्धं च माणुसं जम्मं । ता अम्हे वि हु एयं पडिल्लाहेमो महाभागं ॥५॥

एत्थंतरम्मि भयवं पडिलेहिताण पत्तयं चलिओ । जुगमेत्तनिहियदिट्ठी गोयरकालु त्ति कलिऊण ॥६॥

१. सं० वा० सु० ‘भूसियसरीरावयवा’ ॥ २. ला० मणोहरुप्प(रूय)लाव ॥ ३. ला० ‘यासाहस्सीणां’
४. ला० ‘साहिऊण जणणि’ ॥ ५. सं० वा० सु० ‘पायं संब’ ॥ ६. ला० ‘लाहामो’ ॥

हरिसापूरियहियएहिं तेहिं तो दोणगो इमं भणिओ । दोणय ! संबलयमिणं पयच्छ एयस्स साहुस्स ॥७॥
तेण य तदहियसद्धाविसेसवियसंतवयणकमलेण । पडिलाहिओ तवस्सी रोमंचुच्चइयगत्तेण ॥८॥

तओ पत्ता कमेण रयणदीवं । समासाइयजहिच्छियऽब्भहियविभवां पत्ता नियनयरं,
दीणादिदाणपुव्वयं च विलसिउं पयत्ता, परं ववहरंति सुहुममायाए धणवइ-धणीसरा ।

एत्थंतरम्मि य निययाउयसमत्तीए मओ दोणगो, समुप्पण्णो इत्थेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे
कुरुजणवयालंकारभूयगयपुरनयरपहुदुप्पसहनविगममहिसिसिरिसुंदरिकुच्छिसि गब्भत्ताए । दिट्ठो य
तीए तीए चेव रयणीए अमयरससारपसरंतनिययकरपूरपेच्चालियभुयणंतरालो पडिपुण्णमंडलो
मंडियगयणंगणो रयणीयो वयणेणोयरं पविसमाणो । तदंसणुप्पण्णसज्झसवसविगयनिदाभराए साहिओ
दइयस्स सुमिणगो । तेण वि साहावियनियमइमाहप्पविणिच्छियसुमिणभावत्थसमुप्पण्णरोमंचकं-
चुयविसट्ठवयणसयवत्तेणं जंपियं जहा 'देवि ! तुह समत्थकुरुजणवयणरिंदतारामयंको पुत्तो भविस्सइ' ।
सा वि 'एवंहोउ'ति समाणंदिय दइयवयणाणंतरसंपज्जंतसयलसमीहियमणोरहा नियसमये पसूया दारयं ।
तं च पसरंतनियतणुकं तिकंडप्पपयासियजम्मभवणाभोयं दइण हरिसवसुप्पण्णसंभम-
खलंततुरिययरगइपयारुडंतसासावूरियहियययाए सुदंसणाभिहाणाए दासचेडीए वद्धाविओ राया । तओ
तव्वयणप्पण्णाणंदभरनिब्भरपरवसीकयमाणसस्स मउडवज्जंगलगगाभरणाइतुडिदाणपरि-
तोसियदासचेडीसमणंतरसमाइट्टपुत्तजम्मब्भुदयदसदेवसियवद्धावणयमहूसवरसपसरसुहमणुहवंतस्स
नरवइणो समागओ नामकरणवासरो । कयं च से नामं सुमिणयाणुसारेण कुरुचंदो ति । पवइडमाणो
य गहियकलाकलावो जाओ जोव्वणत्थो । कयकलत्तसंगहो य पव्वज्जागहणाभिमुह-
रायसमारोवियरज्जभारो जाओ पयंडसासणो नरवई ।

इओ य मया सुधण-धण्या समुप्पण्णा जहासंखं वसंतउर-कत्तियपुरेसु वसंतदेव-
कामपालाहिहाणा पहाणसिट्ठिपुत्ता । कयकलागहणा य जाया जोव्वणत्था ।

एत्थंतरम्मि य मरिऊण धणवइ-धणीसरा जाया संखपुर-जयंतीनयरेसु मइरा-केसरा-
हिहाणाओ निजियरइरूवलावण्णाओ इब्भकुलबालियाओ समारूढाओ जोव्वणं ।

अण्णया य करभ-वसभाइवाहणसणाहबहुसत्थसमण्णिओ गओ वसंतदेवो वणिज्जेणं जयंतिं ।
समाढत्तो ववहरिउं ।

एत्थंतरम्मि य लंकावासो व्व वियसंतपलासो, जिणमुणिमणाभिप्पाओ व्व वियंभमाणासोओ,

१. ला० 'वा य प' ॥ २. ला० 'पक्खालिय' ॥ ३. सं० वा० सु० 'इपराए' ॥ ४. ला० 'करपया' ॥
५. ला० 'वससमुप्प' ॥ ६. ला० 'णाणंतरसमुप्पण्णाणंद' ॥ ७. सं० वा० सु० 'दाणा परि' ॥ ८. सं० वा० सु०
पइंड' ॥ ९. ला० 'णाहे(हो)बहु' ॥

कामिणीभालवट्टो व्व रेहंततिलओ, वयणवियलपुरिसो व्व वियसंतकुरवओ, पुरंदरो व्व वियसंतबहुअंबओ, सुण्णमंदिरोवरिमतलविभागो व्व पसरंतसंताणओ समागओ वसंतमासो । जो य नच्चइ व्व पवणवसुव्वेल्लमाणकोमललयाबाहुदंडेहिं, गायइ व्व नाणाविहविहंगमकलकलविरावेहिं, तज्जइ व्व विलसमाणवरचूएक्ककलियातज्जणीहिं, हक्कारइ व्व रत्तासोयकिसलयदलललियतरल-करविलसिएहिं, पणमइ व्व मलयमारुयंदोलियनमंतसिहरमहातरुवरुत्तमंगेहिं, हसइ व्व नववियसियकुसुमनियरुद्धहासेहिं, रुयइ व्व तुडियबिंदबंधणनिवडमाणसिंदुवारसुमणोणयणसलिलेहिं, पढइ व्व सुयसारियाफुडक्खरुल्लावजंपिएहिं ति ।

इय नच्चइ गायइ तज्जई य हक्कारई पणमई य । विहसइ रोयइ पढइ य गहगहिओ नं वसंतरिऊ ॥९॥
निग्गच्छंति य बहुविहविलासरसनिब्भराओ सव्वत्थ । तरुणाण चच्चरीओ पए पए नच्चमाणीओ ॥१०॥
सविसेसुज्जलनेवत्थरयणसिंगारियंगसोहाइं । तरुण-तरुणीण जुयलाइं जत्थ दोलासु कीलंति ॥११॥
कीलंति य तरुणनरा तरुणीयणसंजुया मउम्मत्ता । नाणाविहतरुवरसंकुलेसु रम्मेसु य वणेसु ॥१२॥
आवाणयबंधेहि य पियंति मज्जाइं पाणया लोया । गुरुमयभरेण निवडंति ते य धरणीए गयचेट्ठा ॥१३॥
अइनिब्भरपाणेणं वमंति अण्णे पसारियप्पाया । अण्णे अडुवियडुं भमंति कज्जं विणा वि तहिं ॥१४॥
अण्णे उ सगोत्तुक्कित्तणेण हिययम्मि नेय मायंति । दिंति अणेगविहाइं दाणाइं तत्थ परितुट्ठा ॥१५॥
अण्णे उ नियपियालिंणणाइं कुव्वंति लोगपच्चक्खं । अण्णे वयंति गुज्झाइं तह य गायंति विविहाइं । १६॥
इय असमंजसचेट्ठाओ कित्तियाओ वसंतमासम्मि । पारिज्जंति कहेउं मयणुम्मत्ताण तरुणाण ? ॥१७॥

तत्थ य अट्ठमीचंदमहे गओ वसंतदेवो रइनंदणं नाम उज्जाणं । द्दिंतां तत्थ सहियणपरिवुडा कीलारसमणुहवंती केसरा, चिंतितं च पवत्तो, अवि य—

‘किं एसा वणदेवी ? कयविग्गहसंगहा रई अहवा ? ।

किं वा वि हु सुरविलया?, उयाहु पायालकण्ण? ति ॥१८॥

अहवा वि हु किं लच्छी ?, किं वा वि हु रोहिणी सयं चेव ।

किंवा गोरी विज्जाहरि व्व ? किं माणुसी का वि ॥१९॥

अहवा वि पयावइणा इमीइ रूवं विणिम्मियं, जेण । करफंसाऽऽलिद्धाणं न होइ एयारिसी सोहा’ ॥२०॥

इय चिंतंतो एसो एयाए दिट्ठिगोयरं पत्तो । पुव्वभवनेहेण य मिलियाओ ताण दिट्ठीओ ॥२१॥

१. ला० वियंभंत कुं ॥ २. सं० वा० सु० दर व्व ॥ ३. सं० वा० सु० मालयमारुइंदो ॥ ४. सं० वा० सु० ‘रुत्तिम’ ॥ ५. ला० ‘रुद्धहा’ ॥ ६. सं० वा० सु० सुइसा ॥ ७. सं० वा० सु० वइंति ॥ ८. ला० ‘त्थ अट्ठ’ ॥ ९. सं० वा० सु० ‘मीवंदणमहे’ ॥ १०. ला० ‘ट्टा य तत्थ’ ॥ ११. सं० वा० सु० किं चेसा ॥ १२. ला० ‘गया र’ ॥

तओ 'का एस ?' ति पुच्छिओ वसंतदेवेण जयंतीवत्थव्वगो समुप्पण्णमित्तभावो पियंकरो नाम इब्भपुत्तो । तेण भणियं 'इहेव पंचनंदिसेट्ठिधूया जयंतदेवभणिणी केसरा नाम कण्णग' ति । तओ कओ णेण जयंतदेवेण सह संबंधो । भुंजाविओ एसो नियगेहे, तेण वि वसंतदेवो ति । तओ घरं गएण दिट्ठा कुसुमाउहऽच्चणं कुणमाणी केसरा । तीए वि जयंतदेवहत्थाओ कुसुममालं गिण्हमाणो वसंतदेवो । अणुकूलसउणसंपाएण हरिसियाइं चित्ते । लक्खिओ एसो तीए भावो पासपरिवत्तमाणीए पियंकराहिहाणाए धाविधूयाए । भणिया य एस 'सामिणि ! तुज्झ वि एयस्स महानुभावस्स किंचि उवयारो काउं जुज्झइ' । तओ वियसंतवयणकमलाए भणियं तीए 'हला ! तुमं चेव एत्थ अत्थे जहाजुत्तं करेहि' । तओ भवणोववणसंठियस्स समप्पियाणि तीए पियंगुमंजरीसणाहाणि सरसकक्कोलयाणि, भणियं च 'पेसिया एस अइप्पिया सामिणीए केसराए पियंगुमंजरी, एयाइं च अहिणवुप्पणाणि इट्ठविसिट्ठदेयाणि सहत्थारोविय-कक्कोलयतरुफलाणि' । तओ सहरिसं घेत्तूणं नाममुद्दारयणं दाऊण जंपियमेण जहा 'इट्ठाणुरूवं चेट्ठियव्वं' ति । 'एवं' ति सहरिसं पडिवज्जिऊण पडिगया एस । साहियमेयं केसराए । तुट्ठा एस हियएण । पसुत्ताए रयणीए दिट्ठो चरिमजामे सुमिणगो जहा 'परिणीया किलाऽहं वसंतदेवेण' । तेण वि ईइसो चेव । परितुट्ठाए केसराए साहिओ पियंकराए । एत्थंतरम्मि य केणावि सह नियकहासंबद्धं जंपियं वासभवणे पुरोहिण जहा 'एवं चेव एवं(यं) भविस्सइ' । तओ भणियं पियंकरियाए 'सामिणि ! निच्छएण तुह वसंतदेवो चेव भत्ता भविस्सइ । बद्धो सउणगंठी केसराए । साहियमिणं वसंतदेवस्स पियंकरियाए । 'संवाई सुविणगो' ति परितुट्ठो एसो, पूइया पियंकरिया । भणियं च णाए 'सउणगंठिसंबंधेण दिण्णो तुज्झ अप्पा सामिणीए, ता करेहि वीवाहसामणिं ।' वसंतदेवेण भणियं 'कया चेव पयावइणा' ।

एवं च पइदिणं परोप्परपउत्तिपेसणेण जाव कइवि दियहा वच्चंति ताव नियभवणसंठिएण निसुओ पंचनंदिगेहे मंगलतूरसद्धो । तओ 'किमेयं ?' ति सवियक्केण तप्पउत्तिवियाणणत्थं पेसिया कम्मगरी । नाऊण य समागयाए साहियं तीए जहा 'दिण्णा कण्णउज्जवत्थव्वगसुदत्त-सेट्ठिसुयवरदत्तस्स पंचनंदिणा केसरा, तन्निमित्तं च एयं वद्धावणयं, अवि य-

वज्जंति गहिरतूराइं तह य वरमंगलाइं गिज्जंति । अक्खयवत्तसणाहो पविसइ पुरबालियासत्थो ॥२२॥

नीसरइ पुण वि कुंकुमदिण्णमुहालेवओ सतंबोलो' । तं सोऊणं एसो मुच्छाविहलंगलो पडिओ ॥२३॥

एत्थंतरम्मि य समागया पियंकरिया । वाउदाणाइणा सत्थीकाऊण भणिओ सो तीए जहा 'पेसिया हं सामिणीए केसराए, संदिट्ठं च 'न तए एत्थ अत्थे खिज्जियव्वं जओ नाऽहं

१. सं० वा० सु० एत्थं जहा ॥ २. ला० 'ण मुहा' ॥ ३. ला० 'ए य रय' ॥ ४. ला० ए य केस' ॥ ५. ला० 'व भवि' ॥ ६. ला० सुमिण' ॥ ७. ला० संठवणेण ॥ ८. ला० 'व्वसुनंदसेट्ठि ॥

पुव्वाणुरायविसरिसं चिद्धामि, अणभिन्नया मज्झ चित्तस्स गुरुणो, न य तुमं वज्जिय अण्णो मज्झ भत्ता, जइ य एयमण्णहा भवइ तओ अवस्सं मए मरियव्वं' ति, ता कालोचियमणुचिद्धियव्वं' ति । तं च सोऊण हरिसियचित्तेण 'अम्हाणं पि एसा चेव गइ' ति जंपिऊण विसज्जिया पियंकरिया । संगमोवायपराणं च वोलीणो कौवि कालो ।

अण्णया य समागया जण्णयत्ता । तओ 'सुए वीवाहो भविस्सइ' ति सोऊण दूमियचित्तो निगओ नयराओ वसंतदेवो । पत्तो काण्णंतंरं । तत्थ चिंतिउमाढत्तो, अवि य—

‘अन्यथैव विचिन्त्यन्ते पुरुषेण मनोरथाः । दैवादाहितसद्भावाः, कार्याणां गतयोऽन्यथा ॥२४॥

किंच—

‘अन्नह परिचिंतिज्जइ सहरिसकंडुज्जएण हियएण । परिणमइ अन्नह च्विय कज्जारंभो विहिवसेण ॥२५॥ ता कह णु परिणयमिणं ? पुव्वक्कियकम्मजणियदोसेण । एवं जायम्मि जओ नियमेण विवज्जए दइया ॥२६॥ ता जाव तीयऽणिट्ठं वत्तं न सुणेमि ताव नियपाणे । उब्बंधिऊण देहं चएमि कंकेल्लिसालम्मि’ ॥२७॥ इय चिंतिऊण तेणं असोगरूखं समारुहेऊण । संजमिय पासगं तो ठविया नियकंधरा तत्थ ॥२८॥ मुक्को झड ति अप्पा दिसामुहेहिं ततो परिब्भमियं । रूद्धो य सरणिमगो निमीलियं लोयणजुएण ॥२९॥ एत्थंतरम्मि ‘मा साहसं’ ति भणिऊण कामपालेण । तत्थागएण पुव्वं छिण्णो से पासगो जत्ति ॥३०॥ वायार्इदाणेण य सत्थं काऊण तो इमं भणिओ । ‘नियआगिईविरूद्धं भद्द ! किमेयं तए विहियं ?’ ॥३१॥

तओ सदुक्खं भणियं वसंतदेवेण ‘भद्द ! अलमेयाए गरुयदुहजलणजालावलीकवलियाए मह आगिईए’ । कामपालेण भणियं ‘भद्द ! जइ एंव तहा वि साहेह ताव नियदुक्खं जेण विण्णायतस्सरूवो तन्निगहे उवायं चिंतेमि । तओ ‘अहो ! एयस्स परोवयारित्तणं’ ति चिंतिऊण साहियं सव्वं वसंतदेवेण । कामपालेण भणियं ‘भद्द ! अत्थि एत्थ उवाओ, संपज्जए य तीए सह पइदिणं तुह दंसणं, ता धण्णो तुमं, मम पुणो अपुण्णस्स न उवाओ, न य दंसणं, तहा वि न पाणे परिच्चयामि, जओ जीवंतो नरो कयाइ भद्दाइ पावइ विहिवसेण, यत उक्तम्—

देशादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशोऽप्यन्तात् । आनीय झगिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः’ ॥

वसंतदेवेण भणियं ‘केरिसं कहं वा तुह पुण दुक्खं जायं ?’ ति । कामपालेण भणियं—

“अहं खु कत्तियपुरवत्थव्वगो इब्भपुत्तो जोव्वणुम्मायवसेण निगओ देसियालियाए । पत्तो

१. सं० वा० सु० ति, कालो ॥ २. ला० कोइ का ॥ ३. सं० वा० सु० अपि च ॥ ४. सं० वा० सु० एवं ता साहे ॥ ५. सं० वा० सु० ‘मि । अहो ॥ ६. सं० वा० सु० ‘तिय सा’ ॥ ७. ला० वा पुण तुह दु’ ॥

य संखउरं नाम नयरं । तत्थ य तथा संखपालस्स जक्खस्स जत्ता । तप्पिच्छणत्थं च निगयं सबालवुड्ढं नयरं । अहं पि गओ तत्थेव । जाव पवत्ते निब्भरे कीलारसे दिट्ठा मए सहयारवीहियामज्झगया नियसहीयणपरिवुडा एगा कण्णगा । जाओ तं पइ मे निब्भरोऽणुरागो । सा वि मं दट्ठूण निब्भराणुरायपरवसा नवमेहदंसणे मऊरी व उक्कंठिया, पेसिओ य तीए मह नियसहीहत्थे तंबोलो, जाव न किंचि जंपामि ताव वियट्ठो रायहत्थी, कयमसमंजसं तेण, जाव समागओ सहयारवीहियं, पलाणो कण्णगापरियणो, न सक्किया पलाइउं सा । तओ जाव सो तं गिण्हइ ताव पहओ मए पिट्ठओ लउडएण वलिओ मं पइ तं मोत्तूण । वंचिऊण य तं मए गहिया कण्णगा, नीया निरुवद्दे ठाणे मुक्का अमुंचमाणी हियएण । समागओ से परियणो । बहुमणिओ अहं तेण । एत्थंतरम्मि वरिसिउं पवत्तं नागवरिसं । पलाणो दिसोदिसं सब्वलोगो । तओ परं न नाया मए सा कत्थइ गय ति । अलद्धतप्पउत्ती य हिंडिऊण कईवि दियहे नयरं तदुम्माहेणेण पत्तो इहइ” ति ।

तं च सोऊण भणिओ वसंतदेवेण ‘मित्त ! जइ एवं ता साहेसु एत्थुवायं’ । तेण जंपियं ‘सुए सा परिणिज्जिही, तओ कायव्वा अज्ज रयणीए तीए रइसणाहस्स मयरद्धयस्स पूया, तं च कप्पो ति एगागिणी चेव करेइ, ता अणागयमेव पविसामो नगरमयणस्स मंदिरं, तदणुमएण य घेत्तूणं तव्वेसं गमिस्सामि अहं तीए गेहं, चिरपडिगएसु य अम्हेसु तुमं तं घेत्तूण पलाइज्जासु’ ति । तं च सोऊण ‘सोववत्तिगं’ति हरिसिएण भणियं वसंतदेवेण ‘मित्त ! सोववत्तिगमेयं परमेवं कज्जमाणे महंतो तुज्झाणत्थो’ । एत्थंतरम्मि कुओ वि तत्थागयाए सुभदिसाविभागट्टियाए छिक्कियं वुड्ढमाहणीए । कामपालेण भणियं ‘न मज्झ एत्थाणत्थो, अवि य तुह कज्जसंपायणेण महंतो अब्भुदओ’ । एत्थंतरम्मि केणावि सह जंपमाणेण नियकहालावसंबद्धं जंपियं वुड्ढमाहणेण ‘को एत्थ संदेहो ?’ । ‘एवमेयं’ति गहियसउणभावत्थेण जंपियं कामपालेण ‘एवं चेव कज्जमाणे सव्वं सोहणं भविस्सइ’ ।

तओ उट्ठिऊण पविट्ठा नयरं । कया पाणवित्ती । काऊणं य परियणनिओयणाइयं तक्कालोचियं करणिज्जं संज्ञाकाले पविट्ठा नयरमयणदेवउलं, ठिया पडिमापिट्ठओ । थेववेलाए य निसुओ तूरसद्दो । ‘एसा सा आगच्छइ’ति तुट्ठा चित्तेण, जाव समागया सयणवग्गपरिवुडा केसरा । ओइण्णा जंपाणाओ । घेत्तूण पियंकरियाहत्थाओ विविहपूओवगरणपडिपुणं पत्तिं पविट्ठा अब्भितरे । ‘कप्पो’ ति ढक्कियं दुवारं । मोत्तूण एगत्थ पत्तिं गया मयणसमीवे भणिउं च पवत्ता, अवि य—

‘भो भयवं रइवल्लभ ! पच्चक्ख ! समत्थसत्तचित्तस्स । न हु जुज्जइ मह एंव निओयणं नाह ! दीणाए भत्तीए विविहपूयाइ पूइओ एतियं मए कालं । किर काहिसि मणरुइयं जाव तए एरिसं विहियं ।।

किं न वियाणसि सुगहियनामं मोत्तुं वसंतदेवं मे । न रमइ अन्नत्थ मणं अहवा किमिणा पलत्तेण ? ।।

जम्मंतरे वि सो च्विय मह भत्ता दिज्ज' जंपिउं एवं । तत्तोरणेगदेसे निबद्धओ पासओ तीए ॥३६॥
नसिउं सिरोहरं तत्थ अप्पयं जाव सा पवाहेइ । ताव सहस ति धरिया वसंतदेवेण निगंतुं ॥

सा वि तं दद्वण 'कहं सो चेव एसो समागओ ?' ति जाव ससज्जसा चिंतेइ ताव भणिया वसंतदेवेण 'सुंदरि ! अलं चिंताए सो चेवाहं तुज्ज हिययदइओ तुहहरणनिमित्तं पुव्वमेव समित्तो एत्थ पविट्ठो, ता समप्पेहि एयस्स मम मित्तस्स नियवेसं, गिण्हाहि य तुममेयस्स संतियं जेण वच्चइ एसो तुह कुलघरं' ति । तओ सुंदरमेयं ति हरिसियाए समप्पिओ तस्स नियवेसो । कामपालो वि पूजिऊण कामदेवं काऊण पलंबमंगुट्ठिं निगओ, निगच्छंतस्स य गहिया पियंकरियाए पत्ती । समारूढो जंपाणे । समुक्खित्तं बाहगेहिं । तओ वज्जंतेहिं मंगलतूरेहिं गओ पंचनंदिगहे । नीओ पियंकरियाए माइहरयं । निवेसिऊण भणियं 'पियस्सहि ! एवं चेव इड्डविसिड्डपियसमागममंतं परिजवंती चिट्ठसु' । ति भणिऊण पओयणंतरेण निगया पियंकरिया ।

एत्थंतरम्मि य संखउरनिवासिनिमंतियागयसयणजणेण सह समागया केसराए माउलदुहिया मइरा नाम कण्णया । सा य केसरादंसणत्थं पविट्ठा माइहरए । निविट्ठा कामपालसमीवे, भणियं च णाए, अवि य—

‘मा कुणसु भगिणि ! खेयं, सकम्मवसया जिया जओ सव्वे ।

पुव्वकयकम्मदोसा दुहाइं पावेंति संसारे ॥३८॥

जं जेण पावियव्वं सुहमसुहं वा इमम्मि संसारे । पुव्वकयकम्मवसओ तं सो पावेइ नियमेण ॥३९॥
सविवेयनिव्विवेयाण अंतरं एत्तियं तु सविवेया । भाविंति भवसरूवं इयरे असमंजसपलावी ॥४०॥
संखउरे चेव इमो वसंतदेवाणुरायवुत्तंतो । कारणगयाए कहिओ तुज्ज सहीए मह असेसो ॥४१॥

ता उज्झिऊण सोयं गुरुजणअणुवत्तणं कुणसु भगिणि ! ।

विहिणा निडाललिहियं, जमेइ सम्मं तयं सहसु ॥४२॥

मज्झ पुण दारुणतरो वुत्तंतो भगिणि ! तुह सयासाओ । गुरुजणदुक्खभएणं तह वि हु धारेमि हं पाणे ॥४३॥
जम्हा हु संखपालस्स भयवओ पुरजणेण जत्ताए । पारद्धाए अहं पि हु विणिगयस्सहियणसमेया ॥४४॥
सहयारवीहिमज्झे उज्जाणे जाव विविहकीलाहिं । कीलामि ताव दिट्ठो कोइ जुवा नाऽइदूरम्मि ॥४५॥
मयणो व्व विग्गहधरो तं पइ जाओ दढोऽणुरागो मे । सो वि अणुरायवसओ पुणो पुणो मं पलोएइ ॥४६॥

निययसहीहत्थम्मि य तंबोलो तस्स तो मए पहिओ ।

तेण वि गहिओ, न हु ताण जाव वयणक्कमो होइ ॥४७॥

ता उम्मिड्डीहूओ मत्तकरी तेण अद्धगहिया हं । जा ताव तेण हत्थी पहओ लउडेण पट्ठीए ॥४८॥

मं मोत्तुं तयभिमुहो चलिओ, तेणावि वंचिउं हत्थिं । घेतूण अहं नीया करिभयपरिवज्जिए ठाणे ॥४९॥

मुक्का य तत्थ तेणं अमुंचमाणी वि हिययमज्झम्मि ।

मिलिओ य मज्झ सजणो, तेण वि अहिणंदिओ एसो ॥५०॥

एत्थंतरम्मि मेहो भुयगेहिं वरिसिउं समाढत्तो । तस्स भएण पलाणो दिसोदिसं सब्वपुरल्लोगो ॥५१॥

तप्पभिइं तु न नाओ, कहिं गओ सो महं हिययहारी ? ।

गविसाविओ य नयरे कइवि दिणे नेय उवलद्धो ॥ ५२ ॥

ता भगिणि ! मह अहन्नाए दंसणं पि दूरीकयं विहिणा, जओ भणियं—

आसासिज्जइ चक्को जलगयपडिबिंबदंसणसुहेण । तं पि हरंति तरंगा, पिच्छह णिउणत्तणं विहिणो ॥५३॥

तमायण्णिऊण उग्घाडियं वयणं कामपालेण । तं च दड्डूणं 'कहं सो चेव एसो ?' ति ससज्झसलज्जावसपरवसाए न किंचि जंपियमिमाए । तओ तेण भणियं 'पिए ! न एस कालो लज्जाए, ता मोत्तूण लज्जं निगमणोवायं किंचि चिंतेहि, जेण लहुं पणस्सामो, केसरा पुण तुमं व इमिणा पओगेण मिलिया नियदइयस्स' । तओ तीए हरिसियाए जंपियं 'जइ एवं तो सरीरचिंताववएसेण असोगवणियादुवारेण निगच्छामो' । तओ 'साहु सुंदरि ! सोहणो उवाओ' ति भणिऊण उट्ठिओ कामपालो । निगंतूण य पलायाणि । मिलियाणि गयउरे पुव्वमेव केसरं गहाय तत्थ समागयस्स वसंतदेवस्स । चिडंति य सुहेण तत्थ ।

इओ य राइणो कुरुचंदस्स पइदिणं समागच्छंति पंच पंच पहाणकोसल्लियाणि । न य सो ताणि सयमुवभुंजइ, न य अण्णस्स कस्सइ देइ, भणइ य 'एयाणि मए इड्डविसिड्डस्स कस्सइ दायव्वाणि' । एत्थंतरम्मि य वद्धाविओ राया उज्जाणपालेण, अवि य—

'वद्धाविज्जसि नरपहु ! वरकेवलमुणियवत्थुपरमत्थो । इत्थेव तिजगपणओ समागओ संतिनाहजिणो ॥

रइयं च समोसरणं आजोयणमित्तभूभिभागम्मि । अवहरियं तियसेहिं तण-कंटय-रेणुमाईयं ॥५५॥

गंधोदयं पवुट्ठं, रइयं सालत्तयं समुत्तुंगं । मणि-कंचण-रययमयं चउगोउरदारपविभत्तं ॥५६॥

रइयाइं तोरणाइं चउसु वि दारेसु रयणचित्ताइं । उत्तुंगधयवडाइं बहुरूवयसंधिकिण्णाइं ॥५७॥

चक्कज्झय-सीहज्झय-गरलज्झय-महझया तओ विहिया ।

चाउट्ठिसि वावीओ वणराईओ य विहियाओ ॥५८॥

१. ला० 'माणी य हि' ॥ २. सं० वा० सु० 'प्पमियं' ॥ ३. ला० तो ॥ ४. सं० वा० सु० 'ण सो चेवा' ॥ ५. ला० जंपियं ॥ ६. ला० पुण मं च ॥ ७. ला० 'याणि य गय' ॥ ८. ला० ताणि उववु ॥ ९. सं० वा० सु० 'रूयय' ॥

मज्झमि तस्स ठवियं वरासणं सीहपोयअक्कंतं । कंकेल्लिपायवो तदुवरिं ण रइओ सुसोहिल्लो ॥५९॥
जाणुस्सेहपमाणा उवरिमुहा निवडिया कुसुमवुट्ठी । छत्तत्तयमुदंडं उवरिं सीहासणस्स कयं ॥६०॥
चामरदंडविहत्था सक्कीसाणा ठिया उभयपासे । जलहरगंभीररवो वज्जइ सुरदुंदुही गयणे ॥६१॥
एवंविहम्मि रइए ओसरणे विसइ सिरिजिणो संती । पुव्वेण कणयकर्मलोवरिम्मि संठवियचलणयलो ६२
तिपयाहिणं विहेउं तित्थं नमिऊण जाव उवविट्ठो । ता चउसुं पि दिसासुं सुरेहिं पडिरूवया विहिया ॥६३॥
भामंडलं पि दिणयरकरनियरसमप्पभं तओ जायं । नर-तिरिय-मणुय-देवेहिं पूरियं तं खणद्धेण ॥६४॥
दट्ठूण तयं सामिय ! समागओ तुह पियं निवेएउं' । तव्वयणं सोऊणं अहियं तुट्ठो नरवरिंदो ॥६५॥
रोमंचकंचुपुलइयदेहो वद्धावयस्स दाऊण । पज्जत्तीए दाणं भत्तीए गओ जिणं नमिउं ॥६६॥
सव्वाए रिद्धीए वसंतदेवाइयाणि चउरो वि । वंदिता जिणनाहं उवविट्ठाइं महीवट्ठे ॥६७॥
तत्तो कहेइ धम्मं जोयणनीहारिणीए वाणीए । नियनियभासापरिणामिणीए भयवं जणहियट्ठा ॥६८॥

अवि य—

दाणं सीलं तव-भावणाओ धम्मो चउव्विहो भणिओ ।

कायव्वो सुहहेऊ भो भो भव्वा !, किमण्णेण ? ॥६९॥

दाणाओ होइ सण्णो, भोगुवभोगा तहिं विविहरूवा । दाणाओ मणुयत्ते पणयनिवं होइ वररज्जं ॥७०॥

रिद्धी अणणसरिसा, अण्णाइं वि जाइं चारुसोक्खाइं ।

आणा यं अप्पडिहया, परिवारो अणणसारिच्छो ॥७१॥

किं बहुणा भणिणं ? जं किंचि वि इत्थ जीवलोगम्मि । लब्भइ पहाणवत्थुं सव्वं दाणप्फलं तं तु ॥७२॥

एत्थंतरम्मि य कहंतरं नाऊण पुच्छियं राइणा 'भयवं ! किं मह पइदिणं पंच पंच
अव्वंगाणि उवणमंति, न य कस्सइ पइच्छामि ?' । तओ भयवया कहिओ सव्वो वि
पुव्वजम्मवइयरो, तां महाराय ! तेहिं सह ताणि उवओगं गच्छिस्संति, जओ ताण संतियं दव्वं,
ते य इमे वसंतदेव-कामपालमइरा-केसराहिहाणा । तं च सोऊण सव्वेसिं समुप्पण्णं जाईसरणं ।
तओ जंपियमणेहिं 'नाह ! एवमेयं, नायममहेहिं जाइस्सरणाओ, ता देहि अम्हाणं सावयधम्मं' ।
दिण्णो य भयवया । तओ भोत्तूण ताणि रायसंपण्णकोसल्लयाइयं दाणफलं, पज्जंते काऊण सामण्णं
गयाणि सुरलोमं ति ।

जं तेसिं वयणेणं कम्मयरुणं मुणिस्स वरदाणं । दिण्णं तस्स फलेणं एसो राया समुप्पण्णो ॥७३॥

१. ला० 'मलोयरम्मि' ॥ २. ला० तं वयणं ॥ ३. ला० 'णइनिवं' ॥ ४. ला० इ ॥ ५. ला० 'रोडणण्ण'
॥ ६. सं० वा० सु० 'वं मह' ॥ ७. ला० तो ॥ ८. ला० 'यरत्ते मु०' ॥

तेणं चेव फलेणं कमसो सिद्धिं पि पाविही एसो । ता दाणम्मि पयतो कायव्वो सव्वसत्तेहिं ॥७४॥

इति द्रोणकाख्यानकं समाप्तम् । ३२.

साम्प्रतं सङ्गमकाख्यानकं कथ्यते—

[३३. सङ्गमकाख्यानकम्]

अत्थित्थ जंबुदीवम्मि भारहद्धम्मि दक्खिणे । मज्झिमखंडमज्झम्मि देसो मगहनामओ ॥१॥
 अत्थि तेलोक्कविकखायं पुरं रायगिहं तहिं । अलयापुरिसंकासं सुस्तासं गुणपूरियं ॥२॥
 दप्पिट्टारिकरिंदाणं कुंभनिब्भेयपच्छलो । मयंदो सेणिओ राया तं पुरं परिपालए ॥३॥
 तस्सऽत्थि चेळ्ळणा नाम देवी सोहग्गव्विया । वण्णलावण्णसंपण्णा कलाकोसलसालिणी ॥४॥
 एतो य सालिगामम्मि धण्णा उच्छण्णवंसया । बालयं संगमं नाम पुत्तं घेतुं समागया ॥५॥
 पट्टणाओ, तओ बालो वच्छरूयाइं रक्खए । अण्णया ऊसवे कम्हिं सव्वगेहेसु पेच्छइ ॥६॥
 भुज्जंतं पायसं बालो, ततो मायं विमग्गइ । ‘पायसं देहि मे अंब !’ तीए नत्थि’त्ति जंपियं ॥७॥
 वारं वारं विमग्गंतं रौविरं तं नियच्छिउं । सरित्ता पुव्वयं रिद्धिं मण्णुणा सा वि रोवई ॥८॥
 पाडिवेसियनारीओ सोउं पुच्छंति कारणं । तीए सव्वम्मि अक्खाए वुत्तंते करुणापरा ॥९॥
 ताओ स्वीराइयं दिंति रंधिउं सा वि पायसं । थालं भरित्तु पुत्तस्स घय-खंडसमण्णियं ॥१०॥
 कज्जेण गेहमज्झम्मि पविट्ठा जणणी तओ । साहू एत्थंतरे तत्थ पविट्ठो मासपारणे ॥११॥
 भिक्खट्ठा तत्थ गेहम्मि, दिट्ठो संगमएण तो । समुब्भिज्जंतरोमंचकंचुओ चिंतए इमं ॥१२॥
 ‘सुलद्धं माणुसं मज्झ, जीवियं जम्ममेव य । जेण सव्वा वि संपण्णा, सामग्गी दुल्लहा इमा ॥१३॥
 पत्तं चित्तं च वित्तं च तिण्णि वी पुण्णजोगओ । पुण्णाइं मज्झ पुण्णाइं अज्ज’ एवं विचिंतिउं ॥१४॥
 पप्फुल्ललोयणो बालो उप्पाडित्ता समुट्ठिओ । तं खीरीपुण्णयं थालं, तओ गंतुं तयंतिए ॥१५॥
 ‘करेहाऽणुगहं नाह !’ जंपई भत्तिनिब्भरो । ‘सुज्झइ’ त्ति वियाणेउं साहुणा पत्तमुट्ठियं ॥१६॥
 सव्वं वड्ढंतभावेण तं खित्तं तेण पत्तगे । पुण्णंतरायभीएणं साहुणा न निवारियं ॥१७॥
 भत्तीए वंदिउं साहुं नियट्ठणे निसण्णओ । विणिग्गयम्मि साहुम्मि, धण्णा गेहाओ निग्गया ॥१८॥
 ‘भुत्त’ त्ति मण्णमाणीए पुणो तं तीए पूरियं । रंकत्तणेण तेणावि भुत्तं कंठप्पमाणओ ॥१९॥
 अजीरंतेण रत्तीए मओ साहुं सरंतओ । पुण्णेणं तस्स दाणस्स पुरे रायगिहे तओ ॥२०॥

१. ला० नमो सुयदेवयाए भगवईए । साम्प्रतं ॥ २. ला० ‘याउरि’ ॥ ३. सं० वा० सु० संपुन्ना ॥
 ४. ला० ‘सल्लसा’ ॥ ५. ला० ‘रुवाणि’ ॥ ६. ला० रोइरं ॥ ७. ला० ‘मुट्ठिउं’ ॥ ८. ला० ‘त्तमोडियं’ ॥ ९.
 पुण्यान्तरायकर्मभीतेन इत्यर्थः ॥

गोभदइब्भज्जाए भद्दागब्भे समागओ । सालीछितं सुनिप्पणं सुमिणे सा नियच्छित्तं ॥२१॥
 विबुद्धा नियदइयस्स सुमुही सा पसाहए । तेणावि पुत्तजम्मेणं वरेणं साऽहिनंदिया ॥२२॥
 तं सोउं हट्टतुट्ठा सा तओ एवं पयंपई । 'देवाईणं पसाएणं होउ एवमिमं पहू !' ॥२३॥
 एवं च साऽहिनंदित्ता सुहेणं गब्भमुव्वहे । पुण्णेषु दोसु मासेसु उप्पण्णो तीए दोहलो ॥२४॥
 जहा दाणाइसद्धम्मकम्माइं जइ करेमहं । पूरिए सेट्ठिणा तम्मि सुहं गब्भो पवट्ठिओ ॥२५॥
 पत्ते पसूइकालम्मि पसूया सा सुहे दिणे । पुत्तं सुरकुमारं व लोयणाणंददायगं ॥२६॥
 तओ वद्धाविओ सेट्ठी चेडियाहिं दुयं दुयं । दाऊण ताण सो दाणं सहत्थेणं च मत्थयं ॥२७॥
 धा(धो?)विऊणं पुणो तुट्ठो पवत्तेइ महूसवं । वज्जिराउज्जसंसद्भरिज्जंतनहंगणं ॥२८॥
 तुट्ठंततारहारोहमुत्ताहलकयच्चणं । सिंगारफारनारीहिं समाढत्तं सुनच्चणं ॥२९॥
 दिज्जंतदाणसंघायं छत्तकोलाहलाउलं । अच्छेरयसयाइणं विम्हावियमहायणं ॥३०॥
 एमाइबहुरिद्धीए वत्ते तम्मि महूसवे । संपत्ते बारसाहम्मि सम्माणिता नियल्लए ॥३१॥
 सुमिणस्साऽणुसारेण सेट्ठी बंधुसमणिओ । ठवेइ सालिभद्दो त्ति गुणं पुत्तस्स नामयं ॥३२॥
 एवं पवइढमाणो सो धाईपंचगलालिओ । किंचूणअट्टवरिसो, कला सव्वा उ गाहिओ ॥३३॥
 संपत्तो जोव्वणं तत्तो रूवेणं जियवम्महो । लावणवणसंपण्णो कामिणीयणवल्लहो ॥३४॥
 रमतो सह मित्तेहिं लीलाए जाव अच्छइ । ताव तत्थेव वत्थव्वा बत्तीसं वरसेट्ठिणो ॥३५॥
 रईसारिच्छरूयाओ घेतुं कण्णाओ आगया । बत्तीसं सव्वसाराओ इब्भगोभद्दमंदिरे ॥३६॥
 भणंति 'जइ विनेयाओ जोगाओ तुह सुयस्स उ । मण्णऊ तो वि एयाओ काउं अम्हाणऽणुगहं' ॥३७॥
 हट्टतुट्ठो तओ सेट्ठी पसत्थे तिहिवासरे । महाविच्छड्डुरिद्धीए पाणिगहणं करावए ॥३८॥
 उत्तमे भवणाभोए समारूढो तओ इमो । देवो दोगुंदुगो चेव भुंजए भोगवित्थरं ॥३९॥
 पुण्णाणुभावओ तस्स माया-वित्ताणि सव्वहिं । पवत्तयंति अक्खूणं एवं काले गलंतए ॥४०॥
 गोभद्दो गिण्हए दिक्खं सिरिवीरजिणंतिए । चिच्चा धणाइयं सव्वं तओ पालित्तु संजमं ॥४१॥
 भत्तं पच्चक्खित्तं काले दिव्वकंतिधरो सुरो । उप्पण्णो देवलोगम्मि उवओगं पउंजई ॥४२॥
 दट्ठूणं ओहिनाणेण नियपुत्तसिणेहओ । तप्पुण्णावज्जिओ तत्थ सुरो सिग्घं समागओ ॥४३॥
 वत्था-ऽलंकार-मल्लंआई सव्वं दिव्वं पणामई । सभारियस्स निच्चं पि दाणप्फलवसीकओ ॥४४॥
 जं च माणुस्सयं कज्जं भद्दा तं से पसाहई । निच्चित्तो सव्वठाणेसु एवं भोगे पभुंजई ॥४५॥
 अण्णया वणिगा केई घेतुं रयणकंबले । उवट्ठिया नरिंदस्स सेणियस्स सहंगणे ॥४६॥
 'महग्घाणि' त्ति काऊण राया जाव न गिण्हई । ताव तत्तो विणिगंतुं वणिणो भद्दागिहं गया ॥४७॥

सा वि ते कंबले सव्वे मोल्लं दाऊण गिण्हई । वणिणो वि नियावासे गया, एत्थंतरम्मि य ॥४८॥
 विण्णत्तो सेणिओ राया चेल्लणाए जहा 'मम । अट्टाए कंबलं एक्कं महामोल्लं पि घेप्पउ' ॥४९॥
 वारंवारं भणंतीए सद्धिया वणिणो तओ । भणिया य 'कंबलं एक्कं अम्हं मोल्लेण देह भो !' ॥५०॥
 वुत्तं तेहिं जहा 'देव ! दिण्णा सव्वे वि कंबला । भद्दाए इब्भज्जाए' तओ रण्णा तदंतिए ॥५१॥
 गोरव्वो पेसिओ एक्को भद्दो नियमहंतओ । जहा 'आणेहि मोल्लेण, भद्दापासाउ कंबलं' ॥५२॥
 तेणावि जंपिया गंतुं 'भद्दे ! राया विमग्गई । जहाकिइयमोल्लेण एक्कं रयणकंबलं' ॥५३॥
 भद्दा पयंपई 'भद्द ! ते मे फालितु कंबले । सालिभद्दस्स भज्जाणं पायलूहणगा कया ॥५४॥
 ता विण्णवेहि रायाणं जइ जुण्णेहिं सिज्झई । कज्जं तौ लेह सेच्छाए, जओ अण्णं न विज्झई' ॥५५॥
 तं तेण राइणो सव्वं गंतुं जाव निवेइयं । चेल्लणा ता पयंपेई 'देव ! पेच्छसु अंतरं' ॥५६॥
 अम्हाणं वणियाणं च' ईई वुत्तो नराहिवो । कोऊहलेण अप्फुण्णो एवं मंतिं पभासई ॥५७॥
 'भणेहि भद्द ! तो भद्दे जहा-अम्हाण कोउगं । ता पेसेहि इहं भद्दे ! सालिभद्दं खणंतरं' ॥५८॥
 तेणावि जाव सा वुत्ता ताव भद्दा ससंभमा । उट्ठिता राइणो पासे सयमेव समागया ॥५९॥
 विण्णवेई जहा 'देव ! न मे पुत्तो कयाइ वि । पेच्छए चंद-सूरा ता चिट्ठउ बहिनिगमं ॥६०॥
 ता घरागमणेणऽम्ह पसाओ देव ! कीरउ' । कोऊहलेण रण्णा वि तं तहेवाऽणुमणियं ॥६१॥
 'पसाओ' ति भणंतीए पुणो भद्दाए जंपियं । 'खणमेक्कं विमालेहि जावाऽऽगच्छामऽहं पुणो' ॥६२॥
 गेहं गंतूण कारेइ हट्ठसोहं निरंतरं । सगेहदारदेसाओ सीहद्वारं निवस्स जा ॥६३॥
 नाणापेच्छणयाइण्णं तं काऊणं तओ निवं । विण्णवेइ 'गिहं गंतुं पसाओ देव ! कीरउ' ॥६४॥
 तत्तो राया तहिं सिग्घं सव्वोरोहसमणिओ । पेच्छंतो पेच्छणे दिव्वे सालिभद्दगिहं गओ ॥६५॥

तं च के सरिसं ?

सुरत्तहेमभित्तिं, विचित्तचित्तचित्तिं । माणिककबद्धभूतलं, विणिंततेयमंडलं ॥६६॥
 सुभंगसालभंजियं, विपंचिवंससिंजियं । सुवण्णथंभसंगयं, पणच्चमाणरंगयं ॥६७॥
 ललंतमुत्तमालयं, रणंततारतालयं । फुरंतवारतोरणं, मणुस्ससोक्खकारणं ॥६८॥
 उत्तुंगसत्तभूमियं सम्मट्ठघट्टदूमियं । कीरंतवत्थसोहयं, वज्जंतमदलोहयं ॥६९॥
 एरिसं तं नियच्छंतो विहियाणेयमंगलो । पविट्ठो तत्थ सो राया विम्हउप्फुल्ललोयणो ॥७०॥
 कमसो जाव आरूढो चउत्थं भूमिगातलं । सव्वप्पहाणए तत्थ आसणम्मि निवेसिओ ॥७१॥
 वत्था-ऽलंकारमाईयं दाउं भद्दा तयंतओ । सालिभद्दसयासम्मि सत्तमं भूमिगं गया ॥७२॥

जंपई 'पुत्त ! तं दट्ठुं सेणिओ पुहईसरो । चउत्थं भूमिगं पत्तो तो आगच्छ खणंतरं' ॥७३॥
 जंपई सालिभद्दो वि 'अम्मो ! तं चेव जाणसि । अघं गिण्हाहि तो गंतुं किं करिस्सामहं तहिं ?' ॥७४॥
 भद्दा पयंपई 'पुत्त ! न तं होइ कियाणयं । किंतु नीसेसलोयाण तुम्हऽम्हाण य सो पहू' ॥७५॥
 तं सोउं तक्खणं चेव विरत्तो चिंतए इमं । धी धी ! संसारवासस्स जत्थऽऽण्णो मज्झ वी पहू ॥७६॥
 ता एवं दुक्खपउरेहिं भवभोगेहिं मे अलं । पव्वज्जामि जिणस्संते दिक्खं दुक्खविमोक्खणिं' ॥७७॥
 एवं संवेगपत्तो वि मायाए उवरोहओ । चंदो व्व तारयाजुत्तो उत्तिण्णो सो सभारिओ ॥७८॥
 सेणियस्संतियं पत्तो पणामं कुणई लहुं । नरिदेणाऽवि नेहेण निययंके निवेसिओ ॥७९॥
 अग्घाओ उत्तिमंगम्मि जाव तत्थ खणंतरं । चिट्ठई ताव अंसूणि मुयंतं नियपुत्तयं ॥८०॥
 दट्ठुं भद्दा पयंपेइ 'देव ! एयं विसज्जह । जओ माणुस्समल्लाङ्गंधो एयस्स बाहइ ॥८१॥
 दिव्वाणुलेवणं मल्लगंधाईयं पणामइ । निच्चं जणयदेवो से सभज्जस्स मणोहरं' ॥८२॥
 तत्तो विसज्जिओ एसो गओ सत्तमभूमिगं । रण्णा वि जंपिया भद्दा 'गच्छामो नियमंदिरे' ॥८३॥
 विण्णत्तो निवई तीए 'पसाओ देव ! कीरउ । अज्ज[अ]म्ह गिहे चेव भोयणेणं' तओ निवो ॥८४॥
 उवरोहगओ तीए पत्थणं पडिवज्जई । तओ भद्दाइ वक्केण दासचेडीओ तक्खणं ॥८५॥
 मयणिज्ज-बिंहणिज्जाइं दीवणिज्जाइं आणितं । लक्खपागाइतेल्लाइं पोत्तियं अप्पितं तओ ॥८६॥
 सुकुमालपाणिपाया दक्खा छेयंगमद्दया । अब्भंगयंति रायाणं परिवारसमणियं ॥८७॥
 रयणसोवाणपंतीसु जाव वावीसु मज्जए । राया ता देवजोगेणं कराओ पडियं जले ॥८८॥
 नाममुदं पलोएइ निवो संभंतलोयणो । तं दट्ठुं भणई भद्दा दासचेडी 'हला ! इमं ॥८९॥
 नीरमन्नत्थ वावीए संकामेहि खणंतरे । जंतप्पओगओ सव्वं' तीए झत्ति तहा कयं ॥९०॥
 नाणालंकारमज्झम्मि तमिंगालसरिच्छयं । पिच्छितं पुच्छई चेडी 'किमेयं ?' विम्हयाउलो ॥९१॥
 तीए वि जंपियं 'देव ! निच्चं पक्खिप्पई इमं । निम्मल्लं सालिभद्दस्स सकलत्तस्स एत्थ उ' ॥९२॥
 तं सोउं चिंतए राया 'पेच्छ पुणस्स अंतरं । अहं राया इमो भिच्चो भौगलच्छी पुणेरिसा ॥९३॥
 ता धण्णो सव्वहा एसो कयपुण्णो नरुत्तमो । सुलद्धं जीवियं जम्म माणुसत्तमिमस्स उ' ॥९४॥
 एवं च मज्जितं भुत्तो नाणारससमणियं । विसिट्ठं भोयणं, पच्छा कयकिच्चो गिहं गओ ॥९५॥
 सालिभद्दो वि संसारविरत्तो जाव चिट्ठइ । ताव कल्लाणमित्तेणं आगंतूणं निवेइयं ॥९६॥
 'वद्धाविज्जसि तं सामि ! जओ एत्थेव पट्टणे । समोसढो वरुज्जाणे बहुसीससमणिओ ॥९७॥
 धम्मघोसो ति नामेणं सूरी गुणगणालओ । चउनाणेहिं संपन्नो नरा-ऽमरनमंसिओ ॥९८॥

१. ला० ता ॥ २. ला० तं ॥ ३. ला० चिद्धि सं ॥ ४. ला० तो ॥ ५. ला० 'ज्जाई, दप्पणिज्जाणि आ' ॥
 ६. ला० 'ज्जई ॥ ७. ला० भोगिइढी पुण एरिसा ॥ ८. सं० वा० सु० तो ॥

तं सोउं सालिभदो वि रोमंचुच्चइयगतओ । सामगियं विहेऊणं वंदणत्थं विणिग्गओ ॥१९॥
 पत्तो य सूरिपासम्मि काउं पंचप्पयारयं । कमेणाऽभिगमं तत्तो वंदित्ता भत्तिनिब्भरो ॥१००॥
 सूरिणो सेससाहू य तओ सुद्धमहीतले । निसण्णो पंजलीहोउं भत्तीए पज्जुवासई ॥१०१॥
 सालिभदस्स तीसे य परिसाए जिणभासियं । धम्ममाइक्खई रम्मं मोक्खसोक्खेक्ककारणं ॥१०२॥
 जहा 'भो ! एत्थ संसारे सव्वे जीवा सकम्मओ । पावंति तिक्खदुक्खाई अणंताइं निरंतरं ॥१०३॥
 सारीर-माणसाइं ते जेहिं पीडिज्जए जणो' । एयम्मि अंतरे सूरि सालिभदेण पुच्छिओ ॥१०४॥
 'भयवं ! केण कम्मेण अन्नो सामी न विज्जई । तं सोउं जंपई सूरि 'सव्वदुक्खविमोक्खणी ॥१०५॥
 दिक्खं गिण्हंति जे जीवा तिलोगस्साऽवि ते पहू' । 'जइ एवं तो गिहे गुंतुं जाव पुच्छामि अंबयं ॥१०६॥
 ताव तुम्ह सयासम्मि गिण्हिस्सामि तयं लहुं' । सूरि पयंपई 'भद ! मा पमायं करिस्ससि' ॥१०७॥
 'इच्छं'ति भणिऊणेसो मंदिरं निययं गओ । पायग्गहं विहेऊण तओ भद्वं पयंपई ॥१०८॥
 'अम्मो ! अज्ज मए धम्मो सुओ सव्वण्णुभासिओ । धम्मघोसस्स पासम्मि' सुंदरं' सा पयंपई ॥१०९॥
 सालिभदो तओ आह 'जइ एवं तो करेमहं । अम्मो ! तुब्भेहऽणुण्णाओ तं धम्मं भवनासणं' ॥
 भद्दाए जंपियं 'वच्छ ! सो अच्चंतसुदुक्करो । जवा लोहमया चेव चावेयव्वा निरंतरं ॥१११॥
 तुमं च देवभोगेहिं वच्छ ! निच्चं पि लालिओ । ता कहं कट्टणुट्ठाणं, काउं सत्तो भविस्ससि ?' ॥११२॥
 जंपई सालिभदो वि 'एवमेव, न अन्नहा । किंतु कीवस्स एयं तु नो वीरस्स मणस्सिणो' ॥११३॥
 जंपई सा जई एवं अब्भासो ताव कीरऊ । माणुस्सगंधमल्लेसु भोगच्चाए य किंचि वि' ॥११४॥
 पडिवज्जित्ता तओ एसो मुंचई य दिणे दिणे । तूलिं भज्जं च एक्केक्कं, एत्तो तत्थेव पट्टणे ॥११५॥
 अत्थि इब्भो सुविक्खाओ धन्नो नाम धण्डुओ । उव्वूढा सालिभदस्स तेणं लहुसहोयरी ॥११६॥
 ण्हाविंती सा तयं धण्णं अंसुपायं पमुच्चई । भत्तुणा पुच्छिया 'भदे ! केणाऽऽणा तुह खंडिया ? ॥११७॥
 किं वा किंचि वि नो वत्थु संपज्जइ मणिच्छियं ?' । तीए वुत्तं 'न एक्कं पि एयाणं मम बाहए ॥११८॥
 पव्वज्जुवट्ठिओ किंतु नाह ! मज्झ सहोयरो । मुंचए जेण एक्केक्कं तूलिं तेणाऽधिई गम' ॥११९॥
 तेणोत्तं 'हीणसत्तो सो एवं जो उ पकुव्वई' । अण्णाहिं तस्स भज्जाहिं सहासाहिं पयंपियं ॥१२०॥
 'सुकरं जइ इमं नाह ! सयं तो किं न कीरई ?' । धण्णो पयंपई 'भदे ! वयणं तुम्ह संतियं ॥१२१॥
 उद्विक्खंतो ठिओ कालं, संपयं पुण पिच्छह । सव्वच्चायं विहिज्जंतं' तओ ताहिं पयंपियं ॥१२२॥
 'खेड्डयं कयमम्हेहिं, निच्छयं किं पयंपह ? । अणुरत्ताओ भत्ताओ अम्हे दव्वं च सामिय ! ॥१२३॥
 मा चयाहि अयंडम्मि' तओ धण्णो पभासई । 'धणं धणं कलत्तं च अणिच्चं सव्वमेव य ॥१२४॥

१. सं० वा० सु० तो ॥ २. ला० 'ज्जए ॥ ३. ला० वयं ॥ ४. ला० मंदिरे ॥ ५. ला० सो य अच्चंतदुक्करो ॥

जम्हा तम्हा गहिस्सामि पिए ! दिक्खं जिणंतिए' । तो ताओ निच्छयं नाउं भणं तैवं 'वयं' पि हि ॥१२५॥
 तुम्हेऽणुपव्वइस्सामो' 'सोहणं' सो वि जंपई । धम्मट्ठाणेषु सव्वेसु सव्वं दव्वं निओइं ॥१२६॥
 सहस्सवाहिणी सीयं दुरूढो सकलत्तओ । सयणेहणुगम्मंतो पत्तो वीरजिणंतिए ॥१२७॥
 सीयाओ उत्तरेऊणं कऊणं च पयाहिणं । वंदित्ता जंपई 'नाह ! भवुव्विगस्स मे सयं ॥१२८॥
 देह दिक्खं महाभाग ! सभज्जस्स पसायसो' । जिणो ऽणुमन्निए तत्तो दिसं पुव्वुत्तरं गओ ॥१२९॥
 वत्था-ऽलंकारमाईयं मोत्तुं लोयं करित्तु य । जावाऽऽगओ जिणस्संतो दिक्खिओ ता जिणेण सो ॥१३०॥
 इत्थंतरम्मि सोऊण सालिभद्दो तमब्भुयं । वुत्तंतं 'विजिओ मि' त्ति सव्वं मोत्तूण तक्खणं ॥१३१॥
 दाउं दव्वं सुठाणेषुं, सिबियं सो वि आरुहे । सेणिण्णाणुग(गं)मंतो पुराओ बहि निगओ ॥१३२॥
 छत्ताइछत्तए दट्ठं सीयं मुंचइ तक्खणं । पुव्वक्कमेण एसो वि लेइ दिक्खं महायसो ॥१३३॥
 'एत्थ संसारकंतारे भमंताण सरीरिणं । दुल्लहं माणुसत्ताई जिणधम्मसमणियं ॥१३४॥
 तहिं पि वयसामणी दुक्खं जीवेहिं लब्भई । तं लब्धुं सव्वदुक्खाणं दिण्णो होइ जलंजली ॥१३५॥
 केवलं अप्पमत्तेहिं कायव्वो तत्थ उज्जमो । जओ पमायजुत्ताणं सव्वा दिक्खा निरत्थया' ॥१३६॥
 एवं सासित्तु अज्जाओ चंदणज्जाइ अप्पिया । इयरे दो वि थेराणं सिक्खणत्थं समप्पिया ॥१३७॥
 जाया कालेण गीयत्था भावियप्पा बहुस्सुया । छट्ठाओ अट्ठमाओ य दसमाओ दुवालसा ॥१३८॥
 अट्ठमासाओ मासाओ दोमासिय-तिमासिया । चाउम्मासाइयाओ वा पारयंति कयाइ वि ॥१३९॥
 एवं तवेण संजाया किस्सा धवणिसंतया । अण्णया सामिणा सद्धिं रायगिहमुवागया ॥१४०॥
 सालत्तयाइयं तत्थ सव्वं देवेहिं निम्मियं । जिणस्स वंदणट्ठाए तओ लोगो विणिग्गओ ॥१४१॥
 संपत्ते भिक्खकालम्मि मासक्खमणपारणे । भिक्खट्ठा वच्चमाणेहिं वंदिओ भुवणप्पहू ॥१४२॥
 भणिओ य जिणिदेणं सालिभद्दमहामुणी । 'अज्ज मायाइ हत्थेणं पारणं ते भविस्सई' ॥१४३॥
 'इच्छं' ति भणिउं दो वि, पविट्ठा तम्मि पट्टणे । अडंता उच्च-नीएसु मज्झिमेसु कुलेसु य ॥१४४॥
 भद्दागेहम्मि संपत्ता संठिया य घरंगणे । तवसोसियदेहत्ता न नाया तत्थ केण वि ॥१४५॥
 वंदिस्सामो जिणं धण्णं सालिभद्दं तहेव य । इय वाउलत्तणाओ य न ते केणा वि लक्खिया ॥१४६॥
 खणमेक्कं चिट्ठिउं तत्थ निगया ते महामुणी । दिव्वजोएण लद्धीए पुराओ जा विणिग्गया ॥१४७॥
 सालिभद्दस्स ता माया जम्मंतरसमुब्भवा । धण्णा नामेण गामाओ महिहारीसमणिया ॥१४८॥
 धित्तुं दहिं समायाया विक्कयत्थं तहिं पुरे । पविसंती नियं पुत्तं सालिभद्दं नियच्छिउं ॥१४९॥
 रोमंचकंचुइज्जंतसमागच्छंतपण्हया । भत्तीए वंदिउं देइ तं दहिं ताण दोण्ह वि ॥१५०॥

१. सं० वा० सु० 'तेयं' ॥ २. ला० पि वि ॥ ३. ला० 'तुम्हेऽणु' ॥ ४. सं० वा० सु० 'इयं' ॥ ५. ला० 'पए' ॥
 ६. ला० 'णेण मन्निए' ॥ ७. ला० धम्मणि ॥ ८. ला० पयट्ठा ॥ ९. ला० जाव णिग्ग ॥

'सुज्झइ' त्ति तयं धितुं ते जिणंतियमागया । आलोइत्ता विहाणेणं सालिभद्दो कयंजली ॥१५१॥
 पुच्छइ 'सामि ! संजायं कहममहाण पारणं ?' । 'मायाहत्थाओ' सामी वि पुव्वजम्माइ साहइ ॥
 तओ संवेगमावण्णा तमेव दहि पारिउं । आपुच्छित्ता जिणं वीरं गया वेभारपव्वयं ॥१५३॥
 सयं पमज्झिउं तत्थ एककं वरसिलायलं । पायवोवगमं नाम पवण्णाऽणसणं वरं ॥१५४॥
 एत्थंतरम्मि सा भद्दा सेणिओ य नरीसरो । संपत्ताणि जिणस्संते भतीए वंदिउं जिणं ॥१५५॥
 'सालिभद्दो य धण्णो य भयवं ! कत्थ महामुणी ? । किं वा वि अम्ह गेहम्मि भिक्खट्ठा न समागया?' ।
 सामी वि जंपई 'भद्दे ! पविट्ठा तुह मंदिरे । भिक्खट्ठा किंतु तुम्हाणं न केणाऽवुवलक्खिया ॥१५७॥
 ठिच्चा खणंतरं तत्थ, तओ पच्छा विणिगया । सालिभद्दस्स माया उं पुव्वभवसमुब्भवा' ॥१५८॥
 इच्चाए अक्खिए सव्वे तओ भद्दा तहिं गया । सेणिएण समं जत्थ ते चिट्ठंति सिलायले ॥१५९॥
 वंदिउं भावसारं तु पलावे कुणई तओ । 'हा पुत्त ! तं सि बत्तीसतूलीणं उवरिं तया ॥१६०॥
 सुत्तो सि, संपयं एत्थ कक्कसम्मि सिलायले । हा पुत्त ! गीयसद्देहिं विबुज्झंतो तया तुमं ॥१६१॥
 सिवासद्देहिं भीमेहिं संपयं तु विबुज्झसि । हा पुत्त ! चाडुगुत्तेणं परियणेणं समण्णिओ ॥१६२॥
 चिट्ठंतो इण्हिमेगागी सुण्णारण्णम्मि चिट्ठसि । हा पुत्त ! तं सि रमणीए ललंतो नियमंदिरे ॥१६३॥
 तया इण्हिं तु भीमम्मि कहं अच्छसि पव्वए ? । हा पुत्त ! दिव्वभोगेहिं लालिओ तं सि सव्वया ॥१६४॥
 इण्हिं तु निप्पडीकम्मसरीरो कह जंपसि ? । हा पुत्त ! नियगेहे वि आगओ वि न जाणिओ ॥१६५॥
 अम्हेहिं मंदभगेहिं किसत्ताओ तवेण उ । एवं विलावसंजुत्तं सेणिओ तं पयंपई ॥१६६॥
 'किमेयं विलवसे अम्मो ! महासत्तं नरुत्तमं । देवाणं दाणवाणं च वंदणिज्जं महायसं ॥१६७॥
 गुणवंताण मज्झम्मि रेहा एयस्स दिज्जई । जो मोत्तुं तारिसं रिद्धिं वयं चरइ एरिसं ॥१६८॥
 सुलद्धं जीवियं जम्मं कुलं सीलमिमस्स उ । जो सीसो सामिणो जाओ दुक्करं करई तवं ॥१६९॥
 पुत्तवंतीण मज्झम्मि तुमं एक्का गणिज्जसि । जीसे पुत्तो इमे जाओ सालिभद्दमहामुणी ॥१७०॥
 तुमं अम्हे वि एएण तारियाइं न संसओ । ता किं पमोयठाणे वि अम्मो ! सोयं पकुव्वसि ? ॥१७१॥
 उट्ठ वंद महाभागे ! मुणी एए जगुत्तमे । गेहं पइ पयट्ठामो, उस्सूरं जेण वट्ठई' ॥१७२॥
 एवं वुत्ता नरिदेण वंदित्ता ते मुणीसरे । गया गेहम्मि देहेणं सरंती एगचित्तया ॥१७३॥
 साहू वि दो वि ते कालं काऊणाऽऽउक्खए तओ । समाहिणा समुपपण्णा सव्वट्ठम्मि विमाणए ॥१७४॥
 सिद्धिसोक्खाणुगं तत्थ तेत्ती सं सागरोवमे । भोत्तुं चइत्तु मच्चम्मि सिज्झिस्संति अकम्मया ॥१७५॥

१. ला० तो ॥ २. सं० वा० सु० तइया ॥ ३. ला० 'याणि ॥ ४. सं० वा० सु० 'ती तेअचित्तया ॥ ५. सं० वा० सु० 'तीसा' ॥ ६. सं० वा० सु० महम्मि ॥

इय परमपवितं सालिभदस्स^१ एयं, चरियमइविसिद्धं जे पढंती मणुस्सा ।।
तह य अणुगुणंती जे य वक्खवाणयंती, नर-सुरवरसोक्खं भुंजिउं जंति मोक्खं ।।१७६।।

सङ्गमकाख्यानकं समाप्तम् । ३३.

साम्प्रतं कृतपुण्यकाख्यानकं कथ्यते—

[३४. कृतपुण्यकाख्यानकम्]

अत्थि वरविजयकलिओ संकिण्णो वाहिणीसहस्सेहिं । सुहरिसमेओ सुपओ जंबुद्दीवो नरिंदो व्व ।।१।
तत्थ वि य भरहखंडं छक्खंडं खंडचंदसंठाणं । तत्थऽत्थि मगहदेसो जणवयगुणसंजुओ रम्मो ।।२।।
तत्थ वि रायगिहपुरं चूडामणिसच्छहं धरितीए । तं पालइ हयसत्तू नामेणं सेणिओ राया ।।३।।
सुकुलुगयाहिं रडूवियाहिं इट्ठाहिं दोहिं देवीहिं । नंदा-चेल्लणनामाहिं संजुओ भुंजए भोगे ।।४।।
निक्खित्तरज्जभारो अभयकुमारम्मि निययपुत्तम्मि । मँइबुद्धिसंजुयम्मिं असेसमंतिप्पहाणम्मि ।।५।।
एतो य जणवए तम्मि चेव एगम्मि अत्थि गामम्मि । तन्नगपाली एक्का दारिदेणं समभिभूया ।।६।।
तीए य सुओ बालो तन्नगपरिरक्खणं करेमाणो । एगत्थ अडविमज्झे जइजणजोगे पएसम्मि ।।७।।
अह पिच्छइ वरसाहुं काउस्सगेण संठियं एक्कं । तवसोसियतणुयंगं तं दट्ठुं चिंतए बालो ।।८।।
'एयस्सं जम्म-जीविय-माणुस्सत्ताइं नूण सहलाइं । जो एवं णिड्डुज्जणरणे विविहं तवं कुणइ ।।९।।
नूणऽत्थि पुण्णलेसो मज्झ वि जेणेस दंसणं पत्तो । ता वंदिरुण एयं करेमि सुपवित्तमत्ताणं' ।।१०।।
इय चित्तिरुण पणओ मुणिवरचलणेसु एव निच्चं पि । वंदंतस्स मुणिवरं संपत्तो ऊसवो कोवि ।।११।।
गामविलयाण पासाओ मणिउं खीरमाइ जणणीए । निययसुयस्सऽट्ठाए अह रद्धो पायसो तत्तो ।।१२।।
उवविट्ठयस्स भुत्तुं सुयस्स गेहंगणम्मि वरथालं । घयगुलजुत्तस्स उ पायसस्स काऊण पडिपुण्णं ।।१३।।
कज्जंतैरम्मि जणणी जाव पविट्ठा गिहम्मि ताव तओ । संपत्तो सो साहू जो पुंवं वंदिओ तेण ।।१४।।
दट्ठूण तयं इंतं भत्तिवसुण्णमियबहलरोमंचो । सो चित्तिउं पवत्तो आणंदजलाविलऽच्छीओ ।।१५।।

अवि य—

‘एक्कु घरंगणि साहू समागय, नाओवज्जिय अनु घरि संपय ।

—भावु वि अज्जु मज्झु संपण्णउ, मण्णे हउं जि एक्कु कयउण्णउ ।।१६।।

किंच—

१. ला० एवं ॥ २. सं० वा० सु० नरवरसुरसोक्खं ॥ ३. ला० ‘ण्यकथानकं ॥ ४. सं० वा० सु० मयबु’ ॥ ५. ला० कुणेमाणो ॥ ६. ला० ‘तरेण ॥ ७. ला० ‘सु ल्लसिय’ ॥ ८. ‘अवि य’ इति न विद्यते सं० वा० सु० प्रतिषु ॥

कहिं अम्हे ? कहिं मुणिवर इंती ? कहिं अम्हे ? कहिं संपय संती ? ।

कहिं अम्हे ? कहिं भत्ति तुरंती ? कहिं अम्हे कहिं तिण्णि मिलंती ॥१७॥

एवं च चिंतिऊणं 'थाले रेहाओ दोन्नि दाऊण । दाहामि त्ति तिभगं' भावितो उड्डिओ बालो ॥१८॥
 गंतुं साहुसमीवे जंपइ 'जइ सुज्झइ त्ति तो लेह' । नाऊण सुद्धि-भावे मुणिणा वि हु उड्डियं पत्तं ॥१९॥
 पक्खिविउं तत्थ तओ तिभागमित्तं पुणो वि चित्तेइ । 'अइथोवमिमं' ततो पक्खिवइ बिइज्जयं भागं ॥२०॥
 पुण चित्तइ 'जइ कह वि हु निवडइ अंबाइयं तओ एसा । नूण विणस्सइ खीरि' तइयं भागं पि तो देइ ॥२१॥
 वंदित्ता उवविट्ठो पुणो वि तत्थेव चेव ठाणम्मि । साहुम्मि गए संते जणणी वि विणिग्गया बाहिं ॥२२॥
 तं दद्धं तयवत्थं 'नूणं भुत्तं अणेण तं सव्वं' । इय चिंतिऊण तीए पुणो वि परिपूरियं थालं ॥२३॥
 रंक्तणेण भुत्तं तेण तयं तो अजीरमाणम्मि । रयणीए मरिऊणं सुभभावो रायगिहनयरे ॥२४॥
 धणपालइब्भगेहे भद्दाए भारियाए कुच्छिसि । उववण्णो तो लोगो पयंपई 'एस कयपुण्णो ॥२५॥
 जो एवंविहगेहे धण-धणसमिद्धिबंधुरे धणियं । उप्पज्जिही महप्पा गब्भे' अह कालसमयम्मि ॥२६॥
 पसवइ भद्दा सव्वंगसुंदरं दारयं सुकंतिल्लं । वद्धाविओ य इब्भो सुयजम्ममहूसवं कुणइ ॥२७॥
 लोगेणं कयउण्णो भणिओ गब्भड्डिओ इमो जम्हा । कयउण्णउ त्ति तेणं नामं जणएहिं से विहियं ॥२८॥
 वड्ढंतो य कमेणं जाओ बाहत्तरीकलाकुसलो । कामिणिजणमोहणयं आरूढो जोव्वणं जाव ॥२९॥
 ता इब्भबालियाए समाणकुल-रूय-जोव्वण-गुणाए । जणएहिं पसत्थदिणे विहिणा गिण्हाविओ पाणिं
 तह वि हु विसएसु मणं कलासु रसिओ न देइ सो जाव । ता भद्दाए भणिओ धणपालो एरिसं वयणं ॥३१॥

'नाह ! इमो अकयत्थो सव्वो धणवित्थरो जओ एसो ।

निप्पिहचित्तो दीसइ अहियं कामेसु कयउन्नो ॥३२॥

ता तह करेसु सामिय ! विसए सेवेइ जह इमो कुमरो ।

किं बहुणा वि धणेणं इमेण जइ विलसइ न एसो ?' ॥३३॥

तो जंपइ धणपालो 'मा जंपसु पिययमे ! इमं जम्हा ।

होंति असिक्खवियाणि वि एयाणि जणे जओ भणियं ॥३४॥

आहार-भय-परिगह-मेहुणसन्नाओ अणुवइट्ठाओ । गिण्हंति सव्वसत्ता, अव्वो ! किं तदुवएसेण ॥३५॥
 किं च सहावेणं चिय कामणी दिप्पए जियाण पिए ! । को हु सयन्नो दित्ते जलणे पक्खिवइ तणभारं' ॥३६॥
 भद्दाए तओ भणियं 'जइ वि इमं तह वि मज्झ संतोसो । एवं चिय होइ जओ ता अविचारं इमं कुणसु' ॥३७॥
 जाणेत्तु निच्छयं तीए तेण दुल्ललियमणुयगोड्डिए । छूढो तओ कुमारो तीए समं भमइ अणवरयं ॥३८॥
 उज्जाण-वावि-दीहिय-तलाय-पेच्छणयमाइठाणेसु । अह अण्णया पविट्ठो वेसाणं पाडयं रम्मं ॥३९॥

तत्थ वि वसंतसेणागणियाएरूय-जोव्वणजुयाए । विण्णाण-णाण-विणओवयारकुसलाइ गेहम्मि । ४०।
जा तीए अक्खित्तो कामुक्कोयणकहाहिं विविहाहिं । ताव वयंसयलोगो झड त्ति गेहाओ नीसरिओ । ४१।
सो तीए पोढिमाए तहा तहा रंजिओ सुरयकाले । जह तच्चित्तो जाओ अन्नत्थ मणं नियत्तेउं । ४२।
भुंजइ तीए समाणं विसयसुहं सुरवरो व्व सगम्मि । पेसिंति जहिच्छाए दव्वं जणयाणि अणवरयं । ४३।
इय निच्चिंतस्स तहिं पंचत्तं उवगयाणि जणयाणि । न वि जाणियाणि तेणं भज्जा पेसेइ से दव्वं । ४४।
इय बारसमे वरिसे धणयाऽऽसमसन्निभं तयं गेहं । दव्वक्खएण जायं दारिदियसुन्नगेहं व । ४५।
तो निड्डियम्मि दव्वे कुलीणयाए नियं पि आभरणं । पेसेइ तयं दड्डुं चिंतइ सा कुट्टणी एवं । ४६।
‘नूण इमो निस्सारो संपइ जाओ’ अओ तयं एसा । रूवयसहस्ससहियं पेसेइ पुणो वि आभरणं । ४७।
भणिया वसंतसेणा ‘वच्छे ! परिचयसु कामुयं एयं । निप्पीलियआलत्तयउच्छुसरिच्छं जओ अम्मं । ४८।
एसो च्विय कुलधम्मो माणिज्जइ जं धणद्धओ चेव । ता पुत्ति ! कुलायारं मा मुय पडिवज्ज धणवंतं’ । ४९।
तो जंपइ सा ‘अम्मो ! मा एवं भणसु जेण एएण । दिण्णं पभूयदव्वं को अण्णो दाहिई एवं ? । ५०।
आसत्तमं पि वेणीपज्जंतं अम्मह होहिई एयं । दाही पुणो वि अण्णं अम्मो दव्वं महाभागो । ५१।
आयारेणं वोडाण मज्झ एवंविहेण न हु कज्जं । उत्तमगुणरयणाणं किंच इमो पूरिओ अम्मो !’ । ५२।
इय तीइ निच्छयं जाणिऊण आयारसंवरं काउं । कज्जं हियए ठविउं तुण्हिका संठिया धुत्ती । ५३।
रयणीए तओ सुत्तं पल्लंके निययपुरिसहत्थाओ । मेल्लावइ देवउले वसंतसेणाए सुत्ताए । ५४।
निदाखए विबुद्धो एसो वि पलोइउं दिसायक्कं । चिंतइ ‘किमिंदियालं ? दिसिब्भमो किं व मह जाओ ?
किं वा वि सुमिणगोऽयं, उय धाउविवज्जओ भवे एसो?’ । इय चिंतंतो भणिओ पासडियदासचेडीए ।
‘मा कुणसु बहुवियप्पे निययं कुलधम्ममणुसरंतीए । अंबाए निच्छूढो वसंतसेणाइ मड्डाए । ५७।
तं वच्चसु नियगेहं पल्लंके गहिय जेण वच्चामि’ । तो विमणदुम्मणो सो निययं पइ पडिओ गेहं । ५८।
दिट्ठं च तयं तेणं महाअरण्णं व माणुसविमुक्कं । असुवण्णालंकारं कुकईयणरइयक्खं व । ५९।
पेयवणं व सुभीमं, गयरयणं वुड्ढपुरिसवयणं व । सुक्कसरं व अकमलं, गयसोहं विंझरणं व । ६०।
एवंविहं नियंतो सासंको जाव सो तहिं विसइ । तावितं दड्डूणं अब्भुड्डइ झ त्ति से भज्जा । ६१।

दिण्णम्मि आसणम्मि उवविट्ठी धोविया तओ चलणा ।

पुच्छइ य जणणि-जणयाणसंतियं सो तओ वत्तं । ६२।

तीए वि अपरिसेसा अक्खाया असुए मुयंतीए । तं सोउं से दुक्खं संजायं नरयसारिच्छं । ६३।

१. ला० रूवजो ॥ २. ला० नीहरिओ ॥ ३. ला० ‘दड्डुं विचित्तए कुट्टणी एवं ॥ ४. सं० वा० सु० होहिही ॥
५. ला० ‘णं वेडेण ॥ ६. ला० कातुं ॥ ७. ला० तयं सू ॥ ८. सं० वा० सु० ‘डो सोइओ तओ चलणे ॥ ९. ला०
‘याइस ॥ १०. सं० वा० सु० तओदंतं ॥ ११. ला० असुयं ॥

संधीरिऊण अप्पं सयमेव य पुच्छए तओ भज्जं । 'किं अत्थि किंपि ?' तीए वि दाइयं तं नियाभरणं । ६४ ।
 तं चेव भंडमुल्लं घेतुं संपड्डिओ दिसायत्तं । कइवि दिणे ठाऊणं गेहि च्चिय मित्तलज्जाए । ६५ ।
 काऊणं फलबंधं तीए संपड्डियम्मि सत्थम्मि । सत्थासण्णे खट्टाइ सो ठिओ सुण्णदेवउले । ६६ ।
 एत्तो य तम्मि णयरे सुधणूनामेण अत्थि वरइब्भो । भज्जा यं तस्स महिमा मायाबुद्धीहिं दुल्ललिया । ६७ ।
 धणवत्तो नामेणं तीए सुओ रूय-जोव्वणसमगो । नीसेसकलाकुसलो जणएण समाणरूवाणं । ६८ ।
 इब्भकुलबालियाणं चउण्ह गिण्हाविओ करं जाव । ता जणओ पंचत्तं संपत्तो, सो वि मित्तेहिं । ६९ ।
 देसंतरगमणत्थं चित्तं काराविओ सुहदिणम्मि । घेतुं चउविहभंडं संपत्तो जलहितीरम्मि । ७० ।
 आरुहियं जाणवत्तं परतीरं पाविऊण विढवित्ता । दव्वं पुणो नियत्तो जा पत्तो जलहिमज्झम्मि । ७१ ।
 ता आममल्लगं पिव गिरिसिहरं पाविऊण तं वहणं । पविलीणं सो वि तहिं धणयत्तो पाविओ निहणं
 एक्केणुव्वरिणं गंतुं पुरिसेण तत्थ महिमाए । पच्छण्णमिमं गुज्झं कहियं तीए वि सो ताहे । ७३ ।
 संगहिउं दाणेणं भणिओ गुज्झं इमं तु पच्छन्नं । कायव्वं तेणावि हु पडिवन्नं झ त्ति तव्वयणं । ७४ ।
 चित्तेइ तओ एसा व्हूण भत्तारमण्णमाणेमि । जा जायंति सुया सिं समत्थघरसारक्खयरा' । ७५ ।
 इय चिंतिऊण बाहिं नयरस्स विणिग्गया तमिस्साए । दिट्ठो य सुहपसुत्तो कयउण्णो देवकुलियाए । ७६ ।
 उप्पाडिओ य तत्तो तीए पुरिसेहिं मंचयारूढो । मुक्को घरमज्झम्मी कमेण जा उट्ठिओ ताव । ७७ ।
 कंठे विलणिऊणं रुयइ सदुक्खं इमं पयंपंती । 'बालो च्चिय अवहरिओ मज्झ अपुण्णाए तं वच्छ ! ७८ ।
 महिमंडले गविट्ठो सयले न य तुह पउत्तिमित्तं पि । उवलद्धं जा अज्जं कहिओ तुह आगमो मुणिणा । ७९ ।
 दिट्ठो य कप्परुक्खो सुमिणे गेहंगणम्मि संपत्तो । ता अज्ज इहं पुत्तय ! समागओ अम्ह पुण्णेहिं । ८० ।

ता कत्थ वट्ठिओ तं ? कत्थ य भमिओ सि एत्तियं कालं ? ।

किं वा वि सुहं दुक्खं अणुभूयं वच्छ ! मे साह । ८१ ।

अहवा वि मज्झ हिययं वज्जसिलासंचएण नणु घडियं ।

जं तुज्झ विओगम्मि वि न गयं सयसिक्करं सहसा । ८२ ।

जा तुज्झ विओगम्मि वि पाणे धारेमि पाविया अहयं ।

ओवारणयं म्हि कया गुणसायर ! तुज्झ देहस्स । ८३ ।

जाइं तुह विरहम्मिं वच्छ ! मए चिंतियाणि हियएण ।

ताणि तुह वेरियाण वि देसेसु पडंतु मा कह वि । ८४ ।

देवगुरूहिं विहुरे सुरक्खिओ तं सि एत्तियं कालं । ता मज्झ जीविण वि कप्पाऊ होसि तं वच्छ ! ८५ ।

१. ला० गेहे च्चिय ॥ २. सं० वा० सु० वि ॥ ३. सं० वा० सु० 'हिउं जाणवरं ॥ ४. सं० वा० सु०
 बहुयाभत्ता' ॥ ५. ला० तो ॥

अणुभावेणं तियसाइयाण सीलेण तह सईणं च । परिवड्ढसु नियवंसं घरविच्छड्डं च अणुहवसु । ८६।
 देसंतरे विवण्णो भाउज्जायाण तुज्झ भत्तारो । होसु चउणह वि सामी इण्हिं एयाण तं वच्छ ! । ८७।।
 इय तीए बुद्धिमाहप्परंजिओ मुणियकूडचरिओ वि । पडिवज्जइ तव्वयणं विम्वहयकोऊहलापुण्णो । ८८।
 सुण्हाओ वि तीए तओ एणंते ठाविऊण भणियाओ । “एवंठियम्मि कज्जे पडिवज्जह देवरं कंतं । ८९।
 जेण सुईसु वि भणियं ‘गय-मय-पव्वइय-कीवपइएसु । रमणेसुं नारीणं विहिज्जए अन्नभत्तारो’ । ९०।
 ता खेत्तयं पि पुत्तं उप्पाइत्ता करेह कुलरक्खं । मा भे सव्वं दव्वं गच्छिस्सइ रायभवणम्मि । ९१।।
 कुंतीमहासईए अण्णोन्नपईहिं पुत्तउप्पत्ती । सुव्वइ ता पडिवज्जह मम वयणं, मा विगप्पेह’ । ९२।।
 इय तीए धुत्तीए तहा तहा लोगसत्थजुत्तीहिं । भणियाओ जह ताहिं पडिवन्नं निव्वियप्पाहिं । ९३।।
 अह ताहिं समं मुणिवरदानप्फलजणियविउणरागाहिं भुजंतस्स य भोगे इंदस्स व देवलोगम्मि । ९४।
 संजाया वरपुत्ता ताण चउणहं पि सुरकुमार व्व । वोलीणा य कमेणं बारस संवच्छरा एवं । ९५।।
 तो सासुयाए वुत्ताओ ताओ परिचयह संपयं एयं । परपुरिसं किमियाणिं सिद्धे कज्जम्मि धरिएणं ?’ । ९६।

पडिभणियं सुण्हाहिं ‘अम्मो ! मा भणसु एरिसं वयणं ।

जेणड्ढे भुत्ताओ सो किं न वि होइ भत्तारो ?’ । ९७।।

तो तीइ भिउडीभासुरवयणं अवलोइऊण वहुयाहिं । भयवेविरहिययाहिं पडिवण्णं झत्ति तब्भणियं । ९८।

पुट्ठा य ताहिं सासू ‘अम्मो ! तुह अणुमएण संबलयं ।

एयस्स किंचि कुणिमो’ ‘जं रोचइ कुणह’ सा भणइ । ९९।।

तो ताहिं सव्वाहिं पच्छण्णं मोयगाण मज्झम्मि । खित्ताइं रयणाइं होउ सुही’ इय वियप्पेणं । १००।

भरिऊण मोयगाणं थइया ऊसीसयम्मि से ठविया । तत्तो य सासुयाए पाइय मज्जं सुहपसुत्तो । १०१।

खट्ठाए समं उप्पाडिऊण मुक्को पुणो वि तत्थेव । जत्तो देवकुलाओ समाणिओ आसि किर पुव्वं । १०२।

एत्थंतरम्मि सत्थो समागओ सो पुणो वि रयणि ति । काऊणं न पविट्ठो तहेव आवासिओ कमसो । १०३।

नाऊण आगयं तं नियकंतपउत्तिजाणणट्ठाए । जा तत्थ गया भज्जा ता पेच्छइ तं तह च्वेव । १०४।।

सच्छायं दट्ठूणं पहट्ठचित्ता समुट्ठवेऊणं । संबलथइयं खट्ठं च गिण्हिउं जाइ नियगेहं । १०५।।

कयउण्णओ वि जाणियभावत्थो निययमंदिरं पत्तो । पेच्छइ वसंतसेणं तहिं गओ बद्धवेणीयं । १०६।

सयपागाई तेल्लेहिं मक्खिओ जाव ताव संपत्तो । लेहयसालाओ सुओ, पडिओ जणयस्स चलणेसुं । १०७।

‘छुहिओ’ ति करिय मग्गेइ भोयणं नेय सिज्झए किंचि । तो रोयंतं दट्ठुं, वसंतसेणाइ थइयाओ । १०८।

कइढेऊणं दिण्णो एगो वरमोयगो तओ एसो । तं खायंतो पत्तो, लेहयसालाए अह तत्थ । १०९।।

मोयगमज्झे दड्डं पवरमणिं 'घुट्टउ' ति काऊण । दाएइ अण्णछत्ताण तेहिं भणियं 'मणी एसो ॥११०॥
 तां पूइयस्स देमो दिणे दिणे देइ जेण अम्हाणं । पूयलियाओ' वोचुं दिति तयं पूइयस्स तओ ॥१११॥
 तेण वि सो पक्खित्तो पासट्टियनीरकुंडमज्झमि । तस्स पभावेण तयं थलं व पडिहासए नीरं ॥११२॥
 तो तेणं विण्णाओ जहा इमो नीरकंतपवरमणी । संगोविऊण धणियं चट्टाण वि देइ जं जोगं ॥११३॥
 एत्तो य समक्खायं पियंगुलइयाइ दासचेडीए । 'सामि ! जया परिचत्ता वसंतसेणाइ मायाए ॥११४॥
 तं नाउं सव्वत्थ वि गवेसिया न य पउत्तिमित्तं पि । तुम्हाणं उवलद्धं तओ इमं सामिणी कुणइ ॥११५॥
 वेणीबंधं सियवत्थनिवसणं मल्लगंधपरिहारं । दुद्धरपउत्थवइयावयं धरंती ठिया एसा ॥११६॥
 एत्तियकालं तुहगेहसंठिया तुच्छअसणकयविती' । तं सोऊणं कयउण्णयस्स जाओ पुणो पिम्मो ॥११७॥
 अह अण्णया य नीरं पाउं सरियाजलमि ओइण्णो । सेयणयगंधहत्थी गहिओ सो तंतुएण तहिं ॥११८॥

पोक्करियं च नरेहिं तं सोउं आउलो निवो जाओ ।

तो भणइ अभयकुमरो 'देव ! तहिं खिवह जलकंतं ॥११९॥

सो जा भंडाराओ कट्टिज्जइ ताव लग्गए वेला । अच्चाहियं च करिणो होइ दढं तणुविमदेण ॥१२०॥
 तो सिग्घपावणत्थं जलकंतमणिस्स नरवरिदेण । सव्वनयरमि सहसा भमाडिओ पडहगो एवं ॥१२१॥

'भो ! भो ! जलकंतमणिं सिग्घं जो आणित्तं समप्पेइ ।

तस्स निवो रज्जद्धं कण्णाइ समणियं देइ' ॥१२२॥

तं वयणं सोऊणं कंदुइएणं लहुं समाणीओ । खित्तो य नईमज्झे थलं ति अहं तंतुओ नट्टो ॥१२३॥
 तदुवद्वाओ मुक्को सेयणयकरी समागओ गेहं । पुट्टं च नरवरेणं 'केणेस मणी समाणीओ ?' ॥१२४॥

कहिओ य पूइओ से, तत्तो चिंतावरो निवो भणइ ।

'अभय ! कहं दायव्वा कण्णा नीयस्स अम्हेहिं ?' ॥१२५॥

अभएण वि पडिभणिओ 'रयणाणि न संभवन्ति एयस्स ।

ता पुच्छिज्जउ एसो उप्पत्तिमिमस्स रयणस्स' ॥१२६॥

रण्णा वि पुच्छिओ सो 'सच्चं भो ! भणसु कह तुहं एयं ?' ।

तेण वि भयभीएणं जहट्टियं सव्वमक्खायं ॥१२७॥

अभएण तओ भणियं 'भवन्ति रयणायरमि रयणाइं' ।

कंदुइओ वि हु उच्चियं दाउं वीसज्जिओ रण्णा ॥१२८॥

कयउण्णयं पि सदाविऊण दिण्णा सगोरवं कण्णा । रज्जस्सद्धेण समं परिणीया महविभूईए ॥१२९॥

भुंजइ विसिट्ठोए अभयकुमारेण सह ललंतो सो । अण्णमि दिणे पभणइ अभयकुमारं इमं वयणं ॥१३०॥

जह 'एत्थेव पुरवरे अण्णाओ वि अत्थि मज्झ भज्जाओ ।

चत्तारि सुयवईओ न य गेहमहं वियाणामि' ॥१३१॥

'कह एवमिमं ?' अभएण जंपिए तेण सव्वमक्खायं ।

(ग्रं० ७०००) 'अम्हे वि तीइ विजियाबुद्धीए' जंपए अंभयो ॥१३२॥

'एवंविहं पि काउं कज्जं एत्थेव निवसए एसा । न य अम्हेहिं वि नाया, अहो ! सुनिउणत्तणं तीए ॥१३३॥

ता अच्छसु निच्चिंतो संपइ जाणामि तुज्झ भज्जाओ' । इय वोत्तुं कारवियं देवउलं दोहिं वारेहिं ॥१३४॥

तत्थ वि य जक्खपडिमा कयउण्णयरूवधारिणी विहिया ।

घोसावियं च नयरे जहा 'सवच्छाओ नारीओ ॥१३५॥

जक्खस्स पूयणत्थं पुव्वेण अइंतु नित्तु अवरेणं । अण्हकयम्मि होही उवसग्गो दारुणो ताण' ॥१३६॥

इय सोऊणं सव्वो थीवग्गो बालडिंभपरिकिण्णो । आयाओ ताओ वि हु पत्ताओ तहिं सडिंभाओ ॥१३७॥

'बप्पो बप्पो' त्ति तओ उच्छंगे तीइ जक्खपडिमाए । भणमाणा आरूढा ते डिंभा झ त्ति पहसंता ॥१३८॥

एगंताओ तत्तो विणिग्गया झ त्ति अभय-कयउण्णा । ताओ वि य ते दड्ढुं लज्जाए अहोमुहा जाया ॥१३९॥

अभएण वि सा बुड्ढा हकारित्ता सुनिट्ठुरगिराहिं । तह तज्जिया जहा सा पडिया पाएसु दोणहं पि ॥१४०॥

इय सत्तहिं भज्जाहिं समयं माणितयस्स विसयसुहं । बोलीणो बहुकालो अणुभुजंतस्स रज्जसिरिं ॥१४१॥

एत्थंतरम्मि भयवं चोदसवरसमणसहपरिवारो । छत्तीससहसअज्जासमण्णिओ तियसनयचलणो ॥१४२॥

केवलनाणसमग्गो संपत्तो जिणवरो महावीरो । गुणसिलए तियसेहिं रइयम्मि महासमोसरणे ॥१४३॥

वद्धावयपुरिसेणं आगंतूणं तओ समक्खायं । कयउण्णयनरवइणो, दाउं सो तस्स वरदाणं ॥१४४॥

सव्विड्ढीए पत्तो जिणपयमूलम्मि नमिय उवविट्ठो । पारद्धा य जिणेणं भवहरणी देसणा एवं ॥१४५॥

'भो भो भव्वा ! इत्थं चउगइसंसारसायरे भीमे । निवडंतयसत्ताणं धम्मो च्विय तारणं कुणइ ॥१४६॥

धम्मो सव्वउत्थाणं पसाहगो, सण-मोक्खसोवाणं । धम्मो दोग्गइधरणीधरस्स निदलणवरकुलिसं ॥१४७॥

धम्मेण पुव्वसुकएण उत्तमा हुंति एत्थ वरभोगा । ता सो च्विय कायव्वो सिवसुहसंपत्तिकामेहिं ॥१४८॥

इय सोउं सव्वा वि हु परिसा संवेगमागया धणियं ।

कयउण्णओ वि पुच्छइ सीसे ठविऊण करकमलं ॥१४९॥

'भयवं ! किं पुव्वभवे मए कयं जेण एरिसा रिद्धी ।

भोगा य अणण्णसमा सअंतराया य संजाया ?' ॥१५०॥

तो नीसेसं चरियं भयवं साहेइ तस्स पुव्विल्लं । तं सोउं कयउण्णयराया संवेगमावण्णो ॥१५१॥

सुमारित्तु पुव्वजाइं पभणइ संवेगंगमावण्णो । 'एवमिणं जगबंधव ! जाइस्सरणाओ मे नायं ॥१५२॥

१. ला० अभओ [ग्रन्थाग्रम् ६०००] जं ॥ २. सं० वा० सु० काराविय ॥ ३. ला० दारेहिं ॥ ४. सं० वा० सु० अयंतु ॥ ५. ला० अम्मो ! एसो ताओ उच्छं ॥ ६. ला० 'हस्सज्जा' ॥ ७. ला० 'गरससमावण्णो ॥

ता संपयं पि जयगुरु ! रायाई पुच्छिऊण धेच्छामि । नीसेससोक्खसंपत्तिकारयं सव्वविरेइं' ति ॥१५३॥
'मा काहिसि पडिबंधं' जिणेण भणियम्मि तो गिहे गंतुं । रायाई आपुच्छिय सव्वं सामगियं कुणइ ॥१५४॥

अवि य—

कारवि जिणवरजत्त विहाणइं, देविणु दीणा-ऽणाहह दाणइं ।
घोसावेविणु अभयपयाणइं, माणेप्पिणु वरसाहु वियाणइं ॥१५५॥
पूय करेविणु चउविहसंघह, दव्वु विभायवि बंधववग्गह ।
सिबियारूढउ सह नियपत्तिहिं, परिवारिउ सामंतसुपत्तिहिं ॥१५६॥
अणुगम्मंतउ सेणियराइं, वणिज्जंतउ जेणि अणुराइं ।
वज्जंतइ वरतूरनिनायहिं, नच्चंतइ पाउलसंघायहिं ॥१५७॥
कलकंठहिं गायणहिं रसंतहिं, भट्ट-चट्ट-बंदिणिहिं पढंतहिं ।
इय सामगिय निगउ नयरह, संपत्तउ चरणंतिए वीरह ॥१५८॥
सिबियाओ उत्तरिउं काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो । नमिऊणं वीरजिणं कयंजली जंपए एवं ॥१५९॥
'सामिय ! संसारमहणवम्मि निवडंतयस्स मह इण्हिं । करुणाए पव्वज्जं देह महं जाणवत्तं व' ॥१६०॥
भयवं पि देइ दिक्खं सह अणुसडीए तो समप्पेइ । गणहरनाहस्स तयं वयणी वि हु चंदणज्जाए ॥१६१॥
तो गहियदुविहसिक्खो काऊणं बहुविहे तवच्चरणे । संलिहिय आउयंतं संपत्तो देवलोगम्मि ॥१६२॥
इय जं रिद्धी भज्जा भोगा रज्जं च अणुवमं पत्तं । तं जम्मंतरमहरिसिपायसदाणप्फलं सव्वं ॥१६३॥
जं रेहादाणेणं भावस्स अवंतरं कयं आसि । तं तस्स वि भोगाणं अवंतरं किंचि संजायं ॥१६४॥
इय नाउं भो ! दाणं अव्वोच्छिन्नेण देह भावेण । जेण निरंतरभोए भोतुं पावेह निव्वाणं ॥१६५॥

xकृतपुण्यकाख्यानकं समाप्तम् ।. ३४x

अशनादिधर्मोपग्रहदानस्य दृष्टान्तैः फलं प्रतिपाद्य सम्प्रति समस्तदानप्रधानं शय्यादानं श्लोकेनाह—

सेज्जादाणं च साहूणं देयं दाणाणमुत्तमं ।

सुद्धेणं जेण दिण्णेणं दिण्णं सेसं पि भावओ ॥८७॥

शय्या=वसतिस्तस्या दानं=वितरणम् । चकारोऽवधारणे, स च भिन्नक्रमे तेन देयमेवेत्यत्र सम्बध्यते । 'साधूनां' यतीनाम्, 'देयं' दातव्यम् । 'दानानां' पूर्वोक्तानाम् 'उत्तमं' प्रधानम् । यतः

१. सं० वा० सु० 'रयं ति ॥ २. ला० जिणहर भत्ति ॥ ३. ला० जणअ' ॥ ४. ला० 'तहिं बहुतूर' ॥ ५. ला० 'तहिं पा' ॥ ६. सं० वा० सु० भोगे ॥ ७. xx एतच्चिह्नद्वयान्तर्वर्ती पाठः ला० प्रतावेव विद्यते ॥ ८. ला० 'धानशय्यादानश्लोकमाह ॥ ९. सं० वा० सु० यतः शुद्धेन ॥

‘सुद्धेणं’ ति शुद्धेन= निरवद्येन, येन ‘दिण्णेणं’ति दत्तेन, ‘दिण्णं’ति दत्तम्, ‘शेषमपि’ सर्वमपि, ‘भावतः’ परमार्थतः । यत उक्तम्—

धृतिस्तेन दत्ता मतिस्तेन दत्ता, गतिस्तेन दत्ता सुखं तेन दत्तम् ।
गुणश्रीसमालिङ्गितेभ्यो वरेभ्यो, मुनिभ्यो मुदा येन दत्तो निवासः ॥३१०॥

तथा—

जो देइउ(देउ?)वस्सयं जइवराणऽणेगगुणजोगधारीणं ।
तेणं दिण्णा वत्थ-ऽण्ण-पाण-सयणा-ऽऽसणविगप्पा ॥३११॥
जं तत्थ ठियाण भवे सव्वेसिं तेण तेसिमुवओगो ।
रक्ख परिपालणा वि य तो दिण्णा एव ते सव्वे ॥३१२॥
सीया-ऽऽयव-चोराणं बालाणं तह य दंस-मसगाणं ।
रक्खंतो मुणिवसभे सिवलोगसुहं समज्जिणइ ॥३१३॥

इति श्लोकार्थः ॥८७॥ कस्मादेवं शय्यादानमतिगरिष्ठं वर्ण्यते ? यतो येषां तद्वातव्यं तेषां गुणवत्त्वेन महत्त्वात्, तन्महत्त्वख्यापकं च श्लोकद्वयमाह—

माया पिया य भाया य भगिणी बंधवा सुया ।
भज्जा सुण्हा धणं धण्णं चइत्ता मंडलं पुरं ॥८८॥
मोक्खमगं समल्लीणा छिंदित्ता मोहबंधणं ।
एए साहू महाभागा वंदणिज्जा सुराण वि ॥८९॥

‘माता’जनयित्री, ‘पिता’जनकः ‘भ्राता’सौदरः, चकारोऽनुक्तस्वजनप्रतिपादकः
‘भगिनी’स्वसा, ‘बान्धवाः’भ्रातृविशेषाः, ‘सुताः’पुत्राः, ‘भार्या’सहचरी, ‘स्नुषा’वधूः,
‘धनं’गणिमादि चतुःप्रकारम्, ‘धान्यं’यवादि चतुर्विंशतिभेदभिन्नम् । उक्तं च—

धण्णाइ चउव्वीसं जव-गोहुम-सालि-वीहि-सट्ठीया ।
कोहव-अणुया-कंगू-राला-तिल-मुग्ग-मासा य ॥३१४॥
अयसि-हिरिमंथ-पुडगा-निप्पाव-सिलिंद-रायमासा य ।
इक्खू-मसूर-तुवरी-कुलत्थ तह धाणय-कलाया ॥३१५॥

(दश० नि० गा० २५२-२५३)

एतानि लोकप्रसिद्धानि । नवरं 'अणुका' श्लक्ष्णकंगू, 'षष्टिका' शालिभेदः, कंगू='वृत्तकंगू', तद्भेदो रालकः हिरिमन्थाः=कृष्णचनकाः, निष्पावाः=वल्लाः, राजमाषाः=वलकाः, शिलिंदाः=मकुष्टाः, धान्यकं=कुस्तुम्बरी, कलाया=वृत्तचनका इति ।

एतानि च त्यक्त्वा तथा 'मंडलं पुरं' ति, 'मण्डलं' राज्यम्, 'पुरं' नगरम्, चकारः पूर्वस्माद् योज्यते ॥

'मोक्षमगं' इत्यादि, 'मोक्षमार्ग' शिवपथं सम्यग्ज्ञानादिरूपम्, 'समालीनाः' सम्=एकीभावेनाऽऽलीनाः=आश्रिताः । किं कृत्वा ? छित्त्वा 'मोहबन्धनं' मोहनीयनिगडसंयमनम् । 'एते' पूर्वोक्ताः, 'साधवः' यतयः, 'महाभागाः' अचित्यशक्तियुक्ताः, 'वन्दनीयाः' नमस्करणीयाः, 'सुराणामपि' त्रिदशानामपीति श्लोकद्वयार्थः ॥८८-९८॥ पुनरपि विशेषगुणद्योतनार्थं श्लोकचतुष्कमाह—

सागरो इव गंभीरा, मंदरो इव निच्चला ।

कुंजरो इव सोडीरा, मइंदो इव निब्भया ॥९०॥

'सागरः' समुद्रः स इव=तद्वत्, 'गम्भीराः' अलब्धमध्याः । 'मन्दरः' मेरुस्तद्वद् 'निच्चलाः' परीषहोपसर्गवातोत्कलिकाऽप्रकम्पाः । 'कुञ्जरः' हस्ती तद्वच्छौर्यवन्तः कर्मशत्रुपराजयं प्रति । 'मृगेन्द्र' इव निर्भयाः सिंह इव भयरहिताः परतीर्थिककुवादिगजगलगर्जितादिष्विति ॥

सोमाचंदो व्व लेसाए, सूरु व्व तवतेयसा ।

सव्वफासाण विसहा, जहा लोए वसुंधरा ॥९१॥

'सोमाचन्द्रवद्' राकाशशाङ्क इव 'लोश्यया' सौम्यदीप्त्या, समस्तजनानन्ददायकत्वेन परदर्शनतारकाधिक्येन च । 'सूरवद्' भानुरिव, 'तपस्तेजसा' तपःकिरणजालेन, परतीर्थिकशशधरतारतारकानिकरप्रभाप्रच्छादकत्वात् । 'सर्वस्पर्शानां' निःशेषस्पर्शविषयाणाम् 'विषहाः' अधिसहनशीलाः, 'यथा' यद्वद्, 'लोके' त्रिभुवने, 'वसुंधरा' पृथ्वी, जनकृतशुभाऽशुभचेष्टासमवृत्तित्वात् । उक्तं च—

वंदिज्जमाणा न समुक्कसंति, हीलिज्जमाणा न समुज्जलंति ।

दंतेण चित्तेण चरंति लोए, मुणी समुग्घाइयरागदोसा ॥३१६॥

(आव० नि० गा० ८६६)

सयणोवयंता वयणाभिघाया, कण्ठं गया दुम्मणयं जणंति ।
 धम्मो त्ति किच्चा परमगसूरे, जियंदिए जो सहई स पुज्जो ॥३१७॥
 जो सहइ हु गामकंटए, अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य ।
 भयभेरवसद् सप्पहासे, समसुहदुक्खसहे जे स भिक्खू ॥३१८॥

(दशवै० अ० १० गा० ११)

अक्कोस-हणण-मारण-धम्मन्भंसाण बालसुलभाणं ।
 लाभं मण्णइ धीरो जहुत्तराणं अभावम्मि ॥३१९॥ त्ति ॥
 सुद्धचित्ता महासत्ता सारयं सलिलं जहा ।
 गोसीसचंदणं चेव सीयला सुसुगंधिणो ॥३२०॥

‘शुद्धचित्ताः’ निर्मलान्तःकरणाः ‘महासत्त्वाः’ सत्त्वाधिकाः ‘शारदं’ चित्रानक्षत्रता-
 पविशोधितम्, सलिलं ‘यथा’ इति यद्वत् कर्ममलरहितत्वाद् । ‘गोशीर्षचन्दनं’ प्रधानं श्रीखण्डम्,
 चकारोऽग्रे योज्यते, एवमशब्दस्य इवार्थत्वात् तद्वच्छीतलाः कामाम्नितापाभावात् । ‘सुसुगन्धयश्च’
 शीलसौगन्धयुक्तत्वादिति ॥

विरया पावठाणेसु, निरया संजमे तवे ।
 निम्ममा निरहंकारा खंता दंता जिइंदिया ॥३२१॥

‘विरताः’ निवृत्ताः ‘पापस्थानेभ्यः’ पातकाश्रवेभ्यः । ‘निरताः’ आसक्ताः ‘संयमे’
 पञ्चाश्रवाद्विरमणं पञ्चेन्द्रियनिग्रहः कषायजयः ।
 दण्डत्रयविरतिश्चेति संयमः सप्तदशभेदः ॥३२०॥

इत्येवंरूपे । ‘तपसि’

अणसणमूणोयरिआ वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
 कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ॥३२१॥
 पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
 ज्ञाणं उस्सगो वि य अब्भित्तरओ तवो होइ ॥३२२॥

इत्येवंलक्षणे । ‘निर्ममाः’ ‘पुत्रो मे भ्राता मे स्वजनो मे गृहकलत्रवर्गो मे’ इत्येवं

ममीकाररहिताः । 'निरहङ्काराः' निर्गताहङ्कृतयः । 'क्षान्ताः' क्षमावन्तः । 'दान्ताः' नोइन्द्रियदमेन । 'जितेन्द्रियाः' निगृहीतस्पर्शनादीन्द्रियाः । इति श्लोकचतुष्टयार्थः ॥९०-९३॥ विशेषतः साधुमाहात्म्यं ख्यापयन् श्लोकमाह—

अहो ! धण्णो हु सो देसो पुरं राया गिही गिहं ।

जं तुट्ठिं मण्णमाणा णं विहरंती सुसाहुणो ॥९४॥

'अहो' इत्यतिशये, 'धन्यः' पुण्यभाक्, स 'देशः' जनपदः, 'पुरं' नगरम्, 'राजा' नृपतिः, 'गृही' गृहस्थः, 'गृहं' निशान्तम्, 'जं' ति विभक्तिव्यत्ययाद् यत्र, 'तुष्टिं' हर्षम् 'मन्यमानानां(?मानाः)' प्रतिपद्यमानानाम्(?मानाः), [?णं इति वाक्यालङ्कारे], 'विहरन्ति' परिभ्रमन्ति, 'सुसाधवः' सद्यतय इति श्लोकार्थः ॥९४॥

एवंगुणयुक्तानां च साधूनां यो वसतिं प्रयच्छति तस्य फलं श्लोकेनाऽऽह—

सेज्जं जो देइ साहूणं तरे संसारसायरं ।

सेज्जायरो अओ वुत्तो सिद्धो सव्वण्णुसासणे ॥९५॥

'शय्यां' वसतिम्, यो 'ददाति' प्रयच्छति, 'साधुभ्यः' यतिभ्यः, 'तरे'त्ति तरति, 'संसारसागरं' भवसमुद्रम्, शय्यातरोऽतो व्युक्तः सिद्धः सर्वज्ञशासने-'शय्यया तरति संसारसागरम्' इत्येवं 'सिद्धः' व्युत्पत्त्या निष्पादितः, 'व्युक्तः' विशेषेणोक्तः 'जिनशासने' निशीथादौ । अथवा सिद्ध इव सिद्धो व्युक्तः, भाविनि भूतवदुपचारात् प्रत्यासन्नसिद्धिगामीत्यभिप्राय इति श्लोकार्थः ॥९५॥

विशिष्टपुण्यहेतुमेव वसतिदातुः श्लोकेन प्रतिपादयति-

चिट्ठंताणं जओ तत्थ वत्था-ऽऽहार-तवाइणो ।

सम्मं केइ पवज्जंति, जिणदिक्खं पि केइ वि ॥९६॥

'तिष्ठतां' निवसताम्, 'यतः' यस्मात्, वस्त्रा-ऽऽहार-तपआदीनि आदिशब्दात् पात्र-दण्डकादिग्रहः, साधूनामुत्पद्यन्त इति गम्यम् । 'सम्मं'ति सम्यक्त्वम्, केचित् 'पवज्जंति' प्रतिपद्यन्ते 'जिनदीक्षामपि' सर्व-देशविरतिरूपां केचनाऽपि प्रतिपद्यन्ते इति श्लोकार्थः ॥९६॥ तस्मात्—

सिज्जादाणप्पभावेणं देवाणं माणुसाण य ।

पहाणं संपया फुल्लं फलं निव्वाणमुत्तमं ॥९७॥

विभक्तिव्यत्ययात् शय्यादानप्रभावतो देवानां मानुषाणां च प्रधानं सम्पत् पुष्पम्, फलं तु

निर्वाणमुत्तमं मोक्षगमनमिति श्लोकार्थः ॥१७॥ ततश्च—

नाणाविहाण साहूणं ओहावंताण जाव उं ।

कायव्वं सव्वभावेणमेवमाइ जहोचियं ॥१८॥

‘नानाविधानां’ ‘जिन-स्थविरकल्पिका-ऽहालन्दिक-प्रत्येकबुद्धोद्युक्तविहारि-संविग्रपाक्षिकाद्यनेकप्रकाराणाम्, “ओहावंताणं”ति अवधावताम् = उत्प्रवर्जितुकामानाम् ‘जाव उ’ति एतान् यावदिति भावः, ‘कर्तव्यं’ विधेयम्, ‘सर्वभावेन’ समस्तसामर्थ्येन, ‘एवमादि’ पूर्वोक्तादि’ ‘यथोचितं’ यथायोग्यमिति श्लोकार्थः ॥१८॥ यथोचितकृत्यमेव श्लोकेन प्रतिपादयति—

नाणं वा दंसणं सुद्धं चरित्तं संजमं तवं ।

जत्तियं जत्थ जाणिज्जा भावं भत्तीए पूयए ॥१९॥

‘ज्ञानं’ मतिज्ञानादि, वाशब्दोऽग्रे योष्यते, ‘दर्शनं’ क्षायोपशमनादि, ‘शुद्धम्’ अनवद्यम्, ‘चारित्रं’ सामायिकादि, ‘संयमम्’ आश्रवविरमणादि, ‘तपः’ अनशनादि, ‘जत्तियं’ति यावन्मात्रम्, ‘यत्र’ साधौ, ‘जानीयाद्’ अवबुध्येत, ‘भावं’ पदार्थम्, ‘भक्त्या’ अन्तर्वासनया, तावत् तत्र पूजयेदिति श्लोकार्थः ॥१९॥ समस्तकृत्यपर्यन्तं प्रकरणोपसंहारं च वृत्तेनाऽऽह—

लिंगावसेसाण वि जं वसिद्धं, संविग्गीयत्थगुरूवइद्धं ।

नाऊण साहूण जहाविहाणं, विहेह तं मोक्खसुहावहं ति ॥१००॥

‘लिङ्गावशेषाणामपि’ लिङ्गमात्रोपजीविनामपि, ‘यदवशिष्टं’ यदुद्धरितम्, संविग्रः=उद्यत-विहारी, संविग्रश्चाऽसौ गीतार्थश्च=बहुश्रुतः, स चाऽसौ गुरुश्च तदुपदिष्टं=कथितम्, ‘ज्ञात्वा’ अवबुद्ध्याऽऽगमादिति भावः । तथा च—

जणचित्तगहणत्थं, करेति लिंगावसेसे वि ॥ तथा—

अग्गीयादाइण्णे खेत्ते अन्नत्थठिइअभावेणं ।

भावाणुवघायणुवत्तणाए तेसिं तु बसियव्वं ॥३२३॥

इहरा स-परुवघाओ उच्छोभाईहिं अत्तणो लहुया ।

तेसिं पि कम्मबंधो, दुगं पि एयं अणिद्धं तु ॥३२४॥

१. ता० ऊ ॥ २. अग्रे वाशब्दयोजना नोपलभ्यते ॥ ३. ला० योज्यते ॥ ४. सं० वा० सु० *ते तद्दर्शनं ॥
५. ता० ति ॥१००॥ साहूणं ति चउत्थं ठाणं ॥ ६. सं० वा० सु० *इतिभा ॥

वायाए नमोक्कारो, हत्थुस्सेहो य सीसनमणं च ।

संपुच्छणऽच्छणं छोभवंदणं वंदणं वा वि ॥३२५॥

‘साधूनां’ यतीनाम्, ‘यथाविधानं’ यथाविधि, “‘विहेह’त्ति ‘विधत्त कुरुत, ‘तत्’ पूर्वोक्तम्, ‘मोक्षसौख्यावहं’ शिवशर्मकारि । ‘इति’ प्रकरणसमाप्तौ ॥१००॥

श्रीदेवचन्द्राचार्यविरचिते मूलशुद्धिविवरणे साधुकृत्यस्थानकं चतुर्थं समाप्तम् ॥

• • •

